श्री परमधाम की बड़ी वृत

श्री लालदास जी (महामति जी) कृत

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान

Lord Prannath Global Consciousness Mission

प्राप्ति स्थान

श्री निजानंद आश्रम
ने.हा. 8, बायबास, एल. एण्ड टी. के पास,
सयाजीपुरा, वडोदरा–390019
Email: premseva7@yahoo.com;
manulpdc@yahoo.com
Phones: 989-800-0168, 787-415-1371,
942-736-4535
Website: www.sriprannathji.com

श्री निजानंद आश्रम रतनपुरी
गांव व पोस्ट–रतनपुरी व्हाया खतौली,
जिला–मुजफ्फरनगर, उ. प्र.

Lord Prannath Divine Center, U.S.A./Canada
8062 Eisenhower Parkway, Lizella, GA 31052-3202
E mail: jagni7@yahoo.com; jagnicorp@yahoo.com
Phones: 011-973-760-9238; 011-478-808-4079
Website: www.nijanand.org

श्री निजानंद आश्रम, सढौली,
पोस्ट झब्रेड़ा, जिला–हरिद्वार
उत्तराखण्ड

श्री प्राणनाथ जी मंदिर, शामलाजी,
मेश्वो डेम रोड, साबर कांठा
गुजरात

सर्व हक सर्वाधीन

मुद्रक :–

मंगल कामना

प्रिय सुंदरसाथ जी एवं सभी धर्म प्रेमीसाथियों! ''श्री परमधाम की बड़ी वृत'' ग्रंथ की सर्वप्रथम टीका आपके करकमलों में रखते हुए अपार आनंद का अनुभव हो रहा है। यह बड़ी वृत्त ग्रंथ श्री प्राणनाथ जी के ''निजानंद'' आध्यात्मिक दर्शन के फलस्वरूप दिव्य परमधाम का दर्शन कराके प्रेमानन्द लीला में डूबो देने वाली एक अनमोल निधी है।

यह ग्रंथ श्री प्राणनाथ जी के साथ उनकी परछायी की भांति रहने वाले ब्रह्ममुनि श्री लालदास जी के तन के माध्यम से उन्हीं की कृपा से अवतरित हुयी है। इस वाणी में जो 'महामति' की छाप है, वह प्रियतम परब्रह्म की महानतम दिव्य शक्तियों का सामूहिक स्वरुप है, जो श्री लालदास जी के हृदय में विराजमान हुयी। तभी इन शक्तियों की बदौलत इस ग्रंथ की रचना हुई है। इस में निहित तारतम ज्ञान का प्रकाश परब्रह्म के हृदय से प्रेरित, उनकी ही बुद्धि और इच्छा से हमें निजानन्द की मस्ती देने के लिये प्रकट हुआ है। अतः तारतम वाणी श्री कुल्ज़म स्वरूप और श्री बीतक साहेब के समान ही इसमें भी प्रत्येक प्रकरण की अंतिम चौपाई में ''महामति'' की छाप है।

इसकी चौपाईयां तारतम वाणी के समान ही आनंददायक एवं ब्रह्मज्ञान से परिपूर्ण हैं। इसमें वेद–कुर्आन आदि धर्मग्रंथों के रहस्य तथा चर्चनी–चितवनि का अद्भूत संगम है। यद्यपि श्री कुल्ज़म स्वरूप वाणी में परिक्रमा ग्रंथ में परमधाम 25 पक्ष का विस्तृत वर्णन हुआ है, तदापि श्री लालदास जी कृत बड़ी वृत्त में एक अलग ही शैली में परमधाम की शोभा एवं लीलाओं का वर्णन किया गया है, जिसे पढ़ते हुए अनायास ही समाधि सा आनंद प्राप्त होने लगता है।

परमधाम की शोभा समझाने वाला चर्चनी का विषय अवश्य ही सामान्य सुंदरसाथ के लिये क्लिष्ट प्रतीत होता है, किंतु आज के समय में आधुनिक मल्टीमीडिया संसाधनों के द्वारा उतना कठिन नहीं रह गया है। आवश्यकता है मात्र जिज्ञासा की। चर्चनी के विषय को

कर्मकाण्ड या मात्र बौद्धिक विषय समझना एक बहुत बड़ी भूल है क्योंकि यदि यह एक अनावश्यक ज्ञान होता तो इसका वाणी (परिक्रमा) में कभी भी समावेश नहीं किया जा सकता था। हमें 25 पक्ष का जितना भी ज्ञान होगा वह हमारे लिये उतना ही आध्यात्मिक लाभ दायक माना जायेगा, परमधाम के आनंद में वह उतना ही सहायक सिद्ध होगा।

पचवीस पख छे आपणा, तेमा कीजे रंग विलास।
प्रगट कहया छे पाधरा, तमे ग्रहजो सहु साथ।। रास 1/79
सातों घाट ए कहे, आगे पुल कुंजवन।
अपना खजाना एह है, महामत कहे मोमिन।।परि. 6/51

मुझे विश्वास है कि इस ग्रंथ का मनन, मंथन करके और फिर इसे चितवन में ले करके आत्मखोजी जन निजानंद का रसपान कर पायेंगे। इस ग्रंथ का विशेष आनंद लेने के लिये जिज्ञासु आत्माएं समाज में प्रचलित परमधाम के नक्शों का सहारा लेंगे तो बड़ा ही आनंद आयेगा। विशेष रूप से रंग–बिरंगे नक्शों से भरपूर श्री परमधाम पटदर्शन ग्रंथ, श्री परमधाम चर्चनी–चितवनि ग्रंथ और 'धाम सुषमा' ग्रंथ उपयोगी होंगे।

प्रिय सुंदरसाथ जी, श्री प्राणनाथ जी के रूप में जाहिर होने वाले श्री मिहिरराज जी के तन का प्रकटन संवत् 1675 में हुआ। संवत् 2075 में उनके प्रकटन को 400 वर्ष पूर्ण होंगे। हमारा परमसौभाग्य है कि हमारे जीवन काल में सम्पूर्ण निजानंद (प्रणामी) आलम संवत् 1675 के वर्ष (2 अक्टुबर 2017 से 2 अक्टुबर 2018) दरम्यान विश्व भर में **''श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान''** के अंतर्गत **''श्री प्राणनाथ प्रादुर्भाव चतुर्थ शताब्दी महोत्सव''** मनायेगा। आने वाले वर्षों में हम प्रियतम प्राणनाथ अक्षरातीत परब्रह्म का दिव्य तारतम ज्ञान जन–जन तक पहुंचायेंगे। ब्रह्मज्ञान का वितरण, आत्म–जागनी शिविरों का आयोजन और सेवा के विविध प्रयोग किये जायेंगे। ''प्रेम ब्रह्म दोऊ एक हैं'' का श्री प्राणनाथ जी का दिव्य संदेश जन–जन तक पहुंचाकर

''सुख शीतल करूं संसार'' का उनका दिव्य सपना कैसे साकार हो सकता है? ये बात खुद समझेंगे और सबको समझाने का प्रयास करेंगे।

श्री लालदास जी की बड़ी वृत को सुंदरसाथ के मध्य प्रकाश में लाने का श्रेय श्री विंध्याचल दास जी शास्त्री को जाता है, जिन्होंने 20 वर्ष पूर्व हस्तलिखित प्रति से छपवाकर सुंदरसाथ की सेवा की थी। इस के बाद पुराल ग्राम के सुंदरसाथ ने बड़े अक्षरों में छपवाकर सेवा की। आज इसी लक्ष्य की परिपूर्ति के रूप में ही यह बड़ी वृत की टीका प्रस्तुत है। इस प्रकार की टीका प्रकाशित करने का सर्व प्रथम प्रस्ताव लॉर्ड प्राणनाथ डिवाईन सेंटर, जार्जिया, यु.एस.ए. के सेवादार युवा सुंदरसाथ क्रुणाल एम. पटेल ने रखा। उन्होंने इसे सम्पन्न करने के लिये अपना सेवा सहयोग भी प्रदान किया है। ब्रह्मवाणी एवं परमधाम चर्चनी विशारद पूज्य श्री विंध्याचल जी महाराज ने इस सेवा के अवसर को पहचान लिया। साथ–साथ जागनी सेवा के नये–नये प्रयोगों में हर पल तत्पर रहने वाले सुशांतजी महात्मा ने श्री निजानंद आश्रम में बैठकर इस में चार चांद लगा दिये। इस ग्रंथ को अंतिम रूप देने में जयपुर सुंदरसाथ किरण बहन और अनिता बहन की टीम ने नरेंद्रपटेल, यु.एस.ए. को लगातार सहयोग दिया है। श्री पारेन पटेल ने प्रुफ रीडिंग में महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। इस ग्रंथ की कवर डिजाईन और परमधाम के चित्रों के सेटींग की सेवा स्क्रेन्टन, पेन्सिलवेनिया के सुंदरसाथ श्री प्रभुशंकर ने प्रेम से निभायी है।

मैं इन सभी सेवादार विद्वतगण और सुंदरसाथ का हार्दिक धन्यवाद करता हूं। अवश्य ही आने वाले सुंदरसाथ श्रद्धालुजन इस से अपने प्रेम सेवा धर्म के मार्ग पर प्रेरित होंगे और **श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान** को आगे बढ़ायेंगे।

सप्रेम प्रणाम जी

रमणभाई के. पटेल तथा मनुभाई ऐ. पटेल

श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान

श्रीनिजानंद आश्रम, वडोदरा

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पेज नं.
1.	ढूंढें शबे मेयराज को,	10
2.	हक़ीकत इसलाम की	21
3.	श्री धाम लीला का बरनन लिख्या है	34
4.	गिनती हवेलियों के मंदिरों की	40
5.	इन हवेलियों के द्वार	49
6.	थंभन का सुमार	55
7.	थम्भन के मेहेराब	62
8.	मूल मिलावे की चार हवेलियां	71
9.	मूल मिलावे फिरते थम्भन के मेहराब	79
10.	गलियों के स्तम्भ के मेहराब	87
11.	पोर गली चबूतरे	96
12.	चार हार हवेलियों की पौरी	105
13.	पौरियों आगे चबूतरे	112
14.	चौक रसोई मूल मिलावे लों	121
15.	मूल मिलावे का प्रकरण	131
16.	दूसरी भोम की भुलवनी	152
17.	भोम तीसरी	162
18.	तीसरी भोम के छज्जा पर आरोगना	183
19.	श्री नवरंगबाई का नृत्य व अक्षर ब्रह्म को दर्शन	189
20.	भोम चौथी	198
21.	निरत शोभा चौथी भोम में,	217
22.	भोम पाँचवी सेज्या सुख	223
23.	भोम छठी लिखी है	242
24.	भोम सातमी	253
25.	भोम आठमी	262
26.	भोम नवमी लिखी है	276
27.	दशमी भोम चाँदनी	288
28.	अब सबकी जमा को प्रकरण	306
29.	कलस लिखा है	310
30.	धाम का बरनन नवों भोम का तमाम हुआ ।	340
31.	प्रकरण दीन इस्लाम का	343
32.	अब कहूं चांदनी चौक की	362

33. पांच हिस्से चांदनी के, 366
34.दोए चबूतरे दरम्यान के, 369
35.धाम के सनमुख 373
36. जांबू घाट 379
37. बट पीपल की चौकी 385
38. फूल बाग लिखा है 390
39. नूर बाग लिख्या है 398
40. अब अन्न वन लिखा है 402
41. अब कहूं लाल चबूतरा, 405
42. छन्द महाराजा को लिखा है 409
43. दस हाँस की विधि 422
44. ताड़ वन को प्रकरण 426
45. बड़े वन के दरखत 432
46. अब कहू मधुवन की 437
47. पहाड़ जो पुखराज का, 441
48. ए जो चारों थम्भ कहे, 444
49. पुखराज की 447
50. पुखराज पहाड़ की हजार हाँस की हवेलियों 452
51. पुखराज पहाड़ के हजार हांस के महलों की चांदनी 458
52. पुखराज पहाड़ चांदनी के बड़े चारो दरवाजों की शोभा 462
53. पुखराज पहाड़ के आकाशी मोहोल 466
54. आकाशी महल के गुरजों का बेवरा 472
55. पुखराज पहाड़ के आठ पेड़ (पुखराजी ताल) का बेवरा 474
56. पुखराजी ताल का बेवरा 478
57. पुखराजी ताल की पाल का बेवरा 481
58 इत कई हारों दरखतों की, 483
59.तले कहे फिलपाए, 484
60. अब कहूं हकीकत कुण्ड की 486
61. अब फेर कहूं ऊपर कुण्ड की, 488
62. इत आई मेड़ दोए पहाड़, 490
63. ए जो एक चबूतरा, 491
64. चेहेबच्चों की शोभा 492
65. ए जो हजार हांस चबूतरा, 493
66..बंगलन की भोम मंदिर 498

67. अब कहूं दूसरा कुण्ड (मूलकुंड)	500
68. ढ़पी जमुना	503
69. पुल की विधि	505
70. पुल के अंदर की विधि	509
71. पुल निकट केल घाट	511
72. अब कहूं लिबोई घाट की,	514
73. अनार को घाट	516
74. पाटघाट	520
75. अमृत बन की शोभा	524
76. हक सूरत की साइत	532
77. इश्क रबद का प्रकरण	536
78. हक तरफ की खोज	552
79. चांदनी चौक से पार घाट ताई	570
80. जाम्बू घाट	573
81. नारंगी घाट	581
82. बट घाट	590
83. पुल की हकीकत	600
84. पुल मोहोल अंदर	603
85. एक मोहोल एक चबूतरा	612
86. जमुना जी की मरोर	618
87. यमुना जी के मरोर से हौजकौसर तालाब तक	624
88. कुंजवन	625
89.अब कहूं हौज की	641
90. हौज के ताल की पाल	653
91. ए तो कही गृद पाल की,	664
92. धाम अंदर का मंगलाचरण	671
93. आठ सागर लिखें हैं	677
94. नूर सागर	682
95. इलम लुदन्नी	688
96. सागर	691
97. रंग मोहोल	695
98. सागर रांग जिमी नूर	698
99. रंगमहल की दक्षिण दिशा में सागर की शोभा	705
100.नूर सागर की विशेषताएं	710

101 ए पेहेचान मारफत का	717
102. अरस अजीम वाहेदत में	721
103. आठों सागर	724
104. नीर सागर	726
105. पश्चिम दिशा के विषे,	728
106. पश्चिम उत्तर दरम्यान में,	729
107. उत्तर दिश देखिए	731
108. ईशान कोने में निसबत का रस सागर	732
109. पूरब दिश सागर	734
110. आठो सागर सम्पूर्ण : क्षीर सागर	736
111. हक इलम देखावे अरफान	740
112. पीए प्याले इशक सुरधीर	745
113. नूर दधि सागर शीतल	751
114. नूर पश्चिम दिश पूरब	756
115. ए सुख अतीत हमेशा	760
116. नूर वाहिदत पुर रोशन	767
117. घृत सागर	773
118. जहूर समान सागर	775
119. मोमिन परछाले	780
120. सब विध इलम नजर	786
121. उत्तर दिस मधु सागर	790
122. सब सुख समूह अंग के	795
123. एह रस जाने सुजान	801
124. सुख उपजत रूहों को	807
125. अमृत सागर	812
126. आठो सागर असवारी	817
127. नूर नजर भर देखिये	824
128. अब बाहिर अन्दर देखिए	834
129. नूर खूबी सुख सागर	839
130. सर्व रस सागर के अपरम्पार सुख	843
131. ए सब रस सब विध सब सुख	848
132. नूर सबों अंगो उपजाए	853
133. अर्जी धाम चलने की	860

श्री राज श्यामा जी

अथ स्वामी श्री लाल दास जी रचित बड़ी वृत

वृत का अर्थ होता है.गोल। जिस प्रकार पृथ्वी गोल होने से उसे वृत कहते हैं उसी प्रकार परमधाम भी गोल होने से उसे भी वृत कहा गया है। बड़ी वृत से तात्पर्य है. परमधाम का विस्तृत वर्णन। यह वृत अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी की पांच दिव्य शक्तियों द्वारा ब्रह्म मुनि श्री लालदास जी के तन से सभी ब्रह्मात्माओ के सुख के लिये श्री जी के वर्तमान काल में (विक्रम संवत १७४०-१७४८ दरम्यान) श्री ५ पद्मावती पुरी धाम पन्ना में प्रगट हुई है ।

निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत ।
सो तो अब जाहिर भए, सब विध वतन सहित ।।

मेरी वास्तविक पहचान (निज-नाम) यह है कि मैं नश्वर क्षर एवम् अविनाशी अक्षर ब्रह्म से परे रहने वाला वह अनादि उत्तम पुरुष अक्षरातीत हूँ, जिसने इस आत्म जागनी लीला से पूर्व श्री कृष्ण नाम से ब्रज मंडल एवम् रास मंडल में ब्रह्म लीला की है । मेरी इन गुह्य लीलाओं के भेद एवम् हमारे मूल वतन परमधाम, जो सत्, चित्त, आनंद, अनन्त और अद्वैत है, की हर प्रकार की ब्रह्म ज्ञान रूपी निधि सहित मैं अब इस संसार में जाहिर हो रहा हूँ ।

ढूंढें शबे मेयराज को, शबे मेयराज में सब ।
सो शबे मेयराज जाहिर करी, सो शब मेयराज देखसी अब ।।१।।

सृष्टि के सभी मनुष्य एक पूर्ण ब्रह्म परमात्मा (Supreme Truth God, Allah) *के दर्शन (मेयराज) की उस रात्रि के रहस्यों को जानने का प्रयास करते हैं, जिसमें मुहम्मद स.अ.व. को खुदा तआला ने नब्बे हज़ार हरूफ बातें (कलमात) कही थी। उनमें से तीस हज़ार हक़ीकत (ज्ञान) व तीस हज़ार मारिफत (ब्रह्म विज्ञान) की बातें, जो कि सबसे महत्त्वपूर्ण हैं, अभी भी रहस्यमयी बनी हुई हैं । अब उन रहस्यों को स्वयम् परब्रह्म अपनी हकी सूरत (मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां - महमत) अपने तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) द्वारा प्रकट कर रहे हैं । इस के फल स्वरूप सृष्टि के सभी मनुष्य अब इस वर्तमान जागनी लीला में ही परब्रह्म के स्वरूप धाम व लीला का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेंगे ।*

कहूं राह हक़ीकत मोमिनों की, मारफत मोमिन पेहेचान ।
बका ठौर कायम की, रहे मोमिन दिल आसान ।।२।।

अब मैं (ब्रह्म मुनि श्री लालदास जी के हृदय में विराजमान महामति जी)

ब्रह्मात्माओं (ब्रह्म सृष्टि, मोमिनों) की हक़ीकत (सत्य ज्ञान) का मार्ग प्रकट करता हूँ। परब्रह्म के अप्रगट परम सत्य (मारफत) स्वरूप की पहचान कर लेना ही ब्रह्मात्माओं का लक्षण है । अखण्ड परमधाम के दिव्य सुखों का चिंतन व ध्यान करना मोमिनों के दिलों के लिये आसान होता है ।

सुनो मोमिनों अरस की, बीतक तुमारी ठौर ।
तुम बिना बका मिने, पोहोंच न सके कोई और ।।३।।

हे ब्रह्मात्माओं ! परमधाम (अर्श आज़म) जो तुम्हारा मूल घर है, वहाँ की नित्य आनंदमयी लीला की तुम्हारी बीतक सुनाता हूँ, उसे ध्यान से सुनो । उस दिव्य अखण्ड परमधाम में तुम्हारे बिना और कोई पहुंच ही नहीं सकता ।

कहूं बका की बीतक, जहां न काहूं की गम ।
एह तुम को केहेलावत, हक़ सुभान का हुकम ।।४।।

अब उस परमधाम की लीला का वर्णन कर रहा हूँ, जहाँ तक किसी की पहुँच नहीं हो पायी । प्रियतम परब्रह्म का हुकम (हृदय की इच्छा) ही आप को जगाने के लिए यह मेरे द्वारा कहलवा रहा है ।

सब कोई साहेदी देत हैं, अपने अपने मुख ।
पर आप समझ ना सकें, ए क्यों पावें अखंड सुख ।।५।।

सभी धर्मावलम्बी अपने-अपने मुख से (अपने धर्मग्रंथों के आधार पर) उस परमधाम की साक्षी तो देते हैं, किंतु तारतम ज्ञान के अभाव में वे खुद ही इसकी वास्तविकता को नहीं समझ पाते हैं, ऐसी स्थिति में भला वे उस अखण्ड सुख को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

देऊं साहेदी वेद कतेब की, कही भाषा अपनी दोए ।
ए लेने वाले मोमिन, जाको हके हिदायत करी सोए ।।६।।

वेद शास्त्र और कुर्आन आदि धर्म ग्रंथों की साक्षी देकर परमधाम की बात कहूँगा । इन दोनों पक्षों के ग्रंथों में परमधाम की बातें अपनी भाषा (संस्कृत और अरबी) में कही गयी हैं। इन साक्षियों को ग्रहण करने वाले सिर्फ वही ब्रह्म मुनि है, जिनके दिलों में बैठकर खुद खुदा ही उन्हें समझाते हैं ।

प्रथम वचन वेद में, दई साहेदी सब शास्त्रन ।
ए गिरो रब्बानी समझहीं, जिनका दिल रोशन ।।७।।

सृष्टि के आदि में सबसे पहले ज्ञान वेदों के रूप में आया। उसमें तथा

अन्य सभी धर्म शास्त्रों में दिव्य परमधाम की साक्षियाँ दी गयी हैं । इस हक़ीकत को वे ब्रह्मात्माएं ही समझ सकती हैं, जिनका दिल तारतम ज्ञान से प्रकाशित हो गया है ।

वेद का सार उपनिषद, और सार वेदान्त वचन ।
अद्वैत के ठेहेराई के, जाथें होवे दिल रोशन ।।८।।

वेदो का सार उपनिषद् है तथा उपनिषदों का सार वेदान्त के वचन हैं । इसमें परब्रह्म को अद्वैत स्वरूप ही दर्शाया गया है, जिसे समझ जाने पर हमारा हृदय ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित हो उठता है ।

और वेद को सार कह्यो भागवत, सुके कही मुख बान ।
तामें सिफ़त परमहंस की, करावे ब्रह्म सृष्ट पेहेचान ।।९।।

साथ ही श्री मद् भागवत ग्रंथ को भी वेद का सार कहा गया है, जिसकी चर्चा शुकदेव मुनि ने अपने मुखारविन्द से की है । उस में भी परमहंसो की जो महिमा लिखी हुयी है, वह ब्रह्म सृष्टियों की ही पहचान करा रही है ।

गाई लीला अछरातीत की, औरो नाहीं अक्षर लों गम ।
सक सबों की चली गयी, बेशक न भई आतम ।।१०।।

श्री शुकदेव मुनि ने तो भागवत ग्रंथ में अक्षरातीत परब्रह्म की अखण्ड ब्रज व रास लीला का गुणगान किया है, किन्तु दूसरे किसी को तो अक्षर ब्रह्म का भी ज्ञान नहीं हो पाया है । देखने में सब के संशय तो दूर हो गये, किन्तु वास्तव में किसी की भी आत्मा बेशक नहीं हो पायी है ।

उरझन वेद कतेब की, सुलझाए ना सके कोई जन ।
ए सुलझावे एक मोमिन, जाके हक़ कदम तले तन ।।११।।

वेदों और कतेब धर्मग्रंथों की मार्मिक बातों का खुलासा आज दिन तक कोई भी नहीं कर सका है । उन रहस्यों को एक मात्र ब्रह्म सृष्टि ही खोल सकती है क्योंकि इनके दिव्य नूरी परआतम के तन परमधाम स्थित मूलमिलावे में प्रियतम परब्रह्म के श्री चरणों में बैठे हैं ।

नोंट : परमधाम की हर चीज़ इश्कमयी और नूरी है । ब्रह्म सृष्टियों के नूरी तन को परआतम कहते हैं । यह नूर सत्, चित्, आनंदमयी, अति कोमल और सुगंधी पूर्ण है । संसार के प्रकाश से कई तरह से विशेष है ।

शास्त्रों तीनों सृष्ट कही, एक जीव इश्वरी ब्रह्म ।
सुपन सृष्ट जीव कही, ईश्वरी जागृत आतम ॥१२॥

शास्त्रों में तीन प्रकार की सृष्टियों का वर्णन आया है । (१) जीव सृष्टि (२) ईश्वरी सृष्टि (३) ब्रह्म सृष्टि । जीव सृष्टि को स्वप्न की सृष्टि और ईश्वरी सृष्टि को जागृत आत्मा कहा गया है ।

सृष्ट ब्रह्म की ब्रह्म समान है, जाके सच्चिदानन्द लछन ।
जो इनों ही को निसां करो, पावे अखण्ड ठौर रोशन ॥१३॥

ब्रह्म सृष्टि ब्रह्म के समान होती है, और उनके लक्षण (रहनी) परब्रह्म के समान सच्चिदानंदमयी ही होती है । जो कोई इन्हे पहचान कर सेवा कर लेता है, उसे (उनसे ब्रह्मज्ञान प्राप्त होकर) अखंड मुक्ति प्राप्त हो जाती है ।

ए कह्या बेवरा तीन सृष्ट का, नेहेचे करी तीनों सृष्ट ।
भय मिटो तापे काल को, पावे अखंड ठौर इष्ट ॥१४॥

इस प्रकार मैंने तीन सृष्टियों का विवरण कहा । तीनों सृष्टियों ने यह निश्चय किया है कि किसी तरह से काल-मृत्यु का भय मिट जाये और अखण्ड धाम व इष्ट (परब्रह्म) की प्राप्ति हो जाये । (देखिये चौ.१६ "कर दावत तीनों पर")

ए कह्या तीनों का बेवरा, एही कह्या फिरकान ।
एक आम ख़ास ख़ासल ख़ास, पावें मोमिन संग पेहेचान ॥१५॥

वेदो में जिन्हें जीव, ईश्वरी और ब्रह्म सृष्टि कहा गया है, कुर्आन में उन्ही को क्रमशः आम, ख़ास और ख़ासल ख़ास कहा है यह पहचान ब्रह्मात्माओ की सोहोबत से होती है ।

हुआ हुकम महंमद को, कर दावत तीनों पर ।
एक को मेरी सूरत, बताए दे सबों ऊपर ॥१६॥

अल्लाहताला (अक्षरातीत, परब्रह्म) ने मुहम्मद साहब को हुकम दिया कि इन तीनों सृष्टियों को सत्य, ज्ञान एवं शांति के मार्ग में आने की दावत दे दो, लेकिन उनमें से मेरी सूरत सिर्फ़ ख़ासल ख़ास उम्मत (ब्रह्मात्माओं) को ही बताना।

सो ख़ासल ख़ास उम्मत, वे वास्ते हुए हासल ।
इन बराबर चौदे तबकों, याकी ना कोई मिसल ।।१७।।

वे ख़ासल ख़ास उम्मत ही ब्रह्मात्माएं हैं, जिनके कारण ही जगत् को मोक्ष प्राप्त होगा । चौदह लोकों में ब्रह्म सृष्टि के तुल्य कोई नहीं है ।

दूसरी ख़ास गिरो कही, जो मुतकै परहेजगार ।
इनों को नरमी से कहे, ज्यों पावे परवरदिगार ।।१८।।

दूसरी ख़ास गिरोह ईश्वरी सृष्टि की है जो बुरे कर्मो से परहेज रखती है। इन्हें नम्रता से समझाना, जिससे ये भी पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की पहचान कर लें ।

तीसरी उम्मत आम कही, जिनो पकरी सरीयत ।
सो करे लड़ाई तुमसों, करे जंग तिन सों नित ।।१९।।

तीसरी उम्मत (सृष्टि) आम खलक (जीव सृष्टि) कही गयी है, जो कि सिर्फ शरीयत को प्राधान्य देगी । वे तुमसे हमेशा झगड़ा (विरोध) करेगी ।

यों कह्या कलाम अल्ला में, यों कहे हदीस कलाम ।
यो हीं हक़ कहत हैं, करें दावा बीच इसलाम ।।२०।।

इस तरह से तीनों सृष्टियो का वर्णन कुर्आने पाक एवम् हदीसों के वचनों में किया गया है । ब्रह्मवाणी में भी इसी प्रकार कहा गया है । तीनों ही सत्य धर्म (हकीकी दीने इस्लाम) का दावा करेंगे ।

सब तीनों सृष्ट पुकारहीं, सबों का दावा एक ।
साहेदी सब कोई लेय के, करी भाषा अपनी अनेक ।।२१।।

सभी तीनो सृष्टियां पुकारेंगी कि वे ही परमात्मा के सत्य धर्म में हैं, और वे ही ख़ासल ख़ास ब्रह्म सृष्टियां हैं । उन्होने अलग-अलग भाषाओं में लिखे गये अपने-अपने धर्म ग्रंथों की साक्षियां लेकर परमात्मा के अनेकों नाम रख दिये हैं ।

सृष्ट तीनों कही कबीर ने, एक परमहंसो हंसो नाम ।
तीसरी सृष्ट सब जीव की, सब भिस्त पावे एक ठाम ।।२२।।

कबीर साहब ने भी अपने 'बीजक' ग्रंथ में तीन प्रकार की सृष्टियों का वर्णन किया है । पहली परमहंस, दूसरी हंस व तीसरी समस्त जीव सृष्टि । ये सभी (जीव) एक ही जगह (बेहद मण्डल में) मुक्ति पाएंगी ।

यों ही तीन सृष्ट सब पुकारहीं, करत दावा सब कोए ।
ए लड़ाई अव्वल सों आखर लों, यों ही चली जात है सोए ।।२३।।

इस प्रकार तीनों सृष्टियाँ पुकार पुकार के एक ही दावा (ब्रह्म सृष्टि होने का) करती हैं । सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अंत तक इसी प्रकार द्वेष भावना चली आ रही है ।

अब आए पोहोंची सो सरत आखर, यों कह्या दीन क्यामत ।
सातों निसान भए जाहेर, तिन कायम करी साएत ।।२४।।

अब वही आखिरत का समय आ गया है, जिसे कियामत का दिन भी कहा गया है । कियामत के सातों निशान जाहिर (प्रकट) हो गये हैं, इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) ने ब्रह्मांड को कायमी (अखंड मुक्ति) का इनाम दे दिया हैं ।

कहूं नाम निसान सातों के, देखो मोमिनों तुम ।
हक़ सुभान ने तुम को, दिया अपना इलम ।।२५।।

हे मोमिनों, अब मैं आपको कियामत की सातों निशानियों का वर्णन करूंगा, उसे ध्यानपूर्वक देखिये । हक़ सुभान श्री राज जी ने तुम्हें अपना दिव्य तारतम ज्ञान प्रदान किया है ।

कही दाभतल अर्ज़ मक्के से, आजूज माजूज भए जोर ।
भई लड़ाई दज्जाल सों, सो जाहिर भई ठौर ठौर ।।२६।।

क़ुराने शरीफ में पहला निशान कहा गया है कि दाभतूल अर्ज़ नाम का जानवर मक्के से जाहिर होगा । दूसरा निशान आजूज माजूज का है, अर्थात् दिन रात रूपी दुनी के काल कहे गये हैं तथा तीसरा निशान दज्जाल (अज्ञानता) का है, जिसके साथ इमाम महदी साहिबुज्जमां एवं मोमिनों की जगह जगह लड़ाई हो रही है ।

ए राह बातून इसलाम की, और दाखल करें मोमिन ।
ए सामी दीन सों लरे, मारी राह दज्जाल रोशन ।।२७।।

सत्य धर्म की ये बातिनी (गुह्य) राह है । इसमें ब्रह्मात्माएं ही धर्म के बातिनी भेदों को बताकर सबको दाखिल करेंगे, अर्थात् धर्म की राह पर लाएंगे । स्वार्थ प्रवृत्ति और कलयुगी बुद्धि वाले मनुष्यों के अंदर बैठकर दज्जाल मोमिनों से लड़ाई करेगा ।

हज़रत ईसा उतरे, करी इमामे इमामत ।
बिना रोशनी सूरज मगरब, पोहोंची आखरत की साएत ।।२८।।

चौथा निशान हज़रत ईसा रूह अल्लाह का पुनः आगमन जो कि सतगुरु श्री देवचंद्र जी के रूप में प्रकटे हैं । पांचवा निशान इमाम महदी साहिबुज्जमां का है, जो कि अर्श बका पर सिज्दा कराके इमामत करेंगे । छठा निशान पश्चिम से बिना रोशनी के सूर्य का उदय होना है।

खुले क़ुरान के माएने, जबराइलें कियो जोर ।
चौदे तबकों हुआ जाहिर, हुई रोशनी बका ठौर ठौर ।।२९।।

अब क़ुरान के गूढार्थ प्रकट हो गये है, जिब्रील (परब्रह्म के जोश) ने महामति जी के तन में विराजमान होकर पूर्ण शक्ति लगा दिया । अखंड परमधाम का ज्ञान चौदह लोको में जाहिर हो गया है । चारों तरफ ब्रह्मज्ञान का प्रकाश फैल गया है ।

और हक़ीकत मारफत की, खोले इमामें सब द्वार ।
सो पाया सारे विश्व ने, अपना परवरदिगार ।।३०।।

इमाम महदी साहब ने हक़ीकत (सत्य ज्ञान) तथा मारिफत (परम सत्य) का मार्ग खोल दिया है । इस प्रकार सारे संसार ने अपने पालनहार परमात्मा की पहचान कर ली है ।

सब लगे करने बंदगी, जो मिसल जिन ठौर ।
जुदी जुदी सफे खड़ी भई, ईसे लेलतकदर करी भोर ।।३१।।

इस प्रकार सारी दुनिया वाले अपने अपने देश, भाषा और संस्कृति के अनुसार एक परब्रह्म अक्षरातीत की बंदगी करने लगे और अलग अलग पंक्ति (रहनी) में सभी सृष्टि के जीव खड़े हो गये । ईसा रूह अल्लाह ने अपने दूसरे जामे अर्थात् श्री महामति जी के तन में आकर सबको पूर्ण ब्रह्म अल्लाहताला की पहचान करा दी । इस प्रकार ब्रह्मज्ञान का उजाला (प्रभात) कर दिया ।

ए इसारतें रमूजे, पाइए मोमिनों की सोहोबत ।
जिन चीन्हा हक़ हादीय को, ताको हुई मवसर निसबत ।।३२।।

जिन मोमिनों ने पूर्ण ब्रह्म अल्लाह तआला की पहचान करके निसबत का फल प्राप्त कर लिया है, उनकी संगत से ही धर्म ग्रंथों के भेद जाने जा सकते हैं ।

सो सृष्ट ब्रह्म की मोमिन, जाको महंमदे दिया पैगाम ।
ल्याई कुंजी ईसा रूह अल्ला, सो दई हाथ मेहेंदी इमाम ।।३३।।

वो ब्रह्म सृष्टि ही मोमिन हैं, जिनको बसरी स्वरूप मुहम्मद साहब ने क़ुरान ए पाक के रूप में संदेश लाकर दिया है । मल्की स्वरूप ईसा रूह अल्लाह (श्री देवचंद्र जी) तारतम ज्ञान रूपी कुंजी लेकर आये, उसे हकी स्वरूप महामति जी को दिया ।

करे विजया अभिनंदन, नूर जाग्रत बुध अवतार ।
कलंक मेट नेहकलंक करी, किया बका अखण्ड संसार ।।३४।।

विजय उनका (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप का) अभिनंदन करेगी । उनके हृदय में जाग्रत बुद्धि अवतरित होगी । ब्रह्म ज्ञान द्वारा अज्ञानता का नाश करके एक पूर्ण ब्रह्म की पहचान करवा कर संपूर्ण मानव जाति को अखण्ड मुक्ति का इनाम देंगे ।

एक साहेब वेद कतेब में, सब तिन की लिखी मजकूर ।
सो साहेदी नेक हुकमें, बका जाहेर किया नूर ।।३५।।

वेदों और कतेबों में एक परब्रह्म का ही वर्णन है । उनकी ही सारी बातें लिखी हैं । पूर्ण ब्रह्म के हुक्म से उनमें से कुछ साक्षियाँ देते हुए अखण्ड परमधाम का ज्ञान जाहिर किया जा रहा है ।

हके भेजा मोमिनों पर, ए जो पैगंम्बर आखरी ।
जो लिखी हक़ीकत फुरमान में, सो ब्रह्म सृष्ट दिल धरी ।।३६।।

हक़ परवरदिगार ने आखिरी पैगम्बर मुहम्मद साहब को मोमिनों के वास्ते ही भेजा है । कुर्आने पाक में मुहम्मद साहब ने जो परमधाम की हक़ीकत (सत्य ज्ञान) संकेतों में लिखी है, उसे ब्रह्म सृष्टियों ने पहचान कर दिल में धारण कर लिया है ।

हके आंगू लिया दिल में, आवें रूहें बीच इन्सान ।
ये खेल किया तिन वास्ते, पेहेचान वास्ते ईमान ।।३७।।

परब्रह्म अक्षरातीत श्री राज जी ने पहले ही अपने दिल में यह बात ले ली थी कि ब्रह्म सृष्टियाँ संसार में मानव तन को धारण करेंगी । यह संसार रूपी खेल उन ब्रह्मात्माओं के लिये ही बना है । ताकि इसके माध्यम से उनके ईमान व इश्क की परीक्षा हो सके ।

महंमद हक़ के नूर से, दुनियां भई महंमद के नूर ।
चाहे कायम तिन को करे, दे ईमान बका सहूर ।।३८।।

मुहम्मद साहब परब्रह्म हक़ तआला के नूर (शक्ति) से हैं, तथा दुनिया मुहम्मद के नूर (शक्ति) से बनी है । इसलिये मुहम्मद (हकी सूरत) दुनिया वालों को अखण्ड परमधाम का ज्ञान व ईमान देकर अखण्ड मुक्ति प्रदान करना चाहते हैं ।

पैगंम्बर का माजजा, जो देवे सबों ईमान ।
एक दीन दुनी करे, सरत कायम क्यामत निसान ।।३९।।

मुहम्मद साहब का चमत्कार (भविष्य कथन का सही सिद्ध होना) ही सारी दुनिया को सत्य ज्ञान पर विश्वास दिलायेगा तथा आखिरत की इस मुकद्दस बेला में कियामत की निशानियां देखकर सारी दुनिया एक दीन (धर्म) हो जायेगी ।

रूह अल्ला की आवसी, खोलने बका द्वार ।
अंत सदीय दसमीय की, अग्यारे आखरकार गुज़ार ।।४०।।

हज़रत ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा जी) इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) लेकर दसवीं सदी के अंत में अखण्ड परमधाम का दरवाजा खोलने आयेंगे तथा ग्यारहवी सदी में (दूसरे जामे में) अपना कार्य पूर्ण करेंगे ।

होए मिलावा रूहन का, कही गाजी मिसल सोए ।
हक़ खिलवत खाना होवे जाहेर, बका पेहेचाने सब कोए ।।४१।।

क़ुराने पाक में जिन रूहों को मर्दों की जमात कहा है, उनका मेला होगा और हक़ तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) की खिल्वत (आत्मा-परमात्मा का धाम) जाहिर हो जायेगी । सबको अखंड परमधाम की पहचान हो जाएगी ।

होए महंमद की सिफाएत, पहले उपर इन मोमन ।
तिन ख़ासल ख़ास की सोहबतें, हुए मुत्तकै दिल रोशन ।।४२।।

मुहम्मद साहब की सिफायत (अनुशंसा) सर्वप्रथम इन्ही मोमिन आत्माओं पर होगी अर्थात् कुर्आने-पाक के भेद सबसे पहले मोमिनों को समझ में आएंगे । मोमिनों की संगत से ईश्वरी सृष्टि को भी ब्रह्मज्ञान मिल जाएगा, जिससे उनका दिल भी रोशन हो जायेगा ।

तिनसों पाया पैगंबरों, कहे एक लाख चोबीस हज़ार ।
तिन सेती सब दुनी को, खुले बका भिस्त द्वार ।।४३।।

ईश्वरी सृष्टि के द्वारा एक लाख चौबीस हज़ार पैगम्बरों को ब्रह्मज्ञान प्राप्त होगा । फिर उन पैगम्बरों के द्वारा सारी दुनिया को परब्रह्म अक्षरातीत श्री राज जी की पहचान होगी, तब सारी दुनिया अखण्ड मोक्ष प्राप्त करेगी ।

तिनसों चौदे तबकों, हुई रोशनी लग नूर ।
कलाम अल्ला का माजजा, हुआ सब जहान में ज़हूर ।।४४।।

उस दिव्य तारतम ज्ञान के द्वारा सारी दुनिया को आत्मा-परमात्मा की पहचान हो जायेगी । अक्षर ब्रह्म के हृदय में भी ब्रह्मज्ञान का प्रकाश हो जायेगा । इस प्रकार अल्लाह कलाम (परब्रह्म की वाणी) क़ुरान ए पाक में वर्णित भविष्यवाणी सारी दुनिया आश्चर्यजनक रूप से पूर्ण होते देखेगी ।

एक दीन एक राह हक़ की, सो भया दीन इसलाम ।
सब दाखल भए तिन में, पाई भिस्तें आठो जाम ।।४५।।

उस समय परमात्मा का एक सत्य धर्म, सत्य मार्ग दीने इस्लाम हकीकी (सत्य शांति का मार्ग) रह जायेगा, सारी दुनिया उस दीन में शामिल हो जाएगी और सत्य ज्ञान के द्वारा आठों बहिश्तों (मुक्ति स्थानो) में अखण्ड मोक्ष की प्राप्ति कर लेगी ।

साएत जो अरस अज़ीम की, सो कायम भई जब ।
मोमन अपने अरश में, उठ बैठे हुए तब ।।४६।।

अर्श आज़म (दिव्य परमधाम) की वह घड़ी (जागनी लीला) जब अखण्ड हो जायेगी, तब मोमिन ब्रह्मात्माएं अपने धाम (मूल मिलावे) में अपनी परआतम में जागृत हो जायेंगे ।

हुए मुक़ाबिल हक़ के, बातें करने लगे सनमुख ।
बीतक बात केहेने लगे, क्यों कहूं जुबांए सुख ।।४७।।

श्री राज जी के सम्मुख जाग्रत होकर ब्रह्म प्रियाएँ प्रियतम अक्षरातीत से इस खेल में घटित अपनी-अपनी आप बीती कह कर जो सुख लेंगी, उन सुखों का ब्यान नहीं किया जा सकता है ।

हंस हंस के गिर गिर परे, ऊपर एक दूजी के ।
लगे मिल बातां करने, अपने अपने ठौर की जे ।।४८।।

हँसते हँसते सभी सखियाँ आनंद के कारण एक दूजी पर पुनः पुनः गिर पड़ेंगी । सभी आपस में मिलकर अपने अपने स्वाप्निक खेल के अनुभवों की बातें करेंगी ।

हुई खुशाली खेल की, लगी बातें करने जोर ।
हक़ सुभान मेहेर करे, फेर पूछत बातें ओर ।।४९।।

जैसे जैसे खेल की बाते करेंगी वैसे वैसे खेल का आनन्द बढ़ता जायेगा। श्री राज जी भी बड़े लाड प्यार से उनसे खेल की बातें पूछेंगे ।

आगे एक दुजीय के, लगी बातें करने सोर ।
सब कोई कहे देत हैं, अपना खेल देखन का ठौर ।।५०।।

सभी ब्रह्म प्रियाएँ एक दूजी के सम्मुख बड़े उत्साह और आनंदपूर्वक बातें करने लगेंगी । संसार रूपी खेल में अपने अपने अनुभवजन्य स्थानों एवं घटनाओं का वर्णन करने लगेंगी ।

इत कई बिलास इन भांत के, होत अरस में सब ।
रूहें रहे अरस अज़ीम में, झीलन सिनगार को उठी तब ।।५१।।

इस प्रकार अर्श अज़ीम परमधाम में कई तरह से हांस-विलास होगा । वे ब्रह्मप्रियाएं अनादि काल से अर्श अज़ीम में ही रहती हैं । (यह संसार तो मात्र एक भ्रम था, एक ख्याल था ।) बस फिर वैसे ही झीलना और सिनगार की लीला शुरु हो जाएगी ।

महामत कहे ए मोमिनों, एह तुमारी बीतक ।
उतरे अरश अज़ीम से, तुम हक़ के आसक ।।५२।।

महामति जी श्री लालदास जी के तन के माध्यम से कह रहे हैं, कि हे ब्रह्मात्माओ ! यह आपकी अपनी आप बीती है । आप ही अर्शे अज़ीम (परमधाम) से सुरता स्वरूप से इस माया जगत् में अवतरित हुए हो और आप ही प्रियतम अक्षरातीत के आशिक मोमिन हो ।

प्रकरण-१, चौपाई-५२

हक़ीकत इसलाम की - सत्य धर्म की वास्तविकता

अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म परमात्मा का हुक्म स्वयम् अपनी पहचान करा रहा है। जिस परमात्मा को आदि काल से आज दिन तक दुनियां नहीं खोज सकी और नेति... नेति... कह कर पीछे हट गयी । अब वे परब्रह्म स्वयम् अपने और परमधाम के सभी गुह्य रहस्य जाहिर कर रहे हैं । दर्शन की रात्रि जिसे दुनिया खोज रही है, उसके रहस्य को जाहिर कर बहुत बड़ी मेहर की है । तीनों सूरतों और तीनों सृष्टियों को जाहिर कर सबको एक परमात्मा की पहचान करवा कर उन्हें अपने अपने मुक्ति स्थान तक पहुँचाया है ।

भी कहूं आगे मोमिन के, हक़ीकत जो इसलाम ।
अव्वल सो आज दिन लों, काहू कह्या ना ठौर मुकाम ।।१।।

अब मैं (श्री लालदास जी के हृदय में विराजमान परब्रह्म) ब्रह्मात्माओं के आगे सत्य शांति के मार्ग - निजानन्द की हक़ीकत जाहिर करता हूँ । सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक किसी ने भी परब्रह्म अक्षरातीत के अखण्ड धाम का वर्णन नहीं किया है ।

चौदे तबक की दुनी में, खोज करी सबन ।
बका ठौर पाई नहीं, सक भागी ना काहू जन ।।२।।

चौदह लोकों की दुनिया में सभी ने अखण्ड परमधाम की बहुत खोज की । परन्तु कोई भी अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सका । ना ही किसी के संशय मिटे ।

ए पैदा सब जूलमत की, मोह तत्व हवा ला सुंन ।
सो आगे चल ना सके, आए सके ना बीच रोशन ।।३।।

यह संपूर्ण क्षर जगत् मोह तत्त्व (जुल्मत, हवा, शून्य, नींद) से उत्पन्न हुआ है । इसीलिए मोहतत्त्व (निराकार) को छोड़कर वे आगे बेहद भूमि में नहीं जा पाते हैं । अर्थात् आगे का ज्ञान नहीं समझ पाते हैं ।

त्रैगुन खावंद या खेल के, जिनों पर सब मुद्दार ।
सो खोज कर सब थके, मन बुध ना पोहोंचे विचार ।।४।।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश, जो इस संसार (चौदह लोकों) रूपी खेल के मालिक हैं और जिन पर खेल की सारी जिम्मेदारी है । वे भी परब्रह्म के धाम की खोज करते करते थक गये। उनका भी मन, बुद्धि व चिंतन अखण्ड परमधाम

तक नहीं पहुंच पाया।

तो नेत नेत कह्या निगमें, पहोंच सके ना नूर के पार ।
ए जाने सृष्ट ब्रह्म की, रहे शामिल नित विहार ।।५।।

वेदों ने भी परमात्मा के विषय में नेति नेति (ऐसा नहीं ऐसा नहीं) कह दिया और अक्षर से परे का ज्ञान नहीं जान सके । उस सत्य परब्रह्म के भेद मात्र ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मसृष्टि ही जानते हैं, क्योंकि वे अक्षरातीत परब्रह्म की उस दिव्य प्रेम व आनंदमयी लीला में सदा लीला विहार करते हैं ।

वेद कहे हम जानत, रहे परमहंस तुमारे पास ।
तिनों मों चरन कमल बिना, और ना कोई आस ।।६।।

वेदों में वर्णित है कि परमहंस ब्रह्मसृष्टियाँ सदा सर्वदा अक्षरातीत के पास रहती हैं । उनके दिल में आपके श्री चरण कमलों के सिवाए और कोई इच्छा नहीं होती ।

सो तुम को जानत, चरन सरोवर बैठन हार ।
तिनों त्याग किया संसार का, झीलें माहें सागर सुख विहार ।।७।।

आपको वे ब्रह्ममुनि ही जानते हैं क्योंकि वे आपके चरण कमलों में बैठे हैं । वे ब्रह्म सृष्टियाँ संपूर्ण क्षर जगत् के सुखों (आशाओं-इच्छाओं) को त्याग कर सदा सर्वदा ध्यान-चितवनि के द्वारा श्री परमधाम के पच्चीस पक्षों में अपने प्रीतम के साथ विहार करती हैं ।

करम उपासना धोए के, बैकुण्ठ को ना मानत ।
जो मुक्त विश्व बांछत, ताको ना कछू गिनत ।।८।।

ये ब्रह्ममुनि कर्मकांड व उपासना (शरीयत व तरीकत) की बंदगी नहीं करते (बल्कि हक़ीकत व मारिफत की बंदगी करते हैं) एवं वैकुण्ठ की भी चाहना नहीं करते हैं । बैकुण्ठ की जिन चार मुक्तियों (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य) की कामना पूरा विश्व करता है, उसका इनकी नज़रों में कोई महत्त्व नहीं होता है ।

ब्रह्म सनमंधी उपनिषद, है तिनों के पास ।
सोई ख़ासल ख़ास उम्मत कही, है इनपे ईमान विश्वास ।।९।।

ब्रह्मसंबंधी ब्रह्म सृष्टियों के पास उपनिषदों के भी रहस्य होते हैं । उन्हें ही कुर्आन पाक में ख़ासल ख़ास उम्मत (ब्रह्मसृष्टि) कहा गया है । उन्हीं में

परब्रह्म के प्रति दृढ विश्वास (ईमान) होता है ।

इनकी स्तुति करत है, सृष्ट ईश्वरी ख़ास ।
जीव सृष्ट सेवे ईश्वरी को, रहे इहां लों विश्वास ।।१०।।

इन ब्रह्मसृष्टियों की स्तुति ख़ास उमत ईश्वरी सृष्टि करती है और जीव सृष्टि ईश्वरी सृष्टि की सेवा में तत्पर रहती है । उनका विश्वास इतने तक ही सीमित रहता है । (ब्रह्मज्ञान के गुह्य रहस्यों को वे ज्यादा नहीं समझ पाते हैं)

ठौर जो जीव सृष्ट का, घर बैकुण्ठ लों मलकूत ।
सो सृष्ट ईश्वरी पोहोंचही, ठौर अछर जबरूत ।।११।।

जीव सृष्टि की पहुँच (ठिकाना) बैकुण्ठ (मलकूत) तक है और ईश्वरी सृष्टि अक्षर धाम (जबरूत) तक ही पहुंच पाती है ।

अपने अपने ठौर की, सिफत करत उत जाए ।
कोई काहूं मिल ना सके, कोई कोट साधना करें उपाए ।।१२।।

तीनों सृष्टियाँ अपने अपने ठिकाने (मुक्ति स्थानों) की प्रशंसा करती हैं । करोड़ों उपाय व साधना करने के उपरांत भी कोई एक दूसरे का स्थान प्राप्त नहीं कर सकता ।

इहां इलाज कोई नहीं, ठौर बदल ना सके कोए ।
अपनी अपनी मजल पर सब खड़े, नहीं धरम अंतसकरन होए ।।१३।।

इसका अन्य कोई भी उपाय नहीं है, कोई भी अपने मूल स्थानों को बदलने में सक्षम नहीं है । सभी अपनी अपनी आत्मिक स्थिति पर स्थिर हैं । हर किसी के अंतस्करन में वास्तविक धर्म स्थिर नहीं हो पाता ।

जो कदी आए संग नाखा, खेंचे अपने ठौर निदान ।
उनों को अपने ठौर बिन, आगे ना होए पेहेचान ।।१४।।

यदि कोई किसी की सोहोबत से आ भी जाता है और अपने अखण्ड धाम की ओर उसे ले जाने का प्रयास भी करता है, तो भी उन्हें अपने मूल उद्गम स्थान से आगे की पहचान नहीं हो पाती है ।

सोई सोहबत सोहावई, सोई आहार ब्यौहार ।
सोई चाल चल दिखावही, खड़े अपनी मजल पर उस्तवार ।।१५।।

सबको अपने अपने स्वभाव के अनुसार ही संगत व आहार - व्यवहार

अच्छे लगते हैं । उसी के अनुसार वे चाल (रहनी) चलकर दिखाते हैं । इस प्रकार लोग अपनी - अपनी आत्मिक स्थिति पर दृढ़ता पूर्वक खड़े रहते हैं ।

कही बीच फिरकान के, महंमद तीन सूरत ।
बसरी मलकी और हकी, खोली तीनों हक़ीकत ।।१६।।

कुर्आने पाक (तफ्सीरे हुसैनी) में मुहम्मद की तीन सूरतों का बयान आया है । पहली - बशरी, दूसरी - मलकी और तीसरी - हकी । तीनों सूरतों ने खुदा की हक़ीकत (सत्य ज्ञान) खोलकर बताई है ।

उतर चढ बताइया, महंमद अलेह सलाम ।
छोड़ सात आसमान को, पोहोंचे जबराइल मुकाम ।।१७।।

मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने नासूत (मृत्युलोक) से परे लाहूत (परमधाम) में जाकर व वापिस आकर ब्रह्म साक्षात्कार का मार्ग दर्शाया है । सात आसमान (हद बेहद) को पार करते हुए वे जिब्रील के स्थान (अक्षर धाम) पर पहुंचे ।

छोड़ मलकूत हवा सुंन को, पोहोंचे जबरूत जब ।
जबराइल को उन समें, पूछा सवाल जो तब ।।१८।।

वैकुण्ठ एवं शून्य निराकार को पार करके जब वे अक्षरधाम में पहुँचे तब उस समय जिब्रील से मुहम्मद साहब ने प्रश्न किया कि...

एह कौन ठौर कौन मकान, दिया जबराईल जवाब ।
एह सदरतुल्मुन्तहा, हके बकसया मेरे बाब ।।१९।।

यह कौन सा स्थान है और किसका निवास है ? तब जबराईल ने जवाब दिया कि यह सिद्रतुलमुंतहा (अक्षरधाम) है, इसे खुदा तआला ने मुझे बख्शीश किया है ।

चल आगे जबराइल, मेरे संग नजीक सुभान ।
जवाब दिया जबराइलें, मोको ताक़त न चलने जान ।।२०।।

मुहम्मद साहब ने जबराईल से कहा कि मेरे साथ आगे अल्लाह तआला के पास चल । तब जबराईल ने जवाब दिया कि आगे जाने की शक्ति मेरे पास नहीं है ।

तब हुआ हुकम, हक़ सुभान का जब ।
एक कदम आगे धरे, बैठ गया जबराइल तब ।।२१।।

तब हक़ सुब्हान (परब्रह्म) अक्षरातीत का जब आदेश हुआ, तब जिब्रील एक कदम आगे बढ़ता है, किन्तु आगे जाने में असमर्थता के कारण वहीं बैठ जाता है ।

राह काटी पांच सौ बरस की, जबराइले कही इत ।
तब कह्या रसूल ने, चल आगे तित ।।२२।।

कहा गया है कि यहां एक कदम बढ़ाने में जिब्रील को ५०० वर्ष लग जाते हैं । इसके पश्चात् रसूल साहब ने पुनः कहा कि मेरे साथ आगे चल ।

तब कह्या जबराइले, आगे जलत मेरे पर ।
तुम पोहोंचे तिन मुकाम को, चला नहीं माएत खातर ।।२३।।

तब जिब्रील ने उत्तर दिया कि "आगे जाने पर नूर तजल्ला की तजल्ली (तेज) से मेरे पंख जलते हैं । आप ऐसे स्थान पर पहुंच गये हो जहाँ का जर्रा जर्रा इश्कमयी है ।" इस प्रकार वह आगे नहीं जा पाया ।

ओर हज़ार जबराइले, जो होए इस ठौर ।
एक राई बराबर आगे, बिना तुम ना पोहोंचे और ।।२४।।

जिब्रील फरिश्ता कहता है कि यदि मेरे जैसे हज़ार जिब्रील भी हों, तो भी राई के दाने के बराबर भी आगे नहीं खिसक सकते । तुम्हारे बिना वहाँ और कोई पहुंच नहीं सकता ।

आगे इशक रफ रफ का, जब आया तखत ।
तिन पर बैठे रसूल, जाए पोहोंचे हजूर हक़ तित ।।२५।।

आगे जाने के लिए जब रफ-रफ का तख्त (धणी का इश्क) आया । तब उस तख्त पर बैठकर यानि धणी के इश्क को लेकर रसूल साहब धाम धणी के पास पहुंचे ।

हबीब को तीन मरतबे, बोलाया हक़ सुभान ।
अब आए चल नजीक, सुनने सुकन कान ।।२६।।

हक़ सुब्हान अल्लाह तआला ने अपने प्यारे मुहम्मद को तीन बार अपने नजदीक बुलाया । तब मुहम्मद साहब खुदा की बातें सुनने उनके समीप पहुंचे ।

आब हैयाती तब कही, ए मेरे परवरदिगार ।
है सलाम उपर तेरे, है तू ही पाक उस्तवार ।।२७।।

अखण्ड, अमृतमयी, सुख के स्वरूप मुहम्मद साहब ने कहा कि हे मेरे परवरदिगार! आपको मेरा सलाम है । आप ही पाक-साफ निःस्वार्थ, निष्कपट सच्चे मालिक हो ।

दिया जबाब हक़ सुभान ने, है मेरा तुझको सलाम ।
दिया खिताब नबीअ का, बीच दीन इसलाम ॥२८॥

तब हक़ सुभान पूर्ण ब्रह्म ने जवाब दिया कि, तुम्हें भी मेरा सलाम हो । इस प्रकार उन्होंने दीने इस्लाम (सत्य शांति के मार्ग) के नबी का खिताब (उपाधि) प्रदान किया ।

मेरी रेहेमत तुझ पर, और बरकतें सब ।
रसूल अलेह सलाम ने, जबाब दिया तब ॥२९॥

अल्लाह तआला ने कहा कि मेरी रहमत (कृपा) और तमाम बरकतें तेरे ऊपर रहेंगी । तब रसूल स.अ.व. ने जवाब दिया ।

मेरा सलाम तुझ पर, ए मेरे परवरदिगार ।
और सालेह बंदो तेरो ने, फेर कहे बचन ता पर ॥३०॥

हे मेरे परवरदिगार ! मेरा आपको सलाम है और आपके परहेजगार बन्दो का आपको सलाम है । फिर वे आगे वचन बोले ।

मैं साहेदी देत हों, और ना तुझ बिगर ।
फेर मैं साहेदी देत हों, तुही सबसे अकबर ॥३१॥

मैं साहेदी (साक्षी) देता हूँ कि आपके अतिरिक्त और कोई अखण्ड नहीं है और मैं यह भी गवाही देता हूँ कि आप ही सर्वश्रेष्ठ महान् बादशाह हो ।

मैं बंदा महंमद, देने वाला तेरी खबर ।
एह रद बदल करी, तब जमा भई खातर ॥३२॥

हे अल्लाह तआला ! मैं दुनिया को आपका संदेश देने वाला, आपका बंदा मुहम्मद हूँ। इस प्रकार से वार्तालाप किया, तब मन में पूर्ण रूप से संतुष्टि हो गयी ।

नब्बे हज़ार हरफ़ सुने, तीस पर किया हुकम ।
तीस हज़ार जाहिर कीजियो, तीस इसारतें लिखियो तुम ॥३३॥

अल्लाह तआला के मुखारविन्द से हुजूर मुहम्मद साहब (की रूह) ने

नब्बे हज़ार शब्द सुने । खुदा ने मुहम्मद साहब को निर्देश दिया कि इसमें से तीस हज़ार शब्द दुनिया में जाहिर करना और दूसरे तीस हज़ार शब्दों को इशारतों (संकेतों) में ही लिखना ।

और रहे तीस हज़ार, सो तुम पर दिया अखत्यार ।
सो सिफाएत के सुनके, जिन सों पाया परवरदीगार ॥३४॥

और जो बाकि तीस हज़ार शब्द रहे, उसका तुम पर अख्तियार (अधिकार) है, वे सिफायत (मोक्ष प्राप्ति) के शब्द हैं, जिससे परब्रह्म हक़ तआला की पहचान होती है ।

करी रद बदल हक़ सों, वास्ते तीन उम्मत ।
कहा हक़ सुभान ने, देखाई तीनों की पेहेचान इत ॥३५॥

मुहम्मद साहब ने तीनों सृष्टियों के वास्ते अल्लाह तआला से वार्तालाप किया । खुदा तआला ने उन्हें तीनों सृष्टियों की पहचान करा दी ।

इत कहा तीनों का बेबरा, सो समझत मोमन ।
जिनको हक़ सुभान ने, करी हिदायत रोशन ॥३६॥

इस प्रकार हक़ तआला ने तीनों सृष्टियों का विवरण बताया, जिसे अर्श के मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही समझ पाते हैं । जिन्हें हक़ सुभान (प्रियतम अक्षरातीत) ने सिखापन (ज्ञान) देकर उनके हृदय को ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित किया है ।

कहा ऊपर आम के, कही उम्मत ख़ास फिरस्तन ।
तीसरी ख़ासल ख़ास, जो कुलफ मोह मोतन ॥३७॥

जीव सृष्टि (आम खलक) के ऊपर (से श्रेष्ठ) ईश्वरी सृष्टि (ख़ास खलक- फरिश्ते) है और तीसरी ब्रह्म सृष्टि ख़ासल ख़ास (सबसे श्रेष्ठ) है । जिनके विषय में मुहम्मद साहब ने कहा है कि "मोतियों के मुंह पर ताला देखा" अर्थात् जिनकी परआतम पर परमधाम में फरामोशी का पर्दा पड़ा हुआ है ।

पचास बख़त की निमाज, छ महीने रोजे रखे ।
तब अरज करी रसूल ने, एता बोझ ना उठे इन से ॥३८॥

अल्लाह ने मोमिनों के वास्ते दिन में पचास वक्त की नमाज और वर्ष में छः महिने रोजा रखने का हुक्म किया । तब रसुल साहब ने खुदा तआला से अर्जी की कि इतना भार मोमिनों से नहीं उठेगा ।

तब पच्चीस बख़त की निमाज, रोजे तीन महीने का हुकम ।
तब फेर अरज करी, इनकी छोटी कूवत कूंम ।।३९।।

तब अल्लाह तआला ने रियायत करके (छूट देते हुए) दिन में पच्चीस वक्त की निमाज और वर्ष में तीन महीने रोजा रखने का हुक्म किया । मुहम्मद साहब ने फिर अर्जी की कि इनकी इतनी सामर्थ्य नहीं है ।

तब बारे बख़त की निमाज, रोजे डेढ़ महिने के होए ।
तब चुप करके रहे, इत जनाई दलगीरी सोए ।।४०।।

तब हक़ तआाला ने दिन में बारह वक्त की निमाज और वर्ष में डेढ़ महीने रोजा (व्रत) रखने का हुक्म किया । तब रसूल साहब चूपचाप खड़े रहे और अपने मुख भाव के द्वारा अपनी चिंता - दुःख को प्रदर्शित किया ।

कहा हक़ सुभान ने, क्यों तुम हुए दलगीर ।
कहा सब तुम जानत, दोए बेर गूस्तागी की तुम तीर ।।४१।।

तब हक़ सुब्हान अल्लाह तआला ने पूछा कि तुम दुःखी क्यों हो गये ? रसूल साहब ने कहा कि आप तो सब जानते हो । मैं पहले ही दो बार आपसे निवेदन करने की गुस्ताखी कर चूका हूँ ।

अब उमेदवार हों, तुम सों तीसरी बेर ।
तब कहा हक़ सुभान ने, तब हुकम किया यों फेर ।।४२।।

अब तीसरी बार आपसे पुनः आशा रखता हूँ (कि निमाज व रोज़ा कुछ और कम करेंगे) । तब हक़ सुब्हान तआला ने पुनः हुक्म देते हुए कहा -

पांच बख़त की निमाज, रोजा एक महीने का फरज ।
नफा पचास बख़त महीने का, होवे ताकी गरज ।।४३।।

उन्हें दिन में पांच वक्त की निमाज और वर्ष में एक महिने के रोजे का फर्ज़ के रूप में पालन करने को कहो । इतना करने पर दिन में पचास वक्त की निमाज और वर्ष में ६ माह के रोजे का फल मिलेगा ।

फेर चुप जो कर रहे, क्यों खात एता गम ।
कह्या तुम सब जानत, जैसा होए इत हुकम ।।४४।।

इसके पश्चात् भी मुहम्मद साहब चूपचाप (दुःखी) रहते हैं । तब खुदा तआला कहते हैं कि आप इतने दुःखी क्यों होते हो ? मुहम्मद साहब ने कहा कि

आप सब जानते हो, आगे आप जैसा हुक्म करें ।

काहे को गम खात है, एक नज़र करूँगा मेहेर ।
भेजों भिस्त में उमत, जिन दलगीर होवे फेर ।।४५।।

आप दुःखी क्यों होते हो, मैं मेहर (कृपा) भरी एक नज़र (दृष्टि) करूंगा और तेरी उम्मत को सीधे बहिश्त (परमधाम) में भेज दूंगा ताकि वे फिर कभी दुःखी ना हों । (कुर्आने पाक में परमधाम को किसी किसी जगह सर्वोपरि जन्नत के रूप में दर्शाया गया है ।)

फेर के चुप कर रहे, कह्या क्यों न कहत सुकन ।
एता गम क्यों खात है, वास्ते न कहत मोमिन ।।४६।।

इसके बाद भी मुहम्मद साहब चुपचाप खड़े रहे, तब हक़ तआला ने कहा कि आप कुछ कहते क्यों नहीं ? इतना दुःखी क्यों होते हो ? तब मुहम्मद साहब ने कहा कि मैं मोमिनों के कारण चुप हूं।

अगर उम्मत तेरी है, ए बंदे मेरे तू जान ।
देख दाहिनी तरफ को, मोहों मोतिन कुलफ पेहेचान ।।४७।।

अगर वो तेरी उम्मत है, तो वे मेरे भी तो बंदे (ब्रह्मात्माए) हैं । अपनी दाहिनी तरफ देखो । तब उन्होंने मोतियों के मुंह पर ताला देखा । (तब उन्होने श्यामा जी सहित सभी सखियों को फरामोशी की अवस्था में देखा)

तब यों पूछाया वर खुदाए, क्यों कुलफ मोहों मोतिन ।
कहा गुनाह उमत तेरी का, किल्ली तेरा दिल रोशन ।।४८।।

तब मुहम्मद ने पूछा कि खुदाया ! मोतियों (ब्रह्मात्माओं) के मूंह पर ताला (फरामोशी) क्यों है ? तब हक़ तआला ने फुरमाया कि तेरी उम्मत (ब्रह्मप्रियाओं) ने (खेल मांगने का) गुनाह किया है, ब्रह्मज्ञान से प्रकाशमान तुम्हारा दिल ही इनके फरामोशी (ताले) की चाबी है ।

और देख्या मुरग को, खाक लिये चोंच में ।
जो छोड़े इन खाक को, होए जाए अंधेरी तिन से ।।४९।।

साथ ही मेअराज के समय मुहम्मद साहब ने दरिया किनारे एक मुर्ग (श्यामा जी) को देखा, जो अपनी चोंच में मिट्टी (नासूती वजूद) लिए हुए था और हर पल कहता था कि, यदि मैं इस खाक (तन) को मूंह से छोड़ दूं तो

(संसार रूपी) दरिया अंधेरा (अज्ञानता से युक्त) हो जायेगा ।

कहा जबाब तिन का, ए दरिया न होए अंधेर ।
रेहेमत कर दिखाईया, कहा हक़ सुभानू फेर ।।५०।।

खुदा तआला ने मुहम्मद साहब को इस विषय में जवाब दिया, ये संसार रूपी दरिया, अंधेरा (प्रलय) नहीं होगा । क्योंकि यह संसार मैंने अपनी आत्माओं को बहुत प्रेमपूर्वक दिखाया है ।

कही तीन सूरत रसूल की, और तीनों कही उम्मत ।
नबे हज़ार हरफ़ सुने, बांटे तीनों हैं जुदे जुदे इत ।।५१।।

मुहम्मद साहब की तीन सूरतें बशरी, मलकी और हकी कही गयी हैं और तीन प्रकार की सृष्टियाँ कही गयी हैं । मुहम्मद साहब ने खुदा से जो नब्बे हज़ार शब्द सुने, उसमें से तीस-तीस हज़ार शब्द तीनों सूरतों के द्वारा क्रमशः तीनों सृष्टियों के लिए जाहिर करने का हुक्म दिया ।

ऐ जो तीनों उम्मत कही, आम ख़ास ख़ासल ख़ास ।
तीनों जुदी बताए दै, जाको हक़ कदम की आस ।।५२।।

ये जो तीन प्रकार की सृष्टियां आम, ख़ास और ख़ासल ख़ास कही गयी हैं, इन तीनों का अलग अलग निरूपण कर दिया गया है । उसमें से ब्रह्म सृष्टि ही सर्वश्रेष्ठ है, जिसके हृदय में एकमात्र परब्रह्म प्रियतम के चरणों की आशा रहती है ।

एक पर फरज कहा, सो कही उम्मत आम ।
सुरत बसरी ने, किए जाहिर तीस हज़ार तमाम ।।५३।।

मुहम्मद की बशरी सूरत ने अरब में शरीयत और तरीकत के तीस हज़ार हर्फ़ जाहिर किये, जिसे पहली आम खलक (जीव सृष्टि) के लिये फर्ज कहा है ।

और उम्मत ख़ास कही, मलकी जो सूरत ।
हरफ़ तीस हज़ार इसारते, खोले हज़रत ईसे इत ।।५४।।

और जो ख़ास उम्मत ईश्वरी सृष्टि कही गयी है, उसके लिये हक़ीकत के दूसरे तीस हज़ार हर्फ़ (शब्द) मुहम्मद साहब ने संकेतों में वर्णन किया था । उसे श्री देवचंद्र जी के रूप में पधारे मुहम्मद की मल्की सूरत (हज़रत ईसा) तारतम ज्ञान के द्वारा स्पष्ट कर रहे हैं ।

जाको मैं भेजो भिस्त मों, एक रेहेमत की नज़र ।
खोली इसारतें सरत पर, भइ लैलत कदर की फजर ।।५५।।

उन ईश्वरी सृष्टियों पर मैंने आखिरत की मुकद्दस बेला में एक कृपा भरी दृष्टि करके कुर्आन में वर्णित हकीकत के तीस हज़ार सांकेतिक हर्फों (शब्दों) को स्पष्ट कर दिया एवं उन्हें बहिश्त (मुक्ति स्थान) में ले लिया । इस प्रकार लैलतुलकद्र (महिमावान अज्ञानमयी रात्रि) में ज्ञान रूपी उजाला (दिन) कर दिया ।

तीसरी ख़ासल ख़ास जो, सुरत हकी रेहेमान ।
हरफ़ तीस हज़ार सिफाएत के, जो हक़ हजूर सुने कान ।।५६।।

तीसरे तीस हज़ार शब्द (मारिफत का ज्ञान) जो मुहम्मद साहब ने अपने कानों से हक़ तआला से सुने थे, वे शिफायत के शब्द मुहम्मद की हकी सूरत ने तीसरी ख़ासल ख़ास ब्रह्मात्माओं के वास्ते कृपा करके इस आखिरत की मुकद्दस बेला में जाहिर किये हैं ।

ए कह्या तीनों का बेबरा, पकड़ी आम सरियत ।
दूसरी भिस्त में भेजोंगा, उतरे नूर से फिरस्ते इत ।।५७।।

इस प्रकार तीनों सुरतों एवं तीन सृष्टियों का वर्णन मैंने आपसे कहा, पहली आम खलक (जीव सृष्टि) ने शरीयत (कर्मकाण्ड) की राह पकड़ी है । दूसरी ईश्वरी सृष्टि (फरिश्ते), जो कि अक्षरधाम से अवतरित हुए है । (अक्षर की सुरताएं हैं), उन्हें हक़ीकत का ज्ञान देकर दूसरी बहिश्त (सत् स्वरूप के महाकारण) में मुक्ति प्रदान करुंगा ।

तीसरी ख़ासल ख़ास कही, कहा कुलफ मोह मोतिन ।
करी सिफाएत तिनों की, किए मोमन दिल रोशन ।।५८।।

तीसरी जो ख़ासल ख़ास ब्रह्म सृष्टियाँ हैं, जिनकी परात्म पर फरामोशी का पर्दा है (मोतियों के मुंह पर ताला है) । मुहम्मद की हकी सूरत (महमत इमाम महदी साहिबुज्जमां) ने उनकी शिफायत (सिफारिश) करके (तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम की पहचान कराके) उनके हृदय में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश कर दिया है।

और जो लिखी इसारतें, हरफ़ तीस हज़ार ।
सो वास्ते गिरो ख़ास के, सो खोल पोहोंचे ला पार ।।५९।।

और जो कुर्आन ए पाक में हक़ीकत (सत्य ज्ञान) के तीस हज़ार शब्द

संकेतों में लिखे थे, वह ख़ास गिरोह ईश्वरी सृष्टि के वास्ते लिखे थे । उनके रहस्यों को समझकर वह क्षर जगत् से परे अखण्ड में पहुंचेगी ।

और तीसरे तीस हज़ार जो, किए जाहेर वास्ते आम ।
ए जो रोजा निमाज करत हैं, रहे सरियत के काम ।।६०।।

और तीसरे (शेष) तीस हजार शब्द जो शरीयत के हैं, उन्हें आमखलक (जीव सृष्टि) के लिये जाहिर किया है, जो कि शरीयत की बंदगी रोजा-निमाज (कर्मकाण्डों) में लगे रहते हैं (सत्य ज्ञान को समझते नहीं हैं)।

ख़ास गिरो हक़ीकत ले, पोहोंचे नूर मकान ।
तीसरी गिरो रब्बानी, जिनों ग्रही हक़ सूरत रेहेमान ।।६१।।

ख़ास गिरोह ईश्वरी सृष्टि सत्य ज्ञान (हक़ीकत) प्राप्त करके अक्षर धाम पहुंचेगी तथा तीसरी जो रब्बानी गिरोह (ब्रह्मात्माएं) है, जिन्होंने प्रियतम अक्षरातीत के नूरी स्वरूप को दिल में धारण किया है ।

राह इशक जो मारफत, संग हादी हकी सूरत ।
ख़ास गिरो फिरस्तन की, सूरत मलकी सिफत ।।६२।।

वे ब्रह्म सृष्टियाँ (मुहम्मद की) हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी के द्वारा दिए गये मारफत (खुदा की पूर्ण पहचान) का ज्ञान लेकर इश्क का मार्ग अपनाएंगी। मल्की स्वरूप श्री देवचंद्र जी ईश्वरी सृष्टि को हक़ीकत (सत्यज्ञान) के मार्ग पर चलाएँगे ।

करी बसरी हिदायत आम को, ए जो सकल जहान ।
सो पोहोंचे सरियत लों, इनों को वजूद पेहेचान ।।६३।।

बशरी स्वरूप रसूल साहब ने दुनिया के समस्त जीवों को शरीयत का ज्ञान दिया । वे मनुष्य केवल शरीरिक बंदगी को ही जानते हैं और केवल शरीयत तक ही सीमित रहते हैं ।

इंना इंजूलना सूरत में, दोए गिरो कही उतरी ।
रूहों फिरस्तों पर हुकम, जिनों बका फजर करी ।।६४।।

कुर्आन के इन्ना इन्जुलना सूरत में दो गिरोह (रूहों व फरिश्तों) के उतरने का वर्णन आया है । ये दो गिरोह ब्रह्म सृष्टि और ईश्वरी सृष्टि ही खुदा तआला के हुक्म से परमधाम का ज्ञान दुनिया में जाहिर करेंगे ।

वे जाहिर करे अरश को, अंदर बाहेर सब ठौर ।
महंमद की सिफाएत से, बका मोमन करे भोर ।।६५।।

मुहम्मद की तीसरी हकी सूरत की कृपा (शिफायत) से वे ब्रह्मात्माएँ परमधाम (रंगमहल) के अंदर-बाहर, सारे दिव्य लीला स्थलों का ज्ञान जाहिर करके अखण्ड परमधाम के ज्ञान का उजाला करेंगे ।

बका चेतन भोम अपार है, सो केहेनी कही न जाए ।
जित जबराईल को गम नहीं, सो ख्वाब जुबां क्यों आए ।।६६।।

परमधाम की दिव्य भूमि अखण्ड, चेतन व अपरम्पार है, जिसकी महिमा शब्दों से परे है, जहां जिब्रील नहीं पहुंच सका, उसकी शोभा का वर्णन स्वाप्निक तन की जिह्वा (जुबां) से करना कैसे सम्भव है ?

सो चुप करे रेहेत हैं, तो क्यों ना दिखाई दे ।
तो रूह को चटपटी लगे, सुख ले ना सके ए ।।६७।।

यदि वर्णन नहीं करूं तो रूह को किस प्रकार उसका दर्शन हो सकेगा । वाणी के कारण ही रूह को परमधाम के सुख चटपटी (आनंददायक) लगते हैं, नहीं तो वे किस प्रकार सुख ले सकती हैं ?

चुप सों तो कहना भला, ताथें रूह पावत अति सुख ।
होत कोट गुनी से रोसनी, देखे नूरजमाल का मुख ।।६८।।

चुप रहने से तो उचित यह है कि, कुछ ना कुछ वर्णन किया जाये, इसी के द्वारा आत्मा को परमधाम के अनंत सुखों की प्राप्ति होगी। परमधाम का वर्णन सुनने से करोड़ गुना सुख मिलता है, क्योंकि उसके आधार पर ध्यान करके आत्मा नूर जमाल (प्रियतम परब्रह्म) के नूरी मुखारविंद का दर्शन करती है।

ए केहेनी ऐसी होत है, लिए सनमंध आकार ।
दिल जुवां मन बुध, बाएं तरफ परवरदिगार ।।६९।।

कहनी (ब्रह्मज्ञान) की ऐसी महिमा है कि, पांच तत्त्व के शरीर के रहते हुए भी दिल, जुबां, मन, बुद्धि श्री राज जी के बायीं तरफ विराजमान श्री श्यामा जी की शोभा का दर्शन प्राप्त कर लेते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनो, तुम देखो गलियाँ धाम ।
ए सुपन आकार रख के, बका सुख पूरे मनोरथ काम ।।७०।।

श्री महामति जी कह रहे हैं, कि हे मोमिनो ! अपने निजघर परमधाम के २५ पक्षों की शोभा को हृदय में धारण कीजिये । इस स्वप्न के शरीर में रहते हुए भी अखण्ड परमधाम के सुख प्रदान करके धाम धणी हमारी मनोकामनायें पूर्ण कर रहे हैं ।

प्रकरण-२ चौपाई-१२२

श्री धाम लीला का बरनन लिख्या है

इस प्रकरण में श्री लालदास के धाम हृदय में विराजमान श्री महामति जी ने अद्वैत ठौर श्री परमधाम का वर्णन हक़ श्री राज जी के हुक्म से किया है । श्री राज जी के जोश का फरिश्ता जो परमधाम से आया है, उन्हीं की सोहोबत से अखण्ड धाम का वर्णन मोमिन सुन पाते हैं । जब परमधाम की "मैं" आ जाती है, तभी धाम की गलियों में मोमिन रमण कर पाते हैं । श्री राज जी पर समर्पण से ही धाम धणी का इश्क पाकर मोमिन हक़ हादी के साथ धाम गलियों में हांसविलास करने में सक्षम बनते हैं । यही साधन है और कोई भी उपाय नहीं, जिससे हद और बेहद से परे अर्शे अज़ीम में प्रवेश पा सकें । हक़ सुभान की मेहर मोमिनों पर पल पल बरस रही है, तभी हुक्म से धाम लीला की बीतक का वर्णन बारंबार हो रहा है । श्री राज जी मोमिनों को हिदायत दे रहे हैं, कि तुम अखण्ड सुख लो । ये सुख हक़ की मेहर से ही प्राप्त होते हैं और उनके हुक्म से परमधाम के सब रहस्य खुलते हैं और अपनी पहचान भी वह आप ही कराते हैं ।

कहूं आगे मोमिन के, जो कहावत हक़ हुकम ।
ए द्वार हक़ सुभान के, पेहेले खोल दिखाया तुम ।।१।।

अब मैं ब्रह्मात्माओं के समक्ष अखण्ड परमधाम का वर्णन करने जा रहा हूं, जैसा श्री राज जी का हुक्म कहलवा रहा है । यह प्रियतम अक्षरातीत के दिव्य धाम का दरवाजा (ज्ञान) है, जिसका स्पष्टीकरण करके पहले भी आपको बताया गया है ।

एह शब्दातीत थे कहे, भोम ठौर अद्वैत ।
तहाँ शबद क्यों पोहोंचही, आकार बैठा बीच द्वैत ।।२।।

दिव्य परमधाम की शोभा शब्दों से परे है, इसे स्वलीला अद्वैत भूमिका कहा जाता है । माया के नश्वर द्वैत भूमिका के शब्द वहां की दिव्यता, चेतनता,

सौंदर्य, सुगंधी और कोमलता का वर्णन करने में समर्थ कैसे हो सकते हैं ? और मेरा नश्वर तन भी तो माया की नश्वर द्वैत भूमिका में बैठा है ।

ए केहेनी जुबां अद्वैत से, मन बुध अहंकार ।
हक़ जोस जबराईल, जो आया नूर के पार ।।३।।

परमधाम की अद्वैत भूमिका का वर्णन अद्वैत की ही जुबां, मन, बुद्धि व अहंकार से सम्भव है । श्री राज जी का जोस-जिब्रील, जो कि अक्षरधाम के पार से आया है । वह सारा वर्णन कर रहा है ।

तिन की सोहोबत से, सुने सुकन मुख मोमिन ।
सुने मोमिनों हक़ से, सोए करों रोशन ।।४।।

उस जोश (जिब्रील) की संगत से (अंदर विराजमान होने से) मोमिनों के मुख से उसका वर्णन सुना जाता है, और मोमिन भी वह ज्ञान प्रियतम अक्षरातीत से प्राप्त करते हैं। परमधाम के उसी दिव्य ज्ञान का प्रकाश करने जा रहा हूं ।

ए हक़ का दिया आवहीं, हक़ सुनाए सुने कान ।
हक़ मेहेरे मालूम करे, हकै देवे पेहेचान ।।५।।

परमधाम का यह दिव्य ज्ञान स्वयं परब्रह्म अक्षरातीत के देने पर ही आता है, उन्हीं की कृपा से कोई इसे सुन पाता है । परमात्मा की कृपा से ही इसके रहस्य खुलते हैं, और वे प्रियतम अक्षरातीत स्वयं ही किसी को इसकी पहचान कराते हैं।

और कानों ना सुन सके, और अकले ना होए विचार ।
और मन ना मिल सके, और निकट ना रहे अहंकार ।।६।।

परमात्मा की कृपा के बिना कोई भी परमधाम के इस दिव्य ज्ञान का श्रवण नहीं कर सकता, किसी की बुद्धि इसका चिंतन नहीं कर सकती, किसी का मन इसमें रमण नहीं कर सकता । जहां अहंकार (माया की मैं) होती है, वहां यह दिव्य ज्ञान हो ही नहीं सकता ।

हक़ की खुदी आवहीं, तब फिरिए गलियों धाम ।
हक़ हादी रूहों बिहार, होए पूरण मन काम ।।७।।

तारतम ज्ञान के द्वारा जब निसबत की पहचान हो जाने पर प्रियतम अक्षरातीत के साथ अपने अद्वैत स्वरूप की पहचान हो जाती है, तब वह आत्मा

परमधाम की दिव्य गलियों में श्री राज श्यामा जी एवं सखियों के साथ रमण करने लगती है । जिससे उसके हृदय की सारी उत्कण्ठा (प्रियतम का प्रेम-आनंद प्राप्त करने की अभिलाषा) पूर्ण हो जाती है ।

एह साधन साधना होवहीं, और ना कोई उपाए ।
सुपन आकार बैठ के, नूर पार बिहार दिखाए ।।८।।

स्वाप्निक तन में रहते हुए अक्षर से परे अक्षरातीत परमधाम में सुरता द्वारा विचरण करना ही हमारा साधन है और साधना भी यही है । इसके अतिरिक्त निज सुखों की प्राप्ति का अन्य कोई भी मार्ग नहीं है ।

ऐसा क्यों कर होवहीं, होए बिना मेहेर ना हक़ ।
एह देखेंगे मोमिन, जो बैठे तखत इशक ।।९।।

इस तरह से ध्यान द्वारा दिव्य परमधाम का दर्शन प्रियतम अक्षरातीत की कृपा के बिना सम्भव ही कैसे हो सकता है ? परमधाम का दर्शन मात्र ब्रह्मात्माएं ही कर सकती हैं, जिनके हृदय में प्रियतम अक्षरातीत का प्रेम बसा होता है ।

जिनों वास्ते एह कहूं, सो मोहलों नित बिहार ।
बातें बका वतन की, सो एही देखनहार ।।१०।।

जिन ब्रह्मात्माओं के लिये परमधाम का यह वर्णन कर रहा हूं, वे परमधाम के उन दिव्य महलों में सदा से लीला विहार करते हैं । अखण्ड परमधाम का ज्ञान भी वे ही समझ सकते हैं और ध्यान द्वारा साक्षात्कार भी वे ही कर सकते हैं ।

इनों पर हक़ सुभान की, पल पल पसरत मेहेर ।
तो धाम लीला की बीतक, केहेलावत फेर फेर ।।११।।

उन ब्रह्मप्रियाओं पर प्रियतम अक्षरातीत की कृपा (प्यार) पल पल होते रहती है । इसी कारण तो वे परमधाम की शोभा व लीलाओं का वर्णन पुनः पुनः करवा रहे हैं ।

एह मेहेर शबदातीत है, मूल सरूप ऊपर रूहन ।
जो हजूर में बैठियां, तहाँ से आए ऊपर मोमिन ।।१२।।

प्रियतम के चरणों में मूल मिलावे में विराजमान ब्रह्मात्माओं के मूल

स्वरूपों (परात्म) पर होने वाली प्रियतम परब्रह्म की ये कृपायें शब्दातीत हैं । उन मूल तनों (परात्म) से ही राज जी की कृपा इस स्वाप्निक जगत् में मोमिनों के ऊपर आयी है ।

हुआ बख़त उठने का, तो नज़र आई साईत ।
तो धाम गलियों में रमें, एही उठने की क्यामत ॥१३॥

जब परमधाम में जागृत होने का समय हुआ, तब यहां भी संसार के आखिरी समय में हमें अहसास हुआ। अब हम ध्यान के द्वारा परमधाम की नूरी गलियों में रमण करें, यही ब्रह्मात्माओं की कियामत अर्थात् आत्म जागृति है ।

ए जो बका बात बारीकियां, जो इत होत जाहिर ।
तो सुपन आकार से, निकसत है बाहिर ॥१४॥

यह जो परमधाम के गुह्य रहस्य है, वे अब संसार में प्रकट हो रहे है, इसी कारण तो वह दिव्य तारतम ज्ञान इस स्वाप्निक नश्वर शरीर के माध्यम से उच्चरित हो रहा है ।

श्री धाम नव भोम है, दसमी है आकाश ।
एक हीरा एक रस, चेतन नूर प्रकाश ॥१५॥

परमधाम के ठीक मध्य में स्थित रंगमहल नौ भोम और दसवीं आकाशी वाला है । यह एक हीरे का है, एक रस, चेतन एवं स्वप्रकाशित है ।

कई जवेर रंग इन में, कई मोहोल मंदिर थम्भ गलियन ।
कई कोट द्वार मेहेराब, जित खेलत रूह मोमिन ॥१६॥

यहाँ कई रंगो के जवाहरातों की नक्काशी आई है । रंगमहल में कई कोट महल और मंदिर हैं । जिन में कई नूरी स्तम्भ और गलियाँ आई हैं । सुन्दर दीवारें हैं, जिनमें कई प्रकार की चेतन चित्रकारी है। नूरमयी महराबी द्वार आएँ हैं, जहां ब्रह्म सृष्टियां अपने प्रीतम के साथ खेलती हैं ।

कहूं हवेलियों की गिनती, हक़ सुभान की बकसीस ।
बिना निसवत पावे नहीं, जो पढ़े हज़ार बरीस ॥१७॥

प्रियतम परब्रह्म की मेहेर और उनके हुक्म से प्राप्त इलम से रंगमहल की प्रथम भूमिका की हवेलियों की गिनती बता रहें हैं । बिना मूल संबंध के भले ही कोई हज़ार वर्ष तक शास्त्रो का अध्ययन करता रहे, उसे यह ज्ञान प्राप्त नहीं

हो सकता ।

जमा चार हारन की, गिनती नव सौ चौबीस होए ।
एह तो पेहेली भोम की, यो ही नव भोम जानियो सोए ।।१८।।

रंगमहल की चौरस हवेलियों के पहले फिरावे में चार हारों में कुल ९२४ हवेलियाँ (एक हार में २३१ हवेलियाँ) आई हैं । यह प्रथम भोम की हवेलियाँ हैं । यूँ ही नवों भोम की हवेलियों की शोभा जानना ।

ताकी जमा नव भोम की, गिनती ऐसे कही ।
आठ हज़ार तीन सौ, सोले और उपर भई ।।१९।।

इस प्रकार नवों भोमो में पहले फिरावे में आई चौरस हवेलियों की कुल गिनती (९२४x९)८३१६ हुई ।

कही कमी सोले भुलवनी की, भोम दूसरी की होइ ।
बाकी आठ हज़ार, और तीन सौ कही सोइ ।।२०।।

रंग महल के दूसरी भोम में सोलह हवेलियों के स्थान पर भुलवनी के मंदिर आने से कुल हवेलियों की गिनती (८३१६-१६) ८३०० हुई ।

हर एक हवेलियों, अस्सी अस्सी मंदिर सुमार ।
सो सारों में देखियो, करें जुगल सरूप बिहार ।।२१।।

रंगमहल की प्रत्येक हवेली में अस्सी अस्सी मंदिर शोभा ले रहे हैं । सुन्दर साथ जी, आत्मिक नज़र से इन सभी हवेलियों की शोभा देखिये, जहां युगल स्वरूप, सखियों के साथ लीला विहार करते हैं ।

चार मंदिर चार कोने के, ए चौरासी भए सुमार ।
ए दरवाजे भए बाहिर, रूह मोमिन देखनहार ।।२२।।

प्रत्येक हवेली के चारों कोनों में चार मंदिर आएँ हैं और प्रत्येक हवेली की चारों दिशा में २०-२० मंदिर आएँ हैं । इस प्रकार से प्रत्येक हवेली में ८४ मंदिर आए हैं । निस्वती ब्रह्मात्मायें ही इस शोभा को देखती हैं ।

कही हर हवेलिओं, चार चार पौरी आठ द्वार ।
नूर रोशन जुदे जवेर के, हर द्वार दोए चबूतरे बिचार ।।२३।।

प्रत्येक हवेली की चारों दिशा में चार मुख्य द्वार आए हैं । हर मुख्य द्वार में बाहिरी और भीतरी तरफ दरवाजे आने से आठ दरवाजे हुए । चारों मुख्य

द्वारों के बाहरी ओर (दाएँ बाएँ) भिन्न भिन्न जवेरों से जगमगाते दो दो चबूतरे आए हैं ।

साम सामी हवेलियां, साम सामे चबूतरे चार ।
ता पर चौबीस मेहेराब, करें हक़ हादी रूहें बिहार ।।२४।।

हवेलियों के सामने हवेलियों की शोभा आई है । जहाँ दो हवेलियों के मुख्य द्वार आमने सामने आए हैं, वहाँ चार चबूतरों और चौबीस महेराबों की शोभा आई है । इन चबूतरों और चौबीस मेहेराबों में श्री राजश्यामा जी और रूहें कई प्रकार से आनंद विहार करते हैं ।

चारों कोने चार हवेलियां, तिन के चोबीस मेहेराब ।
त्रपोलियाँ चारों तरफों, पौरी चार बारे थंभ इन बाब ।।२५।।

दो हवेलियों के मध्य दो स्तम्भों की हार और तीन गलियाँ आने से चार हवेलियों के मध्य - कोने पर चौराहे की शोभा बनती है। वहाँ तीन गली आड़ी और तीन गली खड़ी आती है (त्रिपोलिये बनते हैं) । यहाँ स्तम्भों पर आड़ी (बारह मेहराबें) और खड़ी (बारह मेहराबें) होने से कुल चौबीस महराबों की अनुपम शोभा आई हैं । इस चौक के चारों ओर चार त्रिपोलिये हैं, जहां चारों ओर गली में 12 स्तम्भों की शोभा है।

इत हक़ हादी रूहें खेलत, नूर झलके हवेली दिवाल ।
नकस कटाव चित्रामंन, रूहें रमती रहें खुसाल ।।२६।।

इन नूरमयी त्रिपोलियों के मध्य श्री राजश्यामा जी और सखियां प्रेमरस में डूबे क्रीडाएं करते हैं । हवेलियों की दीवारों में कई प्रकार की नक्कशकारी है । कई तरह के अति सुन्दर कटाव और चित्रकारी हैं । नूर से झिलमिलाती इन दीवारों के मध्य रूहें प्रसन्नचित्त होकर रमण करती हैं ।

जोत जोत सों लरत है, किरने सामी किरने नूर ।
हक़ के दिल के माफक, सों क्यों कर कहूं जहूर ।।२७।।

एक नूरी ज्योति से दूसरी ज्योति टकराती है और किरणों से किरणें जंग करती प्रतीत होती हैं । यह संपूर्ण शोभा श्रीराज के दिल के अनुरूप है । इस नूरी शोभा का वर्णन कैसे करूँ ?

ए ठौर बैठन के चित्त धरो, चबूतरे कठेड़े गिरदवाए ।
हक़ हादी रूहें बैठत, सुख आवत नाहीं जुबाएं ।।२८।।

प्रत्येक हवेली के चारों दिशा के मुख्य द्वारों के दोनों ओर तीन सीढ़ी ऊंचे चबूतरे आएँ हैं । सीढ़ियों की जगह छोड़कर, चबूतरे की किनार पर नूरी कठेड़े की शोभा आई है । इस बैठक की शोभा को अपने चित्त में धारण कीजिये । जब इन नूरी चबूतरों पर श्री राजश्यामा जी और सखियां विराजमान होते हैं, उस समय का सुख जुबां से वर्णन नहीं किया जा सकता है ।

क्यों कहूं इन सुख की, जो लेवे हक़ की सोहबत ।
बका भोम अखंड में, करें बिहार इत नित ॥२९॥

उन अखण्ड सुखों का वर्णन कैसे करुं, जो रूहें श्री राज के संग लेती हैं ? अखण्ड परमधाम की चेतन, नूरी, सुगंधी से युक्त और अति नरम भूमिका में रूहें नित्य विहार करती हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम ल्यो अखण्ड सुख ।
खेलो हक़ हादी संग, देखो नूरजमाल का मुख ॥३०॥

श्री महामति जी आह्वान कर रहे हैं कि, हे ब्रह्मात्माओ ! इन अखण्ड सुखों को हृदय में धारण कीजिये। आप श्री राज-श्यामा जी के साथ खेलिये और चितवनि से नूर ही नूर के सागर प्रियतम के मुखमंडल की शोभा देखिये ।

प्रकरण-३, चौपाई-१५२

गिनती हवेलियों के मंदिरों की

इस प्रकरण में महामति जी ने श्री राज जी के हुक्म से मोमिनों की बुजरक साहिबी का वर्णन किया है । ब्रह्म सृष्टियों (मोमिन) को स्वयम् अक्षरातीत परमात्मा ने अपना दोस्त कहा है । ब्रह्म सृष्टियों की पवित्र रहनी का वर्णन हुआ है कि किस प्रकार वे सभी बंधनों को तोड़कर अपना चित्त श्री राज के चरणों में रखते हैं । मोमिनों के दिल की इच्छा पूर्ण करने के लिए यह स्वप्न का खेल श्री राज जी के हुक्म से खड़ा हुआ है । उन्हें अपनी जागृत बुद्धि मेहर कर के दी है और परमधाम की संपूर्ण शोभा और लीला कही है । परमधाम के मध्य में स्थित रंगमहल के मुख्य द्वार के भीतर आए हवेलियों के पहले फिरावे का मनोरम वर्णन हुआ है । इन में आए नूर से भरपूर चेतन और नूरी जवाहरातों से जगमगाते मंदिरों में होने वाली युगल स्वरूप और सखियों की प्रेममयी लीला की झलक प्रस्तुत की गई है ।

ए केहेनी अरश अज़ीम की, आगे रूह मोमन ।
जिनको हक़ सुभान ने, किया दिल रोशन ।।१।।

मोमिन रूहों (ब्रह्मात्माओं) के समक्ष इस दिव्य परमधाम की शोभा का वर्णन करना है, जिनके दिलों को प्रियतम अक्षरातीत (हक़ सुब्हान तआला) ने ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित किया है ।

इन मोमिनों का मरातबा, लिखा बीच फिरकान ।
ए ताको दोस्त कर कहें, अपने मुख हक़ सुभान ।।२।।

उन मोमिनों की महिमा कुर्आन आदि धर्मग्रंथों में विस्तार से लिखी है । हक़ सुब्हान तआला इन मोमिनों को स्वयं अपने मुख से अपना दोस्त कहते हैं ।

कहे औलिया लिल्ला इन को, दावा ऐहेल कहे द्वार ।
एक घर छोड़े जाई दूसरे, नज़ीक परवरदिगार ।।३।।

इन्हीं मोमिनों को औलिया (सच्चे संत-महात्मा), लिल्लाह (खुदा के लिए जीवन बिताने वाला) कहा गया है, ये ही समस्त धर्मग्रंथों के वारिस (ऐहेल किताब) कहे गये हैं । माया के नश्वर जगत् की आशा-तृष्णा को त्यागकर अखण्ड परमधाम में प्रियतम अक्षरातीत के निकट (मूल मिलावे में) ध्यान लगाते हैं ।

मोमिन कहे इन को, मरत नाहीं कबूं ए ।
काल के सिर पांऊ धरे, ए बैठे बीच बका के ।।४।।

मोमिन इन्हें ही कहा गया है, ये कभी भी मृत्यु को प्राप्त नहीं होते हैं (इनके मूल तन परमधाम में हैं, जो कि अखण्ड, अविनाशी व सच्चिदानंदमयी हैं) । ये मोमिन मृत्यु के भी सिर पर पांव रखकर आगे (परमधाम) जाते हैं । ये अखण्ड परमधाम में प्रियतम अक्षरातीत के चरणों में विराजमान हैं ।

इनों के आकारों पर, रेहेमत नज़र रेहेमान ।
ए सब किया इनों वास्ते, इनों पर मेहेर सुभान ।।५।।

इन मोमिनों के पंचभौतिक तनों पर भी प्रियतम परब्रह्म की कृपामयी दृष्टि बनी रहती है । यह सारा संसार इन्हीं मोमिनों को दिखाने के लिये बनाया गया है । इन पर परब्रह्म स्वामी की पल पल कृपा रहती है ।

ए खेल किया इनों वास्ते, ए जो चौदे तबक ।
सब साहेदी दई इनकी, जो हुए महकक बुजरक ।।६।।

चौदह लोकों से युक्त इस क्षर जगत् की रचना इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही की गयी है । इस संसार में जो भी महान् व सिद्ध पुरुष (ऋषि-मुनि आदि) हुए हैं, उन सबने इन्हीं मोमिनों (ब्रह्ममुनियों) की साक्षी दी है।

ए फिरस्ते पांचो पैदा किये, वास्ते इन मोमिन ।
ए खुदाए खेल मोहोरन के, जाके मोह अहं ख्वाब सुंन ।।७।।

इन पांचो फरिश्तों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अश्राफील, जिब्रील) को इन मोमिनों के लिये ही उत्पन्न किया गया है । ये त्रिदेवा संसार रूपी खेल के मोहरों (स्वाप्निक जीवों) के खुदा कहलाते हैं, जिनकी उत्पत्ति मोह-अहंकार व शून्य (निराकार) से हुयी है ।(जिब्रील धणी का जोश है और अश्राफील जागृत बुद्धि है)

पांउ खाक तले मोमिन के, सिर चढ़ावे अपने ।
पर पोहोंच ना सके तिन को, दिल इछत जो अपने ।।८।।

वे त्रिदेवा ब्रह्मात्माओं (गोपियों) की चरण धूलि को अपने सिर पर लगाते हैं, परंतु फिर भी वे अपनी चाहना (मुक्ति) के अनुसार अखण्ड में नहीं पहुंच पाते हैं ।

विश्व सारी बंदत है, रज इनों की चरन ।
तिनों की इछा रहत है, खाक चरन मोमिन ।।९।।

सारी दुनिया आज भी उन गोपियों (ब्रह्मात्माओ) के चरण रज की वंदना करती है । उनकी यही इच्छा रहती है कि, किसी तरह से ब्रह्मात्माओं के चरणों की धूलि प्राप्त हो जाये ।

इनों वास्ते भेजया, अपना जो मासूक ।
हक़ सुभान कहत हैं, मैं रसूल का आसक ।।१०।।

इन ब्रह्म सृष्टियों के लिए ही श्री राज जी ने अपनी माशूक श्री श्यामा जी को रसूल बनाकर (मुहम्मद साहब के रूप में) भेजा है । कुर्आन में स्वयं हक़ सुब्हान अक्षरातीत श्री राज जी कहते हैं, कि मैं रसूल (श्री श्यामा जी) का आशिक हूँ ।

अपना हुकम भेजया, इन के संग सुभान ।
जोस वकील जबराईल, संग रोशन रहे पेहेचान ।।११।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही प्रियतम स्वामी ने हुक्म की शक्ति भेजी है । धणी का जोश-जिब्रील भी उनके साथ रहता है और उनके हृदय में ज्ञान का प्रकाश करता रहता है ।

इलम लदूंनी अपना, और दई जागृत बुध ।
तो मोमिनों के वास्ते, कही अरस अज़ीम की सुध ।।१२।।

प्रियतम अक्षरातीत ने उन मोमिनों को अपना तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) एवं जागृत बुद्धि प्रदान की है । उन्हीं के कारण दिव्य परमधाम का वर्णन कर रहे हैं।

इनों मोमिनों के वास्ते, लिखे ख़ास दसखत कलाम ।
राह कायम घर की, किया जाहेर दीन इसलाम ।।१३।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही प्रियतम अक्षरातीत ने अपने आवेश (जोश) के द्वारा ख़ास ब्रह्मवाणी कही है । अखण्ड परमधाम की राह बताकर परम शांति के मार्ग "निजानंद" का वास्तविक आशय जाहिर किया है ।

किए कायम चौदे तबक, इन मोमिनों की खातर ।
सिफ़त इन गिरोह की, है सबके ऊपर ।।१४।।

इन ब्रह्मात्माओं के कारण ही चौदह लोकों से युक्त इस संसार को अखण्ड किया है । इस गिरोह (ब्रह्मात्माओं) की महिमा सर्वोपरि है ।

इन मोमिनों के वास्ते, रमूजे करत सुभान ।
सो एही खोल बतावहीं, कर देवे अपनी पेहेचान ।।१५।।

उन मोमिनों के लिये ही प्रियतम परब्रह्म ने कुर्आन आदि धर्मग्रंथों में सांकेतिक कथन लिखवाये हैं । उनके रहस्य वे मोमिन ही स्पष्ट करके बतायेंगे । और अपनी पहचान अपनी रहनी से स्वयं ही जाहिर करेंगे।

इन मोमिनों के मरातबे, कोई ना जुड़े पटंतर ।
हक़ सुभान रात दिन, करे इनों की जमा खातर ।।१६।।

इन ब्रह्मात्माओं की महिमा के समकक्ष कोई भी नहीं हो सकता है । हक़ सुब्हान (प्रियतम स्वामी) दिन-रात इन्हीं मोमिनों को लाड-प्यार देकर तृप्त करते

रहते हैं ।

जिन सेती पैदा हुई, ए जो सकल जहान ।
तिन चह्या दीदार मोमन का, जो ठौर अछर नूर मकान ।।१७।।

जिन अक्षरब्रह्म की शक्ति से यह सारा संसार उत्पन्न होता है, जो नूरमकान (अक्षरधाम) में रहते हैं, उन्होने ब्रह्मात्माओं के दर्शन की इच्छा की थी।

जिन की पलक फिरावते, कई कोट उपजे खपे इण्ड ।
पैदा कर पाले फ़ना करे, त्रैगुन समेत ब्रह्मांड ।।१८।।

जिन अक्षर ब्रह्म के पलकों के इशारे मात्र से, कई करोड़ो ब्रह्माण्ड उत्पत्ति व लय को प्राप्त होते रहते हैं । जिनकी सत्ता से त्रिदेवा सहित सम्पूर्ण क्षर जगत् की उत्पत्ति, पालन व लय का कार्य होता है ।

तिन के पार अरस अज़ीम, तिन की जो मोहोलात ।
तिन अंदर हवेलियां, तिन की कहनी बात ।।१९।।

उस अक्षर धाम से भी परे अर्श अज़ीम (रंगमहल) है । उस महल के अंदर जो दिव्य हवेलियां हैं, उनकी शोभा का वर्णन यहां किया जाना है ।

तिन अंदर जो मंदिर, सब जवेर चेतन ।
कई रंगों जवेरों जोतमय, सो कहूं वास्ते मोमन ।।२०।।

उन हवेलियों के अंदर जो मंदिर आएँ हैं, वे सब चेतन और प्रकाशमयी जवाहरातों के हैं, कई रंगों के नगों की नक्काशकारी से युक्त हैं । उनका वर्णन मोमिनों के वास्ते कर रहे हैं ।

नंग जोत लड़े संग नंग के, उपर रंग सामी रंग कई जंग ।
बेल फूल सामी बेल हंसत, बनी थंभ द्वार दीवालों संग ।।२१।।

नगों की नूरी ज्योति नगों से युद्ध करती प्रतीत होती है और सभी रंगों की किरणें एक दूसरे से टकराती हैं । आमने सामने बेलों के फूल एक दूसरे से हँसी ठिठोली करते हैं । इस प्रकार से वन, बेल और फूलों से मिलकर स्तम्भ, द्वार और दीवारें शोभा ले रही हैं ।

हक़ हादी रमत रहें, रहें रूहें संग सुभान ।
इत पैठत मंदिरों देखिए, भूखन सूर सुनो कान ।।२२।।

श्री राजश्यामा जी इन मंदिरों में रमण करते हैं। इस समय उनके

साथ सखियां भी रहती हैं। इन मंदिरों में उन्हें प्रवेश करते, खेतले देखिये, और उनके आभूषणों से निकलने वाली मधुर ध्वनि को सुनिये।

ए कैसे मीठे लगत हैं, इन चरनों के भूखन ।
जोत जेवरों झलकत, सूर प्यारे अरस रोशन ॥२३॥

इन नूरमयी चरणों के आभूषण कितने मनमोहक लग रहे हैं? जवाहरातों से नूरी ज्योति झलक रही है । इनसे निकलने वाले स्वर अत्यंत मीठे और प्यारे हैं । इन आभूषणों के तेज से संपूर्ण परमधाम रोशन हो रहा है ।

जब चौकी ऊपर कदम देय के, बैठत इन पलंग ।
करें बातें अति सोहामनी, मिल अपनी अरधांग ॥२४॥

जब नूर की चौकी पर कदम रख कर श्री राज जी और श्यामा जी पलंग पर विराजते हैं, तब वे अपनी अर्धांगनी से मीठी-मीठी और प्यारी-प्यारी बातें करते हैं ।

क्यूं कहूं सुख इन सेज के, रूहें लेत संग सुभान ।
अंग उमंग इन समें, रहे मोमिन दिल पेहेचान ॥२५॥

ब्रह्म सृष्टियाँ अपने धाम धणी श्री राज जी से सुख शैय्या पर जो सुख लेती हैं उसका यथार्थ वर्णन मैं कैसे कर सकता हूं ? इस समय ब्रह्म प्रियाओं के अंग-प्रत्यंग में अपार आनंद उमड़ता है । इन अलौकिक सुखों की पेहेचान मात्र, ब्रह्म प्रियाओं के दिलों में रहा करती है।

लवाजमें इन मंदिरन के, गिनती नाहीं सुमार ।
पर चित्त मिने क्यों आव हीं, बिना किए विचार ॥२६॥

इन मंदिरों में बेशुमार सुख-सामग्री सुसज्जित हैं । परंतु आत्म-चिंतन किए बिना वह शोभा चित्त में नहीं आ सकती ।

क्यूं कहूं सुख दुलीचन के, जाकी रंग नरम पसम ।
कई कटाव फूल बेल बनी, इत पोहोंचे ना अकल फहम ॥२७॥

अनेक रंगों से सुशोभित अति नरम पशमी आरामदायी दुलीचों के सुख कैसे बयां करुं ? पशमी गिलम पर कई प्रकार के कटाव, फूल और बेलों की नक्काशी है, जिनका वर्णन स्वप्न की अक्ल से संभव नहीं है ।

बनी सेज सुरंगी ता पर, सब लवाजमें चेतन नूर ।
जहां हक़ हादी पौढ़त, सो क्यों कर कहूं ज़हूर ॥२८॥

अति सुन्दर गिलम के ऊपर सुखदायी पलंग आया है, जिसकी शोभा की सभी सामग्री नूरमयी व चेतन है। श्री राज-श्यामा जी जहां पर विश्राम करते हैं, उसकी नूरी शोभा का कैसे वर्णन करुं?

कई साज संदूके शोभित, धरी माचिआ सिंघासन ।
हिंडोले मंदिरन में, झलकत नूर रोशन ॥२९॥

मंदिरों में कई प्रकार के सजावट की सामग्री है तथा कई संदूकें सुशोभित हैं । नूरी गिलम के ऊपर सिंहासन और माचियां रखी हुई हैं । मंदिरों में नूरी हिंडोले हैं, जिनकी नूरी झलकार चारों ओर प्रकाशित हो रही है ।

हर मंदिर यों देखियो, हर हवेलियों ठौर ।
तिन का बेवरा ल्यो दिल में, अब गिनती कहूं मैं और ॥३०॥

समस्त हवेलियों और मंदिरों की इसी प्रकार मनोहारी शोभा आई है । सुन्दर साथ जी ! इस शोभा को दिल में धारण कीजिए । अब इन मंदिरों की गिनती बताता हूँ ।

चारों हार हवेली नूर की, ताकी गिनती मंदिर नूर ।
एक भोम की देखियो, आवे मोमिन दिल सहूर ॥३१॥

रंगमहल के पहले फिरावे की चारों हार हवेलियां नूरमयी हैं । उनमें आये नूरमयी मंदिरों की एक भोम की गणना करते हैं जिससे मोमिनों के दिल में इसकी शोभा बस जाए ।

हवेलियां भोम तले की, नव सौ चोबीस सुमार ।
चौरासी हर हवेलियों, जहाँ करे जुगल सरूप बिहार ॥३२॥

रंगमहल की प्रथम भोम में हवेलियों के पहले फिरावे में ९२४ हवेलियाँ आई हैं । हर हवेली में ८४ मंदिर आएँ हैं, जिनमें युगल स्वरूप विहार करते हैं ।

एक हार में दो सौ एकतीस, तैसी हारें कही चार ।
ता के जमा नव सौ चौबीस, रूह मोमिन देखनहार ॥३३॥

एक हार में चारों ओर घेर कर २३१ हवेलियां आई हैं और ऐसी चार हारें शोभा ले रही हैं । २३१ हवेलियों की चार हारें आने से ९२४ हवेलियां होती

हैं । इन अनुपम शोभा को ब्रह्मात्माएं ही देखती हैं ।

एक हार हवेलिअन की, ताके बीस नूर मंदिर ।
दोए मंदिर दोए कोने के, आओ बीच द्वार अन्दर ।।३४।।

हवेलियों में मंदिरों की एक हार है, जिसकी एक दिशा में २० मंदिर आएँ हैं और दो मंदिर कोने के हैं । मध्य में हवेली का मुख्य द्वार है । हे सुन्दरसाथ जी ! अब मुख्य द्वार से हवेली के भीतर आ जाईये ।

दोए हवेली बीच में, इत कही जो गलियां तीन ।
यों गली गली मंदिर मिली, छब्बीस देखो कर आकीन ।।३५।।

प्रत्येक दो हवेलियों के बीच में स्तम्भों की दो हारें व तीन गलियाँ आई हैं । उन तीन गलियों में से डेढ़ - डेढ़ गली दोनों तरफ से प्रत्येक हवेली में गिनने से (23+3) २६ मंदिर की लंबी हवेली होगी ।

छबीस छबीस के हिसाब, सो भई दो सौ इकत्तीस ।
भए छ हज़ार छ उपर, आवे अन्दर हक़ बकसीस ।।३६।।

एक हार में २६ मंदिर की लम्बी चौड़ी २३१ हवेलियाँ आने से हवेलियों की संपूर्ण लम्बाई ६००६ (२३१X२६) मंदिर की हुई । धामधणी की असीम मेहर से ही यह शोभा हृदय में आती है ।

तामें छ गलिअन के, यों कमी भए जान ।
तीन तीन दोए तरफ भुलवनी, भोम तले की हद पेहेचान ।।३७।।

उसमें से ६ मंदिर ६ गलियों के घटते हैं । दोनों तरफ से तीन–तीन गलियों की भुलवनी हो जाती है। इस प्रकार प्रथम भोम की परिधि पहचानिये।

सतहत्तर हज़ार छ सौ, भए सोले ता ऊपर ।
ए तले की भोम की गिनती, हवेलियों के बीच मंदिर ।।३८।।

रंगमहल की पहली भोम की ९२४ हवेलियों के संपूर्ण मंदिर ७७६१६ (९२४X८४) होते हैं । यह पहली भोम के हवेलियों के संपूर्ण मंदिर हैं ।

यों ही सुमार नव भोम का, गिनती हवेली के मंदिर ।
छे लाख अट्ठानबे हज़ार, पांच सौ चवालीस उपर ।।३९।।

इस प्रकार रंगमहल के नवों भोमों के संपूर्ण मंदिर ६९८५४४

(७७६१६X९) होते हैं ।

ए हवेलियां नूर रोशन, है हक़ जात नूर ज़हूर ।
मोमिन फिरें मंदिरों मिने, सब तरफों रोशन नूर ।।४०।।

ये सभी हवेलियां हक़ श्री राज जी के ही नूर की शोभा हैं । हवेलियों के इन नूर से जगमगाते मंदिरों में चारों तरफ सखियाँ रमण करती हैं ।

हादी हक़ रूहें खेलें, जब पैठत खोल द्वार ।
हक़ हादी खेलें नूर मंदिरों, ए सुख देखे मोमिन बिहार ।।४१।।

इन नूरी मंदिरों में जब श्री राजश्यामा जी और सखियाँ द्वार खोलकर प्रवेश करते हैं तो अनेक प्रकार हांस–विलास, खेल–रामतें करते हैं। इन लीला विहार के सुखों को सिर्फ ब्रह्मात्मायें ही देखती हैं ।

मुख मीठी बानी सोहामनी, अति चपल है नैन ।
ए आराम अरस अज़ीम का, सो कह्यो न जाए सुख चैन ।।४२।।

श्री राजश्यामा जी अपने मुखारविंद से अत्यंत मीठी वाणी बोलते हैं । उनके नैन बड़े ही चपल दिखाई देते हैं । यह आनन्द तो अखण्ड परमधाम का है । प्रियतम धणी के सुखों का वर्णन नहीं किया जा सकता है ।

महामत कहे ए मोमिनों, देखो अपना घर श्री धाम ।
तुम को हक़ सुभान ने, एही दिया काम ।।४३।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! अपने घर श्री परमधाम को ध्यान चितवन से देखो और पच्चीस पक्षों में रमण करो । धाम धणी ने तुम्हें बस यही काम दिया है ।

प्रकरण-४, चौपाई-१९५

इन हवेलियों के द्वार

इस प्रकरण में श्री राज जी के हुक्म से श्री परमधाम की शोभा और लीला का वर्णन किया गया है । ताकि ब्रह्मात्माओ को अपने निज घर परमधाम की याद आ जाए । सुन्दरसाथ के दिलों में इश्क पैदा करने हेतु धणी बार बार अखण्ड सुखों की लज्ज़त दे रहे हैं । प्रियतम अक्षरातीत रूहों को अपनी मेहर की छाँव तले बिठाकर यह खेल दिखा रहे हैं और स्वप्न के खेल में भी वे पल पल

रूहों के संग रहते हैं । सुंदरसाथ के लिए परमधाम के सब द्वार खोल दिए हैं । परमधाम की हवेलियों के नूरी मंदिरों में होने वाली श्री राज श्यामा जी और सखियों के प्रेममयी अलौकिक लीला-विहार का अति मनोहारी वर्णन कर परमधाम वापिस बुला रहे हैं ।

श्रवनों रस उपजत हैं, मोमिनों के आकार ।
बोलावत अरस अज़ीम में, इनों को परवरदिगार ।।१।।

परमधाम की शोभा व लीलाओं का वर्णन सुनकर ब्रह्मात्माओं के हृदय में आनन्द उत्पन्न होता है । इनके प्रियतम स्वामी इन्हें अपने निजघर परमधाम बुला रहे हैं ।

रस स्वाद देत सरूप को, उपजावने इशक ।
हारों को जीतावत, बकसत अपने माफक ।।२।।

प्रियतम अक्षरातीत, ब्रह्मात्माओं के हृदय में प्रेम उत्पन्न करने के लिये उन्हें परमधाम के लीला विहार के सुख प्रदान कर रहे हैं । इस प्रकार इश्क की बाजी हारे हुए सुंदरसाथ को उनके हृदय में प्रेम उत्पन्न करके जीता रहे हैं ।

मेहेर करत मोमिनों पर, जाको नाहीं सुमार ।
सेहेरग से नजीक लिया, इनों को परवरदिगार ।।३।।

इस प्रकार ब्रह्मात्माओं पर प्रियतम अक्षरातीत अनंत कृपाएं करते हैं, जिसकी कोई सीमा नहीं है । तारतम ज्ञान के द्वारा उन्हें प्राणनली (शहरग) से भी नजदीक मूल मिलावे में ले लिया अर्थात् वहां बैठे होने का ज्ञान करा दिया ।

तुम बैठे मेरे नजीक, मैं बैठा तुमारे पास ।
बेर न भई रंचक, तुम जानो कर विश्वास ।।४।।

इस प्रकार अक्षरातीत परब्रह्म ब्रह्मात्माओं से कहते हैं कि, आप सब मेरे शहरग से भी नजदीक (मूल मिलावे में) बैठे हो, मैं तुम्हारे सामने ही (सिंहासन पर) विराजमान हूं । वहां पर एक पल मात्र समय भी नहीं व्यतीत हुआ है । आप मेरी बातों का विश्वास कीजिये ।

रात दिन चलते जात हैं, तुम को न ज़रा बेर ।
सब कोई साहेदी देत हैं, तुमहीं को फेर फेर ।।५।।

इस संसार में दिन-रात व्यतीत होते जा रहे हैं, किंतु परमधाम में जरा भी समय व्यतीत नहीं हुआ है । सभी धर्मग्रंथ पुनः पुनः इस बात की साक्षी दे

रहे हैं ।

तुम को तुमारे अन्दर, रूह साहेदी सब देत ।
तुम मेरी मेहर पल पल, दोनों हाथों लेत ।।६।।

आपको आपके अंदर से आपकी आत्मा इस बात की साक्षी देती है (कि हम परमधाम-मूल मिलावे में विराजमान हैं) । आप सब आत्माएं मेरी (परब्रह्म की) कृपा पल-पल दोनों हाथों से ग्रहण कर रहे हो ।

तुम देखो दिल विचार के, क्या दिया तुमारे हाथ ।
मैं तीनों तकरार में, रह्या तुमारे साथ ।।७।।

हे सुंदरसाथ जी ! आप अपने हृदय में विचार करके देखिये, मैंने आपके हाथों में यह ब्रह्मवाणी क्यों प्रदान की है ? अज्ञानता से युक्त महिमामयी रात्रि के तीनों भागों (ब्रज, रास व जागनी) में मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहा हूं ।

इलम लदुंनी अपना, दिया तुमारे दिल सरफ ।
काहूं खोले ना चौदे तबक में, इन इलम का हरफ़ ।।८।।

अपने तारतम ज्ञान के द्वारा मैंने आपके हृदय में सत्य-असत्य का परख करने की शक्ति प्रदान की है । तुम्हारे बिना चौदह लोकों में कोई भी ब्रह्मज्ञान का एक शब्द भी स्पष्ट नहीं कर सकता ।

अव्वल से आज दिन लों, सब कोई उमेदवार ।
सो कायम ठौर का तुम को, खोले अरस अज़ीम के द्वार ।।९।।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज दिन तक सभी ब्रह्मज्ञान पाने की चाहना रखते हैं । उस अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्रदान करके आपके लिये परमधाम के अखण्ड सुखों का द्वार खोल दिया है ।

मैं दई वारसी अपनी, तुमारे हाथ मोमिन ।
जिन मेहेर तुम करो, होए तिन का दिल रोशन ।।१०।।

मैंने समस्त धर्मग्रंथों की विरासत (ज्ञान का उत्तराधिकार) आप मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के हाथ में दी है । आप जिन पर कृपा करेंगे, उनका दिल ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित हो जायेगा ।

भिस्त कायम आठों मिने, जिने दाखिल करो तुम ।
तिने बैठाओ जिन ठौर, दिया तुमारे हाथ हुकम ।।११।।

अखण्ड आठों बहिश्तों (मुक्ति स्थान) में से जिस बहिश्त में आप जिसे चाहोगे, उसे (तारतम ज्ञान देकर) प्रवेश दिला सकोगे । यह सारा अधिकार मैंने आपके हाथ में दिया है ।

बातुन मेरे दिल का, जो कछु गुझ मता ।
सो तुम को पैदर पे, देते न किया ख़ता ॥१२॥

प्रियतम अक्षरातीत कह रहे हैं कि मेरे हृदय की जितनी भी गुह्य बातें (ज्ञान रूपी निधि) हैं, उन्हें एक एक करके मैंने आपको प्रदान कर दिया है । उसमें कोई भी कमी नहीं की है।

यों हक़ सुभान जिनको, करत मेहेर नज़र ।
तिन को लैलत कदर में, क्या रही बाकी फजर ॥१३॥

इस प्रकार प्रियतम परब्रह्म जिन ब्रह्मात्माओं पर कृपा भरी दृष्टि करते हैं, उनकी दृष्टि में अज्ञानमयी रात्रि दूर होकर ब्रह्मज्ञान रूपी प्रभात हो जाता है । उसमें कोई भी कमी नहीं रहती है।

तो अरस अज़ीम के, खोले इनों को द्वार ।
पल पल आठो जाम में, खेंच डारत नित बिहार ॥१४॥

इसी कारण इन ब्रह्मात्माओं के लिये दिव्य परमधाम के (अखण्ड सुखों के) दरवाजे तारतम ज्ञान के द्वारा खोल दिये हैं तथा पल-पल, आठों प्रहर वाणी के द्वारा उनकी आत्मिक दृष्टि को परमधाम के नित्य लीला विहार में आकर्षित करते रहते हैं ।

देखो इन द्वार ने तुम, खड़े जुगल किशोर ।
रस भीगे बातां करें, रूहें खड़ी ठौर ठौर ॥१५॥

हे सुंदरसाथ जी ! देखिये, रंगमहल की हवेलियों के द्वारों पर किस प्रकार युगल किशोर श्री राज श्यामा जी खड़े हैं और इश्क के रस में भीगे बातें कर रहे हैं तथा सखियाँ भी जगह जगह खड़ी हैं ।

कोई हंसत संग राज के, कोई खड़ी अंग संग जोड़ ।
कोई बाहूं धर कांध पर, होत चित्त न कहूं मरोड़ ॥१६॥

कोई सखी श्री राज के साथ हँसती है, कोई उनके कंधे पर बाँह रखकर अंग से अंग जोड़ कर खड़ी है और किसी भी सखी का दिल धाम धणी श्री राज

जी से कभी भी अलग नहीं होता ।

कोई दोड़त फिरत गलियों, कोई खड़ी द्वार आगे द्वार ।
मिनो मिनें बातां करें, जुगल सरूप बिहार ।।१७।।

कोई सखी गलियों में दौड़ फिर रही है, कोई आमने सामने दरवाज़ों के आगे खड़ी है तो कोई युगल स्वरूप श्री राज-श्यामा जी के साथ विहार करती हुई प्रेममयी बातें करती है।

कोई रात रमन के, केहेत बिहार के सुख ।
कोई सनमुख ठाड़ी रहे, देखे नूर जमाल का मुख ।।१८।।

कोई सखी रात्रि के समय शैय्या पर धणी श्री राजजी के साथ विहार के सुख कहती है, तो कोई सखी श्री राजजी के सम्मुख खड़ी होकर उनके नूरी मुखारविंद का दर्शन कर रही होती है।

कोई रसना रटत है, जिकर हक़ सुभान ।
कोई गान करत है, मुख मीठी रसना बान ।।१९।।

कोई सखी अपनी जिह्वा से प्रियतम अक्षरातीत का ही नाम रटते रहती है, तो कोई सखी अपनी मीठी रस भरी रसना से धाम धणी का गुणगान करती है ।

कोई चाल लटकनी चले, पैठत मंदिरो द्वार ।
हक़ सुभान रीझत, देख इनकी चाल बिहार ।।२०।।

कोई सखी लटकनी मटकनी चाल से चलते हुए मंदिर के द्वार से प्रवेश करती है । धाम के दूल्हा श्री राज जी भी इनकी मनमोहनी मदमस्त चाल को देखकर अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं ।

इनों को टेरी बोलावत, मुख मीठी रसना बैन ।
प्रेम रस बिहार करें, देखत सुंदर नैन ।।२१।।

बड़े ही प्यार से मीठी रसना से प्रियतम श्री राज जी सखियों को अंगुली के इशारे सै बुलाते हैं, और एक दूसरे के सुंदर नैनों को निहारते हुए प्रेमरस से परिपूर्ण होकर लीला विहार करते हैं।

ए सुख इन जुबांन से, हिसाब ना गिनती होए ।
पर नेक याद करने को, कहूं मोमिनों वास्ते सोए ।।२२।।

श्री राज जी के ये अखण्ड सुख जो वे अपनी रूहों को मेहर कर के देते हैं, उनका हिसाब या गिनती इस जुबां से सम्भव नहीं है । लेकिन मोमिन (ब्रह्मात्माएं) अपने निजघर का स्मरण कर सकें इस कारण उसका वर्णन कर रहे हैं ।

अब कहूं द्वार की गिनती, देखियो मोमिनों तुम ।
इन द्वार में खेंचत, हक़ सुभान का हुकम ॥२३॥

हे सुन्दरसाथ जी ! अब हवेलियों के मंदिरों के दरवाज़ों की गिनती कहूंगा, आप उसे समझिये। श्री राज जी का हुक्म आपको उन नूरमयी द्वारों में रमण करने के लिए बुला रहा है ।

इन हवेलियों के मंदिर, तिन के कहे जो द्वार ।
ताकी कहूं गिनती, सो रूह मोमिन देखनहार ॥२४॥

इन हवेलियों के मंदिरों के दरवाज़ों की गिनती कहता हूँ, जिन्हें मात्र ब्रह्मात्माएँ ही देखने का सामर्थ्य रखती हैं ।

ए देखने के चार चार, हिसाब के हैं तीन ।
हर एक हवेली में, दो सौ बावन चीन ॥२५॥

प्रत्येक मंदिर में दिखने में चार चार द्वार हैं, लेकिन हिसाब के तीन तीन दरवाजे आएँ हैं । इस प्रकार एक हवेली में (३x८४) २५२ दरवाजे हुए ।

ज्यों जादा चार कोने के, जमा दोए सौ छप्पन ।
ए सुमार एक हवेली के, नूर द्वार कहे रोशन ॥२६॥

हवेलियों के कोनों में चार मंदिर आए हैं जिनके चार द्वार और हुए । इस प्रकार एक हवेली में २५६(२५२+४) नूरी द्वार शोभा ले रहें हैं ।

एक हवेली के मंदिर, गिनती चौरासी होए ।
हर एक में तीन द्वार, गिनती दोए सौ छप्पन कहे सोए ॥२७॥

एक हवेली में आए मंदिरों की गिनती ८४ है और प्रत्येक मंदिर में तीन-तीन दरवाजे आएँ हैं । इस प्रकार एक हवेली में द्वारों की गणना २५६ है ।

एक भोम की हवेलियां, नव सौ चोबीस चार हार ।
एक हार दोए सौ इकतीस, ए कही चार हार सुमार ॥२८॥

एक भोम के पहले फिरावे में चार हारों में कुल ९२४ हवेलियाँ

सुशोभित हैं । एक हार में २३१ हवेलियाँ घेर कर आई हैं । ऐसे ही चार हारें आई हैं ।

तिन के मंदिर द्वार की, गिनती देखो मोमिन ।
दोए लाख छत्तीस हज़ार, चार से उपर नूर रोशन ।।२९।।

हे सुंदरसाथ जी ! ९२४ हवेलियों के मंदिरों के दरवाज़ों की गिनती देखिये, उनमें कुल २,३६,४०० (२ लाख ३६ हज़ार ४ सौ) नूरमयी दरवाजे शोभायमान हैं।

मंदिर द्वार की गिनती, तिन हर एक मंदिर ।
ए जो दरवाजे कहे, मोमिन आओ ताके अन्दर ।।३०।।

प्रत्येक मंदिर के दरवाज़ों की गिनती बताई है । हे सुंदरसाथ जी ! इन दरवाज़ों से भीतर प्रवेश करो ।

यों नव भोम की हवेलियां, ता के मंदिर के द्वार ।
इन का सुमार देखियो, इत मोमिन करे विचार ।।३१।।

इस प्रकार से रंगमहल के नवों भोमों की हवेलियों के मंदिरों के कुल दरवाज़ों का हिसाब देखिये, इसका विचार ब्रह्म सृष्टि करेंगे ।

सुमार एकइस लाख भए, उपर सत्ताईस हज़ार ।
छे सौ कहे ता उपर, ए मोमिन देखनहार ।।३२।।

इस प्रकार नवों भोमों में कुल २१,२७,६०० नूर से भरे दरवाज़ें हैं । जिन्हें देखने वाले मात्र मोमिन हैं।

इत नित बिहार नित्याने, करत जुगल किशोर ।
ए आठों जाम बका मिने, लेत सुख अति जोर ।।३३।।

यहाँ रंगमहल के नवों भोमों की हवेलियों में युगल किशोर श्री राजश्यामा जी नित्यप्रति आठों प्रहर अखण्ड लीला विहार का भरपूर सुख लेते हैं।

संग सरूप बिहरत, नित रूह मोमिन ।
जो हजूर हक़ के बैठियां, ताकों क्यों कहूं नूर रोशन ।।३४।।

श्री राज श्यामा जी के साथ ब्रह्मात्माएँ नित्य प्रति लीला विहार करती हैं। वे सखियां श्री राज श्यामा जी के चरणों मे मूल मिलावे में विराजमान हैं,

उनकी नूरी शोभा व दिव्यता का वर्णन किस प्रकार किया जाये ?

एह रोशनी बका की, सो ख्वाब में कही ना जाए ।
नाही निमूना पटंतर, तो क्यों कर देवे देखाए ।।३५।।

यह अखण्ड परमधाम की दिव्य रोशनी है । इसका वर्णन इस स्वाप्निक जगत् में करना सम्भव नहीं है । इसका कोई नमूना नहीं है, तो उसकी शोभा को किस प्रकार दर्शाया जाये ?

तिस वास्ते नेक सुकन, ए कह्या वास्ते मोमिन ।
ए बैठे हक़ हजूर में, मेहेर नज़र तले तन ।।३६।।

इस कारण यहां थोड़े शब्दों में ब्रह्मात्माओं के लिये ही परमधाम का वर्णन किया है । उन ब्रह्मात्माओं के मूल तन प्रियतम अक्षरातीत की कृपा की छांव तले मूल मिलावे में विराजमान हैं ।

महामत कहे ए मोमिनो, ए कहे मंदिरों के द्वार ।
ए देख के याद करो, अपना नित बिहार ।।३७।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यहां परमधाम के मंदिरों के दरवाज़ों की शोभा का वर्णन किया गया है । इसे देख कर अपने निजघर के नित्य लीला विहार के सुखों को याद कीजिये ।

प्रकरण-५, चौपाई-२३२

थंभन का सुमार

इस प्रकरण में रंगमहल के हवेलियों की हारों के मध्य आए स्तम्भों की शोभा का वर्णन है । श्री राज जी शब्दातीत शोभा को शब्दो में लेकर आए हैं, ताकि की ब्रह्मात्माओं सूरता परमधाम में पहुँच सके । यह स्तम्भ श्री राज जी के ही स्वरूप व चेतन हैं और श्री राज जी की चाहना के अनुरूप ही रूप धरते हैं । श्री राज जी सुंदरसाथ को आह्वान कर रहे हैं, कि इन नूरी स्तम्भों की शोभा को दिल में बसाइए । स्तम्भों के दरम्यान आई गलियों में श्री राज श्यामा जी और सखियां लीला विहार करते हैं । उनके अलौकिक सुखों का वर्णन ब्रह्मात्माओं के वास्ते हुआ है ।

ए थंभ जवेर नूर के, नूर है हक़ की जात ।
ख्वाब जिमिए नूर की, केहे ना सके कोई बात ।।१।।

श्री रंगमहल में सुशोभित स्तम्भ नूरमयी जवाहरातों के हैं और यह नूर स्वयं श्री राज जी का ही स्वरूप है । इस स्वप्न के संसार में नूर का विश्लेषण कोई नहीं कर सकता ।

ए ख्वाब जिमी पांच तत्व की, तिन के जवेर तिन माफक ।
वह बका ठौर चेतन, सो तो रूह में चेतन बेशक ।।२।।

पाँच तत्त्वों के इस स्वप्नमयी संसार में जवाहरात भी उनके अनुरूप नश्वर हैं परंतु परमधाम की हर चीज़ चेतन और आत्म स्वरूप है ।

जाकी जिमी जरे की रोशनी, तले कोट सूर छिप जाई ।
तिन भोम के जवेरन की, नूर नज़रों आई ।।३।।

परमधाम की नूरमयी धरती की एक कणिका की रोशनी के सामने क्षर जगत् के करोड़ों सूर्य छिप जायेंगे। ऐसे दिव्य परमधाम के जवाहरातों की तेजोमयी रोशनी को आत्मा की नूरी नज़रों से ही देखा जा सकता है ।

तामें ए थंभ जवेर के, जो चेतन अरस के ठौर ।
सो तो हक़ दिल माफिक, ता को नूर झलकत अति जोर ।।४।।

दिव्य चेतन भूमिका परमधाम के स्तम्भ भी चेतन जवाहरातों के हैं, जो कि परब्रह्म स्वामी के हृदय के अनुसार शोभा लिये हुए हैं । उनका नूरी प्रकाश चारों तरफ अत्यधिक झलकार कर रहा है ।

रंग जुदे रंग जवेर के, जो जिन ठौर शोभाए ।
तिन ठौर ते सब बन्या, ताकी सिफत न कही जाए ।।५।।

अलग-अलग रंगों के जवाहरात, जो जिस स्थान पर सुशोभित होते हैं वहां उसी रंग के बन जाते हैं । उनकी महिमा यहां के शब्दो में नहीं कही जा सकती है ।

यामें नकस कटाव चित्रामन, जवेर कई दरखत ।
पेड़ डारी पात फूल फल, सब जवेर नकस खुसखत ।।६।।

इन स्तम्भों पर कई प्रकार के नगों के वृक्षों, डालियां, पत्ते, फूलों और फलों की चित्रकारी और कटाव है। ये सारी जवाहरातों की नक्काशी दिव्य सुगंधी से महक रही है ।

बेल पात रंग किरना उठें, ताकी लेहेर बिंब हर तरंग ।
सामे थंभ नूर किरना लरे, करे जोत जोत सो जंग ।।७।।

चित्रकारी के वृक्षों, बेलों, पत्तों आदि से अनन्त रंगों की किरणें निकलती हैं । इन रंगों की तरंगें प्रतिबिंबित होती हैं और आमने सामने के स्तम्भों की नूरी किरणें आपस में टकराती हैं, ज्योति ज्योति से युद्ध करती प्रतीत होती है ।

सामें थंभ हार जब देखिए, खड़ी मानो नूर दिवाल ।
धात विसेक चेतन में, होत देखी दिल खुसाल ।।८।।

सामने आई स्तम्भों की हार जब देखते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि, मानों नूरी दीवार खड़ी हो (प्रत्येक दो स्तम्भों के मध्य नूरी किरणों की दीवाल बन जाती है)। इनमें से कई विशेष प्रकार के धातु के चेतन स्तम्भ हैं। यह अजब सी शोभा देखकर दिल खुशहाल हो जाता है ।

मिने नकस कटाव चित्रामन, कई पुतलियां जानवर ।
जोत जवेरों झलकत, भए शोभा सब ऊपर ।।९।।

स्तम्भों में नक्काशी और कटाव से युक्त पुतलियों और जानवरों के नूरी चित्र हैं । जवाहरातों की नूरी ज्योति से झलकती यह मनोहारी शोभा सर्वोपरि है ।

खेलते भासत सरूप, इन थम्भन के दरम्यांन ।
बिंब सामी बिंब झलकत, भोम हीरा एक रस जान ।।१०।।

रंगमहल के इन नूरी स्तम्भों के मध्य खेलते हुए सखियों के स्वरूप स्तम्भों में प्रतिबिंबित होते हैं । श्री परमधाम की भूमिका एक ही हीरे की एकरस है, जिसमें आमने सामने से झलकार करते प्रतिबिंब सुन्दर प्रतीत होते हैं ।

पांउ धरत ता उपर, बाजत सूर भूखन ।
चारों चरनों शोभित, इन रूहों के तन ।।११।।

श्री परमधाम की नूरी, अति कोमल ज़मीन पर जब युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी और सखियाँ अपने चरण कमल रखते हैं, तो उनके आभूषण मीठी आवाज निकालते हैं । श्री राजश्यामा जी एवं सखियों के चरणों में चार चार आभूषण सुशोभित हैं ।

संग जुगल सरूप के, चले लटकनी चाल ।
मटकै अंग मरोरते, करत है अति खुसाल ।।१२।।

युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी के साथ सखियाँ लटकनी मटकनी चाल से चलती हैं और अपने अंगों को मटकाते हुए युगल पिया को प्रसन्न करती हैं ।

कोई चलते बाते करें, जो बीतक अपनो बिहार ।
कोई थंभ टेक ठाढ़ी रहें, सुख उपजत अंग करार ।।१३।।

कोई सखी चलते हुए अपनी बीती हुई आनंद विहार की बातें करती है, तो कोई स्तम्भ से टेका लगाकर खड़ी है । इनके अंगों में अखण्ड आनंद सदैव उत्पन्न होता रहता है ।

कोई ठाढ़ी आगे मंदिर, दोए थंभो दरम्यान ।
अंग सो अंग लगाए के, रंग भीगे दोउ जान ।।१४।।

कोई सखी मंदिरों के आगे आए दो स्तम्भों के बीच में खड़ी है । अंग से अंग जोड़ के खड़ी दोनों सखियां प्रेम रस में भीगी हुई हैं ।

ए इशक सरूप नख सिख लों, देत परस्पर सुख ।
ए खेले नित बिहार में, देखे नूर जमाल का मुख ।।१५।।

सखियों के स्वरूप चरणों के नख से शिख (सिर) तक इश्क के ही हैं, जो कि एक दूसरे को परस्पर सुख देते हैं । नित्य विहार का आनंद लेती हुई सखिया, अक्षरातीत श्री राज जी का मुख निहारती हैं ।

मीठे नैन बैन मुख मीठे, जाके देखे होत सुख चैन ।
जुगल सरूप को अंक भर, देखे रस भरे नैन ।।१६।।

श्री राज जी के मीठे नैनों को देखकर और मीठे वचनों से अपार सुख चैन प्राप्त होता है । सखियाँ युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी से गले लगकर उन्हें प्रेम भरी दृष्टि से निहारती हैं ।

सब अंग भासत साड़ी मिने, और भूखन सब सिनगार ।
इनों को आदर करत हैं, पल पल परवरदिगार ।।१७।।

सखियों के नूरी अंग साड़ी में से भासित होते हैं तथा आभूषण सहित सम्पूर्ण श्रृंगार जगमगाता हुआ दिखायी देता है। उनक इन सखियों को उनके प्रियतम श्री राज जी, पल-पल आदर करते हैं ।

रूप सरूप सिनगार की, देखे ठरत जाके नैन ।
परसे सुख उपजावत, मुख मीठे सुनते बैन ॥१८॥

सखियों के रूप, स्वरूप एवम् श्रृंगार को देखने मात्र से ही श्रीराजजी के नयनों को करार (चैन) मिलता है । स्पर्श करने से और उनके मुखारविंद से मीठे रस भरे वचन सुनकर तो अत्यधिक सुख मिलता है।

सखी सखी सो रबद करे, आवे आगे जुगल किशोर ।
अपने अपने जीत की, लगी बातें करने ज़ोर ॥१९॥

सभी सखियाँ आपस में प्रेम पूर्ण वाद-विवाद करती हुई, युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी के सम्मुख आती हैं और उमंग व जोश में अपनी अपनी जीत की बातें करती हैं ।

राज थंभ आगे ठाढ़े रेहे के, राखत दोउ के मन ।
बात सराहत दोनों की, हंसत होत प्रफुल्लत तन ॥२०॥

श्री राज जी स्तम्भों के आगे खड़े होकर दोनों सखियों के बात की सराहना करके दोनों का मन रख लेते हैं। इस प्रकार सभी प्रफुल्लित होकर हंसने लगते हैं।

जाके मन राखन की, लेत चित्त में नूर जमाल ।
मैं तिन के सुख की क्या कहूं, ए होत कैसे खुसाल ॥२१॥

जिस सखी को खुश करने का विचार श्री राज जी अपने दिल में लेते हैं, उन सखियों के सुख का किस प्रकार वर्णन करें? उनकी प्रसन्नता की तो कोई सीमा ही नहीं होती है ।

ए राज़ी राखे हक़ को, रहे हक़ से राज़ी रूहें तन ।
नित बिहार सुख सागर, रेहेत प्रफुल्लत मन ॥२२॥

सभी सखियां श्री राज जी को प्रसन्न रखती हैं और उन सखियों के तन श्री राज जी से प्रसन्न रहते हैं । अखण्ड इश्कमयी लीला के सुख सागर में उनका मन सदैव प्रसन्न चित्त रहता है ।

इत सुख थंभ गलियन में, लेवें रूहें हादी हक़ ।
आवे नहीं जुंबान में, इनों का सरूप इशक ॥२३॥

रंगमहल में स्तम्भों की हारों के मध्य आई गलियों में श्री राजश्यामा जी

और सखियाँ अखण्ड सुख लेते हैं । युगल स्वरूप और सखियों के इश्कमयी स्वरूपों का वर्णन इस जुबां से नहीं हो सकता है ।

कही गिनती थम्भन की, जो हवेली के दरम्यान ।
आगे हर मंदिरन के, आवे हक़ की दिए पेहेचान ।।२४।।

रंगमहल में हवेलियों के पहले फिरावे के बीच आए थम्भों की गणना बता रहे हैं । हर मंदिर के आगे मंदिर की हद पर थम्भ आए हैं, जिसकी पहचान श्री राज जी की मेहेर से ही हो सकती है ।

हर एक हवेलीय के, छहत्तर थंम होए ।
ए हवेलियों के भीतर, मंदिर आगे कहे सोए ।।२५।।

प्रत्येक हवेली में मंदिरों के हार के भीतरी तरफ स्तम्भों की एक हार है, जिसमें 76 स्तम्भ कहे गये हैं।

तिन की गिनती में कही, देखो मोमिनों सुमार ।
हवेली नव सौ चौबीस, तले चौक विस्तार ।।२६।।

हे सुन्दरसाथ जी ! इन स्तम्भों की गिनती को देखिये । रंगमहल की प्रथम भोम में, हवेलियों के पहले फिरावे की चार हारों में, ९२४ हवेलियाँ आयीं हैं ।

सत्तर हज़ार दोए सौ चौबीस, एक भोम के कहे नूर ।
यों नवो भोम की हवेलियां, थंभ झलकत नूर ज़हूर ।।२७।।

एक भोम की इन ९२४ हवेलियों में कुल ७०,२२४(९२४x७६) नूरमयी स्तम्भ आए हैं । इसी तरह से रंगमहल की नवो भोमों की हवेलियों में बीच नूरमयी स्तम्भ झलकार कर रहे हैं ।

छ लाख बत्तीस हज़ार, सोले कहे ता ऊपर ।
ए गिनती थंभ देख के, आओ धाम अन्दर ।।२८।।

इस प्रकार रंगमहल की नौ भोमों में कुल ६,३२,०१६ स्तम्भ सुशोभित है । स्तम्भों की गिनती देखकर निजधाम रंगमहल के भीतर आइये ।

घटती थंभ भुलवनी, बारे सौ सोले घाट ।
बत्तीस थंभ चबूतरे, भुलवनी मंदिरों को ठाट ।।२९।।

रंगमहल की दूजी भोम में १६ चौरस हवेलियों की जगह में भुलवनी

के मंदिर आने से १२१६(१६x७६) स्तम्भ कम हो जाते हैं । ३२ स्तम्भ भुलवनी के मध्य आए चबूतरे पर शोभा ले रहे हैं ।

बाकी छ लाख तीस हज़ार, आठ सौ बत्तीस ता पर ।
ए थम्भन की गिनती, रहें मोमिनों दिल उपर ॥३०॥

इस प्रकार कुल स्तम्भ ६,३०,८३२ होते हैं । स्तम्भों की गिनती मोमिनो के दिलों में बसी होती है । (६३२०१६-१२१६+ ३२=६३०८३२)

ए हक़ हादी रूहन को, कह्यो नित बिहार ।
या को पल पल देखियो, आवे और ना आड़े विचार ॥३१॥

यह युगल स्वरूप श्री राज-श्यामा जी और सखियों की अखण्ड लीला विहार के स्थानों का वर्णन किया है । हे सुंदरसाथ जी ! इस अलौकिक अखंड लीला को पल-पल आत्मिक नज़र से देखिये । उसके अतिरिक्त आपके हृदय में और कोई दूसरा विचार नहीं आना चाहिए।

तुम उतरे अरस अज़ीम से, तुमारी हक़ सों निसबत ।
तुम को ऐसा चाहिए, रहे धाम खिलवत ॥३२॥

हे सुन्दर साथ जी ! आप सब अर्श अज़ीम परमधाम से आए हो और आपकी निस्बत (आत्मिक सम्बन्ध) प्रियतम अक्षरातीत के साथ है । इसलिए आपकी नज़र सदैव रंगमहल के अंदर मूलमिलावे में, युगल पिया श्री राज-श्यामा जी के चरणों में रहनी चाहिए ।

तुम और हक़ सों, अन्तर नाहीं लगार ।
मेहेर करी तुम उपर, पैदर पे परवरदिगार ॥३३॥

प्रियतम श्रीराज जी और आप में कोई अन्तर नहीं है । परब्रह्म स्वामी ने पुनः पुनः आप सभी आत्माओं पर कृपाएं की हैं।

द्वार अरस अज़ीम का, खोला तुम कारन मोमन ।
तुमको खैंचत अरस में, आओ ठौर जिमी रोशन ॥३४॥

हे सुंदरसाथ जी! अर्श अज़ीम – परमधाम के अखण्ड सुखों के द्वार आप के लिये ही खोला है। परमधाम के अखण्ड सुखों का वर्णन करके आपकी सुरता को प्रियतम धाम धणी परमधाम की ओर खींच रहे हैं। अपने दिव्य स्वप्रकाशमयी निजधाम में आईये।

जो तुम सों हजूर में, करी रद बदल सुभान ।
सो सरत आए मिली, ताकी करो पेहेचान ।।३५।।

आप सखियों के साथ मूल मिलावे में प्रियतम अक्षरातीत ने जो इश्क-वार्तालाप किया था, अब वह समय आ गया है कि उस इश्क की पहचान करें ।

इशारत क्यामत की, आया उठने का दिन ।
ए सब किया तुम वास्ते, उपर खेंचे बीच रोशन ।।३६।।

कुर्आन आदि धर्मग्रंथों में कियामत (कलियुग के अंतिम समय) की जो निशानियाँ संकेतों में लिखी हैं, अब वह आत्म जागृति का दिन आ गया है । यह सम्पूर्ण लीला आप आत्माओं के लिये ही की गयी है । अब प्रियतम श्री राज आपको अखण्ड परमधाम के दिव्य सुखों की तरफ खींच रहे हैं ।

ए रोशनी बका की, जो भोम बका चेतन नूर ।
ता को इत जाहिर किया, हुआ वास्ते तुम जहूर ।।३७।।

यह अखण्ड परमधाम का दिव्य ज्ञान है, जो कि नूरमयी, चेतन व अखण्ड भूमिका है । उसे इस संसार में प्रकट कर रहे हैं । यह महान् लीला आप ब्रह्मात्माओं के कारण ही हो रही है ।

महामत कहें ए मोमिनों, ए बका तुमारा ठौर ।
तुम बिना इन सुख को, कोइ न समझे और ।।३८।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह अखण्ड परमधाम तुम्हारा ही निजघर है । यहाँ के अखण्ड सुखों को तुम्हारे अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं समझ सकता है ?

प्रकरण-६, चौपाई-२७०

थम्भन के मेहेराब

इस प्रकरण में रंगमहल में आई मेहराबों का मनोरम वर्णन है । जिस अद्वैत भूमि परमधाम की कोई थाह नहीं पा सका, उस नूरी, चेतन परमधाम के जर्रे जर्रे का वर्णन, श्री राज जी अपनी ब्रह्म प्रियाओं के लिए कर रहे हैं । इन्हीं के लिए उन्होंने अपना रसूल भेजा और अपनी बड़ी रूह श्यामा महारानी को भेजा । ब्रह्मात्माओं के जगत् में आने से पहले ही उनकी महिमा सब धर्म ग्रंथों मे वर्णित की है । इन्हीं ब्रह्म प्रियाओं के लिए रसूल साहब ने फरमाया है कि मेरा

गम (फिक्र) मेरे भाइयों के लिए है, जो आख़िरत के समय दुनिया में आएंगे ।

अब कहूं मेहेराब की, इन भांत बका ठौर ।
जाकी तरफ न पाई किने, बिन मोमिन ना कादर और ।।१।।

अब अखण्ड परमधाम में आयी महरावों की नूरी शोभा का वर्णन करता हूं, जिस परमधाम की दिशा भी कोई नहीं जान पाया । क्योंकि ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई भी उस दिव्य ज्ञान को पाने की सामर्थ्य नहीं रखता है ।

मोमिन बड़ा मरातबा, जो लिखा मिने फिरकान ।
खुदा सराहत इन को, सुनावत सकल जहान ।।२।।

क़ुरान ए पाक आदि धर्मग्रंथों में मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की बड़ी महिमा लिखी है । उनमें स्वयं खुदा तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) उनकी प्रशंसा करते हुए, दुनिया के सामने मोमिनों की महिमा प्रकट कर रहे हैं ।

आगे से बंध बांधया, भेजा रसूल अलेह सलाम ।
अग्यारे सौ बरस आगूं कह्या, बीच दीन इसलाम ।।३।।

ब्रह्मात्माओं के संसार में आने से पहले ही परब्रह्म स्वामी ने ऐसा निश्चित कर दिया था । उन्होंने ग्यारह सौ वर्ष पूर्व ही रसूल अलैहिस्सलाम को भेजकर दीन ए इस्लाम की स्थापना करवायी और ब्रह्मात्माओं के आने की भविष्यवाणी करवा दी ।

ए अबूजर तू जानत, कहां है मेरा गम ।
दिया जबाब अबूजर ने, कह्यो रसूल अल्ला इसलाम के तुम ।।४।।

रसूल साहब ने अपने मित्र अबूजर से पूछा कि क्या तुम जानते हो कि किसके प्रति मेरा दुःख (चिंता) है ? तब अबूजर ने जवाब दिया, कि आप अल्लाह के रसूल हैं, आप ही बताईये ।

मेरा गम रहेत है, मेरे भाईयों मिने मोमिन ।
तब कह्यो अबूजर ने, हम भाई ना तेरे तन ।।५।।

तब रसूल साहब ने कहा, कि मेरा दुःख (चिंता) मेरे मोमिन भाईयों के प्रति है । तब अबूजर ने कहा कि, क्या हम सब आपके भाई नहीं हैं ?

तब जबाब दिया रसूल ने, तुम मेरे दोस्त यार ।
मेरे भाई आगे आवेंगे, वह भेजे परवरदिगार ।।६।।

तब रसूल साहब ने उत्तर दिया, कि आप सब मेरे दोस्त (मित्र) हैं । मेरे भाई मोमिन बाद में (आखिरत के समय) आयेंगे, जब उन्हें परवरदिगार (परब्रह्म स्वामी) संसार का खेल देखने भेजेंगे ।

वे होएंगे साथ मेहदीअ के, जो खुदाए दिया मुझे इलम ।
सो मेहदी देगा भाईअन को, जासों रोशन होए आतम ।।७।।

वे मोमिन भाई इमाम महदी साहिबुज्जमां के साथ दुनिया में आयेंगे और जो इल्म मुझे खुदा तआला ने अता फरमाया (प्रदान किया) है, वह इमाम महदी, मेरे भाई मोमिनों को प्रदान करेंगे, जिससे कि उनकी आत्मा में ज्ञान का प्रकाश हो जायेगा ।

एक बूंद बरसे आसमान से, मगर वास्ते मोमिन ।
जिमीन उगावे तिन का, वास्ते रब्बानी गिरो रोशन ।।८।।

आकाश (परमधाम) से एक बूंद भी (ब्रह्मज्ञान) का बरसता (अवतरित होता) है, तो वह मोमिनों के लिये ही बरसता है। रब्बानी गिरोह (ब्रह्मसृष्टियों) के हृदय रूपी धरती पर ही ब्रह्मज्ञान का अंकुर फुटता है।

जुल जुला क्यामत का, उतरे बलाए आसमान ।
सो दफे होए वास्ते मोमिन, सब ऊपर जहान ।।९।।

कियामत के समय आसमान से अनेक प्रकार की मुसीबतें (भूकंप, बाढ़, सूखा) आदि दुनिया में उतरेंगी । वे मुसीबतें मोमिन (ब्रह्मात्माओं) के कारण, दुनिया वालों से भी दूर हो जायेंगी ।

समे सखत होवहीं, होए पोहोरा दज्जाल ।
में द्वा मांगता हों हक़ पे, रखने इन का दिल खुशहाल ।।१०।।

वह समय बहुत ही कठिन होगा, संसार में कलि-दज्जाल (अज्ञानता) का साम्राज्य होगा । मैं परब्रह्म अक्षरातीत (हक़ तआला) से दुआ मांगता हूं कि ऐसे कठिन समय में, उन मोमिनों को दुःख ना हो और उनका हृदय प्रसन्न रहे ।

दफे कर इन के दुश्मन, ए मेरे परवरदिगार ।
अग्यारे सौ बरस आगे से, जिन की फिकर करत विचार ।।११।।

हे मेरे परवरदिगार ! उनके दुश्मनों (अज्ञानता व विकारों) को दूर कर दीजिये । इस प्रकार ग्यारह सौ वर्ष पहले से ही, मुहम्मद साहब उन मोमिन

ब्रह्मात्माओं की चिंता करते हुए दुआ कर रहे हैं (उनकी कैसी महिमा होगी ?) ।

सो द्वा मांगन वाला रसूल, जाको हक़े कह्या हबीब ।
इनों वास्ते उतरे रूह अल्ला, भव रोग मिटावे तबीब ।।१२।।

ऐसी दुआ मांगने वाले स्वयं रसूल साहब हैं, जिन्हें परब्रह्म स्वामी ने अपना प्यारा माशूक कहा है । उन मोमिनों के लिये ही, रूहूल्ला श्री श्यामा जी परमधाम से आये हैं, जो कि भव रोग मिटाने वाले तबीब (वैद्य) हैं ।

मैं अव्वल होऊंगा, और ईसा आवे आखर ।
हम दोऊ दरम्यान में, मेहेंदी करे जमा खातर ।।१३।।

मैं (रसूल साहब) पहले आया हूँ, और हज़रत ईसा रूहअल्ला आखिर में आएंगे । हम दोनों के बीच में इमाम महदी साहिबुज्जमां आकर सबको अखण्ड परमधाम पर सिज्दा करायेंगे । (कुछ हदीसों में पहले इमाम महदी के आने की बात आती है, तो कुछ में ईसा रूहूल्ला के पहले आने की बात आती है । किंतु दोनों तनों को ईसा रूहूल्ला का दो जामा भी कहा गया है ।)

के फतहलाक उमती, क्यों हलाक होवे उम्मत ।
इनों को आसान होएगा, सखत बख़त क्यामत ।।१४।।

उस समय सभी मत-मतान्तर, आपस में लड़-झगड़ कर एक दूसरे को खत्म करने का प्रयास करेंगे । किन्तु मेरी उम्मत (नाजी फिरका) कभी खत्म ना हो सकेगी । उनके लिये, कियामत की इतनी कठिन परिस्थिति भी आसान हो जायेगी ।

उस बख़त मोमिन, बैठे उपर तखत नूर ।
सिफ़त तिन बख़त की, सो कह्यो न जाये ज़हूर ।।१५।।

उस समय (कियामत के दिन), ब्रह्ममुनि (मोमिन) इश्क ईमान रूपी नूरी सिंहासन पर विराजमान होंगे । उस मुबारक घड़ी की शोभा व महिमा का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

उस बख़त जाहिर करोंगा, हाल सकल जहान ।
नूर देखो नीचे उतरे आसमान से, तिन की तब करो पेहेचान ।।१६।।

उस समय संसार के समस्त जीवों के दिलों की वास्तविक स्थिति जाहिर की जायेगी । उस समय आसमान (परमधाम) से, संसार में नूरी शक्तियां अवतरित होंगी । तब सबको सत्य की पहचान होगी ।

जबराइल हर मोमिन के, घरों आवे जब ।
निसानी दस्तपोसीअ की, दिल रोशनी पकड़े तब ।।१७।।

उस समय जिब्रील (परब्रह्म का जोश) प्रत्येक मोमिनों के दिलों में आयेगा और उन्हे जागृत करेगा, जिससे सभी मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) का दिल ब्रह्मज्ञान (खुदाई इल्म) से प्रकाशमान हो जायेगा ।

तिनों को अरस अज़ीम के, तब ही खुले सब द्वार ।
तब दौड़े हक़ तरफ को, पोहोंचे परवरदिगार ।।१८।।

वह दिव्य तारतम ज्ञान प्राप्त कर लेने से उनके लिये अखण्ड परमधाम (अर्श अज़ीम) के (अखण्ड सुखों के) सारे दरवाजे खुल जायेंगे । तब वे प्रियतम परब्रह्म के साक्षात्कार के लिये (साधना पथ पर) इश्क व ईमान लेकर दौड़ पड़ेंगे, और उनकी सुरता प्रियतम के चरणों में पहुंच जायेगी ।

नूर पहुँचे बका न्यामते, जो हक़ के दिल अन्दर ।
तिन को इत जाहिर करें, अरस थंभ मेहेराब मंदिर ।।१९।।

हक़ तआला (प्रियतम अक्षरातीत) के दिल में स्थित तमाम नूरी नैमतें (दिव्य निधियाँ), मोमिनों के दिलों में प्रकट हो जायेंगी । उसे मोमिन इस दुनियां में जाहिर करेंगे, कि उस दिव्य परमधाम में स्तम्भ, मेहराबें, मंदिर किस प्रकार के हैं ।

ए मेहेराब अरस अज़ीम के, जित झरोखे झांखत ।
बैठक नूर जमाल की, होत खुशाल बख़त ।।२०।।

ये नूरी महराबें अर्श अज़ीम–परमधाम के हैं, जहां महराबों से युक्त झरोखों में बैठकर सखियां वनों के नजारे (सुंदर दृश्य) देखती हैं। जब श्री राज जी यहां झरोखों में विराजमान होते हैं, तो वह समय बहुत ही खुशनुमा होता है।

इत मूजरे को आवत, दायम नूर जलाल ।
मूजरा कर पीछा फिरे, होत दिल खुशाल ।।२१।।

यहाँ नूरजमाल (अद्वितीय शोभा वाले अक्षरातीत परब्रह्म श्री राज जी) के दर्शन करने के लिए, अक्षरब्रह्म (नूरजलाल) प्रति दिन आते हैं और उनका दर्शन कर दिल में अति प्रसन्न होकर अपने अक्षरधाम में वापस चले जाते हैं ।

तिन नूर की तरफ को, इच्छत ब्रह्मा विष्णु महेश ।
तिन त्रैगुन की प्रापत को, जहान धरत कई भेश ।।२२।।

उन अक्षर ब्रह्म के दर्शनों की चाहना ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी करते हैं, जबकि उन त्रिदेवों को पाने के लिए दुनिया वाले अनेकों प्रकार की वेश–भूषा धारण करके अनेकों साधनायें करते हैं ।

कोई पोहोंच ना सके अक्षर लों, जेता त्रैगुन विस्तार ।
ए तो केहेनी अरस अज़ीम की, जाए नूर सेवत परवरदिगार ।।२३।।

किंतु यह जितना भी त्रिगुणात्मक जगत् है, उनमें से कोई भी अक्षर ब्रह्म तक नहीं पहुंच पाता । और यहां तो उस दिव्य परमधाम का वर्णन किया जा रहा है, जहां परब्रह्म के दर्शनों के लिये, स्वयं अक्षरब्रह्म भी कृतज्ञता पूर्वक जाते हैं ।

हक़ निसवत बिना पोहोंचे नाहीं, अरस अज़ीम बीच नज़र ।
जिनों को लैलत कदर की, होए गई इत फजर ।।२४।।

प्रियतम परब्रह्म से आत्मिक संबंध के अभाव में, दिव्य परमधाम में किसी की भी आत्मिक दृष्टि नहीं पहुंच सकती । परब्रह्म की कृपा से, उन आत्मसंबंधी आत्माओं के लिये अज्ञानता रूपी संसार में भी ब्रह्मज्ञान रूपी सुबह हो गयी है ।

सो समझे इन बात को, सोई मेहेराब देखनहार ।
जो हक़ सुभान के शामिल, नित्याने करत बिहार ।।२५।।

वे ब्रह्मात्माएं ही परमधाम की इन बातों को समझते हैं, और वे ही वहां की दिव्य मेहराबों का दर्शन कर पाते हैं । क्योंकि वे ही प्रियतम परब्रह्म के साथ परमधाम की दिव्य महलों व गलियों में नित्यप्रति लीला विहार करते हैं ।

ए थम्भ जवेर अरस के, हीरा धात चेतन ।
साम सामे नूर झलकत, सब जानत दिल मोमिन ।।२६।।

परमधाम के ये स्तम्भ हीरा आदि दिव्य चेतन जवाहरातों एवं धातुओं के हैं। आमने सामने स्थित नूरी स्तम्भ अनेक रंगों की झलकार करते हैं । उस शोभा को ब्रह्मात्माओं का हृदय अच्छी तरह से जानता है ।

हक़ हादी रूहें रमन की, थम्भ दिवाले मेहेराब नूर ।
हक़ हादी रूहें इत देखिए, करत विहार ज़हूर ॥२७॥

रंगमहल में शोभा लेने वाले ये नूरी स्तम्भ, दीवारें और महराबें श्री राज श्यामा जी और ब्रह्म प्रियाओं की रमण स्थली है । श्री राज श्यामा जी एवं सखियों को यहाँ आनंद पूर्वक लीला विहार करते देखिए ।

क्यूं कर रमन करत हैं, क्यों चले लटकनी चाल ।
कैसे भूखन बाजत, कैसा दिल होत खुशाल ॥२८॥

हे रूहों ! आत्मिक नज़र से देखिए, कि श्री राजश्यामा जी और सखियाँ किस प्रकार से आनंदमयी लीला विहार करते हैं और कैसे लटकनी मटकनी चाल से चलते हैं ! नूरी स्वरूपों के आभूषणों की मीठी झंकार को सुनिए । सबके दिल कैसे धाम धनी के असीम लाड़ से खुशहाल होते हैं ! उन्हें महसूस कीजिए ।

जिन की बातों में एता सुख, श्रवनों सुख नाहीं पार ।
तिन के संग रमन में, होसी कैसो सुख नित बिहार ॥२९॥

जिन प्रियतम श्री राज जी की मीठी मीठी बातों में इतना सुख है, कि उसके श्रवण के सुख का ही पारावार नहीं है । तो फिर उनके साथ नित्य लीला विहार रमण में कितना सुख होगा !

इत रूहें संग सुभान के, लाड़ में करें हुज्जत ।
अंग संग सुख लेवहीं, ए कैसी तुमारी लज्ज़त ॥३०॥

यहां परमधाम में प्रियतम अक्षरातीत के लाड प्यार में डूबी प्रियतम की अंगरूपा ब्रह्मप्रियाएं, उनसे अनेक प्रकार से प्रेम पूर्वक अधिकार जताते हुए लीला विहार करती हैं । ये कैसे आपके अखण्ड सुख है !

अब कहूं गिनती मेहेराब की, देखियो तुम मोमिन ।
झलकत नूर आसमान में, एह देखो ठौर रोशन ॥३१॥

हे ब्रह्मात्माओ ! अब महराबों की गिनती का वर्णन करता हूं, उसे आप ध्यानपूर्वक सुनिये । उसकी नूरमयी किरणें आकाश में जगमगा रही है । यहां के दिव्य प्रकाश को देखिये ।

इन थंभन के मेहेराब, जो हर हवेली दरम्यान ।
एक सौ छप्पन गिनती, करो ताकी जमा पेहेचान ॥३२॥

रंगमहल की प्रत्येक हवेली के अंदर स्तम्भों के मध्य १५६ (७६x२=१५२+४= १५६) महराबें हैं, उनकी पहचान कीजिये।

छेहत्तर दूनी एक सौ बावन, चार कोने की बढ़ती जान ।
हर एक एक सौ छप्पन, रहे मोमिन दिल आसान ।।३३।।

हवेली के भीतर घेर कर ७६ स्तम्भों की एक हार आई है, तो महराबें १५२(७६x२) हुईं और चार महराबें चार कोने की ज़्यादा आने से हर हवेली में १५६ महराबों की शोभा हुई। इसे समझना मोमिनों के दिलों के लिये सरल होता है।

तिन मेहेराब की कहूं, एक भोम की गिनती ।
एक लाख चौवालीस हज़ार, और चौवालीस बढ़ती ।।३४।।

प्रथम भूमिका में प्रथम फिरावे की हवेलियों में आई महराबों की गिनती कह रहे हैं । प्रथम भूमिका में कुल महराबें १,४४,१४४(९२४x१५६) है।

गिनती नव सौ चौबीस की, हर हवेली एक सौ छप्पन ।
ता को सुमार कर के, देखो दिल रोशन ।।३५।।

रंगमहल के पहले फिरावे में ९२४ हवेलियाँ हैं जिनमें से प्रत्येक हवेली में १५६ नूरी मेहेराबों की शोभा है । इनका हिसाब करके ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित अपने हृदय में उसकी शोभा देखिये (बसाईये)।

नव सौ चौबीस हवेलियां, ताके थम्भ मेहेराबी द्वार ।
ताकी गिनती देखियो, जो करे जुगल स्वरूप बिहार ।।३६।।

नौ सौ चौबीस हवेलियों में आये स्तम्भों पर जो महराबी द्वार (महराबें) आये हैं, उनकी गणना करके देखिये , जहां युगल स्वरूप आनंद पूर्वक लीला विहार करते हैं।

बारे लाख छानबे हज़ार, तीन सौ छानबे उपर ।
भुलवनी के द्वार होए के, मोमिन आवो ता के अन्दर ।।३७।।

रंगमहल की नौ भोम में कुल महराबें १२,९६,३९६ आई हैं । हे ब्रह्मात्माओं ! भुलवनी के मंदिरों में द्वारों से होकर उसके अंदर आइये ।

भुलवनी के चौक में, इत थम्भ नहीं मेहेराब ।
ताकी घटती सोले हवेली की, हर एक में एक सौ छप्पन बाब ।।३८।।

१६ चौरस हवेलियों की जगह में भुलवनी के मंदिर आये हैं, जिस कारण उस अनुसार स्तम्भ व महराबें नहीं हैं। इस कारण प्रत्येक हवेली के हिसाब से १५६ महराबें घटेंगी।

ता के चौबीस सौ छानबे, घटती हुई जान ।
बाकी बारा लाख तिरानबे हज़ार, धर नव सौ उपर आसान ।।३९।।

भुलवनी के चौक में १६ हवेली आनी चाहिए थी तो उनकी मेहेराबें २४९६(१६x१५६) गिनती में कम होने से कुल मेहेराबें १२,९३,९०० हुई ।

ए थम्भ मेहेराब कहे, ठौर जेती आई नज़र ।
हक़ हादी मोमिन सोहोबत, करी मेहर नज़र फजर ।।४०।।

ध्यान दृष्टि से परमधाम की जितनी शोभा (स्तम्भों व महराबों) को मैंने देखा, उसका यहां वर्णन किया है । श्री राज श्यामा जी के साथ ब्रह्मात्माओं की होने वाली प्रेम व आनंदमयी लीलाओं का वर्णन कर के परब्रह्म ने कृपादृष्टि करते हुए ब्रह्मज्ञान का उजाला कर दिया है ।

कई सुख स्वाद रमन के, लेवे रूहें हक़ सोहोबत ।
सुख इन जुबां केते कहूं, रूह मोमिन जाने निसबत ।।४१।।

दिव्य परमधाम में ब्रह्मप्रियाएं प्रियतम अक्षरातीत के साथ रमण करने का कई प्रकार से सुख प्राप्त करती हैं । उन सुखों का इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करूं ? उसे प्रियतम अक्षरातीत की अंगरूपा ब्रह्मप्रियाएं (सखियां) ही जानती हैं।

ए सुकन तो हक़ के, या हादी दिया जाने जिन ।
या निसबती सोहोबत, सब जानत दिल मोमिन ।।४२।।

परमधाम की ये दिव्य वाणी तो स्वयं परब्रह्म अक्षरातीत की है, उसे या तो हादी श्री श्यामा जी जानती हैं, जिन्होंने इस संसार में वह दिव्य ज्ञान लाकर हमें दिया है, या तो उनकी संगत से आत्मसंबंधी ब्रह्मात्माओं का हृदय इन सब बातों को जानता है ।

महामति कहे ए मोमिनों, तुम हो हक़ की जात ।
मेहेर हक़ सुभान की, महंमद की हुई सिफ़ात ।।४३।।

महामति जी कहते हैं कि हे मोमिनों ! आप सभी आत्माएं प्रियतम

परब्रह्म की अंगरूपा (अद्वैत स्वरूप) हो । आपके ऊपर हक़ सुब्हान तआला (प्रियतम परब्रह्म) की अपार कृपा है, जिस कारण मुहम्मद (श्रीश्यामाजी) की सिफायत आप पर हुई है । (जिससे आपको परमधाम का ज्ञान प्राप्त हुआ है)

प्रकरण-७, चौपाई-३१३

मूल मिलावे की चार हवेलियां

इस प्रकरण में अखण्ड परमधाम की नूरी, चेतन व सुगन्धि से भरपूर अति कोमल भूमि का वर्णन किया गया है । वहां के नूरमयी स्तम्भों का मनोहारी वर्णन हुआ है । स्तम्भों के दरम्यान युगल स्वरूप श्री राज-श्यामा जी एवं सखियों की रूहों के साथ होने वाली प्रेममयी लीला विहार की झलक प्रस्तुत की गयी है, ताकि ब्रह्मात्माओं की सुरता परमधाम में लग सके । यह उस दिव्य परमधाम का वर्णन है जहां का ज्ञान आज दिन तक कोई भी नहीं पा सका। यह तो कारज कारण बना, जो ब्रह्म सृष्टियां इस नश्वर जगत् में अवतरित हुयीं। उन्हीं की कृपा से आज दुनिया के सामान्य जीव भी तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम की पहचान कर रहे हैं, नहीं तो इस ज्ञान की सुध तो अक्षरब्रह्म को भी अक्षरधाम में जागृत अवस्था में नहीं थी । श्री राज की कृपा श्यामा जी पर होती है और श्यामा जी की कृपा मोमिनों पर बरसती है, इस प्रकार ये तीनों एक ही स्वरूप हैं । जागृत बुद्धि, हुक्म, जोश, तारतम ज्ञान और श्री श्यामा जी की आत्मा, ये पाँचों शक्तियाँ मोमिनों के बीच इकट्ठी हुई हैं, अब सबको एक पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत की पहचान होगी और यह ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जायेगा।

ए भोम अरस अज़ीम की, रस हीरा धात चेतन ।
फिरते झरोखें गृद के, शोभित हैं कायम वतन ।।१।।

यह दिव्य परमधाम की स्वलीलाद्वैत भूमिका है, जहां के हीरा आदि जवाहरात एवं धातु चेतन (आत्मस्वरूप) व एकरस हैं । रंगमहल के चारों तरफ किनारे (बाहरी हार मंदिर की बाहरी दीवाल पर) सुंदर झरोखें आये हैं । इस प्रकार अखण्ड परमधाम की शोभा नूरमयी है ।

सब थम्भ दीवाल नूर की, रस हीरे जोत अपार ।
साम सामी किरना लरे, करे झलकारों झलकार ।।२।।

रंगमहल की स्तम्भें व दीवालें आदि सब नूरमयी रस युक्त हीरे की

अपरम्पार ज्योति से चमक रहें हैं । उनकी नूरमयी किरणें आमने–सामने से आकर आपस में टकराती हुई मनोरम झलकार कर रही हैं ।

ए नूर जोत जवेरन की, नाहीं निमूना कोए ।
कहे बिना मोमिन के, दिल रोशन ना होए ।।३।।

परमधाम के जवाहरातों की इस नूरमयी ज्योति का इस नश्वर संसार में कोई भी उदाहरण नहीं है । परंतु परमधाम का वर्णन किये बिना ब्रह्मात्माओं के हृदय में ज्ञान का प्रकाश कैसे हो सकेगा ?

जब देखिए बका ठौर को, तो आवत नाहीं हिसाब ।
सत ठौर का निमूना, क्यूं दीजे जिमी बीच ख्वाब ।।४।।

जब अखण्ड परमधाम की भूमिका को आत्मिक दृष्टि से देखा जाता है, तो उसकी शोभा, सुंदरता की कोई सीमा नहीं दिखती । सत्य परमधाम के शोभा दर्शाने के लिये इस स्वाप्निक जगत् की नश्वर वस्तुओं का उदाहरण किस प्रकार दिया जाये ।

मन बुध चित्त जो ख्वाब के, सो पोहोंचे नींद लों निदान ।
आगे चल क्यूं ना सके, क्यूं कर सके पेहेचान ।।५।।

स्वप्न के मन, बुद्धि और चित्त निराकार (नींद) तक ही पहुँच पाते हैं । निराकार से आगे किसी भी तरह से नहीं जा पाते, तो फिर ये परमधाम की पहचान कैसे कर सकते हैं ?

तो नेत नेत वेदों कह्या, हमको नाहीं गम ।
पोहोंच जो त्रैगुन की, सो तो लग आतम ।।६।।

इस कारण वेदों ने भी परब्रह्म के विषय में "न इति न इति" अर्थात् "यह नहीं, यह नहीं" कह दिया कि परब्रह्म तक हमारी पहुंच नहीं है । त्रिगुणात्मक जगत् जीवों की पहुंच मात्र उनके मूल आत्म स्वरूप आदिनारायण तक है । ("आतम नारायण नाचत बुध ब्रह्मा")

तिन की तन मात्रा के, ए जो मूल जहान ।
तिनों का सबद इन जिमी, क्यूं कर सके पेहेचान ।।७।।

त्रिगुण (सत् रज व तम) की तन्मात्रा (शब्द, रस, रूप, स्पर्श, गंध) से यह सारा संसार उत्पन्न हुआ है । ऐसे झूठे संसार के शब्दों से अखण्ड परमधाम की पहचान किस प्रकार हो सकती है ?

तो खोज करके सब थके, हार कह्या बेचून ।
ए केहेनी तिन आगे की, सो तो होए ना बिना मोमिन ।।८।।

इस कारण उस पूर्ण ब्रह्म की खोज कर कर के सब थक गये और अंत में हारकर परमात्मा को सबने निराकार कह दिया । यह वर्णन तो निराकार के आगे का है, जिसका ब्रह्मात्माओं के अन्य सिवा कोई वर्णन नहीं कर सकता है ।

हक़ की मेहेर हादी पर, होए हादी मेहेर मोमिन ।
सब एक ही जात है, सोहबत मोमिन करे रोशन ।।९।।

श्री राज जी की मेहर श्री श्यामा जी पर होती है और श्री श्यामा जी की अपार मेहर मोमिनों पर होती है । ये तीनों एक ही स्वरूप हैं । सद्गुरू स्वरूप श्री श्यामा जी की संगत से ही मोमिन (ब्रह्मात्माएं) श्री परमधाम का ज्ञान दुनिया में जाहिर करते हैं।

जाग्रत बुध आए बिना, जो लों होए ना बुध अवतार ।
तो लों बका भोम को, पोहोंचे ना परवरदिगार ।।१०।।

संसार में बुद्धावतार के प्रगट हुए बिना अर्थात् जागृत बुद्धि के आये बिना उनकी आत्मिक दृष्टि अखण्ड परमधाम में परब्रह्म अक्षरातीत तक नहीं पहुंच सकती ।

जो लों अरस अज़ीम से, आवे ना हक़ हुकम ।
तो लों अरस अज़ीम में, पहोंच ना सके आतम ।।११।।

जब तक परमधाम से परब्रह्म श्री राज जी का हुक्म नहीं आ जाता, तब तक आत्मा उस दिव्य धाम में नहीं पहुँच सकती है ।

जो लों जोस जबराईल, भेजे ना हक़ सुभान ।
तो लों बका ठौर की, कर ना सके पेहेचान ।।१२।।

जब तक प्रियतम अक्षरातीत अपने जोश की शक्ति-जिब्रील को संसार में नहीं भेज देते, तब तक अखण्ड परमधाम की कोई भी पहचान नहीं कर सकता ।

जो लों ना लदुन्नी इलम, कुंजी तारतम नूर ।
आवे नाहीं अरस से, तो लों क्यों कर होवे ज़हूर ।।१३।।

जब तक समस्त धर्मग्रंथों के रहस्यों को खोलने वाली तारतम ज्ञान

(इल्मे लदुन्नी) रूपी दिव्य चाबी परमधाम से नहीं आ जाती, तब तक ब्रह्मज्ञान का प्रकाश किस प्रकार होगा।

जो लों रूह अल्लाह की, उतर ना आवे इत ।
तो लों मोमिन अरस अज़ीम में, क्यों कर उठे क्यामत ।।१४।।

जब तक प्रियतम अक्षरातीत श्री राज जी की बड़ी रूह श्री श्यामा जी की आत्मा यहाँ नहीं आ जाती हैं, तब तक ब्रह्म सृष्टियाँ परमधाम में अपने मूल तनों (परात्म) में जाग्रत नहीं हो सकती हैं ।

ए पांचों जब जमा होवे, बीच गिरो मोमिन ।
तब साएत कायम होवहीं, सब दिल होए रोशन ।।१५।।

जागृत बुद्धि, हुक्म, धणी का जोश, तारतम ज्ञान और श्री श्यामा जी की आत्मा ये पाँचों शक्तियाँ जब मोमिनों के बीच इकट्ठी होंगी, तभी सबको एक पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की पहचान होगी और तभी यह ब्रह्माण्ड अखण्ड हो पायेगा ।

एही निशान क्यामत का, जो खोले बका के द्वार ।
किल्ली अरस अज़ीम की, किया जाहिर नित बिहार ।।१६।।

यही कियामत की निशानी है कि उस समय अखण्ड परमधाम का ज्ञान दुनिया में प्रकट हो जायेगा । परमधाम के अखण्ड सुखों की चाबी तारतम ज्ञान है, जिससे परमधाम की नित्य लीला विहार के अखण्ड सुख दुनिया में जाहिर हो रहे है ।

ए मेहेर मोमिनों पर, आगूं लिखी हक़ सुभान ।
तो पल पल आवे पसरत, फेर उतरे सकल जहान ।।१७।।

इस प्रकार ब्रह्मात्माओं पर प्रियतम अक्षरातीत की अपार मेहर (लाड–प्यार) पल पल बरसती है, जिसके विषय में कुर्आन आदि धर्मग्रंथों में पहले से ही लिखा है। इस कारण धाम धणी का प्यार उनके लिये परमधाम के वर्णन के रूप में प्रकट हो रहा है, और फिर उनके माध्यम से सारी दुनिया भी लाभान्वित हो रही है।

जो जाग्रत नाहीं त्रैगुन को, ना अछर नूर मकान ।
सो ख्वावी दम नाबूद को, हुई जाग्रत बुध आसान ।।१८।।

जो जागृत बुद्धि त्रिदेवा (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को भी प्राप्त नहीं है, ना ही अक्षरधाम में स्थित अक्षरब्रह्म के पास है, वह जागृत बुद्धि इस संसार

के नश्वर स्वाप्निक जीवों को आसानी से प्राप्त हो गयी है ।

कायम बका भोम में, जित है नित बिहार ।
तहां सुपन के जीव की, दृष्टि पोहोंची नूर के पार ।।१९।।

अक्षर से भी परे अखण्ड परमधाम की नूरमयी भूमिका में, जहां प्रियतम परब्रह्म व उनकी आत्माओं के मध्य नित्य प्रति प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं होती हैं, वहां स्वाप्निक जीवों की दृष्टि (तारतम ज्ञान के द्वारा) पहुंच गयी ।

ला मकान और त्रैगुन, ए रहे दरम्यान ।
दृष्टि सुपन सृष्ट की, भई नूर के पार पेहेचान ।।२०।।

स्वप्न के जीवों की दृष्टि वैकुण्ठ और निराकार तक सीमित रह जाती थी, आगे नहीं जा पाती थी । अब उन्हें अक्षर से भी परे अक्षरातीत परब्रह्म के दिव्य परमधाम की सारी पहचान हो गयी है ।

इत ए अछर होए चुके, जिनमें आई जाग्रत बुध ।
ता को फजर में क्या रह्या, जाकी भई अरस की सुध ।।२१।।

जिनके हृदय में जागृत बुद्धि आ जाती है, जिन्हें एक पूर्णब्रह्म परमात्मा एवं परमधाम की पहचान हो जाती है, फिर अक्षरब्रह्म के हृदय में उनका अखण्ड होना निश्चित हो जाता है । क्योंकि उनके लिये अब और कोई ज्ञान प्राप्त करना बाकि नहीं रह जाता है ।

ग़लती दृष्ट त्रैगुन की, बीच ला मकान ।
पोहोंच ना सके नूर लों, कर ना सके पेहेचान ।।२२।।

तारतम ज्ञान के बिना त्रिगुणात्मक जीवों की दृष्टि निराकार में ही गल जाती थी, अक्षर तक भी नहीं पहुंच पाती थी । वे अखण्ड की जरा भी पहचान नहीं कर पा रहे थे।

तो नूर पार हक़ ठौर की, जो है नित बिहार ।
तहां सुपन जीव की सृष्ट, हुई देखनहार ।।२३।।

अब ब्रह्मात्माओं के कारण ही अक्षरधाम से भी परे दिव्य ब्रह्मपुर धाम में, जहां परब्रह्म व उनकी आत्माओं की दिव्य प्रेम व आनंदमयी लीलाएं नित्य ही हुआ करती हैं, स्वाप्निक जीवों की दृष्टि भी पहुंचकर वहां की शोभा को देख रही है।

एह बरकत मोमिन की, पाया सकल जहान ।
उठे कायम भिस्त में, इन को इत हुआ आसान ।।२४।।

यह तो ब्रह्मात्माओं की कृपा से सारी दुनिया को ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो रहा है । अब दुनिया के समस्त जीव आवागमन के चक्र से मुक्त होकर आठों बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) में अखण्ड मोक्ष प्राप्त कर लेंगे । तारतम ज्ञान के द्वारा यह उनके लिये बहुत ही सरल हो गया है ।

इनों इत ही काल को जीता, जिन ग्रास लिए सबन ।
सो नींद उड़ाई नूर की, बरकत इन मोमिन ।।२५।।

ब्रह्मात्माओं की कृपा से दुनिया के जीवों ने यहीं नश्वर संसार में रहते हुए ही मृत्यु को जीत लिया, जिस मृत्यु ने सारी दुनिया को अपना ग्रास (मूंह का निवाला) बना रखा था । इस तारतम ज्ञान के द्वारा अक्षरब्रह्म की भी नींद उड़ गयी ।

ए आठों उठी जो भिस्त कही, सो तो नूर मकान ।
भए कायम ठौर मरतबे के, सो सब हुए पेहेचान ।।२६।।

यह जो आठ बहिश्तों का अखण्ड होना कहा गया है, वह अक्षर ब्रह्म के हृदय में अखण्ड होंगे । जिन्हें भी एक परब्रह्म की पहचान हो गयी होगी, जो भी जागनी लीला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान होगा, वह सब बहिश्तों में अखण्ड हो जायेगा ।

जित नूर आवत मूजरे, सो तो नूरजमाल का ठौर ।
तित रूह मोमिन बिना, कोई ना पोहोंचे उत और ।।२७।।

अक्षरातीत परब्रह्म (नूरजमाल) के जिस दिव्य धाम (रंगमहल) के समक्ष अक्षर ब्रह्म (नूर जलाल) उनके दर्शनों के लिये आते हैं, वहां पर ब्रह्मात्माओं के सिवा अन्य कोई नहीं पहुंच सकता है ।

ए केहनी तिन ठौर की, तो मोमिन देखनहार ।
जो हक़ सुभान सामिल, नित रूहें करें बिहार ।।२८।।

यहां उस दिव्य परमधाम की शोभा का वर्णन हो रहा है । इस कारण ब्रह्मात्माएं उस देख पा रही हैं, जो कि प्रियतम परब्रह्म के साथ नित्य प्रति प्रेम व आनंदपूर्वक लीला विहार करती हैं।

कहूं पेहेली भोम की, चार हार हवेलन ।
मूलमिलावे लगती, आई फिरती गृद रोशन ।।२९।।

अब रंगमहल की प्रथम भूमिका का वर्णन करूंगा, जहां सर्वप्रथम चौरस हवेलियों की चार हारें आयी हैं। पूर्व दिशा में चौथी चौरस हवेली से लगती हुई पाँचवी गोल हवेली में, मूल मिलावे की अपरंपार शोभा है ।

तिन हवेली दरम्यान के, थम्भ कहे आठ हार ।
हर एक हार हार में, छे छे हज़ार विचार ।।३०।।

इन हवेलियों (चार चौरस व पांचवी गोल हवेली) की हारों के मध्य स्तम्भों की आठ हारें आयी हैं। प्रत्येक हार में छे–छे हजार नूरमयी स्तम्भ आये हैं, उनका चिंतन कीजिये।

ए एक भोम की जमा कही, कहे अड़तालिस हज़ार ।
यों सुमार नव भोम का, लाख चार बत्तीस हज़ार ।।३१।।

इस प्रकार रंगमहल की एक भोम में कुल ४८०००(६००x८) स्तम्भ शोभित हैं । इस तरह से रंगमहल की नवों भोमों में कुल ४,३२,०००(४८०००x९) स्तम्भ झलकार कर रहे हैं ।

तामे घटती दूसरी भोम के, जित भुलवनी मंदिर ।
आठ सौ चार गिनती, पेठो मोमिन ताके अन्दर ।।३२।।

दूसरी भोम में सोलह चौरस हवेलियों की जगह में भुलवनी के मंदिर आने से ८०४ स्तम्भ कम हो गए हैं । हे सुंदरसाथ जी ! भुलवनी के मंदिरों में प्रवेश कीजिये।

बाकी रहे थम्भ इन के, चार लाख एकतीस हज़ार ।
एक सौ छानबे उपर, जित करें रूहें बिहार ।।३३।।

इस प्रकार शेष ४,३१,१९६ (४,३२,०००-८०४) स्तम्भ बचते हैं, जहाँ सखियाँ प्रियतम अक्षरातीत के साथ लीला विहार करती हैं ।

साम सामी चार हवेलियां, मिल रूहें चले जब ।
गली थम्भ तिन की फिरती है, गिनती घटी है तब ।।३४।।

चौरस हवेलियों की चार पंक्तियों में आमने–सामने चार चार हवेलियां आयी हैं और उनके मध्य स्तम्भों की दो हारें व तीन गलियां आयी

हैं। वहां सभी सखियां मिलकर विचरण करती हैं। भुलवनी के मंदिरों के दायें–बायें चार–चार चौरस हवेलियां हैं, वहां मात्र एक स्तम्भों की हार व दो गलियां हैं, इस कारण स्तम्भ कम हो गये हैं।

हर हवेली पचीस कही, धर चालीस थम्भ हार ।
ताकी गिनती दो सौ भई, करे जुगल स्वरूप बिहार ।।३५।।

भुलवनी के मंदिरों के दायें–बायें (पूर्व–पश्चिम में) चौरस हवेलियों व भुलवनी के मंदिरों के मध्य स्तम्भों की एक हार नहीं आने से प्रत्येक हवेली के हिसाब से २५-२५ स्तम्भ कम होते हैं। तो घटने वाले इन स्तम्भों की कुल संख्या २०० हुई, जहां युगल स्वरूप लीला विहार करते हैं।

और आठ मिली तरफ दूसरी, मध भुलवनी जान ।
ता के दो सौ और घटे, सब चार सौ पेहेचान ।।३६।।

भुलवनी के उत्तर–दक्षिण में भी चार–चार (कुल आठ) हवेलियों और हैं। इनके मध्य में भुलवनी के मंदिरों की शोभा है, इनके २०० स्तम्भ और घटे हैं। इस प्रकार चारों तरफ के ४०० स्तम्भ कम हो गये हैं।

यों नवों भोम में घट चले, ताके छत्तीस सौ जान ।
बाकी चार लाख सत्ताईस हज़ार, उपर पांच सौ छानबे आसान ।।३७।।

इस प्रकार नवों भोम में कुल ३६००(४००x९) स्तम्भ घटे हैं । तो कुल स्तम्भ ४,२७,५९६ (४,३१,१९६-३६००) हुए ।

इत जुगल सरूप बिहरत, नवों भोम सब ठौर ।
इत फिरते खेलते देखिए, तित पल पल नया सुख और ।।३८।।

रंगमहल के नवों भोमों में श्री राजश्यामा जी, सखियां लीला विहार करते हैं। आत्म दृष्टि से यहां सखियों को विचरण करते व खेल–रामतें करते देखिये। यहां प्रियतम के साथ पल–पल नित् नौतन सुख प्राप्त होते रहते हैं।

वय किशोर अति सुन्दर, कहूं शोभित सिंघासन ।
बैठ हक़ हादी जोड़े, झलकत शोभा सुख रोशन ।।३९।।

अति सुन्दर किशोर वय वाले श्री राज-श्यामा जी सिंहासन पर शोभायमान हैं । साथ विराजमान युगल स्वरूप की मनमोहिनी छबि व नूरी की झलकार से अत्यंत सुख उत्पन्न होता है ।

कहूं हिंडोले हींचत, कहूं मचियां बैठक ।
काहूं हांसी हेत उपजावत, रूह हादी मिल हक़ ।।४०।।

श्री राजश्यामा जी और सखियां मिलकर कहीं हिंडोलों में झूलते हैं, तो कहीं माचियों पर बैठते हैं । कभी श्रीराजश्यामा जी व सखियां मिलकर प्रेमपूर्वक हंसी–मजाक करते हुए आनन्द उत्पन्न करते हैं।

कहूं थम्भ नकस चित्रामन, देखत खड़े ठौर ठौर ।
रूहें एक दूजी को बतावने, कहूं खेल गलियों में और ।।४१।।

कहीं-कहीं सखियाँ स्तम्भों की नक्काशकारी और उन पर आए मनोहर चित्रकारी को खड़े खड़े देखती हैं और अपने साथ खड़ी दूसरी सखी को बताती हैं, तो कहीं गलियों में अनेक तरह से खेल–रामतें करती हैं ।

यों कई सुख इन थम्भन के, लेत रूहे संग सुभान ।
सो इन जुबां केते कहूं, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।४२।।

इस प्रकार श्री राज जी के संग सखियां इन स्तम्भों के मध्य कई प्रकार से सुख लेती हैं, उन अखण्ड सुखों का वर्णन इस नश्वर जिह्वा से नहीं हो सकता है, उसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, एह तुमारा नित बिहार ।
हुकम हक़ सुभान का, ए तुमहीं देखनहार ।।४३।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी! ये आपकी अपनी नित्य लीलाएं हैं। श्रीराज जी का हुक्म मोमिनों के लिए ही है । इसीलिए आप ही इन सुखों को देखने के अधिकारी हैं ।

प्रकरण-८, चौपाई-३५६

मूल मिलावे फिरते थम्भन के मेहराब

ए मेहेराब अरस अज़ीम के, कहे थम्भ हवेलियों दरम्यान ।
एक हीरा रस चेतन, रहे मोमिन दिल आसान ।।१।।

परमधाम (रंगमहल) की हवेलियों एवं स्तम्भों के दरम्यान स्थित ये नूरी महराबें चेतन तथा नूरी रस से युक्त एक हीरे की हैं । उनकी शोभा समझना (श्री राज जी की कृपा से) ब्रह्मात्माओं के दिलों के लिये आसान होता है।

इनकी पेहेचान करनी, बैठ बीच जिमी नासूत ।
इत की अकल ना पोहोंचत, ठौर फ़ना मलकूत ।।२।।

इस नश्वर संसार में रहते हुए भी परमधाम की नूरी शोभा की पहचान करनी है । किंतु इस मृत्युलोक (नासूत) की बुद्धि नश्वर वैकुण्ठ (मलकूत) तक भी नहीं पहुंच पाती है । (तो फिर परमधाम को किस प्रकार समझा जा सकता है?)

मलकूत का जो खावंद, ता को सबद ना पावत सेर ।
नेत नेत कहे निगम, तो उततें आए फेर ।।३।।

वैकुण्ठ के जो स्वामी (विष्णु भगवान) हैं, वे परमधाम का एक शब्द भी नहीं जान पाते है । वेदों भी परमात्मा के विषय में "न इति न इति" कह दिया और खोजते हुए हारकर निराकार से वापस लौट आये ।

ए पोहोंच न सके नूर लों, ए खेल खावन्द त्रिगुन ।
तिन आगे अरस अज़ीम, तहां की ठौर करनी रोशन ।।४।।

इस नश्वर जगत् के स्वामी त्रिदेवा अक्षरधाम तक भी नहीं पहुंच सके । अर्श आज़म (अक्षरातीत का रंगमहल) तो उससे भी परे है, जिसकी शोभा का वर्णन यहां किया जाना है ।

क्यूं कर आवे अकल में, क्यूं ख्वाब तन करे विचार ।
ए तो अखण्ड भोम का, कायम सुख बिहार ।।५।।

यह तो अखण्ड परमधाम की प्रेम व आनंदमयी शाश्वत् लीलाएं हैं, उसका चिंतन विवेचन भला इस स्वाप्निक तन की अक्ल किस प्रकार कर सकती है ?

तहां टूटते कमर अकल की, जहां गुम होत फिकर फहम ।
दौड़ न पोहोंचे काहूं की, बिना हक़ सुभान के हुकम ।।६।।

वहां का विवेचन करने में मायावी बुद्धि की सामर्थ्य खत्म हो जाती है, चिंतन शक्ति खत्म हो जाती है । परब्रह्म अक्षरातीत के हुक्म के बिना किसी का भी प्रयास सफल नहीं हो पाता है ।

इत हुकम अकल देवहीं, इत हुकमें होए विचार ।
पेठे ना कायम घर में, जो सुख नित्य बिहार ।।७।।

परब्रह्म के आदेश से ही जागृत बुध्दि की प्राप्ति हो पाती है, और उनके हुक्म से ही उसका विचार किसी के हृदय में उत्पन्न हो पाता है । हुक्म के बिना अखण्ड परमधाम की नित्य लीला विहार में कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता है ।

हुकम बिना क्यों केहे सके, मुख ना निकसे दम ।
दिल चितवन भी न करे, बिना हक़ हुकम ॥८॥

परमात्मा के आदेश के बिना आखिर कोई किस तरह से परमधाम का वर्णन कर सकता है ? हुक्म के बिना किसी के मुख से परमधाम का एक शब्द भी नहीं निकल सकता है । परमात्मा के हुक्म के बिना तो किसी का हृदय परमधाम का चितवन भी नहीं कर सकता है ।

बका भोम पैठन की, क्यूं कर आवे अकल ।
जाको चौदे तबक में, नाहीं निमूना नकल ॥९॥

अखण्ड परमधाम में प्रवेश करने के लिये निजबुध्दि, किस प्रकार प्राप्त हो सकती है ? उस दिव्य अनादि परमधाम का इस चौदह लोकों के नश्वर संसार में कोई भी उचित उदाहरण नहीं हैं ।

क्यों कर आवे चित्त में, बिना हुकम हक़ सुभान ।
श्रवना कोई ना दे सके, बिना हुकम ना होए पेहेचान ॥१०॥

परब्रह्म अक्षरातीत के आदेश के बिना, किसी के चित्त में परमधाम की शोभा किस प्रकार बस सकती है ? कोई चाहकर भी परमात्मा के हुक्म के बिना किसी को नहीं सुना सकता । क्योंकि हुक्म के बिना किसी को परमधाम की पहचान हो ही नहीं सकती ।

जाको हक़ सुभान, बोलावे अपने ठौर ।
सो पैठे अरस अज़ीम में, काहूं का चले ना हक़ से ज़ोर ॥११॥

जिन्हें स्वयं प्रियतम अक्षरातीत अपने धाम में बुलाते हैं, वही अर्श अज़ीम की अनुपम शोभा और अखंड लीला विहार में प्रवेश करता है । हक़ श्री राज जी के हुक्म के सामने अन्य किसी का ज़ोर नहीं चलता है ।

केहेना सुनना बोलना, सोहबत सो बिना साथ ।
ए मवसर होए तिन को, जाके हके पकड़े हाथ ॥१२॥

दिव्य परमधाम की शोभा का वर्णन करना, बोलना व सुनना बिना ब्रह्मात्माओं की सानिध्यता के सम्भव नहीं है । इसका सौभाग्य उसी को प्राप्त हो

पाता है, जिनके हाथ पकड़कर स्वयं प्रियतम अक्षरातीत जगाते हैं ।

हक़ सुभान जिनको, अपनी देत खबर ।
खोल इसारते रमूजें, जमा करन खातर ॥१३॥

प्रियतम हक़ सुभान तआला जिन पर कृपा करते हुए अपना ज्ञान प्रदान करते हैं, वे ही कुर्आन आदि ग्रंथों में वर्णित सांकेतिक कथनों व रहस्यों को समझ पाते हैं ।

आप आए तिन वास्ते, दे साहेदी सब ।
बका अरस अज़ीम की, द्वार कायम खोले सब तब ॥१४॥

आप प्रियतम परब्रह्म (आवेश स्वरूप से) इसी कारण जगत् में आये हैं और समस्त धर्मग्रंथों में साक्षियां भी लिखवायी हैं, ताकि सर्वोपरि दिव्य परमधाम के अखण्ड सुखों के द्वार खोल दें ।

तो अरस कह्या दिल मोमिन, अपना दिया हुकम ।
मैं पेहेले याद तुम को करों, पीछे मोको याद करो तुम ॥१५॥

इसी कारण तो ब्रह्मात्माओं के दिल को अपना धाम अर्श कहा है (क्योंकि परमधाम का वर्णन करके उसकी शोभा ब्रह्मात्माओं के दिलों में बसा रहे हैं) और उन्हें अपना हुक्म भी दिया है तथा कहते हैं, कि "आप सभी ब्रह्मात्माओं को पहले मैं याद करता हूं, आप मुझे बाद में याद करते हो ।"

मेरी जिकर तुम करो, मैं करों तुमारी जिकर ।
मैं राह देखत तुमारी, मोको और नाहीं फिकर ॥१६॥

हे ब्रह्मात्माओ ! आप मेरी जिक्र (स्मरण/बातें) करो, मैं आप सबकी जिक्र करता हूं । मैं तो परमधाम में आप सबकी राह देख रहा हूं (कि आप संसार के नश्वर सुखों की चाहना छोड़कर कब परमधाम आओगे?) मुझे और कोई भी चिंता नहीं है ।

मैं आशक हादीय का, है हादी आशक तुम ।
पोहोंच ना सके तुम बिना, साथ तुमारे दिया हुकम ॥१७॥

अक्षरातीत प्रियतम कहते हैं, कि मैं हादी श्री श्यामा जी का आशिक हूँ और श्री श्यामा जी तुम्हारे आशिक हैं । तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी परमधाम तक नहीं पहुँच सकता है, क्योंकि मैंने तुम्हे अपने हुक्म की शक्ति प्रदान की है ।

यूँ हक़ सुभान जिनको, कहे अपने मुख कलाम ।
तिन मोमिनों द्वार खोलिया, किया जाहिर दीन इसलाम ।।१८।।

इस प्रकार परब्रह्म अक्षरातीत जिन्हें स्वयं अपने मुख से ऐसी बातें कहते हैं, उन ब्रह्मात्माओं ने अखण्ड परमधाम का ज्ञान दुनिया में प्रकट किया है और शांति के सत्य मार्ग की स्थापना की है ।

जिनको ए मोमिन, ए ल्यावे बीच दीन ।
सो हुकम ले सब इन का, सोई पावे आकीन ।।१९।।

जिस किसी को भी ब्रह्मात्माएं एक परमात्मा की पहचान कराके सत्य धर्म में लाती हैं, वही उन ब्रह्मात्माओ के द्वारा परमात्मा का आदेश प्राप्त करके सत्य ज्ञान पर ईमान लाता है ।

जिनको ए मोमिन, खोले बका के द्वार ।
सो आवे अरस अज़ीम में, पोहोंचे परवरदिगार ।।२०।।

जिनको ब्रह्ममुनि परमधाम का ज्ञान समझकर वहां के अखण्ड सुखों का द्वार उनके लिये खोल देते हैं, उसी की आत्मिक दृष्टि दिव्य परमधाम में प्रियतम अक्षरातीत के चरणों में पहुंच पाती है ।

अरस अज़ीम की गलियां, जाको देखावे मोमिन ।
सोई पैठे अन्दर, होए ताको दिल रोशन ।।२१।।

दिव्य परमधाम के महल व गलियां ब्रह्मात्माएं जिन्हें (तारतम ज्ञान के द्वारा) दिखाती हैं, उन्हीं का हृदय ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित हो पाता है तथा वही चितवनि के द्वारा परमधाम के अंदर प्रवेश कर पाता है ।

ए हुकम अव्वल से, किया हक़ सुभान ।
मेरे वारस मोमिन, तुम करो ताकी पेहेचान ।।२२।।

समस्त धर्मग्रंथों में प्रियतम अक्षरातीत ने पहले से ही यह आदेश लिखवा दिया कि "मेरे (ब्रह्मज्ञान के) वारिस मात्र ब्रह्मात्माएं ही हैं । आप उनकी पहचान कीजिये ।"

ए गिरो रब्बानी रब से, ले दानातर उस्तवार ।
बिना सोहोबत इनों की, पोहोंचे ना परवरदिगार ।।२३।।

ब्रह्मसृष्टियाँ (रब्बानी गिरोह) परब्रह्म से ही ज्ञान प्राप्त करके ब्रह्मज्ञान

में पक्के व बुद्धिमान हुए हैं । उनकी संगति के बिना कोई भी परमात्मा का ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता है ।

दिया इलम लुदंनी इनों को, हके आप करी नसीहत ।
इनों से किया वायदा, उठावना रोज क्यामत ।।२४।।

परब्रह्म अक्षरातीत ने स्वयं उन्हें सिखापन देते हुए तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) प्रदान किया है तथा उन ब्रह्मात्माओं से वादा किया है, कि मैं तुम्हे कियामत के समय कब्र से उठाऊंगा (ब्रह्मज्ञान देकर जागृत करूंगा) ।

तो अरस अज़ीम की, किल्ली करत जाहेर ।
ए आम खलक रहे शक में, जाकी दृष्टि पड़ी बाहेर ।।२५।।

इसी कारण प्रियतम परब्रह्म परमधाम के रहस्यों को खोलने वाली तारतम ज्ञान रूपी चाबी दुनिया में प्रकट कर रहे हैं । किंतु सामान्य मनुष्यों को इस पर पूर्ण विश्वास नहीं होता । बाह्य दृष्टि के कारण वे संशय में ही पड़े रहते है ।

अब तो सब कोई देखेंगे, ए जो सकल जहान ।
कदम बरकत मोमिन की, होए गइ सब पेहेचान ।।२६।।

अब तो तारतम ज्ञान प्रकट हो जाने से सारी दुनिया परमधाम का दर्शन करेगी । ब्रह्मात्माओं के चरणों की कृपा से उन्हें परब्रह्म अक्षरातीत एवं उनके धाम की पूर्ण पहचान हो गयी ।

ए जो आए थम्भ फिरते, कही जो आठो हार ।
ता को कहूं मेहेराब, जित नित होत विहार ।।२७।।

रंगमहल के पहले फिरावे की चौरस हवेलियों में जो स्तम्भों की आठ हारें आयी हैं, उनकी महराबों की शोभा का वर्णन करूंगा, जहां श्री राज श्यामा जी व सखियां अखण्ड लीला विहार करते हैं।

ए आड़ी टेड़ी गलियां, तामें कहे मेहेराब ।
तीस हज़ार एक हार में, तेसी चार हार कहूं बाब ।।२८।।

इनमें आयी हुयीं आड़ी–टेढ़ी गलियों में आये महराबों का वर्णन इस प्रकार कहा गया है। एक पंक्ति में तीस हजार महराबें आयी हैं। ऐसी चार पंक्तियां आयी हैं, जिनका वर्णन करता हूं।

ता के चार हार के सुमार, एक लाख बीस हज़ार ।
ऐसे ही नव भोम के, गिनती कहूं सुमार ।।२९।।

उन चार हारों के कुल १,२०,००० महराबें होती हैं। इसी प्रकार से नौ भोमों में महराबें हैं, जिनकी गणना कहूंगा।

दस लाख अस्सी हज़ार, तामें कमी भुलवनी के ।
एक हज़ार पांच सौ, और उपर बारे कहे ए ।।३०।।

नौ भोमों के महराबों की कुल संख्या १०,८०,००० होती है । सोलह चौरस हवेलियों की जगह भुलवनी के मंदिर आने से १,५१२ महराबें कम हो जाती हैं ।

बाकी रहे दस लाख, और अठहत्तर हज़ार ।
चार सौ अट्ठासी ता पर, एह गिनती भई सुमार ।।३१।।

१५१२ महराबें घटाने पर बाकी महराबों की संख्या १०,७८,४८८ (१०,८०,०००-१५१२) होती है ।

कहूं हवेलियां दरम्यान की, जित ठाढ़ी हार थम्भन ।
बाकी गलियां दो सौ एकतीस, हर गली दोए हार थम्भ रोशन ।।३२।।

अब चौरस हवेलियों के बीच में आई २३१ खड़ी गलियों का वर्णन करते हैं । इन प्रत्येक गली में दो स्तम्भों की खड़ी हारें शोभायमान हैं ।

चार सौ बासठ हार थम्भन की, हर हार छानबे नूर ।
ताकी गिनती सुमार, सब मोमिन दिल ज़हूर ।।३३।।

२३१ गलियों में स्तम्भों की दो हारें आने से स्तम्भों की कुल ४६२(२३१x२) हारें होती हैं। प्रत्येक हार में ९६ नूरी, चेतन, सुगंधी से भरपूर स्तम्भ शोभा ले रहे हैं, जिनकी गणना का हिसाब मोमिनों के दिलों में होता है ।

ताकी गिनती देखियो, कहे चौवालिस हज़ार ।
तीन सौ बावन उपर, ए सुख मोमिन देखनहार ।।३४।।

४६२ हारों के कुल स्तम्भों की संख्या देखिये। ४६२x२=४४,३५२ स्तम्भ होते हैं। उनके सुख ब्रह्मात्माएं ही अनुभव कर पाते हैं।

ऐसे ही नवों भोम में, गिनती देखो सुमार ।
तीन लाख निन्यानबे हज़ार, एक सौ अड़सठ ऊपर सुखकार ।।३५।।

इस प्रकार से नौ भोमों के स्तम्भों की कुल संख्या देखिये। कुल ४४,३५२x९=३,९९,१६८ स्तम्भ हैं, जो कि अत्यंत सुंदर व सुख दायक हैं।

तामें कमी भुलवनी के, नव सौ साठ होए ।
बाकी तीन लाख अठानबे हज़ार, ए ऊपर दोए सौ आठ कहे सोए ।।३६।।

दूजी भोम में सोलह चौरस हवेलियों की जगह में भुलवनी के मंदिर आने से ९६० स्तम्भ कम हो जाते हैं। शेष ३,९८,२०८ बचते हैं।

ए मेहेराबों की गिनती कही, जित हक़ करत बिहार ।
है अलेखे अनगिनती, सब जानत परवरदिगार ।।३७।।

यह महराबों की गणना कही है, जहाँ हक़ श्री राज जी अखण्ड लीला करते हैं । इस अवर्णनीय बेशुमार शोभा को श्रीराज जी ही जानते हैं ।

कहे आकार के सनमन्ध, जेते दिखाए हक़ ।
कहे आगे मोमिन के, अपनी बुध माफक ।।३८।।

श्री राज जी ने परमधाम की शोभा का जितना दर्शन कराया है, उतना वर्णन ब्रह्मात्माओं के समक्ष इस माया के झूठे तन के द्वारा, अपनी बुद्धि के अनुसार कर दिया है।

बिहरत मोमिन देखिए, ज़ोडी जुगल किशोर ।
संग सैंया ठाढ़ी रहे, रस भीगे इशक के ज़ोर ।।३९।।

इन स्तम्भों व महराबों के मध्य युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी को विचरण करते हुए देखिए । उनके साथ में श्री राज जी के अगाध इश्क के रस में भीगी सखियाँ खड़ी रहती हैं ।

अरस परस सुख देत हैं, मिनों मिने करें प्यार ।
इन सुख को मैं क्या कहूं, जाको हक़ सों नित बिहार ।।४०।।

श्री राजश्यामा जी एवं सखियाँ एक दूसरे को परस्पर सुख देते हैं और आपस में एक दूसरे को बहुत ज्यादा प्रेम करते हैं । सखियों के इन अखण्ड सुखों का कैसे वर्णन करें, जो नित्य प्रति धाम धणी के संग रंगमहल में लीला विहार करती हैं ।

जाकी सोहोबत हक़ सो, ताए हादी करत हैं प्यार ।
तिन सुख की मैं क्या कहूं, जाके साकि परवरदिगार ।।४१।।

जो सखियां श्री राज जी के साथ दिव्य परमधाम में रहती हैं, उन्हें हादी श्री श्यामा महारानी भी बहुत प्यार करती हैं । उन सखियों के सुखों का कैसे वर्णन करूँ जिनके साकी स्वयं श्री राज जी हैं अर्थात् जिन्हें श्री राज जी स्वयं इश्क के प्याले भर भर कर पिलाते हैं ।

क्या कहूं ता सुख की, जा पर मेहेर करत सुभान ।
जाको अपने दिल की, मिल बात सुनावत कान ॥४२॥

उन ब्रह्मप्रियाओं के सुखों का वर्णन किस प्रकार करूं, जिन्हें प्रियतम अक्षरातीत पल पल अनंत प्यार करते हैं । जिन्हें अपने हृदय की प्रेमभरी बातें सुनाते हैं ।

ए सुख शब्दातीत को, सबद में न आवे सुकन ।
ए हक़ हुकम कहावत, वास्ते ख़ासी गिरो मोमिन ॥४३॥

शब्दातीत श्री राज जी के इन अखंड सुखों का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता है । यह तो खास गिरोह ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के लिए श्री राज जी का हुक्म मुझसे वर्णन करवा रहा है ।

महामत कहे ए मोमिनों, तुमारा घर श्री धाम ।
तुम को हक़ सुभान ने, सब पूरे मनोरथ काम ॥४४॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी! तुम्हारा घर श्री परमधाम है । हक़ सुब्हान श्री राज जी इस तारतम वाणी के द्वारा तुम्हारी सभी चाहनाओं को पूर्ण कर रहे हैं ।

प्रकरण-९, चौपाई-४००

गलियों के स्तम्भ के मेहराब

इस प्रकरण में रंगमहल के नूरी स्तम्भों पर आई महराबों का वर्णन है । यह वर्णन हक़ श्री राज जी ने अपनी रूहों (ब्रह्मात्माओं) के वास्ते करवाया है, ताकि उनकी आत्मिकदृष्टि श्री धाम में पहुँच सके । अद्वैत भूमि परमधाम की नूरी शोभा को जब आत्मा देखती है, तो द्वैत ब्रह्मांड तीनों काल में नहीं दिखाई देता है । परमधाम में कोई भी वस्तु नई या पुरानी नहीं होती है । वहाँ की प्रत्येक शोभा अखंड और अनादि है । इस दिव्य परमधाम के रहस्य खोल कर

परमहंस ब्रह्म सृष्टियाँ अखंड का द्वार खोलेंगी । ब्रह्म सृष्टि ब्रह्म समान है । वे ब्रह्म ज्ञान की सुगंधी से संपूर्ण संसार को निर्मल करेंगी । इन मोमिनों की चरण धूलि पाने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी तरसते हैं। वेद भी इन्ही परमहँसो की स्तुति करते हैं । ब्रह्म सृष्टियाँ सदैव अपने प्रियतम के चिंतन–ध्यान में रहती हैं । सखियों ने आदि फल अर्थात् अक्षरब्रह्म के संकल्प से बनकर मिट जाने वाले नश्वर ब्रह्मांड का खेल देखने की चाह की । और अक्षर ब्रह्म ने अनादि फल अर्थात् श्री राज जी अपनी रूहों के साथ कैसा लीला विहार करते है, उसे देखने की इच्छा प्रकट की । बनकर मिट जाने वाले और मोह अहंकार से युक्त इस नश्वर ब्रह्मांड में हक़ सुब्हान श्रीराज जी ने दोनों की इच्छा पूर्ण की और अब अखंड परमधाम के लीला विहार का वर्णन कर रहे हैं ।

ए जो हार गलियन की, ता के मेहेराब ज़हूर ।
कहूं गिनती ताकी, सुनों मोमिनों तुम फेर ।।१।।

रंगमहल के भीतर चौरस हवेलियों के दरम्यान गलियों में आए स्तम्भों के ऊपर जो नूरी, चेतन और अति सुन्दर महराबें आई हैं, अब उनकी गिनती कहता हूं। हे सुन्दरसाथ जी ! आप चित्त देकर सुनिये ।

ए केहेनी वाहिदत की, ता को कहिए अद्वैत ।
तहाँ सब्द चौदे तबक को, क्यूं पहोंचे इन ठौर द्वैत ।।२।।

यहां उस दिव्य परमधाम का वर्णन करना है, जिसे वहदत-अद्वैत भूमिका कहते हैं । इस द्वैत संसार के चौदह लोकों के शब्द उस दिव्य परमधाम की शोभा का किस प्रकार वर्णन कर सकते हैं ?

पार ना जिमी वाहिदत की, ऊपर तले न माहें बाहिर ।
अखण्ड ठौर जो कायम, सो इत करनी जाहिर ।।३।।

परमधाम की स्वलीला अद्वैत (वहदत) भूमिका में ऊपर-नीचे, अंदर-बाहर किसी भी दिशा का, कोई पारावार (अंत) नहीं है । उस अखण्ड अनादि परमधाम का ज्ञान, इस नश्वर दुनिया में जाहिर करना है ।

जाको पार न पावत, त्रैगुन ब्रह्माण्ड के ईश ।
जाको सारी विश्व, सेवत कर जगदीश ।।४।।

इस क्षर ब्रह्माण्ड के स्वामी (ईश्वर) त्रिदेवा, जिन्हें सारा संसार जगदीश (परमात्मा) मानकर भक्ति-सेवा करता है, वे भी उस दिव्यब्रह्मपुर धाम का ज्ञान

प्राप्त नहीं कर पाते हैं ।

सो अक्षर ब्रह्म लों, पोहोंचे ना शब्द बुध मन ।
ताके पार अक्षरातीत, जो श्री धाम लीला रोशन ।।५।।

उनके शब्द, बुद्धि व मन अक्षरब्रह्म तक भी नहीं पहुंच पाते हैं । अक्षरातीत परब्रह्म का परमधाम तो उससे भी परे है, जहां की शोभा व लीला का वर्णन यहां किया जा रहा है ।

केहेनी हक़ीकत तिन की, क्यों होए बिना ब्रह्म सृष्ट ।
ताको परमहंस कहे, जाकी चरण कमल पर दृष्ट ।।६।।

उस परमधाम की शोभा का वर्णन करना है । ब्रह्मसृष्टियों के बिना यह किस प्रकार सम्भव है ? उन्हें ही परमहंस कहा गया है, जिनके चरण कमलों पर सारी दुनिया की नज़र (आशा) है ।

जाकी स्तुति करत हैं, त्रैगुन अपने मुख ।
पोहोंच न सके तिन को, जो परमहंस के सुख ।।७।।

जिन ब्रह्मात्माओं (गोपियों) की स्तुति स्वयं त्रिदेवा अपने मुख से करते हैं । परंतु फिर भी वे परमहंस ब्रह्ममुनियों के समान परमधाम के अखण्ड सुख प्राप्त नहीं कर पाते हैं ।

वेद स्तुति करत हैं, अद्वैत न पोहोंचे कोए ।
परमहंस बिना भव पार की, सुध ना काहूं को होए ।।८।।

वेद भी उन ब्रह्मात्माओं की स्तुति करते है, किंतु उस स्वलीला अद्वैत परमधाम तक वे नहीं पहुंच पाते हैं (उसका ज्ञान नहीं प्राप्त कर पाते हैं)। परमहंस स्वरूप ब्रह्मात्माओं के सिवा मृत्यु (निराकार) से परे स्थित उस अखण्ड अविनाशी धाम की पहचान किसी को भी नहीं हो पाती है ।

जब अद्वैत को देखिए, तब द्वैत न तीनों काल ।
ना उपजी है ना फना, और न देखन को हाल ।।९।।

जब अद्वैत परमधाम की तरफ देखते हैं, तो यह द्वैत जगत् तीनों काल में भी नहीं दिखायी देता है (स्वप्नवत् है) । इसे ना 'उत्पन्न हुआ' ऐसा कहा जा सकता है, ना ही 'नष्ट हुआ' ऐसा कहा जा सकता है और जो घटनाएं वर्तमान में दृष्टिगोचर हो रही हैं, उसे भी सत्य नहीं कहा जा सकता है ।

सो इनों को क्यों समझे, जो अहं मोह में गोते खाए ।
बिना परमहंस इन जिमी, मोह न उलंघ्यो जाए ॥१०॥

ऐसी स्थिति में दुनिया के नश्वर जीव, जो मोह-अहंकार में ही डूबे हुए हैं, परमधाम की शोभा को किस प्रकार समझ सकते है । इस संसार में परमहंस ब्रह्ममुनियों के सिवाय कोई भी मोह (नींद-निराकार) को पार नहीं कर सकता है ।

एह अहं को तर सके, जाको थाह न क्यों निकसत ।
ए आवेगे अंत को, सो आए पोहोंची सरत ॥११॥

वे ब्रह्मात्माएं मात्र इस अहंकार को पार कर सकती हैं, जिसका कोई अंत ही नहीं पता चलता है । वे ब्रह्मात्माएं (परमहंस) ब्रह्मज्ञान लेकर कलियुग के अंतिम समय में आयेंगे, ऐसा सारी दुनिया वाले राह देख रहे थे । अब वह समय आ गया है।

ब्रह्मसृष्ट ब्रह्म समान है, सत चित्त आनन्द मन ।
कुली कालिंगा मारि के, साफ करी सब धरन ॥१२॥

ब्रह्मसृष्टि ब्रह्म के समान होती है । उन ब्रह्मप्रियाओं के मन में सच्चिदानंद स्वरूप बसा होता है । वे कलि-अज्ञान को मार के सम्पूर्ण धरती को निर्मल करेंगे ।

विकार सारी विश्व के, मिटसी इन खुसबोई ।
मार काल त्रैलोक को, ईश्वर पार पोहोंचाया सोई ॥१३॥

सारे संसार का विकार (अज्ञानता) इस ब्रह्मज्ञान की सुगन्धि से नष्ट हो जायेगा । काल (मृत्यु) का नाश करके त्रिलोक (मृत्युलोक, स्वर्ग, वैकुण्ठ) के समस्त जीवों को आदिनारायण से भी परे बेहद में अखण्ड कर दिया जायेगा ।

लिखा होसी बुध का अवतार, सो ब्रह्म सृष्ट दरम्यान ।
और अवतार कलंकी, सो नेह कलंकी इन में जान ॥१४॥

धर्मग्रंथों में भविष्यवाणी लिखी है, कि कलियुग के अंत में बुद्ध अवतार होंगे, जो कि ब्रह्मसृष्टियों के साथ प्रकट होंगे और उनके पश्चात् कल्कि अवतार का भी प्रकटन लिखा है, जो निष्कलंक (संशयरहित) ब्रह्मज्ञान लेकर आयेंगे ।

होए विजयाभिनन्द, सो इन में जाहिर होए ।
विजय करे अभिनन्दन, सो इन बिना न होए ॥१५॥

विजयाभिनंद निष्कलंक बुद्धावतार भी ब्रह्मसृष्टियों के बीच में ही प्रकट होंगे । विजय उनका ही अभिनंदन करेगी, सत्य ज्ञान की स्थापना व अज्ञानता का नाश, इनके सिवाय अन्य कोई नहीं कर सकता है ।

तो जेती ब्रह्म सृष्ट, तित रहे ब्रह्म विचार ।
द्वार खोले अद्वैत के, जित नित होत बिहार ।।१६।।

इस कारण जो भी ब्रह्मसृष्टियां होती हैं, उनके हृदय में प्रियतम परब्रह्म का चिंतन (ज्ञान) रहता ही है । विजयाभिनंद बुद्ध जी ने स्वलीला अद्वैत परमधाम के अखण्ड सुखों के दरवाजे तारतम ज्ञान के द्वारा खोल दिये हैं, जहां नित्य ही प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं होती हैं ।

इत अक्षरब्रह्म को, रहत इच्छा दर्शन ।
ए सुख ब्रह्मसृष्ट बिना, कौन जाहिर करे रोशन ।।१७।।

वहां अक्षर ब्रह्म के हृदय में भी ब्रह्मसृष्टियों के दर्शन की इच्छा रहती थी। रंगमहल में होने वाली उस दिव्य ब्रह्मलीला का सुख, इस संसार में ब्रह्म सृष्टियों के सिवा कौन जाहिर कर सकता है ?

ब्रह्म सनमंध उपनिषद, सो रहे इन ऋषियों पास ।
इनों को एक अद्वैत बिना, और न रहे कोई आस ।।१८।।

उपनिषद् आदि धर्मग्रंथों के रहस्य भी, इन ब्रह्म सम्बन्धी ब्रह्ममुनियों के पास ही रहते हैं । उनके हृदय में एक अद्वैत परमधाम के सिवा कोई चाहना नहीं होती है ।

आद अनाद फल की, इच्छा हुई है जब ।
मोह अहं त्रैगुन की, उत्पन्न भई तब ।।१९।।

जब ब्रह्मप्रियाओं के हृदय में अक्षरब्रह्म की आदि अर्थात् बनने व मिट जाने वाली माया जगत् की लीला देखने की इच्छा उत्पन्न हुई और अक्षर के हृदय में रंगमहल की अनादि-दिव्य प्रेम लीला देखने की इच्छा उत्पन्न हुई, तब मोह-अहंकार के द्वारा सम्पूर्ण त्रिगुणात्मक जगत् की उत्पत्ति हुई ।

आद फल ब्रह्म सृष्ट को, अनाद फल अक्षर ।
भई इच्छा फल देखन की, किया खेल इनों खातर ।।२०।।

ब्रह्म सृष्टियों के हृदय में माया का खेल देखने की (आदि फल) और अक्षरब्रह्म के हृदय में रंगमहल की अनादि प्रेम लीला देखने की इच्छा उपजी ।

उन दोनों की इच्छा पूर्ण करने के लिए इस माया जगत् की रचना की गयी है ।

ए उतर आय धाम से, मृतलोक उपर ।
इच्छा इनों की पूरी भई, ए देखावत अद्वैत घर ।।२१।।

इस कारण वे ब्रह्मात्माएं परमधाम से (सुरता रूप से) इस मृत्युलोक में आ गयीं । माया जगत् की दुःख लीला देखकर, उनकी दुःख देखने की इच्छा पूरी हो गई । अब प्रियतम उन्हें अपना अखण्ड स्वलीला अद्वैत परमधाम दिखा रहे हैं।

तो धाम अन्दर की, केहे मोहोल मंदिर थंभ द्वार ।
गलियां हवेलियों की, जित नित होत बिहार ।।२२।।

इस कारण रंगमहल के अंदर स्थित महलों, मंदिरों, स्तम्भों, द्वारों, हवेलियों के मध्य आयी गलियों का वर्णन किया जा रहा है, जहां नित्य ही अखण्ड प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं होती हैं ।

सुन्दर छबि मुख शोभित, साम सामे खड़े द्वार ।
रस भीगे बातें करे, निरखत छबि सुखकार ।।२३।।

श्री राज श्यामा जी का स्वरूप व मुखारविंद अत्यंत सुंदर शोभित हो रहा है । वे तथा सखियां मेहराबी द्वारों (स्तम्भों व महराबों के मध्य) में, आमने सामने खड़े होकर इश्क के रस में भीगे (प्रेम से परिपूर्ण) बातें कर रहें हैं तथा सखियां श्री राज श्यामा जी का मनोहारी स्वरूप निहार रही हैं ।

कोई सनमुख सखी ठाढ़ी रहे, कोई बोलत बेन रसाल ।
कोई चाल चल देखावहीं, कोई देखके होए खुशाल ।।२४।।

इन समय कुछ सखियाँ युगल स्वरूप के सामने खड़ी होकर उनके स्वरूप को एकटक निहारती हैं, तो कुछ सखियाँ उनसे मीठी मीठी बातें कर आनंदित होती हैं, तो कुछ तो उन्हें लटकनी मटकनी चाल से चल कर रिझाती हैं । कुछ उन्हें देख देख कर ही प्रफुल्लित होते रहती हैं ।

कोई गलि मों फिरती देखिए, कोई हाथ कंठ में बाहें ।
जोड़े मिल चलत हैं, ए सब सुख कह्यो न जाए ।।२५।।

कुछ सखियां एक दूसरे के गले में बांहें डालकर नूरी गलियों में विचरण करती हुई दिखायी देती हैं। उनमें से कुछ हांस विलास करती हुई साथ मिलकर घूमती हैं। धाम धणी श्री राज जी के इन अखण्ड सुखों का वर्णन करना सम्भव नहीं है।

कोई हसावे राज को, कोई मीठी बातां बनाए ।
कोई सामे साहेदी देत है, कोई ठाढ़ी ताई सराए ।।२६।।

कोई सखी श्री राज जी को हंसाती है, तो कोई उनसे प्रेम भरी मीठी मीठी बातें करती है। कोई सामने खड़ी सखी, पहले सखी के कथनों की साक्षी देती है, तो वहां खड़ी कोई अन्य सखी उसकी सराहना करती है।

कोई ऊपर सखी हंसत है, ठाढ़ी उन मेहेराब दरम्यान ।
रीझत राज एक पर, होत सुख सबों पेहेचान ।।२७।।

नूरमयी महराबों के मध्य खड़ी कोई सखी दूसरी सखी पर हंसती है। प्रियतम श्री राज जी एक सखी पर प्रसन्न हो जाते हैं तो सभी सखियों को आनन्द का अनुभव होता है।

श्रीराज ठकुरानी जी एक तन, सखियां ठकुरानी जी तन ।
ए तीनों मिल एक हैं, रहे एकै प्रफुलित मन ।।२८।।

श्री राजश्यामा जी एक ही तन (स्वरूप) हैं और सखियां व श्री श्यामा जी भी एक तन हैं। ये तीनों मिलकर एक ही स्वरूप हैं। उन सबका मन सदैव एकरस व प्रफुल्लित रहता है।

रहे एकै सुख सबन को, रहे एकै नित बिहार ।
परसपर सुख देत हैं, खड़े देखो मेहेराबी द्वार ।।२९।।

सब ब्रह्मप्रियाओं को एक जैसा सुख प्राप्त होता है। वे सब एक समान रूप से नित्य लीला विहार करते हैं और परस्पर एक दूसरे को सुख प्रदान करते हैं, उन्हें इन महराबी द्वारों (महराबों) के नीचे खड़े व लीला विहार करते देखिये।

चढ़ता जोबन अंग में, रहे अति उनमद आकार ।
चाल चातुरी चपलता, रस भीगे मेहेराबी द्वार ।।३०।।

सखियों का स्वरूप नवीन (चढ़ता) यौवन (किशोरावस्था) से युक्त है तथा उमंग–उल्लास (मस्ती) से भरपूर है। उनकी चाल चतुराई व चपलता से युक्त है। प्रेम रस में भीगे इन सखियों को महराबी द्वारों में रमण करते देखिये।

चढ़त दादरे देखिए, एक ठौर सब कोए ।
सूर उठत सुहामना, मिल राज रिझावत सोए ॥३१॥

एक ही स्थान पर एक साथ सभी ब्रह्मांगनाओं को सीढ़ियां चढ़ते हुए देखिए । उस समय उनके आभूषणों से सामूहिक मीठी झनकार उत्पन्न होती है। इस प्रकार सभी सखियां मिलकर श्रीराजजी को रिझाती हैं।

क्या कहूं इन विहार में, सुख गिनती नाहीं पार ।
ए ब्रह्म सृष्ट जानहीं, जो रहे नित विहार ॥३२॥

अखण्ड परमधाम की लीला विहार का क्या वर्णन करें ? वहाँ के सुख तो बेशुमार हैं । उनके विषय में ब्रह्म सृष्टियाँ ही जानती हैं, जो उस अखण्ड लीला में युगल स्वरूप के साथ नित्य शामिल रहती हैं ।

ए जो ठढ़ी हार थम्भन की, तिन के मेहेराब जो नूर ।
तिन की गिनती देखिए, ले जाग्रत बुध सहूर ॥३३॥

हे ब्रह्मात्माओं ! रंगमहल की चौरस हवेलियों के पहले फिरावे में जो स्तम्भों की खड़ी हारें आई हैं, उनके नूर से जगमगाती मेहेराबों की गणना जागृत बुद्धि से विचार करके देखिए ।

हर एक गली मिने, मेहेराब चार सौ बहत्तर ।
ऐसी गलियां दोए सौ एकत्तीस, गिन जमा करो खातर ॥३४॥

प्रत्येक गली (त्रिपोलिये) में ४७२ नूरमयी महराबें आई हैं । ऐसी २३१ गलियाँ सुशोभित हैं , जिनकी गणना करके सुख मिलता है ।

ऐसे चार हार एक भोम के, ताकी गिनती कही सुमार ।
एक लाख आठ हज़ार, नव सौ बहत्तर रहे द्वार ॥३५॥

इस प्रकार एक भोम के चार हार चौरस हवेलियों के मध्य २३१ खड़ी गलियों में महराबी द्वारों (महराबों) की कुल संख्या १,०८,९७२ होती है।

ए यों ही लेखो नवो भोम को, गिनती देखो विचार ।
नव लाख अस्सी हज़ार, सात सौ अड़तालीस सुमार ॥३६॥

इसी प्रकार से रंगमहल के नवों भोम के (प्रथम फिरावे की खड़ी गलियों की) महराबों की संख्या का विचार कीजिये, जो कि ९,८०,७४८ होते

हैं।

तामें कमी भुलवनी के, नहीं उन जागा मेहेराब ।
दोए हज़ार तीन सौ साठ, ए देखो हिसाब इन बाब ।।३७।।

सोलह चौरस हवेलियों की जगह में भुलवनी के मंदिर आने के कारण यहां महराबें नहीं आयी हैं, जिससे कुल महराबों की संख्या २,३६० कम हो गयी है।

बाकी रहे जो इन के, नव लाख अठहत्तर हज़ार ।
तीन सौ अट्ठासी उपर, हिसाब ब्रह्मसृष्ट देखनहार ।।३८।।

तब नौ भोम के महराबों की संख्या ९,७८,३८८ बचती है। जिनका हिसाब ब्रह्म सृष्टि ही जानती है।

इत कई सुख इन गिनती, होए कइ हिसाब करते सुख ।
कई सुख इन बरनन में, अद्वैत ठौर देखी सनमुख ।।३९।।

रंगमहल की नूरी महराबों की गणना करने में आत्मा को कई सुख मिलते हैं । कई सुख इस तरह का हिसाब करने में प्राप्त होते हैं । यहाँ का वर्णन करने से अद्वैत परमधाम के साक्षात्कार के कई सुख मिलते हैं ।

ए ब्रह्मसृष्ट सुख जानही, या दिया जाने जिन ।
या आप कर जाको देवहीं, ए सोई करे रोशन ।।४०।।

इन अखण्ड सुखों को या तो ब्रह्मसृष्टि जानती है, या उसे देने वाले श्रीराज जी जानते हैं । इन सुखों को वही जाहिर करता है, जिन्हें स्वयम् श्री राज जी अपना बनाकर सुखों से नवाजते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए है नित बिहार ।
ऐसा धन साधन पाइए, अखंड भोम धाम द्वार ।।४१।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुन्दरसाथ जी ! ये परमधाम के नित्य लीला विहार हैं । परमधाम की अखण्ड भूमिका, नूरमयी रंगमहल, हवेलियां, द्वार, महरावें आदि अनमोल धन (अखण्ड सुख) हैं , जो ध्यान-साधना - चितवन के द्वारा ही प्राप्त होते हैं ।

प्रकरण-१०, चौपाई-४४१

पोर गली चबूतरे

(परमधाम की नूरमयी गलियों, सीढ़ियों और चबूतरों की गिनती)

अक्षरातीत परब्रह्म की आवेश (जोश) शक्ति, ब्रह्ममुनि श्री लालदास जी के धाम हृदय में विराजमान होकर दिव्य परमधाम की शोभा वर्णन कर रही है। वहां की नूरमयी गलियों के मध्य श्रीराजजी, श्री श्यामाजी एवं ब्रह्मप्रियाओं के साथ जो अखण्ड लीला विहार करते हैं, उसकी झलक यहां प्रस्तुत की गयी है।

ए जो अरस अज़ीम के, खोलने बका द्वार ।
पैठना अरस गलियों में, जित है नित्य बिहार ।।१।।

दिव्य परमधाम के अखण्ड सुखों के द्वार खोलने हैं अर्थात् परमधाम परमधाम का गुह्य ज्ञान दुनिया में प्रकट करना है । अर्श अज़ीम की नूरी, अति सुन्दर, सुगंधी से महकती गलियों में प्रवेश करना है, जहां श्री राज जी, श्री श्यामा जी और सखियों के साथ नित्य लीला विहार करते हैं ।

ना थी तरफ त्रैलोक में, आज लों ना पाई किन ।
त्रैगुन दौड़ कर थाके, हुआ न दिल रोशन ।।२।।

तीनों लोकों के ब्रह्माण्ड में आज दिन तक कोई दिव्य परमधाम की दिशा भी नहीं पा सका । त्रिगुण (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) भी खोज खोज कर थक गये, लेकिन उनके हृदय में परमधाम के ज्ञान का प्रकाश नहीं हो सका ।

फिरस्ते चौदे तबक में, रहे सब उमेदवार ।
महंमद की उम्मत, हमें बकसावनहार ।।३।।

चौदह तबक (लोकों) के देवी देवता भी इसी उम्मीद में हैं, कि महंमद (श्री श्यामा जी) की उम्मत-ब्रह्म सृष्टि, हमें भवसागर से पार कर अखण्ड मुक्ति दिलायेगी।

जब की दुनी पैदा हुई, तब की देखत सब कोए ।
बका ठौर काएम की, सुध न काहूँ होए ।।४।।

जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, तब से सभी मनुष्य परमात्मा के अखण्ड धाम को जानने के लिए प्रयत्नरत् हैं । लेकिन आज दिन तक किसी को भी अखण्ड परमधाम की पहचान नहीं हो पायी ।

जेते कोई पैगंमर, सो सारे उमेदवार ।
जब मेहेर द्वार खोलेगा, तब पोहोंचे परवरदिगार ।।५।।

दुनियां में जितने भी पैगम्बर हुए हैं, वे सभी इस आखिरत के समय के प्रति आशान्वित थे, कि इस समय परमेश्वर की कृपा से अखण्ड परमधाम का द्वार खुल जायेगा । तब वे परमात्मा का साक्षात्कार प्राप्त कर पाएँगे ।

महंमद अलेहसलाम ने, सब किए उमेदवार ।
मैं आऊंगा आखर, तब खोले बका के द्वार ।।६।।

मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने (कुर्आन पाक व हदीसों में) सबको आखिरत की बातें बताकर आशान्वित किया कि "मैं आखिरत के समय पुनः आऊंगा, तब अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्रकट करूंगा ।"

तब तुम मोको चीन्हियों, मैं खोलूगां फिरकान ।
बिना उम्मत ख़ासल ख़ास, कोई कर ना सके पेहेचान ।।७।।

तब तुम मुझे पहचानना, मैं कुर्आन आदि सभी धर्मग्रंथों के गुह्य रहस्य प्रकट करूंगा । ख़ासल ख़ास उम्मत (ब्रह्म सृष्टि-मोमिनों) के सिवाय अन्य कोई भी मेरी पहचान नहीं कर पायेगा ।

मैं केहेता हूं तुम को, तुम रहो उम्मेदवार ।
जब मैं करो सिफाएत, होए दीदार परवरदिगार ।।८।।

मैं (मुहम्मद साहब) तुमको कहता हूँ, कि आप सब उस आखिरत के समय के प्रति आशान्वित रहो । उस समय, जब मैं हकी सूरत के रूप में सिफायत करूंगा, अर्थात् ब्रह्मज्ञान प्रदान करूंगा, तब सबको परमात्मा के दर्शन होंगे ।

मैं खोलूंगा भिस्त को, उस बख़त सब द्वार ।
तब तुम मोको पेहेचानियो, होए ईमान पर उस्तवार ।।९।।

मैं उस समय (हकी सूरत के रूप में इल्मे लदुन्नी के द्वारा) आठों बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) के द्वार खोल दूंगा । तब उस समय आप मुझे पहचान कर ईमान में दृढ़ हो जाना।

होई मेरी तीन सूरतें, सो तीनों करे आवाज़ ।
करे दावा जाहिर दीन में, रहे क्यामत के काज ।।१०।।

मेरी (कुल) तीन सूरतें बशरी, मलकी और हकी होंगी । वे तीनों ही दुनिया में ब्रह्मज्ञान की पुकार (प्रचार) करेंगी। और सत्य धर्म (ज्ञान) का दावा करेंगी । वे तीनों ही कियामत (आत्म जागृति) के कार्य के लिये समर्पित रहेंगी ।

ए जो आयतें क़ुरान की, ए जो कही सूरत ।
तामें मुक्ता हरफ़ कहे, सो खोलने की एही सरत ॥११॥

कुर्आन ए पाक में, जो आयतें व सूरतें कही गयी हैं, उनमें कुछ हरूफे मुक्तात् (सांकेतिक शब्द) भी कहे गये हैं । उनके रहस्य स्पष्ट करने का भी यही समय (आखिरत) है ।

मैं जो तुम आगे कही, राह दीन इसलाम ।
सो मैं जाहिर करूँगा, खुले हक़ मारफत इस ठाम ॥१२॥

मुहम्मद साहब ने कहा था कि मैने जो तुम्हारे आगे परम शांति का मार्ग प्रस्तुत किया है, उसकी वास्तविक पहचान भी, मैं आखिरत के समय जाहिर करूंगा और उस समय परमात्मा (हक तआला) के मारिफ्त (परमसत्य) के रहस्य दुनिया में प्रकट होंगे।

राह खोले हक़ीकत, बैठे बीच गिरो मोमिन ।
करों जाहिर किल्ली अरस की, होए चौदे तबको रोशन ॥१३॥

मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की जमात (समूदाय) में प्रकट होकर मैं हक़ीकत (सत्यज्ञान) की राह स्पष्ट करूंगा । अर्शे आज़म (दिव्य परमधाम) के तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) रूपी चाबी (किल्ली) दुनिया में जाहिर करूंगा, जिससे चौदह लोकों में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश हो जायेगा ।

होए खिलवतखाना जाहिर, जो कबूं किन न सुन्या कान ।
सो रूहें फिरस्ते उतरे, सो होए सबों पेहेचान ॥१४॥

उस समय दिव्य ब्रह्मपुरधाम के रंगमहल में होने वाली दिव्य ब्रह्मलीला के रहस्य दुनिया में प्रकट हो जायेंगे, जिसके विषय में आज तक कोई भी नहीं सुन पाया । उस समय रूहें अर्थात् ब्रह्मात्माएं एवं फरिश्ते अर्थात् ईश्वरी सृष्टियां दुनिया में अवतरित होंगे और उनकी बरकत से सारी दुनिया को सत्य की पहचान हो जायेगी ।

तब पोहोरां होए दज्जाल का, होए सखत बख़त ।
उतरे अज़ाब आसमान से, ए सरत बख़त क्यामत ॥१५॥

उस समय संसार में दज्जाल (कलि-शैतान) का साम्राज्य होगा और संसार की परिस्थिति बहुत ही कठिन होगी । आकाश से अनेक प्रकार के भयंकर संकट-दुःख संसार में प्रकट होंगे । वह कियामत की बहुत ही दुःखदायक परिस्थिति होगी ।

साएत अरस अज़ीम की, सो होए कायम जब ।
मारे कुफर दज्जाल सबों दिलों, सब साफ होएंगे तब ।।१६।।

जब दिव्य परमधाम का ज्ञान दुनिया में प्रकट हो जायेगा, तब सभी दुनिया वालों के दिलों से कुफ्र-अज्ञान रूपी दज्जाल का नाश हो जायेगा और सभी पवित्र हो जायेंगे ।

साथ सब फिरके जमा होवहीं, रूहें फिरस्ते इत ।
सब जमा पैगंमर होव हीं, तब पोहोंची आए सरत ।।१७।।

ब्रह्म सृष्टि एवं ईश्वरी सृष्टि सहित सभी धर्मावलम्बी उस समय एकत्रित होंगे तथा सब पैगम्बर भी इकट्ठे होंगे । तब कियामत का समय आ जायेगा ।

जब उतर चौथे आसमान से, हज़रत ईसारूहल्ला नाम ।
मारे फिरके दज्जाल को, एक दीन करे इसलाम ।।१८।।

उस समय चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से हज़रत ईसा रूहअल्ला दुनिया में पुनः अवतरित होंगे, तब तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) के द्वारा सभी धर्मालम्बियों के हृदय में स्थित अज्ञान रूपी दज्जाल को मारकर सारी दुनिया में एक शांति का मार्ग (धर्म) स्थापित कर देंगे ।

सातों निसान क्यामत के, ए देखेंगे सब कोई ।
जो कोई इन से मुनकर, ताको दोज़क होई ।।१९।।

उस समय कियामत की सातों निशानियां प्रकट होते सब लोग देखेंगे । और जो कोई भी उस सत्य ज्ञान पर विश्वास नहीं लायेगा, उसे दोज़ख (पश्चाताप) की अग्नि में जलना पड़ेगा ।

भिस्त दोज़क दोऊ जाहिर, होसी उन बख़त ।
अग्यारे सौ बरस आगूं कह्या, सो आई पहोंची सरत ।।२०।।

उस समय बहिश्त व दोजख दोनों की वास्तविकता जाहिर हो जायेगी । मुहम्मद साहब ने ग्यारह सौ वर्ष पहले से ही जो भविष्यवाणी कही थी, उसके पूर्ण होने का समय आ गया है ।

तो द्वार अरस अज़ीम को, इत खोले सब मोमिन ।
हुई सिफाएत जिनको, हुआ दिल तिन का रोशन ।।२१।।

इस कारण दिव्य परमधाम के अखण्ड सुखों के दरवाजे (तारतम ज्ञान के द्वारा) ब्रह्मात्माएं दुनिया में खोल रही हैं । जिन पर मुहम्मद (हकी सूरत) की सिफायत (अनुशंसा) होती है, उनका दिल ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित हो जाता है ।

तिनों देखया अरस अज़ीम को, गली मंदिर सब ठौर ।
पैठ न सके कोई इन में, होए न नफा काहू और ।।२२।।

उन ब्रह्मात्माओ ने अखण्ड परमधाम की दिव्य गलियों, मंदिरों आदि सभी लीला स्थलों के दर्शन प्राप्त कर लिये हैं । उनके सिवा अन्य कोई भी उस दिव्य धाम में प्रवेश नहीं कर पाता है और किसी को भी इस प्रकार का आत्मिक लाभ नहीं प्राप्त हो पाता है ।

अब देखो तुम मोमिनों, करो अपना बख़त याद ।
पेठे धाम गलियों मिने, तुमारी असल बुनियाद ।।२३।।

हे सुंदरसाथ जी! अपने निजघर की शोभा देखिये, और अपना वह समय याद कीजिये, जब आप श्री राज जी के संग दिव्य परमधाम में रमण करते थे। आईये.., परमधाम की नूरी व चेतन गलियों में प्रवेश कीजिये। यह परमधाम ही आपका असली निवास (निजघर) है।

कहूं गली पौरी चबूतरे, गिनती नूर रोशन ।
ए गिरो रब्बानी जानत, जो ख़ासल ख़ास मोमिन ।।२४।।

अब परमधाम की नूरमयी गलियों, महराबी द्वारों और चबूतरों की शोभा व गणना बताता हूं। इसका ज्ञान ब्रह्मात्माओं को ही होता है, जिन्हें खासुलखास मोमिन कहा गया है।

ए गलियों की गिनती, द्वार से मूल मेले लों नूर ।
फिरती गलियां अठारे, कहूं इन का सुनो मज़कूर ।।२५।।

रंगमहल के मुख्य दरवाजे से लेकर मूलमिलावे तक अठारह दिव्य गलियाँ घेर कर आई हैं । इन गलियों का वर्णन सुनिए ।

दोए हार बाहिर की, ए जो गृद फिरती सब ठौर ।
तीन तीन साम सामने, बिना मोमिन न जाने और ।।२६।।

चौरस हवेलियों के बाहिरी तरफ गोलाई में फिरती छः छः हज़ार मंदिरों की जो दो हारें आई हैं । उनके मध्य (भीतरी छः हज़ार मंदिर की हार के बाहिरी और भीतरी तरफ) तीन-तीन गलियाँ आई हैं, जिन्हे ब्रह्मात्माओं के सिवा अन्य कोई नहीं जान पाता है।

और चार हार हवेलियों, ताकी तीन तीन गिनती ।
ताकी बारे और भई, यों अठ्ठारह भई फिरती ॥२७॥

इनके अतिरिक्त चार चौरस हवेलियों व पांचवी गोल हवेली के मध्य गलियों (त्रिपोलियों) की चार हारें आयी हैं। इस तरह कुल (४x ३=१२)बारह गलियां होती हैं, छे गलियों का पहले वर्णन हो चूका है, जिन्हे मिलाकर कुल १८ गलियां होती हैं।

ए तले की भोम के, यों नवो भोम सुमार ।
ताकी एक सौ बासठ भई, जित होत नित विहार ॥२८॥

यह तो प्रथम भोम की गिनती कही है । ऐसे ही नवों भोमों की गिनती है । नौ भोम की कुल गलियाँ १६२ हैं, जहां श्री राजश्यामा जी और सखियाँ अखण्ड लीला विहार करते हैं ।

और गलियों ठाढ़ी कही, जो हवेलियों के दरम्यान ।
एक हार दोए सौ एकतीस, एक एक में तीन तीन जान ॥२९॥

२३१ हवेलियों के बीच २३१ गलियां (त्रिपोलियां) आयी हैं। प्रत्येक त्रिपोलियों में (स्तम्भों की दो हारों) तीन–तीन गलियों की शोभा है।

दोए हार थंभ दरम्यान की, एक भोम कही सुमार ।
छे सौ तिरानवे कहिए, एक सुख मोमिन देखनहार ॥३०॥

सुन्दरसाथ जी ! एक गली (त्रिपोलिये) में स्तम्भों की दो हारें आई हैं । इस प्रकार पहली भोम में खड़ी ६९३ गलियाँ आई हैं (२३१x ३=६९३) । इन सुखों को मोमिन ही जानते हैं ।

यों नवो भोम की गलियां, छः हज़ार दोए सौ सैंतीस ।
पन्द्रह कमी भुलवनी, ए पाईए हक़ बक़सीस ॥३१॥

इस प्रकार नौ भोम की कुल खड़ी गलियाँ ६,२३७(६९३x९) हुईं । दूजी भोम में सोलह चौरस हवेलियों की जगह में भुलवनी के मंदिर आने से १५ गलियां कम होती हैं । यह शोभा श्री राज जी के मेहर से प्राप्त होती हैं ।

बाकी रही गलियां, छे हज़ार दोए सौ बाईस होए ।
ए मोमिन फिरे गलियों मिने, इत और ना कादर कोए ।।३२।।

भुलवनी की जगह में पंद्रह गलियों कम होने से बाकी गलियाँ ६,२२२(६२३७-१५) होती हैं । मोमिन (ब्रह्मांगनाएं) इन गलियों में रमण करते हुए सुख लेते हैं । उनके अतिरिक्त और किसी का सामर्थ्य नहीं है, कि वो परमधाम की नूरमयी गलियों में रमण कर सकें ।

इत हक़ हादी रूहें खेलें, नित नया करे विहार ।
पैठत गलियों देखिए, फिरते खड़े कहूं द्वार ।।३३।।

इन नूरी गलियों में श्री राज श्यामा जी और सखियां नित नये लीला विहार करते हैं । इन गलियों में उन स्वरूपों को प्रवेश करते देखिए, या चारों ओर सुशोभित द्वारों के आगे खड़े रह कर या घूमते हुए हांस विलास करते देखिए ।

रूहें राजी करत हैं, मिल खेलते हक़ सुभान ।
कोई हादी के संग फिरे, कोई आए लगत हक़ कान ।।३४।।

श्री राज जी के संग खेलते हुए ब्रह्मप्रियाएं उन्हें प्रसन्न करती हैं । कोई सखी श्री श्यामा महारानी के संग गलियों में घूमती है, तो कोई सखी श्री राज के कानों के पास आकर उन्हें प्रेम भरी बात कहती है।

इन रूहों के रमन को, आवे सबद में ना सुख ।
जो ठाढ़ी इन गलियन में, देखे नूर जमाल का मुख ।।३५।।

जो ब्रह्मप्रियाएं इन नूरमयी गलियों में खड़े होकर अक्षरातीत प्रियतम का नूरी मुखारविंद निहारती हैं, उनके लीला विहार के सुख इस नश्वर संसार के शब्दों में नहीं आ सकते हैं।

ए सुख इन रूहन के, जाको हिसाब ना छेह पार ।
ताको सुपन आकार में, क्यूं कर करूं विचार ।।३६।।

ये अखण्ड सुख ब्रह्मप्रियाओं के हैं, जिनका कोई पारावार (सीमा) नहीं है। उन अखण्ड सुखों का चिंतन इस स्वाप्निक तन से किस प्रकार सम्भव हो सकता है?

जाको हक़ हेत कर कहत हैं, बोलावत ले नाम ।
तिन के सुख की क्या कहूं, हक़ पूरे मनोरथ काम ।।३७।।

जिस सखी को धाम के दूल्हा श्री राज जी नाम लेकर बुलाते हैं, और उससे प्रेमपूर्वक बातें करते हैं, उन सखियों के सुखों के विषय में क्या कहूं, जिनके मनोरथ स्वयं प्रियतम श्री राज जी पूरे करते हैं।

जासों हक़ सुभान वायदा, करत अपने श्री मुख ।
जाए सुख देखाए समझावहीं, इत क्यों कहूं ताको सुख ।।३८।।

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों का कैसे वर्णन करूं, जिनसे श्री राज जी स्वयं अपने मुख से वादा करते हैं, (कि मैं तुम्हें जगाऊंगा)। उन्हें अर्श अज़ीम (परमधाम) के अखण्ड सुख दिखाकर समझा रहे हैं।

जाको अपने दिल में, करत बडो प्यार ।
ता को अपनी तरफ को, खेंच ले परवरदिगार ।।३९।।

जिन आत्माओं को श्री राज जी अपने दिल से बहुत प्यार करते हैं, उन्हें तारतम ज्ञान देकर अपनी तरफ आकर्षित कर लेते हैं।

मोहोल अरस अज़ीम के, जाए देखावत हक़ सुभान ।
क्यूं कहूं सुख तिन को, रेहे मोमिन दिल पेहेचान ।।४०।।

जिन ब्रह्मांगनाओं को श्री राज जी परमधाम के दिव्य महल दिखाते हैं, उनके सुखों के विषय में किस प्रकार वर्णन करूं? इन अखण्ड सुखों की पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में रहती है, जिन्हें राजजी वे सुख दिखाते हैं।

इनों का इशक हक़ सों, रहे हक़ का इशक इनों पर ।
ए आसक मासूक आप को, याकी हक़ करे जमा खातर ।।४१।।

उन ब्रह्मात्माओं का प्रेम श्री राजजी के प्रति रहता है और श्री राज जी का प्रेम भी ब्रह्मात्माओं के प्रति रहता है। वे आपस में एक–दूसरे के आशिक व माशूक (प्रेमी व प्रेमास्पद) हैं। श्री राजजी जो कुछ भी कर रहे हैं, उन्हें सुख–शांति प्रदान करने के लिये ही कर रहे हैं।

यूं कई सुख अरस अज़ीम के, आवत उपर मोमिन ।
सो इन जुबां केते कहूं, आगे हक़ हादी जाने रोशन ।।४२।।

इस प्रकार दिव्य परमधाम के कई प्रकार के सुख ब्रह्मप्रियाओं के

वास्ते दुनिया में अवतरित हो रहे हैं, जिनका वर्णन इस जिह्वा से नहीं किया जा सकता है। इस विषय में विस्तृत रूप से श्री राज श्यामा जी ही जानते हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम देखो अपना सुख ।
और सब धन्धा छोड़ के, देखो नूरजमाल का मुख ।।४३।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे ब्रह्मप्रियाओं ! अपने घर के अखण्ड सुखों को देखिये। माया के अन्य सब कार्य व्यवहार छोड़कर श्री राज जी की नूरी मुखारविंद की शोभा देखिये।

प्रकरण-११ चौपाई-४८४

चार हार हवेलियों की पौरी

इस प्रकरण में रंगमहल की चौरस हवेलियों के पहले फिरावे के मुख्य द्वारों और महराबों की शोभा का अद्‌भुत वर्णन है। सृष्टि के प्रारम्भ से आज दिन तक चौदह लोकों में किसी ने परब्रह्म अक्षरातीत की शोभा का वर्णन नहीं किया है। एक मात्र पूर्ण ब्रह्म (अल्लाह, सुप्रीम गॉड) ही अराधना (पूजा) के योग्य है। कहते सभी हैं, कि परमात्मा एक है, पर मोमिनों के अतिरिक्त उनकी पहचान कोई भी नहीं कर पाता है। श्री राज जी ने बड़ी हिकमत (युक्ति) से उनके स्वप्न के शरीर को भी रखा हुआ है और उन्हें तारतम ज्ञान से जागृत कर परमधाम के पच्चीस पक्षों की अखंड लीला विहार के सुख भी दे रहे हैं ।

कहूं पौरीया अरस अज़ीम की, जो अन्दर बड़े हैं द्वार ।
ए जो कही हवेलियां, तिन की कही चार बड़ी हार ।।१।।

श्री रंगमहल के अंदर हवेलियों के पहले फिरावे में चौरस हवेलियों की जो चार हारें (पंक्तियां) घेर कर आयी हैं। उन हवेलियों में (चारों दिशा में) जो बड़े द्वार आये हैं, उनकी शोभा व गणना का वर्णन अब करूंगा।

इन दुनियां चौदे तबक में, कोई कहे ना सूरत हक़ ।
कोई ना कहे मैं देखिया, काहूँ की ना भागी सुभे सक ।।२।।

इस चौदह लोकों के संसार में, किसी ने भी परमात्मा के स्वरूप का

स्पष्ट वर्णन नहीं किया । किसी ने यह भी नहीं कहा कि "मैंने परमात्मा का दर्शन किया है" । परमात्मा के स्वरूप के विषय में किसी का भी संशय नहीं मिटा ।

सब कोई संसय ले चले, अव्वल से आज दिन ।
जबराईल ना पोहोंचिया, जो देत पैगाम रोशन ।।३।।

सृष्टि के आदिकाल से लेकर आज दिन तक कोई भी बेशक (संशयरहित) नहीं हो पाया। यहाँ तक कि जिब्रील भी परमधाम (रंगमहल) तक नहीं पहुँच सका, जिसके द्वारा परमात्मा ने अपने संदेश (पैगाम) विभिन्न धर्मग्रंथों में लिखवाए हैं ।

केहेलाए जेते पैगम्बर, हुए दुनिया के बुजरक ।
आया जबराईल जिन पर, उन भानी सुभे सक ।।४।।

दुनिया में जितने भी बड़े बड़े पैगम्बर हुए हैं, जिनके अंदर धणी का जोश (जिब्रील) आया है, उन्होंने दुनिया वालों के बहुत से संशय दूर किये हैं ।

पर खुदाए सूरत की साहेदी, दे न सका कोए ।
तो तिन के मोहोल अन्दर की, केहेनी कैसी होए ।।५।।

परंतु उन पैगम्बरों में से कोई भी परमात्मा के स्वरूप का स्पष्ट वर्णन नहीं कर सका । तो फिर उनके दिव्य रंगमहल के अंदर की शोभा व लीला का वर्णन किस प्रकार कर सकते थे ?

वह तो ठौर वाहेदत की, तहाँ एकई जात हैं हक़ ।
देनी तिन की साहेदी, सो क्यों कर भाजे शक ।।६।।

वह तो स्वलीलाद्वैत (वहदत) स्वरूप धाम है, जहां के कण कण में एक परमात्मा का ही स्वरूप विद्यमान है । इस द्वैत माया के झूठे शब्दों से, उस अद्वैत धाम की साक्षी देनी है, तो किस प्रकार संशय मिट सकता है ?

खुदाए की साहेदी, देवे सोई खुदाए ।
हुआ मेअराज महंमद पर, सब तिन दिया इत बताए ।।७।।

खुदा के स्वरूप की साक्षी स्वयं खुदा ही दे सकता है । मुहम्मद साहब पर मेअराज (अर्श आजम जाना) हुआ, इस कारण उन्होंने सारा वर्णन किया है ।

श्याम से आए दो दानिशमंद, तिन इत किया सवाल ।
रसूल अल्ला ने तिन को, दे जवाब किया खुसाल ।।८।।

श्याम देश (सिरिया) से दो बुद्धिजीवी आये और उन्होंने मुहम्मद साहब से एक प्रश्न किया, जिसका उत्तर देकर रसूल अल्लाह ने उनको प्रसन्न कर दिया।

बुजरक कहिए किन को, जो साहेदी देवे हक़ ।
के क़ुरान का हुकम करें, दोए में कौन बुजरक ।।९।।

उनका प्रश्न था कि इन दोनों में बड़ा किसे कहा जाये, वह जो परमात्मा की साक्षी दे या वह जो कुर्आन का हुक्म करे ?

कहा जवाब तिन का, खुदा की साहेदी देवे खुदाए ।
बयान करे हुकम चलावे, खुदा बरहक जानियों ताए ।।१०।।

मुहम्मद साहब ने उनको उत्तर दिया कि खुदा की साक्षी खुदा ही दे सकता है । वह स्वयं ही वर्णन करेगा और उसका पालन करने का हुक्म भी स्वयं ही चलायेगा (पालन करायेगा)। उसे ही निश्चित रूप से खुदा जानना ।

वही लायक पूजने के, और ना कोई होए ।
यों ही सब फिरस्तों कह्या, मोमिन ग्वाही देत सब कोए ।।११।।

वही एक स्वरूप पूजने के योग्य होता है, और दूसरा कोई भी पूजने के योग्य नहीं होता । सभी फरिश्तों ने ऐसा ही कहा है, सभी मोमिन (ब्रह्मात्माएं) भी ऐसी ही साक्षी देते हैं ।

और गुहाई देत हों इत, सो रंग रसूल के महाजर ।
जिन वतन घर जात छोड़, हक़ पावन की खातर ।।१२।।

और भी साक्षियां देता हूं। वे शिरोमणि सुंदरसाथ (मुहाजिर), जो प्रियतम अक्षरातीत को पाने के लिये अपना घर और देश छोड़कर रसूल (हकी सूरत महामति जी) के संग निकल पड़े थे...।

ते सब गुहाई देत है, और दई गुहाई उम्मत ।
और दे गुहाई खुदाए ने, ठौर अपनी जो वाहेदत ।।१३।।

वे सब इस बात की साक्षी देते हैं, अन्य ब्रह्म सृष्टियों ने भी इस बात की गवाही दी हैं । स्वयं खुदा (पूर्णब्रह्म अक्षरातीत) ने भी अपने स्वलीलाद्वैत

परमधाम की साक्षी दी है ।

कलमा जो तौहीद का, जुबां कहे सब कोई ।
पर पोहोंचत नहीं किन की, बिना गिरो रब्बानी क्यों होई ।।१४।।

जो तौहीद (एकेश्वरवाद) का कलमा है (ला इलाह इल्लल्लाह यानि नहीं है अल्लाह के सिवा) उसका अपनी जुबां से उच्चारण तो सब लोग करते हैं, परंतु उसके रहस्य को कोई नहीं जानता । ब्रह्म सृष्टियों (रब्बानी गिरोह) के अतिरिक्त उसके रहस्य को और कौन समझ सकता है ?

सिफाएत बिन मोमिन, करत नहीं खुदाए ।
या हुकम देवे जिनको, सो देखे इत आए ।।१५।।

मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के सिवा अन्य किसी की सिफायत (अनुशंसा) परमात्मा नहीं करता है (अन्य किसी को ज्ञान प्रदान नहीं करता है) । परमात्मा का हुक्म जिनको दिखाना चाहता है, वही चितवन-ध्यान द्वारा परमधाम का दर्शन कर पाता है ।

द्वार अरस अज़ीम के, क्यों खोले बिना मोमिन ।
खुदाए की साहेदी को, एही गिरो करे रोशन ।।१६।।

तारतम ज्ञान के द्वारा दिव्य परमधाम के अखण्ड सुखों के दरवाजे ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई किस प्रकार खोल सकता है ? धर्मग्रंथों में वर्णित परमात्मा की साक्षियों का वास्तविक आशय वे आत्माएं ही दुनिया में प्रकट करेंगी ।

जिन की सुभान सिफ़त करें, लिखे ख़ास दसखत कलाम ।
ए रसूल भेजे तुम ऊपर, किया दीन जाहिर इसलाम ।।१७।।

कुर्आन ए पाक में हक़ सुब्हान तआला (प्रियतम अक्षरातीत) स्वयं जिनकी प्रशंसा करते हैं, उनके लिये ही कुर्आन पाक में विशेष रूप से अपने हाथों से वचन लिखा, जिनके लिये विशेष रूप से अपने माशूक रसूल को भेजा और दीने इस्लाम (शांति का सत्य मार्ग) को दुनिया में प्रकट किया ।

तुम को मैं अजमावत, देखाए बोलाए इन ठौर ।
सखती फकीरी दौलत, रोग दुःख भी और ।।१८।।

हे सुंदरसाथ जी! मैं तुम्हे इस माया जगत् में अमीरी-गरीबी, मजबूरी, बीमारियाँ आदि अनेक प्रकार की मुसीबतें व दुःख दिखाकर तुम्हारी परीक्षा ले

रहा हूं ।

राखूंगा पनाह मिने, यूं कर लिखत हक़ ।
क्यों कहूं सिफ़त तिन की, जिन की भानत सुभे शक ।।१९।।

परब्रह्म स्वामी कुर्आन ए पाक में लिखते हैं, कि ऐसी कठिन परिस्थितियों में भी मैं उन आत्माओं को अपनी पनाह (शरण) में रखूंगा । उन ब्रह्मात्माओं की महिमा किस प्रकार कहूं, जिनके संशय स्वयं परमात्मा दूर करते हैं ।

जिन पर हक़ सुभान की, रहत मेहेर नज़र ।
बका ठौर वाहेदत की, मोमिन करे फजर ।।२०।।

जिन ब्रह्मात्माओं पर प्रियतम अक्षरातीत की सदा कृपा भरी दृष्टि रहती है, वे मोमिन ही स्वलीलाद्वैत परमधाम का ज्ञान प्रकट कर के दुनिया में ब्रह्मज्ञान का उजाला करते हैं ।

हुआ बख़त फजर का, आया उठने का दिन ।
तो अरस अज़ीम की, सब गलियां करी रोशन ।।२१।।

संसार में ब्रह्मज्ञान का उजाला करने का समय हो गया है, तथा निजघर परमधाम में ब्रह्मात्माओं के जागृत होने का समय हो गया है, इस कारण दिव्य परमधाम की गलियों, महलों, स्तम्भों, द्वारों आदि की शोभा का वर्णन यहाँ किया जा रहा है ।

हक़ सुभान बोलावत, मोमिनों को अपनी तरफ ।
सिफ़त ख़ासल ख़ास की, कही जाए न एक हरफ़ ।।२२।।

हक़ सुब्हान श्री राज जी अपनी संपूर्ण पहचान देकर मोमिनों को अपने पास बुला रहे हैं । उस ख़ासल-ख़ास उम्मत (ब्रह्म सृष्टि) की महिमा में एक शब्द भी कहना सम्भव नहीं है ।

ख्वाब आकार रख के, उड़ाई नींद दरम्यान ।
रूहें अरस गलियन में, सब फिरती दे पेहेचान ।।२३।।

स्वाप्निक देह के रहते हुए भी तारतम ज्ञान के द्वारा (असल तन व स्वप्न तन के) बीच की नींद खत्म कर दी है। वे ब्रह्मात्माएं परमधाम की नूरी गलियों में भ्रमण करती हैं, उन्हें प्रियतम ने परमधाम का सारा ज्ञान प्रदान कर

दिया है।

जाग्रत और सुपन के, सदा रहे बैर ।
जब जाग बैठे अरस में, नींद आकार ना देखिए फेर ।।२४।।

जागृत अवस्था व स्वप्नावस्था में सदा ही बैर रहता है (अर्थात् दोनों एक साथ कभी नहीं रहते) । जब परमधाम में जागृत होकर बैठ जायेंगे, तो फिर यह नींद (स्वप्न) से उत्पन्न शरीर व संसार नहीं दिखायी देगा ।

ए अनहोनी हके करी, रखे नींद आकार ।
अन्दर बाहिर देखाइयां, सुख अपने नित बिहार ।।२५।।

यह अनहोनी अक्षरातीत श्री राज जी ने ही किया है, कि हमारा स्वाप्निक देह भी जीवित रखा है और हमें परमधाम रंगमहल के अंदर-बाहर, सभी स्थानों में नित्य प्रति होने वाली प्रेम व आनंदमयी लीलाओं का भी दर्शन करा रहे हैं ।

सोहोनी सूरत हक़ की, नूर रस भरी प्यार ।
संग हादी रूहें शोभित, रूहों अत सुख देवनहार ।।२६।।

प्रियतम अक्षरातीत श्री राज जी का स्वरूप नूरमयी प्रेम रस से परिपूर्ण अत्यंत सुंदर व मनमोहक है । वे श्री श्यामा जी एवं सखियों के साथ में विराजमान हैं एवं प्रियाओं को (अपनी प्रेम भरी बातों से) अत्यंत सुख प्रदान कर रहे हैं ।

कहूं बैठे बातां करें, कहूं हार नैनों निरखत ।
कहूं भूखन सूर सुहामनों, अति श्रवनों रस उपजत ।।२७।।

सखियां कहीं बैठकर, आपस में श्री राज जी की बातें (स्वरूप–अदाओं के विषय में), करती हैं, तो कहीं सखियां, श्री राज जी के हृदय कमल पर शोभायमान हारों की शोभा अपने नयनों से निहारती हैं। श्री राज जी के आभूषणों से उठती सुहावनी अति मीठी ध्वनि, ब्रह्मप्रियाओं के श्रवणों (कानों) में आनंद रस घोल देती है।

ए जो हक़ के दोस्त, और कहे औलिया लिल्ला इत ।
तन रूहें अरस अज़ीम में, कह्या तिन का उठावना क्यामत ।।२८।।

ब्रह्मात्माएं, जिन्हें कुर्आने-पाक में औलिया-लिल्लाह एवं प्रियतम अक्षरातीत हक़ तआला के दोस्त कहा हैं । इन के असल तन परमधाम

मूलमिलावे में श्री राज जी के चरणों में विराजमान हैं । उनका जागृत होना ही कियामत कहलाता है ।

अरस मंदिर पोर हवेलियां, तो इनों को खोले द्वार ।
कहूं गिनती तिन की, जो हैं नित बिहार ।।२९।।

इसी कारण परमधाम–रंगमहल के अंदर स्थित मंदिर, महराब व हवेलियों की शोभा को यहां जाहिर किया गया है। अब उनकी गिनती कहूंगा, जो ब्रह्मात्माओं के अखण्ड लीला विहार का स्थान है।

ए जो चार हार हवेलियन की, ताकी पौरी नूर बड़े द्वार ।
हर हवेली चार चार, ताको क्यों कर कहूं सुमार ।।३०।।

रंगमहल में हवेलियों के पहले फिरावे में चौरस हवेलियों की चार हारें आयी हैं, उनमें प्रत्येक हवेली में चारों दिशा में चार नूरमयी बड़े महराबी द्वार आये हैं। उनकी बेशुमार शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं?

नेक कहूं ताकी गिनती, तीन हज़ार छः सौ छानबे ।
ऐसे कहूं जमा नव भोम के, तैंतीस हज़ार दो सौ चौसठ ए ।।३१।।

अब उनकी थोड़ी सी गणना कहूंगा। पहली भोम में चौरस हवेली के पहले फिरावे में कुल ३,६९६ (२३१X४=९२४; ९२४X४) बड़े द्वार हैं। इस प्रकार से नवों भोमों में कुल ३३,२६४ (३६९६X९) बड़े द्वार होते हैं।

तामें कहे भुलवनीय के, सोले चौको चौसठ होई ।
हर भोम में आठ आठ, बहत्तर घटती कही सोई ।।३२।।

इनमें से दूजी भोम में सोलह चौरह हवेलियों की जगह में भुलवनी के मंदिर आने से (१६X४) ६४महराबें कम हैं, साथ ही प्रत्येक भोम में आठ–आठ महराबें कुल ७२ महराबें कम होती हैं।

तामें आठ भुलवनी के, बाकी रही चौसठ नूर ।
जमा एक सौ अट्ठाइस, करे साम सामी जंग ज़हूर ।।३३।।

इन कम होने वाले ७२ द्वारों में से दूसरी भोम के २ पहले गिन चूके हैं। इस प्रकार दूसरी भोम के ६४ व बाकि भोम के ६४, कुल १२८(६४X२) बड़े द्वार कम होते हैं।

बाकी रहे तैंतीस हज़ार, एक सौ छत्तीस उपर ।
ए समझेंगे मोमिन, जो फिरे धाम पौरी अन्दर ।।३४।।

इन १२८ बड़े द्वारों को घटाने से नौ भोमों में ३३,१३६ (३३२६४-१२८) महराबें शेष रहती हैं । इस रहस्य को वे ही मोमिन समझेंगे, जो रंगमहल की हवेलियों के इन द्वारों के अंदर रमण करते हैं ।

हर हवेली चार पौरी, हर पौरी दोए मेहेराब ।
आठ भए एक हवेली, ताको करो हिसाब ।।३५।।

प्रत्येक हवेली की चारों दिशा में चार बड़े द्वार आएँ हैं और प्रत्येक द्वार में बाहिर और भीतरी तरफ दो महराबें आई हैं। इस प्रकार एक हवेली में आठ महराबे हुईं , उनकी गणना करो ।

नव सौ चौबीस हवेलियां, हर एक में आठ मेहेराब ।
भए तिहत्तर सौ बानबे, देखो हिसाब इन बाब ।।३६।।

एक भोम में नौ सौ चौबीस हवेलियां आयी हैं, और प्रत्येक हवेली में आठ–आठ महराबें शोभायमान हैं। ९२४ हवेलियों की सम्पूर्ण महराबें (९२४x ८)७३९२ होती हैं, उनका हिसाब देखिये।

यूं ही भए नव भोम के, छासठ हज़ार तीन सौ ।
बहत्तर भए ता ऊपर, देखो हिसाब कर इन मों ।।३७।।

इस प्रकार नौ भोमों में छियाछठ हज़ार तीन सौ बहत्तर (९x ७३९२=६६,३७२) महराब होते हैं, उनकी गणना करके देखिए ।

तामे एक सौ अट्ठाइस, नाहीं भुलवनी के ठौर ।
चौसठ बाद आठ भोम में, मिल एक सौ बानबे बाद ज़ोर ।।३८।।

उनमें से दूजी भोम में भुलवनी के मंदिरों के स्थान पर चौरस हवेलियां नहीं होने से १२८ महराबें नहीं आयी हैं और अन्य आठों भोमों में चौसठ महराबें नहीं हैं। इस प्रकार कुल १९२ महराबें कम हो जाती हैं।

रहे बाकी छासठ हज़ार, एक सौ छत्तीस ऊपर ।
ए मोमिन तुम देखके, तुम आओ ताके अन्दर ।।३९।।

इस प्रकार कुल ६६,१३६ महराबें शेष रहती हैं। उनकी अनुपम शोभा को देखते हुए हे सुंदरसाथ जी! इनके भीतर आईये।

ए तो अरस अज़ीम की, कही गलियां पौरी मंदिर ।
आगे खुदा ए सब जानत, रहे जेते सुख अन्दर ।।४०।।

यह तो रंगमहल की दिव्य गलियें, महराबों और मंदिरों की शोभा का वर्णन किया है। रंगमहल के अंदर के जो अखण्ड सुख हैं, उन्हें तो धाम धणी ही बेहतर जानते हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, कह्या अरस तुमारा ठौर ।
तुम बिना इन अन्दर, पैठ न सके कोई और ।।४१।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुन्दरसाथ जी ! आपके निजघर श्री परमधाम की नूरी शोभा का वर्णन किया है । आपके अतिरिक्त परमधाम के अंदर कोई दूसरा प्रवेश नहीं कर सकता है ।

प्रकरण-१२, चौपाई-५२५

पौरियों आगे चबूतरे

इस प्रकरण में रंगमहल के भीतर आई हवेलियों के नूरमयी चबूतरों का विहंगम वर्णन है। इन चबूतरों के दरम्यान होने वाली श्री राजश्यामा जी और सखियों की अलौकिक प्रेम लीला को दर्शाया है । परमधाम का यह वर्णन ब्रह्मात्माओं के लिये ही श्री राजजी ने किया है। इन मोमिनों के लिए मुहम्मद की तीनों सूरतें, श्री राज जी से अर्ज करती हैं, कि इन्हें अपनी पनाह (शरण) में रखिये। चौदह लोकों की रचना इन्हीं ब्रह्मात्माओं के लिये की गयी है।

ए पौरी अन्दर अरस के, तिन आगे दोए चबूतर ।
ताकी कहूं गिनती, गिरो मोमिनों की खातर ।।१।।

श्री रंगमहल के भीतर आई चौरस हवेलियों में चारों दिशा में चार बड़े द्वार आये हैं, जिनके सामने (दायें-बायें) दो-दो नूरी चबूतरे सुशोभित हैं । उन चबूतरों की गिनती मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिए कहता हूँ ।

इन मोमिनों के वास्ते, सूरत अलफ लाम मीम ।
सो अरज करे आगे हक़ के, आगे खड़ी कही अरस अज़ीम ।।२।।

मुहम्मद की तीनों सूरतें (अलिफ-बशरी, लाम-मलकी, मीम-हकी) परमधाम मूल मिलावे में परब्रह्म अक्षरातीत के आगे खड़े होकर उन ब्रह्मात्माओं

के लिये ही अर्जी करती हैं ।

बकस इन मोमिनों के, ए मेरे परवरदिगार ।
ले इन को अपनी नजीक, देओ नित बिहार ।।३।।

"ऐ मेरे परवरदिगार (पालनहार स्वामी) ! इन मोमिनों के पर कृपा कीजिये । इन्हें अपने चरणों में लेकर अपने नित्य लीला विहार के सुख प्रदान कीजिये ।"

जो हम तेरी सूरतें, तुम लिखी ख़ासल ख़ास आम ।
ना तो निकाल हम को, जिन राखो हमारा नाम ।।४।।

मोमिन (ब्रह्मात्माएं) भी इस प्रकार हुज्जत (दावा) करते हैं, कि यदि हम आत्माएं आपके ही अंगरूपा हैं, जिनके विषय में आपने 'ख़ासुल ख़ास' शब्द प्रयोग किया है और अन्य जीवों के लिये 'आम खलक' शब्द प्रयोग किया है, तो हमें इस भवसागर से बाहर निकालिये, नहीं तो हमें ख़ासुल ख़ास रूहें भी ना कहिये ।

इन भांत की हुज्जते, करे लड़ाई हक़ सनमुख ।
तिन मोमिनों की सिफते, क्यूं जुबां कहूं इत सुख ।।५।।

इस प्रकार अपना अधिकार जताते हुए, जो आत्माएं प्रियतम अक्षरातीत से प्रेम की लड़ाई लड़ती हैं, उनकी महिमा व सुख माया की इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करूं ?

खुदा कहे फिरस्तन को, तुम राखे वास्ते मोमिन ।
गुनाह ठौर सबने किया, करो सब जहान में रोशन ।।६।।

खुदा तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) फरिश्तों को कहते हैं, कि आप सब को मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये ही नियुक्त किया गया है । इस संसार में सभी स्थानों में सभी मनुष्यों ने गुनाह (पाप) किया है (निष्पाप कोई नहीं है)। अब तारतम ज्ञान के द्वारा सारी दुनिया में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश कर दो ।

खुदा जिनों के वास्ते, यों कर कहे हुकम ।
रसूल भेजा जिनों वास्ते, सो देखो सिफ़त तुम ।।७।।

परब्रह्म अक्षरातीत ने जिन ब्रह्मात्माओं के लिये इस प्रकार आदेश देते हैं और जिनके लिये विशेष रूप से संदेशवाहक भेजे हैं, उन ब्रह्मात्माओं की महिमा का विचार कीजिये ।

पैदा किए चौदे तबक, वास्ते रसूल अलेहसलाम ।
सो रसूल भेजा इनों वास्ते, जिन जाहिर किया इसलाम ।।८।।

यह चौदह लोकों का संसार रसूल अलैहिस्सलाम के लिये ही बनाया गया है और उन रसूल स.अ.व. को मोमिनों (ब्रह्मात्माओ) के लिये ही भेजा गया है, जिन्होने संसार में आकर दीने इस्लाम (शांति का सत्य मार्ग) प्रकट किया है ।

इन मोमिनों के वास्ते, सरत करी सुभान ।
कजा करूं रसूल जुबान पर, सो होसी सब पेहेचान ।।९।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही प्रियतम अक्षरातीत ने कुर्आन पाक में एक निश्चित समय का वायदा किया है, कि रसूल साहब के मुखारविंद से जगत् का न्याय करूंगा, तब सबको सत्य की पहचान हो जायेगी ।

वास्ते इन मोमिनों के, लिखी रमूजें सब हक़ ।
सो कलाम अल्ला के माएने, सब भानी सुभे शक ।।१०।।

उन ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के लिये ही हक़ तआला (सत्य परब्रह्म) ने कुर्आन ए पाक में संकेतों में सत्यज्ञान लिखे हैं । अब कलाम अल्लाह (कुर्आन) के कथनों का वास्तविक आशय प्रकट करके सबके संशय दूर कर दिये हैं ।

वास्ते इन मोमिन, उतरी किताबें चार।
तौरेत अंजीर जंबूर, चौथी लिखा फिरकान सार ।।११।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही निम्न चारों ग्रंथ अवतरित हुये हैं - तौरेत, अंजील (बाईबल), जंबूर और चौथा कुर्आन। इनमें से कुर्आन अन्य तीनो ग्रंथों का सार है ।

वास्ते इन मोमिन के, खोले वेद कतेब सब ।
माएने जब जाहिर भए, सरत क्यामत उठाई तब ।।१२।।

इन्हीं ब्रह्मात्माओं के लिये ही वेद व कतेब ग्रंथों के गुह्य रहस्य स्पष्ट किये गये हैं। जब उनके गुह्य अर्थ जाहिर हो जायेंगे, तब कियामत का समय आ जायेगा अर्थात् मूल मिलावे में ब्रह्मप्रियाओं के जागृत होने का समय आ जायेगा।

सातों निसान जाहिर किए, वास्ते इन मोमिन ।
सो सब फिरकों ने देखिया, हुए चौदे तबक रोशन ।।१३।।

इन मोमिनों के लिये ही कियामत की सातों निशानियां प्रकट की गयी हैं, तारतम ज्ञान के प्रकाश में उन निशानियों को घटित होते सभी धर्मावलम्बियों ने देखा । इस प्रकार चौदह लोकों में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश फैल गया ।

दाभा हुई जाहिर, लगे देखने सब ।
सूरज बिना रोशनी का, उगा मगरब देख्या तब ॥१४॥

प्रथम निशानी के रूप में दाब्बतुलअर्ज नाम का जानवर दुनिया में प्रकट हो गया, जो कि इंसानों के अंदर हैवानी फितरत (पाश्विकता) का प्रतीक है । सबने उसे पहचान लिया । पश्चिम (अरब) के लोगों के हृदय में बिना रोशनी (अज्ञानता) का सूर्य उदय हुआ है । उसे भी सब लोगों ने पहचान लिया है ।

वास्ते इन मोमिन के, दज्जाले किया ज़ोर ।
हज़रत ईसा उतरे, हुई लड़ाई जाहिर सब ठौर ॥१५॥

इन मोमिनों को भ्रमित करने के लिये ही कलि-दज्जाल प्रकट होकर अपना जोर लगा रहा है । हज़रत ईसा भी चौथे आसमान लाहूत से संसार में पुनः प्रकट हुये हैं, जो कि सत्य ज्ञान की स्थापना के लिये अज्ञान रूपी दज्जाल के साथ जगह जगह युद्ध करते दिखायी दे रहे हैं ।

उतरे आजूज माजूज, हुए जमा सब पेगंबर ।
सरत साएत क्यामत की, हुई जाहिर सब ऊपर ॥१६॥

याजूज-माजूज, जो कि दिन-रात के रूप में दुनिया के काल हैं, वे भी जाहिर हो गये हैं । भविष्यवाणी के अनुसार सभी पैगम्बर भी एकत्रित हो गये हैं, तथा सबसे महत्त्वपूर्ण कियामत की पाक-मुकद्दस घड़ी जाहिर हो गयी है ।

छे दिन लिखे क़ुरान में, वास्ते इन मोमिन ।
एक दिन आए हूद घर, चढ़े किस्ती दूसरे दिन ॥१७॥

क़ुर्आन ए पाक में ६ दिनों का सांकेतिक वर्णन आता है, वह भी उन ब्रह्मात्माओं के लिये किया गया है । पहला दिन हूद नबी (नंद बाबा) का है, जब ब्रजमण्डल में सभी आत्माएं आयी थीं। दूसरा दिन रासलीला का है, जब योगमाया रूपी किश्ती पर चढ़े थे ।

कह्या दिन जो तीसरा, आए रसूल अलेहसलाम ।
चौथे दिन रूह अल्ला, लाए किल्ली अल्ला कलाम ॥१८॥

तीसरा दिन अरब का कहा गया है, जहां रसूल अलैहिस्सलाम आये थे ।

चौथा दिन रूहअल्ला श्यामा जी का है, जो कि अल्लाह कलाम (कुर्आन) व अन्य धर्मग्रंथों के रहस्यों को स्पष्ट करने की चाबी तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) लेकर श्री देवचंद्र जी (बुद्धावतार) के रूप में पधारीं ।

पांचमा दिन इमाम का, वास्ते जमा करने मोमिन ।
छठा दिन जुमे का, हुआ सब जहान में रोशन ।।१९।।

पांचवा दिन इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां (बुद्धनिष्कलंक स्वरूप) का है, जो कि समस्त मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को जागृत करने के लिये आये हैं । छठा जुम्मे का दिन मोमिनों का है, जिसमें मोमिन (ब्रह्ममुनि) सारे संसार में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश फैला देंगे ।

वास्ते सब मोमिन के, किया हक़ सुभान हुकम ।
जो कोई ल्यावे इमान, ताए भिस्त दाखल करो तुम ।।२०।।

समस्त ब्रह्मात्माओं के लिये ही प्रियतम अक्षरातीत ने मुहम्मद साहब को ऐसा हुक्म किया, कि जो कोई भी एक पूर्ण ब्रह्म परमात्मा पर विश्वास लाये, उसे आप बहिश्तों (अखण्ड मुक्ति स्थानों) में प्रवेश दे दो ।

खोले द्वार भिस्त के, रसूल अलेहसलाम ।
वास्ते इन मोमिन के, किए सिफाएत के काम ।।२१।।

रसूल अलैहिस्सलाम ने (हकी सूरत के रूप में) सिफायत करते हुए (तारतम ज्ञान देकर), मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये बहिश्तों (परमधाम के अखण्ड सुखों) के द्वार खोल दिये हैं ।

मिले तीन सौ बारे औलिए, करी मुलाकात रसूल सो जब ।
न्यामत अरस अज़ीम की, सौंप दई सब तब ।।२२।।

रसूल साहब (मल्की स्वरूप श्री देवचंद्र जी) से तीन सौ बारह ब्रह्म सृष्टियां (औलिये) आकर मिलीं, तब उन्होंने उन सब को दिव्य परमधाम की सारी नैमत (निधि-ज्ञान) सौंप दिया ।

वास्ते इन मोमिन के, खोले अरस अज़ीम के द्वार ।
अरस किल्ली जाहिर करी, करें जुगल सरूप बिहार ।।२३।।

उन ब्रह्मात्माओं के लिये ही प्रियतम अक्षरातीत ने दिव्य परमधाम का ज्ञान दुनिया में प्रकट किया हैं, कि किस प्रकार वहां युगल स्वरूप श्री राज

श्यामा जी सखियों के साथ लीला विहार करते हैं । इस प्रकार तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम के अखण्ड सुखों के दरवाजे खोल दिये हैं ।

तो अरस अज़ीम की, अन्दर बाहिर सब ठौर ।
करी हक़ सुभान जाहिर, बिन मोमिन ना देखे कोई और ।।२४।।

इस कारण परमधाम श्री रंगमहल के अंदर व बाहर के सभी दिव्य लीला स्थलों की शोभा का वर्णन प्रियतम परब्रह्म ने करवा दिया है, उसे ब्रह्मात्माओं के सिवाय अन्य कोई नहीं देख सकता ।

एक हीरे का अरस है, एक रस धात चेतन ।
तहाँ हक़ सुभान बैठत, संग ख़ासल ख़ास रूहन ।।२५।।

संपूर्ण परमधाम एक ही नूरी रस से परिपूर्ण चेतन हीरे का है । उसमें अनेक रंगों के जवाहरात व धातु दृष्टिगोचर होते हैं । वहां के नूरी चबूतरों पर प्रियतम अक्षरातीत अपनी ख़ासुल ख़ास ब्रह्मप्रियाओं के साथ विराजमान होते हैं।

आगे हर हवेली के, दाएं बाएं चबूतरे दोए ।
जित रूहें भराए बैठत, बिना मोमिन पोहोंचे ना कोए ।।२६।।

श्री रंगमहल के भीतर आई प्रत्येक हवेली के चारों दिशा में चार मुख्य द्वार आये हैं, जिनके आगे दाएं बाएं दो-दो चबूतरे हैं, जहां रूहें मिलकर बैठती हैं । यहाँ मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के सिवाय कोई दूसरा नहीं पहुँच सकता है।

नूर नूर सो लड़त, किरना करत झलकार ।
रूहें हादी हक़ सों, ए चबूतरे करें बिहार ।।२७।।

नूरी चबूतरों की किरणें चारों तरफ नूरी झलकार कर रही हैं। उनका नूर आपस में टकराते हुए जंग करता प्रतीत होता है। इन चबूतरों पर सखियां श्रीराजश्यामाजी के साथ आनंदमयी लीला करती हैं।

क्यूं कहूं सुंदरता सरूप की, क्यूं कहूं मीठे नैन ।
क्यूं कहूं इन मेहेर की, रस भरे काढ़े बैन ।।२८।।

युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी की शोभा-सुन्दरता का वर्णन कैसे करें? उनके मीठे रसिक नयन कमलों की शोभा कैसे कहूँ ? श्री राज जी सखियों से प्रेम रस से भीगे वचन अपने मुख से बोलते हैं, उस लाड प्यार का कैसे वर्णन करें ?

दोऊ जोड़े इन चबूतरे, जब बैठे जुगल किशोर ।
ठाढ़ी रूहें मिल बातां करें, इत प्यार बतावत ज़ोर ।।२९।।

हवेलियों के मुख्य द्वार के दाएँ बाएँ आए नूरी, चेतन और सुगंधी से महकते इन चबूतरों पर जब युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी विराजते हैं, तो सखियाँ सामने खड़ी होकर बड़े उमंग और उल्लास से बातें करती हैं और अपने प्रेम की श्रेष्ठता दर्शाती हैं।

कोई आवे गलियों में दौड़त, आई ठाढ़ी हक़ पास ।
इन को राज रिझाए बिना, और ना रहे आश ।।३०।।

कोई सखी रंगमहल की नूरी गलियों में दौड़ती हुई आती है और प्रियतम श्री राज जी के पास खड़ी हो जाती है । इन ब्रह्म अँगनाओं के हृदय में श्रीराजजी को रिझाने के सिवा अन्य कोई आशा नहीं रहती है।

एक बात करे राज सों, इत दूजी पावत सुख ।
कोई ढीग ठाढ़ी रहे, देखे नूर जमाल का मुख ।।३१।।

जब कोई एक ब्रह्मप्रियां श्री राज जी से बात करती है, तो दूसरी ब्रह्मप्रियाओं को भी सुख का अनुभव होता है। कोई सखी श्री राज जी के पास खड़ी होकर उनका सुंदर मुखारबिंद निहारते रहती है ।

एक आगे एक रेहे के, आन बातां लेत छिनाए ।
रीस ना उपजे काहूं को, सब हेत इशक सुखदाए ।।३२।।

कभी एक सखी दूसरी सखी से आगे होकर, प्रियतम श्री राज जी से बातें करने लगती हैं । किंतु किसी को भी गुस्सा नहीं आता । सभी सखियाँ आपस में प्रेम, हित व सुख देने की भावना रखती हैं।

गलियां अरस अज़ीम की, कहे हीरे के चबूतर ।
सो हक़ सुभान जाहिर किए, इन मोमिनों की खातर ।।३३।।

अर्श अज़ीम (परमधाम) की दिव्य गलियों और हीरे के चबूतरों की अपार शोभा को हक़ सुब्हान श्री राज जी ने मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये ही दुनिया में जाहिर किया है।

यों कई सुख बका ठौर के, हिसाब न आवे पार ।
ए मेहेर मोमिनों पर, सो जानत परवरदिगार ।।३४।।

इस प्रकार से अखण्ड परमधाम में कई सुख हैं, जिनका कोई शुमार (सीमा/संख्या) नहीं है । उसकी शोभा का वर्णन कर ब्रह्मात्माओं पर धणी अपार कृपा कर रहे हैं, जिसे श्री राज जी ही जानते हैं ।

कहूं पौरियों आगू चबूतरे, हर हवेली द्वार चार ।
दो दो हर द्वार आगे, यूं आठो भए सुमार ।।३५।।

प्रत्येक हवेली की चारों दिशाओं के बड़े दरवाज़ों के सामने (दायें–बायें) दो-दो चबूतरे आएँ हैं। इस प्रकार एक हवेली में कुल आठ चबूतरे हुए ।

ए भी भोम नव को, हिसाब देखो तुम ।
तुम को इत देखावत, हक़ सुभान का हुकम ।।३६।।

नौ भोम की हवेलियों के चबूतरों की गणना देखिए । हक़ सुब्हान श्री राज जी का हुक्म, आपको यह दिखा रहा है ।

सात हज़ार तीन सौ बानवे, ए भोम एक के चबूतर ।
यूं ही जमा नव भोम की, गिन जमा करो खातर ।।३७।।

रंगमहल के अंदर प्रथम भोम में आये चौरस हवेलियों के प्रथम फिरावे में कुल ७,३९२ (२३१x४=९२४, ९२४x८=७३९२) चबूतरे आएँ हैं । ऐसे ही नौ भोमों में चबूतरे हैं, उन सब की गणना कीजिये।

छासठ हज़ार पांच सौ, अट्ठाइस कहे उपर ।
तामे भुलवनी भोम के, सोले सोले जुदे यूं कर ।।३८।।

इस प्रकार नौ भोम के कुल ६६,५२८(७३९२x९) चबूतरे होते हैं । उसमें से दूजी भोम में सोलह चौरस हवेलियों की जगह में भुलवनी के मंदिर आने से प्रत्येक हवेली के ८–८ चबूतरे कम हो जाते हैं।

एक सौ अट्ठाइस आठ भोम के, भुलवनी के एक सौ चौवालीस ।
सब जमा दो सौ बहत्तर, पावें हक़ हादी बकसीस ।।३९।।

अन्य आठ भोमों के १२८ चबूतरे कम होते हैं तथा भुलवनी के (दूजी) भोम के १४४ चबूतरे कम होते हैं। कुल २७२ (१२८+१४४) चबूतरे कम हो गये, जिन्हें श्री राज जी की कृपा से ही जाना जा सकता है ।

रहे छाछठ हज़ार, उपर दो सौ छप्पन ।
ए बका बकसीस मोमिन को, किये सिफाएत दिल रोशन ।।४०।।

शेष चबूतरे ६६,२५६ बचते हैं। मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) पर श्रीराजजी ने अपार कृपा करते हुए उनके दिलों को परमधाम के ज्ञान से रोशन किया है।

ए केहेनी अरस अज़ीम की, कहूं जाको वार ना पार ।
ए तो जुगल सरूप का, जित नित होत बिहार ।।४१।।

यह वर्णन दिव्य परमधाम का है। जिसकी शोभा का कोई पारावार (अंत) नहीं है। यह तो युगल स्वरूप श्री राजश्यामाजी के अखण्ड लीला विहार की स्थली है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए है अपार ठौर ।
ए सब जानत हक़ हादी, तुम बिना न समझे और ।।४२।।

श्री महामति जी कह रहे हैं, कि हे सुन्दर साथ जी ! परमधाम की शोभा अपरम्पार है । जिसे श्री राज जी और श्री श्यामा जी जानते हैं और आप ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं समझ सकता हैं ।

प्रकरण-१३, चौपाई-५६७

चौक रसोई मूल मिलावे लों

इस प्रकरण में परमधाम के मध्य स्थित श्री रंगमहल का वर्णन है , जहां प्रियतम श्री राज जी अपनी आनंद स्वरूपा श्री श्यामा जी और ब्रह्मात्माओं के साथ रहते हैं। यहाँ रंगमहल के मुख्य द्वार के सामने आए २८ स्तम्भ के चौक और रसोई की हवेली का अत्यंत ही मनोहारी वर्णन हुआ है । रंगमहल के अंदर आए नूरमयी चौक, हवेलियों, मंदिर, स्तम्भ और गलियों को ब्रह्मसृष्टि ही देख सकती है । शास्त्रों में जीव सृष्टि, ईश्वरी सृष्टि और ब्रह्मसृष्टि - इन तीन सृष्टियों का वर्णन है। ब्रह्म सृष्टि परमधाम से आई है । इनके लिए ही अक्षरातीत श्री राज जी ने परमधाम का बारीकी से वर्णन करवाया है।

शब्दातीत को शबद में, केहेना क्यों कर होए ।
अक्षर ब्रह्म के ठौर को, पोहोंचत नाही कोए ।।१।।

शब्दातीत परमधाम की शोभा का वर्णन शब्दों में किस प्रकार किया जा सकता है। इस नश्वर जगत् के शब्द अक्षरधाम की शोभा को भी नहीं

पहुंच पाते हैं ।

एह तो अक्षरातीत की, जो लीला नित विहार ।
तिन ठौर की क्यों कहूं, मन बुध सुपन आकार ।।२।।

यह तो अक्षरातीत परब्रह्म की दिव्य प्रेम व आनंद से परिपूर्ण नित्य लीलाएं हैं । इस स्वाप्निक नश्वर देह की बुद्धि व मन के द्वारा, उस दिव्य अनादि परमधाम की शोभा का वर्णन किस प्रकार किया जाये ?

नेत नेत कहे निगम फिरे, फिरे त्रैगुन बताई ठौर ।
उतरते गाए देवता को, बोझ दिया करम पर ज़ोर ।।३।।

वेद उपनिषद आदि धर्मग्रंथ भी परमात्मा के विषय में खोजते खोजते हार गये और 'नेति - नेति' कह कर वापस लौट आये । वेदों ने त्रिगुणात्मक जगत् के कण कण में ही परमात्मा का स्वरूप बता दिया । संसार में उतरते हुए वे देवताओं की महिमा का गान करने लगे और यज्ञ आदि कर्मों पर ज्यादा महत्त्व दे दिया ।

सुपन जीव लगे तिन को, ले साख वेद वचन ।
कोई नवधा करने लगे, कोई लगे जोगारम्भ सुंन ।।४।।

स्वप्न सृष्टि के जीव वेदों के वचनों की साक्षी लेकर कर्मकाण्ड में लग गये । उनमें से कोई नवधा भक्ति करने लगे, तो कोई योग-साधना के द्वारा शून्य-निराकार का ध्यान करने लगे ।

आगे सबद ना निकसे, मोह न उलंघों जाए ।
आगे त्रैगुन को गम नहीं, अक्षर लों ना पोहोंचाए ।।५।।

निराकार से आगे का ज्ञान कोई भी नहीं बता सका, ना ही कोई मोह तत्व (नींद) को पार कर सका । निराकार के आगे तो त्रिदेवा (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की भी पहुंच नहीं है । वे तो अक्षरब्रह्म तक भी नहीं पहुंच पाते हैं ।

तन्मात्रा त्रैगुन की, तिनसे भई जीव सृष्ट ।
सो क्यों कर पोहोंचहीं, जिनको बैकुण्ठ मोह अहं दृष्ट ।।६।।

त्रिगुण (सत्, रज, तम) की तन्मात्राओं (शब्द, रूप, रस, स्पर्श, गंध) से जीव सृष्टि की उत्पत्ति हुयी है । अतः वे निराकार से पार किस तरह पहुंच सकते हैं, जिनकी दृष्टि मोह (नींद - निराकार), अहंकार (आदिनारायण) व

वैकुण्ठ तक ही सीमित रहती है ?

वासना पांच अक्षर की, तिन के सबद निकसे मोह पार ।
पर ठौर ना कहे अक्षर को, तो क्यों पोहोंचे नित विहार ।।७।।

जो अक्षर ब्रह्म की पंचवासनाएं (सनकादिक, महाविष्णु, शिव, शुकदेव, कबीर) हैं, उनके शब्द (ज्ञान) निराकार से परे के हैं । परंतु जब वे अक्षर धाम का वर्णन नहीं कर सके, तो परमधाम के नित्य लीला विहार तक किस प्रकार पहुंच सकते हैं ?

शास्त्रों तीन सृष्ट कही, एक जीव ईश्वरी ब्रह्म ।
सब दे साहेदी अपने ठौर की, तैसी निर्मल होत आतम ।।८।।

शास्त्रों में तीन प्रकार की सृष्टि का वर्णन किया गया है । पहली जीव सृष्टि, दूसरी ईश्वरी सृष्टि और तीसरी ब्रह्म सृष्टि । सभी अपने अपने स्थान की साक्षी देते हैं और उसी (सृष्टि-अंकुर) के अनुसार उनकी आत्मा भी उतनी निर्मल होती है ।

जीव सृष्ट सुपन की, ए जो उत्पन्न चौदे लोक ।
ए देखने मात्र कही, और जागे पीछे सब फोक ।।९।।

ये जो जीव सृष्टि और चौदह लोक उत्पन्न हुए हैं, यह सभी स्वप्न के हैं और इनका अस्तित्व मात्र देखने में है, वास्तव में नहीं । जिस प्रकार स्वप्न से जागने के पश्चात् स्वप्न का अस्तित्व नहीं रहता, उसी प्रकार परमधाम में जागृत होने के बाद यह सब कुछ अस्तित्वहीन हो जाता है ।

वासना पांच अक्षर की, सो सृष्ट ईश्वरी जान ।
और आई कुमारिका, सो ब्रह्म सृष्ट संग पेहेचान ।।१०।।

जो अक्षर की पंचवासनायें (सनकादिक, महाविष्णु, शिव, शुकदेव, कबीर) हैं, उन्हें भी आप ईश्वरी सृष्टि जानिये और ब्रजमण्डल में ब्रह्मात्माओं के साथ जो कुमारिका (कुंवारी) सखियां थीं, वे भी ईश्वरी सृष्टि थे ।

ब्रह्म सनमंधी ब्रह्म सृष्ट, आई अक्षरातीत श्री धाम ।
सब पैदा किया तिन वास्ते, सो करे पूरन मनोरथ सब काम ।।११।।

अक्षरातीत परब्रह्म की अंगरूपा आत्माएं - ब्रह्म सृष्टि अक्षर से भी परे परमधाम से आयी हैं । यह सारा संसार उन्हीं के लिये उत्पन्न किया गया है ।

प्रियतम श्री राज जी इस संसार रूपी खेल के माध्यम से उनकी सारी इच्छाएं पूर्ण कर रहे हैं ।

जीव सृष्ट बैकुण्ठ लों, कोई अहं सुन निराकार ।
ईश्वरी पोहोंचे अक्षर लों, ब्रह्म सृष्ट अक्षर के पार ।।१२।।

मोह - नींद से उत्पन्न जीव सृष्टि वैकुण्ठ तक पहुंच पाती है। कोई कोई आदिनारायण, शून्य - निराकार तक पहुंच जाते हैं । ईश्वरी सृष्टि अक्षर तक पहुंचती है और ब्रह्म सृष्टि अक्षर से भी परे दिव्य परमधाम में विराजमान है।

सो लीला अक्षरातीत की, श्री धाम अन्दर सब ठौर ।
सो अपनी आप जाहिर करें, बिना इनों ना समझें और ।।१३।।

उस श्री धाम रंगमहल के अंदर सभी जगह अक्षरातीत परब्रह्म की प्रेम व आनंदमयी लीलाएं होती हैं । उसे उस लीला में रमण करने वाली ब्रह्मात्माएं ही स्वयं प्रकट करेंगी । उनके सिवा अन्य कोई उस दिव्य लीला को समझ नहीं सकता ।

याकी वेद कतेब दोए, साख देत सब कोए ।
सब भजें ब्रह्म सृष्ट को, करे अपना इष्ट जो सोए ।।१४।।

इस बात की साक्षी वेद-कतेब दोनों ग्रंथों सहित समस्त धर्मग्रंथ देते हैं । सभी ब्रह्म सृष्टियों को ही अपना इष्ट मानकर उपासना करेंगे ।

आया पैगंमर आखरी, वास्ते इन मोमिन ।
दे साहेदी सबन को, सब जहान करी रोशन ।।१५।।

आखिरी पैगम्बर मुहम्मद स.अ.व. भी इन्हीं ब्रह्मात्माओं के लिये आये तथा कुर्आन ए पाक में एक परब्रह्म और उनकी आत्माओं की साक्षियां लिखकर, सारे संसार में उनकी महिमा को प्रकट किया ।

साल अग्यारे सौ आगे ही, करी पुकार सब ठौर ।
आखर मोमिन आवेंगे, आए इत ऐसा किया शोर ।।१६।।

मुहम्मद साहब ने ग्यारह सौ साल पहले से ही सब लोगों से पुकार पुकार कर कहा, कि आखिरत के समय वे मेरे भाई मोमिन (ब्रह्मात्माएं) दुनिया में आयेंगे।

मेरी होवें तीनो सूरतें, एक ल्याए अल्ला कलाम ।
एक किल्ली ले उतरे, आई एक खोलने के काम ।।१७।।

मेरी तीन सूरतें होंगी (अर्थात् मैं कुल तीन बार दुनिया में तन धारण करूंगा) । उसमें से पहली बशरी सूरत कलाम अल्ला कुर्आन लेकर आयी है । दूसरी मलकी सूरत कुर्आन के रहस्यों को खोलने की चाबी (तारतम ज्ञान) लेकर आयी है। तथा तीसरी हकी सूरत तारतम ज्ञान के द्वारा कुर्आन सहित समस्त धर्मग्रंथों के रहस्य खोलने के लिये आयी है ।

सो सब वास्ते मोमिन के, मुद्दा दिया इनों के हाथ ।
जाको हक़ सुभान कहत हैं, मैं रहूं तुमारे साथ ।।१८।।

यह सब कुछ ब्रह्मात्माओं के लिये ही हुआ है, इन्हीं के हाथ में सारा अधिकार दिया गया है । जिनको प्रियतम परब्रह्म कहते हैं, कि मैं सदा तुम्हारे साथ रहूंगा ।

तो अरस कह्या दिल मोमिन, हकें धरे कदम जो दोए ।
तो अरस अज़ीम की ठौर, जाहिर करत सब सोए ।।१९।।

इसी कारण ब्रह्मात्माओं के दिल को परमात्मा का धाम कहा गया है, क्योंकि उनके दिल में परब्रह्म स्वामी ने अपने चरण रख दिये हैं । इसी कारण वे परमधाम २५ पक्ष की सारी शोभा का वर्णन कर रहे हैं ।

जिन की फिकर दिल में, करे महंमद अलेह सलाम ।
ए सब में जाहिर किया, घर मोमिनों का इसलाम ।।२०।।

जिन मोमिन भाईयों (ब्रह्मात्माओं) की चिंता मुहम्मद अलैहिस्सलाम अपने दिल में करते हैं, अब उनके दिव्य प्रेम, आनंद व शांति का धाम-परमधाम जाहिर किया जा रहा है ।

हक़ के दिल मोमिन बसे, मोमिनों दिल सूरत हक़ ।
ए अरस परस अरश में, रहे सूरत एकै इशक ।।२१।।

प्रियतम श्री राज जी के दिल में ब्रह्मप्रियाएं बसी हैं और ब्रह्मप्रियाओं के दिल में राज जी का स्वरूप बसा हुआ रहता है । इस प्रकार परमधाम में वे परस्पर एक दूसरे के दिल में बसे हुए हैं । सभी का स्वरूप एकमात्र इश्क से ही ओतप्रोत रहता है ।

हक़ आशक रहें रूहों का, रूहें आशक रहें हक़ ।
रबद अरस अज़ीम में, इन भानी सारी शक ।।२२।।

उस दिव्य परमधाम में प्रियतम श्री राज जी ब्रह्मप्रियाओं के आशिक (प्रेमी) बनकर उन्हें रिझाते हैं, तो सखियां भी प्रियतम श्री राज को आशिक बनकर रिझाती हैं । इसी कारण परमधाम में इश्क वार्तालाप हुआ कि सबसे ज्यादा प्यार कौन करता है ? अब तारतम ज्ञान से सारा संशय दूर हो गया है ।

तो बका ठौर कायम की, खोले अरश अज़ीम के द्वार ।
जित हक़ हादी रूहें, नित करत बिहार ।।२३।।

इसी कारण दिव्य अनादि परमधाम के अखण्ड सुखों का द्वार तारतम ज्ञान के द्वारा खोल दिया गया है, जहां श्री राजश्यामा जी एवं सखियां नित्य ही प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं करते हैं ।

एक हीरे का अरश है, जाकी हांस दोए सौ एक ।
ऐ हिसाब से बाहिर, कई हवेली मंदिर चौक अनेक ।।२४।।

परमधाम (रंगमहल) एक ही नूरमयी हीरे का है, जिसमें २०१ हांस हैं। इनमें आई नूरी हवेलियों, मंदिरों और चौकों का कोई शुमार (हिसाब, सीमा) नहीं है

कहूं रसोई के चौक की, देखो विवेक इस ठाम ।
अस्सी मंदिर की बाखर, जित दस मंदिर सेत स्याम ।।२५।।

२८ स्तम्भ के चौक के सामने पहली चौरस हवेली रसोई की है। इसकी शोभा विवेकपूर्वक देखिये। यह चौक अस्सी मंदिर का है (चारों दिशा में २०–२० मंदिर आये हैं)। हवेली की उत्तर दिशा में (बड़े दरवाजे व ईशान कोण के मंदिर के मध्य) श्याम व श्वेत रंग के मंदिर सहित कुल दस मंदिर आये हैं।

दस स्याम सेत मुक़ाबिल, दस के मेहेराबी द्वार ।
रहे इन के द्वार दिवाल में, ए मोमिन देखन हार ।।२६।।

उत्तर दिशा में आए श्याम श्वेत सहित दस मंदिरों के सामने हवेली की दक्षिण दिशा में भी दस मंदिर शोभित हैं । उत्तर और दक्षिण के बड़े दरवाजों के पश्चिम दिशा में दस-दस मंदिर की दहलानें हैं, जिनमें भीतरी तरफ दस–दस

महराबें हैं । तथा बाहिरी तरफ दीवार में दस-दस दरवाजे हैं, जिनकी शोभा मोमिन ही देखते हैं ।

पैठते इन चौक में, बड़ा कह्या जो द्वार ।
पांच बाए पांच दाहिने, दस द्वार मेहेराबी द्वार सुमार ।।२७।।

रसोई की हवेली में जब पूर्व दिशा से प्रवेश करते हैं, तो यहां बड़ा दरवाजा व इसके दायें–बायें के पांच–पांच मंदिरों की जगह में ग्यारह मंदिर की दहलान आयी है, जिसमें दस-दस स्तम्भों की दो हारें आयी हैं । दहलान के उत्तर-दक्षिण में पाँच-पाँच मंदिर शोभा ले रहे हैं ।

ए हार द्वार थम्भन की, ताके देहलान मेहेराबी द्वार ।
यों हार बीस मंदिर की, करें जुगल सरूप बिहार ।।२८।।

रसोई की हवेली की पूर्व दिशा में १०-१० स्तम्भों की दो हारें आने से दहलान की शोभा दिखाई दे रही है । दस मंदिर की देहेलान के दाएँ बाएँ पाँच पाँच मंदिर आने से बीस मंदिर हुए । यहां युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी प्रेम व आनंदपूर्वक लीला विहार करते हैं।

पेठत दाहिनी तरफ को, दस मंदिर स्याम सेत ।
ता बीच एक मंदिर भर सीढ़ियां, नूर रोशन झलकत ।।२९।।

पूर्व के दहलानों से जब हवेली में प्रवेश करते हैं, तब दाहिने तरफ (दक्षिण में) श्याम-श्वेत मंदिरों सहित दस मंदिर आएँ हैं । श्याम और श्वेत मंदिर के मध्य में एक मंदिर की जगह में सीढ़ियां हैं, जिनकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ झलकार कर रही है।

और कह्या ऐसी हार में, दस मंदिर की देहलान ।
तहां मेहेराबी थम्भ हैं, दस द्वार मेहेराब पेहेचान ।।३०।।

हवेली की दक्षिण दिशा में बड़े दरवाजे के पश्चिम की ओर दस मंदिर की जगह में दहलान की शोभा आयी है। दहलान में भीतरी ओर महराबों से युक्त स्तम्भों की हार है और बाहरी तरफ दस दरवाजों सहित अक्शी महराबों से युक्त नूरमयी दीवार की अद्‌भुत शोभा है।

पैठते बाँई तरफ दस, मंदिर सामे दस मंदिर ।
दस देहलान सामे देहलान द्वार, आओ मोमिन ताके अंदर ।।३१।।

रसोई की हवेली में पूर्व के दहलानों से प्रवेश करते समय बायीं तरफ (दक्षिण दिशा में) उत्तर दिशा के दस मंदिरों के सामने दस मंदिर हैं और उत्तर दिशा की दस मंदिर की दहलान के सामने दक्षिण दिशा में भी महराबों से युक्त दस मंदिर की दहलान शोभा ले रही है। हे सुंदरसाथजी! इस अद्‌भुत शोभा से परिपूर्ण हवेली के अंदर आप आइये।

पैठते सामने हार जो, तहां बीस कहे मेहेराब मंदिर ।
बीच बड़ा हैं द्वारने, इत रूहें रहे अंदर ।।३२।।

रसोई की हवेली में पूर्व के दहलानों से प्रवेश करते समय सामने पश्चिम दिशा में मध्य में बड़ा दरवाजा है, जिसके दायें–बायें दस–दस (कुल बीस) मंदिरों की शोभा आयी है। यहां मंदिरों के अंदर ब्रह्मप्रियाएं निवास करती हैं।

सब मंदिर कहे पचास, और तीस की कही देहलान ।
ता के द्वार मेहेराबी थम्भ बीच, छेहत्तर गिनती पेहेचान ।।३३।।

इस प्रकार रसोई की हवेली में कुल पचास मंदिरों की शोभा है। और कुल तीस मंदिरों की जगह में दहलान की शोभा आयी है। इन मंदिरों व दहलानों के भीतरी तरफ ७६ स्तम्भों की एक हार है, जिसमें ७६ महराबों की अत्यंत सुंदर शोभा आयी है।

और सौ थंभ गृद हवेली के, यूं हर एक चौक पेहेचान ।
नव भोम उपरा उपर, सब एकै रस जान ।।३४।।

तथा हवेली की भीतरी तरफ घेर कर सौ स्तम्भों की एक हार है। सभी चौरस हवेलियों में इसी प्रकार स्तम्भों की हारों की शोभा आयी है। नौ भोमों तक एक के ऊपर एक इसी प्रकार एक समान शोभा आयी है। (अन्य चौरस हवेलियों में दहलानें व श्याम–श्वेत मंदिर नहीं आये हैं) ।

चार मंदिर चार कोने के, तामें एक सीढ़ी का होए ।
सो मोमिन विचार करते, पावत रस स्वाद सब कोए ।।३५।।

हर हवेली के चारों कोनों में जो चार मंदिर हैं, उनमें एक मंदिर सीढ़ी का है । इसका चिंतन करते हुए ब्रह्मात्माएं परमधाम का अखण्ड आनंद प्राप्त करती हैं।

एक चौक छोटा दरवाजे का, लम्बाई बारे की होए ।
चौड़ाई ताकी सात की, अट्ठाईस थम्भ कहे सोए ।।३६।।

धाम दरवाजे के ठीक सामने एक चौक है, जिसे २८ स्तम्भ का चौक कहा जाता है। इसमें दस स्तम्भ पूर्व में और दस स्तम्भ पश्चिम में आए हैं तथा चार–चार स्तम्भ उत्तर–दक्षिण में आये हैं। इस चौक की लम्बाई दस मंदिर की तथा चौड़ाई पांच मंदिर की है। इस चौक के चारों तरफ एक मंदिर की परिक्रमा है, जिसे मिलाकर इस चौक की लम्बाई १२ मंदिर की व चौड़ाई ७ मंदिर की हो जाती है।

दूसरा चौक रसोई का, तीन आगे चौक और ।
छठा मूल मिलावे का, हक़ हादी रूहें बैठी जिन ठौर ।।३७।।

२८ स्तम्भ के चौक के पश्चात् पश्चिम दिशा में दूसरा चौक रसोई की हवेली का है। इसके पश्चात् चौरस हवेलियों के तीन चौक और हैं। फिर छठा चौक मूलमिलावे का है, जहां श्री राजश्यामा जी व सखियां विराजमान हैं।

दोए हार कांगरन की, हर मंदिरों गृदवाए ।
एक का मुंह ऊपर से, तले ऊपर पोहोंचा आए ।।३८।।

प्रत्येक मंदिर की दीवालों में ऊपर कांगरी की दो हारें शोभा ले रही हैं। कांगरी की एक हार मंदिरों की संधि की जगह में ऊपर से नीचे उतरती हुई शोभा ले रही है और दूसरी हार नीचे से ऊपर जा रही है।

तले की कांगरी, ऊंचे मुख है ताए ।
आए फिरते दोरी बँध, सुख जुबां कह्यो ना जाए ।।३९।।

जो कांगरी नीचे से ऊपर की तरफ गयी है, उसका मुख ऊपर की ओर है। इस प्रकार सभी कांगरी एक सीध में आये हैं। यहां के सुखों का वर्णन इस झूठी जिह्वा से नहीं किया जा सकता है।

ए चौक भोम हीरे की, जित बीस मंदिर की दिवाल ।
सब थंभ मेहराव जवेर के, मंदिर पांच करत खुसाल ।।४०।।

चौरस हवेलियों की सम्पूर्ण शोभा एक ही हीरे की है, जिनकी प्रत्येक दिशा में बीस–बीस मंदिरों की नूरी दीवारें आयी हैं। इन मंदिरों के बाहरी तथा भीतरी तरफ स्तम्भ व महराबें जवाहरातों से सुसज्जित हैं। रसोई की

हवेली के पूर्व के दहलानों के दायें–बायें पांच–पांच मंदिर हैं, उनकी शोभा देखकर मन प्रसन्न हो जाता है।

चौक मंदिर अस्सी भर, थंभ दिवाल जवेर सब नूर ।
साम सामी किरना लरे, सो क्यों कर कहूं ज़हूर ।।४१।।

रसोई की हवेली में पचास मंदिर और तीस मंदिर की दहलान आने से अस्सी मंदिर का चौक कहलाता है। इसके स्तम्भ और दीवार सब नूरमयी जवाहरातों के हैं। आमने–सामने से आती हुईं नूरी किरणें आपस में टकराती हुई जंग करती प्रतीत होती हैं। यहां की नूरमयी अलौकिक शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

जब इन चौक बिछोने बैठत, हक़ हादी एक ठौर ।
गृद घेर रूहें बैठहीं, ए सुख शोभा अति ज़ोर ।।४२।।

जब कभी श्री राज श्यामा जी रसोई के चौक (चबूतरे) में बिछौने पर बैठते हैं तब सभी सखियाँ उन्हें घेर कर बैठती हैं । यह समय अत्यंत सुखकारी व शोभा से युक्त होता हैं ।

जब इत आरोगन को, बैठत हक़ सुभान ।
बातां करे चित चाहिती, सो मोमिन दिल पेहेचान ।।४३।।

जब रसोई की हवेली में प्रियतम अक्षरातीत आरोगने के लिये विराजमान होते हैं, तो वे सखियों से अपने हृदय के भाव अनुसार प्रेम भरी मीठी मीठी बातें करते हैं। इन अखण्ड सुखों को ब्रह्मप्रियाओं का हृदय ही पहचानता है।

रूह रूह सों मिलके, ढिग बातों पावत सुख ।
कोई श्रवना देत हैं, निरखे नूर जमाल का मुख ।।४४।।

सभी रूहें मिलकर प्रियतम श्रीराज जी की मीठी रसना के सुख लेती हैं। कोई सखी उनकी बातों को ध्यानपूर्वक सुन रही होती है तो कोई हक महबूब श्री राज के नूरी मुखारविंद की शोभा को एकटक निहार रही होती है।

हक़ काहूं की बातां सुने, किनको मिठी रसना कहें बोल ।
काहूं को रीझ रिझावत, कोई नाहीं सुख या तोल ।।४५।।

प्रेम के सागर श्री राज जी किसी सखी की बातें प्रेमपूर्वक सुनते हैं, तो किसी सखी को अपनी मीठी रसना से रस भरी मीठी बातें कहते हैं । किसी सखी

पर प्रसन्न होते हैं तो किसी सखी को रिझाते हैं । इन सुखों के तुल्य अन्य कोई भी सुख नहीं है ।

काहूं को मेहेर नज़र सो, अवलोके सामे मुख ।
काहूं को सेन से सेन समझावहीं, कोई अंग परस ले सुख ।।४६।।

किसी सखी को उसके मुख के सम्मुख आकर प्रेम भरी दृष्टि से निहारते हैं, तो किसी सखी को आंखों के इशारों ही इशारों से समझाते हैं । कोई सखी उनके अंगों को स्पर्श करके सुख लेती है ।

इत सुख आरोगन के, कई भांतो उपजत ।
हेत कर कर प्रीसत, सुख देत कई उत इत ।।४७।।

यहां (रसोई की हवेली में) आरोगते समय कई प्रकार के सुख उत्पन्न होते हैं । सखियाँ बहुत ही लाड़ प्यार से नाना प्रकार की भोजन सामग्री परोसती हैं । प्रियतम श्री राज जी सखियों को अनेक प्रकार के सुख प्रदान करते हैं ।

अधबीच आरोगते, मिठी बातां करें बनाए ।
ढिग बैठी मवसर पावत, देख सुख पावत सब ताए ।।४८।।

भोजन आरोगते समय बीच बीच में प्रियतम श्री राज जी सखियों से मीठी मीठी बातें करते हैं । नजदीक बैठी सखी, राजजी से प्रसाद प्राप्त करती है, तो एकदिली के कारण उसे देखने मात्र से ही बाकि सखियों को उतना ही सुख प्राप्त हो जाता है।

अंग सो अंग लगाए, सब बैठत एक ठौर ।
मानों सरूप एक हैं, साड़ी रंग जुदे भासत और ।।४९।।

सभी सखियां अंग से अंग लगा कर एक साथ इस प्रकार बैठती हैं मानों वे एक ही स्वरूप हों। उनकी साड़ियों के रंग भी अलग–अलग हैं।

भूखन उर पर झलकत, देखत साड़ी मिने सिनगार ।
इत जुगल सरूप को, क्यूं कहूं सुख विहार ।।५०।।

उनके वक्ष स्थल पर आभूषण (हार) झलकार कर रहे हैं, जो साड़ी के अंदर से दिखाई देते हैं । यहां होने वाली श्री राजश्यामा जी एवं सखियों की प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाओं के विषय में किस प्रकार वर्णन करूं ?

ए तो सरूप इशक के, भोम बिछौने इशक ।
बस्तर भूखन इशक के, हक़ दिल के माफक़ ।।५१।।

ये सभी स्वरूप (श्रीराजश्यामाजी, सखियां, पशु–पक्षी आदि) इश्क के ही स्वरूप हैं। यहाँ की धरती और बिछौने भी इश्क के ही हैं । सखियों के वस्त्राभूषण भी इश्क के ही हैं । सारी वस्तुएं श्री राज जी के दिल के अनुरूप हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, ए बीतक तुमारा सुख ।
छोड़ो सुपन स्वाद को, देखो नूर जमाल का मुख ।।५२।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथजी! ये संपूर्ण वृतांत आपके अपने सुखों के हैं । स्वप्न के झूठे मायावी सुखों को छोड़ कर अपने प्राण वल्लभ प्रियतम श्री राज जी के नूरी मुखारविंद की शोभा को निहारिये (अपने हृदय रूपी धाम में बसाईये)।

प्रकरण-१४, चौपाई-६१९

मूल मिलावे का प्रकरण

इस प्रकरण में ब्रह्म सृष्टियों के लिए स्वलीला अद्वैत दिव्य परमधाम की शोभा का वर्णन किया गया है । संसार रूपी खेल के कारण, महाकारण, इश्क–रब्द (प्रेम वार्तालाप), ब्रज–रास के पश्चात् तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का स्पष्टीकरण हुआ है। अक्षरातीत परब्रह्म रसूल बनकर आये और कहा कि मैं ग्यारहवी सदी में अपने भाईयों के साथ आऊंगा। जिस दिव्य परमधाम का ज्ञान त्रिदेवों और आदिनारायण को भी नहीं था, उस अखण्ड परमधाम की खिल्वत (अंतःपुर) और लीला विहार का वर्णन अपने हुक्म से करवा रहे हैं। श्री लालदास जी के माध्यम से श्रीराजजी अपनी आत्माओं को आह्वान कर रहे हैं कि निजघर की शोभा को अपने हृदय में ध ाारण करके अपने निजघर वापस आओ।

अब कहूं अद्वैत की, जो है ठौर वाहेदत ।
जिमी चेतन सब एक रस, हीरा सुपेत जित ।।१।।

अब उस स्वलीलाद्वैत (वहदत) परमधाम की दिव्य भूमिका का वर्णन कहने जा रहा हूं, जहां की धरती चेतन, एक रस तथा हीरे के समान उज्जवल है ।

अक्षर और अक्षरातीत, ए दोनों हैं एक ठौर ।
एकै जिमी अद्वैत की, इत द्वैत ना पाइए और ।।२।।

अक्षर ब्रह्म तथा अक्षरातीत परब्रह्म दोनों का स्वरूप एक ही परमधाम में है । यह परमधाम एक अद्वैत भूमिका है, जहां दो हो ही नहीं सकते । (स्वरूप एक होते हुए भी लीला की भिन्नता है) ।

ए दोनों सरूप एक हैं, लीला होत विध दोए ।
अखण्ड आनन्द सत चित, बाल लीला किशोर सोए ।।३।।

अक्षर ब्रह्म व अक्षरातीत परब्रह्म दोनों एक ही स्वरूप हैं, किंतु उनकी लीलाएं दो अलग अलग तरह की हैं । चिद्घन स्वरूप अक्षरातीत अखण्ड आनंद व प्रेम से परिपूर्ण किशोर लीलाएं करते हैं, जबकि सत् अंग अक्षर ब्रह्म, बाल स्वभाव के अनुसार प्राकृतिक जगत् की, उत्पत्ति व लय की लीला करते हैं ।

दोए न कहिए इन को, जित ठौर ब्रह्म अद्वैत ।
केहेनी सुपन आकार से, बैठे ठौर इत द्वैत ।।४।।

स्वलीला अद्वैत परमधाम में अक्षर व अक्षरातीत को दो नहीं कहा जा सकता । किंतु विवशता है, कि उस स्वलीला अद्वैत परमधाम का वर्णन, इस स्वाप्निक नश्वर तन से इस माया की द्वैत भूमिका में करना है ।

क्यों सक संसे मिटे, बिना जाग्रत बुध अवतार ।
सुंन निराकार निरंजन के, ता के पार के पार बिहार ।।५।।

जागृत बुद्धि के संसार में प्रकट हुये बिना, किस प्रकार दुनिया वालों का संशय मिट सकता है ? शून्य-निराकार, निरंजन के पार (बेहद मण्डल) के पार दिव्य परमधाम की शोभा व लीला विहार का वर्णन करना है ।

केहेनी है तिन ठौर की, बिना ब्रह्म सृष्ट क्यों होए ।
त्रैगुन महाविष्नु पे ईश्वर, इत गोते खात सब कोए ।।६।।

उस स्वलीलाद्वैत अखण्ड परमधाम की शोभा का वर्णन करना है, वह ब्रह्मसृष्टि के बिना किस प्रकार सम्भव है ? त्रिदेवा, महाविष्णु के ऊपर ईश्वर (निराकार) है, दुनिया के समस्त जीव इसी निराकार में गोते खाते रहते हैं ।

इन उपरान्त और के, नाम ना लिए जाए ।
माया मोह अहंकार में, सब द्वैत रहे उरझाए ।।७।।

त्रिदेवों के पश्चात् अन्य किसी का नाम लेने की आवश्यकता नहीं हैं (क्योंकि इस संसार में इनसे बड़ा कोई नहीं है) । द्वैत जगत् के समस्त प्राणी माया, मोह व अहंकार में उलझे हुये हैं ।

ए तो केहेनी अद्वैत की, जुबां मन बुध अद्वैत ।
इत कान अद्वैत चाहिए, सो क्यों होए बीच द्वैत ॥८॥

यह तो अद्वैत परमधाम का वर्णन करना है, उसके लिये जुबां, मन, बुद्धि भी अद्वैत की ही चाहिए । उसका श्रवण करने के लिये कान भी अद्वैत के चाहिए । वह इस द्वैत जगत् में किस प्रकार सम्भव हो सकता है ?

ए केहेने वाले और हैं, सो बैठे अद्वैत ठौर ।
सो बीतक अपनी कहें, बिना ब्रह्म सृष्ट ना समझे और ॥९॥

अद्वैत परमधाम का वर्णन करने वाले और ही हैं, जो दिव्य परमधाम के मूल मिलावे में ही विराजमान हैं । वे ही अपनी अखण्ड लीला का वर्णन इस द्वैत की भूमि में कर रहें हैं, जिसे ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त कोई दूसरा समझ ही नहीं सकता है ।

जब एह दुनिया पैदा नहीं, नहीं मोह अहं त्रैगुन ।
ना सुंन निराकर निरंजन, ना ईश्वर विष्णु महाविष्णु मन ॥१०॥

जब इस सृष्टि की रचना नहीं हुयी थी, ना ही मोह तत्त्व, अहंकार व तीन गुणों की उत्पत्ति हुयी थी, ना ही शून्य, निराकार, निरंजन (नींद) उत्पन्न हुआ था, ना ही ईश्वर, विष्णु या अक्षर के मन महाविष्णु की उत्पत्ति हुयी थी ।

तब जिमी वाहेदत में, हक़ हादी रूहें एक ठौर ।
तहां रबद इशक का, रहत हमेशा ज़ोर ॥११॥

उस समय मात्र परमधाम की स्वलीलाद्वैत भूमिका थी, जहां श्री राजश्यामा जी एवं सखियों का स्वरूप विराजमान है । वहां हमेशा ही उनके बीच प्रेम वार्तालाप होता रहता था, कि सबसे ज्यादा प्यार कौन करता है ।

हक़ कहे हादी रूहन से, मैं तुमारा आशक ।
तुम तेहकीक जानियों, इन में नाहीं सक ॥१२॥

प्रियतम अक्षरातीत श्री राज जी, श्यामा जी एवं सखियों से कहते हैं, कि मैं ही तुम्हारा आशिक हूं (मेरा प्यार ज्यादा है), यह तुम सत्य जानो, इसमें

जरा भी संशय नहीं है ।

तब कह्या हादी ने, तुम माशूक मैं आशक ।
रूहें कहें हम आशक, क्या नाहीं हक़ माफक ।।१३।।

तब हादी श्री श्यामा जी ने कहा, कि आप मेरे माशूक (प्रियतम) हैं और मैं आपकी व सखियों की आशिक हूं । तब सखियों ने कहा कि हम आप दोनों के आशिक हैं, क्या हमारा प्रेम राजजी के समान नहीं हैं ?

हक़ कहें रबद मैं ना करूं, बेवरा देखाऊं सबन ।
तब तुम नीके जानोगे, नेक जुदे होए तुमारे तन ।।१४।।

तब प्रियतम श्री राज जी ने कहा, कि मैं आपसे इस विषय में और वार्तालाप नहीं करूंगा, बल्कि उसका निरूपण करके दिखाऊंगा । आप सब अच्छी तरह से तभी समझ सकोगे, जब आपकी सुरता आपके तनों से थोड़े समय के लिये अलग होगी ।

यूं रबद हमेशा रहे, सब कोई देखावे ज़ोर ।
बातां करे मिनो मिने, बीच बका वाहेदत ठौर ।।१५।।

इस प्रकार प्रेम वार्तालाप हमेशा ही होता रहता था, सभी अपने प्रेम को ही सर्वोपरि बताते थे । इस प्रकार अखण्ड परमधाम की स्वलीलाद्वैत भूमिका में, आपस में श्री राज श्यामा जी एवं सखियां प्रेम–वार्ता करते रहते हैं।

तहां जुदागी रहे नहीं, ना बेवरा पाइए इशक ।
रूहें साहेबी न जानी अपनी, जैसी माफक़ हक़ ।।१६।।

उस दिव्य परमधाम में कभी भी जुदाई सम्भव नहीं है, इस कारण वहां इश्क का निरूपण सम्भव नहीं था । ब्रह्मप्रियाएं, परब्रह्म के समतुल्य अपनी महिमा को भी नहीं जानती थीं ।

इस वास्ते लिया हकें दिल में, इनों को जुदागी होए ।
चाह उपजे इन दिल में, सब मिल मांगे सोए ।।१७।।

इस कारण श्री राज जी ने अपने दिल में निश्चय किया, कि इन्हें (प्रियाओं को) जुदाई देनी होगी । उन सखियों के हृदय में प्राकृतिक जगत् की लीला देखने के इच्छा उत्पन्न होगी, और वे सब मुझसे दुःख रूपी खेल मांगेंगे ।

हम देखे खेल फ़ना को, जो खेल देखत नूरजलाल ।
कैसे खेल देखत, क्यूं कर होत खुसाल ॥१८॥

वे मुझसे मांगेंगी कि, हमें नश्वर जगत् की लीला देखनी है, जो कि अक्षरब्रह्म (नूरजलाल) नित्य प्रति देखा करते हैं । वे किस प्रकार का खेल (माया जगत्) देखते हैं, और उससे किस प्रकार आनंदित होते हैं ।

मैं बरजे इन सब को, ए नाहीं देखन जोग तुम ।
क्या इन खेल को देखोगे, मत फेरो मेरा हुकम ॥१९॥

तब मैं उन सबको मना करूंगा, कि "वह मायावी जगत् तुम्हारे देखने योग्य नहीं है । उस दुःखपूर्ण जगत् में क्या देखोगे आप ? मेरा वचन मत ठुकराओ ।"

तुम भूलोगे तेहेकीक, तुमे सुध न रहे आकार ।
अरस बका ठौर भूलोगे, मैं तुमारा परवरदिगार ॥२०॥

उस माया जगत् में जाकर तुम निश्चित रूप से सब भूल जाओगी । तुम्हें अपना मूल स्वरूप (मूल तन - परात्म) भी याद नहीं रहेगा । अपने निजधर परमधाम को तुम भूल जाओगी और यह भी भूल जाओगी, कि मैं ही तुम्हारा प्रियतम स्वामी हूं ।

तब जबाब इनों दिया, हम क्यों कर भूलें अरस ।
अपना आप क्यों भूलेंगे, क्या है ऐसा खेल सरस ॥२१॥

तब सखियां मुझे उत्तर देंगी कि हम अपने निजधर परमधाम और अपने निजस्वरूप को किस प्रकार भूल सकती हैं ? क्या वह माया का खेल इतना आनंददायक है ?

तुम को क्यों हम भूलेंगे, क्यों जायेगा हमारा इशक ।
हम रहे हमेशा हजूर में, हमारा इशक साथ हक़ ॥२२॥

हे प्रियतम श्री राज जी ! हम आपको किस प्रकार भूल सकते हैं ? आपके प्रति हमारा प्रेम किस प्रकार हमसे जुदा हो जायेगा ? हम हमेशा ही आपके समीप रहते हैं, हमारे हृदय में आपके प्रति अनंत प्रेम है ।

तब मैं इनों सो कह्यो, तुम जाओ खेल में जब ।
देखो चौदे तबक को, तुम सुध ना रहे कछू तब ॥२३॥

तब मैं (राज जी) उन सबसे कहूंगा, कि आप सब जब मायावी खेल में जाओगी, और वहां चौदह लोकों के संसार को देखोगी, तब तुम्हे कुछ भी याद नहीं रहेगा ।

फेर आधी नींद उड़ाए के, देखाऊं ब्रह्मांड और ।
व्रह विलास दोऊ देखाए के, फिराऊं अपने ठौर ।।२४।।

उसके पश्चात् (ब्रजलीला के बाद) आधी नींद हटाकर, मैं उन्हें एक दूसरा ब्रह्माण्ड (योगमाया का) दिखाऊंगा । वहां रास लीला के अंतर्गत विरह व विलास दोनों दिखाकर वापस अपने निजघर ले आऊंगा ।

तब इच्छा तुम को रहे, तीसरा रचे फेर इन्ड ।
तहां पैगंबर भेज के, करे दावत सब ब्रह्माण्ड ।।२५।।

तब तुम्हारी दुःख का खेल देखने की चाहना बाकि रह जायेगी । उसे पूरा करने के लिये पुनः तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना करूंगा। वहां पैगम्बर (संदेशवाहक) भेजकर सारे संसार को शाश्वत् सुख व शांति के लिये आमंत्रित किया जायेगा ।

तहां तुम ल्याओगे, पैगंबर पर ईमान ।
बातें सब खिलवत की, तुम को होए पेहेचान ।।२६।।

तब वहां आप सब मेरे संदेशवाहक पर विश्वास लाओगे । परमधाम की खिल्वत (अंतःपुर-रंगमहल) की बातों की, आपको सारी पहचान हो जायेगी ।

पर जागो दौड़ो इशक ल्यों, आए ना सको मुझ पास ।
तुम को झूठे खेल की, क्यों ए ना छूटे आस ।।२७।।

आप ब्रह्मज्ञान पाकर ऊपरी रूप से तो जागृत हो जाओगी, प्रेम को भी धारण करने का प्रयास करोगी, परमधाम में मूल तनों में जागृत होने के लिये पूरा जोर लगा दोगी, किंतु मेरे पास नहीं आ सकोगी । क्योंकि इस झूठे मायावी संसार की आशा तुम्हारे हृदय से खत्म नहीं हो पायेगी ।

यूं ही अक्षर के दिल में, उपजे चाह यों कर ।
रहे कैसा इशक रूहन में, ए मिल प्यार करत क्यों कर ।।२८।।

इसी प्रकार अक्षर ब्रह्म के दिल में भी इच्छा उत्पन्न होगी, कि प्रियतम अक्षरातीत अपनी आत्माओं से कैसा प्रेम करते हैं ? एवं सखियां आपस में किस प्रकार प्रेम करती हैं ?

जो कछू बात होने हती, जो लई दिल में हक़ ।
सो तो आगूं से होए चुकी, कजा दुनियां चौदे तबक ।।२९।।

जो कुछ भी लीला इस माया जगत् में होनी थी, वह सब प्रियतम अक्षरातीत ने पहले ही अपने दिल में निश्चित कर लिया। ऐसा समझिये कि चौदह लोकों से युक्त सारे नश्वर संसार का न्याय पहले ही हो गया ।

यों ही चाह नूरे किया, कैसा हक़ सों रूहों प्यार ।
रूहें दिल ऐसा आइया, क्या अक्षर करत बिहार ।।३०।।

इस प्रकार राजजी के दिल में लिये अनुसार, अक्षर ब्रह्म ने इच्छा की, कि अक्षरातीत परब्रह्म के साथ उनकी आत्माओं में कैसा प्यार है ? तथा सखियों के दिल में ऐसा विचार आया कि अक्षर ब्रह्म किस प्रकार की लीला देखते हैं ?

एही आज की साएत, जब दिन रहा एक पोहोर ।
तब आए पोहोंची हक़ हजूर, लगी बात करने ज़ोर ।।३१।।

यह वही आज की घड़ी है, जब दिन पूरा होने में एक प्रहर बाकि था (दोपहर के ३ बजे थे), तब सभी सखियाँ (तीजी भोम के नीलो पीलो मंदिर में) श्री राज जी के पास आकर उत्साहपूर्वक बातें करने लगीं ।

पूछत रूह हादीय की, आज कहां जाए खेल देखन ।
अक्षर खेल देखन, जवाब दिया रूहन ।।३२।।

श्री श्यामा जी की आत्मा ने सभी ब्रह्मप्रियाओं से पूछा, कि आज आप सब आनन्द की लीला देखने (विहार करने) कहां जायेंगे ? तब सभी सखियों ने उत्तर दिया, कि आज हमें अक्षर ब्रह्म के प्राकृतिक जगत् की लीला देखना है ।

तब हक़े इनों को बरजे, उपरा उपर तीन बेर ।
ए रबद वही मांगया, मिल एक दूजी को फेर फेर ।।३३।।

तब प्रियतम श्री राज जी ने, उन्हें पुनःपुनः तीन बार मना किया । किंतु सखियों ने भी आपस में मिलकर पुनः पुनः वही इच्छा व्यक्त की ।

तिस वास्ते इन रूहन को, देखाए तीन तकरार ।
एक हूद दूजी किस्ती, संग रहे परवरदिगार ।।३४।।

इस कारण प्रियतम स्वामी ने उन ब्रह्मात्माओं को अज्ञानमयी जगत् के तीन भाग (ब्रज, रास व जागनी) दिखाया । पहला भाग, हूद नबी (नंद बाबा)

का, जहां हूद तूफान (इंद्रकोप) आया था । दूसरा भाग, जल प्रलय (नूह तूफान) के समय योगमाया की किश्ती पर । दोनों भागों में परब्रह्म अक्षरातीत ब्रह्मात्माओं के साथ में रहे ।

आतम अक्षर जोस हक़ का, अग्यारे बरस बावन दिन ।
ब्रज मिने लीला करी, फेर पोहोंचे वृन्दावन ॥३५॥

ब्रज लीला में ११ वर्ष और ५२ दिन तक कृष्ण जी के तन में अक्षर की आत्मा और परब्रह्म का जोश (आवेश) विराजमान था । इस प्रकार ब्रज मण्डल में लीला करने के पश्चात् योगमाया के नित्य वृंदावन में गये ।

एक रात तहां रहे, विरह विलास किये भोग ।
इच्छा पीछे रह गयी, तब भागा सुपन संयोग ॥३६॥

उस नित्य वृंदावन में एक रात रहे और विरह विलास की लीला देखी । इसके पश्चात् परमधाम में जागृत हुये, किंतु दुःख का खेल देखने की इच्छा, सखियों के हृदय में बाकि रह गयी ।

तब हक़ें हुकम किया, वैसा ही उठे इन्ड ।
तब ए पैदा हुआ, ए जो तीसरा ब्रह्माण्ड ॥३७॥

तब प्रियतम परब्रह्म ने हुबहु पहले के जैसा ब्रह्माण्ड बनाने का आदेश दिया । तब यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ ।

पेहेले दोए कायम भए, एक ग्रह्या नूर बुध ।
दूजा चित्त में चुभ रह्या, दई तीसरे में सारी सुध ॥३८॥

पहले के दोनों ब्रह्माण्ड अखण्ड हो गये। एक रास लीला को अक्षर ने अपनी बुद्धि (केवल ब्रह्म) में अखण्ड किया है, तो दूसरी ब्रज लीला अक्षर के चित्त में अखण्ड हो गयी । अब तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में धाम धणी ने आत्माओं को सारी पहचान करा दी है ।

रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध ॥
ब्रज लीला सों बांधी सुरत, अखण्ड भई चढ़ आई चित्त ॥

(चौ. ४२, ४८ - श्री प्रगटवाणी)

तिन सुध का कहूं बेवरा, जो पिछली बीतक ।
हक़ सों रबद कर बैठियां, सो भानों सारी शक ॥३९॥

अब उन बातों की पहचान कराऊंगा, जो खेल में आने से पहले हम आत्माओं में बीती है । प्रियतम अक्षरातीत से प्रेम वार्तालाप करने के बाद हम मूल मिलावे (पांचवी गोल हवेली) में बैठ गये। अब वह सारा संशय दूर करूंगा।

तीसरी भोम से आएके, बाकी दिन रह्या घड़ी चार ।
भोम तले की आए के, चौक पाँचवे का व्यवहार ।।४०।।

जब दिन पूरा होने में चार घड़ी (डेढ़ घण्टा) बाकी थी, तब (सायं साढ़े चार बजे), श्री राज श्यामा जी एवं सखियां तीसरी भूमिका से रंगमहल की प्रथम भूमिका में पांचवी गोल हवेली आ गये ।

जहां चौसठ थंभ चबूतरा, गोल चबूतरे गृदवाए ।
हक़ हादी बैठे तखत, फिरती बैठी रूहें भराये ।।४१।।

जहां मध्य में कमर भर ऊंचा गोल चबूतरा आया है, जिसकी किनार पर चारों तरफ घेर कर चौसठ स्तम्भ सुशोभित हैं । चबूतरे के ऊपर श्री राज-श्यामा जी सिंहासन पर विराजमान हैं और सखियाँ सम्पूर्ण चबूतरे पर घेरकर बैठी हैं ।

करें बात एक दूजी सों, जिन जुदी पड़े कोए ।
मैं भूलों तो तूँ मुझको, सावचेत कीजियो सोए ।।४२।।

सभी सखियां आपस में बातें करती हैं, कि हममें से कोई भी अलग ना हो । यदि मैं भूल जाऊं, तो तू मुझे सावधान कर देना ।

तूं भूले मैं तुझको, करूंगी खबरदार ।
आपन हंसेंगे हक़ पर, ना भूले परवरदिगार ।।४३।।

यदि तू भूले, तो मैं तुझे सावधान कर दूंगी । हम खेल में जाने के बाद, प्रियतम श्री राज को कभी भी नहीं भूलेंगी । इस प्रकार राज जी को खेल में हराकर राज जी पर हंसी करेंगी ।

यों रबद करते थके, जब हुकम हुआ हक़ ।
नूरे देखा नींद में, इण्ड जाग्रत माफक ।।४४।।

इस प्रकार वार्तालाप करते हुए वे थक गये । फिर परब्रह्म अक्षरातीत का हुक्म हुआ और अक्षर ब्रह्म वैसा ही ब्रह्माण्ड नींद में देखा, जैसा कि हमेशा जागृत अवस्था में देखा करते थे ।

सब रूहें उतरीं तिन में, ब्रज में सब एक ठौर ।
नूर आतम जोस धनी का, आए नंद घर करी भोर ।।४५।।

उस ब्रह्माण्ड के ब्रज मण्डल में, सभी ब्रह्मात्माएं एक साथ एक ही जगह अवतरित होती हैं । अक्षर की आत्मा और धनी का जोश (आवेश), दोनों ही नंद बाबा के घर में, (कृष्ण जी के तन में विराजमान होकर) प्रवेश करते हैं और ब्रह्मलीला प्रारम्भ हो जाती है ।

तहां से आए रास में, भया जोगमाया का इण्ड ।
बिरह विलास देखाए के, फेर किया तीसरा ब्रह्माण्ड ।।४६।।

ब्रज मण्डल में ग्यारह वर्ष बावन दिन तक लीला करने के पश्चात् योगमाया के ब्रह्माण्ड की रचना हुयी । वहां नित्य वृंदावन में रासलीला के अंतर्गत विरह-विलास देखने के पश्चात् परमधाम गये, किंतु इच्छा पूरी ना होने से, पुनः तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड की रचना की गई।

तब स्याम आए बरारब, तब रसूल धराया नाम ।
ल्याया कलाम अल्ला को, किया जाहिर दीन इसलाम ।।४७।।

तब श्री राज जी अरब में आये और वहां अपना नाम रसूल (संदेशवाहक) रखा । वहां वे कलाम अल्लाह कुर्आन लेकर आये और दीने इस्लाम (शांति का मार्ग) प्रकट किया ।

तब दई साहेदी खुदाय की, किया वायदा इत ।
मेरी तीनों सूरतें होएगी, सो कायम करे साएत ।।४८।।

तब वहां उन्होंने परमात्मा के स्वरूप व धाम से संबंधित साक्षी के वचन कहे और वादा किया कि मेरी कुल तीन सूरतें होयेंगी, जो कि हक इल्म (ब्रह्मज्ञान) के द्वारा सारे संसार को अखण्ड कर देंगी ।

रूहें अरस अज़ीम से, फिरस्ते नूर मकान ।
उतरे बीच दुनियां के, होवे जाहिर साएत निशान ।।४९।।

रूहें (ब्रह्मात्माएं) अर्श आज़म (परमधाम) से और फरिश्ते (ईश्वरी सृष्टि) नूर मकान (अक्षरधाम) से दुनिया में प्रकट होंगे । तब कियामत की सातों निशानियां जाहिर होंगी ।

ए बारे सदी मिने, तब होए जुमे का दिन ।
होवे भाई मेरे मोमिन, सो क्यामत करे रोशन ।।५०।।

साथ ही रसूल साहब ने बताया कि बारहवीं सदी में जब जुम्मे का दिन (छठा दिन ब्रह्मात्माओं का) होगा, तब मेरे भाई - मोमिन कियामत की निशानियां, दुनिया में स्पष्ट कर देंगे ।

वे देंगे मेरी साहेदी, जो मैं देखी सूरत हक़ ।
होवे खिलवत खाना जाहिर, जो रूहें हक़ की आशक ।।५१।।

मुहम्मद साहब कहते हैं, जो मैने खुदा की सूरत (परमात्मा का स्वरूप) देखी है, मेरे भाई मोमिन (ब्रह्मात्माएं) मेरे उन कथनों की साक्षी देंगे । उस समय हक़ की खिल्वत (रंगमहल) दुनिया में जाहिर हो जायेगी, जहां प्रियतम परब्रह्म की आशिक ब्रह्मात्माएं रहती हैं।

हक़ीकत क़ुरान की, करी इसारते हक़ सुभान ।
सो खोलसी सब मोमिन, ताकी सबको होए पेहेचान ।।५२।।

क़ुरान पाक में परब्रह्म हक तआला ने जो संकेतों में वचन कहे हैं, उनकी हकीकत (यथार्थता) मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) दुनिया में स्पष्ट कर देंगे, जिससे सारी दुनिया को सत्य की पहचान हो जायेगी ।

दुनियां चौदे तबक में, खोज करी सबन ।
जो त्रैगुन को दुर्लभ, नूर ब्रह्म अक्षर रोशन ।।५३।।

चौदह लोकों के संसार में, सबने अक्षरातीत परब्रह्म के स्वरूप और ध ाम के विषय में खोज की। किंतु अक्षर ब्रह्म का ज्ञान भी त्रिदेवों को दुर्लभ रहा।

तिन के पार अक्षरातीत, ताको कहिए नूरजमाल ।
सो मोमिन ठौर सूरत, रहे जाहिर करने के हाल ।।५४।।

उन अक्षर ब्रह्म से भी परे अक्षरातीत परब्रह्म का धाम है, जिन्हें कुर्आन में नूरजमाल कहा गया है । वहां की शोभा, स्वरूप व लीला को ब्रह्मात्माएं ही दुनिया में जाहिर कर सकती हैं ।

जाकी तरफ कोई केहे ना सके, तो क्यों होए ठौर पेहेचान ।
ए केहेवे समरथ मोमिन, जाके दिल कहे आसमान ।।५५।।

जब अक्षरातीत के धाम की दिशा भी कोई नहीं बता सका तो उस परमधाम की पहचान उन्हें किस प्रकार हो सकती है ? दिव्य परमधाम का वर्णन करने का सामर्थ्य मात्र ब्रह्मात्माओं में है, जिनके दिल को आकाश के समान विस्तृत कहा गया है ।

सो सुध नहीं त्रैगुन को, और नाहीं नूर मकान ।
सो मोमन जाहिर करें, जो खिलवत हक़ सुभान ।।५६।।

परब्रह्म अक्षरातीत के जिस खिल्वत (अंतःपुर-रंगमहल) के प्रेमलीला की पहचान त्रिदेवों को नहीं है और ना ही अक्षर ब्रह्म को उसका ज्ञान है । उसे ब्रह्मात्माएं दुनिया में प्रकट कर रही हैं ।

अक्षरातीत के मोहोल में, प्रेम इश्क बरतत ।
सो सुध अक्षर को नहीं, जो किन विध केलि करत ।।

हुकम हक़ सुभान का, रहे साथ गिरो मोमिन ।
तो अरस अज़ीम की, करी साएत कायम रोशन ।।५७।।

परब्रह्म अक्षरातीत की आदेश (हुक्म) शक्ति, हमेशा ब्रह्मात्माओं के साथ रहती है । इसी कारण तो परमधाम की अखण्ड लीला को दुनिया में प्रकट कर रहे हैं।

तो अरस अज़ीम के, कायम खोले द्वार ।
हक़ हादी रूहें बैठक, जित है नित बिहार ।।५८।।

इसी कारण उस दिव्य परमधाम के अखण्ड सुखों के दरवाजे वे (तारतम ज्ञान के द्वारा) दुनिया में खोल रहे हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियों की बैठक (मूल मिलावा) है, और जहां नित्य प्रति प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं होती हैं ।

अब कहूं चौक पांचमा, फिरता चबूतरा गृदवाए ।
फिरते तले साठ मंदिर, पौरी चारों तरफों चार देखाए ।।५९।।

अब पांचवें चौक मूल मिलावे का वर्णन करूंगा, जिसके मध्य में कमर भर ऊंचा गोल चबूतरा शोभायमान है । चबूतरे को घेरकर चारों तरफ साठ मंदिर आए हैं जिनके मध्य चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे शोभायमान हैं ।

एक जवेर चेतन हीरे का, तामें रंग जवेर और ।
नकस काटव चित्रामन, देखत जुदे रंग ठौर ठौर ।।६०।।

ये साठो मंदिर एक ही नूरमयी व चेतन हीरा नग के हैं । उसमें अन्य कई रंगों के जवाहरात जड़े हुए हैं । दीवालों में जगह जगह कई रंगों की नक्शकारी, कटाव व चित्रकारी बनी हुयी है ।

आगे इन मंदिरन के, थम्भ चौसठ हारे दोए ।
तामें एक मंदिर के आगे, लगत दूसरी चबूतरे सोए ।।६१।।

इन नूरमयी मंदिरों के आगे, चौसठ स्तम्भों की दो हारें शोभा ले रही हैं, उनमें से स्तम्भों की एक हार मंदिरों के आगे (सामने) आयी है और दूसरी हार मध्य के चबूतरे की किनार पर सुशोभित है।

तिन थम्भन में मेहेराब, जमा एक सौ अट्ठाइस ।
दोए सौ छप्पन दो गली के, इत हक आवे बकशीस ।।६२।।

उन स्तम्भों की एक हार में कुल १२८ महराबें (६४+६४) आई हैं, दोनों गलियों की कुल २५६ (१२८+१२८) महराबें होती हैं । इसका भेद श्री राज जी की मेहर से ही जाना जा सकता है ।

तिन मेहेराब का बेवरा, साम सामी एक सौ अट्ठाइस ।
एक सौ अट्ठाइस दोए गली के, पावो दो सौ छप्पन बकशीस ।।६३।।

इन महराबों का विवरण इस प्रकार है । आमने सामने १२८ महराबें शोभा ले रही हैं । दोनों गलियों की १२८-१२८ महराबें मिलकर कुल २५६ हुई । यह शोभा श्री राज जी के देने से ही दिल में आती है ।

साठ मंदिर के द्वारने, दोए दोए हर मंदिर ।
साम सामी एक सौ बीस, कहे गृद चौंसठ मंदिर अन्दर ।।६४।।

इन ६० मंदिरों में से प्रत्येक मंदिर में दो-दो द्वार (बाहरी व भीतरी तरफ) आएँ हैं । इस तरह से आमने सामने १२० द्वार आए हैं । चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे के कारण मंदिरों की कुल परिधि (गोलाई) चौसठ मंदिर की होती है।

देखन के हर मंदिरन के, होत दरवाजे चार ।
लेखे आवत तीन तीन, हक़ हादी करे बिहार ।।६५।।

मूल मिलावे में घेरकर आये इन प्रत्येक मंदिरों में दिखने में चार–चार दरवाजे हैं, परंतु चूंकि संधि की दीवार का द्वार दोनों मंदिरों में गिना जाता है, इस कारण गिनती में प्रत्येक मंदिर में तीन–तीन दरवाजे होते हैं। इन मंदिरों में श्री राज श्यामा जी आनन्द विहार करते हैं।

ए चौक मंदिर साठ का, तामे चौसठ थम्भ बाहिर ।
एह फिरते गृद चौसठ, ताको मेहेराब करों जाहिर ।।६६।।

साठ मंदिर के इस चौक (मूल मिलावा) में मंदिरों के बाहरी तरफ चौसठ स्तम्भों की एक हार घेरकर आयी है। अब उनके महराबों की शोभा का वर्णन करूंगा।

जमा एक सौ अट्ठाइस, ए कहे महेराब रोशन ।
जोत जवेरों झलकत, अरस दिल जाने मोमिन ।।६७।।

मंदिरों के बाहिर की ओर आई स्तम्भों की हार में, एक सौ अट्ठाइस महराबें सुशोभित हैं । जिनमें अनेकों जवाहरातों की ज्योति झलक रही है । इसकी शोभा को वे मोमिन ही जानते हैं, जिनका दिल अर्श हो गया होता है ।

कह्या चौसठ थम्भ चबूतरा, सुनो ताको बेवरा रंग ।
ए करी सिफाएत महंमद, हक की जो अरधांग ।।६८।।

मूल मिलावे के मध्य में चौसठ स्तम्भों से युक्त चबूतरा सुशोभित है। उनके रंगों का विवरण ध्यानपूर्वक सुनिये। यह सिफायत (तारतम ज्ञान) मुहम्मद (मल्की सूरत) ने (प्रदान) किया है, जो परब्रह्म अक्षरातीत की अर्धांगिनी (श्यामा जी) हैं।

दोए पाच सामे दोए नीलवी, दोए मानिक सामे पुखराज ।
साम सामे किरना लरे, ए रह्या नूर जोत जवेर विराज ।।६९।।

गोल चबूतरे की पूर्व दिशा में सीढ़ियों से लगते हुए दो स्तम्भपाच नग के हैं। जिसके सामने पश्चिम दिशा में दो स्तम्भ नीलवी के हैं । दक्षिण दिशा में सीढ़ियों से लगकर दो स्तम्भ माणिक के हैं और इनके सामने दो स्तम्भ पुखराज के आएँ हैं । इन महराबों की किरणें आमने–सामने से आकर आपस में टकराती हैं। नूरमयी जवाहरातों की ज्योति चारों तरफ जगमगा रही है।

दोए पाच जोड़े नीलवी, नीलवी जोड़े पाच बुजरक ।
दोए मानिक जोड़े पुखराज, दोए पुखराज जोड़े मानिक ।।७०।।

चबूतरे की पूर्व दिशा में सीढ़ियों से लगते हुए पाच के दो स्तम्भ हैं, जिन के दायें–बायें दो स्तम्भ नीलवी के हैं। पश्चिम दिशा में नीलवी के दो स्तम्भ हैं, जिनके दायें–बायें पाच के दो स्तम्भ आये हैं। दक्षिण दिशा में माणिक्य के दो स्तम्भों के दायें–बायें पुखराज के दो स्तम्भ हैं और उत्तर दिशा में पुखराज के दो स्तम्भों के दायें–बायें माणिक्य के दो स्तम्भ आये हैं।

ए सोले थम्भ कहे, जुदे जुदे सोले कई रंग ।
बारे जवेर चार धात के, कई नूर किरना उठे तरंग ।।७१।।

अलग-अलग १६ रंगों के कुल ६४ स्तम्भ आए हैं, जिनमें से बारह स्तम्भ नगों के और चार स्तम्भ धातुओं के आए हैं । इन स्तम्भों से अनेक रंगों की नूरी किरणों की तरंगे उठती हैं ।

चार तरफ चार कोने के, आए बारे बारे दरम्यान ।
बारा चौको अड़तालीस, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।७२।।

चबूतरे की चारों दिशाओं के ४-४ स्तम्भों के मध्य चारों खाँचों में बारह-बारह स्तम्भ आए हैं। कुल मिलाकर ४८ (१२X४) स्तम्भ हुए, जिनका ज्ञान मात्र ब्रह्मात्माओं को होता है ।

तामें आठ थम्भ जवेर के, और धात के कहे चार ।
नूर रोशनी झलकत, ताके बारे भए सुमार ।।७३।।

इन बारह स्तम्भों में से आठ स्तम्भ जवाहरातों के हैं और चार स्तम्भ धातुओं के हैं । यह सब मिलाकर कुल बारह स्तम्भ होते हैं, जिनकी नूरमयी रोशनी सर्वत्र झलकार कर रही है ।

हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पाने परवाल ।
हेम चांदी नूर कंचन, पिरोजा कपूरिया करे खुसाल ।।७४।।

स्तम्भों का क्रम इस प्रकार से है - हीरा, लसनिया, गोमादिक, मोती, पन्ना, प्रवाल, हेम, चांदी, नूर(लौह धातु), कंचन, पिरोजा और कर्पूरिया । ये सभी नूरी स्तम्भ अपनी नूरी शोभा से आनंद बरसा रहे हैं ।

सोले सोले थम्भों के बीच में, कठेड़ा जो गृदवाए ।
तकिए लाल भरे कठेड़ा, शोभित चारों तरफों आए ।।७५।।

चबूतरे की चारों दिशा के चारों नूरी द्वारों (सीढ़ियों) के मध्य सोलह सोलह स्तम्भ आये हैं, जिनके मध्य में चबूतरे की किनार पर चारों तरफ

रत्नजड़ित कठेड़ा शोभायमान है। इस कठेड़े से लगते हुए चबूतरे पर चारों तरफ लाल रंग के नरम तकिये सुशोभित हैं।

मध्य भर चबूतरे, दुलीचा पसमी नूर ।
अति नरम पसम, सुखकारी शीतल ज़हूर ।।७६।।

सम्पूर्ण चबूतरे के ऊपर चौसठ स्तम्भों के बीच में पशमी नूरमयी दुलीचा शोभा ले रहा है । दुलीचा अति नरम पश्म का है, जो शीतल और सुखकारी है ।

दुलीचे के गृद दोरी बनी, हरी पीली सेत स्याम ।
कई नकस कटाव चित्रामन, सोभित बिछौना इस ठाम ।।७७।।

पशमी दुलीचे की किनार पर चारों तरफ हरी, पीली, श्वेत और श्याम रंग की दोरी (रेखा) आई है । दुलीचे पर कई प्रकार की नक्शकारी और कटाव युक्त चित्राकारी सुशोभित हैं ।

कई नूर तरंगे उठत, लरत नूर सामने नूर ।
किरना झलकत नूर ज्यूं, सो क्यों कर कहूं ज़हूर ।।७८।।

गिलम से कई रंगों की नूरी किरणें उठती हैं । चारों तरफ नूरमयी रंग-बिरंगी किरणें आपस में टकराती हुई जंग करती प्रतीत होती हैं। इन किरणों की नूरमयी झलकार का किस प्रकार वर्णन करूं?

कई वृख बेली कटाव, नकस पुतली चित्रामन ।
जोत करें अति झलकार, ए देखत दिल मोमिन ।।७९।।

गिलम में कई प्रकार के वृक्ष, बेलों के कटाव बने हैं, कई प्रकार की नक्काशकारी व पुतलियों की चित्रकारी आई है, जिनकी ज्योति अपरम्पार झलकार कर रही है । उसकी शोभा ब्रह्मात्माओं का दिल देख रहा है ।

भर चबूतरे चन्द्रवा, गृद फिरती झलकार ।
झालर मोती लरें लटकते, भर चबूतरे पर ।।८०।।

संपूर्ण चबूतरे के ऊपर छत में घेरकर चंद्रवा झलकार कर रहा है, जिनमें घेर कर आई झालर में मोतियों की लड़ियां सम्पूर्ण चबूतरे के ऊपर लटकते हुए सुशोभित हो रही है ।

कई वृख चित्रामन, पुतली नकस कटाव ।
लरत किरना किरन सों, क्यूं कर कहूं ए भाव ॥८१॥

नूरी चंदवा में कई प्रकार के वृक्षों की चित्रकारी है, कई पुतलियों के कटाव व नक्काशकारी आयी है। इनकी नूरी किरणें आपस में टकराती हुई जंग करती प्रतीत होती हैं। इस अति मनोहारी शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

मध्य फूल जवेरन के, गृद फिरती शोभाए ।
साम सामी किरना लरें, ए शोभा कही न जाए ॥८२॥

चंद्रवा के बीच में तथा चारों तरफ किनार पर जवाहरातों के फूल शोभायमान हैं । इन की किरणें आमने सामने से आकर टकरा रही हैं। इस अद्‌भुत शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है।

इन दुलीचे पर शोभित, कंचन रंग सिंघासन ।
पाच नीलवी के लगते, झलकत नूर रोशन ॥८३॥

चबूतरे पर आए इन पशमी गिलम पर कंचन रंग का सिंहासन शोभायमान है, जो चबूतरे की पश्चिम दिशा में दाहिनी तरफ (सीढ़ियों की उत्तर तरफ) पाच और नीलवी के स्तम्भों से लगता हुआ स्थित है, जिसकी नूरमयी रोशनी जगमगा रही है।

द्वार पैठते सामने, शोभित दाहिने हाथ ।
हक हादी बैठे तखत, लग अंग अंग के साथ ॥८४॥

मूल मिलावे में (पूर्व दिशा के द्वार से) प्रवेश करते समय दाहिनी ओर (चबूतरे की पश्चिम दिशा में सीढ़ियों के उत्तर तरफ) सिंहासन पर श्री राज श्यामा जी विराजमान हैं । सब सखियाँ भी चबूतरे पर एक दूसरे के अंग से अंग लगाकर बैठी हैं ।

छे पाइए जिमीन पर, रंग जुदे नूर झलकार ।
छे डांडों पर शोभित, दस रंग जुदे यों कर ॥८५॥

सिंहासन में सर्वप्रथम जमीन पर छे पाये आये हैं, जिनमें से अलग–अलग रंगों की नूरी किरणें निकलते हुए झलकार कर रही हैं। इन छे पायों पर छे डाण्डों की शोभा है। उन प्रत्येक डाण्डों में दस दस रंग शोभायमान हैं।

हर डांडों में दस रंग, जुदे झलकत रंग नूर ।
रोशनी इन सिंघासन की, सो क्यों कर कहूं जहूर ॥८६॥

प्रत्येक डांडे में अलग-अलग १०-१० नूरमयी रंग झलकार कर रहे हैं । इस सिंहासन की नूरमयी रोशनी का किस प्रकार किया जाये?

तरह जिन की कुरसी की, देखत जोड़े सिंघासन दोए ।
दोउ तकिए दाएं बाएं, नूर झलकत शोभित सोए ॥८७॥

सिंहासन की बनावट कुर्सी (एकल सिंहासन) के समान है, जो इस प्रकार प्रतीत होता है कि जैसे दो सिंहासन साथ में रखे हों। सिंहासन में दायें–बायें दो नूरमयी तकिये रखे हैं, जिनकी रोशनी झलकार कर रही है।

दोए छत्री दोए सिंघासन, मध्य शोभित मानिक ।
और रंग न आवे नज़रों, आगे मानिक लाल माफक ॥८८॥

दो कुर्सी (सिंहासन) के समान सुशोभित दोनों सिंहासन (श्रीराजश्यामाजी) के ऊपर दो छत्र सुशोभित हैं। जिसमें मध्य में माणिक नग शोभायमान है। इस माणिक के लाल रंग के समक्ष अन्य कोई रंग नजर नहीं आता है।

दोए कलश दोए छत्री मिने, शोभित मध्य दरम्यान ।
जुदे पांखे जवेरन के, जाकी जोत न माए आसमान ॥८९॥

दोनों छत्रियों के ऊपर मध्य में दो कलश सुशोभित हैं । उनकी पंखुड़ियों के रंग अलग अलग जवाहरातों के हैं, जिनकी किरणें आकाश में भी नहीं समा पा रही हैं ।

आठों कलश ता उपर, करे जुदे रंगों झलकार ।
क्यूं नूर रोशन इन का कहूं, दिल माफक परवरदिगार ॥९०॥

सिंहासन के ऊपर कुल आठ कलश हैं (छः कलश छः डाण्डों पर हैं)। उनमें से अलग–अलग रंगों की किरणें झलकार कर रही हैं। इनकी नूरमयी रोशनी का वर्णन किस प्रकार करूं? जो अक्षरातीत श्री राज जी के दिल के अनुरूप सुशोभित है।

पीछल दोउ तकिए, हर तकिए कांगरी दोए ।
रंग आसमानी शोभित, लिया घेर चारों तरफों सोए ॥९१॥

श्री राज जी व श्री श्यामा जी की बैठक के पीछे दो तकिए आए हैं । प्रत्येक तकिए में आसमानी (नीले) रंग की दो-दो कांगरी आई हैं । जो कि तकियों को चारों तरफ से घेर कर शोभायमान हैं ।

दोए बाजू तकियों पर, शोभित दोए हरे रंग ।
रंग कंचन सिंघासन, कई शोभित जवेरों संग ।।९२।।

श्री राज श्यामा जी के दाएँ बाएँ हरे रंग के दो तकिए शोभा ले रहे हैं । कंचन रंग के नूरी सिंहासन में कई रंगों के जवाहरात शोभायमान हो रहे हैं।

दोए सिंघासन एक चाकले, जोड़े बैठे जुगल किशोर सरूप ।
सुन्दरता इन छबि की, रस भरे सुन्दर रूप अनूप ।।९३।।

दो कुर्सियों के समान सुशोभित दोनों सिंहासन में एक–एक (कुल दो) चाकले शोभायमान हैं, जिनके ऊपर युगल किशोर स्वरूप श्री राजश्यामाजी साथ में विराजमान हैं। उन स्वरूपों की सुंदरता, शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं? श्री राजश्यामा जी का स्वरूप प्रेमरस से परिपूर्ण, उपमा से रहित अत्यंत सुंदर है।

जुगल सरूप विराजत, उपर सिंघासन ।
भराए बैठी चबूतरे, रूहें दरगाहीं मोमिन ।।९४।।

कंचन रंग के नूरी सिंहासन के ऊपर युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी विराजमान हैं और सम्पूर्ण चबूतरे पर ब्रह्मप्रियाएं विराजमान हैं।

अंग सो अंग लगाए के, मिल बैठे एक होए तन ।
ए वाहेदत के बीच में, रहे ख़ास गिरो मोमिन ।।९५।।

सभी सखियां अंग से अंग लगाकर (चिपक–चिपक कर), एक दूसरे के गले में बाहें डालकर एकतन (एकस्वरूप) होकर बैठी हैं। इस वहदत (स्वलीला अद्वैत) अखण्ड परमधाम में ब्रह्मप्रियाएं (खासुलखास मोमिन) रहती हैं।

ए गिरो रब्बानी मोमिन, जो असल रूहों के तन ।
बैठे मूल मेले मिने, जिनों के दिल रोशन ।।९६।।

ब्रह्मप्रियाओं के जो मूल तन हैं, वे ही परब्रह्म की गुह्य प्रजा (रब्बानी गिरोह) हैं। वे मूल मिलावे में धामधणी के चरणों में विराजमान हैं, जिनके हृदय प्रियतम के प्रेम से आनंदित होते हैं।

जुदे जुदे रंगो साड़ियां, जुदे भूखन झलकार ।
किरना लरें नूर नूर कई, हक हादी रूहें करे बिहार ।।९७।।

वे ब्रह्मप्रियायें अलग अलग रंगों की साड़ियों से युक्त हैं, अलग अलग प्रकार के आभूषण उनके अंगों में झलकार कर रहे हैं, उनकी नूर ही नूर से परिपूर्ण किरणें आपस में टकराते हुए मनमोहक शोभा उत्पन्न कर रही हैं । इस प्रकार श्री राज श्यामा जी व सखियां प्रेम व आनंदपूर्वक लीला विहार कर रहे हैं ।

कोई साड़ी कंचन रंग, कोई रंग दरपन ।
कोई भींगे जाम्बू रंग, कपूरिए दाड़मी रंग रोशन ।।९८।।

किसी सखी की साड़ी कंचन रंग की है, तो किसी की दर्पण रंग की है । किसी की साड़ी गहरे जांबू रंग की है, तो किसी की कर्पूरिया और अनार रंग की शोभित है ।

दिवे काजलिए कपुरिए, कोउ गेहूं जा सुरंग ।
कोई स्याम सेत गुलालिए, कई नूर लेहेरा उठे तरंग ।।९९।।

किसी ब्रह्मप्रिया की साड़ी, दीपक के ज्योति के रंग की है, तो किसी की साड़ी काजल रंग की है, किसी की साड़ी कर्पूरिया रंग की है, तो किसी की गेहुएँ रंग की शोभा ले रही है । कोई कोई ब्रह्मप्रिया तो श्याम, श्वेत व गुलाबी रंग की साड़ी में भी शोभायमान है । जिनसे अनेक रंगों के नूरी किरणों की तरंगे लहराती हुई दिखायी देती हैं ।

चनोटिए चोली केसरी, कोउ जांबू रंग करें झलकार ।
यों कई जुदे जुदे रंगों, शोभा हक हादी देखनहार ।।१००।।

किसी सखी की चोली (ब्लाउज) लालिमा युक्त चनोटिया रंग की है, किसी की केशरिया रंग की, तो किसी की जांबू रंग में झलकार कर रही है । इस प्रकार इनके वस्त्राभूषणों के जुदे-जुदे रंगों की शोभा को श्री राजश्यामा जी प्रेमपूर्वक निहारते हैं ।

भर चबूतरे बैठियां, कई कंठ हार भूखन ।
जोत झलकत जुदे जुदे जवेरन की, ए कह्यो न जात रोशन ।।१०१।।

मूल मिलावे के मध्य में आए सम्पूर्ण चबूतरे पर भरकर सखियाँ बैठी हैं । उनके गले में कई प्रकार के हार और अंगों में कई प्रकार के आभूषण शोभा

ले रहे हैं । अलग अलग जवाहरातों की अलग अलग रंग की किरणें जगमगा रही हैं, जिनकी नूरी रोशनी का वर्णन करना सम्भव ही नहीं है।

नैन मुने अंग मुरछत, मानो जाने देखत सुपन ।
दिल मिने दिल देखत, खेल देखन को फेरे मन ।।१०२।।

सखियों के नयन (खुले होने पर भी) संसार रूपी खेल के ख्यालो में खोये होने से झुके हुए हैं । उनके अंग ऐसे मूर्छित हैं, मानों वे स्वप्न देख रही हों । सखियों का हृदय अपने (परात्म के) हृदय में ही इस स्वप्नवत् खेल को देख रही हैं। ब्रह्मात्माएँ खेल देख पायें, इस लिए उनके मन (आत्मिक नजर) को फिरा दिया गया है । (स्वप्न चलता भी दिल में है और देखता भी दिल ही है)।

महामत कहे ए मोमिनों, तुमारी बीतक साथ हक ।
इत जगाए देखाई साएत, ल्यो अपना मूल इशक ।।१०३।।

श्री महामति जी कह रहे हैं, कि ये सब प्रियतम श्री राज जी के साथ बीती आपकी अपनी बातें हैं । परमधाम की वह घड़ी यहां प्रियतम ने आपको जगाकर दिखा दी है । अब आप अपना मूल इश्क धारण कीजिये ।

प्रकरण-१५, चौपाई-७२२

दूसरी भोम की भुलवनी

चौदह लोकों के संसार में मनुष्य चार स्तर की बंदगी (भक्ति) करते हैं - कर्मकाण्ड-सकाम भक्ति (शरीयत), उपासना-निष्काम भक्ति (तरीकत), सत्य ज्ञान (हकीकत) और प्रेम विज्ञान (मारिफत) । प्रेम का मार्ग सभी बंदगियों में सर्वोपरि है। किंतु इस की पहचान सभी धर्मग्रंथों ने गुप्त रखी थी। सामान्य जीव कर्मकाण्ड की राह अपनाते हुए पाप–पुण्य के बंधनों में बंधे रहते हैं और आवागमन के चक्र में फंसे रहते हैं।उनमें से कई लोग उपासना की राह अपना कर वैकुण्ठ में चार प्रकार की मुक्ति प्राप्त करते हैं। सत्य ज्ञान (हकीकत) का द्वार, जो कि अब तक सामान्य जीवों के लिये नहीं खुला था, सद्गुरू श्री श्यामा जी की कृपा से आखिरत की इस पवित्र बेला में खुल गया है, जिनसे रूहें परमधाम की गलियों में विहार करते हुए इश्क रूपी मदिरा का पान करती हैं। इस प्रकरण में रंगमहल की दूसरी भोम में स्थित भुलवनी के मंदिरों की अलौकिक शोभा का वर्णन हुआ है।

ए दुनियां चौदे तबक में, चलत हैं राह चार ।
एक शरियत तरीकत, हक़ीकत मारफत सार ।।१।।

चौदह लोकों के संसार में मनुष्य चार स्तर की बंदगी (भक्ति) करते हैं। पहली शरीयत की, दूसरी तरीकत की, तीसरी हकीकत की और चौथी मारिफत की। हकीकत व मारिफ्त ही सभी बंदगियों का सार है।

एह वेद कतेब बतावत, करम उपासना ज्ञान ।
चौथी राह प्रेम की, ताकी गुझ राखी पेहेचान ।।२।।

कतेब ग्रंथों के समान वैदिक ग्रंथ भी यह बात (बंदगी के चार मार्ग) बताते हैं, कि भक्ति के चार मार्ग हैं, कर्म (शरीयत), उपासना(तरीकत), ज्ञान (हकीकत) व चौथा प्रेम (मारिफ्त) । चौथे प्रेम मार्ग की पहचान सबने गुप्त रखी है ।

आम खलक पकड़ी शरियत, तिन का ठौर नासूत ।
कोई तरीकत पकड़े, तो आम पोहोंचे मलकूत ।।३।।

सामान्य जीव (आम खलक) शरीयत (कर्मकाण्ड-सकाम भक्ति) की राह अपनाते हैं । इस कारण वे मृत्युलोक (नासूत) से ऊपर नहीं जा पाते, पाप-पुण्य के बंधनों में बंधे रहने से आवागमन के चक्र में फंसे रहते हैं । उनमें से कोई कोई तरीकत अर्थात् उपासना (निष्काम भक्ति) की राह अपनाते हैं, तो वे वैकुण्ठ में चार प्रकार की मुक्ति (सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य) प्राप्त कर लेते हैं ।

और द्वार हक़ीकत आम को, सो क्यों ए ना खुले इत ।
सो हवाला हाथ हादीय के, वह तो दोर क्यामत ।।४।।

और हकीकत (सत्य ज्ञान) का द्वार सामान्य जीवों के लिये नहीं खुल पाता है (ब्रह्मज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता) क्योंकि उसका सारा अधिकार सद्गुरु श्री श्यामा जी के हाथ में है। वह कियामत के समय प्रकट होगा ।

सूर आगे रात ना रेहेवहीं, नूर अंधेर करें जंग ।
हादी आफताब मारफत का, तहां रात न पाई संग ।।५।।

प्रकाश व अंधकार (ज्ञान व अज्ञान) में युद्ध चलता ही है, किंतु सूर्य के आगे रात्रि नहीं टिक सकती । हादी (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप, इमाम महदी साहिबुज्जमां) मारिफत (विज्ञान) रूपी सूर्य हैं, वहां अज्ञानता (संशय) का

नामोनिशान नहीं हो सकता ।

ए जो आम लगी करमकाण्ड को, तिन का ठौर स्वर्गादिक भोग ।
जिनके देव शैतान कहे, रहे तासो संजोग ।।६।।

ये जो जीव सृष्टि सकाम भक्ति (यज्ञ, तप, दान, तीर्थ आदि) में लगे रहते हैं, वे पुण्य के फलस्वरूप स्वर्ग आदि स्थानों में जाकर थोड़े समय के लिये सुख भोगते हैं । (मोह–माया का स्वरूप होने से) इनके देवताओं को शैतान (माया में भटकाने वाला) कहा गया है। वे सदैव उन्हीं की सानिध्यता (चिंतन–ध्यान) रहते हैं।

एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इन का कमसील ।
न करे सिजदा ऊपर आखिरी आदम, फेरया जाहेर कलाम अल्ला का हुकम ।।

ब.क.६/३१

और आम करे उपासना, तिन का बैकुंठ हैं ठौर ।
और ज्ञानी सुन ठहरावहीं, निकसे न करे बोहोतक सोर ।।७।।

और आम खलक (जीव सृष्टि) यदि उपासना (निष्काम भक्ति) का मार्ग अपनाती है तो वह वैकुण्ठ में चार प्रकार की मुक्ति प्राप्त कर लेती है । उनमें जो कोई थोड़ा ज्ञानी होता है, तो वह शून्य-निराकार को परमात्मा मान लेता है । वे ज्ञान का बहुत शोर (प्रचार) तो करते हैं, किंतु निराकार (मोह-नींद) से आगे नहीं जा पाते हैं ।

और ग्यान को ग्यान जो लेवहीं, सो रहे पांच वासना पास ।
तिन को एक अक्षर बिना, और ना उपजे आश ।।८।।

और उस निराकार के ज्ञान से भी परे का ज्ञान, जिसे प्राप्त हो जाता है, वह बेहद मण्डल पहुंच कर अक्षर की पंचवासनाओं (शिव, शुकदेव, सनकादिक, कबीर, महाविष्णु) के पास अखण्ड मुक्ति प्राप्त करता है । उनके हृदय में एक अक्षर ब्रह्म के सिवा अन्य कोई चाहना नहीं होती है ।

शास्त्रों तीन सृष्ट कही, एक जीव दूसरी ईश्वरी ।
तीसरी सृष्ट ब्रह्म की, जो कही धाम से उतरी ।।९।।

शास्त्रों में तीन प्रकार की सृष्टियों का वर्णन है । पहली जीव सृष्टि, दूसरी ईश्वरी सृष्टि तथा तीसरी ब्रह्म सृष्टि, जो कि दिव्य परमधाम से अवतरित

हुई है ।

प्रेम मारग है तिन का, चौदे लोकों न पाइए कित ।
सो तो गोप रह्या गोपिन संग, आम ख़ास ना पहुँचे इत ।।१०।।

उन ब्रह्मात्माओं की बंदगी (राह) प्रेम की होती है, जो कि चौदह लोकों के किसी भी जीव के पास नहीं पायी जाती । उस मार्ग पर ब्रजमण्डल में गोपियों ने चलकर बताया था, किंतु वहां आत्मा-परमात्मा का संबंध स्पष्ट करने वाला तारतम ज्ञान न होने से, अन्य कोई भी प्रेम मार्ग को नहीं जान पाया । जीव सृष्टि व ईश्वरी सृष्टि, उस प्रेम के मार्ग की प्राप्ति नहीं कर पाते हैं ।

और राह कही जो कतेब में, बताई महंमद अलेहसलाम ।
सो आम लगी शरीयत को, इनो एही जान्या इसलाम ।।११।।

इसी प्रकार कतेब ग्रंथों में मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने बंदगी का जो मार्ग बताया है, उसमें से आम खलक मात्र शरीयत का ही पालन करने में लगी हुई है । उन्होंने मात्र इसे ही इस्लाम (शांति) का मार्ग समझ लिया है ।

और आम सफ जुदी पड़ी, ले तरीकत किया ज़ोर ।
तिनों एही इसलाम जान्या, सो पोहोंचे मलकूत ठौर ।।१२।।

आम खलक (जीवसृष्टि) में से कुछ लोगों ने शरीयत की राह को छोड़कर तरीकत (दिल की बंदगी) की राह भी अपनायी है । उन्होंने इसे ही सच्चा इस्लाम माना है । ऐसे जीव मलकूत (वैकुण्ठ) तक ही पहुंच पाते हैं । (उपासना में दिल की बंदगी तो होती है, किंतु ज्ञान नहीं होने से निराकार से पार का लक्ष्य नहीं ले पाते हैं।)

और जो भए महकक, इन आम मिने जो कोए ।
सो बेचून बेशबी को, पोहोंचे ला मकान को सोए ।।१३।।

और आम खलक (जीव सृष्टि) में से जो कोई खोजी पुरूष सत्य ज्ञान पाने का दावा करते हैं, वे बेचूं (अनुपम), बेशब्बी (निराकार), ला मकान (शून्य-क्षर पुरूष) को परमात्मा मानकर उसी शून्य में लीन हो जाते हैं ।

हक़ीकत मारफत की, राह न खुले क्यों कर ।
उपाय किया इनों बोहोतक, होए ना जमा खातर ।।१४।।

सत्य ज्ञान एवं परमसत्य की राह, सामान्य जीवों के लिये सुलभ नहीं

हो पाती है । उन्होंने प्रयास तो बहुत किया, किंतु उन्हें परमलक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो पायी ।

जब की दुनियां पैदा भई, मेटी न काहूं सुभे सक ।
खोज करी इत सबों ने, मिल दुनियां चौदे तबक ।।१५।।

जब से इस सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, तब से चौदह लोकों के सभी लोगों ने मिलकर परमात्मा की बहुत खोज की, किंतु आज दिन तक किसी के भी संशय नहीं मिट सके ।

कहे अवतार चौबीस, तामे बाबीस आए धरन ।
तिनों शक तब ताई अपनी, सो लिखे शास्त्रों में वचन ।।१६।।

पुराणों में चौबीस अवतारों का वर्णन है । उनमें से २२ अवतार धरती में जब तक आये, तब तक सभी संशय से युक्त रहे, और उसी के अनुसार शास्त्रों में भी संशययुक्त वचन लिखे।

दो बाकी आवन की अब, सो बुध कलंकी होए ।
कलि कलिंगा मारके, ईश्वर पार पोहोंचावे सोए ।।१७।।

उनके पश्चात् दो अवतार - बुद्ध अवतार और कल्कि अवतार आने बाकि थे । उनके विषय में ग्रंथों में लिखा है कि वे जब धरती पर अवतरित होंगे, तब सबके दिलों में अज्ञान - तमोगुणी प्रवृत्ति वाले कलि राक्षस को मारकर सभी जीवों को ईश्वर (निराकार) से भी परे बेहद मण्डल में पहुंचा देंगे ।

और लिखा कतेब में, पोहोंचे बारे सदी में आखर ।
तब ईसा मेहेंदी आवसी, गिरो मोमिनों की खातर ।।१८।।

इसी प्रकार कुर्आन में लिखा है, कि बारहवीं सदी (हिजरी) में आखिरत का दौर आयेगा, तब (ग्यारहवी व बारहवी हिजरी सन् में) मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की खातिर ईसारूहूल्ला एवं मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां दुनिया में आयेंगे ।

वह दोर होएगा क्यामत, उठे महंमद अलेहसलाम ।
सो बका घर जाहिर कर, जो कायम दीन इसलाम ।।१९।।

वह कियामत का समय होगा । उस समय मुहम्मद अलैहिस्सलाम पुनः प्रकट होंगे (कब्र से उठ खड़े होंगे) और अखण्ड परमधाम का ज्ञान दुनिया में प्रकट करेंगे, जो कि शाश्वत सुख शांति का धाम है ।

कह्या अलफ लाम मीम, कही महंमद तीनों सूरत ।
सो खोले द्वार अरस के, तिन बका कायम करी साएत ।।२०।।

कुर्आन में तीन सांकेतिक शब्द अलिफ, लाम, मीम लिखे हैं । ये मुहम्मद की तीन सूरतें (बशरी, मल्की व हकी) कही गयी हैं । उन तीनों ने अखण्ड परमधाम (अर्शे आज़म) का द्वार दुनिया में खोला है और सारी दुनिया को अखण्ड मोक्ष की बख्शीश प्रदान की है ।

सरत साएत सब आए मिली, हुआ जुमे का दिन ।
विजयाअभिनन्द अभय करी, अरस जाहिर किया रोशन ।।२१।।

ग्रंथों की भविष्यवाणी के अनुसार वह आखिरत का (कलियुग का अंतिम) समय आ पहुंचा है । विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक स्वरूप (इमाम महदी साहिबुज्जमां) ने अखण्ड परमधाम का ज्ञान देकर सबको भय मुक्त कर दिया है। अब जुम्मे का दिन (छठा दिन मोमिनों का) हो चूका है ।

हज़रत ईसा उतरे, कहा दुनी चौथे आसमान ।
तीनों सृष्ट जाहिर करी, हुई तिन की पेहेचान ।।२२।।

हज़रत ईसा रूहूल्लाह चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से दुनिया में पुनः आयेंगे, ऐसा कुर्आन में कहा गया है । वे भी (देवचंद्र जी के रूप में) प्रकट हो गये हैं, और तीनों प्रकार की सृष्टि की पहचान दुनिया में जाहिर कर दी है ।

एक आसमान दुनी का, दूसरा कह्या मलकूत ।
तीसरा जबरूत चौथा लाहूत, हुआ रोशन मैदान क्यामत ।।२३।।

पहला आसमान मृत्यु लोक को कहा है और दूसरा आसमान बैकुंठ है । तीसरा आसमान अक्षरधाम है और चौथा परमधाम है । अब कियामत का दौर (समय) जाहिर हो गया है ।

करी लड़ाई दज्जाल सो, इमाम और मोमिन ।
सो सारी जाहिर करी, हुई जहान में रोशन ।।२४।।

इमाम महदी साहिब (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) एवं मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) ने दज्जाल (कलि-अज्ञान) से जो लड़ाई की, वह सब दुनिया में जाहिर हो गयी है एवं सत्य ज्ञान दुनिया में प्रकट हो चुका है ।

हज़रत ईसे मारया, ए जो कुली दजाल ।
हुआ दीन महंमदी, सब मोमिन किए खुसाल ।।२५।।

हज़रत ईसा स्वरूप श्री देवचंद्र जी ने इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) के द्वारा दुनिया से अज्ञान रूपी कलि-दज्जाल का खात्मा कर दिया है । अब दुनिया में दीने मुहम्मदी हकीकी (सत्य धर्म) स्थापित हो गया है । सभी ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) को प्रियतम अक्षरातीत (हक तआला) ने प्रसन्न कर दिया है।

हुआ सब ब्रह्म सृष्ट वास्ते, कही जाको ख़ास गिरो मोमिन ।
परमहंस इन को कहे, जिनके अरस अज़ीम में तन ।।२६।।

यह सारी लीला ब्रह्मात्माओं के कारण ही हो रही है, जिन्हें कुर्आन में खासुल खास मोमिनों का समूह कहा गया है । इन्हें ही वैदिक (हिन्दू) धर्मग्रंथों में परमहंस भी कहा गया है, जिनके मूल तन (परात्म) परमधाम मूल मिलावे (अर्शे अज़ीम) में विराजमान हैं ।

दई आठो भिस्त आम को, वास्ते गिरो रब्बानी रूहन ।
फिरस्ते उतरे जबरूत से, दई साहेदी तिनो रोशन ।।२७।।

हकी सूरत इमाम महदी साहिबुज्जमां-बुद्धनिष्कलंक स्वरूप ने ब्रह्मात्माओं के कारण ही, जीव सृष्टि (आम खलक) को आठ बहिश्तों में मुक्ति प्रदान किया है। जो फरिश्ते (ईश्वरी सृष्टि) जबरूत (अक्षरधाम) से अवतरित हुये हैं, उन्हें भी धर्मग्रंथों की साक्षी से सत्य की पहचान कराके हकी सूरत ने उनके दिल रोशन किये हैं ।

इन मोमिनों के वास्ते, हके भेजा अपना हुकम ।
रसूल आया बुलावने, देखो वतन अपना तुम ।।२८।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही परब्रह्म अक्षरातीत ने अपने हुक्म की शक्ति भिजवायी । रसूल साहब हकी सूरत के रूप में पुनः आये हैं और कह रहे हैं, कि तुम अपने निजघर को याद करो ।

इन मोमिनों के वास्ते, खोले बका के द्वार ।
तीनों ब्रह्माण्ड कायम किए, फेर बोलावे नित बिहार ।।२९।।

उन ब्रह्मात्माओं के कारण ही धाम धणी ने अखण्ड परमधाम का ज्ञान दुनिया में जाहिर कर दिया है । उन्हीं के कारण तीनों ब्रह्माण्ड (ब्रज, रास, जागनी) अखण्ड कर दिये गये हैं । अब प्रियतम अक्षरातीत उन्हें परमधाम के

नित्य लीला विहार में बुला रहे हैं ।

इन मोमिनों के वास्ते, करी जाहिर खिलवत हक ।
तो द्वार अरस अज़ीम के, खोलके भानी शक ॥३०॥

उन ब्रह्मात्माओं के कारण ही दुनिया में परब्रह्म अक्षरातीत ने परमधाम (रंगमहल) की गुह्य प्रेम लीला जाहिर की है । उन्हीं के कारण अखण्ड परमधाम के दिव्य सुखों के द्वार (रहस्य) खोलकर सारे संशय दूर कर दिये हैं ।

इन मोमिन के वास्ते, बंध बांधे हक सुभान ।
अपने कलाम इसारते, खोल दई फिरकान ॥३१॥

इन ब्रह्मात्माओं के कारण ही प्रियतम अक्षरातीत ने धर्मग्रंथों में भविष्य कथन लिखवा कर, पहले से ही सारा कुछ निश्चित कर रखा था । कुर्आन में लिखे अपने सांकेतिक वचनों (कलाम अल्ला) को, स्वयं ही स्पष्ट कर रहे हैं ।

इन मोमिन के वास्ते, अरस से उतरे रेहेमत ।
इन मोमिन को हक ने, उठाए रोज क्यामत ॥३२॥

इन ब्रह्मात्माओं के कारण परमधाम से परब्रह्म की कृपायें दुनिया में अवतरित हुई हैं । परब्रह्म अक्षरातीत ने कियामत की इस पवित्र घड़ी में तारतम ज्ञान देकर उन मोमिनों को जागृत किया है ।

इन मोमिन के वास्ते, उतरे प्याले इशक ।
भर भर रूहों पिलावत, अपने हाथों हक ॥३३॥

उन ब्रह्मात्माओं के कारण ही प्रियतम अक्षरातीत प्रेम के प्याले (परमधाम का ज्ञान) लेकर संसार में प्रकट हुये हैं और पुनः पुनः आत्माओं को जी भर के परमधाम का आनंद दे रहे हैं ।

इन मोमिन के वास्ते, किया जाहिर हौज कौसर ।
मुरदे चौदे तबक के, उठाए मोमिनों की खातर ॥३४॥

इन ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के कारण ही परमधाम के दिव्य हौज कौसर ताल की शोभा को दुनिया में जाहिर किया है । ब्रह्मात्माओं के कारण ही चौदह लोकों के जीवों को (तारतम ज्ञान देकर) अखण्ड मुक्ति प्रदान की गई है ।

हुआ म्याराज रसूल पर, सो हुआ ऊपर सबे मोमिन ।
सो न्यामत अरस अज़ीम, करी जहान में रोशन ॥३५॥

जिस प्रकार रसूल मुहम्मद साहब पर मेअराज (साक्षात्कार हेतु परमधाम जाना) हुआ था, उसी प्रकार सभी ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) को भी परब्रह्म व उनके धाम का साक्षात्कार हुआ और उन मोमिनों ने उस दिव्य परमधाम की नैमतें (शोभा, स्वरूप व लीला) दुनिया में जाहिर की हैं ।

बारीकी अरस अज़ीम की, सो मोमिन वास्ते करी जाहिर ।
मोहोल मंदिर गलियां, सब देखने लगे बाहिर ॥३६॥

परमधाम का सूक्ष्म से सूक्ष्म वर्णन भी ब्रह्मसृष्टियों के कारण ही जाहिर किया जा रहा है । महल, मंदिर, गलियां व रंगमहल के बाहर की शोभा भी ब्रह्मात्माएं देख रही हैं।

अब कहूं भोम दूसरी, मंदिर भुलवनी बारे हज़ार ।
एक सौ दस मंदिर की, एक सौ दस हर हार ॥३७॥

अब दूसरी भोम में आये भुलवनी के बारह हज़ार मंदिरों का वर्णन करूंगा, जहाँ (नूरमयी दर्पण के) एक सौ दस मंदिरों की एक सौ दस हारें शोभा ले रही हैं ।

चारों तरफ बराबर, एक सौ दस दस की हार ।
ता के एक सौ उपर, भई जमा बारे हज़ार ॥३८॥

चारों ओर से ही ११० मंदिरों की ११० हारें दिखायी देती हैं, उनके कुल १२१०० मंदिर होते हैं ।

तामे सौ मंदिर का चौक जो, सब हार मंदिर दरम्यान ।
चौसठ मंदिर जागा चबूतरा, छत्तीस परदखिना पेहेचान ॥३९॥

इन १२१०० मंदिरों के मध्य में १०० मंदिर की जगह में १०० मंदिर (१० का लम्बा–चौड़ा) का चौक शोभा ले रहा है, जिनमें ६४ मंदिर की (८ मंदिर की लम्बी–चौड़ी) जगह में चबूतरा आया है और छत्तीस मंदिर की जगह में एक मंदिर चौड़ी परिक्रमा आई है ।

इन चबूतरे ऊपर, कहे थम्भ बत्तीस ।
आठ आठ की हार भर, ए पाइए मोमिन से बकसीस ॥४०॥

६४ मंदिर के (आठ मंदिर लम्बे–चौड़े) चबूतरे की किनार पर बत्तीस स्तम्भ सुशोभित हैं । हर दिशा में आठ आठ महराबें शोभायमान हैं जिनकी शोभा

ब्रह्मात्माओं की कृपा से समझ आती है ।

ए बत्तीस मेहेराब थम्भन के, ताके कहे बत्तीस द्वार ।
मध्य चबूतरे सिंघासन, गृद सब रूहें बैठनहार ।।४१।।

इन बत्तीस (३२) स्तम्भों के ऊपर ३२ महराबें आयी हैं, जिन्हें ३२ महराबी द्वार कहा गया है। चबूतरे के मध्य में नूरी सिंहासन पर युगल स्वरूप श्री राज श्यामाजी विराजते हैं और चारों तरफ चबूतरे पर सब सखियां बैठती हैं।

सरूप जुगल सिंघासन पर, बैठत हैं इत जब ।
सब रूहें खेले भुलवनी, आए ठौर पावे इत सब ।।४२।।

युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी इस सिंहासन पर जब विराजमान होते हैं, तब सब सखियाँ, भुलवनी के नूरी दर्पण से युक्त मंदिरों में, भुलवनी (भुलाने) का खेल खेलती हैं।

ए भुलवनी दरम्यान में, कह्या चौखूना चबूतर ।
याके आठ आठ द्वार, सामने चार द्वार चौकोनो पर ।।४३।।

भुलवनी के मंदिरों के मध्य में जो चौरस चबूतरा आया है, उसके सामने चारों दिशाओं में भुलवनी के मंदिरों के आठ–आठ दरवाजे दिखायी देते हैं और दो–दो दरवाजे चारों कोनों के मंदिरों में शोभा ले रहे हैं।

ए चालीस द्वार चबूतरे, है चारों तरफ बराबर ।
नूर जेवर कई लहरा उठे, ए क्यूं कहूं शोभा सुन्दर ।।४४।।

इस प्रकार चबूतरे के चारों तरफ भुलवनी के मंदिरों के १०-१० कुल चालीस दरवाजे शोभा ले रहे हैं । यहाँ पर नूरमयी जवाहरातों की कई रंगों की किरणें लहराती हुयी दिख रही हैं । यहाँ की शोभा और सुंदरता का वर्णन माया के नश्वर शब्दों से किस प्रकार करूं?

चौक खड़े जब देखिए, चारों तरफो दस दस हार ।
पचास पचास मंदिर की, सब साम सामी पड़े द्वार ।।४५।।

चबूतरे के मध्य खड़े होकर जब चारों तरफ देखते हैं, तो ५०-५० मंदिरों की १०-१० हारें दिखाई देती हैं । उन मंदिरों के द्वारा आमने–सामने शोभायमान हैं।

बाकी रहे दस मंदिर, ता को चौक दरम्यान ।
ए समझेंगे मोमिन, जाको हुई हक पेहेचान ।।४६।।

११० मंदिर की चौड़ाई में से दायें–बायें ५०-५० मंदिर हैं, मध्य में शेष १० मंदिर बचता है, जहां दस मंदिर का लम्बा–चौड़ा चौक सुशोभित है (जिसमें आठ मंदिर का लम्बा–चौड़ा चबूतरा है)। इस रहस्य को वही ब्रह्मात्माएं समझ सकती हैं, जिन्हें अक्षरातीत श्री राज जी की पहचान हो गयी होती है ।

हर मंदिर चार चार है, ए जो कहे नूर द्वार ।
बारे हज़ार मंदिर के, जमा अड़तालीस हज़ार ।।४७।।

भुलवनी के प्रत्येक मंदिर में नूरमयी चार चार दरवाजे आए हैं तब दिखने में बारह हज़ार मंदिरों के कुल अड़तालीस हज़ार (४८०००) दरवाजे होते हैं।

है द्वारने इनकै जमा, गिनती चौबीस हज़ार ।
हक हादी रूहें खेलन के, कई हांस सुख बिहार ।।४८।।

किंतु चूंकि प्रत्येक दरवाजे दो मंदिरों की संधि में होने से दोनों तरफ गिनाते हैं, इसलिये बारह हज़ार मंदिरों के गिनती में चौबीस हज़ार (२४०००) दरवाजे होते हैं । इन नूरमयी दर्पण के मंदिरों में श्री राजश्यामा जी और सखियाँ कई प्रकार से हंसी मजाक करते हुए आनंद में लीला विहार करते हैं ।

एक दूजे के लगते, दिवाल मंदिर में द्वार ।
तिन वास्ते चौबीस हज़ार, हक हादी करें बिहार ।।४९।।

भुलवनी के प्रत्येक मंदिर आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, उनकी संधि की दीवालों में दरवाजे आये हैं । इसीलिए बारह हज़ार मंदिरों के चौबीस हज़ार दरवाजे होते हैं । जहां श्री राज श्यामा जी सखियों के साथ लीला विहार करते हैं ।

ए थम्भ दिवाल चबूतरे, सब जोत जवेर नूर ।
तिन की रोशनी इन जुबां, सो क्यों कर कहूं ज़हूर ।।५०।।

भुलवनी के मंदिरों के दिवाल, चबूतरे एवं स्तम्भ सभी नूरी जवाहरातों से प्रकाशमान हो रहे हैं । उनकी रोशनी व शोभा का वर्णन माया की इस झूठी

जिह्वा से किस प्रकार करूं ?

ए तो शब्दातीत के, पार के पार जोत जवेर ।
सो सुपन आकार से, क्यूं कर कहूं मैं फेर ॥५१॥

ये तो शब्दातीत बेहद मण्डल से परे अक्षरधाम व उससे भी परे परमधाम के तेजोमयी ज्योति से युक्त जवाहरात हैं, उनकी शोभा का वर्णन इस स्वाप्निक तन से मैं किस प्रकार करूं ?

नेक कह्या मैं इन जिमी, सो मोमिनों की खातर ।
ए समझेंगे बोहोतक, इनों की अकल सब पर ॥५२॥

उन ब्रह्मात्माओं के कारण ही मैने इस संसार में उसका थोड़ा सा वर्णन किया है, वे ब्रह्मात्माएं इस थोड़े वर्णन से ही बहुत समझ लेंगे । क्योंकि उनके पास सबसे श्रेष्ठ जागृत बुद्धि होती है ।

महामत कहे ए मोमिनों, करो सुख अपने याद ।
आओ भुलवनी मंदिरों, देख अपनी बुनियाद ॥५३॥

श्री महामति जी कह रहे हैं, कि हे मेरे प्राणों से प्यारे साथ जी ! अपने निज घर के अखंड सुखों को याद करो । और अपने निजस्वरूप व मूल संबंध को ध्यान में रखते हुए, भुलवनी के मंदिरों में आओ और आनंद में लीला विहार करो ।

प्रकरण-१६, चौपाई-७७५

भोम तीसरी

इस प्रकरण में श्री रंगमहल की तीसरी भूमिका का अद्‌भुत वर्णन है । यह वर्णन श्री राज जी ने अपने हुक्म से करवाया है ताकि ब्रह्मात्माएं अपनी आत्मिक नज़र निजघर परमधाम में ले जा सकें । श्री राज जी के हुक्म के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता है और मुख से एक शब्द भी उच्चरित नहीं होता है । श्री राज जी के हुक्म के बिना ब्रह्म सृष्टियों और ईश्वरी सृष्टियों का दिल चितवन (चिंतन) भी नहीं कर सकता है ।

लिख्या हदीसों फुरमान में, हक़ीकत जो इसलाम ।
सो तो बका घर कायम, महंमद अलेहसलाम ॥१॥

कुर्आन पाक एवं हदीसों में जो दीने इस्लाम (शांति के मार्ग) की

हक़ीकत (सत्य ज्ञान) लिखी है, वह तो मुहम्मद अलैहिस्सलाम (श्यामा जी) का अखण्ड घर परमधाम (अर्श आज़म) है ।

जो कहे हक़ सुभान ने, जब हुआ म्याराज ।
सुने रसूल अल्लाह ने, वास्ते मोमिन के काज ।।२।।

जब मुहम्मद साहब को मेअराज (साक्षात्कार) हुआ था, उस समय हक सुब्हान तआला (प्रियतम अक्षरातीत) ने उनसे ९० हज़ार हर्फ - बातें कही थी । उन्हें मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये ही रसूल अल्ल्लाह ने श्रवण किया था ।

नब्बे हज़ार बातां कही, तीस का हुआ हुकम ।
इन को जाहिर कीजियो, तीस इसारतें राखियो तुम ।।३।।

परब्रह्म अक्षरातीत ने उनसे नब्बे हज़ार शब्दों में बातें कही । उसमें से तीस हज़ार शब्द (शरीयत की) बातों को दुनिया में जाहिर करने का आदेश हुआ । हकीकत के तीस हज़ार शब्दों को संकेतों में कहने का आदेश हुआ ।

और तीस सुनावत, सो दिल में राखो छिपाए ।
आखर को तुम आए के, कीजो सिफाएत उमत बोलाए ।।४।।

और जो तीस हज़ार शब्द मारिफत (परम सत्य) के सुनाये हैं, उसे अपने दिल में छिपाकर रखना । आखिरत के समय आप पुनः आकर उम्मत (ब्रह्मात्माओं) को जगाकर उनकी सिफायत करना अर्थात् उन्हें हकीकत व मारिफत के वे शब्द सुनाना ।

ए क्यों न मानेंगे मोमिन, वह खुदा के कह्या कलाम ।
एही रसूल अल्ला केहेत हैं, एही दीन इसलाम ।।५।।

मोमिन (ब्रह्मात्माएं) प्रियतम परब्रह्म के कहे उन वचनों को क्यों नहीं मानेंगे (अवश्य मानेंगे) । वही रसूल अल्लाह (श्यामाजी) उसका वर्णन कर रहे हैं। यही वास्तविक दीने इस्लाम हकीकी (सत्य शांति का मार्ग) है ।

तिस वास्ते इसारतें लिखी, ए खोल न सके कोए ।
जो त्रैगुन मिले खेल खावन्द, ए काम और काहूं से ना होए ।।६।।

इसी कारण कुर्आन में हकीकत के वचनों को संकेतों में लिखा, ताकि उनके रहस्यों को कोई समझ ना सके । चाहे १४ लोकों के स्वामी त्रिदेवा क्यों ना एकत्रित हो जायें । किंतु कलाम अल्लाह (कुर्आन) के रहस्य मुहम्मद स.अ.व. (श्यामाजी) के सिवा और कोई नहीं खोल सकता है ।

मैं नजूम कह्या भाईयों वास्ते, पीछे कूच किया दुनी से ।
सोई भाईयों आगे नजूम, आए खोलों मेरा मैं ।।

चौ.३२ प्र.६ मारफत सागर

मैं आउंगा यारों वास्ते, खोलों नजूम मेरा मैं ।
मेरे कूच नजूमी कोई ना रह्या, मेरा नजूम खुले मुझसे ।।

चौ.८१ प्र.१७ मारफत सागर

फिरकान को खोलना, ए ना होए और को काम ।
कोई होए ना कादर इन का, बिना महंमद अलेहसलाम ।।७।।

कुर्आन के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करने का कार्य अन्य किसी से नहीं हो सकता । मुहम्मद अलैहिस्सलाम (श्यामाजी) के सिवा अन्य किसी में भी इसका सामर्थ्य नहीं है ।

जब खोले ए फिरकान को, इसारतें हक़ सुभान ।
ए होए न बिना रसूल, मोमिन लीजो पेहेचान ।।८।।

कुर्आन पाक में वर्णित परब्रह्म के उन सांकेतिक कथनों के रहस्य, रसूल स.अ.व. के बिना अन्य कोई भी नहीं खोल सकता है । जब वे (हकी सूरत के रूप में) उनके रहस्य स्पष्ट करेंगे, तब हे ब्रह्मात्माओ ! आप उनकी पहचान कर लेना ।

तब तुम सो जो कहे, तुम यकीन जानो कहा हक़ ।
तिन उपर ईमान में, जिन कोई ल्याओ शक ।।९।।

हे ब्रह्मात्माओ ! तब रसूल साहब (हकी सूरत) तुमसे जो कुछ भी कहेंगे, तुम निश्चित रूप से जानना, कि वह सब कुछ प्रियतम अक्षरातीत ने ही कहा है । उनके कथनों में कोई जरा भी संदेह ना करना, (पूर्ण विश्वास करना)।

सो आए अपने कौल पर, करी दावत सब उपर ।
खोली किताब फिरकान, वास्ते ख़ास गिरोह खातर ।।१०।।

अब वे मुहम्मद स.अ.व. (श्यामाजी) अपने वायदे के अनुसार हकी सूरत के रूप में पधार चूके हैं और सारी दुनिया को शाश्वत सुख-शांति के लिये आमंत्रित कर रहे हैं । उन्होंने ब्रह्मात्माओं के खासुलखास समूह की खातिर

कुर्आन के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट कर दिया है ।

करी सिफाएत तिन की, खोले अरस अज़ीम के द्वार ।
देखाई ठौर बका को, जो है नित बिहार ॥११॥

मुहम्मद साहब ने (हकी सूरत के रूप में) उन ब्रह्मात्माओं की सिफायत करते हुए अखण्ड परमधाम (अर्शे आज़म) का ज्ञान उन्हें प्रदान कर दिया है और उन्हें अखण्ड परमधाम का दर्शन करा दिया है, जहां परब्रह्म और उन आत्माओं की नित्य लीला विहार है ।

जो हरफ़ कहे खुदाए ने, तब जो सुने थे कान ।
और जो लिखी इसारतें, बीच किताब फिरकान ॥१२॥

जो हकीकत के तीस हज़ार शब्द खुदा तआला ने मुहम्मद साहब से कहे थे और जिन्हें सुनकर मुहम्मद साहब ने उन्हें कुर्आन पाक में संकेतों में लिखा था ।

सो सारी खोल के देखाई, आगे गिरो मोमिन ।
सो ईमान ल्याए महाजर, हुआ तिनो का दिल रोशन ॥१३॥

सारे कथनों के रहस्य ब्रह्मात्माओं के समक्ष स्वयं वे ही (हकी सूरत महामति जी के रूप में) स्पष्ट करके दिखा रहे हैं । खुदा (परमात्मा) के मार्ग में घर बार छोड़ कर निकल पड़ने वाले मुहाजिरों ने उन पर विश्वास किया । उनके दिल उस दिव्य ज्ञान से प्रकाशित हो गये । (यहां सूरत से श्री जी के साथ घर–बार छोड़कर निकल पड़ने वाले सुंदरसाथ को मुहाजिर कहा गया है।)

आए जिन वास्ते रसूल, ख़ासल ख़ास उमत ।
ए उतरीं अरस अज़ीम से, तिन का उठना सोई क्यामत ॥१४॥

जिन ब्रह्मात्माओं (खासुलखास उम्मत) के कारण रसूल साहब दुनिया में आये, वे ब्रह्मात्माएं परमधाम (अर्शे अज़ीम) से दुनिया में अवतरित हुयी हैं । उनका अपने मूल तनों में जागृत होना ही कियामत है ।

तिनों की सिफाएत करी, हुआ तिनों को हक दिदार ।
इसलाम आया हाथ इनों के, इनों को दिया परवरदिगार ॥१५॥

रसूल साहब (हकी सूरत) ने उन ब्रह्मात्माओं की सिफायत करी (तारतम ज्ञान प्रदान किया), जिससे उन्हें परमात्मा का दर्शन प्राप्त हुआ । उन्हें

सच्चा प्रेम, आनन्द व शांति का मार्ग प्राप्त हुआ, जो प्रियतम अक्षरातीत ने उन्हें कृपा करके प्रदान किया है।

तो अरस कह्या दिल मोमिन, सो अरस हक़ बैठक ।
हक सूरत आई इनों दिल में, तामें कछू ना शक ।।१६।।

इसी कारण ब्रह्मात्माओं के हृदय को परमात्मा का धाम कहा गया है, क्योंकि उनके दिल में परमात्मा की बैठक होगी । प्रियतम श्री राज जी का स्वरूप उनके दिल में आ गया, इसमें जरा भी संशय नहीं है ।

तो मोमिनों के दिल में, आई हक़ न्यामत ।
उतरी अरस अज़ीम से, ए ही बख़त रोज क्यामत ।।१७।।

इसी कारण मोमिनों (ब्रह्मात्माओ) के दिल में श्री राज जी की सारी नैमतें (इल्म, इश्क, हकीकत, मारिफ्त आदि) आयी हैं । जिस घड़ी में वे आत्माएं अपने परमधाम से संसार में अवतरित हुयी थीं, यह वही कियामत का समय है (क्योंकि जागृत होंगी, तो भी वही समय रहेगा)

अरस इलाही खजाना, खरच होत उपर मोमिन ।
तो सिफाएत के सुकन, हुए चौदे तबक रोशन ।।१८।।

अक्षरातीत श्री राज जी एवं परमधाम का दिव्य खजाना (तारतम ज्ञान) ब्रह्मात्माओं पर खर्च हो रहा है । इसी कारण सिफायत के वचनों - ब्रह्मज्ञान से चौदह लोक प्रकाशमान हो रहा है ।

इन सिफाएत के सुकन से, होत हक़ दिदार ।
और आठे भिस्त के, खोले सारे द्वार ।।१९।।

इन सिफायत (अनुशंसा) के वचनों (तारतम ज्ञान) से परमात्मा का दर्शन प्राप्त होता है । साथ ही जगज् जीवों के लिये आठों बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) के द्वार भी खोल दिये हैं ।

इन सिफायत के सुकन से, खोले अल्ला कलाम ।
इन मोमिनों की सोहोबत से, पहोंचे दीन इसलाम ।।२०।।

इन सिफायत के वचनों (तारतम ज्ञान) से ब्रह्मात्माएं कलाम अल्लाह (कुर्आन पाक) के सारे रहस्य स्पष्ट करेंगे। उन ब्रह्मात्माओं के सत्संग से अन्य जीव भी शांति के मार्ग में आ जायेंगे ।

इन सिफाएत के सुकन से, देखी हक़ खिलवत ।
ईसा मेहेंदी महंमद, मेला मोमिनों का इत ॥२१॥

उन सिफायत के वचनों (तारतम ज्ञान) से हक की खिल्वत (प्रियतम अक्षरातीत के गुह्य रंगमहल) का दीदार हो गया, जहां ईसा रूहूल्ला, इमाम महदी, मुहम्मद तथा ब्रह्मात्माओं का मूल मिलावा है । (यहां ईसा, मुहम्मद व इमाम महदी तीनों से तात्पर्य श्री श्यामा जी व श्री राजजी से है क्योंकि इन तीनों स्वरूपों में श्री श्यामा जी की आत्मा भी थी और श्री राजजी का आवेश भी)

इन सिफाएत के सुकन से, ए हुआ सेहेरग से नजीक हक़ ।
जो कोई कानो सुने, ताकी रहे ना सुभे सक ॥२२॥

इन सिफायत के वचनों (तारतम ज्ञान) से श्रीराजजी शहरग (प्राणनली) से भी नजदीक हो गये (मूल मिलावे में प्रियतम के चरणों में बैठे होने का ज्ञान हो गया) । जो कोई भी तारतम ज्ञान श्रवण करता है, उसके हृदय में जरा भी संशय नहीं रहता है ।

ए सिफाएत भई जिनको, देखा तिन हौज कौसर ।
जिन गुसल किया तिन में, ताके आवे ना कोई पटन्तर ॥२३॥

यह सिफायत जिन पर हो गयी, (जिन्हें तारतम ज्ञान प्राप्त हो गया), उन्होंनै परमधाम के हौज कौसर ताल का दर्शन प्राप्त कर लिया और जिसने आत्म स्वरूप से उस हौज कौसर ताल में स्नान कर लिया, फिर उसके और परमधाम के बीच में कोई पर्दा नहीं रह जाता है ।

ए सिफाएत भई जिनको, देख्या अरस अज़ीम का द्वार ।
ताको नूर मकान और रह्यो, सो पोहोंचा परवरदिगार ॥२४॥

जिनकी यह सिफारिश (सिफायत) हो जाती है, वह तारतम ज्ञान प्राप्त होने से परमधाम (रंगमहल) के मुख्य द्वार की शोभा देख लेता है । उसके लिये नूरमकान (अक्षरधाम) भी पीछे रह जाता है । वह नूरमकान (अक्षर) से भी परे अर्शे आज़म (रंगमहल) में प्रियतम के चरणों में पहुंच जाता है ।

ए सिफाएत भई जिनको, फिरे अरस गलियों दरम्यान ।
सो ठौर हक़ सुभान की, देवे सब पेहेचान ॥२५॥

यह सिफायत जिनके प्रति हो जाती है (जिन्हें तारतम ज्ञान मिल जाता है), वह परमधाम की नूरी गलियों में रमण करने लगता है । वह तारतम ज्ञान

प्रियतम अक्षरातीत के दिव्य धाम की सारी पहचान करा देता है ।

ए सिफाएत भई जिनको, तिन देखी खिलवत हक़ ।
ताको पैदर पे प्याले, अरस से उतरे इशक ॥२६॥

मुहम्मद की सिफायत (तारतम ज्ञान) जिनको प्राप्त हो जाती है, वह प्रियतम अक्षरातीत की गुह्य खिलवत (रंगमहल) की शोभा व लीला का साक्षात्कार प्राप्त कर लेता है । उसके हृदय में परमधाम से इश्क के प्याले (दिव्य प्रेम व आनंदमयी लीलाओं के सुख) पुनः पुनः प्रकट होने लगते हैं ।

जिनको ए सिफाएत भई, मैं क्या कहूं ताके सुख ।
इन जिमी बैठ देखहीं, नूरजमाल का मुख ॥२७॥

जिन पर मुहम्मद की सिफायत हो जाती है, अर्थात् जिन्हें ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो जाता है । उनके सुख मैं किस प्रकार कहूं ? वे इस नश्वर संसार में बैठे बैठे ही अक्षरातीत परब्रह्म के मुखारविंद का दर्शन प्राप्त कर लेता है ।

जिनको एह सिफाएत भई, जासो होवे कायम चौदे तबक ।
रेहेमत तिन पर भेजत, अपनी सुभान हक़ ॥२८॥

जिन पर मुहम्मद की सिफायत हो जाती है (तारतम ज्ञान प्राप्त हो जाता है), उन ब्रह्मात्माओं पर हक सुब्हान तआला (प्रियतम अक्षरातीत) अपनी कृपायें, पल पल भेजते रहते हैं । उस तारतम ज्ञान से चौदह लोकों के सम्पूर्ण प्राणी अखण्ड हो जायेंगे।

जिनको एह सिफाएत भई, तिन देख्या अरस बका ठौर ।
ए मेहेर मोमिन बिना, ले ना सके कोई और ॥२९॥

जिन पर मुहम्मद (हकी सूरत) की सिफायत हो जाती है, वह अखण्ड परमधाम का दर्शन प्राप्त कर लेता है । यह कृपा ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के अतिरिक्त अन्य कोई प्राप्त ही नहीं सकता है ।

तो इत अरस अज़ीम के, कही महंमद अलेहसलाम ।
सो कहूं आगे मोमिनो, पकडो कायम द्वार इसलाम ॥३०॥

इस कारण परमधाम (अर्शे अज़ीम) का मुहम्मद अलैहिस्सलाम (हकी सूरत) ने वर्णन किया है । उसे ब्रह्मात्माओं के समक्ष कहने जा रहा हूं, उस शाश्वत सुख व शांति के अखण्ड मार्ग को ग्रहण कर लो ।

कहूं अरस अज़ीम की, भोम तीसरी तुम ।
ए तुमको देखावत, हक़ सुभान का हुकम ।।३१।।

अब अर्शे अज़ीम (रंगमहल) की तीसरी भूमिका का वर्णन आपके समक्ष कर रहा हूं । यह आपको हक सुब्हान श्री राज जी के आदेश से ही दिखाया जा रहा है।

जिनको जेता हुकम, केहेने निकसे जुबांन ।
सो तेता ही बोलेगा, कम न जादा जान ।।३२।।

जिस स्वरूप को जितना वर्णन करने का हुक्म होता है, वह परमधाम का उतना ही वर्णन करता है । उससे कम या ज्यादा किसी के भी जिह्वा से वर्णन नहीं हो पाता है ।

एक पात ना हले हुकम बिना, मुख ना निकसे दम ।
दिल चितवन भी ना करे, फिरस्ते बिना हुकम ।।३३।।

परमात्मा के हुक्म (आदेश) के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता, और ना ही उनके आदेश के बिना किसी के मुख से कोई शब्द ही निकल सकता है । हुक्म की शक्ति (फरिश्ते) के बिना किसी का दिल चितवनि (चिंतन) भी नहीं कर सकता।

तिस वास्ते तुम को कहूं, अरस अज़ीम की ठौर ।
हक़ीकत भोम तीसरी, बिना मोमिन न जाने और ।।३४।।

इस कारण आप सबके समक्ष परमात्मा के आदेश से परमधाम की शोभा का वर्णन कर रहा हूं । रंगमहल की तीसरी भूमिका की वास्तविकता ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता ।

ए अरस जवेर सब चेतन, सो तो हक़ दिल माफक़ ।
नाहीं निमूना इन का, तिनमें नाहीं शक ।।३५।।

ये परमधाम के जवाहरात सब चेतन हैं और वे श्री राज जी के दिल के अनुसार शोभा व सुंदरता लिये हुए हैं । इनका इस दुनिया में कोई उदाहरण नहीं है । इसमें कोई भी संशय नहीं है ।

पर कहे बिना बने नहीं, क्यूं आवे दिल मोमिन ।
ए तो हक़ का हुकम, करत सब रोशन ।।३६।।

परंतु कहे बिना भी बनता नहीं, क्योंकि कुछ भी वर्णन ना किया जाये तो ब्रह्मात्माओं के दिल में उसकी शोभा कैसे बसेगी। यह तो प्रियतम श्री राज जी का हुक्म ही है, जो परमधाम की सारी शोभा जाहिर करवा रहा है ।

कहूं तीसरी भोम की, जो पड़साले बैठक ।
जित दीदार होत आशकों, देत सुभान हक ॥३७॥

अब रंगमहल के तीसरी भोम की पड़साल का वर्णन करूंगा, जहाँ श्री राजश्यामा जी और सखियां विराजमान होते हैं। जहाँ से हक सुब्हान (प्रियतम अक्षरातीत) अपने आशिक पशु-पक्षियों को प्रातःकाल दर्शन देते हैं ।

बारे हज़ार मंदिर, साम सामी दोए हार ।
ए गृद फिरते धाम के, जित हक़ रूहें खेलनहार ॥३८॥

रंगमहल में सर्वप्रथम छः छः हज़ार मंदिरों की दो हारें (पंक्तियां) घेर कर आई हैं, जहाँ पर श्री राज श्यामा जी और सखियाँ अनेक प्रकार से लीला विहार करते हैं ।

कही चार हार हवेलीन की, कही दोनों हारों के अन्दर ।
दो सौ एकतीस हवेलियां, तित रूहें खेले अन्दर ॥३९॥

मंदिरों की दोनों हारों के भीतरी तरफ चौरस हवेलियों की चार हारें शोभा ले रही हैं । एक हार में २३१ हवेलियां आई हैं, जिनके अंदर सखियाँ आनंदपूर्वक खेलती हैं ।

ऐसी चार हार की गिनती, कही नव सौ चौबीस ।
तामें कई थम्भ गली मंदिर, हक हादी दई बकसीस ॥४०॥

दो सौ एकतीस हवेलियों की चार हार आने से कुल ९२४ हवेलियाँ हुई, जिनमें कई स्तम्भ, गलियां व मंदिर हैं । यह सुख श्री राज श्यामा जी ने कृपा करके प्रदान किया है ।

जो भोम तले की गिनती, त्यों ही दूसरी तीसरी जान ।
तैसे थम्भ दिवालें द्वार ने, रहे मोमिन दिल पेहेचान ॥४१॥

रंगमहल की प्रथम भूमिका में हवेलियों, मंदिरों आदि की जो गिनती आयी है, वही दूसरी, तीसरी आदि सभी भूमिकाओं में आयी है । वैसे ही स्तम्भ, दीवालों व द्वारों की शोभा आयी है । उसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के हृदय में रहती है ।

अब दिवालें हीरन की, देखो दस मंदिर ।
छज्जा दस मंदिर भर, हक़ हादी बैठे अंदर ।।४२।।

रंगमहल की पूर्व दिशा में आए दस मंदिर के हांस की दीवारें हीरे की है । उसके ऊपर तीसरी भोम में दस मंदिर का लम्बा और दो मंदिर का चौड़ा छज्जा आया है, जहाँ श्री राजश्यामा जी विराजते हैं ।

भोम से ऊंचा कमर लो, ए जो कह्या चबूतर ।
छज्जे जिमी बराबर, तिन ऊंचाई के तर ।।४३।।

तीसरी भोम की ज़मीन से तीन सीढ़ी ऊंचा चबूतरा आया है । छज्जे (पड़साल) की ज़मीन भी चबूतरे की ऊंचाई के बराबर आई है ।

चार मंदिर माफक़ चबूतरा, तिन दाएं बाएं दरम्यान ।
नव नव मेहेराबी द्वार ने, ताकी मोमिन करें पेहेचान ।।४४।।

दस मंदिर के लंबे और दो मंदिर के चौड़े छज्जे की पश्चिम दिशा में दस मंदिर की दहलान आई है जिसमें ९ मेहराबी द्वार सुशोभित हैं । मध्य में चार मंदिर की दहलान आई है, जिसके दाएँ बाएँ तीन तीन मंदिर हैं (जो समय आने पर दहलान रूप में परिवर्तित हो जाते हैं) । चार मंदिर की देहेलान के पश्चिम में चार मंदिर का चबूतरा आया है । उसकी पहचान ब्रह्मात्माएं ही करती हैं ।

दस थम्भ छज्जे के, दस दिवाल मिने ।
ए साम सामें बीस थम्भ, मोमिन गिने ठौर अपने ।।४५।।

१० मंदिर के लम्बे व दो मंदिर के चौड़े छज्जे के पूर्वी किनार में दस स्तम्भ आये हैं और पश्चिम में दस स्तम्भ दीवार में आये हैं। ये बीस स्तम्भ आमने–सामने सुशोभित हैं। ब्रह्मात्माएं ही अपने निजघर के स्तम्भों की गणना करती हैं।

कहे नव द्वार मेहेराबी, कहे थम्भन के जे ।
और दोए दोए कोने के, ए अग्यारे मेहेराब भए ।।४६।।

छज्जे (पड़साल) की पूर्व दिशा में दस स्तम्भों पर नौ महराबें आयी हैं और छज्जे की उत्तर व दक्षिण दिशा में (दायें–बायें) दो महराबें और आने से कुल ग्यारह महराबों की शोभा हुई।

इन सामे नव मंदिरन के, ए जो कहे मेहेराब ।

सो तो हैं दिवाल में, कहे ऊपर छज्जे के बाब ।।४७।।

पूर्व के नौ महराबों के सामने जो नौ मंदिरों की नौ महराबें कही गयी हैं, वे दीवार में (अक्शी) आयी हैं, जो कि छज्जे के आगे दहलान में हैं।

इन मुक़ाबिल नव अंदर के, तामे तीन चबूतरे पर ।
और तीन दाएं तीन बाएं, कहे नव भोमन खातर ।।४८।।

छज्जे की पश्चिमी किनार पर आई इन नौ महराबों के भीतरी तरफ भी नौ महराबें आई हैं, जिनमें से तीन महराबें मध्य चबूतरे से लगकर आई हैं और तीन-तीन महराबें चबूतरे के दाएँ बाएँ स्थित मंदिरों की दीवारों पर आई हैं । इस प्रकार की शोभा सभी नौ भोमों में है।

और अन्दर द्वार पांखन के, तीन तीन मंदिर चार चार द्वार ।
यूं करते ए आठों भए, सो मोमिन देखनहार ।।४९।।

दाएँ बाएँ आए इन ३-३ मंदिरों में पाखे (संधि) की दीवारों में ४-४ द्वार आएँ हैं, दोनों तरफ के मिलाकर कुल आठ द्वार हुए । यह शोभा ब्रह्मात्माएं ही देखेंगी ।

दोए बाजू इन दिवाल के, उतरी पावड़ियां तीन ।
तहां से मंदिर में जाइए, इत मोमिन ल्यावे आकीन ।।५०।।

दहलान के दाएँ बाएँ, जो तीन तीन मंदिर आएँ हैं, उनमें से अंतिम मंदिर से दोनों दिशा में साथ लगते मंदिर में तीन तीन सीढ़ियाँ उतरी हैं। साथ जी ! इन सीढ़ियों से उतर कर मंदिरों में जाइए । इस शोभा पर ब्रह्मात्माएं ही विश्वास करती हैं।

ए चबूतर देहलान लगता, ता पर थम्भ है चार ।
ता के दरवाजे तीन, हक़ हादी करे विहार ।।५१।।

यह चबूतरा दहलान से लगकर आया है, जिस पर (चबूतरे की पश्चिमी किनार पर) चार स्तम्भ आएँ हैं, जिनके मध्य तीन महराबी द्वार शोभित हैं । यहाँ पर श्री राज श्यामा जी विहार करते हैं ।

एक दाएं एक बाएं बने, मिल मेहेराब पांच भए नूर ।
मोमिनों को हक सुभान, दिखावत बका ज़हूर ।।५२।।

चबूतरे के दायें–बायें (उत्तर व दक्षिण दिशा में) दो महराबें और

आयी हैं। इस प्रकार चबूतरे पर कुल पांच महराबें होती हैं। हक सुब्हान मोमिनों को अखंड परमधाम की शोभा दिखा रहे हैं ।

सीढ़ियां चबूतरे चढ़ती, तिन चौथे चबूतरे पर ।
ए सब जुगत जवेरन की, ए शोभा अति सुन्दर ।।५३।।

चार मंदिर के चबूतरे पर अठ्ताईस स्तम्भ के चौक से ३ सीढ़ियां चढी हैं , चौथी सीढ़ी चबूतरे पर होती है। यह संपूर्ण शोभा नूरी जवाहरातों की है, जो कि अत्यंत सुंदर है।

और तीन दाएं तीन बाएं, ए जो कहे मंदिर ।
तिन आगे एक चोतरी, माफ़क दरवाजे पैठे अंदर ।।५४।।

दहलान के दाएँ बाएँ जो तीन-तीन मंदिर आएँ हैं, उन मंदिरों के पश्चिम द्वार के सामने, एक-एक छोटे चबूतरे (चांदे) दरवाजे के अनुसार चौड़ाई में आये हैं, वहाँ से अंदर आते हैं।

तीन तीन सीढ़ियां उतरती, जो कही बगलो दोए ।
ए सामें छ बगलों, सो सात सुमार कही सोए ।।५५।।

उन चबूतरों (चांदों) के दाएँ बाएँ से तीन-तीन सीढ़ियाँ गलियों में उतरी हैं । इस प्रकार दहलान के दायें–बायें 3–3 मंदिरों में छः सीढ़ियां उतरी हैं। एक सीढ़ी चार मंदिर के चबूतरे से उतरी है, तो गिनती में कुल सात सीढ़ियाँ होती हैं।

ए चौक अट्ठाइस थम्भन के, दस तरफ दहेलान ।
दस तरफ हवेलीन के, चार चार दोए बगलों जान ।।५६।।

चार मंदिर के चबूतरे के सामने पश्चिम में अट्ठाइस स्तम्भ का चौक सुशोभित है, जिसके दस स्तम्भ दहलान की तरफ आए हैं और दस स्तम्भ हवेलियों की ओर पश्चिम दिशा में आएँ हैं । चार चार स्तम्भ उत्तर व दक्षिण दिशा में शोभा ले रहें हैं ।

लम्बाई बारे मंदिर की, चौड़ाई मंदिर सात माफ़क ।
हक़ हादी रूहें रमन को, रूहें आवत भरी इशक ।।५७।।

अट्ठाइस स्तम्भ का चौक उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर बारह मंदिर का लंबा (परिक्रमा की गली सहित) आया है और पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर

सात मंदिर का चौड़ा आया है । इश्क से परिपूर्ण सखियां युगल स्वरूप श्री राज-श्यामा जी के साथ रमण करने के लिए यहाँ आती हैं ।

और दूसरी हार मिने, आवत आसमानी मंदिर ।
जहाँ प्रात समे श्री ठकुरानी जी, सिनगार को आवे अन्दर ।।५८।।

छः हज़ार मंदिरों की दूसरी हार में, अठ्ठाइस स्तम्भ के चौक की दक्षिण दिशा में जो पहला मंदिर है, वह आसमानी रंग का है, जहाँ प्रातः श्री श्यामा जी श्रृंगार के लिये आती हैं ।

सिनगार चार चार सखियां, ले खड़ी सिनगार के साज़ ।
सुन्दर भूखन चरन के, अति मधुरे उठत आवाज़ ।।५९।।

चार चार सखियां श्रृंगार की सामग्री लिए श्री श्यामा महारानी की सेवा में हाजिर हैं । श्री श्यामा जी चरणों के आभूषण अति सुन्दर हैं, जिनसे अत्यंत मधुर ध्वनि निकलती है ।

बैठत चौकी ऊपर, रूहें ठाढ़ी रहे पास ।
अति प्यारी रस प्रेम भरी, रहे सदा सेवन की आश ।।६०।।

श्री श्यामा जी आसमानी रंग के मंदिर में चौकी पर विराजमान होती हैं और सखियाँ उनके पास में खड़ी रहती हैं । सभी सखियाँ अति प्यारी, आनंद व प्रेम रस से भरी श्री श्यामा जी की सेवा करने की सदा ही आस लगाए रहती हैं ।

ए पावत सुख सेवन में, सरूपै जिनके इशक ।
ए क्यों कहूं सुख तिनके, जाको नैनों निरखत हक़ ।।६१।।

जिन ब्रह्म प्रियाओं के स्वरूप ही इश्क के हैं, वे सदा ही श्री राजश्यामा जी की सेवा में सुख पाती हैं । उन सखियों के सुखों का मैं किस प्रकार वर्णन करूँ, जिन्हे प्रियतम श्री राज जी प्रेम भरी दृष्टि से निहारते हैं ।

और हर पौरी मिने, चबूतरे लगते मंदिर तीन ।
और तरफ दाहिने देखियो, रहे मोमिन दिल आकीन ।।६२।।

दहलान के दाएँ बाएँ जो तीन तीन मंदिर आएँ हैं, उनके पश्चिम दिशा के दरवाजों के आगे चबूतरों (चांदों) की शोभा आई है । मोमिनों के दिल में इस शोभा (वर्णन) के प्रति पूर्ण ईमान रहता है ।

तहां श्री ठकुरानी जी, पौढ़त समे मध्यान ।
नीले ना पीले रंग मंदिर, ताकी करो पेहेचान ।।६३।।

दोपहर के समय (१२ से ३ बजे तक) श्री ठकुरानी जी दहलान की दक्षिण दिशा में (दाहिने तरफ) आए दूसरे मंदिर में, जो कि हरे व पीले रंग से सुशोभित है, शयन की लीला करती हैं । इस लीला की पहचान कीजिए । (इस दूसरे मंदिर के स्तम्भ व महराबें पाच व पुखराज के नगों की हैं, जिससे दोनों रंगों की झलकार मंदिर में पड़ती है)

लगते चबूतरे के, एक मंदिर छोड़ के ।
तहां दूजा मंदिर कह्या, नीला पीला रंग कह्या ए ।।६४।।

चबूतरे के साथ लगता दक्षिण दिशा में पहला मंदिर छोड़कर, जो दूसरा मंदिर है, वह हरे व पीले रंग का कहा गया है ।

बख़त मध्यान पौढ़न का, ए दूसरा मंदिर होए ।
कई जवेर जोत झलकत, सेज शोभित इत सोए ।।६५।।

दोपहर के समय इस दूसरे मंदिर में अलौकिक शयन की लीला होती है । यहाँ कई प्रकार के जवाहरातों की रंगबिरंगी ज्योति में जगमगाती सुख शैय्या सुशोभित है।

पैठत मंदिर तरफ दाहिने, आगे सेज की चौकी नूर ।
हक पांव धरे ता ऊपर, ताको कह्या ना जाए ज़हूर ।।६६।।

हरे–पीले मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिने तरफ सुख शैय्या व उसके सामने नूर की चौकी शोभायमान है, जिस पर श्री राज जी अपने श्री चरण कमल रखते हैं । इस समय की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

साज़ इन मंदिरन में, लवाजमें नहीं सुमार ।
हक हादी दिल माफ़क, ता को क्यों कर कहूं विस्तार ।।६७।।

हरे व पीले रंग के इस दूसरे मंदिर में शोभा-सज्जा की सामग्री का कोई पारावार नहीं है । ये संपूर्ण सामग्री श्री राज जी के दिल के अनुरूप ही शोभायमान है । उसकी अलौकिक शोभा का वर्णन कहाँ तक करें ?

एक पोहोर लगे पौढ़त, रूहें चांदनी चौक सबे एक ठौर ।
तहां कई खेल रामते, भांत जुदी जुदी सब और ।।६८।।

युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी इस मंदिर में एक प्रहर तक अर्थात् दोपहर के बारह से तीन बजे तक शयन की लीला करते हैं । इस समय सभी सखियाँ चाँदनी चौक में इकट्ठी होकर कई प्रकार की अलग अलग हांस विलास की लीलाएँ करती हैं ।

जब पोहोर दिन रहे पिछला, उठे नूरजमाल ।
तब रूहें सब हाजर भई, दिल में अति खुसाल ।।६९।।

जब दिन का पिछला प्रहर बाकी रहता है, (दोप. 3 बजे) तब युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी उठ बैठते हैं । तब सभी ब्रह्मप्रियाएं दिल में अत्यंत प्रसन्नता, उमंग और उल्लास लेकर श्री राज श्यामा जी के सम्मुख हाजिर होती हैं।

पूछा रूह हादी को, कहां जाए खेलन की ठौर ।
तब उत्तर रूहें देवहीं, आपन आज जावें घाट और ।।७०।।

तब हक सुब्हान श्री राज जी, श्री श्यामा जी से पूछते हैं, कि आज रमण के लिए कहाँ चलें ? तब श्यामा जी सखियों से पूछती हैं, कि सखियों आज खेलने के लिये कहा जाना हैं ? तब सभी प्रियाएं खुशहाल मन से एक स्वर में उत्तर देती हैं, कि आज किसी और ही घाट में रमण करने जाना हैं ।

आए सुखपाल छ हज़ार, रूजू भई इत धाए ।
जो जिनके ताके सनमुख, सबों दिया दिखाए ।।७१।।

रंगमहल की छठी भोम से छे हज़ार सुखपाल आकर तीसरी भोम के छज्जे से लग जाते हैं । जिनके सामने जो सुखपाल हाजिर होता है, तुरंत ही सखियां उसी में सवार हो जाती हैं , इस प्रकार परमधाम की शोभा श्री राज जी दिखाते हैं ।

श्रीराज ठकुरानी जी जोड़े, बैठे एक सुखपाल ।
अंग उमंग उछरंगियां, अतित रहे खुशहाल ।।७२।।

युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी एक सुखपाल में साथ विराजते हैं । सखियों के अंग-प्रत्यंग में उमंग और आनंद हिलोरे ले रहा है । युगल स्वरूप अति प्रसन्नचित्त हैं ।

सुखपाल तरेह तखतरवा, चारों डांडो छत्रियां नूर ।
ए साज बका भोम चेतन, सो क्यूँ कर कहूं जहूर ।।७३।।

सुखपाल की बनावट सिंहासन (तख्त) के समान आई है, जिसमें चारों डांडों के ऊपर नूरमयी छत्रियाँ जगमगा रही हैं । यह साज–सज्जा अखण्ड व चेतन भूमिका परमधाम की है, उनकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

खिलवने जेते आशक, होए रूजू इन बख़त ।
कई बाजंत्र बाजे बजावहीं, सब घेर असवारी चले इत ।।७४।।

हक महबूब श्री राज जी के आशिक जितने भी पशु-पक्षी (खिलौने) परमधाम में हैं, वे इस समय उपस्थित हो जाते हैं और कई प्रकार के वाद्य यंत्र बजाते हुए सवारी को घेर कर चलते हैं ।

कोई सखी सुखपाल में, कोई दाहिनी तरफ होए ।
कोई बाई चले सुखपाल, छेह नज़रों न पावे कोए ।।७५।।

कोई सखी अपने सुखपाल को श्री राज जी के दाईं तरफ, तो कोई सखी बाईं तरफ चलाती है । कोई भी सखी अपने नजरों से प्रियतम राजजी को दूर नहीं करती है।

एक एक सुखपाल के, खिलौने कई हज़ार ।
घेर चले सब तिन को, करे विनोद हांस विहार ।।७६।।

एक एक सुखपाल के साथ कई हज़ारों खिलौने (पशु-पक्षी) सुखपालों को घेर कर चलते हैं । सखियां कई प्रकार से हांस–विनोद करते हुए चलती हैं।

जो नज़रो असवारी देखिए, तो भराए रहे आसमान ।
सो नूर रोशनी इन समें, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।७७।।

यदि सवारी की शोभा को नजरो से देखें, तो पूरा आकाश ही सवारी से भरा हुआ दिखता है । चारों तरफ उनकी नूरमयी रोशनी जगमगाती दिखती है । ब्रह्मात्माओं के दिलों में ही उसकी वास्तविक पहचान होती है ।

नूर जिमी सब चेतन, और नूर बन दरखत ।
पत्र फूल फल नूर के, सो देखत सुख बख़त ।।७८।।

परमधाम की संपूर्ण धरती चेतन व नूरमयी है और वनों में आए नूरी वृक्ष भी चेतन हैं । पत्तियाँ, फूल और फल भी नूर के हैं, जिन्हें देखते समय अत्यंत आनंद की अनुभूति होती है।

नूर जोत असवारी को, बस्तर भूखन सिनगार ।
जोत जवेर झलकत, सो जानत परवरदिगार ॥७९॥

सवारी की एवं श्री राज श्यामा जी व सखियों के वस्त्राभूषणों के श्रृंगार की ज्योति नूरमयी है । उनके जवाहरातों की दिव्य ज्योति चारों तरफ झलकार कर रही है । इस शोभा को केवल अक्षरातीत ही जानते हैं ।

कोई सखी सुखपाल में, जोड़े चलावे श्री राज ।
अंग उमंग भरी रहे, बातें सुनने के काज ॥८०॥

कोई सुखी अपने सुखपाल को युगल स्वरूप श्री राज - श्यामा जी के सुखपाल के साथ साथ चलाती है । क्योंकि श्री राज जी की प्रेम भरी मीठी बातें सुनने के लिए उनके अंग-प्रत्यंग में उमंग भरा हुआ होता है।

कोई सुखपाल सो लगाए के, करे बातें राज सो सनमुख ।
हक हंस उत्तर देत हैं, क्यूं कहूं जुबांए सुख ॥८१॥

कोई सखी अपने सुखपाल को युगल स्वरूप के सुखपाल से लगाकर उनके सम्मुख होकर (सामने आकर) बातें करती है । श्री राज जी भी हंस हंस कर सखियों की बातों का उत्तर देते हैं । उन सुखों का वर्णन माया की इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार करूं ?

इत कई बिलास होत है, समय असवारी ज़ोर ।
इच्छाए सुखपाल चले, आगे पीछे नीचे ऊंचे ठौर ॥८२॥

सुखपालों की सवारी के समय उमंग और उल्लास के साथ कई प्रकार के हांस विलास होते हैं । सुखपाल मन की गति से सखियों के मन की इच्छानुसार आगे-पीछे, ऊपर-नीचे चलते हैं ।

इन असवारी के समें, नूर जोत किरना करें जंग ।
जोत न माए आसमान में, कई लेहेरा उठे तरंग ॥८३॥

सुखपालों की सवारी के समय नूरमयी ज्योति की किरणें आपस में जंग करती प्रतीत होती हैं (आपस में टकराती हुई दिखती हैं) । उनकी नूरमयी ज्योति आकाश में नहीं समा पाती । उन रंगबिरंगी नूरी किरणों की कई लहरें तरंगित होते दिखती हैं ।

जब असवारी होत है, करे दीदार नूरजलाल ।
सैन्या अपनी समेत, होत अति खुसाल ॥८४॥

जब युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी की सवारी रंगमहल की पूर्व दिशा से चलकर अक्षरधाम के ऊपर से होकर गुजरती है, तब अक्षरब्रह्म अपनी संपूर्ण सैन्या (पशु–पक्षियों) सहित श्री राज जी का दर्शन करके अत्यंत आनंदित होते हैं।

जहां सुखपाल उतरी, उतरे हादी हक़ ।
घेर उतरी सब सुखपाल, रूहें आशक हक माफक ॥८५॥

जहां श्री राज श्यामा जी के सुखपाल उतरते हैं, वहीं उनके सुखपाल को घेर कर सब सखियों के सुखपाल भी उतरते हैं । सखियां धाम धणी के समान ही उनकी आशिक हैं (प्रियतम से उतना ही प्यार करती हैं)।

सब खिलौने संग के, खड़े मरजाद अपने ठौर ।
कई खेले आपस में, बन जुदी जुदी कर ज़ोर ॥८६॥

सवारी के साथ आए सभी पशु-पक्षी (खिलौने) अपने स्थान पर मर्यादा में खड़े रहते हैं । कई पशु-पक्षी वनों में अलग अलग स्थानों में आपस में मिलकर उमंग और उल्लास में खेलते हैं ।

पन्द्रह दिन बन खेलत, पन्द्रह पधारे धाम ।
निरत खुसाली देखत, चौथी भोम के ठाम ॥८७॥

श्री राजश्यामा जी और ब्रह्मांगनाएँ शुक्ल पक्ष के पंद्रह दिन रात्रि के ९ बजे तक वनों में ही रमण करते हैं और कृष्ण पक्ष के पंद्रह दिन संध्या ६ बजे रंगमहल वापिस आ जाते हैं और प्रथम भूमिका में भोजन आरोगने की लीला करके, रंगमहल में चौथी भूमिका में नृत्य का आनंद लेते हैं ।

एक पोहोर निरत होत है, क्यूं कहूं जुबां ए सुख ।
रूहें घेर के बैठत, देखे नूर जमाल का मुख ॥८८॥

श्रीरंगमहल की चौथी भूमिका में नृत्य की हवेली में रात्रि के एक प्रहर (छ से नौ बजे तक) अति आनंदमयी नृत्य लीला होती है । इन सुखों का वर्णन माया की झूठी जिह्वा से कैसे करें ? सभी सखियाँ युगल स्वरूप श्री राज-श्यामा जी को घेर कर बैठती हैं और उनके मुखारविंद को निहारती हुई आनंदित होती हैं।

पेहेले छ घड़ी खेले वन में, करें एक घड़ी झीलन ।
एक घड़ी सिनगार करते, नित होत खुसाली मन ॥८९॥

वनो में जाने के बाद सर्वप्रथम छः घड़ी तक (संध्या ३ बजे से ५.१५ बजे तक) वनों में अनेक प्रकार के खेल खेलते हैं । उसके बाद एक घड़ी (२२.३० मिनट) में झीलना करते हैं और एक घड़ी में युगल स्वरूप और सखियाँ श्रृंगार करते हैं । इस प्रकार नित्य प्रति सब आनंद प्राप्त करके प्रसन्न चित्त होते हैं ।

या उपरांत लगे खेल करने, बन में कई बिलास ।
हक रूहें रमन की, और ना रहे आश ॥९०॥

शुक्ल पक्ष में रात्रि छः बजे के बाद भी वनों में कई प्रकार के खेल खेलने लगते हैं तथा कई प्रकार के हांस विलास करते हैं । श्री राजश्यामा जी और सखियों के मन में आनंद लीला विहार के अतिरिक्त और कोई चाहना नहीं होती है ।

या उपरान्त आरोगत, लेवे कई बिलास सुख बन ।
सो इन जुबां केती कहूं, जानत दिल मोमिन ॥९१॥

तदोपरान्त वन में ही मेवे-फल आदि आरोगते हैं, एवं वन में कई प्रकार से हांस विलास करते हैं । उन सुखों का इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करें, ब्रह्मात्माओं का दिल ही उसे अच्छे से जानता है।

निरत के पन्द्रह दिन में, आरोगत आए श्री धाम ।
तले भोम चौक पेहेले, आए बन से आरोगे इस ठाम ॥९२॥

नृत्य (कृष्ण पक्ष) के पंद्रह दिनों में श्री राजश्यामा जी एवं सखियां संध्या छः बजे वनों से आकर रंगमहल की पहली भोम में रसोई की हवेली में आरोगते हैं।

इत कई बिलास आरोगन में, कई हांस बिलास ले सुख ।
इन समे की क्यों कहूं, देखे नूरजमाल का मुख ॥९३॥

रसोई की हवेली में आरोगते समय कई प्रकार के हांस विलास के सुख लेते हैं । इस समय के सुखों का वर्णन किस प्रकार करें ? सखियां अपने प्राण प्रियतम श्री राज जी के मुखारविंद को निहारते हुए अत्यंत आनंदित होती हैं ।

इन पन्द्रह दिन में, दोए पोहोर बिलसे बन ।
जब आरोगे धाम में, पोहोर एक खुसाली मन ।।९४।।

शुक्ल पक्ष के पंद्रह दिनों में दो प्रहर तक (३.०० से ९.०० बजे तक) वनों में विलास करते हैं । जब कृष्ण पक्ष के पंद्रह दिनों में रंगमहल में रसोई की हवेली में आरोगते हैं, तब एक प्रहर तक (३ से ६ बजे तक) वनों में लीला विहार करते हैं ।

निरत होत चौथी भोम में, एक पोहोर लग रात ।
हक़ सुभान रीझ के, हाथ बीड़ी देत कहे बात ।।९५।।

उस समय चौथी भूमिका में रात्रि के एक प्रहर (६ से ९ बजे) तक नृत्य की लीला होती है । हक सुब्हान श्री राज जी प्रसन्न होकर अपने हाथों से पान का बीड़ा देते हुए मीठी बातें करते हैं ।

या उपरान्त पांचवीं भोम को, चढ़े हक़ सुभान जब ।
हादी रूहें संग रहे, चढ़त पगथी आरोगे तब ।।९६।।

नृत्य की लीला का आनंद लेने के पश्चात् श्री राज जी चौथी भोम से पाँचवी भोम जाने के लिये जब सीढ़ियाँ चढ़ते हैं । तब उनके साथ श्री श्यामा जी और सखियाँ भी रहती हैं और सीढ़ियाँ चढ़ते समय पान बीड़ा आरोगते हैं ।

पोहोंचे पांचमी भोम को, छोड़ मंदिर हार दोए ।
छे हज़ार गोख गृद के, कहे जो पेहेले सोए ।।९७।।

पाँचवी भोम में पहुँचकर युगल स्वरूप और सखियाँ छः छः हज़ार मंदिरों की दो हारों को छोड़कर आगे बढ़ते हैं । बाहरी छः हज़ार मंदिरों के बाहिरी दीवार में छः हज़ार झरोखे शोभा ले रहे हैं, जिनका वर्णन पहले किया जा चुका है ।

नव चौक इन भोम में, हर चौक मंदिर बारे हज़ार ।
तिन नव दरम्यान चौक, एक एक्यासी चौक की हार ।।९८।।

श्री रंगमहल की पाँचवी भोम के मध्य में नौ चौक आएँ हैं। इन प्रत्येक चौकों में बारह बारह हजार मंदिर शोभा ले रहे हैं । उन नौ चौकों में से प्रत्येक चौक में ८१-८१ चौक (दोपुड़े, त्रिपुड़े, चौपुड़े) आये हैं ।

तामे एक चौक मिने, चौक चौखूने ओगन पचास ।
अट्ठइस चौक त्रिकोने, चारों चौक दोए कोने ख़ास ।।९९।।

नौ चौकों में से प्रत्येक चौक में सात चौपुड़ा की सात हारें हैं, अर्थात् कुल उनचास (४९) चौपुडा आए हैं । चौक की चारों दिशा में सात-सात (कुल २८) त्रिपुड़ा आये हैं। चौक के चारों कोनो में चार दोपुड़े सुशोभित हैं ।

चौसठ तहां हवेलियां, मध्य परवाली रंग लाल ।
जित श्री राज ठकुरानीजी पौढ़त, संग रूहें चले खुसाल ।।१००।।

प्रत्येक चौक में आठ हवेलियों की आठ हारें (कुल चौसठ ६४) हवेलियाँ होती हैं । नौ चौकों में से मध्य के चौक के मध्य में रंग प्रवाली मंदिर सुशोभित है । जहाँ श्री राज श्री ठकुरानी जी अलौकिक शयन की लीला करते हैं और सभी सखियाँ भी आनंदपूर्वक श्री राज जी के साथ यहाँ (१२००० मंदिरों में शयन लीला करने) आती हैं ।

चारों बाजू चार द्वार हैं, चली आई गलियाँ चार ।
कई साज सन्दूकें इन में, जाको नाहीं सुमार ।।१०१।।

रंग प्रवाली मंदिर की चारों दिशाओं में चार दरवाजे आएँ हैं । चारों दरवाजों के सामने चार गलियाँ आई हैं । रंग प्रवाली मंदिर में कई प्रकार के साजो - श्रृंगार की सामग्री संदूको में भरी पड़ी है, जिसका कोई पारावार नहीं है ।

अति सुखकारी सेज है, आगे चौकी झलकत नूर ।
पांऊ मुबारक ता पर धरे, सो क्यों कर कहूं ज़हूर ।।१०२।।

रंग प्रवाली मंदिर में अति सुखदायी नूर भरी सुख शैय्या रखी है, जिसके आगे पूर्व दिशा में नूर की चौकी झलकार कर रही है । श्री राज जी अपने महामंगलमयी श्री चरण कमल इस चौकी पर रखते हैं । इस दिव्य शोभा का वर्णन किस प्रकार किया जाये ?

श्री ठकुरानी जी संग राज के, जोड़े सेज पर बैठे जब ।
रूहें कदमों लागत, सिर उठावत तब ।।१०३।।

जब रंग प्रवाली मंदिर में प्रियतम श्री राज जी के साथ श्री श्यामा जी सुख शैय्या पर विराजती हैं और सब ब्रह्म प्रियाएँ उनके चरणों में प्रणाम कर के जब सिर उठाती हैं ।

जाने आप अपनी सेज पर, बैठे संग श्री राज ।
कई सुख इन सेज के, हक पूरे मनोरथ काज ।।१०४।।

तब (श्री राज जी के चरण कमलों से सिर उठाते ही) सभी ब्रह्म प्रियाएँ स्वयं को अपने अपने मंदिरों में अपनी सुख शैय्या पर प्रियतम श्री राज जी के साथ विराजमान पाती हैं । नूरी सुख शैय्या पर अनेक प्रकार से सुख प्रदान करके धाम धणी सखियों की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं ।

इत तीन पोहोर विलास की, क्यूं कहूं ए रस सुख ।
अरस परस सुख देत हैं, करे बिहार हक़ सनमुख ।।१०५।।

यहाँ पर सभी सखियाँ श्री राज जी के साथ तीन प्रहर तक अर्थात् रात्रि के नौ बजे से प्रातः छः बजे तक कई प्रकार से सुख शैय्या का आनन्द लेती हैं । प्रियतम श्री राज जी एवं सखियां परस्पर एक दूसरे को सुख प्रदान करते हैं । उन सुखों को शब्दों में किस प्रकार वर्णन करुं ?

महामत कहे ए मोमिनों, एह तुमारे बिलास ।
तुम को अरस अज़ीम बिन, और ना रहे आश ।।१०६ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुन्दर साथ जी ! यह आपके अपने अखंड सुखों का वर्णन किया है । अब आपको अपने परमधाम के अखंड सुखों के सिवा और कुछ भी आशा (चाहना) नहीं होनी चाहिये।

प्रकरण-१७, चौपाई-८८१

तीसरी भोम के छज्जा पर आरोगना

इस प्रकरण में श्री परमधाम की अलौकिक बाल भोग की लीला का वर्णन किया गया है, जिससे की वे ब्रह्मात्माएं अपनी आत्मिक दृष्टि से इस दिव्य लीला का दर्शन कर सकें। तारतम वाणी के प्रताप से ब्रह्मांगनाएं चितवनि के द्वारा तीसरी भोम की पड़शाल में राजजी का सुख प्राप्त करती हैं।

हक हादी उठे प्रात को, खुले मंदिर के द्वार ।
ठौर ठौर सब खुल गये, ए है नित बिहार ।।१।।

श्री राजश्यामा जी सुख शैय्या से जब प्रातः काल में उठते हैं, तब रंगप्रवाली मंदिर के द्वार स्वतः ही खुल जाते हैं, साथ ही सभी सखियों के मंदिरों

के दरवाजे भी खुल जाते हैं । यह यहां की नित्य लीला है ।

हक हादी निकसे मंदिर से, जब ठाढ़े चौक दरम्यान ।
जो रूहें निकसे मंदिर से, ऐसे होवे पेहेचान ।।२।।

युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी रंग प्रवाली मंदिर के पूर्व दिशा के दरवाजे से निकल कर जब मध्य चौक में खड़े होते हैं, इसी समय सखियां भी अपने मंदिरों से बाहर निकलती हैं, तब उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि... ।

जाने मेरे मंदिर से आए, और न उपजे बुध ।
ऐसा सब कोई जानहीं, जब दे अपने सुख की सुध ।।३।।

(सभी ब्रह्म प्रियाओं को ऐसा आभास होता है कि) प्रियतम श्री राज जी मेरे ही मंदिर से आए हैं, उनकी बुद्धि में और कोई बात आती ही नहीं । ऐसा अहसास सभी ब्रह्म प्रियाओं को होता है, जब उनका अंतःकरण रात्रि में प्राप्त किये सुख शैय्या के असीम सुखों की याद दिलाता है (कि रात्रि में राजजी तो मेरे ही साथ थे)।

जब प्रात समे भोम पांचमी, उठत नूरजमाल ।
चाल लटकनी चलत, रहेत रूहें अति खुसाल ।।४।।

जब प्रातः काल पाँचवी भोम के रंग प्रवाली मंदिर की सुख शैय्या से श्री राज जी उठते हैं, तो वे लटकनी मटकनी चाल से चलते हैं, तथा सखियां भी बहुत आनंदित रहती हैं।

आए खड़े झरोखे झांकत, चांद सूरज करे दीदार ।
ठाढ़े खिलौने मूजरे को, सुख देवें परवरदिगार ।।५।।

श्री राजश्यामा जी एवं सखियां जब पाँचवी भोम से तीसरी भोम की पड़साल (झरोखे) में आकर खड़े होते हैं, तब उस समय चांद और सूरज उनका दर्शन करते हैं । चाँदनी चौक में परमधाम के सम्पूर्ण पशु पक्षी भी आकर, श्री राज श्यामा जी एवं सखियों का दर्शन करते हैं । प्रियतम अक्षरातीत उन्हें प्रेम भरी दृष्टि से देखकर सुख प्रदान करते हैं ।

कोई नाचत कोई कूदत, देख देख दीदार जो हक़ ।
चारों तरफों दीदार होत है, बडो धरे इशक ।।६।।

धाम दूल्हा श्री राज जी मोहिनी छबि के दर्शन पाकर कुछ पशु पक्षी

आनंदित हो कर बहुत उमंग के साथ नाचने-कूदने लगते हैं । इस समय परमधाम की चारों दिशाओं के सभी पशु–पक्षियों (सूर्य–चंद्रमा, वृक्ष–नदियां आदि सबको) को प्रियतम स्वामी का दीदार होता है, सभी अपने हृदय में अपार इश्क धारण करके प्रियतम का दीदार करने के लिये आते हैं।

ए जो आशक हक के, जो रहे जिमी वाहेदत ।
सो सब दीदार पावत, एह प्रात मूजरे बख़त ।।७।।

परमधाम की स्वलीला अद्वैत भूमिका में रहने वाले प्रियतम श्री राज जी के आशिक सभी पशु-पक्षी प्रातः काल अभिवादन के समय उनका दीदार पाते हैं।

हक सिनगार कर के, आए बैठे इन पड़साल ।
रहे जोड़े रूहें हादीय के, रूहें देखत होत खुसाल ।।८।।

श्री राज जी (चार मंदिर की) दहलान में आभूषणों का श्रृंगार कर के (तीजी भोम की) पड़साल में आकर बैठते हैं । सभी सखियाँ श्री श्यामा जी के साथ में रहती हैं, एवं श्री राज जी की अनुपम शोभा को देखकर वे अत्यंत आनंदित होती हैं।

रूहें सिनगार करके, लगे हक हादी कदम ।
एक पर आवत दूसरी, रहे कबू न इन समे कम ।।९।।

सभी ब्रह्म प्रियाएँ अपने अपने मंदिरों (बाहरी दोनों हार मंदिरों) में श्रृंगार करके युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी के श्री चरणों में प्रणाम करती हैं । एक के पीछे दूसरी सखी आते जाती है, कभी भी कोई सखी पीछे नहीं रहती।

सब रूहें घेर के बैठियां, हक हादी को इस ठौर ।
दोए घड़ी बीतत, तीसरी का अमल और ।।१०।।

इस समय पड़शाल में सभी सखियाँ श्री राज श्यामा जी को घेर कर बैठ जाती हैं । इस प्रकार दो घड़ी बीत जाती है (प्रातः ६.४५ का समय हो जाता है)। तीसरी घड़ी की लीला इससे भिन्न है।

लाड़वाई अरज करत हैं, बख़त कलेउ के समय ।
तब हुकम होत है, चली अंग उमंग लेय ।।११।।

यह जलपान का समय है । इस समय लाड़ बाई आकर बाल भोग

(नाश्ते) के लिये अर्ज करती है । तब धामधणी श्री राज जी का आदेश पाकर लाड़ बाई बहुत ही उमंग व उत्साह पूर्वक नाश्ता लेने जाती हैं ।

आई लाड़ बाई भोम दूसरी, ले थाल रंग कंचन ।
मिने मेवा मिठाई कई भांत, धरत सुख पावत तन ।।१२।।

लाड़ बाई तीसरी भोम से दूसरी भोम के रसोई की हवेली में आती हैं। वहां कंचन की थाली में अनेक प्रकार के मेवा मिठाई रखती हैं । इस प्रकार प्रेमपूर्वक थाली तैयार करते हुए वे बहुत ही आनंदित होती हैं ।

जुदे जुदे रंगों के मेवे, मिने जुदे जुदे रस स्वाद ।
ए तो बात ठौर अद्वैत की, कहा कहूं गिनों बुनियाद ।।१३।।

लाडबाई अलग अलग रंगों और स्वाद के मेवे और मिठाइयाँ परोसती हैं । यह वर्णन तो उस अद्वैत भूमि परमधाम का है । वहां की विशेषता व विविधता की कहां तक गिनती करूं ?

थाल ले ऊपर चली, अंग में अति उमंग ।
पाँव में भूखन बाजत, कई लेहेरा उठे तरंग ।।१४।।

लाड़ बाई थाली लेकर दूसरी से तीसरी भोम चल पड़ती हैं ।इस समय उनके हृदय में धणी को रिझाने का अत्यंत उमंग व उत्साह भरा होता है। चलते समय लाडबाई के चरणों के आभूषणों से बहुत ही सुरीली संगीतमयी ध्वनि निकलती है और उनके नूरी आभूषणों से कई रंगों की तरंगे उठती हैं ।

एक सखी चौकी लेय के, धरी आगे श्री राज ।
ता ऊपर थाली धरी, सो राज आरोगन काज ।।१५।।

एक सखी चौकी लेकर श्री राज जी के समक्ष रखती है । लाडबाई उस पर धाम धणी के आरोगने हेतु थाली रख देती हैं ।

इत जुगल सरूप आरोगत, कोमल हस्त कमल अंगुरी ।
कोमल मुख में धरे, अध बीच बातें करी ।।१६।।

तब युगल स्वरूप बाल–भोग आरोगते हैं और अपने कोमल हस्त कमल की अंगुलियों से भोजन सामग्री अपने कोमल मुख में रखते हैं । बीच बीच में प्रेम भरी मीठी बातें भी करते जाते हैं ।

चौकी थाल सबन के, आगे धरे आए तित ।
मुख नूर जमाल का, सब देखत इन बख़त ।।१७।।

लाड़बाई के जुत्थ की सखियां, अन्य सभी सखियों के समक्ष भी चौकी व मेवे-मिठाई की थाली रख देती हैं । सभी सखियाँ इस समय श्री राज जी का सुंदर नूरी मुखारविन्द निहारते हुए बड़े प्यार से भोजन आरोगती हैं ।

कोई नैनों नैन मिलाए के, कई बातां करें हक़ से ।
कोई सखी सखी सो श्रवना, देत रस उपजे इन में ।।१८।।

कोई ब्रह्मप्रिया प्रियतम श्री राज के नयनों से नयन मिला कर उनसे प्रेम भरी बातें करती है, कुछ सखियां आपस में बातें करते हुए एक दूसरे को मीठी बातों का सुख प्रदान करती हैं ।

सुनते बातें इनकी, बिहार के जो सुख ।
राज रीझत तिन पर, दे बकसीस कहे मुख ।।१९।।

इन ब्रह्म प्रियाओं के आनंद लीला विहार की बातें सुनकर श्री राज जी अत्यंत प्रसन्न होते हैं और अपने मुखारविन्द से उन ब्रह्म प्रियाओं की प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रसादी प्रदान करते हैं।

एक कई सुख पावत, रीझ पोहोंची बारे हज़ार ।
सब कोई सुख पावत, रहे एक तन एक बिहार ।।२०।।

एक सखी श्रीराजजी से कई प्रकार के सुख प्राप्त करती है । वे सुख सभी बारह हज़ार सखियों के हृदय में पहुंच जाते हैं । सभी सखियों को उतना ही सुख प्राप्त होता है । एक स्वरूप, एक तन सभी सखियां प्रेम व आनंद पूर्वक लीला विहार करती हैं ।

श्री राज ठकुरानी जी आरोगत हैं, आरोग रहे सब साथ ।
एक सखी थाल उठाई, एक चौकी उठाई दोउ हाथ ।।२१।।

श्री राजश्यामा जी बाल भोग (नाश्ता) आरोग लेते हैं एवं सभी सखियां भी आरोग लेती हैं। तब एक सखी श्री राज जी की थाली उठाती है और एक सखी अपने दोनों हाथों से चौकी उठाती है ।

एक सखी जड़ाव का, डब्बा ले खड़ी हाथ ।
पान मसाले सुधा, सखी जोड़े खड़ी एक साथ ।।२२।।

एक सखी रत्नजड़ित पान मसाले का डिब्बा हाथ में लेकर खड़ी हो जाती है और उस सखी के साथ एक दूसरी सखी भी पान बीड़ा आदि लेकर खड़ी हो जाती है।

हक हाथों बीड़ी लै, मुख में धरी जब ।
बीड़ियां सब साथ को, पोहोंच रही सब तब ।।२३।।

प्रियतम श्री राज जी अपने कोमल हाथों से पान-बीड़ा लेकर जैसे ही अपने मुख में रखते हैं, वैसे ही सभी सखियों के पास भी पानों के बीड़े पहुंच जाते हैं ।

मुख में बीड़ी तम्बोल, चलत लटकनी चाल ।
चले सैयां संग मलपतियां, देख हक होत खुसाल ।।२४।।

श्री राज जी के मुखारविंद में पानों का बीड़ा शोभायमान है और वे लटकनी मटकनी चाल से चल रहे हैं । साथ में सखियां भी चंचलता पूर्वक लटकते मटकते हुए चल रही हैं । उन्हें देखकर श्री राज जी भी बहुत आनंदित होते हैं ।

नीले न पीले रंग मंदिर, ता सनमुख सिंघासन ।
तहां हक हादी बैठत, सबों होत प्रफुल्लीत मन ।।२५।।

नीला (हरे) न पीला बीच के रंग के मंदिर के सामने (पड़साल के पूर्व किनारे पुखराज और पाच के स्तम्भों के बीच) सिंहासन सुशोभित है । उस नूरी सिंहासन पर पश्चिम की तरफ मुख करके युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी विराजमान होते हैं । उन्हें देख कर सभी ब्रह्म प्रियाओं का मन अत्यंत प्रफुल्लित हो उठता है ।

महामत कहे ए मोमिनों, इत दिन चढा घड़ी चार ।
हुआ पांचमी का अमल, फेर आगे कहूं सुख बिहार ।।२६।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि इस समय चार घड़ी दिन व्यतीत हो जाता है (७.३० बज जाते हैं) और पांचवी घड़ी शुरू होती है । अब पुनः आगे की प्रेममयी लीलाओं का वर्णन करूंगा ।

प्रकरण-१८, चौपाई-९०७

श्री नवरंगबाई का नृत्य व अक्षर ब्रह्म को दर्शन

अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म परमात्मा ने बड़ी वृत्त के निम्न प्रकरण में श्री महामति जी के स्वरों में तीजी भोम की पड़साल में होने वाली दिव्य लीला का वर्णन किया है । अक्षर ब्रह्म नित्य प्रति नूर जमाल श्री राज जी के दर्शन करने आते हैं और प्रणाम करके वापस लौट जाते हैं । यह वैभव (ऐश्वर्य) दिव्य परमधाम का है, जिसका वर्णन ब्रह्मात्माओं के लिये हुआ है ।

नीले न पीले रंग मंदिर, तिन के सनमुख सिंघासन ।
तहां श्रीराज ठकुरानीजी, जोड़े बैठे प्रफुल्लत मन ।।१।।

नीले (हरे) न पीले बीच के रंग के मंदिर के सामने सिंहासन शोभायमान है। उस पर श्री राज श्री ठकुरानी जी साथ में प्रफुल्लित मन से विराजमान होते हैं।

इत चार घड़ी दिन बीतत, पांचमी का अमल राह आसमान ।
बैठे जोड़े सुखपाल में, लक्ष्मी और भगवान ।।२।।

इस समय चार घड़ी दिन बीत जाता है (७.३० बज जाते हैं)। पाँचवी घड़ी में अक्षर ब्रह्म व महालक्ष्मी जी सुखपाल में साथ बैठकर आकाश मार्ग से श्री राज जी के दर्शनों के लिये आते है ।

श्री राज झरोखे झांकत, करे मूजरा नूरजलाल ।
सलाम करी पीछे फिरे, मन में अति खुसाल ।।३।।

श्री राज जी पड़साल में बैठे-बैठे झरोखे से अक्षर ब्रह्म की ओर देखते हैं । तब अक्षर ब्रह्म अभिवादन (प्रणाम) करके एवं दर्शन पाकर प्रसन्नचित्त होकर वापिस लौटते हैं ।

सब सैन्या ले आवत, इत पावत सब दीदार ।
इनों ऊपर मेहेर नज़र, करत परवरदिगार ।।४।।

अक्षर ब्रह्म अपनी सम्पूर्ण सेना (अक्षरधाम के पशु पक्षियों) सहित आते हैं और वे सभी श्री राज जी का दर्शन प्राप्त करते हैं । प्रियतम श्री राज जी उन सब के ऊपर अपनी कृपा दृष्टि करते हैं ।

ए नूर सूरत अक्षर की, जाकी पल फिरत कई इण्ड ।
पैदा पल में फना करे, त्रिगुन समेत ब्रह्माण्ड ।।५।।

यह अक्षर ब्रह्म का वही नूरी (सत्ता का) स्वरूप है, जिनकी इच्छा मात्र से पलक झपकने मात्र समय में त्रिदेवा सहित अनेकों ब्रह्मांड उत्पन्न होकर लय को प्राप्त हो जाते हैं ।

सो आवत दायम, मूजरे नूरजलाल ।
झरोखे झांकत मूजरा, लेत हैं नूरजमाल ।।६।।

वे अक्षर ब्रह्म नित्य प्रति अक्षरातीत परब्रह्म का अभिवादन (दर्शन) करने आते हैं । परब्रह्म श्री राज जी भी तीजी भोम की पड़शाल से दर्शन देकर उनका अभिवादन स्वीकार करते हैं ।

ए वैभव श्री धाम का, देखावत रूहों को इत ।
देखे साहेबी अपनी, अब उठो रोज क्यामत ।।७।।

यह परमधाम का वैभव (ऐश्वर्य) है, जो कि श्री राज जी अपनी आत्माओं को यहां माया जगत में लाकर दिखा रहे हैं । हे ब्रह्मात्माओ ! अपनी साहेबी (ऐश्वर्य) देखो (पहचान करो), और अब इस कियामत की पवित्र घड़ी में जागृत हो जाओ ।

इन समे केतिक रूहें, जात रमन को बन ।
केतिक राजी करके, आवत मंदिर रसोई रोशन ।।८।।

इस समय (प्रातः ७.३० बजे) कुछ सखियाँ वनों में रमण करने जाती हैं । कुछ सखियाँ श्री राज जी को प्रसन्न करके रसोई के मंदिर में आती हैं ।

केतिक आगे पड़साल के, वालत बीड़ी पान ।
केतिक हजूर हक के, करें बातें संग सुभान ।।९।।

कुछ सखियाँ पड़साल के आगे पानों का बीड़ा बनाती हैं, तो कुछ सखियाँ प्रियतम श्री राज जी के साथ में रहती हैं और उनसे प्रेम भरी मीठी बातें करती हैं ।

कोई गोख छज्जे मालिए, कोई चौक छज्जे गलियन ।
कोई मंदिर में रहे, सब अंग प्रफुल्लीत तन ।।१०।।

कोई सखी झरोखों में, कोई छज्जों व मालियों में, कोई चौक में, कोई गलियों में और कोई मंदिरों में प्रफुल्लित तन–मन से लीला करती हैं ।

कोई आवे जावे उठे बैठे, काहूं बातन को सवाद ।
हक रिझावत सनेह सों, खड़ी करे सनमुख वाद ।।११।।

कोई सखी आती है, कोई जाती है, कोई उठती है, कोई बैठती है । किसी सखी को प्रियतम से प्रेम भरी बातें करने में ही आनंद आ रहा है । प्रियतम श्री राज भी उन्हें प्रेम पूर्वक रिझाते हैं और सखियों की प्रेम भरी बातों के जवाब में पुनः नयी बातें खड़ी करते रहते हैं ।

नवरंगबाई आवत, श्री मंडल ले बैठे सनमुख ।
जुथ वाली संग रहे, क्यू कहूं जुबां ए सुख ।।१२।।

इस समय नवरंगबाई अपने जुत्थ (समूह) की सखियों के साथ श्री मण्डल (वाद्ययंत्र) लेकर श्री राज जी के सम्मुख बैठ जाती हैं । इस समय के सुखों का वर्णन माया की झूठी जिह्वा से कैसे करूं ?

सुर सुन्दर गान करे, बाजत छत्तीसों राग ।
जिन पर हक रीझत, मैं क्या कहूं तिनके भाग ।।१३।।

नवरंगबाई छत्तीस रागों और सुंदर स्वरों से गायन करती हैं । उस सखी के भाग्य (प्रियतम अक्षरातीत की अर्धांगिनी होने के सौभाग्य) की मैं कैसे प्रशंसा करूं, जिन पर धणी प्रसन्न होते हैं ।

इत चार घड़ी और भै, दिन चढ़ा पोहोर एक ।
सखियां गयी थीं बन में, अंग उमंग ल्याई अनेक ।।१४।।

इस प्रकार चार घड़ी और व्यतीत हो जाती है, (प्रातः ९ बजे का समय हो जाता है)। दिन का पहला प्रहर (६ बजे से ९ बजे तक का) पूर्ण हो जाता है । जो सखियाँ वनों में गई थीं, वे अंग में उमंग लेकर वनों से अनेक प्रकार की शाक-तरकारी आदि सामग्री लाती हैं ।

तरकारी की छाबे, तले भोम पोहोंचाए ।
पान छाब मसाले सुधा, ऊपर को ले आए ।।१५।।

वे सखियां सब्जियों की टोकरियाँ पहली भोम के रसोई के मंदिर में पहुंचाकर पान-मसालों की टोकरियाँ लेकर तीसरी भोम आ जाती हैं ।

सो सखियों को सौंप के, लगी बातें करने जोर ।
आज खेलने बन में, खेल किए ठौर ठौर ।।१६।।

पान-मसालों की टोकरियाँ दूसरी सखियों को सौंपकर वे सखियां श्री राज जी से बातें करने लगती हैं । वनों में जगह-जगह अनेक प्रकार से जो खेल–रामतें किया है, उसे बड़े जोर शोर व उमंग से बताती हैं ।

हक हंस के पूछत, कौन खिलौने के ठौर ।
कैसा खेल किन किया, फेर मोही बताओ और ।।१७।।

श्री राज जी भी हँसते हुए सखियों से पूछते हैं, कि आज कौन सी जगह खेलने गई थीं ? किसने कैसा खेल खेला ? यह सब मुझे फिर से विस्तारपूर्वक बताओ ।

काहूं उपर हंसत हैं, काहूं ऊपर सराहत दे सुख ।
कोई रीझ रिझावत, कोई देखे नूरजमाल का मुख ।।१८।।

श्री राज जी किसी सखी पर हँसते हैं, तो किसी सखी की प्रशंसा करके सुख प्रदान करते हैं । कोई सखी स्वयं प्रसन्न होकर श्री राज जी को भी प्रसन्न कर देती है, तो कोई सखी प्रियतम अक्षरातीत का मुखारविंद ही निहारते रहती है ।

इत हांस विनोद कई भांत के, हजूर करावत हक ।
अरस परस सुख देत हैं, सब भरी अंग इशक ।।१९।।

इस समय यहाँ पर श्री राज श्यामा जी एवं सखियाँ कई प्रकार से हाँस-विनोद करते हैं और परस्पर एक दूसरे को सुख प्रदान करते हैं । सभी सखियों के अंग अंग में इश्क भरा हुआ है।

भई चार घडियां बीतत, भया दिन डेढ़ पोहोर ।
पान बीड़ी भई तैयार, उठ आई इशक भरी जोर ।।२०।।

इस प्रकार चार घड़ी और व्यतीत हो गयी, तथा दिन डेढ़ प्रहर हो गया (१०.३० बज जाता है), पानों का बीड़ा भी तैयार हो जाता है, तब सब सखियाँ इस्क की मस्ती में सराबोर श्री राज जी के पास पहुँच जाती हैं ।

छाबे धरी चौकी पर, जित मंदिर झलकत नूर ।
एक आवे एक जात हैं, कोई ठाढ़ी रूहें करे सहूर ।।२१।।

पान बीड़ा के टोकरियां सखियां नूरी झलकार से युक्त नीले (हरे) पीले मंदिर में चौकी पर रख देती हैं । इस समय कोई सखी आ रही होती है, कोई जा रही होती है । कुछ सखियां खड़ी होकर आपस में वार्ता कर रही होती हैं।

इत दोए घड़ी और भए, रही दो पोहोर में बाकी घड़ी दोए ।
तब लाड़बाई अरज करी, समे राज भोग को भयो सोए ।।२२।।

इस प्रकार दो घड़ी और व्यतीत हो जाती है । अब दो प्रहर होने में दो घड़ी शेष रह जाती है (११.१५ बज जाता है), तब लाडबाई जी राज भोग (दोपहर का भोजन) लाने के लिए श्री राज जी से अर्जी (निवेदन) करती हैं ।

तब राज आज्ञा दई, लाड़बाई फिरी जब ।
संग केतिक सखियां, आई तले की भोम अब ।।२३।।

तब श्री राज जी लाडबाई को अनुमति दे देते हैं । आज्ञा लेकर लाडबाई जी वापिस रसोई की हवेली में आती हैं । उनके साथ कुछ और सखियाँ भी पहली भोम में आती हैं ।

ले कंचन रंग थाल को, राज भोग सामग्री सब ।
जुदी जुदी कर लेय के, धरी थाल ले तब ।।२४।।

लाडबाई कंचन (सोने) की थाली लेकर उसमें राज भोग की सारी सामग्री अलग-अलग रखकर सजाती हैं ।

तरकारी की कटोरी, दई सखियों को सौंप ।
ले थाल ऊंची चढ़ी, रहे राज आरोगावने की चोप ।।२५।।

तथा तरकारी की कटोरियाँ अन्य सखियों को सौंप देती हैं, फिर श्री राज जी को आरोगाने के लिए स्वयं बड़ी होशियारी से (ध्यानपूर्वक) थाली लेकर ऊपर तीजी भोम जाने के लिये सीढ़ियां चढ़ती हैं ।

पांव में भूखन बाजत, मीठा स्वर रसाल ।
नव भोम गरजत रहे, मन उमंग अति खुसाल ।।२६।।

लाडबाई एवं उनके युत्थ (समूह) की सखियां, जब सीढ़ियां चढ़ती हैं, तो उनके चरणों के आभूषण बजने लगते हैं, जिससे अत्यंत रसीले व मीठे स्वर निकलते हैं । जिससे रंगमहल की सभी नौ भोमो में कर्णप्रिय गर्जना होती है । सबके मन उमंग से भरे अत्यन्त प्रसन्न रहते हैं ।

एक सखी चौकी रखी, आगे हक सुभान ।
एक गादी चाकले बिछाए, बैठे जुगल सरूप इत जान ।।२७।।

एक सखी युगल स्वरूप के लिए गादी और चाकले (आसन) बिछाती है,

जिस पर युगल स्वरूप विराजमान होते हैं । एक सखी श्री राज जी के आगे चौकी रखती है ।

आए पोहोंची लाड़बाई, धरी चौकी उपर थाल ।
आरोगावने श्री राज को, रहे मन में अति खुसाल ।।२८।।

इस समय लाडबाई जी आकर चौकी पर थाली रखती हैं । श्री राज जी को आरोगाने के लिए मन प्रसन्नता व उत्साह से परिपूर्ण रहता है ।

जुगल सरूप आरोगत, कोमल हस्त कमल मुख ।
अधबीच आरोगते बातें करें, क्यों कहूं जुबां ए सुख ।।२९।।

श्री राजश्यामा जी अपने कोमल हस्त कमलों से आरोगते हैं, और आरोगते हुए बीच-बीच में सखियों से मीठी मीठी प्रेम भरी बातें भी करते रहते हैं । उन सुखों का माया की इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करूं?

साथ समस्त आगे चौकी, ता ऊपर धरी थाल ।
जानो सब को पेहेले पोहोंची, सब रहे अति खुसाल ।।३०।।

लाडबाई के समूह की सखियां अन्य सब सखियों के सामने भी चौकी एवं उस पर थाली रखती हैं । सबको ऐसा प्रतीत होता है, कि थाली मुझे ही सर्वप्रथम मिली है। इस प्रकार सभी सखियां अत्यंत प्रसन्नचित्त रहती हैं।

सखियां तरकारी की कटोरी, ले चढ़ी सीढ़ियां जब ।
हजुर में जो सखियाँ देख समें, दौड़ी लेने को केतिक तब ।।३१।।

लाडबाई के जुत्थ की सखियाँ, जब सब्जी की कटोरियाँ लेकर सीढियाँ चढती हैं, तो तीसरी भोम में श्री राज जी के समक्ष जो सखियां खड़ी होती हैं, वे उन्हें देखकर उनसे कटोरी लेने के लिये दौड़ पड़ती हैं । अर्थात् सभी सखियाँ सेवा के लिए लालायित रहती हैं ।

जब आवत सामी मिली, एकै लै कटोरी ताके हाथ ।
और जो पीछे से आई, तिन पासे लै तिन साथ ।।३२।।

दौड़ कर आते हुए जब सामने कटोरी वाली सखी मिलती है, तो पहली सखी उसके हाथों से कटोरी ले लेती है और इस सखी के पीछे जो दूसरी सखी आ रही होती है, वह उस सखी से कटोरी ले लेती है ।

और जो मिली सामें तिन को, तिनने लै तिन पास ।
उन धरी श्री राज आगे, रहे दिल में सेवा की आश ।।३३।।

इस दूसरी सखी के सामने, जो तीसरी सखी मिलती है, वह दूसरी सखी से कटोरी लेकर श्री राज जी के समक्ष रखती है । सभी के दिल में एक मात्र सेवा की ही आशा रहती है ।

वे सखियां जो गइयां, तिन जाए लई कटोरी और ।
यूं एक दूजी पे लेत हैं, करी सनेह की जोर ।।३४।।

तरकारी की कटोरी देकर जो सखियां वापिस जाती हैं, वे रसोई की हवेली से सब्जी की और कटोरियां ले आती हैं । इस प्रकार बड़े प्रेम और उमंग से एक दूसरे से कटोरियां लेते जाती हैं ।

पर रीस न उपजे किन को, किस वास्ते के एक अंग ।
एकै आतमा सबकी, सब रहे राज के संग ।।३५।।

परंतु किसी के भी अंदर नाराजगी नहीं होती है, क्योंकि सब एक ही अंग (एक स्वरूप) हैं । सबकी आत्मा भी एक है । सभी सखियाँ श्री राज जी के साथ प्रेम व आनंदपूर्वक रहती हैं ।

लाड़बाई आरोगावत, राज आरोगे इन में ।
श्री राज उत्तर देते हैं, मैं तो पेहेले लिया इन से ।।३६।।

लाडबाई जी श्रीराजजी को बड़े प्रेम से आरोगाती हैं । श्रीराजजी भी बड़े प्रेम से आरोगते हैं । कोई सखी कटोरी लाती है, तो राजजी उसका दिल रखते हुए उससे कहते हैं, कि मैंने इस सखी से पहले कटोरी ली है ।

राज ए कटोरी अब आई, दिखावत कर हेत ।
राज मन राखे इन को, तिन में से तबै लेत ।।३७।।

राजजी उन्हें सुख देने की भावना से ऐसा दर्शाते हैं, कि यह कटोरी उनके पास अभी आयी है और इस प्रकार उसका मन रखते हुए उससे पुनः उस समय कटोरी ले लेते हैं ।

इन भांत इन आरोगन के, कई भातों उपजत सुख ।
सो इन जुबां केती कहूं, जो रहे रूहें सदा सनमुख ।।३८।।

इस प्रकार आरोगने की लीला में कई प्रकार के सुख उत्पन्न होते हैं ।

जो सखियां सदा श्री राज जी के सम्मुख उपस्थित रहती हैं, उनके सुखों का वर्णन इस जिह्वा से किस प्रकार करूं?

अधबीच में जल लिया, लाड़बाई उठे तब ।
दूध दधी की कटोरी, आगे धरी श्री राज के सब ।।३९।।

श्री राज जी भोजन आरोगते समय जब बीच में जल ग्रहण करते हैं, तब लाडबाई जी उठकर दूध और दही की कटोरी लाती हैं और श्री राज जी के सामने रखती हैं ।

साथ समस्त को पोहोंचावहीं, दूध दधि की कटोरी ।
श्री राज ठकुरानी जी साथ, मीठी बात सनमुख करी ।।४०।।

इसी के साथ सभी सखियों के सामने भी दूध और दही की कटोरी पहुँच जाती है । श्री राज जी, आरोगते समय श्रीश्यामा जी के साथ प्रेम भरी मीठी मीठी बातें भी करते हैं ।

एक सखी जड़ाव को, डब्बा ले आई जब ।
बीड़ी मसाले सुधा, श्री राज उठाई तब ।।४१।।

भोजन के बाद एक सखी रत्नजड़ित पान बीड़े का डिब्बा श्री राज जी के समक्ष लाती है । श्री राज जी (मीठे) मसाले सहित पान बीड़ा ग्रहण करते हैं ।

इन समे साथ सब को, बीड़ियां पोहोंचायी सब ।
श्री राज ठकुरानीजी सखियाँ, सब उठे इन बख़त ।।४२।।

इस समय सब सखियों तक भी पान-बीड़ा पहुंचा दिया जाता है । तब श्री राज जी, ठकुरानी जी व सखियाँ अपने-अपने आसन से उठ खड़े होते हैं ।

उतर चबूतरे पगथियां, छोड़ एक मंदिर और ।
नीले न पीले रंग मंदिर, पोहोंचे तिन मंदिर के ठौर ।।४३।।

चबूतरे के दक्षिण तरफ से सीढियाँ उतरकर पहला मंदिर छोड़कर दूसरे मंदिर (नीला न पीला, बीच के रंग का) में पहुँच जाते हैं । (नीचे प्रथम भोम के चबूतरे में जो पांच रंग के स्तम्भ हैं - हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी, वे तीसरी भोम की पड़शाल में भी आये हैं। दाहिनी तरफ के दूसरे मंदिर में पाच व पुखराज के स्तम्भ व आधी-आधी मेहरावें आती हैं । दोनों तरफ से पाच के हरे व पुखराज के पीले रंग की किरणें झलकने से दीवाल मिश्रित रंग का हो जाता है । यहां नीला शब्द गुजराती के 'लीला' शब्द का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ हरा

होता है)

पैठते दाहिनी तरफ, जहां सेज बिछाई नूर ।
तिन आगे चौकी धरी, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।४४।।

मंदिर में प्रवेश करते समय दाहिनी तरफ नूर भरी सुख शैय्या शोभायमान (बिछी हुई) दिखायी देती है । इस शैय्या के सामने नूरमयी चौकी रखी है, जिसकी शोभा वर्णन से परे है ।

हक धरे कदम, इन चौकी ऊपर ।
तहां से पधारे सेज पर, आगे कहूं मोमिनों खातर ।।४५।।

श्री राज जी इस चौकी पर चरणकमल रखकर सुखशैय्या पर विराजमान हो जाते हैं । ब्रह्मात्माओं के लिये पुनः आगे की लीला का वर्णन करूंगा ।

जोड़े श्री ठकुरानी जी, बैठे राज के पास ।
सैंया फिरी कदमों लगें, रहे वन में सौक खेलन की आश ।।४६।।

श्री राज जी के साथ श्री श्यामा जी भी सुख शैय्या पर विराजमान होती हैं। सब सखियाँ युगल स्वरूप को प्रणाम करके बाहर जाती हैं । उनके हृदय में वनों में जाकर कई प्रकार के खेल खेलने की इच्छा रहती है ।

राज ठकुराणी जी पौढ़े, सैंया केतिक आगे बड़े द्वार ।
केतिक जुदे जुदे खेलहीं, कई बन में करे बिहार ।।४७।।

श्री राज श्यामा जी शयन की लीला करते हैं । कुछ सखियाँ रंगमहल के मुख्य दरवाजे के सामने खेलती हैं । कुछ सखियाँ अलग-अलग समूहों में अलग–अलग स्थानों में जाकर खेलती हैं । कुछ सखियां वनों में विहार करती हैं ।

यों कई सुख इन बन में, कई सुख इन समे होए ।
सो इन जुबां केते कहूं, बिना मोमिन न जाने कोए ।।४८।।

इस प्रकार सखियाँ दोपहर १२ से ३ बजे तक वनों में कई प्रकार के आनंद प्राप्त करती हैं । उसका वर्णन इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार करूं ? यह अकथनीय सुख केवल मोमिन ही जानते हैं ।

पिछला पोहोर दिन रह्या, जब उठे श्री राज ।
सैंया सब रूजू भई, वन पधारन काज ।।४९।।

जब दिन का अंतिम प्रहर बाकी रहता है (३.०० बज जाते हैं), तब श्री राज जी सुख शैय्या से उठते हैं । सभी सखियाँ प्रियतम श्री राज जी के साथ वनों में सैर करने जाने के लिए, तीसरी भोम की पड़साल में इकट्ठी होती हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, कही तीसरी भोम पड़साल ।
अब मुंह करो तरफ धाम के, होए के इत खुसाल ॥५०॥

महामति जी कहते हैं, कि मैंने तीसरी भोम के पड़साल की शोभा व लीला का वर्णन आपके समक्ष किया है । अब यहां परमधाम के सुखों को लेते हुए प्रसन्नता पूर्वक अपना चित्त निजघर परमधाम की तरफ करो ।

प्रकरण-१९, चौपाई-९५७

भोम चौथी

ब्रह्ममुनि श्री लाल दास जी के धाम हृदय में विराजमान श्री महामति जी श्री रंगमहल के चौथी भोम की चौथी चौरस हवेली का वर्णन कर रहें हैं, जो नृत्य की हवेली है। ताकि आत्मा अपनी आत्मिक दृष्टि श्री परमधाम की तरफ मोड़ सके और अखंड परमधाम के सुख प्राप्त कर सके ।

अब कहूं भोम चौथी की, जहां निरत होत पन्द्रा दिन ।
हक हादी रूहें देखन की, जो ठौर बका चेतन ॥१॥

अब दिव्य रंगमहल की चौथी भूमिका का वर्णन करूंगा, जो कि अखण्ड व चेतन भूमिका है, जहां कृष्ण पक्ष के पंद्रह दिन नृत्य की लीला होती है, जिसे श्री राजश्यामा जी एवं सखियां निहारते हैं ।

इन चौदे तबक की दुनी में, कोई कहे न बका तरफ ।
बोए भी काहूं आई नहीं, तो क्यों कर कहे हक ॥२॥

इस चौदह लोकों के संसार में कोई भी परमधाम का वर्णन नहीं कर सका। किसी को परमधाम की सुगंधि भी नहीं प्राप्त हो सकी, तो वे परब्रह्म अक्षरातीत के स्वरूप का किस प्रकार वर्णन कर सकते थे?

जहां जबराइल की गम नहीं, सो रह्या नूर मकान ।
उत पोहोंचा एक रसूल, जिन साहेदी दई पेहेचान ॥३॥

दिव्य परमधाम, जहाँ जिब्रील फरिश्ता भी नहीं जा सका, केवल

अक्षरधाम तक ही रह गया । उस अर्श में केवल मुहम्मद साहब पहुँचे, जिन्होंने परमधाम की साक्षी दी ।

और दई साहेदी खुदाए ने, लिखे ख़ास दसखत कलाम ।
सो फिरकान मोमिनों ने, खोली बीच दीन इसलाम ।।४।।

स्वयं खुदा हक तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) ने अपने हाथों (शक्ति) से कुर्आन में साक्षियाँ दी हैं । कुर्आन के उन रहस्यों को मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) ने आकर निजानंद सम्प्रदाय (दीने इस्लाम हकीकी) में खोला है ।

बका ठौर जो कायम, ताको कहिए इसलाम ।
तहां रूह मोमिन बिना, कोई न पोहोंचे उस ठाम ।।५।।

अखण्ड परमधाम, जो कि अनादि व अनंत है, उसे ही शांति का सत्य मार्ग (इस्लाम) कहा गया है । उस परमधाम में मोमिन रूहों (ब्रह्मात्माओं) के सिवाए अन्य कोई नहीं पहुंच सकता ।

फिरस्ते चौदे तबक के, सो सारे उमेदवार ।
खोले द्वार अरस अज़ीम के, आखर को परवरदिगार ।।६।।

चौदह लोकों के समस्त देवतागण (फरिश्ते) भी आशा रखते हैं, कि आखिरत (कलियुग के अंतिम समय) में परब्रह्म अक्षरातीत परमधाम के रहस्य (ज्ञान) को दुनिया में प्रकट करेंगे ।

जब उतरे गिरो मोमिन, जो नाजी फिरका बुजरक ।
जो रूहें रब्बानी गिरो, हजूर रहे सुभान हक ।।७।।

जब वे मोमिन रूहें (ब्रह्मात्माएं) संसार में अवतरित होंगी, जिन्हें महान् नाज़ी फिरका (सच्चे ईमान वाले) कहा गया है। वे प्रियतम परब्रह्म के प्रेम की छांव तले दिव्य परमधाम में रहती हैं, जिन्हें रब्बानी गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) कहा जाता है ।

और गिरो फिरस्तन की, सो उतरे इन के संग ।
जब ए उतरे जिमीन पर, तब होवे दज्जाल सो जंग ।।८।।

और फरिश्तों (ईश्वरी सृष्टि) का समूह भी उन ब्रह्मात्माओं के साथ दुनिया में अवतरित होगा, तब दज्जाल (कलि-अज्ञान) के साथ उनका युद्ध होगा।

तब ईसा हज़रत उतरे, चौथे आसमान ।
सो मार दज्जाल कुफर को, तब एक दीन होए जहान ।।९।।

तब हजरत ईसा चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से जगत में पुनः अवतरित होंगे । वे इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) के द्वारा दज्जाल (कलि-अज्ञान) को मारेंगे, जिससे सारा संसार एक धर्म (एक सत्य को मानने वाला) हो जायेगा ।

तब खुदाए रेहेमत को भेजेगा, गंज खुदाई खजाना नूर ।
सो खरच होए मोमिनों पर, हक देखावहीं नजर ।।१०।।

उस समय अल्लाह ताला (परब्रह्म अक्षरातीत) उन ब्रह्मात्माओं पर अपनी कृपाएं भेजेंगे । परमधाम का जो दिव्य ब्रह्मज्ञान (खुदाई ज्ञान) रूपी खजाना है, वह मोमिनों को प्रदान किया जायेगा, जिससे उनकी आत्मिक दृष्टि परब्रह्म अक्षरातीत एवं परमधाम का दीदार कर सके।

सो सरत करी हती, मोमिनों सो हक सुभान ।
ए सोई साएत सोई दिन, अब सोई घड़ी पेहेचान ।।११।।

मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) से हक सुब्हान तआला (प्रियतम अक्षरातीत) ने परमधाम में जो वायदा किया था, यह वही समय, वही दिन और वही घड़ी है । इसकी पहचान कीजिये ।

ए वही साएत है, जो कह्या अलस्तो बे रब्ब कुंम ।
तब कह्या अरवाहों ने, वले ना भूले हम ।।१२।।

यह वही पल (समय) है, जब अल्लाह ताला (परब्रह्म स्वामी) ने मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) से अर्श (परमधाम) में कहा था, कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ ? तब अरवाहों (ब्रह्मात्माओं) ने जवाब दिया था कि निश्चय ही आप हमारे खावंद (स्वामी) हो । हम आपको कभी भी नहीं भूलेंगे ।

वही गरम अवाज है, अजू पडा कान में सोर ।
छे दिन कहे क़ुरान में, इन साएत में भया भोर ।।१३।।

परमधाम मूल मिलावे में अभी भी वही जोशिली आवाज हमारे कानों में गूंजायमान हो रही है । उस पल-घड़ी में क़ुरान में कहे गये छे दिन व्यतीत हो गये और ब्रह्मज्ञान का उजाला (प्रभात) हो गया है ।

वही साएत ब्रज दिखाया, वही साएत में रास रात ।
वही साएत में महंमद, करियां हक सों बात ।।१४।।

उसी पल–क्षण में श्री राज जी ने हमें ब्रज मण्डल दिखा दिया और उसी पल में रास (नित्य वृंदावन) भी दिखा दिया और उसी घड़ी में मुहम्मद साहब की रूह ने मेअराज की रात्रि में हक तआला से बातें की ।

वही साएत हज़रत ईसा, वही साएत में आए इमाम ।
वही साएत में मार दज्जाल को, किया जाहिर दीन इसलाम ।।१५।।

उसी पल में हजरत ईसा (श्री श्यामा जी) आये और उसी पल में इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) दुनिया में आये। उन्होंने उसी पल में तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) से अज्ञानता रूपी दज्जाल का नाश करके शांति के सत्य मार्ग को दुनिया में जाहिर किया है ।

ए साएत करनी कायम, एह उठना क्यामत ।
ए सिफाएत महंमद की से, देखी हक नजीक साएत ।।१६।।

इस पल-घड़ी को अखण्ड करना है । इसे अखण्ड करके परमधाम मूल मिलावे में ब्रह्मात्माओं का जागृत होना ही कियामत है । मुहम्मद (हक़ी सूरत) की सिफायत (तारतम ज्ञान) से ब्रह्मात्माओं ने परमधाम की उस घड़ी (४.३० बजे) को शहरग से भी नजदीक देखा है ।

इन साएत के सुख से, खुले अरस अज़ीम के द्वार ।
इन साएत के खुले पीछे, देख्या नित बिहार ।।१७।।

इस घड़ी (जागनी के ब्रह्माण्ड) में प्राप्त हुये तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम के अखण्ड सुखों के दरवाजे खुल गये । परमधाम के रहस्य खुलने से (तारतम ज्ञान प्राप्त होने से) परमधाम की नित्य लीला विहार के दर्शन हो रहे हैं।

इन साएत के खुले से, हुए रद चौदे तबक ।
इन साएत के देखे से, सब देखी साहेबी हक ।।१८।।

इस घड़ी के जाहिर होने से (तारतम ज्ञान प्राप्त होने से) मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिए चौदह तबक (१४ लोक) समाप्त (अस्तित्वहीन) हो गए और प्रियतम परब्रह्म के साहेबी (ऐश्वर्य) की पूरी पहचान हो गयी ।

इन साहेदी के खुले से, देखी हक खिलवत ।
ए साएत देखी जिनने, तिन इत पाई वाहेदत ।।१९।।

परमधाम की साक्षी अन्य धर्मग्रंथों से पाने के बाद आत्मा-परमात्मा के नूरी खिल्वत (रंगमहल) का साक्षात्कार हुआ । उस पल घड़ी को जिसने देख लिया, उसने इस संसार में वहदत (एकात्मता) का सुख प्राप्त कर लिया ।

ए साएत करी कायम, वास्ते गिरो मोमिन ।
हक सुभान इन को, भेजे खुनचे पैदर पे रोशन ।।२०।।

मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के वास्ते ही इस जागनी के ब्रह्मांड को अखण्ड कर दिया गया है और श्री राज जी ने इनके लिये ही दुनिया में अपना इश्क, इल्म के रूप में पुनः पुनः भेजा है ।

आया जबराइल जिमी पर, वास्ते इन रूहन ।
पर फैलाए आपने, किए चौदे तबक रोशन ।।२१।।

ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते ही जिब्रील (धणी का जोश) इस संसार में आया है । उसने अपने पंख फैला कर (जोश की शक्ति फैलाकर) चौदह लोकों में ब्रह्म ज्ञान का प्रकाश कर दिया है ।

वास्ते इन मोमिन के, आए रसूल अलेह सलाम ।
कायेम घर जाहिर किया, जो है दीन इसलाम ।।२२।।

इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये ही रसूल मुहम्मद साहब आये, जिन्होंने अखण्ड परमधाम का ज्ञान (संकेतों में) दुनिया में बताया, जो कि शाश्वत शांति का मार्ग है ।

वास्ते इन मोमिन के, असराफिलें गाई फिरकान ।
ए इसारतें हक की खोल के, कर दई सब पेहेचान ।।२३।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही अशराफील कुर्आन का गायन कर रहा है । कुर्आन में वर्णित प्रियतम अक्षरातीत के सांकेतिक वचनों को स्पष्ट करके सारी पहचान करा रहा है ।

वास्ते इन मोमिन के, रूह अल्ला उतरे जब ।
द्वार अरस अज़ीम के, खोल दिए तब सब ।।२४।।

इन मोमिनों के वास्ते ईसा रूहअल्ला (श्री श्यामा जी) जब अवतरित

हुये, तब उन्होंने तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) के द्वारा परमधाम के अखण्ड सुखों के द्वार खोल दिये ।

वास्ते परमहंस के, सुके कहे द्वादस स्कंद ।
सो सारे खोल के, कलजुग को काढ़ो निकंद ॥२५॥

उन ब्रह्मसृष्टियों (परमहंस) के लिये ही शुकदेव मुनि ने १२ स्कंधों में श्रीमद्भागवत कहा है। बुद्ध निष्कलंक स्वरूप ने उसके भेदों को खोलकर कलयुगी बुद्धि को जड़ मूल से समाप्त कर दिया है ।

वास्ते परमहंस के, देखाई अद्वैत ठौर ।
बिना ऋषी पूरब के, खोल न सके कोई और ॥२६॥

परमहंसों (ब्रह्मसृष्टियों) के लिये ही वेदों में अद्वैत परब्रह्म का वर्णन किया गया है, उस दिव्यब्रह्मपुर धाम के भेद को पूर्व (पूर्व देश भारत) के ऋषियों (ब्रह्मसृष्टियों) के बिना कोई नहीं खोल सकता ।

यों नाम सबों जुदे धरे, करी भाषा अपनी अनेक ।
भोम अखण्ड जो चेतन, सो तो ठौर है एक ॥२७॥

इस प्रकार सबने अपनी अपनी भाषाओं में परमधाम के अलग-अलग नाम (दिव्यब्रह्मपुर, अर्श आज़म, सुप्रीम हेवन आदि) रख लिये, किंतु जो अखण्ड सच्चिदानंद परमधाम है वह तो एक ही है ।

सारी सिफतें तिन की, करते हैं सब कोए ।
बिना एक ब्रह्म सृष्ट के, पेहेचान ना काहूं को होए ॥२८॥

उस दिव्य परमधाम की प्रशंसा (महिमागान) सभी धर्मग्रंथ करते हैं किंतु उसकी पहचान ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं हो पाती है ।

सो अपनी पेहेचान आप हीं, कर दई इत सबन ।
जो जहाँ लो पोहोंचिया, तिन करी ठौर सोई रोशन ॥२९॥

अपने अध्यात्मिक पहुंच की पहचान सभी मत-पंथों ने स्वयं ही करा दी है । जिसने भी जहां तक का ज्ञान प्राप्त किया, उन्होंने उस स्थान का ज्ञान कहा है।

सो सबद लिखे हैं कागदों, आपे अपनी साख ।
जो किन पाई दमड़ी, या किन लाखों लाख ॥३०॥

उनके ग्रंथों में उसी अनुसार ज्ञान की बातें लिखी हैं, जो कि स्वयं ही इस बात की साक्षी दे रहे हैं, कि किसने दमड़ी (माया का ज्ञान) प्राप्त किया है और किसने लाखों (अक्षर-अक्षरातीत का ज्ञान) प्राप्त किया है ।

तीन सृष्ट शास्त्रों कही, कही क़ुरान में तीन उम्मत ।
इनकी सफे खड़ी भई, सोई उठना रोज क्यामत ।।३१।।

शास्त्रों में तीन प्रकार की सृष्टि (जीव, ईश्वरी, ब्रह्म) का वर्णन किया गया है । कुर्आने पाक में उसे ही तीन उम्मत (आम, खास, खासुलखास) कहा गया है । ये तीनों अलग अलग पंक्ति (रहनी) पर चलने वाले हैं । उन सबका तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) के द्वारा जागृत होना ही कियामत है।

रूहें फिरस्ते उतरे, लिख्या बीच क़ुरान ।
एक अरस अज़ीम से, दूजी गिरो नूर मकान ।।३२।।

कुर्आने पाक में लिखा है कि रूहें (ब्रह्मसृष्टि) और फरिश्ते (ईश्वरी सृष्टि) अपने रब के हुक्म से लैलतुलकद्र (संसार रूपी अज्ञानमयी महिमावान रात्रि) में उतरे हैं । वे इस संसार में क्रमशः परमधाम (अर्श ए अज़ीम) व अक्षरधाम (नूर मकान) से उतरे हैं ।

तीसरी खलक आम जो, कुंन फे कुंन केहेते पैदास ।
सो गिरो मलकूती, जिनको रहे माया की आश ।।३३।।

तीसरी जीव सृष्टि (आम खलक), जो कि परमात्मा के कुंन (हो जा) कहने से (संकल्प मात्र से) पैदा हुई है, वह बैकुंठ (मलकूत) की सृष्टि है । इनके हृदय में माया के नश्वर सुखों की अपार चाहना रहती है ।

फैल तीनों के जुदे जुदे, श्रवनों जुदा स्वाद ।
चितवन चित जुदे धरे, तरफ खेंचे अपनी बुनियाद ।।३४।।

तीनों सृष्टियों की रहनी अलग अलग होती है और ज्ञान सुनने की रूचि भी अलग - अलग प्रकार की होती है । इनका चित्त भी अलग - अलग वस्तुओं का चिंतन करता रहता है । तीनों का अपने मूल उद्गम स्थान की तरफ ही खिंचाव रहता है ।

आम पेड़ मलकूत लों, तिन के आगे चले ना बुध ।
सरियत को छोड़े नहीं, आगे ना होए सुध ।।३५।।

जीव सृष्टि (आम खलक) का मूल वैकुण्ठ (मलकूत) तक ही है, इस कारण उनकी बुद्धि बैकुंठ से आगे नहीं जा पाती है । वे शरीयत-कर्मकांड को छोड़कर ज्ञान व प्रेममार्ग पर आगे नहीं बढ़ पाते हैं ।

ख़ास गिरो जबरूत लों, ले हक़ीकत नूर मकान ।
रहे तीनों एक ठौर, सब आपै करते पेहेचान ।।३६।।

ईश्वरी सृष्टि (खास गिरोह) का अंकूर (संबंध) अक्षर धाम तक का होता है। वे हकीकत (सत्यज्ञान) को प्राप्त करके अक्षर धाम (नूरमकान) तक पहुँचते हैं । संसार में तीनों सृष्टियाँ एक साथ ही रहती हैं । किंतु इनकी पहचान इनकी अलग-अलग रहनी से होती है ।

मोमिन अरस अज़ीम से, करी महंमद सिफाएत ।
जाको खुली हक़ीकत, पोहोंचे हक सूरत मारफत ।।३७।।

मोमिन (ब्रह्मात्माएं) परमधाम से आये हैं, जिनकी सिफायत मुहम्मद स.अ.व. ने हकी सूरत (महामति जी) के रूप में किया है (मुहम्मद साहब के तन में विराजमान होकर लीला करने वाली आवेश शक्ति ने महामति जी के तन में पुनः प्रकट होकर ब्रह्मात्माओं को तारतम ज्ञान प्रदान किया है)। उन्हें परमधाम की हकीकत (सत्य ज्ञान) स्पष्ट होती है, तथा वे ही परब्रह्म के नूरी स्वरूप की मारिफत (परम सत्य) जान पाते हैं ।

तो द्वार बका इत खोले, हक ठौर सुभान ।
वास्ते गिरो मोमिन के, करने इत पेहेचान ।।३८।।

उन्हीं ब्रह्मात्माओं के कारण ही इस नश्वर जगत् में श्री राज जी ने अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्रकट किया है, ताकि ब्रह्मात्माओं को परमधाम के ऐश्वर्य (साहिबी) का ज्ञान हो सके।

वह अरस जिमी एक हीरे की, चेतन नूर प्रकाश ।
तिन के जरे जोत की, जोत न माए आकाश ।।३९।।

उस परमधाम की धरती एक हीरे की है, जो कि चेतन व दिव्य प्रकाश से युक्त है । वहां के एक कण की भी ज्योति आकाश में नहीं समा पाती ।

तो अरस जवेर की रोशनी, कैसा तिन का नूर ।
सों क्यों कर फना जुबां कहूं, रोशनी नूर जहूर ।।४०।।

तो फिर परमधाम के जवाहरातों की रोशनी कैसी दिव्य होगी ? इस नश्वर जिह्वा से उसकी नूरी रोशनी की शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

पर नेक कहा इन भोम में, सो खातर इन मोमिन ।
जानों क्यों आवे दिल में, अपना वतन रोशन ॥४१॥

परन्तु इस असत्य संसार में ब्रह्मात्माओं की जाग्रति के लिये अंश मात्र वर्णन किया गया है । ताकि ब्रह्मात्माओं के दिल में अपने निजघर परमधाम की शोभा किसी भी तरह से बस जाए ।

एह वस्त अपार है, नाहीं गिनती सुमार ।
पर केहे बिना आवे नहीं, हक का नित बिहार ॥४२॥

परमधाम की शोभा अपार है, वहां के लीलारूप सम्पूर्ण सामग्री की गिनती बेशुमार है, किन्तु श्री राज जी का अखण्ड परमधाम व नित्य लीला विहार वर्णन किये बिना चित्त में नहीं आ सकता ।

ए किल्ली अरस अज़ीम की, लिखी बीच फिरकान ।
सो करी जाहेर वास्ते मोमिन, इन जिमी हक सुभान ॥४३॥

यह तारतम ज्ञान परमधाम की कुंजी है, जिसका वर्णन संकेतों में कुर्आन पाक में लिखा है । प्रियतम अक्षरातीत ने इस माया संसार में ब्रह्मात्माओं के वास्ते ही यह दिव्य ज्ञान प्रकट किया है ।

तो जिमी वाहेदत की, होत बातें बीच सरत ।
उठाया चाह्या रूहन को, पोहोंचा बख़त रोज क्यामत ॥४४॥

इसलिये इस महत्त्वपूर्ण घड़ी में उस दिव्य स्वलीलाद्वैत परमधाम की ज्ञान चर्चा हो रही है । क्योंकि कियामत का समय आ चूका है और प्रियतम परब्रह्म ब्रह्मात्माओं को जागृत करना चाहते हैं ।

ए तुम सुनियों मोमिनों, दिल में ले आकीन ।
तो तुमे आवे नज़रों, बका ठौर रोशन ॥४५॥

हे ब्रह्मात्माओं ! अपने दिल में विश्वास लेकर मेरी बात सुनो, तभी तुम्हारी आत्मिक दृष्टि में अखण्ड परमधाम की शोभा नजर आ सकेगी।

इत केहे सुने सब हुकम, दिल में ल्यावे हुकम ।
सुनने को दिल ना करे, सो हुकम जानियो तुम ॥४६॥

यहाँ पर श्री राज जी का हुक्म ही कहता है, हुक्म ही सुनता है । हुक्म ही दिल में विचार उत्पन्न करता है और यदि परमधाम का ज्ञान सुनने में दिल नहीं लगता तो यह भी श्री राज जी के हुक्म से ही हो रहा है।

अब कहूं चौथी भोम की, गिरद मंदिर बारे हज़ार ।
दोए हारें ताकी बनी, इत रहे रमन हार ।।४७।।

अब रंगमहल की चौथी भोम की शोभा का वर्णन करूंगा। जहाँ चारों तरफ बाहरी किनार पर ६-६ हजार मंदिरों की २ हारें आयी हैं अर्थात् कुल १२००० मंदिर शोभायमान हैं । यहाँ श्री राज श्यामा जी व सखियां हांस-विलास करते हुए रमण करते हैं ।

इत चार हार हवेलियां, हर हार दोए सौ एकतीस ।
ताकी जमा कही गिनती, भई नव सौ चौबीस ।।४८।।

दोनों हार मंदिरों के भीतरी तरफ चौरस हवेलियों की चार हारें (पंक्तियां) आयी हैं । प्रत्येक हार में २३१ हवेलियाँ हैं । चारों हारों के कुल ९२४ हवेलियाँ होती हैं ।

एक एक हवेलियों, अस्सी अस्सी मंदिर सुमार ।
थम्भ मेहेराबी गिनती, या को पहले कह्यो विचार ।।४९।।

प्रत्येक हवेली में गिनती के ८०-८० मंदिर आये हैं (चारों दिशा में बीस–बस मंदिर हैं)। स्तम्भों और मेहेराबों की गिनती पहले ही कह दी गयी है ।

चार हार हवेली छोड़ के, चौक अस्सी मंदिर चौकोने ।
ता बीच छिहत्तर थम्भ है, चारों तरफों चौखूने ।।५०।।

तीन हार हवेलियों को छोड़कर चौथी हार हवेली में ८० मंदिर की (चौरस) हवेली आयी है । हवेली में मंदिरों के भीतरी तरफ ७६ स्तम्भ की एक हार चारों तरफ घेरकर आयी है।

चारों तरफों चार द्वार हैं, ताकी दिस है चार ।
दिस पश्चिम सुपेत है, है मंदिर बीस की हार ।।५१।।

हवेली की चारों दिशाओं में चार बड़े दरवाजे आये हैं । पश्चिम दिशा में जो २० मंदिरों की पंक्ति है, उसकी शोभा सफेद रंग की है ।

ए नूर हीरा रंग झलकत, थम्भ दिवालों द्वार ।
उत्तर दिस रंग लिबोई, इत बीसों मंदिरों हार सुमार ।।५२।।

यहाँ के स्तम्भ, दीवारें व दरवाजे नूरमयी हीरे के समान झलकार कर रहे हैं। इस हवेली की उत्तर दिशा के २० मंदिरों की दीवारें स्तम्भों सहित पीले रंग में शोभायमान हैं ।

दक्षिन दिस लाखी रंग, थम्भ बीस मंदिर हार ।
यों ही नूर रंग झलकत, हक हादी करे विहार ।।५३।।

हवेली की दक्षिण दिशा में जो बीस मंदिरों की और स्तम्भों की हार है वह लाल रंग से सुशोभित है । हवेली के चारों और नूरमयी किरणें झलकार कर रही हैं । यहां श्री राजश्यामा जी लीला विहार करते हैं ।

स्वेत स्याम ने सबज रंग, तहां है थम्भ देहेलान ।
ए चौक साठ मंदिर का, चौथी तरफ देहेलान जान ।।५४।।

यह चौक साठ मंदिर का है (तीन दिशा में २०-२० मंदिर हैं), जिसकी चौथी दिशा में दहलान के स्तम्भ नीले रंग के हैं (काले, सफेद और हरे रंग की झलकार मिलकर नीले रंग में परिवर्तित हो जाती है)।

चारों तरफों चार द्वार हैं, जहां सामने सेत दिवाल ।
द्वार लगते सिंघासन, देख मोमिन होत खुसाल ।।५५।।

हवेली में चारों दिशा में चार द्वार हैं । जहां सामने (पश्चिम दिशा में) सफेद रंग की दिवाल है वहां पश्चिम के द्वार से लगता हुआ (नजदीक) सिंहासन है, जिसे देखकर ब्रह्मप्रियाएं प्रसन्न हो जाती हैं । (चबूतरे की पश्चिम दिशा की सीढ़ियों से लगते हुए दो स्तम्भों को महराबी द्वार कहा जाता है)

देहेलान से जब पैठिए, तरफ दाहिने सिंघासन ।
हक हादी रूहें बैठत, गिरद फिरती रूहें मोमिन ।।५६।।

पूर्व की दहलान से जब हवेली में प्रवेश करते हैं, तब हमारे दाहिने हाथ की तरफ (पश्चिम के द्वार के उत्तर के दो स्तम्भों के सामने) सिंहासन रखा हुआ है, जिस पर श्री राज श्यामा जी विराजमान होते हैं । सखियां चबूतरे पर चारों तरफ घेरकर विराजमान होती हैं ।

थम्भों लगत सिंघासन, ज्यों है मूल मिलावे के ।
शोभित रंग कंचन, त्यों ही रोशन जानियों सोए ।।५७।।

मूल मिलावे के समान ही (पश्चिम के सीढ़ियों के उत्तर के दो) स्तम्भों से लगता हुआ सिंहासन रखा है । जैसा कंचन रंग का सिंहासन मूल मिलावे में शोभायमान है, वैसा ही दिव्य जगमगाता हुआ सिंहासन यहाँ भी है ।

इत निरत हमेशा होत है, पन्द्रा दिन खेले वन ।
पन्द्रे दिन हैं निरत के, सब भोम ठौर रोशन ।।५८।।

कृष्ण पक्ष के १५ दिनों में रंगमहल की चौथी भोम की इस चौथी चौरस हवेली में सदैव नृत्य की लीला होती है । इस समय रंगमहल के सभी भोमों एवं परमधाम के सभी स्थानों में नृत्य की लीला प्रतिबिम्बित होती है । बाकि शुक्ल पक्ष के १५ दिनों में वनों में खेलते हैं ।

बाजे निरत जवेर की, सब श्रवनां को दे सुख ।
सब ठौरो भासत प्रतिबिम्ब, मानों इत ही मिलावा मुख ।।५९।।

नृत्य के समय बजने वाले सभी वाद्ययंत्र नूरमयी जवाहरातों के हैं, जो मधुर स्वर उत्पन्न कर कानों को सुख प्रदान करते हैं । यहाँ होने वाली नृत्य लीला का प्रतिबिम्ब सम्पूर्ण परमधाम में पड़ता है । सबको (परमधाम के तमाम पशु पक्षियों को) ऐसा लगता है कि, हमारे पास ही राजश्यामा जी व सखियां बैठे हैं व यहीं नृत्य की लीला हो रही है ।

मानो निरत सबों ठौर, भासत नूर झलकार ।
ए सुख शबदातीत का, जाने परवरदिगार ।।६०।।

उस समय ऐसा प्रतीत होता है, कि जैसे परमधाम के सभी स्थानो में नृत्य की लीला हो रही हो । चारों तरफ नृत्य की नूरी झलकार प्रतिबिम्बित होती है । शब्दातीत परमधाम के इन सुखों को वास्तविक रूप से प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

हक हादी बैठत तखत पर, जुथ चालीस रूहन ।
रहे एक एक जुथ में तीन सौ, कहे बारे हज़ार मोमिन ।।६१।।

श्री राज श्यामा जी सिंहासन पर विराजमान होते हैं, साथ में ४० जुत्थ सखियां भी (कुर्सियों पर) विराजमान होती हैं । प्रत्येक जुत्थ में ३०० सखियाँ हैं । इस प्रकार कुल १२००० सखियाँ कही गयी हैं ।

निरत नवरंग बाई की, करत पेहेले दिन जब ।
स्याम साड़ियां आम रस, कंचुकी पेहेरत तब ॥६२॥

कृष्ण पक्ष के पहले दिन जब नवरंग बाई नृत्य करती हैं, तब वे श्याम रंग की साड़ी और आमरस रंग की कंचुकी (चोली, ब्लाउज) धारण करती हैं ।

पांच पटे का चरनिया, नीले रंग इजार नूर ।
सब बस्तर तार जवेर के, सो क्यों कर कहूं जहूर ॥६३॥

उस समय उनकी चरणियां (पांच रंग के) पाँच पट्टी की होती है और इजार नूरमयी नीले (हरे) रंग की होती है । सभी वस्त्र जवाहरातों की तारों की नक्काशी से युक्त हैं, उस अवर्णनीय शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

दिन दूसरे बेन बाई, पीली साड़ी शोभित ।
गुलालिए रंग कंचुकी, नूर नीला चरनियां झलकत ॥६४॥

कृष्ण पक्ष के दूसरे दिन बेन बाई नृत्य करती हैं, जो कि पीले रंग की साड़ी में शोभायमान होती हैं । वे गुलाबी रंग की कंचुकी (चोली) और हरी चरणिया पहनती हैं, जिनकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ झलकार कर रही है ।

इजार पांच पटे की, ए सब अंग माफक ।
क्यों कहूं नाजुकी इन की, सब लग रहे अंग इशक ॥६५॥

उनकी इजार (पांच रंग के) पाँच पट्टी की है, जो कि उन के अंग के अनुरूप है (अंग से लगी हुयी बिल्कुल फिट है)। इश्कमयी तनों से लगे हुए ये वस्त्र अत्यंत मुलायम व चेतन हैं ।

दिन तीसरे सेन बाई, शोभे साड़ी कपूरीए रंग ।
स्याम जड़ाव कंचूकी, नीले रंग चरनिया अंग ॥६६॥

तीसरे दिन सैनबाई नृत्य करती हैं जिनके अंगो पर कपूरिया रंग की साड़ी, जवाहरातों से जड़ी हुई श्याम रंग की चोली और नीले (हरे) रंग की चरणियां सुशोभित है । (नीली जिमी नूर पाच की, नूर पीले पसु जानवर । नूर नीला आसमान जिमी, ए नूर खूबी कहूं क्यों कर ।। परिक्रमा ४३/५० यहां पाच नग का रंग भी हरा होता है और यहां दधि सागर का प्रसंग चल रहा है, जो कि हरे रंग का ही होता है, इससे स्पष्ट है कि यहां 'नीला' शब्द गुजराती के 'लीला' का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ होता है 'हरा' । वाणी में नीले रंग को सर्वत्र

आसमानी रंग के रूप में वर्णन किया है ।)

इजार पांच पटे की, शोभित है सुखदाए ।
अंग अंग सब भासत, ए केहेनी में आवत नाहें ।।६७।।

उनकी पाँच पट्टी की इजार अत्यंत सुखदायी एवं सुन्दर लगती है । सम्पूर्ण अंग वस्त्रों में से भासित होते हैं, जिनकी शोभा वर्णन से परे है ।

दिन चौथे मोर बाई, रंग साड़ी दाड़मीए होए ।
काजलीए रंग कंचूकी, सब साज जड़ाव है सोए ।।६८।।

चौथे दिन मोरबाई अनार रंग की साड़ी में नृत्य करती हैं । उनके चोली का रंग काजलिया (काला) है । वस्त्रों की सम्पूर्ण सज्जा (शोभा) रत्नों से युक्त है ।

नीले जड़ाव चरनियों, पांच पटे की कही इजार ।
ए निरत शोभा क्यों कहू, हक हादी देखन हार ।।६९।।

मोर बाई की चरणियां नीले (हरे) रंग जड़ाव की है और उनके पैरों में पाँच पट्टे की इजार सुशोभित है । जिस नृत्य के द्रष्टा श्री राजश्यामा जी हों, उस नृत्य की शोभा का वर्णन कैसे किया जा सकता है ?

दिन पांचमें ढेल बाई, शोभे साड़ी सेत जड़ाव ।
लाल लिबोई कंचूकी शोभा, सो कह्यो न जाए भाव ।।७०।।

पाँचवे दिन ढेल बाई जी नृत्य करती हैं, जो कि जड़ाव से युक्त सफेद रंग की साड़ी तथा लाल व लिबोई (पीले) रंग की कंचुकी से सुसज्जित होती हैं । उस की शोभा अवर्णनीय है ।

नीलो जड़ाव चरनियों, पांच पटे इजार नूर ।
इत रहे सब जवेर की, ए तो बका ठौर जहूर ।।७१।।

वे नीले रंग की जड़ाउ चरणिया (घेरदार लहंगा) तथा पाँच पट्टी की नूरी इजार धारण की हुई हैं । ये अखंड परमधाम के जवाहरातों से जड़े वस्त्रों की शोभा का वर्णन है ।

दिन छठे केल बाई, साड़ी जवेर दोरिए रंग ।
नीलवी रंग कंचूकी, चरनियों कसूब रंग ।।७२।।

छठे दिन केलबाई जी जवाहरातों से जड़ी हुई दोरिए रंग की साड़ी, नीले

(नीलवी) रंग की कंचुकी तथा कसुंबी (हल्का लाल) रंग की चरणियां धारण कर नृत्य करती हैं।

इजार पांच पटे की, कई झलकत नूर तरंग ।
साम सामी किरना लरे, ए कबूं ना होए भंग ।।७३।।

उनकी इजार पाँच पट्टे की है, जिसमें से कई रंगों की नूरमयी किरणें झलकार करती हैं । वस्त्रों की किरणें आपस में टकराती हुई परस्पर जंग करती प्रतीत होती हैं । कोई भी रोशनी कभी भी मद्धम (मंद) नहीं होती है।

दिन सातमें खेल बाई, साड़ी गुलालिए रंग नूर ।
जड़ाव पीली कंचूकी, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।७४।।

सातवें दिन खेल बाई जी अनेक रंगों के नगों से जड़ित गुलाबी रंग की साड़ी और पीले रंग की कंचुकी में नृत्य करती हैं । इनकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

रंग आसमानी चरनियां, पांच पटे की इजार ।
ए भोम चौथी निरत बका मिने, नित सुख होत बिहार ।।७५।।

उन्होंने आसमानी (नीले) रंग की चरणियां व पाँच पट्टे (पांच रंग) की इजार धारण की हुई है । यह अखण्ड परमधाम के दिव्य रंगमहल की चौथी नृत्य की भूमिका है, जहां हमेशा आनंद में लीला विहार होता है ।

दिन आठ में बिलास बाई, सो काजलिए साड़ी रंग ।
दिवे रंग जड़ाव कंचुकी, करत जोत जवेरों जंग ।।७६।।

आठवें दिन विलास बाई जी की नृत्य करती हैं । उनकी साड़ी का रंग काजल जैसा काला है तथा कंचुकी (ब्लाऊज) का रंग दीपक की ज्योति जैसा है । उन वस्त्रों में जड़े जवाहरातों की ज्योति आपस में टकराते हुए मनोहारी दृश्य उपस्थित कर रही है ।

गेहुएं रंग चरनिया, इजार रंग दरपन ।
ए जोत जवेर की क्यों कहूं, सुख देखत रूह मोमिन ।।७७।।

विलास बाई जी गेंहुए रंग की चरणियां और दर्पण रंग की इजार धारण करती हैं । उन जवाहरातों की ज्योति की शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं ? उन्हें देखकर ब्रह्मात्माएं अत्यंत सुख पाती हैं ।

दिन नवें झरमर बाई, साड़ी सेमीए रंग जड़ाव ।
स्याम सो जड़ाव कंचुकी, किरना लरत नूर सुभाव ॥७८॥

नवें दिन झरमरबाई जी नृत्य करती हैं । वे सेमिए रंग जड़ाव की साड़ी तथा श्याम रंग जड़ाव की कंचूकी धारण करती हैं । उनके वस्त्राभूषणों से निकलती किरणें, अपने नूरी स्वभाव के अनुसार आपस में टकराती हुई सुशोभित होती हैं।

नीले जड़ाव चरनियों, सेंदुरिया रंग जड़ाव इजार ।
ए सुख शोभा क्यों कहूं, करे जुगल सरूप बिहार ॥७९॥

झरमर बाई जी नीले (हरे) रंग जड़ाव की चरणियां एवं सिंदुरिया रंग जड़ाव की इजार धारण करती हैं, युगल स्वरूप के लीला विहार की सुख शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

इत दोए सखियां, ताकी निरत जोड़े होए ।
मेनबाई मिल के करे, कहूं बागों तिनको सोए ॥८०॥

यहाँ नवे दिन को दो सखियाँ मिलकर नृत्य करती हैं । झरमरबाई के साथ मिलकर मैनबाई भी नृत्य करती हैं । उनके वस्त्रों का भी वर्णन करती हूं ।

साड़ी रंग सेन्दूरिए, कंचूकी स्याम जड़ाव ।
नीले जड़ाव चरनियों, पांच पटे इजार को भाव ॥८१॥

मेनबाई सिंदुरिया रंग की साड़ी, श्याम रंग जड़ाव की कंचूकी, नीले (हरे) रंग जड़ाव की चरणियां तथा पाँच पट्टे (पांच रंग) की इजार से सुसज्जित होती हैं ।

दिन दसमें भमर बाई, साड़ी रंग आसमान ।
पांच पटे जड़ाव कंचूकी, ताकी मोमन करे पेहेचान ॥८२॥

दसवें दिन भंवर बाई जी नृत्य करती हैं, जो आसमानी (नीले) रंग की साड़ी व पाँच पट्टे की रत्नों से जड़ी हुई कंचूकी धारण करती हैं। इसकी पहचान ब्रह्मात्माएं ही कर सकती हैं।

पीले बीलभोए को चरनियों, इजार पांच रंग नूर ।
सब तार जवेरों झलकत, बिना मोमिन न पावे सहूर ॥८३॥

भंवर बाई पीले बीलभोए रंग की चरणियां और नूरमयी पाँच रंगो की

इजार पहनी हुई हैं, जिनमें जवाहरातों के तार झलक रहे हैं जिनका ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई चिंतन नहीं कर सकता ।

रूप मेनबाई जोड़े, इन समे निरत करत ।
साड़ी रंग आसमानी शोभित, पांच पटे कंचूकी जड़ाव जुगत ।।८४।।

इस समय भंवरबाई के साथ रूपबाई व मेनबाई जी नृत्य करती हैं । उनकी साड़ी आसमानी (नीले) रंग की तथा कंचूकी जड़ाव से युक्त पाँच पट्टे की आई है ।

पीले जड़ाव चरनियों, इजार चनोटीए रंग ।
अंग अंग नूर भासत, कई लेहेरा उठत रंग ।।८५।।

इनका लहंगा (चरणिया) पीले रंग जड़ाव का तथा इजार चनोटी जैसे रंग की है । इनके प्रत्येक अंग से नूर झलकता है, जिनकी अनेक रंगो की किरणे लहराती हुई दिखाई देती हैं ।

दिन अग्यारे में तानबाई, साड़ी दिवे रंग जड़ाव ।
सोभे स्याम जड़ाव कंचूकी, सो क्यों कहूं या को भाव ।।८६।।

ग्यारहवें दिन तानबाई जी नृत्य करती हैं । उनकी साड़ी दीपक रंग जड़ाव की होती है तथा कंचूकी श्याम रंग की सुशोभित होती है । उनकी माशूक को रिझाने की प्रेम भावना का किस प्रकार वर्णन करूं ?

नीलो चरनियों जड़ाव को, पांच पटे की इजार ।
कई नूर लेहेरा उठै किरना, ए क्यों कहूं नित बिहार ।।८७।।

तानबाई जी की चरणिया नीले (हरे) रंग जड़ाव की तथा इजार पाँच पट्टे की होती है । इनसे नूरी किरणों की कई लहरें उठती हैं । इस अखंड सुख का किस प्रकार वर्णन करूं?

दिन बारमें सरूप बाई, साड़ी नीले ने पीले रंग ।
सेन्दूरिए रंग कंचूकी, ज्यों जड़ाव शोभित अंग ।।८८।।

बारहवें दिन स्वरूप बाई जी नृत्य करती हैं । वे साड़ी नीले (हरे) व पीले रंग की पहनती हैं तथा कंचूकी सिंदूरिया रंग की पहनती हैं । ये वस्त्र ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे अंगों में ही जड़े हुए हों ।

लाल बिलभोट याको चरनियां, इजार रंग आसमान ।
शोभा केहेनी में न आवहीं, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।८९।।

स्वरूप बाई जी की चरणियां लाल बिलभोट रंग की तथा इजार आसमानी (नीले) रंग की होती है जिसकी अकथनीय शोभा की पहचान मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को ही हो सकती है ।

तेरे दिन सनमुख बाई, साड़ी जड़ाव रंग भीगे ।
दीवे रंग जड़ाव कंचूकी, नूर रोशन झलकत ए ।।९०।।

तेरहवें दिन सम्मुख बाई जी भींगे रंग जड़ाव की साड़ी व दीपक रंग जड़ाव की कंचुकी में नृत्य करती हैं । उसकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ जगमगा रही होती है।

गेहुंए रंग चरनियां, इजार रंग कंचन ।
अंग अंग सब भासत, सो क्यों कर कहूं रोशन ।।९१।।

उनकी चरणियां गेंहुए रंग की व इजार कंचन रंग की है, जिसमें से उनके सभी अंग आभासित हो रहे है । उसकी दिव्य रोशनी का किस प्रकार वर्णन करूं ?

चौदमें दिन सनकूल बाई, साड़ी शोभे लाल कलंगे ।
नीली जड़ाव कंचूकी, झलकत साड़ी में ए ।।९२।।

चौदहवें दिन सनकूल बाई जी नृत्य करती हैं । उनकी साड़ी लाल कलंगे रंग की होती है तथा कंचुकी नीले (हरे) रंग जड़ाव की होती है, जो साड़ी में से झलकार करती है ।

आसमानी रंग चरनिया, पांच पटे की इजार ।
ए शोभा नूर जमाल मुख, अंग नैनों देखनहार ।।९३।।

उनकी चरणियां आसमानी रंग जड़ाव की और इजार पाँच पट्टे की होती है। सनकूलबाई की यह शोभा, मुख इत्यादि स्वयं नूरजमाल (श्री राज जी) अपने नैनों से देखते हैं ।

दिन पंद्रमें सुतेज बाई, साड़ी रंग कखुंबर ।
श्याम जड़ाव कंचुकी, ए शोभा अति सुन्दर ।।९४।।

पंद्रहवें दिन सुतेज बाई जी नृत्य की लीला करती हैं, जो कखुंवर रंग

की साड़ी व श्याम रंग जड़ाव की कंचुकी पहनती हैं । उनकी शोभा अत्यन्त सुंदर दिखाई देती है ।

नीलो जड़ाव चरनियों, ऐ शोभित सब उपर ।
रंग कह्यो न जावहीं, ए बरनन करूं क्यों कर ॥९५॥

वे नीले (हरे) रंग जड़ाव की चरणियां पहनती हैं । उसकी शोभा सर्वोपरि है जिसके रंग का वर्णन ही नहीं हो सकता है । ऐसी अद्‌भुत शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं?

आसमानी रंग इजार, मीहीं चूड़ी झलकत नूर ।
ए शोभा शब्दातीत की, सो कह्यो न जाए जहूर ॥९६॥

उनकी इज़ार आसमानी (नीले) रंग की है, जिसमें बारीक - बारीक नूरमयी चुन्नटें झलकार कर रही हैं । इस शब्दातीत शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

इत होत निरत चौथी भोम में, देखें नैनों नूरजमाल ।
ए निरत भोम चेतन में, देख रूहें होत खुसाल ॥९७॥

यहां रंगमहल की चौथी भूमिका में नृत्य की लीला होती है, जिसे अक्षरातीत श्री राज जी स्वयं अपने नेत्रों से देखते हैं । यह परमधाम की चेतन भूमिका का नृत्य है, जिसे देखकर सखियां बहुत ही प्रसन्न होती हैं ।

एक छिन में कई कोट रंग, शोभा धरत सिनगार ।
मन चाह्या सब होत है, ए जो निरत विहार ॥९८॥

वे सखियां एक ही पल में कई करोड़ो रंगों के वस्त्राभूषणों का श्रृंगार धारण करती हैं । इस अखण्ड नृत्य की लीला में मन की इच्छानुसार सब होता है ।

क्यों कहूं शोभा तिन की, जो हक के दिल माफक ।
सो ख्वाब आकार क्यों केहे सके, जो सूरत नूर इशक ॥९९॥

उन (नृत्य करने वाली) सखियों की शोभा-सुंदरता का किस प्रकार वर्णन करूं, जो राजजी के दिल के अनुसार है ? उनके नूरमयी इश्क से युक्त स्वरूप का वर्णन इस स्वाप्निक देह से किस प्रकार हो सकता है ।

ए इशक है हक का, हकै करत इत प्यार ।
हकै निरत करावत, है आपै देखनहार ।।१००।।

उनके हृदय में जो इश्क है, वह राजजी का ही है, और राजजी भी उनसे अनंत गुना प्यार करते हैं । नृत्य करवाने वाले भी राजजी ही हैं, और देखने वाले भी स्वयं ही हैं ।

आपै बाजे आपै बजावहीं, आपै करे गान ।
आपही गुन गाए के, करें आप अपनी पेहेचान ।।१०१।।

उस स्वलीलाद्वैत परमधाम में सच्चिदानंद परब्रह्म कण कण में विराजमान हैं । वे स्वयं ही वाद्य यंत्रों के रूप में हैं, बजाने वाले भी स्वयं ही हैं और गायन भी स्वयं ही करते हैं । स्वयं ही गुणगान करके अपनी पहचान आप ही करा रहे हैं ।

इत दूसरा कोई है नहीं, एही वाहेदत नूर है हक ।
ए इशक सूरत अरस में, सो तो अपने दिल माफक ।।१०२।।

उस स्वलीला अद्वैत परमधाम के अंदर अक्षरातीत परब्रह्म के सिवाए कोई दूसरा है ही नहीं । यही वहदत (एकात्मता) स्वरूप ही अक्षरातीत का नूर है। वहां सभी इश्क के ही स्वरूप हैं । सम्पूर्ण परमधाम राजजी के हृदय अनुसार है ।

महामत कहे ए मोमिनों, नेक निरत कह्या मैं तुम ।
तुम हो आशक हक के, दिया तुम को अपना हुकम ।।१०३।।

श्री महामति जी ब्रह्मसृष्टियों से कह रही हैं, आपके लिये ही नृत्य की लीला का थोड़ा सा वर्णन किया है । आप ही प्रियतम अक्षरातीत के आशिक (प्रेमी) हो। धाम धणी ने आपको ही अपना हुक्म दिया है ।

प्रकरण-२० चौपाई-१०६०

बड़ी वृत के इस प्रकरण में महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर स्वयं राजजी महाराज चौथी भोम में होने वाली नृत्य की लीला का सजीव वर्णन कर रहे हैं। हे सुंदरसाथ जी! अपनी सुरता को रंगमहल की चौथी भोम में नृत्य की हवेली में ले चलिये, और प्रियतम श्रीराजजी के प्रेम व आनंद में डूब जाईये।

निरत शोभा चौथी भोम में, नेक बैठे देखो मोमिन ।
निरत करे नवरंग बाई, ठौर सबे रोशन ।।१।।

हे मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) ! आप जरा चौथी भोम में बैठकर नृत्य की शोभा देखिये। जब नवरंग बाई नृत्य करती हैं, तो उसका प्रतिबिंब पूरे परमधाम में दिखता है ।

ए भोम सब चेतन, हीरा एक रस नूर ।
तामें रंग जवेर जुदे जुदे, कई लेहेंरा उठत जहूर ।।२।।

परमधाम की सम्पूर्ण भूमिका नूरमयी, एक रस, चेतन हीरे की है । एक हीरे के अन्दर ही अलग-अलग रंगो के जवाहरात दिखायी देते हैं, जिनकी नूरमयी किरणें लहराती हुई दिखाई देती हैं ।

जुगल स्वरूप सिंघासन, जब बैठे इन तखत ।
रूहें घेर गृद बैठियां, हुआ निरत बखत ।।३।।

नृत्य के समय युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी जब सिंहासन पर विराजमान होते हैं, तब सब सखियाँ चारों तरफ घेरकर बैठती हैं ।

नवरंगबाई को सरूप, वय रहे अति किशोर ।
पेहेरे बस्तर भूखन सिनगार, नूर झलकत रोशनी नूर ।।४।।

नवरंग बाई का स्वरूप अति किशोर अवस्था का है । जब वे वस्त्राभूषण पहनकर श्रृंगार सजती हैं तो उसकी नूरमयी रोशनी अपार झलकार करती है ।

मध्य चौक में आए के, ठाढ़ी हक सनमुख ।
जोड़े जुथ की और रूहें, देखें नूरजमाल का मुख ।।५।।

नृत्य की हवेली के चबूतरे के मध्य में आकर, नवरंग बाई श्री राज जी के सम्मुख खड़ी होती हैं । इनके साथ इनके जुत्थ की अन्य सखियाँ भी होती हैं । वे सब श्री राज के सम्मुख खड़ी होकर उनका सुंदर मुखारविंद निहारती हैं ।

ले मृदंग मृदंग बाई, बाजत बाजू दोए ।
तानबाई तान मिलावत, सेन बाई स्वर पूरत सोए ।।६।।

मृदंग बाई मृदंग लेकर बजाती हैं । (नृत्य करने वाली सखियों के) दोनों तरफ उनके जुत्थ (समूह) की सखियां विभिन्न वाद्य यंत्र बजाती हैं । उनके साथ

तानबाई तान मिलाती हैं और सैन बाई स्वर पूरती है ।

कोई ताल बजावत, झांझ मृदंग पखाल बाजत ।
जंत्र सारंगी श्री मण्डल, रस भीनी उठत आवाज ।।७।।

कोई सखी ताल बजाती है, कोई झांझ, मृदंग व पखावज बजाती है और कोई सखी जंत्र, सारंगी व श्री मण्डल बजाती है । सभी बाजंत्रों से अत्यंत रस भरी मधुर ध्वनि निकलती है ।

कोई करताल अम्रत कुंडली, कोई श्री मंडल सब साज ।
राग छत्तीसों इन में, उठत मधुरी आवाज ।।८।।

कोई सखी करताल, अमृत कुंडली और कोई सखी श्री मण्डल के पूरे साज बजाती है । इनसे पूरे ३६ राग निकलते हैं, जिसकी ध्वनि अत्यंत मधुर होती है ।

इत बाजत कई भांत के, ताके लिए न जाए नाम ।
पड़छन्दे आवाज उठत, नव भोम आकाशे ठाम ।।९।।

नृत्य के समय यहाँ पर कई प्रकार के वाद्य यंत्र बजते हैं, जिनके नाम नहीं लिये जा सकते हैं । रंगमहल की नवों भोमों एवं दसवीं आकाशी तक नृत्य की प्रतिध्वनि गूँजती है ।

नवरंग बाई प्रथम, रसना रटे सुकन ।
निरत करे जुगत सो, जो दिल में रहे लिए मन ।।१०।।

नवरंग बाई सर्वप्रथम अपनी रसना से स्वर उच्चारण (अलाप) करती हैं । तत्पश्चात् जैसा उनके दिल में भाव होता है, जैसा उन्होंने मन में लिया होता है, वैसा ही युक्ति पूर्वक नृत्य करती हैं, ।

तेई गत केहेने लागी, त्यों ही बोलत मृदंग ।
तेसे ही बाजे बाजत, भाव दिखलावने हैं अंग ।।११।।

उसी गति व चाल के अनुसार नृत्य होने लगता है, मृदंग भी वैसे ही बजने लगते हैं । नवरंग बाई अपने अंगों से जैसा भाव दिखलाना चाहती हैं, वैसे ही सभी वाद्य यंत्र बजते हैं ।

तेई पड़छन्दे बोलत, स्वर अति मीठे रसाल ।
ए अति सुखदाई श्रवन के, अति मन होत खुसाल ।।१२।।

उसी के अनुसार प्रतिध्वनि होती है, अत्यंत मीठे रसीले स्वर निकलते हैं, जो सुनने में सुखदाई होते हैं व मन को प्रसन्न कर देते हैं ।

वही गति मृदंग में, जब बाजन लागी जोर ।
नवरंग बाई अंग में, वे शोभा दिखावत ठौर ॥१३॥

मृदंग भी उसी गति के अनुसार बजते हैं। जब मृदंग जोर से एवं तेज गति से बजने लगता है, तो नवरंग बाई भी उसी के अनुसार अपने अंगों से भाव दर्शाती हैं ।

कई गते संगीत की, बाजन लागी सब साज ।
तिन गते पर निरत होत है, स्वर मीठा उठत आवाज ॥१४॥

वाद्ययंत्रों से कई प्रकार का संगीत बजता है । जिस प्रकार से सभी वाद्ययंत्र बजते हैं, नृत्य भी उसी अनुसार होता है, और मधुर स्वर भी उसी अनुसार निकलता है।

निरत नेह स्वर करत हैं, खड़ी आगे हक सुभान ।
ए सुख न आवत शबद मे, रहे मोमिन दिल पेहेचान ॥१५॥

श्री राज जी के सम्मुख खड़ी होकर नवरंगबाई अत्यंत प्रेम भरे स्वरों से गाते हुए नृत्य करती हैं । इस सुख का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता, केवल मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही उसको पहचानते हैं ।

पाऊ भूखन बाजत, स्वर सुन्दर मनुहार ।
क्यूं कर इन जुबां कहूं, हक हादी देखनहार ॥१६॥

अत्यंत मनोहारी व सुंदर स्वरों से पाँव के आभूषण बजते हैं । जिस नृत्य के द्रष्टा स्वयं श्री राज श्यामा जी हैं, उसकी शोभा का वर्णन इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार करूं ?

निरत करत जब जात हैं, आगे नजीक हक ।
सब ठौरों भासे प्रतिबिंब, तामे रहे न काहूं शक ॥१७॥

नृत्य करती हुई सखियाँ जब श्री राज जी समीप जाती हैं , तब यह नृत्य सम्पूर्ण परमधाम में प्रतिबिम्बित होता है । सम्पूर्ण परमधाम में सबको ऐसा लगता है कि हमारे सामने ही नृत्य हो रहा है।

जहां जहां नजर करें, जानों निरत होत सब ठौर ।
कोई ठौर खाली नहीं, जहां देखे तहां और ॥१८॥

जहाँ जहाँ नजर करते हैं, ऐसा लगता है, मानों वहाँ (सब जगह) नृत्य हो रहा है । कोई भी जगह खाली नजर नहीं आती है । हर तरफ ही नृत्य होता दिखता है।

भाव जात आवन का, फेरा बनी लटकनी हाथ ।
अंगुरियां चलवन करे, रहे बाजे वाली सब साथ ॥१९॥

नृत्य के समय भाव के आने-जाने को दर्शाने के लिये कमर एवं अपने हाथों को लटकाते हुए चक्कर काटती हैं और अपनी उंगलियों को चलाती हैं । वाद्य यंत्र बजाने वाली सखियाँ भी सब उसके अनुसार साथ देती हैं ।

जो चाहे एक घूंघरी, तो बाजत एकै बोल ।
दो चाहे तो दोए स्वर, कोई सुख नाही याके तौल ॥२०॥

नृत्य करने वाली सखी जब एक घूंघरी बजाना चाहती है, तो एक ही घूंघरी बजती है और दो आभूषण (झांझरी, घूंघरी) बजाना चाहती है, तो दो स्वर निकलते हैं । यह अत्यंत सुखदायी और अद्वितीय होता है ।

तीन चाहे तीन बाजहीं, चार चाहे बाजे चार ।
जिन भूखन को ज्यों बुलावत, सो त्यों ही बाजत सार ॥२१॥

जब चाहती है कि तीन आभूषण (झांझरी, घूंघरी, कांबी) बजें, तो तीन आभूषण बजते हैं और जब चार आभूषण बजाना चाहती है, तो चारों आभूषणों (झांझरी, घूंघरी, कांबी, कड़ला) से आवाज आती है । जिस आभूषण से जैसा बुलवाती हैं, वे वैसा ही आवाज करते हैं ।

जब झीने स्वर बोलावत, घूंघरी इन चरन ।
मृदंग बाजत तिन पर, और स्वर बाजत रोशन ॥२२॥

जब चरणों में विद्यमान घुंघरी से कोमल स्वर बुलवाती हैं, तो उसी स्वर के अनुसार मृदंग आदि अन्य सभी वाद्ययंत्र भी बजने लगते हैं ।

जब सारंगी बजावहीं, सब बाजे पीछे बाजे तिन ।
बस्तर भूखन झलकत, उठै कई किरन नूर रोशन ॥२३॥

जब सखियां सारंगी बजाती हैं, तो सभी वाद्य यंत्र उसके पीछे (उसके

अनुसार) बजने लगते हैं । इस समय सखियों के वस्त्राभूषण जगमगाते हुए दिखाई देते हैं । उनसे अपार नूरमयी किरणें निकलती हैं, जिससे चारों ओर रंगबिरंगा प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है ।

जब जंत्र बजावहीं, स्वर मधुरो मिलावे तिन ।
तिन पीछे सब बाजे बाजे, सब रोशन नूर चेतन ।।२४।।

जब जंत्र बजाती हैं, तो उसके साथ अपना मधुर स्वर मिलाते हुए गाती हैं। इसके पीछे (उस स्वर के अनुसार) सभी वाद्ययंत्र भी बजने लगते हैं । सभी वाद्ययंत्र नूरमयी, चेतन व दिव्य प्रकाश से युक्त हैं ।

जब श्री मंडल बजावहीं, तब बाजे राग छत्तीस ।
सुन्दर कंठ सोहामने, मोमिन सुनें हक बकसीस ।।२५।।

जब श्री मण्डल बजाती हैं, तब ३६ राग बजने लगते हैं । सखियों के कण्ठ बहुत सुंदर व सुरीले (सुहावने) हैं । श्री राज जी की कृपा से ब्रह्मात्माएं उसे सुनती हैं ।

कई बिलास इन निरत में, रूहें कई भांत ले सुख ।
सो इन जुबां केते कहूं, करे बिलास हक सनमुख ।।२६।।

इस नृत्य की लीला में कई प्रकार से हांस-विलास होता है । सखियां कई प्रकार से सुख लेती हैं । श्री राज जी के समक्ष सखियां कई प्रकार से आनंद करती हैं । उसका इस जिह्वा से कितना वर्णन करूं ?

एक पहोर रात लों, होत इत निरत ।
हक रीझ इत बीड़ी दे, हुआ पौढने का बखत ।।२७।।

यहां रात्रि के नौ बजे (एक प्रहर रात्रि) तक नृत्य की लीला होती है । नृत्य के उपरान्त श्री राज जी प्रसन्न होकर नवरंग बाई के समूह को अपने कर कमलों से पानों का बीड़ा देते हैं । अब शयन लीला का समय हो जाता है ।

उठे हक सुभान तखत से, हादी रूहें हैं संग ।
तांही सब रूहें उठी, सब चली राज के संग ।।२८।।

तब प्रियतम श्री राज जी सिंहासन से उठते हैं । साथ में श्री श्यामा जी व सखियाँ भी खड़ी होकर श्री राज जी के साथ चलने लगती हैं ।

पांउ धरत पगथीन से, गरजे नवें भोम नूर ।
पोहोंची पांचमी भोम को, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।२९।।

जब चौथी भोम से सीढ़ियाँ चढ़कर पाँचवी भोम में पधारते हैं, उस समय सीढ़ियों पर चढ़ते समय चरणों के आभूषणों की मधुर ध्वनि से रंग महल के नौ भोम गूंजायमान हो उठते हैं । पाँचवी भोम में श्री राजश्यामा जी व सखियाँ पहुँच जाते हैं । इस सुख-शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं?

महामत कहे ए मोमिनों, ए चौथी भोम कही निरत ।
अब कहूं भोम पांचमी, जित पधारे पौढ़न के बखत ।।३०।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि सुंदरसाथ जी, चौथी भोम में होने वाली नृत्य की लीला का वर्णन किया है । अब पाँचवी भोम का वर्णन करते हैं, जहाँ पर शयन की लीला के लिये पधारते हैं ।

प्रकरण-२१ चौपाई १०९०

भोम पाँचवी सेज्या सुख

महामति श्री लाल दास महाराज कृत "परमधाम की बड़ी वृत" के निम्न प्रकरण में रंगमहल की पाँचवी भूमिका के शयन सुख का संक्षिप्त में वर्णन हुआ है, ताकि ब्रह्मात्माएं श्रीधाम की दिव्य अलौकिक शैय्या सुख को अपने धाम हृदय में बसा सकें ।

अब कहूं भोम पांचमी, जहां पौढ़न को पधारत ।
निरत देख के चढ़त है, पोहोर एक रात बखत ।।१।।

अब रंगमहल की पाँचवी भोम का वर्णन करूंगा, जहाँ पर शयन लीला हेतु धामधणी पधारते हैं । नृत्य की लीला देखने के बाद रात्रि ९ बजे चौथी भोम से पाँचवी भोम में जाने के लिये सीढ़ियाँ चढ़ते हैं ।

ए जिमी जवेर सब नूर की, ए वाहेदत सब विस्तार ।
जाको कहिए अद्वैत, सो जानत परवरदिगार ।।२।।

परमधाम की धरती व जवाहरात सभी नूर के ही हैं । यह सब वहदत यानि अद्वैत का ही विस्तार है । जिसकी वास्तविकता मात्र अक्षरातीत परब्रह्म ही जानते हैं।

छेह न जिमी वाहेदत का, नाहीं मोहोल मंदिरों पार ।
नाहीं गिनती इनकी, करे जुगल सरूप बिहार ।।३।।

स्वलीलाद्वैत परमधाम की धरती का कोई अंत नहीं है, वहाँ के महलों, मंदिरों का भी कोई पार नहीं है और ना ही उनकी कोई गिनती सम्भव है । यहां परब्रह्म युगल स्वरूप नित्य प्रति प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलायें करते हैं ।

ए जो चौदे तबक, इन आगे जरा न रंचक ।
तिन में सुपन आकार से, क्यूं कहूं तिन माफक ।।४।।

यह जो चौदह लोकों का क्षर जगत है, वह परमधाम के समक्ष जरा भी अस्तित्व नहीं रखता है । यहां के स्वाप्निक तन से परमधाम की शोभा किस प्रकार वर्णन करूं ?

पर केहेनी ऐसी होत है, लिए सनमंध आकार ।
दिल जुबां मन बुध चेतन, तरफ बाई परवरदिगार ।।५।।

परन्तु इस स्वप्न के तन में रहते हुए भी परमधाम का वर्णन इस प्रकार होता है, कि हमारा दिल, जुबां, मन, बुद्धि और चेतना श्री राजजी के बाँई तरफ अर्थात् श्री श्यामा जी की ओर जा रही है ।

कहे बिना बने नहीं, क्यूं आवे दिल मोमन ।
तिन वास्ते नेक केहेत हों, तुम लीजो चित्त चितवन ।।६।।

वर्णन किये बिना साक्षात्कार नहीं हो सकता। कहे बिना ब्रह्मात्माओं के दिल में परमधाम की शोभा आखिर किस प्रकार आ सकती है । इसलिये थोड़ा सा वर्णन कर देती हूं । आप चित्त में चितवन करके उसका वास्तविक स्वरूप ग्रहण कर लेना ।

चौदे तबक दुनीअ में, कोई कहे न बका तरफ ।
खोज करी त्रैगुन ने, काहूं पाया ना एक हरफ ।।७।।

चौदह लोकों के संसार में कोई भी परमधाम की दिशा तक नहीं बता सका। त्रिगुण प्रधान देव ब्रह्मा, विष्णु व महेश ने भी बहुत खोजा, किंतु परमधाम के विषय में एक शब्द भी नहीं जान पाये ।

मेहनत इन खोज की, कैयों सुखाए आकार ।
कई बेराग ले दौड़त, पर पोहोंचे न परवरदिगार ।।८।।

उस परमधाम की खोज में कईयों ने अपार कष्ट सहन किये और शरीर तक सुखा दिया । कईयों ने वैराग्य लेकर कठिन साधनायें भी की किंतु उस प्रियतम परब्रह्म तक नहीं पहुँच पाये ।

फिरस्ते चौदे तबक के, हुए महकक इसलाम ।
तिनों द्वार बका का पावने, मेहेनत करी तमाम ।।९।।

चौदह लोकों के सम्पूर्ण फरिश्ते (देवी देवता) और दीने इस्लाम के ज्ञाता लोगों ने अखण्ड परमधाम (बका) का द्वार (ज्ञान) पाने के लिये हर प्रकार की मेहनत की, किंतु नहीं प्राप्त कर सके ।

ए हवाला जिनको, सोई खोले बका द्वार ।
जिन सरत पर वाएदा, किया परवरदिगार ।।१०।।

परब्रह्म अक्षरातीत ने जो समय निश्चित किया था और जिसको इसका अधिकार दिया था, वही अखंड परमधाम के द्वार (भेद) खोल सकता है ।

तिन समे पट भिस्त के, खोले द्वार रसूल अलेहसलाम ।
बका अरस अजीम, जो घर है इसलाम ।।११।।

उस समय रसूल अलैहिस्सलाम (हकी सूरत के रूप में) दुनियाँ में आकर अखण्ड परमधाम (अर्शे अज़ीम) के भेद खोलेंगे, जो कि शाश्वत सुख-शांति का धाम है । साथ ही दुनिया वालों के लिये बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) का द्वार भी खोल देंगे ।

इन घर के कहे मोमिन, बीच किताब फिरकान ।
हक सुभान करत हैं, मोमिनों की पेहेचान ।।१२।।

कुर्आने पाक में मोमिन (ब्रह्मात्माएं) उसी परमधाम (अर्शे आज़म) के रहने वाले कहे गये हैं । स्वयं हक सुब्हान तआला कुर्आन पाक में उन ब्रह्मात्माओं की पहचान करवाते हैं ।

आप दे साहेदी हक ने, सो वास्ते इन मोमिन ।
बका घर जाहिर किया, किए चौदे तबक रोशन ।।१३।।

उन ब्रह्मात्माओं के लिये ही अक्षरातीत श्री राज जी ने सभी धर्म ग्रंथों में अपनी गवाही दी है और अब उन्होंने ही अखंड परमधाम को चौदह लोकों में जाहिर कर दिया है ।

दई आठों भिस्त आम को, सो इन मोमिनो के काज ।
कजा चौदे तबक की, सो पोहोंची सबों आवाज ।।१४।।

प्रियतम परब्रह्म ने उन ब्रह्मात्माओं के कारण ही समस्त जीवों को आठ बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) में अखण्ड मोक्ष प्रदान किया है, तथा सारे संसार (१४ लोकों) का न्याय किया है । जिसकी आवाज (ब्रह्मज्ञान) सब तक पहुंच गयी है ।

वास्ते इन मोमिन के, आए महंमद अलेहसलाम ।
सिफाएत करी मोमिनों की, ल्याए रब्बानी कलाम ।।१५।।

इन ब्रह्मात्माओं की खातिर ही मुहम्मद अलैहिस्सलाम इस नश्वर जगत में (तीन बेर) आये और ब्रह्मवाणी के द्वारा ब्रह्मात्माओं की सिफायत (सिफारिश) कर रहे हैं । (सिफारिश करने का तात्पर्य ज्ञान देने से है । यदि इस संसार में आप किसी का कल्याण करना चाहते हैं, तो उन्हें ब्रह्मज्ञान प्रदान करना ही एकमात्र तरीका है ।)

इन मोमिनों के वास्ते, खोले हकीकत के द्वार ।
दई मारफत मोमिनों को, जो हक सूरत सुखकार ।।१६।।

उन ब्रह्मात्माओं के लिये ही उन्होंने (हकी सूरत के रूप में) हकीकत (सत्य ज्ञान) का द्वार खोल दिया है । उन मोमिनों को मारिफत (परम सत्य) का ज्ञान प्रदान किया जो परब्रह्म का आनंददायी स्वरूप है ।

दइ महंमद अलेह सलाम ने, अपनी जो नबूबत ।
औलिया लिल्ला खिताब, इनों को दिया इत ।।१७।।

मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने अपनी नबूवत (ज्ञान का उत्तराधिकार) भी मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को दिया है । इन ब्रह्मात्माओं को ही उन्होंने औलिया, लिल्लाह का खिताब भी दिया है ।

हुआ म्याराज मोमिनों पर, तो देखी अरस बका ठौर ।
जहां जबराइल की गम नहीं, तित क्यों कर पोहोंचे और ।।१८।।

जिस प्रकार मुहम्मद साहब की रूह परमधाम गयी थी, उसी प्रकार मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) पर भी इस समय मेअराज (परमधाम जाना) हो रहा है । इसी कारण तो उन्होंने अखण्ड परमधाम का साक्षात्कार किया है । जहां जिब्रील नहीं जा सका तो और कोई कैसे जा सकता है ?

कहे एही फरजंद आदम के, मानन्द चींटियो की होए ।
इनों को हक सुभान, साहेबी दिखाई सोए ॥१९॥

इन मोमिनों को ही कुर्आन में संकेतों में आदम (रूहअल्ला श्यामाजी) के बेटे (अंग) कहा है, जिनका यहाँ संसार में अस्तित्व (ब्रह्ममुनियों की संख्या) चींटियों के समान है । हक सुब्हान राज जी ने उनको परमधाम की साहेबी (ऐश्वर्य) दिखाई है।

अलस्तो बेरब्ब कुंम, कहे चींटियो को सुकन ।
आदम कह्या रूह अल्ला को, ए चींटियां कही मोमिन ॥२०॥

कुर्आन में संकेतों में रूह अल्ला श्री श्यामा महारानी को आदम तथा ब्रह्मात्माओं को चीटियाँ कहा गया है । इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) से ही परवरदिगार ने परमधाम में कहा था कि, "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं ?" (अलस्तो बिरब्बिकुंम) ।

मानन्द चींटी के वजूद, इत पकड़े मोमिन ।
एही हजूर हक के, दुनियां में किए रोशन ॥२१॥

ब्रह्मात्माओं ने जो सपने का तन धारण किया है, उसका अस्तित्व चींटी के समान है । लेकिन हक तआला (प्रियतम परब्रह्म) ने दुनियाँ में यह जाहिर कर दिया है, कि उन ब्रह्मात्माओं के मूल तन परमधाम मूल मिलावे में मेरे चरणों में विराजमान हैं ।

सोई सुकन अलस्तो बे रब्ब का, इनों को दिया याद ।
दे पीठ दुनी को हो सनमुख, ल्यो घर अपनो बका सवाद ॥२२॥

'अलस्तो बिरब्बि कुंम' का यही वचन प्रियतम अक्षरातीत उन्हें याद दिला रहे हैं, (जो उनको प्रियतम परब्रह्म ने परमधाम में कहा था) और यह निर्देश दे रहे हैं, कि दुनिया को पीठ देकर अपने निजस्वरूप को याद करो और अपने निजघर परमधाम के अखंड सुख प्राप्त करो।

इत ढील करी तुम वास्ते, हुई न इत फजर नूर ।
फेरा फुरमान अजाजीलें, होने न दिया जहूर ॥२३॥

हे मोमिनो ! आपके कारण ही संसार में ब्रह्मज्ञान का उजाला होने में देरी की गई है। अजाजील (दुनिया के जीवों) ने ब्रह्मज्ञान का संदेश ठुकरा दिया, और सत्य ज्ञान जाहिर होने नहीं दिया ।

ए सब मोमिनों वास्ते, जाहिर करत सुभान ।
करी कायम साएत, वास्ते मोमिनों पेहेचान ।।२४।।

ये सारे भेद (ब्रह्मज्ञान) ब्रह्मात्माओं के लिये ही, ब्रह्मात्माओं की पहचान कराने के लिये ही हक सुब्हान श्री राज जी ने दुनिया में जाहिर किये हैं तथा जागनी ब्रह्माण्ड को अखण्ड किया गया है।

सफे खड़ी तीनों भई, वास्ते गिरो रूहन ।
हक सुभान तिनको, बका में देखाए तन ।।२५।।

तीनों सृष्टियां अपने अपने ज्ञान, रहनी व प्रेम के अनुसार अलग अलग पंक्तियों में खड़ी हो गयी हैं । यह सब कुछ ब्रह्मात्माओं की महिमा दर्शाने के लिये हो रहा है । प्रियतम अक्षरातीत ने इन्हें अखण्ड परमधाम के मूल मिलावे में स्थित इनके मूल तनों (परात्म) का साक्षात्कार करा दिया है ।

फिरस्ते उतरे नूर से, जो जबराईल की ठौर ।
इत मलकूती ना पोहोंचहीं, जो बोहोतक करें जोर ।।२६।।

ईश्वरी सृष्टि (फरिश्ते) अक्षरधाम से आई हैं, जहाँ जिब्रील का स्थान है । यहाँ वैकुंठ वाले (देवता या जीव सृष्टि) अनेक प्रयासों के बाद भी नहीं पहुँच सकते।

मलकूती मलकूत में, इत पोहोंचे आम खलक ।
हुई पेहेचान सबन को, रही न सुभे शक ।।२७।।

वैकुंठ की जीव सृष्टि वैकुंठ में पहुँचती है । यह पहचान सबको हो गई है । किसी को इसमें संशय नहीं रहा ।

जब शक भागी सबन की, हुआ एक दीन इसलाम ।
जब मारा कुली दज्जाल को, भई साफ जिमी तमाम ।।२८।।

जब तारतम ज्ञान के द्वारा सबके संशय दूर हो जायेंगे, तब सारा संसार एक धर्म अर्थात् सत्य व शांति के मार्ग में आ जायेगा । जब अज्ञान-दुर्बुद्धि रूपी कलि-दज्जाल मारा जायेगा, तब सारा संसार (समस्त जीव) पवित्र हो जायेगा ।

ए सब वास्ते मोमिन के, करत हक सुभान ।
तो अपनी खिलवत की, दई जाहिर कर पेहेचान ।।२९।।

यह सब कुछ ब्रह्मात्माओं के लिये ही हक सुब्हान श्री राज जी कर रहे

हैं । इसी कारण उन्होंने अपने गुह्य खिल्वत (अंतःपुर-रंगमहल की लीला) की पहचान जाहिर कर दी है ।

इनों को बोलावत अरस में, इनों को परवरदिगार ।
सुख दिखावत कायम, जो है नित बिहार ॥३०॥

इन ब्रह्मसृष्टियों को उनके प्राण वल्लभ प्राण प्रियतम श्री राज जी अपने परमधाम में बुला रहे हैं । अखंड परमधाम के २५ पक्षों में होने वाली प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं उन्हें दिखा रहे हैं ।

तुम देखो अपनी ठौर को, कैसे सुख हैं तुम ।
ए इन जिमी केहेलावत, हक सुभान का हुकम ॥३१॥

हे ब्रह्मात्माओं ! अपने निजघर की शोभा देखो । वह कैसा प्रेम व आनंद से परिपूर्ण धाम है । इस झूठे संसार में श्री राज जी का हुक्म यह सब कहलवा रहा है ।

देखो साहेबी अपनी, कोई ल्याओ पटन्तर ।
मैं जाहिर करी इन जिमी में, सो तुमारी खातर ॥३२॥

हे ब्रह्मात्माओ ! अपनी साहेबी (ऐश्वर्य) को देखो, परमधाम की तुलना में इस संसार में कोई वस्तु हो तो दिखाओ । अखण्ड परमधाम का ऐश्वर्य मैंने आप सब के लिये ही दुनिया में जाहिर किया है ।

मैं तुम को चैतन किये, वास्ते रबद इशक ।
सो बातें तुम को भूलियां, जो करी थी हजूर हक ॥३३॥

परमधाम मूल मिलावे में श्री राज जी के सामने आप सबने जो दावे (इश्क बड़ा होने का, आपको कभी नहीं भूलेंगे आदि) किये थे, वह सब आप भूल गये। वही आपको याद दिला कर सावचेत कर रहा हूँ ।

अब ल्यो इशक अपना, देखो घर बुनियाद ।
तुमको इन जिमी फेर फेर, देत हक सुभान याद ॥३४॥

अब अपना वह इश्क हृदय में धारण करो, अपने निजघर व प्रियतम अक्षरातीत से मूल संबंध को पहचानो । इस माया जगत में प्रियतम परब्रह्म तुम्हें पुनः पुनः याद दिला रहे हैं ।

अब तुम सुनो मोमिनों, सुनते होइयो श्रवन ।
फेर विचार होए विचारियो, तब रहस पाओ बचन ।।३५।।

हे ब्रह्मात्माओं ! अब आप अपनी हकीकत (सत्य) सुनिये और सुनकर उसमें एकाग्रचित्त हो जाईये। फिर उसका पुनः–पुनः चिंतन कीजिये। तब तुम्हें इन वचनों के रहस्य स्पष्ट होंगे ।

कहूं भोम जो पांचमी, बका काएम घर इसलाम ।
सो तो एक हीरा का, कई जवेर रंग इस ठाम ।।३६।।

अब अखण्ड परमधाम, जो कि शाश्वत् सुख शांति का धाम है, उसकी पांचवी भूमिका का वर्णन करूंगा । दिव्य परमधाम एक ही नूरमयी हीरे का है, जिसमें से अनेक जवाहरातों की रंगबिरंगी किरणें निकलती हैं ।

छेह ना जिमी वाहेदत का, मोहोल मंदिर नहीं सुमार ।
नेक कहूं वास्ते मोमिन के, जो अपना नित बिहार ।।३७।।

स्वलीला अद्वैत परमधाम की धरती का कोई अंत नहीं है और ना ही वहां के महलों व मंदिरों का कोई शुमार है (अगणनीय है)। मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये अपनी अखंड लीला का थोड़ा सा वर्णन कर रहे हैं ।

कहूं पांचमी भोम की, चौक मंदिर नूर गलियन ।
द्वार दिवाल कमाड़ी नूर की, रहे मोमिन दिल रोशन ।।३८।।

अब पाँचवी भोम के नूरमयी चौक, मंदिर, गलियों, दरवाजो, कमाड़ी दीवाल आदि का वर्णन करूंगा । ब्रह्मात्माओं के दिल में उसके ज्ञान का प्रकाश रहता है ।

गिरद फिरते नूर मंदिर, नूर गिनती बारे हजार ।
साम सामें मंदिर झलकत, नूर द्वार थम्भ कही जो हार ।।३९।।

रंगमहल की पाँचवी भोम में बाहरी तरफ बारह हजार नूरमयी मंदिर (छै-छै हजार मंदिरों की दो हारें) शोभा ले रहे हैं । मंदिरों की दोनों हारें, नूरमयी दरवाजे एवं स्तम्भों की हारें आमने-सामने झलकार कर रही हैं ।

चार हार जो हवेलियों, दोए सौ एक तीस नूर हर हार ।
नव सौ चौबीस ताकी भई, ए जो गिनती हारें कही चार ।।४०।।

इनके भीतरी तरफ चौरस हवेलियों की चार हारें घेर कर आयी हैं ।

प्रत्येक हार में २३१ नूरमयी हवेलियाँ हैं । चारों हारों की मिलाकर कुल ९२४ हवेलियाँ होती हैं ।

इत नव चौक एक चौक में, इन हार हवेलियों दरम्यान ।
हर चौक में बारे हजार, अड़सठ तो ऊपर जान ॥४१॥

ऐसे छत्तीस हार हवेलियों के मध्य में ९ चौक आये हैं । प्रत्येक चौक में १२,०६८ मंदिर शोभा ले रहे हैं ।

तामे एक चौक नूर मध्य है, आठ कहे गृदवाए ।
ए नूर चौक पौढ़न का, याकी शोभा कही न जाए ॥४२॥

९ चौकों में से ४ चौक चारों दिशाओं में, ४ चौक कोनों में और एक चौक मध्य में शोभा ले रहा है । मध्य का चौक शयन लीला का है, जिसकी शोभा अवर्णनीय है ।

मध्य लाल परवाली मंदिर, इन चौक के दरम्यान ।
लाल रंग है तिन का, रहे मोमिन दिल पेहेचान ॥४३॥

इस चौक के ठीक मध्य में लाल रंग का प्रवाली मंदिर शोभा ले रहा है, जिसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के हृदय में होती है ।

अब कहूं इन चौक की, यों ही नव चौक जान ।
ऐसे मंदिर गलियां, या को देख करो पेहेचान ॥४४॥

अब इस मध्य के चौक का वर्णन करूंगा, इसी तरह से सभी नौ चौकों का वर्णन समझिये । सबमें ऐसे ही मंदिर और गलियां हैं । इसे देखकर सबकी पहचान कर लीजिये ।

इन ए हवेली मिने, इत चौक एकासी होए ।
कहूं ताको बेवरा, मोमिन समझे सब कोए ॥४५॥

एक चौक (महाहवेली) में इक्यासी (८१) चौक आये हैं । इसका वर्णन कर रहा हूं । इसे सभी मोमिन ही समझ सकते हैं।

तामे ओगन पचास चौक, कहा चौखुने तिन ।
अट्ठाईस चौक त्रकोनियां, चौक चार दो कोनी ए रोशन ॥४६॥

उन ८१ चौकों में से ४९ चौपुड़े (चार रास्ते) के चौक हैं, २८ चौक त्रिपुड़े (तीन रास्ते) के (चारों दिशाओं में) हैं और चार चौक दोपुड़े (दो रास्ते)

के (चारों कोनों में) शोभायमान हैं ।

एकासी जमा कहे, चौंसठ हवेली दरम्यान ।
सब नूर जवेरों झलकत, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।४७।।

इस प्रकार कुल ८१ चौक कहे गये हैं, उनके बीच-बीच में कुल ६४ हवेलियां (आठ हवेलियों की आठ हारें) हैं । जिनमें नूरमयी जवाहरात झलकार कर रहे हैं । उनकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती है ।

एक चौक चौकोनियां, तिन गिनती कहूं मंदिर ।
है ताके एक सौ चौबीस, आओ मोमिन ताके अन्दर ।।४८।।

एक चौपुड़े के चौक में मंदिरों की गणना बता रहे हैं । इसमें १२४ मंदिर आये हैं । हे ब्रह्मात्माओं ! आप उनके अंदर आईये।

ताके एक सौ अड़सठ कहे, इन मंदिरो आगे थम्भ नूर ।
कहूं ताको बेवरा, मोमिन देखो ठौर जहूर ।।४९।।

इन मंदिरों के आगे १६८ नूरमयी स्तम्भ हैं । उनका वर्णन कर रहा हूं, हे सुंदरसाथ जी! आप उनकी शोभा देखिये ।

ए चौक ताके चौखुट की, मंदिर एक सौ चौबीस ।
मंदिर पंद्रे चारों तरफों, ए पाइए हक बकसीस ।।५०।।

एक चौपुड़ा के चौक में १२४ मंदिर हैं । १५-१५ मंदिर चारों तरफ (चारों कोनों में) हैं, जो धणी की मेहर से जाने जाते हैं ।

ताके पंद्रे चौको साठ भए, सोले सोले तरफ चार ।
ताके जमा चौसठ भए, एक सौ चौबीस सुमार ।।५१।।

चारों तरफ के कुल १५x४=६० मंदिर हुए । १६-१६ मंदिर चारों दिशाओं में हैं, जिनके कुल ६४ मंदिर हुए । इस प्रकार एक चौपुड़ा में हिसाब के ६०+६४=१२४ मंदिर होते हैं ।

कहे एक सौ चौबीस, थम्भ गलियां चौबीस ।
और चौबीस कहे चौक में, ए दिखाई हक बकसीस ।।५२।।

इस प्रकार एक चौपुड़ा के चौक में १२४ मंदिर हैं, नूरमयी (१४४) स्तम्भों के मध्य २४ गलियाँ हैं तथा २४ स्तम्भ चौक में हैं, जिन्हें धाम धणी ने कृपा करके दिखाये हैं ।

ऐसे ओगन पचास चौपुड़े, ताके कहे खुने चार ।
जमा छे हजार छेहत्तर, ताको मोमिन करे विचार ।।५३।।

इसी प्रकार कुल ४९ चौपुड़े (चार रास्ते) हैं, जो कि चार कोनों वाले कहे गये हैं । ४९ चौकों में कुल मिलाकर (१२४x४९) ६०७६ मंदिर होते हैं, जिनका विचार मोमिन ही करते हैं ।

तिन मंदिरों के दरवाजे, एक चौक में तीन सौ चालीस ।
सोले हजार छ सौ साठ, ए सुमार कह्यो सरस ।।५४।।

एक चौक (चौपुड़े) के सभी मंदिरों में कुल ३४० दरवाजे हैं, तब सभी (४९) चौपुड़े के मंदिरो के दरवाजे (३४०x४९)१६,६६० होते हैं ।

हर एक चौक में कहे, एक सौ अड़सठ थम्भ होए ।
ताके ओगन पचास चौक के, आठ हजार दोए सौ बत्तीस कहे सोए ।।५५।।

एक चौपुड़ा के चौक में कुल १६८ (१४४+२४) स्तम्भ हैं । तब ४९ चौपुड़े के चौक में कुल (१६८x४९)=८,२३२ स्तम्भ होते हैं ।

तिन थम्भन के मेहेराब, एक चौक में कहे ए ।
सुमार तीन सौ बानवे, कहूं जमा सबन के ।।५६।।

एक चौक (चौपुड़े) में स्तम्भों की ३९२ महराबें हैं । तब सम्पूर्ण महराबों की संख्या बताते हैं ।

उनीस हजार दोए सौ, आठ कहे उपर ।
ए मेहेराब देखियो, नूर किरना लड़े सब पर ।।५७।।

सम्पूर्ण महराबें (३९२x४९) १९,२०८ होती हैं, जिनकी नूरी किरणें आपस में टकराते हुए जंग करती सी प्रतीत होती हैं ।

हर चौक में चौबीस, कही गलियां सुमार ।
ऐसे ओगन पचास चौक, एक हजार दोए सौ छासठ विचार ।।५८।।

चौपुड़ा के एक चौक में २४ गलियाँ होती हैं । तब ४९ चौपुड़ा में कुल (२४x४९) १,२६६ गलियाँ होती हैं ।

अट्ठाईस चौक त्रैकोनिए, बेवरा एक चौक के मंदिर ।
गिनती एक सौ दोए की, जित रूहें खेलें अन्दर ।।५९।।

एक चौक (महाहवेली) की चारों दिशाओं में ७-७ कुल २८ त्रिपुड़ा के

चौक हैं । एक त्रिपुड़ा के चौक में १०२ मंदिर शोभा ले रहे हैं, जिनमें सखियाँ अनेक प्रकार से आनंदपूर्वक खेलती हैं ।

ताके ए थम्भ एक सौ बत्तीस, एक चौक गली अठारे होए ।
एक चौक के द्वार ने, दोए सौ एकानबे कहे सोए ॥६०॥

एक त्रिपुड़ा के चौक में (१०८+२४) १३२ स्तम्भ और १८ गलियाँ हैं। इस चौक के मंदिरों में २९१ दरवाजे आये हैं ।

अब कहूं मेहेराबों की, गिनती तीन सौ दस एक ठौर ।
ए चौक एक की कही, अट्ठाईस सुमार कहो और ॥६१॥

अब एक त्रिपुड़ा के महराबों की गिनती कहूंगा। एक त्रिपुड़ा के चौक में ३१० महराबें आयी हैं । अब २८ चौकों के मंदिर, स्तम्भों, दरवाजों एवं महराबों की कुल संख्या बताता हूं ।

कहूं अट्ठाईस चौक की, दोए हजार आठ सौ छप्पन ।
ए गिनती मंदिरन की, सब झलकत नूर रोशन ॥६२॥

२८ चौकों (त्रिपुड़ों) के कुल मंदिर १०२x २८=२,८५६ होते हैं । इनकी नूरमयी रोशनी झलकार कर रही है (महराबों की गिनती चौ.६५ में बतायी गयी है) ।

तिन मंदिरन के द्वार ने, आठ हजार एक सौ अड़तालिस ।
थम्भ अट्ठाईस चौक के, बिना हादी ना होए बकसीस ॥६३॥

उन मंदिरों के दरवाजे कुल २९१x २८=८,१४८ होते हैं । त्रिपुड़ा के २८ चौकों के स्तम्भ सद्गुरू (श्री श्यामा जी) की कृपा के बिना नहीं जाने जा सकते हैं ।

थम्भ तीन हजार छे सौ, छानबे है उपर ।
तिन थम्भन के मेहेराब, कहूं मोमिनों की खातर ॥६४॥

२८ त्रिपुड़ा के स्तम्भ कुल मिलाकर १३२x २८=३,६९६ हुए । इन स्तम्भों की मेहराबों का वर्णन ब्रह्मात्माओं की खातिर करूंगा ।

कहूं थम्भन के मेहेराब, आठ हजार छे सौ अस्सी नूर ।
अट्ठाईस चौक की गली, गिनती पांच सौ चार मजकूर ॥६५॥

सभी स्तम्भों की कुल महराबें ३१०x २८=८,६८० होती हैं, त्रिपुड़ा के

२८ चौकों में कुल १८x २८=५०४ गलियाँ होती हैं ।

अब कहूं चार चौक की, दोए खुने झलकत नूर ।
याको बेवरा इन जुबां, क्यूं कर कहूं जहूर ।।६६।।

अब चौक (महाहवेली) के चारों कोनों में आये दोपुड़े के चार चौकों की शोभा का वर्णन करता हूं, जिनकी नूरमयी किरणें चारों तरफ जगमगा रही हैं । उसका विवरण इस जिह्वा से नहीं हो सकता ।

एक चौक के मंदिर, अस्सी गिनती होए ।
ताके थम्भ छानबे, कही गिनती सुमार सोए ।।६७।।

एक दोपुड़ा (दो रास्ते) के चौक में ८० मंदिर और ९६ स्तम्भ शोभा ले रहे हैं ।

एक चौक की गली, गिनती बारे कही इत ।
तिन चारों चौक के मंदिर, जमा तीन सौ बीस भए जित ।।६८।।

एक दोपुड़ा के चौक में १२ गलियाँ हैं (दोनों रास्तों में छः–छः गलियां हैं)। चारों दोपुड़े के चौकों में कुल (८०x४)३२० मंदिर होते हैं ।

चारों चौक के थम्भ, तीन सौ चौरासी नूर ।
ताकि गली अड़तालीस, खेले हक हादी रूहें मजकूर ।।६९।।

चारों दोपुड़े के चौकों में कुल (९६x४)३८४ नूरमयी स्तम्भ और (१२x४) ४८ गलियाँ हैं, जहाँ श्री राजश्यामा जी व सखियाँ अनेक प्रकार से खेलते हुए प्रेम भरी बातें करते हैं ।

इन मंदिरन के दरवाजे, नव सौ बीस इस ठौर ।
तिन थम्भन के मेहेराव, नव सौ चार है जोर ।।७०।।

इन चारों दोपुड़े के मंदिरों में कुल ९२० दरवाजे और स्तम्भों में कुल ९०४ महराबें शोभायमान हैं ।

एक चौक की दोए सौ छब्बीस, नव सौ चार चार बने चौक के ।
ए मोमिन विचार के, तुम दिल में लीजों ए ।।७१।।

एक दोपुड़े के चौक में २२६ महराबें होती हैं । चार चौकों की कुल (२२६x४) ९०४ महराबें हुईं । हे ब्रह्मात्माओ ! आप इसका चिंतन करते हुए अपने हृदय में धारण कीजिये।

हवेली कही चौंसठ, इन भोम पांचमी में ।
तामें एक हवेली का, बेवरा सुनो हादी से ॥७२॥

पांचवी भोम के एक चौक (महाहवेली) में कुल ६४ हवेलियाँ आई हैं । उसमें से एक हवेली का विवरण हादी (सद्गुरु) के मुख से सुनिये ।

चालीस चार मंदिर, पड़ी बड़ी पौरी चार ।
छत्तीस थम्भ है तिन के, हवेली अन्दर करो विचार ॥७३॥

एक हवेली में ४४ मंदिर और ४ बड़े द्वार शोभा ले रहे हैं । इनके भीतरी तरफ चबूतरे की किनार पर चारों तरफ ३६ स्तम्भ आये हैं । इनका विचार कीजिये ।

साठ थम्भ की एक हार, अडसठ थम्भ दूसरी हार ।
ए दोए हार थम्भन की, हर हवेली गृद विचार ॥७४॥

प्रत्येक हवेली के बाहरी तरफ ६० स्तम्भों की एक हार तथा ६८ स्तम्भों की दूसरी हार घेरकर शोभायमान हो रही है ।

एक हवेली के मंदिर, ताके एक सौ छत्तीस द्वार ।
बाहिर भीतर अन्तर, ये सुख मोमिन देखनहार ॥७५॥

एक हवेली के मंदिरों में कुल १३६ दरवाजे आए हैं । इन मंदिरों की बाहरी शोभा, इनके भीतर की शोभा तथा इनमें कण कण में स्थित प्रियतम परब्रह्म के नूरी स्वरूप की शोभा तथा आनंद मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही देख पाते हैं।

आठ मेहेराब चार पौरी के, हवेली अन्दर जो थम्भ होए ।
ताके मेहेराब छेहत्तर, जमा कहूं फेर इन सोए ॥७६॥

हवेली के चारों मुख्य द्वारों में कुल ८ महराब (बाहर व अन्दर की तरफ १-१)शोभायमान हैं । हवेली के भीतरी तरफ चबूतरे की किनारे पर, जो ७६ स्तम्भ आये हैं, उनमें ७६ महराब शोभायमान हैं । अब उनकी पूर्ण गणना बताता हूं।

इन हवेलियों गृदवाए, थम्भन की हार दोए ।
एक साठ एक अड़सठ, मेहेराबी तीन सौ है सोए ॥७७॥

इन हवेलियों के चारों तरफ स्तम्भों की दो हारें आयी हैं । पहली

हार में ६० स्तम्भ व दूसरी हार में ६८ स्तम्भ आये हैं । इनकी कुल ३०० महराबें होती हैं ।

हवेली के जो बाहिर, और तीनों गलियों के ।
अन्दर बाहिर के तीन सौ छानवे, नूर थम्भ गिनती मेहेराब ए सोए ।।७८।।

हवेली के बाहर जो स्तम्भों की दो हारों के बाहरी व भीतरी तरफ तीन गलियां हैं एवं अंदर चबूतरे के स्तम्भों से लगती हुई एक गली हैं, उन सबके मिलाकर कुल ३९६ नूरमयी महराब होते हैं । (चबूतरे के स्तम्भ ३६+ गली के ४०+ बाहर पहली गली के ५६ + पहली हार के ६० + दूसरी गली के ६४ + दूसरी हार के ६८ + तीसरी गली के ७२ = ३९६)

ए जो थम्भ हवेली के, अन्दर बाहिर एक सौ चौसठ होए ।
इन का पेहेले बेवरा किया, सब मोमिन जानत हैं सोए ।।७९।।

हवेली के अन्दर एक हार में व बाहर दो हारों में कुल मिलाकर १६४ स्तम्भ आये हैं । इनका वर्णन पहले कर चुके हैं, जिसे सब मोमिन जानते हैं ।

ए जो चौंसठ हवेलियाँ, जाकी जमा सब मंदिरन ।
दोए हजार आठ सौ सोले, कहे मंदिर नूर रोशन ।।८०।।

एक चौक (महाहवेली) में जो ६४ हवेलियां आई हैं, उनके कुल २८१६ (४४x६४) नूरमयी मंदिर कहे गये हैं, जो कि चारों तरफ नूरमयी झलकार कर रहे हैं।

ताकी द्वार की गिनती, आठ हजार चार सौ चार ।
कहूं थम्भन की गिनती, दस हजार चार सौ छानू सुमार ।।८१।।

उन मंदिरों में कुल (१३६x६४) ८,७०४ दरवाजे और (१६४x६४) १०,४९६ स्तम्भ शोभा ले रहे हैं ।

तिन थम्भ के मेहेराब, पचीस हजार तीन सौ ।
भए चौवालीस उपर, कही गिनती सब इनमों ।।८२।।

उनके स्तम्भों में कुल (३९६x६४) २५,३४४ महराबें आयी हैं, जिसमें सभी महराबों की संख्या आ गयी है ।

कहूं पौरन की गिनती, दोए सौ और छप्पन ।
तिन पौरन के मेहेराब, पाँच सौ बारे रोशन ।।८३।।

हवेलियों के मुख्य दरवाजों की कुल संख्या (४x६४) २५६ है । उन सभी दरवाजों में कुल (८x६४) ५१२ महरावें शोभायमान हैं ।

गलियां चौसठ हवेलियों की, एक एक हवेली गली तीन ।
तिन सबकी कही जमा, एक सौ बानबे जानो आकीन ॥८४॥

६४ हवेलियों के गलियों की संख्या देखिये । एक-एक हवेली में ३-३ गलियाँ शोभा ले रही हैं । सभी मिलाकर कुल १९२ गलियां होती हैं ।

अब कहूं सब चौक की, पौरी बड़ी एक सौ चौवालीस ।
हर पौरी चौवालीस थम्भ, ये पाइये हक बकसीस ॥८५॥

अब सम्पूर्ण चौक (महाहवेली) का वर्णन करूंगा । उसमें १४४ बड़े द्वार आये हैं । प्रत्येक द्वार में ४४ स्तम्भ आए हैं, जिनका ज्ञान श्री राज जी की मेहर से होता है ।

एक सौ सात मेहेराब, हर एक पौरी में होए ।
सब थम्भन की सुमार, छे हजार तीन सौ छत्तीस सोए ॥८६॥

प्रत्येक द्वार में कुल १०७ महरावें शोभा ले रही हैं । सम्पूर्ण द्वारों के स्तम्भों की संख्या १४४ x ४४ = ६,३३६ होती है ।

जिन पौरन में थम्भ हैं, तिनके कहूं जमा मेहेराब।
पन्द्र हजार चार सौ, ऊपर आठ और इनके बाब।।87।।

उन द्वारों में जो स्तम्भ हैं, उनके महराबों के कुल संख्या कहता हूं । उन पर १४४x १०७=१५,४०८ महरावें शोभा ले रही हैं ।

एक पौरी में पाँच गली, ताकी जमा सात सौ बीस ।
बड़ी हवेली के आस पास, सुख मोमिनों पर बकसीस ॥८८॥

एक द्वार में ५ गलियाँ आई हैं । सब मिलाकर कुल गलियाँ ५x १४४=७२० होती हैं । बड़ी (महा) हवेली के आस-पास गलियों के सुख ब्रह्मात्माओं को धणी की मेहर से प्राप्त हुये हैं ।

तामे नव सौ छिहत्तर, थम्भ कहे गृदवाए ।
जैसा एक चौक पोढ़न का, कहे एकासी रूहों बनाए ॥८९॥

महाहवेली (एक चौक) में चारों तरफ कुल ९७६ स्तम्भ आये हैं । जिस प्रकार शयन के मंदिरों से युक्त एक चौक (दोपुड़े, त्रिपुड़े या चौपुड़े) की शोभा

है, उसी तरह से सम्पूर्ण ८१ चौकों की शोभा आई है ।

ऐसे आठ चौक फिरते, मोमिन ताको करो विचार ।
हक हादी रूहें खेलन को, सुख जानत परवरदिगार ।।९०।।

मध्य चौक (महाहवेली) के समान ही ८ चौक उसके चारों तरफ घेरकर शोभा ले रहे हैं । हे ब्रह्मात्माओ ! उनका चिंतन करो । श्री राज श्यामा जी एवं सखियां यहां किस प्रकार से हांस-विलास करते हैं उस आनंद को स्वयं राजजी जानते हैं ।

चार चारों तरफों कहे, चार चारों कोने के ।
ए सब सुमार नव चौक की, सुख मोमन दिखावेंगे ।।९१।।

चार चौक (महाहवेली) चारों दिशाओं में, चार चौक चारों कोनों में और एक चौक मध्य में है । इस प्रकार कुल ९ चौकों के सुखों को मोमिन ही दिखायेंगे ।

एक हार तीन चौक की, ऐसी हारें हैं तीन ।
तीनों तरफों देखिए, रहे मोमिन दिल आकीन ।।९२।।

दूसरे तरह से गिनते हैं, तो ३ चौकों (महाहवेलियों) की ३ हारें (पंक्ति) होती हैं । ऐसे ही तीनों तरफ से तीन हारें दिखती हैं । जिसके प्रति ब्रह्मात्माओं के दिल में पूर्ण विश्वास होता है ।

यूं रहे चारों तरफ बराबर, सुख आवत दिल मोमिन ।
हक सुभान मेहेर करें, इनों के किए दिल रोशन ।।९३।।

इस प्रकार चारों तरफ से एक जैसी शोभा दिखती है, जिसका सम्पूर्ण सुख ब्रह्मात्माओं के दिलों में आ रहा है । हक सुब्हान श्री राज जी ब्रह्मात्माओं पर मेहर (कृपा) करके तारतम ज्ञान के द्वारा उनके दिलों को रोशन कर रहे हैं ।

एक चौक में देखिए, बारे हजार अड़सठ मंदिर ।
ताके द्वारने नूर के कहे, जित रूहें खेलें अन्दर ।।९४।।

एक चौक (महाहवेली) में कुल १२,०६८ मंदिर दिखते हैं, जिनके दरवाजे नूरमयी हैं, जिनके अन्दर ब्रह्मसृष्टियाँ खेल–रामतें करती हैं ।

तैंतीस हजार दोए सौ, थम्भ तीस हजार तीन सौ दोए ।
ताके मेहेराब नूर के, एकहत्तर हजार छे सौ बानवे सोए ।।९५।।

एक चौक में कुल ३३,२०० द्वार आए हैं और ३०,३०२ स्तम्भ आये हैं और नूरी महराबें ७१,६९२ आयी हैं ।

गली दोए हजार छे सौ, एकतालीस उपर ।
जैसा एक का बेवरा, आठ देखो इन पटन्तर ॥९६॥

सम्पूर्ण गलियाँ २,६४१ आयी हैं । जिस प्रकार की शोभा एक चौक (महाहवेली) की है, उसी प्रकार अन्य आठ चौकों की भी शोभा आयी है ।

कहूं नव चौको के मंदिर, ताकी जमा नूर तू जान ।
एक लाख आठ हजार, छे सौ बारे गिने ऊपर आसान ॥९७॥

नौ चौकों के सम्पूर्ण नूरमयी मंदिरों की संख्या कहूंगा । उनकी संख्या १,०८,६१२ है ।

मंदिरन के दरवाजे, कहे नव चौक के निरधार ।
तीन लाख सोले हजार, आठ सौ ऊपर और विचार ॥९८॥

नौ चौकों के सभी मंदिरों में कुल ३,१६,८०० दरवाजे शोभा ले रहे हैं ।

थम्भ दोए लाख उन्तीस हजार, कहे सात सौ ता ऊपर ।
तिन थम्भन के मेहेराब, छे लाख पैंतालिस हजार यूं कर ॥९९॥

नौ चौकों में कुल २,२९,७०० स्तम्भ आये हैं । उन स्तम्भों में कुल ६,४५,००० महराबें शोभायमान हैं ।

ऊपर दोए सौ अट्ठाईस, ए गिनती की पेहेचान ।
कहूं नव चौक की गिनती, रहे मोमिन दिल ईमान ॥१००॥

छै लाख पैंतालीस हजार में २२८ महराबें और अधिक (कुल ६,४५,२२८) आयी हैं । सम्पूर्ण नौ चौकों की गिनती कहूंगा, जिन के प्रति मोमिनों के दिल में पूर्ण विश्वास होता है ।

कहूं नव चौक गलियन की, तेईस हजार सात सौ उनहत्तर ।
ए कह्या पांचमी भोम का, कह्या मोमिनों की खातर ॥१०१॥

नौ चौकों की कुल गलियाँ कहूंगा, जो कि २३,७६९ हैं । इस प्रकार पाँचवी भोम की शोभा का वर्णन ब्रह्मात्माओं के लिये किया है।

अजू इहां बोहोत है, हिसाब न आवे जुबान ।
चुप से तो केहेना भला, रूहें दौड़े करने पेहेचान ।।१०२।।

अभी तो यहाँ बहुत शोभा बाकी है, जिनकी गणना यहाँ की जुबां से नहीं हो सकता । किंतु चुप रहने से तो कहना ही अच्छा है, ताकि उसे पढ़कर ब्रह्मात्माऐं परमधाम की पहचान कर सकें और राजजी की तरफ कदम (रहनी–ध्यान में) आगे बढ़ा सकें ।

ए कही आकार सनमंध, वह रूह हिसाब सब चेतन ।
मोमिन दिल अरस कह्या, आए पोहोंचा इत रोशन ।।१०३।।

ये सम्पूर्ण वर्णन यहाँ के स्वप्न के शरीर के आधार पर कहा है । किंतु परमधाम की गणना रूहमयी व चेतन है । मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) का दिल खुदा का अर्श (परमात्मा का धाम) कहा है तो परमधाम का ज्ञान यहाँ पर जाहिर हो रहा हैं ।

एह तो हक दिल माफक, भया जेता मोहे हुकम ।
सो कहा इत इन जुबां, बका ठौर चेतन जात तुम ।।१०४।।

यह सम्पूर्ण वर्णन धाम धणी के दिल के अनुसार हुआ है । जितना मुझे उनका आदेश हुआ था, उतना ही इस जिह्वा से वर्णन किया है । अखंड परमधाम तो चेतन है तथा वहां के कण कण में परमात्मा का स्वरूप समाया हुआ है।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम उतरे नूर के पार ।
याद करो ठौर अपना, जो है नित बिहार ।।१०५।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुन्दरसाथ जी ! आप इस नश्वर जगत में अक्षरातीत परमधाम से आये हो । अब अपने निजघर को याद करो, जहां हमारी प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं हैं ।

प्रकरण २२, चौपाई ११९५

भोम छठी लिखी है

श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान आप श्री राज जी अपनी प्राण प्रिय रूहों को संबोधित करते हुए कह रहे हैं, कि हे मेरे प्यारे साथ जी ! मैंने आपके लिए ही अखंड परम धाम के सुखों का द्वार खोल दिया है । २५ पक्षों के सुख मैंने आपके लिए ही इस दुनियां में जाहिर किया है । इन अखंड सुखों में झीलना करके अपने दिलों को रोशन क्यों नहीं कर रहे हो? साथ जी, मूल मिलावे में जागृत होने का समय आ पहुँचा है, इसलिये याद करो– दिव्य परमधाम में आप किस प्रकार आनन्दपूर्वक रहते थे, एक क्षण भी प्रियतम से जुदा नहीं होते थे, निजघर के उन सुखों को महसूस कीजिये। सुखपालों व तख्तरवा की सवारी को याद कीजिये, उनमें सवार होकर किस प्रकार 25 पक्ष की सैर को जाते हैं।

दुनियाँ चौदे तबक की, लिखी पैदास शास्त्रन ।
और किताबों हदीसों, सबों जाहिर किए रोशन ।।१।।

चौदह लोकों के संसार में कुल कितने प्रकार की सृष्टियां हैं, वह सब शास्त्रों में लिखा है। हदीसों एवं अन्य धर्मग्रंथों में भी उसका वर्णन किया गया है । इस प्रकार सभी धर्मग्रंथों ने उनकी पहचान बतायी है ।

और वेद वेदान्त में, और साधो की बान ।
इत महकक कई हुए, तिनों एही करी पेहेचान ।।२।।

वेदों में, वेदांत दर्शन में तथा संतों की वाणियों में भी तीन प्रकार की सृष्टियों का वर्णन है । इस संसार में जो भी बड़े बड़े ज्ञाता हुए हैं, उन्होंने भी यही तथ्य पहचाना है ।

ए सब संसार सुपन है, मूल सबों का अक्षर ।
नूर मकान जिनका कह्या, है जो सबके उपर ।।३।।

अक्षर ब्रह्म की इच्छा से उत्पन्न यह सारी सृष्टि स्वप्नवत् है । उनका मूल स्थान कुर्आने पाक में नूर मकान (अक्षर धाम) कहा गया है, जो सबसे (हद–बेहद से) ऊपर है ।

है पांच वासना इनकी, जाको कहिये ईश्वरी सृष्ट ।
ताकी अद्वैत ठौर में, अक्षर जाको इष्ट ।।४।।

उस अक्षर ब्रह्म की पांच वासनाएं (आत्माएं) हैं, जिन्हें ईश्वरी सृष्टि कहा

गया है। उनके इष्ट अक्षर ब्रह्म हैं और इनका धाम अद्वैत अक्षरधाम है ।

तामे एक विष्णु कहा, और चारों सनकादिक ।
एक महादेव और सुकजी, ए चारों कहे बुजरक ।।५।।

पंचवासनाओं में प्रथम विष्णु भगवान हैं, दूसरे चारों सनकादिक ऋषि (सनक, सनंदन, सनातन, सनत कुमार), तीसरे शंकर भगवान और चौथे शुकदेव मुनि हैं । ये चारों बड़े (महान्) ज्ञानी कहे गये हैं ।

और कहा कबीर को, इनों कह्या वचन मोह के पार ।
छूट न सके फंद से, खोल सके न अखण्ड द्वार ।।६।।

पंचवासनाओं में पाँचवें कबीर जी हैं । उन सबने निराकार से परे का ज्ञान दिया, लेकिन वे भी बंधन से मुक्त नहीं हो सके, अखंड परमधाम के सुखों का द्वार नहीं खोल पाये।

और आड़े मोहजल है, उलंघ न सके सुंन ।
निराकार निरंजन में, गोते खात द्वैत बीच मन ।।७।।

इन पंचवासनाओं के अतिरिक्त अन्य सबके आड़े मोहसागर (निराकार, शून्य, नींद का आवरण) आ गया, जिसे वे पार नहीं कर सके । इनका मन द्वैत मण्डल के निराकार निरंजन में ही गोते खाता रहा ।

आई सृष्ट ब्रह्म की, अक्षरातीत के ठौर ।
सो वचन लिखे हैं शास्त्र में, सोए भै इत भौर ।।८।।

ब्रह्मसृष्टियाँ अक्षरातीत परब्रह्म के दिव्य परमधाम से यहाँ आई हैं, जिनके विषय में शास्त्रों में पहले से ही वचन लिखे हैं । उन भविष्यकथनों के अनुसार यहाँ ब्रह्मज्ञान रूपी प्रभात हो गया है ।

मुसे फेरून मुकाबिले, होए लड़ाई जब ।
तब सरत आई क्यामत की, हुई साएत जाहिर तब ।।९।।

धर्मग्रंथों में संकेतों में लिखा है, कि जब मूसा (श्रीप्राणनाथजी) और फिरऔन (औरंगजेब) में टकराव होगा, तब कियामत (आत्म–जागृति) का समय आ जायेगा । अब वह समय जाहिर हो चूका है ।

जब गिरो दोए होवहीं, और जादे पैगम्बर दोए ।
होए लड़ाई मसनंद पैगंबरी, हुई साएत कायेम सोए ।।१०।।

पैगम्बर के जब दो बेटे होंगे और उनके अलग-अलग दो समूह बनेंगे, तब पैगंबरी (ज्ञान देने) के उत्तराधिकार (गादी) के लिये झगड़ा होगा । उस समय अखंड परमधाम का ज्ञान दुनिया में जाहिर होगा ।

जब करे लड़ाई दज्जाल, अहमद सों इस ठाम ।
तब जान्या साएत भई, होए जाहिर दीन इसलाम ।।११।।

जब कलि-दज्जाल (अज्ञानता-दुर्बुद्धि) लोगों के दिलों में प्रवेश करके इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) से लड़ाई करेगा और सत्य ज्ञान को प्रकट करने में बाधा डालेगा, तब समझना की कियामत का समय आ गया है, उस समय सत्य धर्म (सत्य ज्ञान) दुनिया में प्रकट होगा ।

जब उगे सूरज मगरब, दावा वाको होए जब ।
एही सरत क्यामत की, होए साएत कायम तब ।।१२।।

जब पूर्व की बजाय पश्चिम से सूर्य उदय होगा, जब उसका दावा (रहस्य स्पष्ट) किया जायेगा, तब वही समय कियामत का होगा । उसी समय ब्रह्मज्ञान के द्वारा सारा संसार अखण्ड मोक्ष को प्राप्त करेगा ।

उगा सूरज मगरब, इमाम हुआ प्रसन्न ।
हुआ अंधेर आलम में, दावत करी पेहेचान ।।१३।।

ब्रह्मज्ञान रूपी सूर्य हिन्दुस्तान में उदय हो गया है, जिससे इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) प्रसन्न हो गये हैं। किंतु इस समय सारी दुनिया में अज्ञानता का अंधेरा हो गया है। ऐसे कठिन समय में इमाम महदी साहिबुज्जमां ने सबको सत्य ज्ञान द्वारा अखण्ड मोक्ष प्राप्त करने के लिये आमंत्रित किया है।

महंमद मेहेदी आवसी, होए आजूज माजूज जाहेर दोए ।
तब जानों क्यामत भई, सरत साएत देखे सब कोए ।।१४।।

जब मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां आयेंगे और याजूज-माजूज (दिन-रात रूपी दुनिया के काल) जाहिर होंगे । तब समझना कि कयामत आ गयी है । जगत् की उस अंतिम घड़ी को सब लोग देखेंगे ।

तब जवाल दुनी का, जानो नजीक पोहोंचा आए ।
असराफिल फिरस्ता, तिन फूंका सूर करनाय ।।१५।।

तब समझ जाना कि धरती पर मुसीबतें (तबाही) नजदीक आ पहुंची

हैं । अश्राफील फरिश्ता (जागृत बुद्धि) संसार में ब्रह्मज्ञान रूपी सुर (रनसिंघा) फूंकेगा।

तब हजरत ईसा उतरे, उतरे चौथे आसमान ।
तब खासी गिरो मोमिन की, होए सब पेहेचान ।।१६।।

कुर्आन में लिखे अनुसार उस समय चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से हजरत ईसा रूहूल्ला (श्री श्यामा जी श्री देवचन्द्र जी के रूप में) पुनः प्रकट होंगे, तब खासुलखास ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के समूह की सबको पहचान हो जाएगी ।

मारे कुली दज्जाल को, जिन ईमान लिया छिनाए ।
सो एक दीन करे दुनी को, दे इमान को पोहोंचाए ।।१७।।

तब हजरत ईसा कलि-दज्जाल (कलयुगी बुद्धि - अज्ञानता रूपी शैतान) को, जिसने सब से ईमान (सत्य, विश्वास) छीन रखा है, तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) रूपी तलवार से समाप्त करेंगे और सारी दुनिया को एक परमात्मा पर विश्वास दिलाकर सबको एक दीन (एक धर्म) कर देंगे ।

सक सुभे सब भान के, वेद कतेब के वचन ।
लड़ाई भाने आदि अनादि की, करे दिल रोशन ।।१८।।

वे वेद व कतेब ग्रंथों के वचनों का स्पष्टीकरण करके सबके संशय व भ्रम मिटा देंगे। सृष्टि के आदि काल से चले आ रहे धार्मिक मतभेदों (द्वेष भावना) को समाप्त करके सबका हृदय ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित कर देंगे ।

उतरे अरस अजीम से, नूर जबरूत मकान ।
रूहें फिरस्ते दोए गिरो, ताकी होए पेहेचान ।।१९।।

उस समय परमधाम (अर्श अज़ीम) से ब्रह्मात्मायें (रूहें) और अक्षरधाम (नूर मकान) से ईश्वरी सृष्टि (फरिश्ते) इस जगत् में अवतरित होंगे, जिनकी पहचान सबको हो जायेगी ।

सोए सरते सब आए मिलें, जो करी हक सुभान ।
मायने खोल मुसाफ का, हुई सबों पेहेचान ।।२०।।

अक्षरातीत श्री राज जी ने जिस समय का (कियामत का) वायदा किया था, वह समय आ गया है । कुर्आन के गुह्य रहस्य स्पष्ट हो गये हैं, जिससे सबको सत्य की पहचान (ब्रह्मज्ञान) हो गयी है।

महंमद करी मोमिनों को, करी सिफाएत जब ।
खोले द्वार जो भिस्त के, हुआ दीदार खुदाए का तब ।।२१।।

मुहम्मद (हकी सूरत) ने जब ब्रह्मात्माओं की सिफायत की (उन्हें तारतम ज्ञान प्रदान किया), तब उनके लिये दिव्य परमधाम के अखण्ड सुखों के द्वार खुल गये और प्रियतम परब्रह्म का दर्शन भी प्राप्त हो गया । ("आये करो दीदार" दीदार तन का नहीं बल्कि तारतम ज्ञान के द्वारा प्रियतम अक्षरातीत का करना है । उसी के विषय में मुहम्मद साहब ने कहा था कि "बेशक तुम दीदार करोगे अल्लाह का, कियामत के समय" ।)

जो किन ना देखिया, ना कछु सुनिया कान ।
सो इत मिल्या मोमिनों को, भई सबों पेहेचान ।।२२।।

जिस परमधाम के स्वरूप व लीला का किसी ने साक्षात्कार नहीं किया था और ना ही किसी ने उसके विषय में सुना था, उसका पूर्ण ज्ञान अब यहां ब्रह्मात्माओं को प्राप्त हो गया है, साथ ही सारी दुनिया को भी पहचान हो गयी है।

मोमिनों के मरातबे को, पोहोंच न सके कोए ।
अब तो सफे खड़ी भई, पेहेचान सबों की होए ।।२३।।

ब्रह्मात्माओं की महिमा (शोभा) तक अन्य कोई भी नहीं पहुंच सकता है। अब तो तीनों प्रकार की सृष्टि अपने अपने ज्ञान, रहनी, समर्पण, प्रेम के आधार पर अलग अलग (पंक्ति में खड़े) हो गयी है । अब उन सबकी पहचान हो जाएगी ।

रूहों सफे जुदी हुई, फिरस्ते सफ न सुमार ।
खास गिरो की गिनती, रूहें बारे हजार ।।२४।।

ब्रह्मसृष्टियों की पंक्ति (ज्ञान, प्रेम व समर्पण के अनुसार) अलग हो गई है । फरिश्तों (ईश्वरी सृष्टि) के पंक्ति का कोई शुमार (सीमा) ही नहीं है । खासुलखास ब्रह्मसृष्टियों की गिनती बारह हजार कही गयी है ।

ए खेल किया इनों वास्ते, भए तीन तकरार ।
अजमाए मोमिनों को, इनों के परवरदिगार ।।२५।।

इन ब्रह्मसृष्टियों के लिये ही संसार रूपी खेल की रचना की गई है । जिसके तीन भाग (ब्रज, रास, जागनी) हुए हैं । उनके प्रियतम परब्रह्म इस खेल

में उनकी परीक्षा ले रहे हैं ।।

आए वसीयत नामे मक्के से, वास्ते गिरो मोमिन ।
दावत ईसा मेंहेदीय की, करी जहान में रोशन ।।२६।।

ब्रह्मात्माओं के लिये ही मक्का से ४ वसीयतनामें हिंदूस्तान आये । जिनमें हजरत ईसा एवं इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुध्द निष्कलंक स्वरूप) के प्रकटन की सूचना दी गई है, जिन्होंने सारी दुनिया को शाश्वत सुख व शांति के लिये आमंत्रित किया है ।

मानत नाहीं क्यामत को, ए जो खलक कुफरान ।
खुदा साहेदी देत हैं, लिखे कलाम बीच फिरकान ।।२७।।

दुनियाँ के अविश्वासी लोग (जीव सृष्टि) कियामत (आत्मजागृति के समय) को नहीं मानते हैं । खुदा तआला (परब्रह्म) कुर्आन पाक के वचनों में स्वयं इस बात की साक्षी दे रहे हैं ।

हक सुभान मोमिनों को, लड़ाए साथ दज्जाल ।
आए तमासा देखि के, आखर किए खुसाल ।।२८।।

प्रियतम श्री राज जी ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) को इस खेल में माया-अज्ञान रूपी दज्जाल (अंदर के अवगुणों एवं संसारिक परिस्थितियों) से संघर्ष करवा रहे हैं। अंत में संसार रूपी तमाशा दिखाकर धाम धणी अपनी अंगनाओं को प्रसन्न कर देंगे (इश्क देकर जीता देंगे), फिर अपने निजघर वापस चले जायेंगे ।

कुंजी अरस अजीम की, दे इनों को खोल द्वार ।
सेहेरग से देखाए नजीक, अपना नित बिहार ।।२९।।

परमधाम की कुँजी (तारतम ज्ञान) ब्रह्मात्माओं को देकर उनके लिये परमधाम के अखण्ड सुखों के द्वार खोल दिये हैं । इन ब्रह्मात्माओं को प्रेम व आनंद से परिपूर्ण दिव्य परमधाम शहरग (प्राणनली) से भी नजदीक दिखा दिया । (परमधाम मूल मिलावे में बैठे होने का ज्ञान करा दिया) ।

आठो भिस्त आम को, दे वास्ते इन मोमिन ।
फिरस्ते नूर मकान को, पोहोंचाए किए गिरो रोशन ।।३०।।

इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के कारण ही श्री राज जी ने जीव सृष्टि को आठ प्रकार की मुक्ति (बहिश्तें) प्रदान की है । फरिश्तों (ईश्वरी सृष्टि) को

अक्षरधाम पहुँचाकर ब्रह्मात्माओं को जाहिर कर दिया ।

करी तीन उम्मत जाहिर, आम खास खासल खास ।
मोमिनों को हक सुभान बिना, और न रहे कोई आश ।।३१।।

प्रियतम परब्रह्म ने तीन प्रकार की सृष्टि जीव सृष्टि (आम खलक), ईश्वरी सृष्टि (खास उम्मत) और ब्रह्मसृष्टि (खासुलखास उम्मत) की पहचान दुनिया में जाहिर कर दी है । उनमें से मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के हृदय में प्रियतम अक्षरातीत के सिवाए अन्य कोई भी आशा-चाहना नहीं रहती है ।

इन मोमिन की वारसी, पोहोंची पांचों जब ।
तब साएत आई नजरों, वही उठना क्यामत तब ।।३२।।

इन ब्रह्मात्माओं की विरासत (धाम धणी की पाँचों शक्तियाँ तारतम, जागृत बुध, जोश, हुक्म और श्रीश्यामाजी की आत्मा) जब उनके पास पहुंच गयी, तब परमधाम की वह घड़ी (मूल मिलावे का दृश्य) नजरों के सामने आ गयी। वहीं मूल मिलावे में अपने मूल तनों में ब्रह्मात्माओं का जागृत होना ही वास्तविक कियामत है ।

हक सुभान बोलावत, मोमिनों को अपने ठौर ।
रसूल पर रसूल भेज के, करी दावत पर दावत और ।।३३।।

वे प्रियतम अक्षरातीत ब्रह्मात्माओं को अपने निजघर वापस बुला रहे हैं । एक के पश्चात् एक रसूल (संदेशवाहक) भेजकर उन्होंने उन्हें पुनः पुनः शाश्वत सुख शांति के लिये आमंत्रित किया ।

बिछौने सिफाएत के, किए महंमद अलेह सलाम ।
उमती उमती पुकारहीं, तुम आइयो बीच इसलाम ।।३४।।

मुहम्मद अलैहिस्सलाम (हकी सूरत महामत जी) ने उन ब्रह्मात्माओं के लिये ही सिफायत (इल्मे लदुन्नी) के बिछौने बिछाये हैं । उन्हीं ब्रह्मात्माओं को वे 'उम्मती उम्मती' (भाई) कहकर पुकारते हैं, कि आप सब सत्य-शांति के मार्ग में आ जाओ ।

तुम वास्ते द्वार खोलिया, जो बका भोम चेतन ।
क्यूं न आवत दिन में, देखो अपना ठौर रोशन ।।३५।।

आप ब्रह्मात्माओं के लिये ही परमधाम का दरवाजा (ज्ञान) खोल दिया गया है, जो कि अखण्ड, अनादि व चेतन भूमिका है । तारतम ज्ञान की रोशनी

पाकर भी क्यूं जागृत नहीं होते ? अपने दिव्य परमधाम की शोभा निहारिये ।

आया दिन उठने का, तुम करो मझको याद ।
देखो अपने घर को, वाकी ए बुनियाद ॥३६॥

परमधाम में जागृत होने का समय आ गया है, अब आप मुझे याद (चिंतन, चितवन) कीजिये । अपने निजघर का ध्यान करो, जो अनंत सुख व शांति का धाम है ।

देखो सुख फना के, देखो बका ठौर ।
दोउ तौलो अपने दिल में, फजर भई इत भोर ॥३७॥

इस फानी (नश्वर) संसार के (दुःखरूप) सुखों और परमधाम के अखंड सुखों, दोनों का स्वरूप पहचानो और अपने हृदय में दोनों की तुलना करो । तारतम ज्ञान का प्रकाश हो चूका है ।

हक सुभान केहेत हैं, तुम मेरी करो जिकर ।
मै तुमारी करत हों, या की क्यों ना करो फिकर ॥३८॥

प्रियतम परब्रह्म ने कुर्आन पाक में फुरमाया है कि मोमिन मेरी जिक्र में गर्क रहते हैं और मैं भी उन मोमिनों की ही जिक्र करता हूं । इस कथन का क्यूं विचार नहीं करते हो ?

तुम को वतन बोलावने, बंध बांधे हक सुभान ।
तुम तिन को क्यों नहीं देखत, सुकन चीन्ह करो पेहेचान ॥३९॥

आप ब्रह्मात्माओं को निजघर परमधाम ले जाने के लिये प्रियतम परब्रह्म ने पहले से ही धर्मग्रंथों में भविष्यकथन लिखे हैं । (भविष्य में होने वाली लीला को निश्चित कर दिया है) । उन कथनों को आप क्यूं नहीं देखते ? उन्हें समझकर अपने निजघर की पहचान करो ।

तुम कौन आए इत क्यों कर, है तुमारा कौन वतन ।
तुम को कौन बुलावत, तुमारे जगाये देखावत तन ॥४०॥

तुम कौन हो (तुम्हारा मूल स्वरूप क्या है) ? इस माया जगत में क्यों आए हो ? तुम्हारा मूल घर कहाँ है ? कौन तुम्हें बुला रहा है ? कौन तुम्हें जगाकर तुम्हारी परात्म (परमधाम में विराजमान मूल तनों) की पहचान करा रहा है ?

अरस अजीम की गलियां, तुम को दिखाई इत ।
क्यूं ना फिरो तिन बीच में, याद करो अपनी साएत ।।४१।।

इस सपने के ब्रह्मांड में भी तुम्हें तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम की नूरमयी गलियाँ दिखा दी हैं (पहचान करा दी है) । ध्यान-चितवनि द्वारा उन गलियों, महलों, वनों में रमण क्यों नहीं करते ? परमधाम की उस घड़ी को याद करो, जहां हम मूल मिलावे में प्रियतम के चरणों में विराजमान हैं ।

कौल किया तुम मुझ सो, सो क्यों ना करो तुम याद ।
तुमें जगाए इसही वास्ते, करो याद अपनी असल बुनियाद ।।४२।।

परमधाम के मूल मिलावे में तुमने मुझसे कुछ वायदे किये थे (हम आपको कभी नहीं भूलेंगे) । उसे याद क्यों नहीं करते हो ? तुम्हें इसीलिये जगाया है, कि तुम अपने मूल स्वरूप को याद करो ।

अब कहूं भोम छठी की, गृद मंदिर बारे हजार ।
ए साम सामे दोए हार हैं, रूहें हक सो करें बिहार ।।४३।।

अब रंगमहल की छठी भूमिका का वर्णन करूंगा, जहाँ बाहरी तरफ घेरकर ६-६ हजार मंदिरों की २ कतारें (कुल बारह हजार मंदिर) आमने-सामने आई हैं । यहाँ सखियाँ श्री राज जी के साथ प्रेम व आनंदपूर्वक लीला विहार करती हैं ।

चार हार हवेलियां, दोए सौ एकतीस एक हार ।
जमा नव सौ चौबीस, ए सुख मोमिन जाननहार ।।४४।।

इनके भीतरी तरफ चौरस हवेलियों की चार हारें (पंक्तियां) आई हैं । प्रत्येक हार में २३१ हवेलियाँ हैं । चारों हारों की कुल ९२४ हवेलियाँ होती हैं । इनका सुख मोमिन ही जानते हैं ।

इन भोम में रेहेत हैं, सुखपाल छे हजार ।
तरह तखतरवा की, हक हादी रूहें बैठनहार ।।४५।।

छठी भोम में छः हजार सुखपाल रहते हैं और इस भोम में तख्तरवा भी विद्यमान है, जिसमें श्री राज श्यामा जी व सखियाँ बैठकर आकाश मार्ग से परमधाम की सैर को जाते हैं ।

चारों पाए नूर के, ऊपर छत्रियां सुखदाए ।
झालर मोतिन झलकत, फिरता गृद सोभाए ।।४६।।

सुखपाल के चारों पाये नूर के हैं, जिन पर सुंदर सुखदायी छत्र की शोभा आयी है । जिसके चारों तरफ मोतियों की झालर झलकार कर रही है ।

आठों कलश नूर के, छत्री पर झलकत ।
मिने सुजनी जड़ाव बिछोने, साम सामी तकिए शोभात ।।४७।।

छत्री के ऊपर आठ नूरी कलश शोभा ले रहे हैं । बैठने के लिये कोमल जड़ाव के सुखदायी बिछौने बिछे है, जिनमें आमने-सामने तकिये सुसज्जित हैं ।

बीच गजगाह शोभित, अति सुन्दरता सुखदाए ।
मन इछत हाजर होत है, जब असवारी को जाए ।।४८।।

सुखपाल के अन्दर अति सुंदर सुखदायी गजगाह आये हैं (जिसे हाथों से पकड़कर बैठा जाता है) । जब सवारी का समय होता है, तब मन में इच्छा करते ही ये नूरी सुखपाल उपस्थित हो जाते हैं ।

मन वेगी सुखपाल है, जब दिल में चितवे हक ।
हादी रूहों को हाजर, आए पोहोंचे दम माफक ।।४९।।

ये सुखपाल मन की गति से चलते हैं । जब श्री राज जी सुखपालों का विचार दिल में लेते हैं, तब तुरंत ही एक पल में श्री श्यामा जी व सखियों के समक्ष सुखपाल हाजिर हो जाते हैं ।

दिल ऊपर चलत हैं, मन वेगी सुखपाल ।
असवारी समे समे की, सब दिल को करे खुसाल ।।५०।।

मनवेगी सुखपाल श्री राज श्यामा जी व सखियों की इच्छा अनुसार दायें-बायें, ऊपर - नीचे, अधिक-कम गति से चलते हैं । सवारी के विभिन्न समयों पर सबके दिलों को प्रसन्न करते हैं ।

क्यूं कहूं शोभा इन समें, जो हक के दिल माफक ।
हक हादी रूहें बन में, नख सिख लों सरूप इशक ।।५१।।

सुखपालों की सवारी के समय की शोभा का वर्णन कैसे करें जो हक के दिल के अनुरूप होती है ? नख से शिख तक इश्क के स्वरूप वाले श्री राजश्यामा जी व सखियाँ सुखपालों में विराजमान होकर वनों में विहार करने

जाते हैं ।

सुख कहे न जाए इन को, भोम बका बिहार का ठौर ।
ए सुखपाले तिनकी, दियो जाए न पटन्तर और ॥५२॥

प्रियतम अक्षरातीत व आत्माओं की दिव्य लीला स्थली अखंड परमधाम के सुखों का वर्णन नहीं हो सकता है । ये जो सुखपाल हैं, उनका इस नश्वर जगत् में कोई उदाहरण (निमूना) नहीं है ।

और छठी भोम में चौक कहे, है हवेली तिन दरम्यान ।
कई मंदिर तिन बीच में, सब चेतन नूर पेहेचान ॥५३॥

छठी भोम में सुखपाल के अतिरिक्त कई चौक भी हैं, उनके बीच में कई हवेलियां भी हैं और उनके बीच कई दिव्य मंदिर भी हैं । वे सभी चेतन व नूरमयी हैं ।

कई लवाजमे इन मंदिरों, ताकी हिसाब न गिनती होए ।
ए तो नेक कह्या दिल आवने, जुबां बका न पोहोंचे कोए ॥५४॥

इन मंदिरों मे बेहिसाब साजो-सामान हैं, उनकी गणना करना सम्भव नहीं है । ब्रह्मात्माओं के दिल में शोभा बसाने के लिये मैंने थोड़ा सा वर्णन किया है । इस झूठी जुबाँ से अखंड परमधाम के सुखों का वर्णन नहीं हो सकता ।

कई तिन आगे चौक हैं, कई फिरते मंदिर ।
कई तिन आगे बैठकें, ताके मोमिन पैठे अन्दर ॥५५॥

चौरस हवेलियों के आगे (भीतरी तरफ) गोल हवेलियों के कई चौक आये हैं, जिनमें घेरकर कई मंदिर आये हैं । उनके आगे अनेकों बैठकें (चबूतरे) आयी हैं, जिनके अंदर मोमिन (ब्रह्मात्माएं) प्रवेश करते हैं ।

ए तो शब्दातीत की, क्यों आवे सबद में ए ।
केहेना इनहीं शबद से, वास्ते दिल आवने के ॥५६॥

परमधाम की शब्दातीत शोभा, शब्दों में किस प्रकार आ सकती है? लेकिन यहाँ के शब्दों से ही परमधाम का वर्णन करना है, ताकि ब्रह्मात्माओं के दिल में उसकी शोभा बस सके ।

महामत कहे ए मोमिनों, यह तुमारा घर श्री धाम ।
अखण्ड बका इन को कहा, जो है दीन इसलाम ॥५७॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह परमधाम तुम्हारा निजघर है । अखण्ड बका इसे ही कहा गया है । यही शाश्वत सुख व शांति का धाम है ।

प्रकरण-२३, चौपाई १२५२

भोम सातमी

श्री महामति जी के धाम हृदय में विराजमान प्रियतम अक्षरातीत श्री राज जी अब अपनी आत्माओं को श्री रंगमहल की सातवीं भोम के दर्शन करा रहे हैं और साथ से आह्वान कर रहे हैं, कि प्यारे साथ जी ! अब इस फानी संसार को पीठ दीजिए और अपनी आत्मिक नजर से धाम के सुख लीजिए ।

अब कहूं भोम सातमी, जहां हिंडोले छे हजार ।
छप्पर खटों झलकत, संग रूहें परवरदिगार ।।१।।

अब रंग महल की सातवी भूमिका का वर्णन करूंगा, जहाँ षटछप्पर वाले छः हजार हिंडोले शोभायमान हैं । श्री राज श्यामा जी के साथ सखियाँ इन झूलों में झूलने का आनंद लेती हैं ।

खूबी इन हिंडोलन की, सिफत ना होए सुमार ।
एह तो शब्दातीत को, जो है नित बिहार ।।२।।

इन हिंडोलों की सुंदरता व शोभा का वर्णन नहीं हो सकता है क्योंकि यह शब्दातीत परमधाम में होने वाली नित्य लीला विहार है ।

ए केहेनी सुपन आकार से, वह शब्दातीत के पार ।
जहां वेद और वेदान्त के, वचन रहेत है वार ।।३।।

यह वर्णन स्वाप्निक नश्वर देह से करना है और वह परमधाम शब्दातीत बेहद मण्डल से भी परे है , जहां वेद तथा वेदान्त के वचन भी लीन हो जाते हैं ।

जाको खोजत त्रैगुन, ठौर अक्षर पाई न जाए ।
पड़ो मोह अहं दरम्यान में, सब तिन में गोते खाए ।।४।।

उस परब्रह्म को त्रिगुण प्रधान देवता, ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी खोजते हैं, किंतु वे अक्षरधाम का साक्षात्कार भी प्राप्त नहीं कर पाये । बीच में मोह (नींद) अहंकार का पर्दा पड़ा है । सब उसी में उलझकर रह जाते हैं ।

तिन त्रैगुन की तन्मात्रा, ए उपजी सकल जहान ।
इन के नाम क्यों कर कहूं, भई त्रिगुन को न पेहेचान ।।५।।

उन तीन गुणों (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण) की तन्मात्रा (शब्द, रूप, रस, स्पर्श, गंध) से ये सारा संसार उत्पन्न हुआ है । जब त्रिदेवों को ही परब्रह्म पहचान नहीं हुई है, तो सामान्य जीवों की क्या बात कहूं ?

तिन अक्षर पार अक्षरातीत, तिन की करनी गम ।
ए तो आकार सुपन के, सबको आतम लग नहीं गम ।।६।।

उस अक्षरधाम से परे अक्षरातीत परब्रह्म का धाम है । जिसका साक्षात्कार करना है । यह तो स्वाप्निक नश्वर देह है । किसी को अपनी आत्मा (चेतना) की भी पूर्ण पहचान नहीं है ।

नेत नेत कह्या निगमें, बचन रहे इत हार ।
ए तो अक्षरातीत का, केहेना नित बिहार ।।७।।

वेदों ने भी परब्रह्म के विषय में नेति नेति (यह नहीं, यह नहीं) कह दिया, और हार मान लिया । यहां उस अक्षरातीत परब्रह्म (दिव्य परमधाम) के नित्य लीला विहार का वर्णन करना है ।

क्यूं आवे दिल इन के, ए जो सुपन की सृष्ट ।
इनकी सक क्योंए ना मिटें, जिनको मोह अहं लग इष्ट ।।८।।

यह जो स्वप्न की सृष्टि है, उनके दिल में यह शोभा कैसे आ सकती है । उनके संशय किस प्रकार मिट सकते हैं, जिनके इष्ट (उपास्य) मोह तत्व और अहंकार स्वरूप (आदि नारायण) तक सीमित हैं ।

इनों की दौड़ ना पोहोंचहीं, सुरत रहेत उरझाए ।
जब सुने अक्षर को, इनों का मूल मिट जाए ।।९।।

स्वप्न के जीवों की साधना अखंड तक नहीं पहुँच पाती है, क्योंकि इनकी सुरता शून्य निराकार तक ही उलझी रहती है । अक्षर ब्रह्म (जागृत) का ज्ञान सुनते ही स्वाप्निक जीव सृष्टि का अस्तित्व समाप्त हो जाता है ।

जब देखिए अद्वैत को, द्वैत तो कछुए ताए ।
ना उपजो ना है फना, ए कछु ना देत दिखाए ।।१०।।

जब अद्वैत (परमधाम) का साक्षात्कार हो जाता है, तो यह द्वैत जगत

अस्तित्वहीन (स्वप्नवत्) हो जाता है । यह ना उत्पन्न हुआ है, ना है, ना ही इसका नाश होना है । यहाँ जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह सिर्फ एक भ्रम है ।

ताके क्यों कर आवे दिल में, लीला अखण्ड अपार ।
शबद ना पोहोंचे अक्षर लों, केहेनी लीला नित बिहार ।।११।।

ऐसे स्वप्न से उत्पन्न जीव सृष्टि के दिल में अखंड परमधाम की लीला कैसे आयेगी ? यहां के शब्द अक्षर तक (बेहद मण्डल तक) भी नहीं पहुंच पाते हैं , जबकि यहां तो अखण्ड परमधाम की नित्य लीला विहार का वर्णन करना है।

जाको मूल माया कही, जो वस्तोगत ए कहूं नाहीं ।
जिनके आकार है नाहीं, ए क्यों कर पोहोंचे ताए ।।१२।।

जिस ब्रह्मांड का मूल ही माया (नींद) है, जो हकीकत (वास्तविकता) में कुछ है ही नहीं, जिनके मूल तन (परात्म) कहीं है ही नहीं, वह वहां (परमधाम) किस प्रकार पहुंच सकता है ?

लिखा वेद कतेब में, वचन जो परवान ।
तिन बताई तीन सृष्ट की, कोई कर ना सक्या पेहेचान ।।१३।।

वेद कतेब में जो प्रमाणिक वचन लिखे हुए हैं, उनमें तीन प्रकार की सृष्टि कही गई है । उसकी आज तक कोई भी पहचान नहीं कर सका ।

एक सृष्ट सुपन की, ताको धरो जीव नाम ।
दूजी सृष्ट ईश्वरी की, ताको शब्दातीत है गम ।।१४।।

पहली सृष्टि स्वप्न की उत्पत्ति है, जिसे जीव सृष्टि कहा जाता है । दूसरी ईश्वरी सृष्टि है जिसकी पहुंच अक्षर तक है ।

तीसरी सृष्ट जो ब्रह्म की, सो है ब्रह्म समान ।
आई शब्दातीत के पार से, सो करत अपनी पेहेचान ।।१५।।

तीसरी जो ब्रह्मसृष्टि है, वह ब्रह्म के ही समान है, जो अक्षर पार परमधाम से आई है । वे यहाँ अपने निजस्वरूप की पहचान कर रही हैं ।

सत चित आनन्द लक्षन, अखण्ड इन के होए ।
ए लीला अक्षरातीत की, इत क्यों कर पोहोंचे कोए ।।१६।।

ये ब्रह्मात्माएं अखंड स्वरूप वाली तथा सत्, चिद्, आनंद लक्षणों वाली होती हैं । ये अक्षरातीत पूर्णब्रह्म की लीला के स्वरूप हैं । वहां अन्य कोई किस

तरह से पहुंच सकता है ?

कही तीन उम्मत कतेब में, एक आम दूसरी खास ।
तीसरी खासल खास है, जाको हक बिन और ना आश ।।१७।।

इसी प्रकार कतेब पक्ष के ग्रन्थों में तीन प्रकार की सृष्टियों (उम्मत) का वर्णन आया है । पहली आम (जीव), दूसरी खास (ईश्वरी) और तीसरी खासलखास (ब्रह्मसृष्टि) है । ब्रह्मसृष्टियों के हृदय में अक्षरातीत परब्रह्म (हक तआला) के सिवाए अन्य कोई आशा नहीं रहती है ।

इनके वास्ते पैदा किये, ए दुनियां चौदे तबक ।
तिनके दिल में कबहूं, आवे ना सुभे शक ।।१८।।

इन ब्रह्मसृष्टियों के लिए ही परब्रह्म श्री राज जी ने चौदह लोकों की रचना की है । इनके दिल में कभी भी कोई संशय नहीं आ सकता है ।

हके वकील भेज्या, जबराईल वास्ते इन ।
सो हमेशा संग रहे, दिल को करे रोशन ।।१९।।

इन ब्रह्मसृष्टियों के लिये श्री राज जी ने जिब्रील फरिश्ते (अपने जोश) को वकील (सत्य-असत्य की पहचान कराने वाले) के रूप में भेजा है, जो हमेशा इनके साथ रहकर इनके हृदय को ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित करता रहता है ।

जिन अक्षर की नजरों, काल पलक फिराए ।
पैदा पल फनां करे, कई कोट इण्ड मिट जाए ।।२०।।

जिस अक्षर ब्रह्म के नजरों में काल पलक झपकता है । उनके एक पलक झपकने मात्र समय में करोड़ों ब्रह्मांड उत्पन्न होकर लय को प्राप्त हो जाते हैं ।

तिन की बुध जो जाग्रत, जाको कह्या बुध अवतार ।
असराफील कुरान में, कहा सूर बजावनहार ।।२१।।

उन अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि को ही बुद्धावतार कहा गया है । उसे ही कुर्आन पाक में ब्रह्मज्ञान का सूर फूँकने वाला अश्राफील फरिश्ता कहा है ।

सो अक्षर से आया इन जिमी, रहे मोमिनों के दरम्यान ।
कछू ना छिपे तिनसे, करत सब पेहेचान ।।२२।।

वह अश्राफील फरिश्ता (जागृत बुद्धि) अक्षरधाम से इस संसार में आया

है और ब्रह्मात्माओं के अंदर रहता है । उससे कुछ भी छिपा नहीं है, वह सारी पहचान रखता है ।

ईश्वर घर पोहोंचावने, है इन अवतार का काम ।
उठावे आठो भिस्त को, दे अक्षर हिरदे ठाम ॥२३॥

इस बुद्ध अवतार का काम जीवों को ईश्वर (आदिनारायण) के मूल स्थान (बेहद मण्डल) पहुंचाने का है । वह समस्त जीवों को अक्षर के हृदय में आठ बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) में अखण्ड करेगा ।

एह पेहेले सूर बजावत, जिनसे फना सब होए ।
करे दूसरे सूर से सब कायम, अजूं पेहेचानत नाहीं कोए ॥२४॥

अश्राफील जब पहला सुर (ब्रह्मज्ञान का) फूंकेगा, तब सब फना (अहंकारशून्य) हो जायेंगे और जब दूसरा सूर फूंकेगा, तब सारी दुनिया अखण्ड हो जायेगी । अब तक कोई अश्राफील को पहचान नहीं पाया है (पहला सुर ब्रह्मज्ञान ज्ञान का है, जिसके द्वारा बड़े बड़े ज्ञानियों के अहंकार भी चूर चूर हो जायेंगे । दूसरे सुर से तात्पर्य सारी दुनिया को जाग्रत बुद्धि प्राप्त होने से है, जिसके बाद सब अखण्ड मोक्ष प्राप्त कर लेंगे) ।

ए वचन पेहेले कहे, महंमद अलेह सलाम ।
मेरी दावत सुनके, होइयो दाखिल इसलाम ॥२५॥

ये वचन कुर्आन पाक में मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने पहले ही कह दिया है कि उस समय मैं हकी सूरत के रूप में आऊंगा तो मेरा धार्मिक आमंत्रण (संदेश, सत्य ज्ञान) सुनकर सभी सत्य शांति के मार्ग को धारण कर लेना ।

मैं फेर आऊं इन जिमी, वास्ते गिरो मोमिन ।
जब नजूमी कोई ना रहे, आय करो रोशन ॥२६॥

मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने कहा, कि मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये मैं दुनियाँ में दोबारा आऊंगा । जब कुर्आन के रहस्यों कों स्पष्ट करने वाला कोई न होगा, तब स्वयं मैं ही आकर उन वचनों (कुर्आन) का स्पष्टीकरण करूँगा ।

सिफाएत मोमिन की, मैं आए करोंगा जब ।
राखियों उमेद तिन पर, होए हक का दीदार तब ॥२७॥

रसूल साहब ने कहा, कि जब मैं पुनः आकर मोमिनों (ब्रह्मात्माओ) की

सिफायत करूंगा (उन्हें इल्मे लदुन्नी प्रदान करूंगा), तब तुम भी मेरे उस स्वरूप पर उम्मीदवार (आशान्वित) रहना । उस समय परमात्मा (अल्लाह तआला) का दीदार होगा ।

जिन मोको इत देखिया, तिन देख्या परवरदिगार ।
तिन को अरस अजीम के, खुल जाएंगे द्वार ।।२८।।

रसूल साहब ने बताया कि, उस समय जो मेरी पहचान कर लेगा (मुझे देख लेगा), वह यहाँ पर अक्षरातीत पूर्णब्रह्म के दर्शन कर लेगा और उनके लिये परमधाम के अखण्ड सुखों का द्वार खुल जायेगा ।

होए म्याराज मोमिन पर, देंगे मेरी साहेदी इत ।
साएत को कायम करें, एही उठना रोज क्यामत ।।२९।।

(जिस प्रकार मुझ पर मेअराज हुआ था, उसी प्रकार) उस समय उन मोमिन (ब्रह्मात्माओं) पर भी मेअराज (परमधाम जाना - ब्रह्मसाक्षात्कार) होगा । वे मेरे कथनों (कुर्आन) की साक्षी देंगे। इस प्रकार वे मोमिन परमधाम के ज्ञान के द्वारा सारी दुनिया को अखण्ड मोक्ष प्रदान करेंगे । ब्रह्मज्ञान के द्वारा जागृत होना ही वास्तविक कियामत है ।

रात लैलत कदर की, कहे तीन तकरार ।
एक जरा इन जिमी, करी परवरदिगार ।।३०।।

लैलतुलकद्र (महिमावान संसार रूपी रात्रि) के तीन भाग कहे गये हैं । इस संसार का एक कण भी परवरदिगार खुदा तआला (परमात्मा) के हुक्म से बना है ।

भेजे चार पैगंबर, वास्ते गिरो मोमिन ।
एक ऊपर भेजा दूसरा, मैं इनों को कियो रोशन ।।३१।।

ब्रह्मात्माओं के लिये ही मैंने क्रमशः चार पैगंबर (दाऊद, मूसा, ईसा, मुहम्मद) भेजे हैं, एक के बाद एक उन्हें भेजकर मैंने ब्रह्मात्माओं के लिये संसार में ज्ञान का प्रकाश किया है।

अब तो आई आखर, हुआ उठने का दिन ।
हुई दावत सब में जाहिर, जुम्में दिन जमा हुए मोमिन ।।३२।।

अब तो आखिरत का (कलियुग का अंतिम) समय आ गया है ।

परमधाम मूलमिलावे में जागृत होने का समय हो गया है । सारे संसार में ब्रह्मज्ञान का संदेश भी पहुंच गया है । इस जुम्मे के छठे दिन मोमिन (ब्रह्मात्माएं) एकत्रित हो रहे हैं ।

द्वार अरस अजीम के, खोले महंमद अलेहसलाम ।
होवे दाखिल मोमिन, बीच दीन इसलाम ॥३३॥

मुहम्मद अलैहिस्सलाम (हकी सूरत) ने (तारतम ज्ञान के द्वारा) अखण्ड परमधाम के द्वार खोल दिये हैं । मोमिन (ब्रह्मात्माए) सत्य-शांति के मार्ग में प्रविष्ट हो गये हैं ।

सो देवे साहेदी अपनी, इन जिमी बैठ नासूत ।
मलकूती मलकूत में, पोहोंचे जबरूती जबरूत ॥३४॥

इस असत्य संसार में बैठकर वे मोमिन ब्रह्मात्माएं अपनी साक्षी स्वयं देते हैं । विष्णु भगवान के अंश रूप जीव सृष्टि बैकुंठ में तथा अक्षर ब्रह्म की सुरता रूप ईश्वरी सृष्टि अक्षर धाम में पहुँचेंगे ।

मोमिन अरस अजीम से, उतरे जिमी पर जब ।
साहेदी नूर जमाल की, इनों दई इत तब ॥३५॥

दिव्य परमधाम से मोमिन रूहें जब इस संसार में आईं, तो उन्होंने अक्षरातीत पूर्णब्रह्म की यहाँ पर साक्षी दी ।

तिस वास्ते अरस अजीम के, एही कहे सुकन ।
कान हके इनों को दिए, होए इनों का दिल रोशन ॥३६॥

इस कारण दिव्य परमधाम के वचन वे ब्रह्मात्माएं ही कहती हैं । प्रियतम परब्रह्म ने उन्हें ब्रह्मज्ञान सुनने का सामर्थ्य प्रदान किया है, इन्हीं का हृदय तारतम ज्ञान से प्रकाशित होता है ।

इत मुनाफक जो कोई, जो खतरा ल्यावे इत ।
तिनसे कछु ना होवहीं, क्यों रोको उठना क्यामत ॥३७॥

यहाँ पर जो कोई मुनाफक (कपटी, दोगले) सत्य ज्ञान को ढांपने का प्रयास करते हैं, उन्हें सफलता नहीं मिल सकती । (क्योंकि कियामत-आत्म जागृति का महान कार्य कभी भी नहीं रूक सकता ।) आखिर वे दुनिया के अखण्ड होने को क्यूं रोकना चाहते हैं?

किल्ली अरस अजीम की, करी जाहिर हक सुभान ।
वास्ते इन मोमिन के, करने सब पेहेचान ।।३८।।

मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को परमधाम के स्वरूप व लीला की सम्पूर्ण पहचान करवाने के लिये हक सुब्हान (परब्रह्म अक्षरातीत) ने इस नश्वर जगत में परमधाम के अखण्ड सुखों की कुंजी (चाबी) तारतम ज्ञान को प्रकट किया है ।

ए तो बका भोम चेतन, देना निमूना इन जिमीन ।
ए आवे इन ठौर में, रहे मोमिन दिल आकीन ।।३९।।

वह तो अखंड परमधाम की दिव्य चेतन भूमिका है, जिसका उदाहरण इस झूठे संसार में देना है । उन ब्रह्मात्माओं के दिल में ही सच्चा विश्वास होता है। वे ही परमधाम की दिव्य भूमिका में प्रवेश कर पाते हैं ।

ए तो है हिसाब से बाहेर, केहेना है सब इत ।
वास्ते इन मोमिन के, उठावना है क्यामत ।।४०।।

परमधाम की गणना तो हिसाब से परे है, किंतु यहाँ उसकी शोभा मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के हृदय में बसाने के लिये वर्णन करना पड़ रहा है । उनका मूल तनों में जागना ही कियामत है ।

कहूं सातमी भोम की, दोए हार गृद मंदिरन ।
बारे हजार गिनती, झलकत नूर रोशन ।।४१।।

अब रंग महल की सातवी भोम का वर्णन करूंगा, जिसमें बाहरी किनार पर छः छः हजार मंदिरों की दो हारें आयी हैं । इन बारह हजार मंदिरों से अत्यंत नूरमयी झलकार हो रही है ।

दोए हार मंदिरन की, दोए हार थम्भ देहेलान ।
तीन गली है तिन की, तहां बारा हजार हिंडोले जान ।।४२।।

मंदिरों की दोनों पंक्तियों के बीच स्तम्भों की दो हारें आने से दहलान की शोभा हो रही है । स्तम्भों की दो हारों के मध्य तीन गलियां बन गई हैं, जिन में १२ हजार हिंडोले शोभायमान हैं ।

दोए थम्भ बीच हिंडोले, कड़े कंचन हिंडोले हीरे जड़ित ।
हक हादी रूहें हींचत, सो कही ना जाए सिफत ।।४३।।

प्रत्येक दो स्तम्भों के मध्य महराबों में हिण्डोले हैं, जो हीरे से जड़ी हुई

कंचन की जंजीरों में शोभायमान हैं । श्री राज श्यामा जी व सखियाँ यहां झूला झूलते हैं । इस शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

ताकी छ हजार गिनती, हिंडोले जो गिरदवाए ।
क्यों कहूं शोभा इनकी, फिरती जो सुखदाए ॥४४॥

स्तम्भों की एक पंक्ति में चारों तरफ घेरकर छः हजार हिंडोले (दोनों पंक्तियों के कुल १२००० हिण्डोले) आये हैं । उनकी शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं ? जो चारों तरफ घेरकर सुखदायी हिण्डोले आये हैं ।

चार हार हवेलियां, अन्दर नाहीं सुमार ।
ज्यों तले की त्यों उपर, सब साज रहे सुखकार ॥४५॥

इनके भीतरी तरफ चार हार हवेलियों की शोभा है । उसके अंदर हवेलियों, मंदिरों, स्तम्भों, गलियों का कोई शुमार (अंत) नहीं है । जिस प्रकार की शोभा प्रथम भोम की है, वैसी ही शोभा ऊपर के भोमों की है, जो अत्यन्त सुखकारी है ।

तैसे ही थम्भ बने, तैसे मेहेराब नूर ।
तैसे जोत जवेरन की, सो क्यों कर कहूं जहूर ॥४६॥

स्तम्भ व महरावें भी उसी प्रकार नूरमयी हैं । उसी प्रकार नाना प्रकार के जवाहरातों की ज्योति चमक रही है । उसकी शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं ?

हक हादी रूहें हींचत, इन हिंडोलों दरम्यान ।
ए सुख जाने मोमिन, या जाने हक सुभान ॥४७॥

इन हिंडोलों में श्री राजश्यामा जी एवं सखियाँ झूलती हैं । यहाँ के सुखों को तो मात्र ब्रह्मात्माएं जानती हैं या हक सुब्हान श्री राज जी जानते हैं ।

रूहें खेले संग राज के, देखो फिरती इन गलियन ।
कहूं चबूतरे बैठक, उठे किरना नूर रोशन ॥४८॥

इन गलियों में घूमती हुई सखियाँ श्री राज जी के संग अनेक प्रकार से खेलती हैं । कभी चबूतरे पर बैठकर प्रेम भरी बातें करती हैं । तब वहां अनेक रंगों की नूरमयी किरणें झलकार करती हुई दिखती हैं ।

कोई हक सो बातां करे, कोई ठाढ़ी सनमुख ।
कोई नूर जमाल का, देख रही इत मुख ।।४९।।

कोई सखी श्रीराजजी से प्रेम भरी बातें करती है, तो कोई उनके सामने खड़ी होकर उनकी बातें सुनती है । कोई सखी तो श्री राज जी के नूरी मुखारविंद की शोभा ही देखते रहती है ।

कोई हंसत हक सों, बातां करे बनाए ।
साम सामी दोए रीझत, ए सुख कह्यो न जाए ।।५०।।

कोई सखी श्री राज जी के साथ हंसते हुए बातें करती है । इस प्रकार दोनों ही आनंदित होते हैं । इस सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता है ।

यूं कई बिलास इन भोम के, करत हक सुभान ।
ए सिफत न आवे शबद में, क्यूं कर कहूं पेहेचान ।।५१।।

इस प्रकार श्री राज श्यामा जी एवं सखियां सातवीं भोम में कई प्रकार से हांस विलास करते हैं । जिसका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता , जो उसकी पहचान किस प्रकार कराऊं?

महामत कहे ए मोमिनों, ए सातमी भोम कही तुम ।
कहूं भोम आठमी, देखावत हक हुकम ।।५२।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे सुंदरसाथ जी ! आपके समक्ष यह सातवीं भोम का वर्णन किया है । अब आठवीं भोम का वर्णन करूंगा, जो कि श्री राज जी का हुक्म हमें दिखा रहा है।

प्रकरण २४, चौपाई १३०४

भोम आठमी

प्रसंग - लाल दास जी महाराज कृत बड़ी वृत में महामति जी के धाम हृदय में विराजमान होकर हक सुब्हान श्री राज जी आठवी भोम का वर्णन कर रहे हैं ।

अब कहूं भोम आठमी, अरस अजीम का ठौर ।
इहां पोहोंचे एक मोमिन, कोई सुन न सके और ।।१।।

अब दिव्य परमधाम के मध्य स्थित रंगभवन की आठवी भूमिका का वर्णन करूंगा, जहां एकमात्र ब्रह्मात्माएं (मोमिन) ही पहुंच पाते हैं । वहां का वर्णन ब्रह्मात्माओं के सिवाए अन्य कोई नहीं सुन पाता है ।

ए तो शब्दातीत है, सो केहेनी शबद में इत ।
मोमिन हुए जाहिर, जिन कायम करी साएत ।।२।।

परमधाम जो शब्दों से परे है, उसका वर्णन यहाँ शब्दों में करना है । वे ब्रह्मात्माएं दुनिया में प्रकट हुये हैं, जो यह दिव्य ज्ञान दुनिया में जाहिर करके दुनिया को अखण्ड कर रहे हैं ।

तो अरस अजीम के, इनों वास्ते खोले द्वार ।
इनों के नित बिहार में, बोलावत परवरदिगार ।।३।।

इन ब्रह्मसृष्टियों के लिये ही श्री राज जी ने परमधाम का दिव्य तारतम ज्ञान दुनिया में प्रकट किया है । प्रियतम परब्रह्म श्री राज जी उन आत्माओं को, उनके निजघर के अखंड लीला विहार में बुला रहे हैं ।

तुम आओ अपने घर, जो है बका वतन ।
तुम आए खेल देखने, तुमारे अरस में तन ।।४।।

हे ब्रह्मप्रियाओ ! आप अपने अखंड निजघर परमधाम में वापस आओ । आपके मूल तन (परात्म) परमधाम (मूल मिलावे) में हैं । यहाँ आप (सुरता रूप से) माया रूपी संसारी खेल देखने आये हो ।

याद करो तिन तन को, जहां साएत ना हुई बेर ।
तुम रबद किया मुझसों, सो याद दिया तुमे फेर ।।५।।

अपने मूल तनों (निजस्वरूप) को याद करो, जहां मूल मिलावे में एक क्षण भी व्यतीत नहीं हुआ है । आप सबने मुझसे इश्क वार्तालाप किया था (कि हमारा इश्क बड़ा है) । इस कारण आपको पुनः उन बातों की याद दिलायी है ।

तुम को जगाए अन्दर, दई बात निसबत खोल ।
याद करो तुम तिन को, मुख थे काढ़े कैसे बोल ।।६।।

आपकी अंतरात्मा को जगाकर प्रियतम अक्षरातीत से आपके मूल संबंध की पहचान करा दी है । याद कीजिये कि आपने प्रियतम अक्षरातीत के समक्ष अपने मुख से कैसे वचन कहे थे । ("हम कभी भी आपको नहीं भूल सकते")

तिन सामी तुमे देखने, करनी ताकी शरम ।
जब याद आवे तुम कों, तब दिल होवे नरम ।।७।।

आपको अपने कहे वचनो को देखकर उनका पालन करना है । अपने वचन की लाज बचानी है। जब आपको अपने वचन याद आयेंगे, तब आपका हृदय कोमल होगा।

कैसा घर है अपना, कैसी तुमारी पोशाक नूर ।
कैसे तन है तुमारे, कैसे तन का जहूर ।।८।।

आपका निजघर कैसा (प्रेम व आनंद से परिपूर्ण) है ? आपकी पोशाक कैसी नूरमयी है ? आपके (मूल) तन कैसे दिव्य हैं ? और उस तन की शोभा कैसी (नूरमयी व सुंदर) है ?

कैसी बोली तिन की, कैसी चलन है चाल ।
कैसी खेले रामत, रहे कैसा मन खुसाल ।।९।।

उन मूल तनों की बोली कैसी (मधुर) है ? उनका चाल चलन (व्यवहार) कैसा है ? वहां (परमधाम में) आप किस प्रकार खेल-रामतें करते हो ? आपका मन वहां किस प्रकार हर पल आनंदित रहता है ?

कैसा इशक तिन में, कैसा हक सो प्यार ।
कैसा तुमसों इशक, करत परवरदिगार ।।१०।।

आपके उन मूल तनों में कैसा प्रेम है ? आप प्रियतम श्री राज जी से किस प्रकार प्रेम करते हैं ? तथा आपसे प्रियतम श्रीराजजी भी किस प्रकार प्रेम करते हैं ।

तुम कैसे हिंडोले झूलत, लेके सनमुख हक ।
क्यूं हादी तुमसों रहे, लिए अंग इशक ।।११।।

आप श्री राज जी को अपनी नजरों के सामने लेकर किस प्रकार हिण्डोले झूलते हो? इश्क की ही स्वरूप श्री श्यामा जी आपसे कैसा प्रेम करती हैं ?

कैसे मंदिर तुमारे, कैसे बिछौने नूर ।
कैसा सन्दूकें साज हैं, कैसा चित्रामन जहूर ।।१२।।

दिव्य रंगमहल में आपके कैसे दिव्य मंदिर हैं ? उनमें कैसे नूरमयी

बिछौने हैं ? उन मंदिरों में शोभायमान अनेकों सामान, संदूके कैसी हैं ? उन मंदिरों की दीवालों में कैसी चित्रकारी सुशोभित है ?

कैसी चौकी माचियां, कैसे गदेले सिंघासन ।
कैसे हिंडोले मंदिर, कैसी चौकियां रोशन ॥१३॥

उन मंदिरों में कैसी चौकियां, माचियां हैं? कैसे गदेले (गद्देदार कुर्सिया), सिंहासन हैं? मंदिरों में कैसे हिंडोले हैं? तथा कैसी जगमगाती हुई चौकियाँ है?

तहां बैठे देखो आप को, करो बातें हक सनमुख ।
याद करो उन बखत को, कैसो तुमारे सुख ॥१४॥

उन मंदिरों में स्वयं को धामधणी के साथ बैठे देखिये। उनके सम्मुख विराजमान होकर उनसे प्रेम भरी बातें करो । उस समय को याद करो, आप किस प्रकार दिन रात प्रेम व आनंद में डूबे रहते थे ?

तुम को हक बोलावत, करने मीठी बात ।
याद करो तुम तिन को, तुम हो हक की जात ॥१५॥

प्रियतम श्री राज जी प्रेम भरी मीठी बातें करने के लिये आपको बुला रहे हैं । आप श्री राज जी को याद करो, क्योंकि आप उनके ही अंगरूपा आत्माएं हो ।

अपनी जात की शरम, करत हैं सब कोए ।
अब देखो घर माया को, कर देखो मुकाबिल दोए ॥१६॥

अपनी अपनी जाति की शर्म (इज्जत, मर्यादा पालन) सब कोई करते हैं । अब माया की वास्तविकता पहचानों और अपने निजघर परमधाम से माया के नश्वर सुखों की तुलना करो ।

तुमारी हक सुभान, केती करत हैं बात ।
रसूल भेजे पैदर पे, जान प्यारी अपनी जात ॥१७॥

(कुर्आन आदि धर्मग्रंथों में) हक सुव्हान श्री राज जी आपके विषय में कितनी बातें करते हैं । तुम्हें अपनी प्यारी रूहें (हक जात) जानकर एक के बाद एक अनेकों संदेश वाहक भेजे हैं ।

तुम वास्ते कलाम अपने, लिखे अपने खास कलाम ।
बका घर जो कायम, किया जाहिर दीन इसलाम ॥१८॥

तुम्हारे लिये ही अपने हाथों से कुर्आन पाक में विशेष (खास) वचन लिखे हैं, जिनके द्वारा अखंड परमधाम की हकीकत बताकर शांति का सत्य मार्ग जाहिर किया है ।

लिखी इसारतें रमूजें, तम वास्ते इन ठौर ।
फेर कुंजी दई तुम को, कोई खोल न सके और ।।१९।।

कुर्आन पाक आदि धर्मग्रंथों में आपके लिये ही सांकेतिक व गुह्य वचन लिखे हैं । तत्पश्चात् उनके रहस्य खोलने के लिये तारतम ज्ञान की चाबी भी तुम्हें दी है । तुम्हारे सिवाए उनके रहस्य अन्य कोई नहीं समझ सकता ।

करी हिदायत तुम को, हक सुभान जब ।
बका अरस अजीम को, द्वार खोले तुमें तब ।।२०।।

जब श्री राज जी महाराज ने तुम्हें अपनी पहचान करवाई (तारतम ज्ञान का उपदेश दिया), तो अखंड परमधाम के सब दरवाजे खुल गए ।

आया जबराईल जिमी पर, तुम वास्ते करी रोशन ।
दस्तपोसी तुमसों करी, क्यूं ना देखो दिल मोमिन ।।२१।।

जिब्रील (धणी का जोश) तुम्हारी खातिर ही इस संसार में आया है, और ब्रह्मज्ञान का प्रकाश फैलाया है । उसने आपकी दस्तबोसीय (अभिवादन–हाथों को चूमना) की है । उसका अपने दिल में क्यों विचार नहीं करते ।

असराफील उतरा, तुमारे वास्ते गाई फिरकान ।
उतरी किताबें आसमानी, क्युं ना करो तौरेत पेहेचान ।।२२।।

अश्राफील (जागृत बुद्धि) भी तुम्हारे लिये आया है और कुर्आन के रहस्य (तारतम वाणी के रूप में) स्पष्ट कर रहा है । परमधाम की दिव्य तारतम वाणी अवतरित हुयी है । तौरेत (कलश) आदि ग्रंथों की पहचान क्यों नहीं करते हो ?

क्या लिखा तिन किताब में, किन लिख भेजे कलाम ।
किन साहेदी उतारी तौरेत, कौन जाहिर करे इसलाम ।।२३।।

इस दिव्य तारतम वाणी में क्या लिखा है ? उन वचनों को किसने लिखकर भेजा है ? किसने साक्षी के रूप में तौरेत ग्रंथ भेजा है ? कौन शांति का सत्य मार्ग प्रकट कर रहा है ?

करी इमामे इमामत, इन जिमी नासूत ।
तीनों गिरो जाहेर करी, पोहोंचे मलकूती मलकूत ।।२४।।

इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) इस मृत्युलोक (नासूत) में आकर इमामत कर रहे हैं (परमधाम का ज्ञान देकर एक परब्रह्म के स्वरूप पर सिज्दा करवा रहे हैं) । उन्होंने तीनों प्रकार की सृष्टि की पहचान प्रकट कर दी है । वैकुण्ठ (मलकूत) से उत्पन्न होने वाली जीवसृष्टि वैकुण्ठ तक ही पहुंच पाती है ।

जबरूती फिरस्ते, पोहोंचे नूर मकान ।
तुम को अरस अजीम में, पोहोंचाए की करो पेहेचान ।।२५।।

अक्षरधाम से आयी ईश्वरी सृष्टि अक्षरधाम पहुँचेगी । आप ब्रह्मात्माओं को अर्श आज़म परमधाम पहुंचाना है, इसलिये अपने निजघर की पहचान कीजिये।

उतरे चौथे आसमान से, रूह अल्ला तुम वास्ते ।
दिन छे जाहिर किए, क्यूं ना देखो मोमिनों ए ।।२६।।

तुम्हारे लिये ही चौथे आसमान लाहूत (परमधाम–रंगमहल) से श्री श्यामा जी (ईसारूहूल्ला) संसार में अवतरित हुई हैं । उन्होंने कुर्आन में वर्णित छः दिन की हकीकत (वास्तविकता) बताई है । हे ब्रह्मात्माओ ! उसे क्यों नहीं देखते हो ?

एह बोध जो विश्व का, करत लड़ाई दोए ।
सो दज्जाल को मार के, एक दीन किया इत सोए ।।२७।।

सारे संसार में धार्मिक विरोध व्याप्त है। हिन्दू-मुसलमान आदि सभी धर्मावलम्बी आपस में झगड़ते रहते हैं। अब अज्ञान रूपी दज्जाल को मारकर सारी दुनिया को एक दीन (एक विश्व धर्म) कर दिया है ।

तुम को देखा चाहिए, वेद कतेब मिलाए किन ।
बका ठौर जाहिर करी, शक भान किन किए रोशन ।।२८।।

आपको विचार करना चाहिए कि वेद व कतेब ग्रंथों का एकीकरण करने वाला कौन है ? अखण्ड परमधाम के ज्ञान का प्रकाश करके सबका संशय खत्म करने वाला कौन है ?

कौन दावत करत है, हमको खेंचत तरफ हक ।
हमको अपनो वतन, कौन दिखाए करत माफक ।।२९।।

कौन हमें परमधाम के अखण्ड सुखों में बुला रहा है ? कौन हमें राजजी की तरफ खींच रहा (आकर्षित कर रहा) है ? हमें तारतम ज्ञान के द्वारा अपना निजघर दिखाकर कौन उसके अनुरूप कर रहा है ?

किन क्यामत जाहिर करी, किन मिलाए सात निशान ।
किन आजूज माजूज के माएने, खोल कराई पेहेचान ।।३०।।

कियामत की सातों निशानियां स्पष्ट करते हुए कियामत का समय कौन जाहिर कर रहा है ? याजूज-माजूज, जो कि दिन-रात के रूप में दुनिया के काल हैं, उनका स्पष्टीकरण करके कौन उनकी पहचान करा रहा है ?

किन दाभा दिखाई जाहिर, किन दिखाया सूर मगरब ।
जिनमें रोशनी है नहीं, हुआ अंधेरा तब ।।३१।।

किसने दाब्बतुलअर्ज नामक जानवर (मनुष्य में पाश्विक वृत्ति) का प्रकट होना दर्शाया है ? किसने पश्चिम में बिना रोशनी के सूर्य का उदय होना (सभी धर्मावलम्बियों के दिलों में अज्ञानता के सूर्य का उदय होना) दर्शाया है, जिससे संसार में (अज्ञानता रूपी) अंधेरा हो गया है ?

किन हकीकत मारफत के, इन जिमी खोले द्वार ।
तुम को तहां बोलावत, जो हैं नित बिहार ।।३२।।

किसने इस नश्वर जगत में हकीकत (सत्यज्ञान) और मारिफत (परमसत्य) के रहस्यों को प्रकट किया है ? और आपको परमधाम की अखण्ड नित्य लीला विहार में कौन बुला रहा है ?

तुम को दुनी छोड़ाए के, कौन खेंचत तरफ हक ।
अरस से उतार के, कौन प्याले पिलावे इश्क ।।३३।।

तुमको माया से छुड़ाकर (माया की नश्वरता व दुःखरूपता की पहचान कराके) कौन श्री राज जी की तरफ खींच (आकर्षित कर) रहा है ? कौन परमधाम से इश्क के प्याले (परमधाम की वाणी) इस नश्वर संसार में लाकर आपको पिला रहा है ?

करी आठों भिस्ते अखण्ड, तुम वास्ते गिरो मोमिन ।
इत किन खोले इन द्वार को, किन दिल को किए रोशन ।।३४।।

आप मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये ही आठों बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) में समस्त जीवों को अखण्ड किया गया है । इस माया जगत में अखण्ड परमधाम का ज्ञान प्रकट करके किसने आपके दिलों को (ब्रह्मज्ञान से) प्रकाशित किया है?

सेहेरग से नजीक, तुम को किन बताया हक ।
माएने मगज कुरान के, किन भानी सुभे शक ।।३५।।

श्री राज जी (मूल मिलावे में) तुम्हारी प्राणनली से भी अधिक नजदीक हैं, यह आपको किसने बताया है और कुर्आन के कथनों के वास्तविक आशय को स्पष्ट करके तुम्हारे संशय किसने मिटाए हैं ?

वेद कतेब के माएने, अव्वल से आज दिन ।
काहूं को ना खोलत, किन तुम को किए रोशन ।।३६।।

सृष्टि के प्रारम्भ से आज दिन तक वेद व कतेब ग्रंथों के गूढ़ार्थ किसी ने नहीं खोले । उनके रहस्य स्पष्ट करके तुम्हारे हृदय में किसने ब्रह्मज्ञान का प्रकाश किया है ?

जो नाहीं त्रिगुन को, ना खबर नूर मकान ।
सो किन बताया तुम को, किन जाहेर करी पेहेचान ।।३७।।

जिस परमधाम का ज्ञान त्रिगुण प्रधान देवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को नहीं है और जिस रंगमहल के अंदर की लीला अक्षर ब्रह्म को भी ज्ञात नहीं है, वह ज्ञान आपको किसने बताया है ? किसने रंगमहल की पहचान दुनिया में जाहिर की है ?

कौन खड़ा तुमारे सिर पर, है कौन तुमारा निगेवान ।
तुम ऊपर छांहा नूर की, कौन कर देत पेहेचान ।।३८।।

तुम्हारे सिर पर एक पैर से खड़े होकर पल पल कौन तुम्हारी देख-रेख (हिफ़ाजत) करता है ? तुम्हारे ऊपर श्री राज जी की नूरी छाया (मेहर की छांव) है, यह पहचान तुम्हें कौन देता है ?

कौन तुम को इन अंधेर से, दई रोशनी बका नूर ।
किन ढूंढा भवसागर में, किन दिया बका जहूर ।।३९।।

इस अज्ञानता से परिपूर्ण जगत में अखंड परमधाम का दिव्य तारतम ज्ञान तुम्हें किसने प्रदान किया हैं ? किसने इस भवसागर में से तुम्हें ढूंढकर परमधाम के अखण्ड सुख प्रदान किया है ?

कौन ल्याया तारतम को, किन दई जाग्रत बुद्ध ।
किन किराए अरस गलियों, तुम क्यों न करो ताकी सुध ।।४०।।

तारतम ज्ञान कौन लेकर आया है और किसने तुम्हे जागृत बुद्धि प्रदान की है ? परमधाम के २५ पक्षों की गलियों में तुम्हें कौन रमण करा रहा है ? तुम उनकी पहचान क्यों नहीं करते हो ?

किनने धाम देखाइया, भांन माया मोह अंधेर ।
तुम को सीधे करके, चित्त धाम तरफ दिया फेर ।।४१।।

किसने माया के मोह व अज्ञान के अंधकार को दूर करके तुम्हें परमधाम का दर्शन कराया है? किसने तुम्हारे हृदय को निर्मल-निर्विकार करके तुम्हारे चित्त को परमधाम २५ पक्ष की शोभा में लगा (एकाग्र कर) दिया है ?

किन गुन पख अंग इंद्रियां, गलाए दिया अहंकार ।
क्यूं सूर कौन बजावत, तुमारा कौन परवरदिगार ।।४२।।

तुम्हारे मायावी गुण(सत् रज् तम्), पक्ष(पुष्ट, प्रवाह, मर्यादा), अंग(अंतःकरण), इन्द्रियों (नेत्र, कान, नासिका, जिह्वा व त्वचा) एवं अहंकार को तारतम ज्ञान के द्वारा किसने (मूल स्वरूप में) लीन कर दिया है ? अखंड ब्रह्मवाणी रूपी सुर (स्वर) कौन और क्यूं बजा रहा है ? तुम्हारा प्रियतम स्वामी कौन है ?

द्वा तुमारी जेती करो, सो सब करत कबूल ।
तुम को अपने कलाम में, लिखे करम कबूल ।।४३।।

आप जितनी भी प्रार्थना करते हो, प्रियतम श्री राज जी उन सबको स्वीकार (पूर्ण) करते हैं तथा अपने वचनों (कुर्आने पाक) में लिखा है कि आपके सम्पूर्ण कर्म मुझे स्वीकार हैं ।

चाहिए याद करना तिन का, जो है तुमारा बिलास ।
तुम को अरस अजीम बिन, और ना रहे कोई आश ।।४४।।

तुम्हें अपने निजघर के अखण्ड सुखों व हांस-विलास की लीलाओं को याद करना चाहिये । तुम्हारे हृदय में परमधाम के अखण्ड सुखों के अतिरिक्त

अन्य कोई आशा-चाहना नहीं होनी चाहिए ।

अब देखो भोम आठमी, ठौर जवेर चेतन एक रस ।
केहेनी सब ओरे रहे, अधिक से अधिक सरस ।।४५।।

अब रंग महल की आठवी भूमिका की शोभा देखिये, जो चेतन, एक रस व नूरमयी जवाहरातों की शोभा से युक्त अत्यधिक सुंदर स्थान है । शब्दातीत परमधाम के सुखों की मधुरता इतनी अधिक है, कि संसार के सारे शब्द व वर्णन तो संसार में ही रह जाते हैं ।

अब कहूं भोम आठमी, गृद मंदिर बारे हजार ।
जित हक हादी रूहें, हिंडोले करत बिहार ।।४६।।

अब आठमी भूमिका का वर्णन करूंगा, जहाँ पर चारों तरफ किनार पर घेरकर (दो हारो में) १२,००० मंदिर आये हैं, जिनके मध्य आये दहलान (स्तम्भों की दो हारों) में १८००० हिण्डोले आये हैं, जिन में बैठकर श्री राज श्यामा जी व सखियां आनंद में लीला विहार करती हैं ।

गृद दोए हार मंदिरन की, जाके साम सामी हैं द्वार ।
ता बीच दो हार थम्भन की, तीनों गली हिंडोलों हार ।।४७।।

चारों तरफ घेरकर मंदिरों की दो हारें (पंक्तियां) हैं, जिनके दरवाजे आमने-सामने शोभायमान हैं । उनके बीच में स्तम्भों की दो पंक्तियां व तीन गलियां आयी हैं, जिनमें हिण्डोलों की तीन हारें शोभा ले रही हैं ।

इन थम्भ दरम्यान हिंडोले, गिनती छे छे हजार ।
ए मंदिरों आगे थम्भन के, दरम्यान छे हजार हार ।।४८।।

इन स्तम्भों की दोनों हारों में प्रत्येक दो स्तम्भों के मध्य-मंदिरों के सामने महराब में हिण्डोलें आये हैं, इस प्रकार दोनों हारों में छे-छे हजार हिण्डोले आये हैं । इनके अतिरिक्त दोनों हारों के स्तम्भों के मध्य जो मेहराब बनी है, उसमें भी छे हजार हिण्डोले आये हैं ।

जमा कहूं सबन की, गिनती अठारे हजार ।
हक हादी रूहें हींचत, याकी लेहेरां अति सुखकार ।।४९।।

उन सबको मिलाकर कुल १८,००० हिण्डोले होते हैं । इनमें श्री राज श्यामा जी व सखियाँ आनंदपूर्वक झूलते हैं , हिण्डोले लहराते हुए अत्यंत सुंदर दिखते हैं।

जड़ित कड़े कंचन के, लाल मानिक डांड़े जड़ाव ।
कहूं रंग पाच कहूं हीरा, सो कह्यो न जाए एह भाव ।।५०।।

हिंडोलों के कड़े रत्नों से जड़े हुए कंचन के हैं तथा डांडे लाल माणिक के जड़ाव से युक्त हैं । जंजीरों की कड़ियों में कहीं पाच (हरा) व कहीं हीरे का रंग शोभायमान है । उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

साज इन हिंडोलन का, बिछौने तकिए नूर नरम ।
साम सामे सब बैठत, ए सुख कह्यो न जाए मरम ।।५१।।

ये हिंडोले अत्यंत कोमल व नूरमयी बिछौने और तकिये से सुसज्जित हैं । हिंडोलोह में जब श्री राज श्यामा जी व सखियाँ आमने-सामने बैठती हैं, तब उस सुख की गहरायी (अनंतता) का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

हार तीन हिंडोलन के, ए बैठत जुगल किशोर ।
रूहें दोए दोए एक एक में, सुख पावे नजरों और ।।५२।।

हिंडोलों की कुल तीन हारें (पंक्तियां) हैं, यहां युगल किशोर श्री राज श्यामा जी एक हिण्डोले में साथ विराजमान होते हैं तथा दो-दो सखियाँ एक-एक हिण्डोले में विराजमान होती हैं । इस समय झूलने के साथ साथ सुंदर दृश्य का भी आनंद होता है।

हिंडोले हींचत अंग में, होत सुख अपार ।
आवत जात लेहेरा उठे, ए सुख मोमिन जाननहार ।।५३।।

हिण्डोलों में झूलते समय तन–मन में अपार सुख होता है । हिण्डोलों के आने-जाने से लहर जैसी शोभा दिखती है । इस सुख को केवल मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही जानते हैं ।

कहूं बैठ हिंडोले हींचत, छूट जात फेर दूर ।
साम सामी ताली देत हैं, क्यूं कहूं बिलास जहूर ।।५४।।

कभी जब बैठकर हिंडोले झूलते हैं, तो जंजीरे खुलकर हिंडोले बहुत दूर चले जाते हैं । तब सामने से अन्य हिण्डोले में आती हुई सखी के साथ ताली बजाते हैं। इस प्रकार यहां पर होने वाले हांस-विलास के सुखों का किस प्रकार वर्णन करूं?

ए सुख सनमुख हक के, लेवे रूहें बारे हजार ।
ए अंग इशक अरस के, सुख जानत परवरदिगार ।।५५।।

इस प्रकार श्री राज जी के सम्मुख हिण्डोलों में बैठकर बारह हजार सखियाँ आनंद प्राप्त करती हैं । ये परमधाम के नूरी तन सब इश्क से परिपूर्ण हैं जिनके सुखों को प्रियतम अक्षरातीत ही बेहतर जानते हैं ।

वय किशोर अति सुन्दर, मुख लालक लिए गौर ।
गेहेरी छब अति नूर की, रहे मोमिन दिल सहूर ।।५६।।

सखियों का स्वरूप किशोर अवस्था का अति सुंदर है, मुखारविंद लालिमा से युक्त गौर वर्ण का है । नूरमयी व गहन प्रेम के भावों से युक्त छबि है । इसका चिंतन ब्रह्मात्माओं के दिलों में रहता है ।

उतर हिंडोले जब चले, पाउं भूखन करत ठमकार ।
अंग उमंग बिहार रस, कह्यो न जाए एह बिहार ।।५७।।

जब सखियां हिंडोलों से उतरकर चलती हैं, तो चरणों के आभूषणों से मधुर ध्वनि गूंजायमान होती है । उनके अंग अंग में प्रियतम के साथ झूला झूलने का उत्साह-उमंग भरा होता है । इस लीला विहार का आनंद अवर्णनीय है।

कहूं साड़ी अति सुन्दर, अंग गौर पर भूखन ।
सब ठौरो किरना उठे, क्यों कहूं नूर रोशन ।।५८।।

उन सखियों की साड़ियां अत्यंत सुंदर हैं । गौर अंगों पर आभूषण जगमगा रहे हैं । चारों तरफ उनकी नूरमयी रंगबिरंगी किरणें निकल रही हैं । उस दिव्य प्रकाश का वर्णन किस प्रकार करूं ?

जब आवत चौक मंदिर में, नूर थम्भ दिवालों जोर ।
साम सामी किरना लरे, करें बिहार जुगल किशोर ।।५९।।

जब श्री राज श्यामा जी व सखियाँ चौरस हवेली के चौक में, मंदिरों में आते हैं, तो स्तम्भों व दीवालों से तेजोमयी दिव्य किरणें निकलती दिखायी देती हैं । उनकी रंगबिरंगी किरणें आपस में टकराती हुई जंग करती प्रतीत होती हैं । ऐसे दिव्य किरणों के मध्य युगल किशोर श्री राज श्यामा जी लीला विहार करते हैं ।

कहूं सेज पर बैठत, तहां बातें करें सनमुख ।
क्यूं कहूं इन जुबांन सों, इन सेज्या पर जो सुख ॥६०॥

कहीं जब शैय्या पर विराजमान होते हैं, तो प्रियतम के सम्मुख बैठकर प्रेमपूर्वक बातें करते हैं । शैय्या पर प्राप्त होने वाले इन सुखों के विषय में इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करूं ?

नैनों नैन मिलावहीं, अंगों अंग होए एक ।
ऐ केहनी में न आवत, उपजत सुख अनेक ॥६१॥

वे नैनों से नैन मिला कर प्रेम के सागर में डूब जाते हैं । अंग से अंग मिलाकर एक स्वरूप हो जाते हैं, उस समय अनंत सुख उत्पन्न होते हैं । उसे वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

कहूं बैठे सिंघासन, जुगल किशोर एक ठौर ।
सनमुख रूहें बातें करे, दिखावत अपना जोर ॥६२॥

कभी सिंहासन पर जब युगल स्वरूप एक साथ विराजमान होते हैं तो उनके समक्ष सखियाँ अनेक प्रकार से प्रेम भरी बातें करते हुए अपने प्रेम का जोर दिखाती हैं ।

जब उठे इन ठौर से, निकसत पौरी द्वार ।
फिरती गलियां देखिए, संग रूहें बारे हजार ॥६३॥

जब यहाँ (चौरस हवेली) से उठकर महराबी द्वार (मुख्य द्वार) से बाहर आते हैं, तो नूरमयी गलियों (हवेलियों के मध्य आयी स्तम्भों की दो हार व तीन गलियों) में श्री राज श्यामा जी बारह हजार सखियों के साथ हांस–विलास तथा प्रेम भरी बातें करते हुए रमण (भ्रमण) करते हैं। उसकी शोभा को देखिये ।

कोई हाथ थम्भन को, लगाए के फेरे जब ।
फेर चढ़त सुख पावहीं, एक गिरती पकड़े तब ॥६४॥

कोई सखी नूरमयी रत्नजड़ित कोमल स्तम्भों पर अपने हाथों को फिराती (स्पर्श करती) है । फिर सीढ़ियां चढ़ते समय अपार सुख प्राप्त करती है। फिर एक गिरती हुई सखी को राजजी पकड़ते हैं, तो अपार आनंद का अनुभव होता है।

कोई दिवालों चित्रामन, चाल निरखत दोनों नैन ।
कोई हक सों हंसत हैं, कोई बातें करे मुख बैन ।।६५।।

कोई सखी अपने दोनों नेत्रों से मंदिरों की दीवारों में बने पशु-पक्षी के चित्रों की चाल को देखती है । कोई सखी श्री राज जी से हंसते हुए प्रेमपूर्वक बातें करती है ।

कोई चले लटकनी, चलत दिखावत जब ।
हक हादी रूहें तिन पर, रीझ बतावत तब ।।६६।।

जब कोई सखी लटकनी चाल चलकर दिखाती है, तब श्री राज श्यामा जी व अन्य सखियां अति प्रसन्न होकर उसकी सराहना करते हैं ।

कोई मंदिरों मंदिर में, पैठ निकसत और द्वार ।
केतिक तिन पीछे चले, कई ठौर करत बिहार ।।६७।।

कोई सखी मंदिरों ही मंदिरों में होते हुए एक दरवाजे से प्रवेश करके (कई मंदिरों व दरवाजों से होते हुए) किसी दूसरे मंदिर के दूसरे दरवाजे से बाहर निकलती है, तब कितनी ही सखियाँ उसके पीछे चलने लगती हैं । इस प्रकार कई स्थानों में घूमते हुए कई प्रकार से लीला विहार करती हैं ।

कोई बांहें कंठ लगाए के, एक दूजी संग चलत ।
कोई दोए सामी मिले, मिल बातें चारों करत ।।६८।।

कुछ सखियां एक दूसरे के गले में बांहें डाले साथ में घूमती हैं । कभी सामने से आती हुई अन्य कोई दो सखियां मिल जाती हैं, तब चारों मिलकर हांस-विनोद करने लगते हैं ।

कोई दौड़त गलियन में, आगे सों चली जाए ।
कोई तिन के पीछल, उतावली चली जाए ।।६९।।

कोई सखी गलियों में दौड़ती हुई बहुत आगे तक चली जाती है, तो कोई सखी उसके पीछे-पीछे बड़ी तेजी से चलने लगती है ।

कोई आगे पीछे हक के, चली जात कतार ।
इनों के अंग का उमंग, सो जानत परवरदिगार ।।७०।।

कुछ सखियां श्री राज जी के आगे-पीछे कतार में चलते जाती हैं । इनके अंग का उमंग-उत्साह श्री राज जी ही जानते हैं ।

कई बिलास इन ठौर है, लेत हक हादी रूहें संग ।
झलकत बस्तर भूखन, कई लेहेरां उठत तरंग ।।७१।।

आठवी भोम में अनेक प्रकार के सुख हैं, जिन्हें सखियां श्री राजश्यामा जी के साथ प्राप्त करती हैं । उनके वस्त्रों एवं आभूषणों से रंगबिरंगी नूरमयी किरणें लहराती व तरंगित होती हुई दिखाई देती हैं ।

जब उतरत इन दादरे, नव भोम करत झनकार ।
पडछन्दे पुतलिया बोलत, ए क्यों कहूं नित बिहार ।।७२।।

जब श्री राज श्यामा जी व सखियां सीढ़ियों से नीचे उतरते हैं, तो नौ भोमों में झनकार होती है । उनकी प्रतिध्वनि सुनकर जवाहरातों की पुतलियाँ भी बोलने लगती हैं । इस अखंड लीला विहार का वर्णन कैसे करें ?

महामत कहे ए मोमिनों, कह्या घर तुमारा सुख ।
तुम बैठे बीच अरस के, अब क्यों ना हो सनमुख ।।७३।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुन्दर साथ जी ! आप के अखण्ड निजघर के सुखों का वर्णन किया है । आप वहीं मूल मिलावे में धणी जी के चरणों में विराजमान हो । अब प्रियतम श्री राजजी की तरफ अपनी सूरता को क्यूं नहीं लगाते हो?

प्रकरण २५, चौपाई १३७७

भोम नवमी लिखी है

प्रसंग - श्री महामति जी सुन्दर साथ के वास्ते श्री रंगमहल की नवमी भोम का वर्णन कर रहे हैं । नवमी भोम में आए स्तम्भ, महराब और दीवालों में सर्वत्र धाम धणी श्री राज जी का नूर झलक रहा है ।

कहूं भोम नवमी की, थंभ दिवाल मेहेराब नूर ।
जोत जवेर झलकत, सो कह्यो न जाए जहूर ।।१।।

अब नौवी भोम के नूरमयी स्तम्भों, महरावों और दीवारों का वर्णन करूंगा । जिनमें अनेक प्रकार के जवाहरात झलकार कर रहे हैं, जो अवर्णनीय शोभा से युक्त हैं ।

गिनती में आवे नहीं, क्यूं कर कहूं हिसाब ।
दिल में क्यों कर आवहीं, कोई पावे नहीं सबाब ।।२।।

यहां के मंदिर, हवेलियां, स्तम्भ आदि बेहिसाब हैं । उनकी गिनती करना सम्भव नहीं है । किंतु उसका वर्णन किये बिना यह शोभा दिल में किस प्रकार आयेगी ? ऐसी स्थिति में कोई भी आत्मिक लाभ नहीं प्राप्त कर पायेगा ।

ए ठौर वाहेदत की, जिनको नाहीं पार ।
सब जोगवाई रूहमय, सरूप इशक करे वेहेवार ।।३।।

यह परमधाम की स्वलीला अद्वैत (वहदत) भूमिका है, जिसका कोई पारावर नहीं है । यहाँ की सम्पूर्ण वस्तुएँ आत्मस्वरूप हैं, जिनके अंदर इश्क का स्वरूप ही लीला करता है ।

सब सरूप इशक के, इशकै में गुजरान ।
आहार बिहार इशक को, सब में इशक रस पेहेचान ।।४।।

परमधाम में सभी स्वरूप (लीलारूप सामग्री) इश्क के ही हैं, इश्क में ही इनका समय बीतता है । आहार-विहार भी सबका इश्क का ही है । सबके अंदर इश्क का रस व धणी की पूर्ण पहचान है ।

ए लीला रस इशकै, सो इशक पात्र सुने कान ।
इशकै दिल में आवें, इशक सरूप करे पेहेचान ।।५।।

यह लीला इश्क रस से परिपूर्ण होती है । इसका श्रवण भी वही सुन पाते हैं, जो इश्क के पात्र होते हैं । इश्क आने पर ही वह लीला दिल में आती है, और जो इश्क के स्वरूप ब्रह्मात्माएं हैं, वे ही इसकी पहचान कर पाते हैं ।

इशक न चौदे तबकों, हुता न एते दिन ।
जब रूहें उतरीं अरस से, सो दिल कह्या मोमिन ।।६।।

आज दिन तक १४ लोकों के संसार में इश्क था ही नहीं । सब सखियाँ (ब्रह्मात्माएं) परमधाम से संसार में अवतरित हुई हैं, इस कारण उनके दिल को अर्श (परमात्मा का धाम) कहा है ।

जिन मोमिन के वास्ते, किए पैदा चौदे तबक ।
रबद किया रूहों हक सों, वास्ते जाहिर करने इशक ।।७।।

जिन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के कारण इन १४ लोकों की उत्पत्ति हुई है

। उन रूहों ने हक माशूक (प्रियतम परब्रह्म) से प्रेम-वार्तालाप किया है, और वही इस संसार में इश्क के आने का कारण बना ।

इशक से पैदा हुई, दुनियां सकल जहान ।
खेलाए इनों को इशक ने, अब इशकै करत पेहेचान ।।८।।

परब्रह्म के हृदय में स्थित इश्क के सागर से ही सारे संसार की उत्पत्ति हुई है । इश्क से ही सारे संसार की लीला चल रही है, और अब इश्क ही आत्माओं में उनको सारी पहचान करा रहा है ।

दिखाए तीनों तकरार, काहू हुई नहीं पेहेचान ।
आगूं से खबर दई, वास्ते ल्यावने ईमान ।।९।।

इश्क की पहचान के लिये प्रियतम अक्षरातीत ने ब्रह्मात्माओं को तीन ब्रह्मांड (ब्रज, रास, जागनी) दिखाए, किंतु उन्हें कोई पहचान नहीं सका । ब्रह्मात्माओं के जगत में आने से पहले ही सारे संसार को धर्मग्रंथों के माध्यम से सूचना दी गई थी, ताकि वे ब्रह्मात्माओं की पहचान कर विश्वास ला सकें ।

ए तो इशक हक का, संग महंमद अलेह सलाम ।
तिनको कहा माशूक, कह्या आशक अपना नाम ।।१०।।

मुहम्मद अलैहिस्सलाम के साथ हक तआला (प्रियतम परब्रह्म) का वही इश्क था, इसी कारण हक तआला ने उन्हें माशूक कहा और स्वयं का नाम आशिक कहा ।

अपने बोल का आशक, है जो हक सुभान ।
मोमिनों को जगावत, कर अपनी पेहेचान ।।११।।

हक सुब्हान श्री राज जी, जो अपने वचनों के आशिक हैं, वे मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को अपनी पहचान कराके जगा रहे हैं ।

दई साहेदी आप इशक से, इशक पड़ी पुकार ।
इशकै निमूने किए, जिन्हों चीन्हों परवरदिगार ।।१२।।

धाम धणी ने इश्क के कारण ही धर्मग्रंथों में अपनी साक्षी दी तथा अपने इश्क के कारण ही दुनियाँ में ब्रह्मवाणी की पुकार की । इश्क ने ही संसार रूपी उदाहरण प्रस्तुत किया, जिनसे परवरदिगार (प्रियतम परब्रह्म) की पहचान हुई ।

अब इशकै जगावत, दिखावत हकीकत हक ।
पल पल पट उड़ावत, भांनी सुभे शक ।।१३।।

अब वह इश्क ही ब्रह्मात्माओं को जगा रहा है, उन्हें प्रियतम परब्रह्म की हकीकत (सत्य) दिखा रहा है । तारतम ज्ञान के द्वारा पल पल अज्ञानता का पर्दा उड़ा रहा है और सारे संशय खत्म कर दिये हैं ।

इशकै लिखी इसारतें, बीच अल्ला कलाम ।
इशकै कुंजी ल्याइया, किया जाहिर दीन इसलाम ।।१४।।

इश्क ने ही कलाम अल्लाह (कुर्आन) में मोमिनों के वास्ते सांकेतिक कथन लिखे । इश्क ही तारतम ज्ञान रूपी चाबी लेकर आया और सत्य-शांति के मार्ग को जाहिर किया ।

एक ईमान और इशक, सो रहे बका कई ठौर ।
तहां से आए मोमिन, इत क्यूं पावे कोई और ।।१५।।

एक ईमान और दूसरा इश्क, ये दोनों अखंड परमधाम में ही विद्यमान हैं । उसी परमधाम से मोमिन (ब्रह्मात्माएं) यहाँ नश्वर जगत् में आये हैं । अतः इश्क और ईमान को, उनके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं पा सकता ।

इशक सूरत हक की, हादी हक का तन ।
रूहें हादी तन एक हैं, ताकी दई साहेदी मोमिन ।।१६।।

प्रियतम परब्रह्म का स्वरूप इश्क का है । श्री श्यामा जी, श्री राज जी के तन (अंगरूपा) हैं और सब सखियाँ श्री श्यामा जी के तन (अंगरूपा) हैं । जिसकी साक्षी मोमिन देते हैं ।

ए तीनों एक कहे, तीन धरे हैं नाम ।
जब देखो वाहिदत को, तब पोहोंचे इसलाम ।।१७।।

श्री राज जी, श्री श्यामा जी व सखियाँ तीनों एक ही हैं, किन्तु लीला रूप में उन्होंने अलग-अलग रूप व नाम धारण किये हैं । जब वहदत (स्वलीला अद्वैत स्वरूप) की पहचान होगी, तब सत्य शांति के मार्ग की प्राप्ति हो पायेगी ।

इसलाम कहिए तिन को, जो है कायम घर ।
सो तो सूरत इशक की, हुआ जाहिर आशकों की खातर ।।१८।।

इस्लाम उसे कहा जाता है, जो शाश्वत शांति का धाम अखंड

परमधाम (अर्शे अज़ीम) है । परमधाम इश्क का ही स्वरूप है, जो आशिक रूहों (ब्रह्मात्माओं) के लिये दुनिया में जाहिर हुआ है ।

आसक रूहें हैं मोमिन, उतरे अरस से जब ।
हक सुभान इनों वास्ते, रसूल को भेजे तब ॥१९॥

वे मोमिन ही परब्रह्म की आशिक रूहें (ब्रह्मात्माएं) हैं । वे परमधाम से जब इस संसार में आये, तब हक सुब्हान तआला ने उनके लिये रसूल (संदेश वाहक) भेजा ।

तिनों दावत करी जाहिर, इत ल्याइयां रूहें ईमान ।
ए बका द्वार तिनों खुले, हुई हक पेहेचान ॥२०॥

उन्होंने दुनिया में सत्य धर्म का आमंत्रण जाहिर किया । ब्रह्मसृष्टियां उन पर विश्वास लायीं, जिससे उनके लिये ही अखण्ड परमधाम के सुखों के द्वार खुल गये, और उन्हें प्रियतम परब्रह्म की पहचान हुयी ।

हुई सिफाएत जिन की, तिनों को हक का हुआ दीदार ।
तो पोहोंचाइयां वतन में, सो पोहोंची परवरदिगार ॥२१॥

मुहम्मद हकी सूरत (महामति जी) की सिफायत (अनुशंसा) जिन पर हुई, (अर्थात् जिन्हें तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ), उन्हें प्रियतम परब्रह्म का दर्शन हुआ । अतः वह आत्मा निजघर परमधाम में पहुंच कर अपने प्रियतम अक्षरातीत से मिली ।

और फिरस्ते जबरूत से, उतरे तिन के संग ।
सो पोहोंचे नूर मकान में, नूर जलाल के थे अंग ॥२२॥

और उन ब्रह्मात्माओं के साथ अक्षरधाम से ईश्वरी सृष्टियां (फरिश्ते) भी खेल में आई हैं । वे भी अक्षरधाम में पहुंचेंगी, क्योंकि वे अक्षर ब्रह्म की अंगरूपा (सुरता स्वरूप) हैं ।

द्वार आठो भिस्त के, दिए आम को खोल ।
किया था हक सुभान ने, सो पाला अपना कौल ॥२३॥

जीव सृष्टि (आम खलक) के लिये ८ बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) के दरवाजे खोल दिये । हक सुब्हान श्री राज जी ने धर्मग्रंथों एवं तारतम वाणी में जो वायदा किया था, उसे पूरा किया ।

शालिवाहन शाकात् तू गत षोडशकं शतम् ।
जीवोद्धाराय ब्रह्माण्डे कल्कि प्रादुर्भविष्यति ।।

भविष्य दीपिका

जो कहा था आवसी, बखत रोज क्यामत ।
सो मोमिन कायम करी, हक के हजूर साएत ।।२४।।

कुर्आन पाक में जो कहा गया है, कि कियामत के दिन इमाम महदी साहिबुज्जमां एवं मुहम्मद के भाई मोमिन आयेंगे । अब उन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) ने आकर परमधाम की उस घड़ी (जागनी के ब्रह्माण्ड) को अखण्ड कर दिया है, जिस घड़ी में हम मूल मिलावे में विराजमान हैं ।

कह्या असराफील आवसी, सो आया अपनी शरत ।
सो करी लड़ाई मोमिनो से, सो दे सब में पेहेचान ।।२५।।

कुर्आन पाक में अश्राफील फरिश्ते (जागृत बुद्धि) के आने की जो भविष्यवाणी लिखी है, उसके अनुसार अपने समय पर वह भी आ गया है । ब्रह्मात्माओं के साथ अज्ञान रूपी दज्जाल (अंदर के विकार एवं सांसारिक परिस्थितियां) युद्ध कर रहा है, उन मोमिन रूहों को अश्राफील सत्य की पहचान करा रहा है ।

होवे दाभा जाहिर, उगे सूर मगरब ।
ईमान होवे परेशान, होए बखत क्यामत का तब ।।२६।।

कुर्आन पाक में लिखा है, कि जब दाब्बतुलअर्ज जानवर (हैवानी फितरत-पाश्विक वृत्ति) धरती में प्रकट होगा, जब पश्चिम में (दुनियावालों के दिलों में) बिना रोशनी का सूर्य उदय होगा और ईमान (परमात्मा पर विश्वास) दुर्लभ हो जायेगा, तब कियामत का समय आ जायेगा ।

सो शरतें सब आए मिलीं, करी रसूल दावत जब ।
सब हुए तासो मुनकर, एक मोमिन खड़े रहे तब ।।२७।।

वह समय व सारी निशानियां अब यहां आकर एक साथ प्रकट हो गयी हैं। जब रसूल साहब ने हकी सूरत के रूप में शाश्वत सुख व शांति के लिये सारी दुनिया को आमंत्रित किया है, इस समय एक मात्र मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही विश्वास पर खड़े रहे, बाकि सब मुनकर (अविश्वासी) हो गये ।

हजरत ईसा उतरे, और मेहेदी इमाम ।
सो मिले गिरो मोमिन को, लिए बीच दीन इसलाम ।।२८।।

हजरत ईसा रूहूल्ला जगत में आ चूके हैं और इमाम महदी साहिबुज्जमां भी प्रकट हो चूके हैं । मोमिन (ब्रह्मात्माएं) भी जागृत होकर सत्य शांति के मार्ग (निजानंद) में आकर उनसे मिल चूके हैं ।

कह्या खुलेगी फिरकान, माएने जाहिर होवे जब ।
तब दोर बदलेगा, होए जाहिर मैदान क्यामत तब ।।२९।।

मुहम्मद साहब ने कहा था, कि जब कुर्आने पाक के गुह्य रहस्य जाहिर होंगे, उसके गूढ़ार्थ प्रकट होंगे, तब जमाना (युग) बदलेगा और कियामत का मैदान (निशानियां, परिस्थितियां) जाहिर हो जायेगा ।

सो शरतें सब पूरी भई, खुले मायने फिरकान ।
हुआ जाहिर मैदान कयामत, हुई खबर सब जहान ।।३०।।

वे सारी भविष्यवाणियाँ पूरी हूई और कुर्आन के गूढ़ार्थ भी प्रकट हो गये हैं । सारे संसार में कियामत का दौर (अंतिम युग) जाहिर हो गया है ।

आजूज माजूज आवेंगें, करी फौजे तीन तीन ।
सो लागे खाने सबन को, पोहोंचे मोमिनो बका रोशन ।।३१।।

कुर्आन में लिखा है, कि कियामत के समय याजूज-माजूज, जिन्हें सिकन्दर ने अष्ट धात की दीवार बनाकर गुफा में बंद कर दिया था, वे दीवार तोड़कर बाहर आ जायेंगे । उनकी तीन फौजें (तुलः, ताबः, शबः अर्थात् सुबह, दोपहर, शाम) होंगी । वे याजूज माजूज (दिन-रात के रूप में दुनिया के काल) सारी दुनिया को खा रहे हैं (सैंकड़ों-हजारों की संख्या में लोग मर रहे हैं) । एक मात्र मोमिन ही उनसे बचकर अखण्ड परमधाम के सुखों में पहुंच गये हैं।

कहा रसूल अल्ला ने, भाई आवे मेरे जब ।
जो इलम खुदा दिया मुझको, इमाम भाईयों को देवे तब ।।३२।।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद साहब ने कहा था, कि जब मेरे भाई मोमिन आयेंगे, तब जो ज्ञान खुदा ने मुझे दिया है, वह ज्ञान इमाम महदी, मेरे मोमिन भाईयों को देंगे ।

सो भाई मेरे मोमिन, रहे साथ इमाम ।
ए किया सब तिन वास्ते, एही पोहोंचे दीन इसलाम ।।३३।।

मेरे भाई मोमिन इमाम महदी साहिबुज्जमां के साथ होंगे । यह सब उन ब्रह्मात्माओं के लिये ही किया गया है । मोमिन ही दीने इस्लाम के वास्तविक स्वरूप (ज्ञान, रहनी, ध्यान) को प्राप्त करेंगे ।

सो आए मिले इत मोमिन, रहे इमाम के साथ ।
हक सुभान तिनके, महंमद कर पकड़े हाथ ।।३४।।

वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) जागृत होकर इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्धनिष्कलंक स्वरूप) के चरणों में आ चूके हैं और उनकी सानिध्यता में ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं । हक सुब्हान श्री राज जी ने मुहम्मद हकी सूरत के रूप में उनका हाथ थामा है ।

होए खिलवत खाना जाहिर, वास्ते इन मोमिन ।
ढील हुई फजर में, लिखी मोमिनों पर रोशन ।।३५।।

मुहम्मद साहब ने कहा था, कि आखिरत के समय ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के कारण हक तआला ही गुह्य खिल्वत (रंगमहल के अंदर की बातें, स्वरूप, लीला) दुनिया में जाहिर होगी । वह सारा ज्ञान अवतरित होने में थोड़ी देरी हो गयी (गुह्य खिल्वत के ज्ञान के चारों ग्रंथ खिलवत, परिक्रमा, सागर व सिनगार देर से पन्ना जी में उतरे) । वह गुह्य ज्ञान ब्रह्मात्माओं के लिये ही दुनिया में अवतरित हुआ है ।

इनों इत जाहिर किया, हक की गुझ खिलवत ।
ए जो किन कानों न सुनिया, सो मोमिन दिखावे इत ।।३६।।

उन ब्रह्मात्माओं ने इस संसार में प्रियतम परब्रह्म की गुह्य खिल्वत जाहिर की है । रंगमहल के अंदर की गुह्य बातें, जो आज दिन तक किसी ने नहीं सुनी, उसकी ब्रह्मात्माएं यहां पहचान करा रही हैं ।

द्वार अरस अजीम के, इनों को खोले हक सुभान ।
तो बका ठौर की, कर दई सब पेहेचान ।।३७।।

इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये हक सुब्हान (प्रियतम परब्रह्म) ने परमधाम (अर्शे अज़ीम) के अखण्ड सुखों के दरवाजे खोल दिये हैं तथा उन्हें अखंड परमधाम की सारी पहचान करवा दी है ।

अब तुम सुनों मोमिनों, कहूं वाहेदत की ठौर ।
तुमहीं पोहोंचे अरस को, इत और ना समझे और ।।३८।।

हे ब्रह्मात्माओं ! अब तुम ध्यानपूर्वक सुनो, अखंड परमधाम की स्वलीला अद्वैत (वहदत) भूमिका का वर्णन करने जा रहा हूं । उस परमधाम में आप ही पहुंच सके हो, अन्य कोई भी उसे नहीं समझ पाता है ।

ए तो शब्दातीत की, केहेना सबद में सुकन ।
इत है काम ईमान का, सो तो रहे बीच मोमिन ।।३९।।

यह तो शब्दातीत परमधाम है, जिसका वर्णन शब्दों में करना है । अतः यहाँ ईमान (दृढ विश्वास) की जरूरत है, जो केवल ब्रह्मात्माओं में ही होता है ।

कहूं भोम नवमी की, मंदिर बारे हजार ।
साम सामी दोए हार बनी, करे जुगल सरूप बिहार ।।४०।।

रंगमहल की नवमी भूमिका का वर्णन कर रहा हूं, जिसमें बाहरी किनार पर (दो हारों में) १२००० मंदिर शोभा ले रहे हैं । आमने-सामने ६-६ हजार मंदिरों की दो हारें (पंक्तियां) आयी हैं, जिनमें युगल स्वरूप विहार करते हैं ।

ए दोए हार कही गृद की, जो फिरती आई सब ठौर ।
जित जुगल सरूप बिहरत, शोभा शब्दातीत है जोर ।।४१।।

चारों तरफ घेरकर यह जो मंदिरों की दो हारें आयी हैं, वहाँ युगल स्वरूप विहार करते हैं । वहाँ की शोभा शब्दों से परे है ।

छे हजार छज्जे बने, जो फिरते आए गृदवाए ।
ताकी शोभा इन मुख, क्यूं कर कही जाए ।।४२।।

नौवी भोम में बाहरी पहली हार के ६००० मंदिरों की जगह में चारों तरफ ६००० छज्जे शोभायमान हैं । उनकी शोभा का वर्णन करना माया के इस नश्वर इस मुख से किस प्रकार सम्भव हो सकता है?

नेक कहूं ताको बेवरा, ए जो बाहिरी छे हजार की हार ।
तहां तीस मंदिर भए देहेलान, जहां नित होत बिहार ।।४३।।

फिर भी उसका थोड़ा सा वर्णन करूंगा। बाहरी तरफ ६००० मंदिरों की, जो पहली हार आयी है वहाँ पर प्रत्येक हांस में तीस-तीस मंदिरों के दहलान की शोभा आयी है । यहाँ पर नित्य प्रति प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं होती

हैं ।

इन मंदिरों हांस भर, दरम्यान दिवाल नाहें ।
ए चौक एक रस बन्या, हक हादी बैठत तहां आए ।।४४।।

इन बाहरी प्रथम हार के मंदिरों में प्रत्येक हांस में भीतरी तरफ की दीवार तो है, किंतु मध्य (संधि) की व बाहरी तरफ की दीवार नहीं है । बाहरी तरफ दीवार की जगह स्तम्भें शोभायमान हैं (इनके बाहरी तरफ एक मंदिर का चौड़ा छज्जा और निकला है, जिसकी किनार पर स्तम्भ व कठेड़े शोभायमान हैं) । यह चौक (छज्जा) बीच की दीवार हटने से एक रस (एक ही छज्जा 30 मंदिर का लम्बा) हो गया है । यहाँ पर श्री राज श्यामा जी विराजमान होकर दूर दूर के मनोहारी दृश्यों का आनंद लेते हैं ।

ए छज्जा देहेलान एक बनी, दोए गुरजो दरम्यान ।
तहां गृद फिरता छज्जा, लटकत कठेड़ा आगे जान ।।४५।।

मंदिरों की बाहरी हार की जगह में आयी दहलान के आगे बाहरी तरफ एक मंदिर का चौड़ा छज्जा आया है । ये दहलान व छज्जा दोनों, दो गुर्जों के मध्य एक बड़े छज्जे के रूप में दिख रहे हैं । छज्जे की बाहरी किनार पर रत्नजड़ित कठेड़ा शोभायमान है।

ए गृद फिरता आया, सब गुरजों कठेड़ा गृदवाए ।
ए शोभा बका नूर की, सो जुबां कही न जाए ।।४६।।

यह छज्जा चारों तरफ सभी गुर्जो व दहलान को घेरकर आया है, जिसकी किनार पर चारों तरफ कठेड़े की शोभा है । यह शोभा अखण्ड परमधाम के नूरी रंगमहल की है, जिसकी शोभा का वर्णन इस झूठी जिह्वा से नहीं हो सकता ।

ए दोए सौ एक छज्जे कहे, दोए गुरजों दरम्यान ।
ए लम्बा एक हांस भर, मंदिर भर चौड़ा जान ।।४७।।

इस प्रकार प्रत्येक दो गुर्जो के मध्य एक छज्जा दिखने से कुल २०१ छज्जे दिख रहे हैं । प्रत्येक छज्जा एक हांस (३० मंदिर) का लम्बा है और एक मंदिर का चौड़ा है । (दहलान को मिलाकर छज्जा दो मंदिर का चौड़ा हो जाता है। पूर्व के दरवाजे की हांस १० मंदिर की है, तथा इसके दायें–बायें की हांस २५-२५ मंदिर की है। इन तीनों हांसों के अतिरिक्त बाकि सारी

हांसें ३०-३० मंदिर की हैं)

मंदिर भर चौड़ाई और कही, सो एक मंदिर भर होए ।
इहां तीस मंदिर भर लम्बाई, एह मोमिन जाने सब कोए ।।४८।।

छज्जे के भीतरी तरफ दहलान की चौड़ाई और मिल गयी है । जिससे छज्जे की कुल चौड़ाई दो मंदिर हो गयी है । लम्बाई तो ३० मंदिर (एक हांस) की है, मोमिन यह अच्छी तरह से जानते हैं ।

दोए हार थम्भन की, सो इन के दरम्यान ।
सब नूर जवेरों झलकत, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।४९।।

छज्जे में स्तम्भों की कुल दो हारें आयी हैं (पहली हार बाहरी हार मंदिर के बाहरी किनार पर तथा दूसरी हार छज्जे की किनार पर) । उन स्तम्भों में जड़े नूरमयी जवाहरात जगमगा रहे हैं । इसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिल में रहती है।

एह छज्जे एक सिंघासन, ताके दोए सौ एक सुमार ।
इत दुलीचे पशमी, रहे जगाओं तकिये बिहार ।।५०।।

(दो गुर्जो के मध्य) एक छज्जे पर एक सिंहासन आने से २०१ छज्जों पर (२०१ हांस में) कुल २०१ सिंहासन होते हैं । छज्जे पर पशमी दुलीचा (कालीन) बिछा है और विभिन्न स्थानों में तकिये शोभा ले रहे हैं।

आया ऊपर लटकता, छज्जा बन्या सुखकार ।
लगा चांदनी छज्जे दसमी को, इत आओ मोमिन करने बिहार ।।५१।।

नौवी भोम के इस छज्जे के ऊपर छत के रूप में लटकता हुआ एक छज्जा पुनः आया हैं, जो दसवीं चांदनी से जुड़ा है । हे ब्रह्मात्माओं ! तुम यहाँ विहार करने के लिये आओ ।

इत फिरता कठेड़ा बन्या, तिन आगे छज्जा माफक ।
ए शोभा है अति बड़ी, माफक दिल है हक ।।५२।।

छज्जे के अनुरूप चारों तरफ घेरकर छज्जे की किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है । यह शोभा सर्वोपरि है, जो कि श्री राज जी के दिल के अनुसार है ।

हर मंदिर दरम्यान के, ए ऊंची जिमी से इत ।
हर मंदिर द्वार में सीढ़ियां, हर मंदिर चबूतरे शोभित ।।५३।।

नौवी भोम में बाहरी हार मंदिर व छज्जे की जगह भीतरी गली की जमीन से कमर पर ऊंची है । इन मंदिरों (दहलानों) की भीतरी दीवार के दरवाजे के सामने भीतरी तरफ गली में चबूतरे (चांदे) से सीढ़ियाँ उतरी हैं ।

ताके दाएं बाएं दोनों तरफों, तीन तीन सीढ़ी उतरती होए ।
फेर आइए जिमी पर, नूर शोभित अति सोए ॥५४॥

उन चबूतरों (चांदो) के दायें-बायें दोनों तरफ ३-३ सीढ़ियाँ गलियों में उतरी हैं । सीढ़ियों से उतरकर गलियों की जमीन पर आईये । चारों तरफ नूर ही नूर शोभायमान है ।

इत हक हादी रूहन को, देखिए बैठे सिंघासन ।
सब तरे आवत नजरों, सब ठौरों नूर रोशन ॥५५॥

छज्जे पर स्थित सिंहासन पर श्री राज श्यामा जी व सखियों को बैठे देखिये । यहाँ से (सामने) नीचे की सारी नूरमयी शोभा नजर आ रही है । चारों तरफ के सभी स्थान जगमगाते हुए दिखाई दे रहे हैं ।

जब तरफ पूरब को बैठत, देखिए तले सातों घाट ।
जमुना पर नूर मोहोल, सो अक्षर नूर को ठाट ॥५६॥

जब रंगमहल की पूर्व दिशा में बैठते हैं, तब (सामने की तरफ) नीचे सातों घाट, यमुना जी पर बने नूरी महल (केलपुल व बटपुल) और अक्षरधाम का ऐश्वर्य सब दिखाई देता है ।

जब दक्खिन तरफ देखिए, बैठे इन सिंघासन ।
पहाड़ मानिक आवे नजरों, झलकत नूर रोशन ॥५७॥

जब रंग महल के दक्षिण दिशा के छज्जे में सिंहासन पर विराजमान होते हैं, तो माणिक पहाड़ लाल रंग की नूरमयी झलकार करता हुआ दिखाई देता है।

जब पश्चिम तरफ बैठत, देखिए सबज याने मोहोल नूर ।
उहां सागर है दधि का, चार हार हवेलिए रोशन जहूर ॥५८॥

जब पश्चिम दिशा में बैठते हैं, तो दधि सागर के चारों तरफ आये हरे रंग के नूरमयी महल दिखाई देते हैं और उसके पहले आये जगमगाते हुए चार हार हवेली (छोटी रांग) भी दिखाई देते हैं ।

जब उत्तर तरफ बैठत, इत नजरों आवत पुखराज ।
बैठे सैंया सुखपाल में, आवत रमन संग राज ।।५९।।

अब उत्तर तरफ बैठते हैं, तो पुखराज पहाड़ दिखाई देता है, जहां सुखपालों में बैठकर सखियाँ श्री राजश्यामा जी के साथ विहार के लिये जाती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, एह कही तुमारी ठौर ।
अब आओ अपने वतन, तुम फिकर न करो और ।।६०।।

श्री महामति जी कह रहे हैं, कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह तुम्हारे निजधाम का वर्णन किया है । अब तुम अन्य सारी चिंताएं छोड़कर अपने निजघर आ जाओ ।

प्रकरण २६, चौपाई १४३७

दशमी भोम चाँदनी

प्रसंग - प्रस्तुत प्रकरण में महामति जी ने रंग भवन की दसवीं आकाशी का अत्यंत मनोहरी चित्रण किया है, जहाँ पर कंगूरे, गुम्मट, कांगरी, गुमटियाँ, ध्वजा, पताका, घूंघरी आदि चारों तरफ चांदनी की किनार पर शोभायमान हैं । चांदनी के मध्य में चबूतरा, चारों तरफ चेहेबच्चे, नहरें, सिंहासन आदि का वर्णन ब्रह्मात्माओं को सुख देने के लिये हुआ है । चाँदनी से चारों दिशाओं के दूर-दूर तक सुंदर दृश्य दिखायी देते हैं। पूनम की रात्रि में श्रीराजश्यामाजी व सखियां रंगमहल की चांदनी में आनंदपूर्वक लीला विहार करते हैं ।

अब कहूं भोम दसमी, जो है चांदनी नूर ।
ऊपर चढ़के देखिए, आठो सागर जहूर ।।१।।

अब रंगमहल की दसवीं भूमिका का वर्णन करूंगा, जो कि नूरमयी चांदनी (छत) है । यहाँ पर चढ़कर आठों सागरों की शोभा को देखिये।

पूरब दक्खिन कोन में, जहां सागर है नूर ।
जिमी सुपेत है तिन की, ताको कह्यो न जाए जहूर ।।२।।

रंगमहल की पूर्व-दक्षिण कोण (अग्निकोण) में, जहां नूर सागर शोभायमान है, वहाँ की धरती श्वेत रंग की है, जिसकी शोभा अवर्णनीय है ।

चौड़े मोहोल हैं नूर के, जिनको वार न पार ।
सागर कहे इन वास्ते, जित हक हादी रूहें करें बिहार ।।३।।

वहां नूर से परिपूर्ण अत्यंत विशाल महल हैं, जिन का कोई पारावर नहीं है । इसलिये तो इन्हें सागर कहा गया है । यहां श्री राज श्यामा जी व सखियाँ प्रेम व आनंद से परिपूर्ण अनेक प्रकार की लीलाएं करते हैं ।

कई टापू तिन में बने, रांग बराबर ऊंचे आसमान ।
सिफत इन मोहोलन की, आवत नहीं जुबांन ।।४।।

नूर सागर के मध्य में बेशुमार टापू महल हैं, जिनकी ऊंचाई बड़ी रांग की हवेलियों के समान ही आकाश तक ऊंची है । उन महलों की शोभा का वर्णन इस झूठी जिह्वा से नहीं हो सकता है।

दोए तरफ मोहोल बन पर, जिनके द्वार बारे हजार ।
दोए तरफ बड़े रांग के, ताके छत्तीस हजार सुमार ।।५।।

बड़ी रांग की प्रत्येक महाहवेलियों के दो तरफ बगीचे शोभायमान हैं । वहां (महाहवेली की भीतरी तरफ) १२००० हवेलियों के १२००० द्वार शोभायमान हैं । सागर के अन्य दो दिशाओं में भी (दायें–बायें) बड़ी रांग की हवेलियां हैं। इस प्रकार तीन दिशा के मिलाकर कुल ३६००० द्वार होते हैं।

ए मोहोल हैं सब हीरन के, कई रंग जवेरों जोत ।
इनकी जिमी सुपेत में, कई तरंग अखण्ड उद्योत ।।६।।

ये सभी महल नूरमयी हीरे के हैं जिनसे कई रंगों के जवाहरातों की नूरमयी किरणें निकल रही हैं । यहाँ श्वेत रंग की धरती में कई रंगों की तरंगे अखण्ड रूप से जगमगाते रहती हैं ।

दोए सागर बीच जिमी भर, दोए जिमी बीच सागर ।
द्वार बड़े सब सोले बने, आठो सागर उपर ।।७।।

दो सागरों के बीच एक जमीन (घने वन) और दो जमीन के बीच एक सागर की शोभा आयी है । आठों सागरों एवं आठ जिमी के ऊपर महाहवेलियों के कुल १६ बड़े दरवाजे आये हैं ।

नीर सागर दक्खिन दिस, मुकाबिल जो मानिक ।
तहां जिमी लाल है, चारों मोहोलात लाल बुजरक ।।८।।

रंगमहल की दक्षिण दिशा में माणिक पहाड़ की सीध में नीर सागर आया है । वहाँ की धरती और सागर की चारों दिशाओं के महल (महाहवेलियां) लाल रंग में सुशोभित हैं ।

पशु पंछी इत लाल रंग, सब जोगबाई लाल ।
टापू लाल दरम्यान में, इत देखे ही होत खुसाल ।।९।।

यहाँ के पशु-पक्षी भी लाल रंग के हैं। यहां की लीलारूप सम्पूर्ण सामग्री लाल रंग की है । सागर के मध्य टापूमहल भी लाल है । जिन्हें देखकर सखियां प्रसन्न हो जाती हैं ।

लाल इन वाहिदत की, देख्या तले आसमान ।
सिफत बका ठौर की, कोई कर ना सके जुबांन ।।१०।।

यहाँ नीचे ऊपर सारी वस्तुएं अद्वैत रूप में लाल ही लाल दिखायी दे रही हैं । अखण्ड परमधाम की शोभा का वर्णन कोई भी इस झूठी जिह्वा से नहीं कर सकता है ।

दरम्यान दक्खिन और पश्चिम के, है सागर उज्जवल खीर ।
पीत रंग तहां शोभित है, हे गृद चबूतरा तीर ।।११।।

दक्षिण व पश्चिम दिशा के मध्य (नैऋत्य कोण) में उज्जवल पीले रंग का खीर (क्षीर) सागर शोभा ले रहा है । सागर के चारों ओर एक भोम ऊंचा चबूतरा आया है । (जिस पर बड़ी रांग की महाहवेलियां शोभायमान हैं) ।

मिने टापू पीत रंग, तरफ पीत रंग है चार ।
हक हादी रूहन की, आए इन ठौर करे बिहार ।।१२।।

क्षीर सागर के मध्य आये टापू महल भी पीले रंग के हैं। टापूमहल के चारों तरफ की सारी शोभा पीले रंग की है । यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां आकर अनेक प्रकार से लीला विहार करते हैं ।

बन पशु पंखी पीत रंग हैं, चारों हार हवेलिन ।
पीत रंग सब तिन का, जब झलकत नूर रोशन ।।१३।।

यहां के वन, पशु-पक्षी सभी पीले रंग में (अनेक रंगों की चित्रकारी से युक्त) शोभायमान हैं । चारों हार हवेलियाँ (छोटी रांग) भी पीले रंग में ही झलकार कर रही हैं ।

दिश पश्चिम दधि सागर, जिमी मोहोल सबज रंग ।
दूब मुकाबिल एह है, कई लेहेरां उठत तरंग ॥१४॥

रंग महल की पश्चिम दिशा में दधि सागर आया है, जहां की धरती तथा महल सब हरे रंग में शोभायमान हैं । दधि सागर दूब दुलीचा की बिल्कुल सीध में है, जिससे कई रंगों की तरंगे लहराती हुई निकलती हैं ।

पश्चिम उत्तर दरम्यान में, सागर धृत का जान ।
जिमी दरखत मोहोल, सब रंग है आसमान ॥१५॥

परमधाम के पश्चिम-उत्तर दिशा के मध्य (वायव्य कोण) में घृत सागर शोभा ले रहा है । जहां की धरती, वृक्ष, महल इत्यादि सभी आसमानी (नीले) रंग के हैं ।

उत्तर दिस सागर, मधु सागर रांग है ठाम ।
मोहोल जिमी सब एक रस, याकी साख अल्ला कलाम ॥१६॥

रंग महल की उत्तर दिशा में बड़ी रांग की महाहवेलियों के मध्य मधु सागर आया है । यहाँ के महल व धरती सब श्याम रंग में एक रस शोभायमान हैं । जिसकी साक्षी अल्लाह कलाम (कुर्आन पाक) में है ।

रस उख का सागर, उत्तर पूरब दरम्यान ।
दस रंग जवेर के, पशु पक्षी जिमी वृक्ष आसमान ॥१७॥

परमधाम के उत्तर-पूर्व दिशा के मध्य ईशान कोण में उख (गन्ने) के रस का सागर आया है । यहाँ के पशु-पक्षी, धरती, आसमान, सब दस रंग के जवाहरातों से सुसज्जित हैं ।

सब रस सागर देखिए, तरफ पूरब की जे ।
मोहोल चारों तरफ के, सब रंग है तिन के ॥१८॥

रंग महल की पूर्व दिशा में सर्वरस सागर की शोभा देखिये । सागर के चारों ओर के महल (महा-हवेलियां) सभी (अनंत) रंगों में शोभायमान हो रहे हैं ।

ए सागर आठो देखिए, ए चांदनी खड़े होए जब ।
रांग गिरद फिरती, नजरों आवत तब ॥१९॥

रंग महल की दसवीं चांदनी (छत) पर खड़े होकर चारों तरफ आठों सागरों का मनोरम दृश्य देखिये । बड़ी रांग की हवेलियां चारों तरफ घेरकर

रंगबिरंगी किरणों की झलकार के साथ दिखायी दे रही हैं ।

हर एक सागर के, रांग मोहोल तरफ दोए ।
दोए तरफों मोहोल जोए के, कई टापू मोहोल दरम्यान होए ।।२०।।

प्रत्येक सागर के (बाहरी व भीतरी) दो तरफ तथा दायें-बायें दो तरफ (कुल चारों तरफ) महल (महाहवेलियां) आये हैं । सागर के मध्य में कई टापू महल आये हैं ।

हिसाब न गिनती इनकी, ना छेह जिमी वाहिदत ।
ए तो नेक कह्या दिल आवने, करने मोमिन दिल साबित ।।२१।।

बड़ी रांग की इन महाहवेलियों का ना कोई हिसाब है ना ही कोई गिनती है। परमधाम की स्वलीला अद्वैत भूमिका का कोई अंत नहीं है । यह तो ब्रह्मात्माओं के दिल में शोभा बसाने के लिए थोड़ा सा वर्णन किया है, ताकि ब्रह्मात्माओं का दिल अर्श (परमात्मा का धाम) होता है, ऐसा सिद्ध हो सके (दिल सहीं मायने में खुदा का अर्श बन जाये)।

केहेना इन जिमीअ में, और सुपन आकार ।
गुन अंग इन्द्री ख्वाब की, सो क्यूं कर करे विचार ।।२२।।

ऐसे झूठे संसार में और ऐसे स्वाप्निक तन से परमधाम का वर्णन करना है । यहां के गुण, अंग, इन्द्रियां स्वप्न के हैं, ये आखिर किस तरह परमधाम का चिंतन कर सकते हैं ।

मन चित बुध अहंकार, पोहोंच न सके कोए ।
शब्दातीत के पार की, क्यूं कर केहेना होए ।।२३।।

इस स्वाप्निक तन के मन, चित्त, बुद्धि व अहंकार दिव्य परमधाम तक नहीं पहुंच पाते हैं। तो फिर बेहद मण्डल के परे, अक्षर के भी पार परमधाम का वर्णन किस प्रकार हो सकता है।

पर एह कहावत हक का, जो उतरा अरस से हुकम ।
आई जाग्रत बुध तारतम, सो जानत मोमिनों तुम ।।२४।।

परन्तु श्री राज जी का हुक्म, जो परमधाम से यहां आया है, वह मुझसे कहलवा रहा है । इस संसार में जागृत बुद्धि व तारतम ज्ञान अवतरित हुआ है । इसे केवल आप मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही जानते हैं ।

ए जो कह्यो जात है, सो लिए सनमंध आकार ।
चित बुध मन आकार की, तरफ बाएं परवरदिगार ।।२५।।

परमधाम के संबंध में यह जो कुछ कहा जा रहा है, वह झूठे स्वप्नवत् शरीर की सहायता से ही कहा जा रहा है । श्री लाल दास जी कह रहे हैं, कि इस शरीर के मन, चित्त व बुद्धि श्री राज जी के बायीं तरफ श्री श्यामा जी के आनन्द में जा रहे हैं । तभी वर्णन संभव हो पा रहा है ।

वह तो रूहमय चेतन, तिन का हिसाब है और ।
वह रूहमय बका चेतन, जहां हक रमने की ठौर ।।२६।।

सम्पूर्ण परमधाम रूहमयी (आत्मस्वरूप) अर्थात् चेतन है । जिसका हिसाब कुछ अलग प्रकार का है। वह रूहमयी, चेतन, अखंड परमधाम श्री राजश्यामा जी एवं सखियों के रमण करने का स्थान है ।

अब तुम सुनियो मोमिन, एह तुम वास्ते कहे सुकन ।
दिल तुमारे अरस हैं, सोई खास गिरो मोमिन ।।२७।।

हे ब्रह्मात्माओं ! अब आप सुनिये । आपके लिये ही यह वचन कहे गये हैं । आपका दिल अर्श है । (जो इन वचनों को सुनकर दिल में बसायेगा,) वह ही खासुलखास मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) है ।

अब कहूं भोम दसमी, जो अरस अजीम का ठौर ।
हक हादी रूहें बिहार का, बिना मोमिन न जाने और ।।२८।।

अब परमधाम के मध्य स्थित रंगमहल की दसवीं भूमिका का वर्णन करूंगा । श्री राजश्यामा जी व सखियों के लीला विहार के जो स्थान हैं, उसे ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जान सकता ।

प्रथम द्वार से लेय के, केहेना चांदनी नूर ।
द्वार से छज्जा चल्या, सो कहूं दसमी लों जहूर ।।२९।।

रंगमहल के मुख्य दरवाजे से लेकर नूरमयी दसवीं आकाशी (चांदनी, छत) तक की शोभा का वर्णन करना है । मुख्य दरवाजे के दायें–बायें जो (चार मंदिर के लम्बे व दो मंदिर के चौड़े) दो चबूतरे हैं, उनके ऊपर दूसरी भोम से लेकर दसवीं चांदनी तक छज्जे (पडशाल, झरोखे) रोशन हो रहे हैं ।

द्वार अरस अज़ीम का, कहूं नेक बका नूर ।
रंग हीरा मानिक झलकत, सो कह्या न जाए जहूर ।।३०।।

रंगमहल के मुख्य दरवाजे की अखण्ड नूरमयी शोभा का थोड़ा सा वर्णन करूंगा। मुख्य दरवाजे में हीरा व माणिक झलकार कर रहे हैं । जिनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

ए जो गृद जेह चली, हद एक मंदिर लों जान ।
आए पेड़ लगे दरखत के, लगी डारी छज्जों पेहेचान ।।३१।।

रंग महल के चारों तरफ घेरकर एक मंदिर की चौड़ाई में जो धाम चबूतरा (परिक्रमा की रौंस) आया है। इस चबूतरे के सामने स्थित वनों की डालियां रंग महल के छज्जों (झरोखों) से आकर मिल गई हैं ।

पेड़ लगा आए जोए के, तीनो घाट मुकाबिल धाम ।
एह बेवरा कह्या मैं तिन का, एह देखना मोमिन का काम ।।३२।।

इन वनों के वृक्ष (दूसरी तरफ) यमूना जी की किनार तक गये हैं । अनार, अमृत व जाम्बू ये तीनों वन (घाट) रंगमहल की सीध में (पूर्व दिशा) में आये हैं । उसका मैंने वर्णन किया है, जिसे देखना ब्रह्मात्माओं का काम है ।

एह जो दोए गुरज कहे, लगे चबूतरे किनार ।
दोए बाजू दोरी बंध, एक मंदिर लों हद विचार ।।३३।।

रंगमहल के मुख्य दरवाजे की हाँस के दायें-बायें दो गुर्ज आये हैं, वे चार मंदिर के लम्बे व दो मंदिर के चौड़े दोनों चबूतरों की किनार पर आये हैं। उसके दायें-बायें एक मंदिर की चौड़ाई लेकर बिल्कूल सीध में धाम चबूतरा (परिक्रमा की रौंस) आया है ।

द्वार पांच तिन के, एक मंदिर बीच दोए द्वार ।
तीन तरफों तीनों भए, ए सुख मोमिन जाननहार ।।३४।।

प्रत्येक मंदिर में ५-५ दरवाजे दिखाई दे रहे हैं । एक मंदिर की बाहरी दिवाल में २ दरवाजे आये हैं और तीन दरवाजे अन्य तीनों तरफ की दीवार में शोभा ले रहे हैं । इन सुखों को मोमिन ही जानते हैं ।

यों ही हर एक भोम के, सब भोम यों ही जान ।
तीन छज्जे बाहिर, दोए मेहेराब अन्दर पेहेचान ।।३५।।

इसी प्रकार रंग महल के प्रत्येक भोम की शोभा को जानिये । गुर्जो के ३ छज्जे बाहरी तरफ तीन दिशा में आये हैं तथा दो मेहराब (दरवाजे) अंदर की तरफ मंदिरों की दीवारों में आये हैं ।

ए चबूतरे लम्बे कहे, हद चार मंदिर भए ।
दोए मंदिर भर चौड़ी, गृद कठेड़ा ऊपर ।।३६।।

मुख्य दरवाजे के दायें-बायें ४-४ मंदिर के लम्बे और २-२ मंदिर के चौड़े चबूतरे आये हैं । जिनके किनारे तीन तरफ कठेड़ा शोभायमान है ।

ए जो दोए चबूतरे कहे, आठ मंदिर लों हद होए ।
दोए मंदिर भर द्वार आगे, इत अकल ना पोहोंचे कोए ।।३७।।

दोनों चबूतरों की लम्बाई मिलाकर आठ मंदिर होती है । दोनों चबूतरो के बीच में दरवाजे के सामने २ मंदिर का लम्बा चौड़ा चौक शोभा ले रहा है । यहाँ तक किसी भी संसारिक जीव की बुद्धि नहीं पहुँच पाती है ।

एक हाथ उतरत, इन दोनों से तले होए ।
तिन आगे उतरती, कहीं बीस पगथीयां सोए ।।३८।।

वह (दो मंदिर का) चौक दोनों चबूतरों से एक हाथ नीचे शोभा ले रहा है । उस चौक के आगे (पूर्व दिशा में) २० बड़ी सीढ़ियाँ (चांदे) शोभा ले रही हैं।

ए द्वार आगे का चबूतरा, सो चौकोने चावक नूर ।
आया छज्जा दस मंदिर भर, हुआ ता ऊपर जहूर ।।३९।।

मुख्य दरवाजे के आगे ये जो चबूतरा व चौक हैं, वह चौकोर व नूरमयी हैं । दोनों चबूतरों एवं चौक के ऊपर (तीसरी भोम में) दस मंदिर का छज्जा (पड़शाल) शोभायमान है । (दूसरी भोम में चौक के ऊपर छत नहीं है तथा दोनों चबूतरों के ऊपर अलग–अलग ४ मंदिर लम्बे व २ मंदिर चौड़े छज्जे हैं। तीसरी भोम में चबूतरों व चौक के ऊपर एक ही छज्जा १० मंदिर लम्बा है)

इन छज्जे पर छज्जा चल्या, भोम ऊपर भई भोम ए ।
थंभ कठेड़ा थंभ पर, हुआ नवों भोम लों के ।।४०।।

इस छज्जे (तीजी भोम की पड़शाल) के ऊपर चौथी भोम का छज्जा आया है । इस प्रकार छज्जे के ऊपर छज्जा नौवीं भोम तक आया है । तीजी भोम के छज्जे की किनार पर आये स्तम्भों व कठेड़ों के ऊपर चौथी भोम से

नौवीं भोम तक उसी प्रकार स्तम्भ व कठेड़े आये हैं ।

नव भोम का हांस भर, उंचा नूर देहेलान ।
आगे एक मंदिर भर, छज्जा निकलता जो पेहेचान ।।४१।।

नौवीं भोम में सम्पूर्ण २०१ हांसों में बाहरी हार मंदिर की जगह में कमर भर ऊंची नूरी दहलान है । दहलान के आगे (बाहरी तरफ) चारों तरफ घेरकर एक मंदिर का चौड़ा छज्जा आया है (यह छज्जा दरवाजे के हांस के पड़साल से जाकर मिल गया है) ।

चले थम्भ चांदनीय को, एही छज्जा चल्या नूर ।
निकसे दोए गुरज उंचे, हुआ चांदनी पर जहूर ।।४२।।

नौवीं भोम के छज्जे के ऊपर दसवीं चांदनी में भी छज्जे आये हैं । तथा नौवीं भोम की पड़साल व दहलान के स्तम्भों के ऊपर दसवीं चांदनी में भी स्तम्भ आये हैं । उसके साथ ही सभी गुर्ज भी दसवीं चांदनी के ऊपर निकले हैं । दरवाजे के हाँस के दायें-बायें के २ गुर्ज भी चाँदनी पर जाकर अपार शोभा ले रहे हैं ।

एह चांदनी पर जो छज्जा, ताकि दस दस थंभ की हार ।
कहूं ताको बेवरा, कही जो हारें चार ।।४३।।

दस मंदिर के (दरवाजे के) हांस के ऊपर चांदनी के छज्जे पर १०-१० स्तम्भों की चार हारें आयी हैं । अब उसका वर्णन किया जायेगा ।

ज्यों एक मंदिर माफिक, छज्जा जे चल्या गृदवाए ।
तिन पर बन्या कठेड़ा, तले किनार फिरती आए ।।४४।।

जिस प्रकार नौवीं भोम में एक मंदिर का छज्जा चारों तरफ घेरकर आया है, उसके ऊपर दसवीं चांदनी में भी वैसा ही छज्जा आया है, जिसके किनार पर चारों तरफ घेरकर कठेड़े की शोभा आयी है ।

ए जो दस मंदिर देहेलान की, जिमी उंची भई एक ।
बाहेर छज्जा अन्दर कांगरी, नूर रंग जवेर अनेक ।।४५।।

दस मंदिर की जो दहलान है (और बाहरी छे हजार मंदिरों की जगह चांदनी में जो दहलान आये हैं), उनकी जमीन कमर भर ऊंची है । इस चबूतरा के बाहरी तरफ एक मंदिर का चौड़ा छज्जा है । उसके भीतरी तरफ दहलानों की

चांदनी में कांगरी अद्‌भूत शोभा ले रही है, जिसमें अनेकों रंग के नूरमयी जवाहरात जगमगा रहे हैं ।

और अन्दर चबूतरा, ए जिमी एक उंचाई जान ।
तहां चालीस थम्भ कहे, ताकी करो पेहेचान ।।४६।।

इस दहलान के भीतरी तरफ (बाहरी हार मंदिरों के भीतर की) पहली गली की जगह में भी चबूतरा है, जो दहलान के चबूतरे बराबर ऊंचा है । पूर्व के दस मंदिर की हांस में कुल चालीस स्तम्भ (दस स्तम्भों की चार हारें) शोभायमान हैं, उनकी पहचान कीजिये ।

दस थम्भ छज्जे किनार, दस अन्दर चबूतरे किनार ।
दस दस की हार दोए बीच में, ए कांगरी मुकाबिल विचार ।।४७।।

१० स्तम्भ छज्जे की पूर्वी किनार पर, १० स्तम्भ अंदर की तरफ चबूतरे की पश्चिमी किनार पर तथा इनके बीच में १०-१० स्तम्भों की दो हारें (बाहरी हार मंदिरों की जगह में) आयी हैं । जिनकी चांदनी (छत) में कांगरी की शोभा आयी है।

ताके द्वार छत्तीस, साम सामे सनमुख ।
ए चारों हारों के जानिए, तिनके दाएं बाएं तीन देखो सनमुख ।।४८।।

पूर्व दिशा में दस स्तम्भों की चार हारों में ३६ महराबें (९ महराबों की चार हारें) आमने-सामने शोभा ले रही हैं । दायें-बायें (उत्तर-दक्षिण में) स्तम्भों की चार हारों के मध्य ३-३ मेहराबें आयी हैं ।

दोए किनारों बंगलो, दोए दोनों तरफों कांगरेन ।
चबूतरा दोए छज्जे किनार पर, जमा बियालीस नूर रोशन ।।४९।।

२ महराबें दहलान के उत्तर-दक्षिण की दिशा के किनारे की ओर, २ महराबें दहलान के पश्चिम के चबूतरे के दोनों तरफ आयी हैं । तथा दो महराबें दहलान के पूर्व के छज्जों की दोनो तरफ आये हैं (अर्थात् ३–३ महराबें उत्तर व दक्षिण दिशा में आयी हैं)। ये ६ और पहले के ३६ मिलाकर कुल ४२ महराबें होती हैं ।

चार सीढ़ियां उतरती, तरफ चांदनी के ।
ए दरवाजे दरम्यान के, मोमिन देखियो ए ।।५०।।

दस मंदिर की हांस के चबूतरे से मध्य की मेहराब के सामने भीतरी

तरफ चांदनी में चार सीढ़ियां उतरी हैं । हे सुंदरसाथजी! इसकी शोभा देखिये ।

इन चालीसों थम्भ पर, बनी चांदनी नूर ।
कठेडा चारों तरफों, चारों खूनो गुमटी जहूर ॥५१॥

दसवीं चांदनी की पूर्व दिशा में आये ४० स्तम्भों के ऊपर पुनः नूरमयी चाँदनी आयी है । जिसके चारों ओर किनार पर कठेड़ा तथा चारों कोनों पर चार गुम्मटियाँ शोभा ले रही हैं ।

तिन में चार द्वार बने, ता पर कलश कांगरी होए ।
ए दोए गुरज बीच सीढ़िया, इन चांदनी चढ़े सब कोए ॥५२॥

गुम्मटियों में ४ महराबी द्वार बने हैं । जिसके ऊपर कलश व कांगरी की शोभा आयी है । दस मंदिर की हांस के दोनों किनारों पर आये गुर्जों के भीतर सीढ़ियां आयी हैं, जिनसे चढ़कर दहलानों की चाँदनी पर जाते हैं ।

ए गुरज उपर निकसे, तिन उपर चार द्वार ।
एक हुआ चांदनी पर, जहां बैठ करें बिहार ॥५३॥

दस मंदिर के हांस के ये दोनों गुर्ज दहलानों की चांदनी से भी एक भोम ऊपर गये हैं, दहलानों की चांदनी में चार महराबी द्वार हैं । उनमें से एक द्वार (पश्चिम में) दहलानों की चांदनी में है । जिससे चांदनी में आकर प्रेम व आनंद पूर्वक लीला विहार करते हैं ।

एक पड़ता बाहेर को, और दोनों बगलों दोए ।
सो ए लगे कठेड़े को, दोनों गुरजों कलश सोए ॥५४॥

अन्य तीन महराबी द्वारों में से एक बाहिरी तरफ (पूर्व में) है तथा दो महराबी द्वार दायें-बायें (उत्तर-दक्षिण में) हैं, जिनके किनार पर कठेड़े की शोभा है । दोनों गुर्जों के ऊपर दो बड़े गुम्मट, व स्वर्णकलश सुशोभित हैं ।

इत दुलीचा बिछाइयां, ता पर सिंघासन ।
बैठत सनमुख चांदनी, होत प्रफुल्लत मन ॥५५॥

यहां दहलानों की चाँदनी में गलीचे के ऊपर सिंहासन शोभा ले रहा है । जब चाँदनी में सामने पूर्व दिशा में बैठते हैं, तब मन अत्यंत प्रफुल्लित (आनंदित) हो जाता है ।

चांदनी पर फिरता चबूतरा, चौड़ाई मंदिर भर होए ।
फिरता आया गृद चांदनी, फिरता कठेड़ा कह्या सोए ॥५६॥

चाँदनी के किनारे, चारों ओर (दहलान के भीतरी तरफ) एक मंदिर चौड़े चबूतरे की शोभा आयी है, जिसके भीतरी किनारे चारों ओर (सीढ़ियों की जगह छोड़कर) कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

चार चार सीढ़ियां हांस हांस, कठेड़े कहे द्वार ।
तिन की उतरती सीढ़िया, आए चांदनी करे बिहार ॥५७॥

इस चबूतरे के भीतरी तरफ प्रत्येक हाँस के मध्य में ४-४ सीढियाँ आई हैं, जहां कठेड़ा-द्वार की शोभा है । जिनसे चाँदनी पर आकर हांस विलास करते हुए लीला विहार करते हैं ।

ज्यूं तले का चेहेबच्चा, तेह को लगता जान ।
त्यों ही मंदिर भर गृद, धाम चांदनी किनार पेहेचान ॥५८॥

रंगमहल के चबूतरे से लगकर नीचे चारों कोनों में जिस प्रकार १६ हाँस का चेहेबच्चा आया है, उसी तरह चाँदनी पर मध्य चबूतरे के चारों कोनों में चार बड़े चेहेबच्चे तथा चांदनी में चारों ओर किनारे तक एक मंदिर की चौड़ी नहरें व चेहेबच्चे घेरकर आये हैं (जिनके मध्य बगीचे विद्यमान हैं । एक मंदिर की चौड़ी नहर व चेहेबच्चे के दायें बायें एक एक मंदिर का चबूतरा है, जिसमें मध्य के ३३ हाथ में फुलवाड़ी व इसके दायें बायें ३३-३३ हाथ में रौंस है) ।

एही चांदनी धाम के, चेहेबच्चे कहे चार ।
तैसे ही फिरे चबूतरों, गृद चबूतरे किनार ॥५९॥

इसी प्रकार रंगमहल की चाँदनी पर मध्य चबूतरे के चारों कोनों में चार चेहेबच्चे शोभा ले रहे हैं । वैसे ही कमर भर ऊंचे चबूतरे चाँदनी की किनार तक चारों ओर आये हैं ।

इन चेहबच्चे चबूतरे, सीढ़ी उतरती तरफ तीन ।
एक तरफ चांदनी के, रहे मोमिन दिल आकीन ॥६०॥

मध्य के चारों चेहेबच्चों के चबूतरों के तीन तरफ सीढ़ियाँ आई हैं । एक चाँदनी की ओर है, जिसके प्रति ब्रह्मात्माओं के दिल में दृढ़ विश्वास होता है।

चबूतरे लगता चेहबच्चा, कही जो तरफों दोए ।
एक आगे बड़ी जो सीढ़ी, कठेड़े द्वार के आगे होए ।।६१।।

मध्य के चबूतरे के एक हांस से लगकर चेहेबच्चा आया है, उसके दोनों ओर (दायें–बायें) सीढ़ियाँ उतरी हैं ।(एक सीढ़ी बाहरी तरफ उतरी है। इस प्रकार तीन दिशा में सीढ़ियां उतरी हैं)। कठेड़े द्वार के आगे सर्वप्रथम एक बड़ी सीढ़ी (चांदा) आयी है।

तीन दाए तीन बाए, सीढ़ियाँ उतरती नूर ।
तहां से आए चांदनी पर, सो कह्यो न जाए जहूर ।।६२।।

फिर इस चांदे से दायें-बायें ३-३ नूरमयी सीढ़ियाँ उतरी हैं । सीढ़ियों से चाँदनी पर आते हैं । यहाँ की शोभा अवर्णनीय है।

ऐसे ही चारों चेहेबच्चे, ऐसे ही सीढ़िया जान ।
भीतर भी सीढ़िया कही, ताकी करो पेहेचान ।।६३।।

इसी प्रकार चारों चेहेबच्चों व सीढ़ियों की शोभा आयी है । भीतरी तरफ जल चबूतरे पर भी सीढ़ियां उतरी हैं, उनकी पहचान कीजिये ।

अब कहूं भोम दसमी, चांदनी हीरा एक रस नूर ।
झलकत जोत आकाश में, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।६४।।

अब रंगमहल की दसवीं आकाशी (छत) की शोभा कहूंगा । सम्पूर्ण चाँदनी नूरमयी एक रस हीरे की है, जिसकी रंगबिरंगी किरणें आकाश में जगमगा रही हैं । उसकी शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं ?

गिरद छे हजार कंगूरे, हक कंगूरे चार द्वार ।
दोए बाहिर दोए अन्दर, होत जित नित बिहार ।।६५।।

दसवीं चांदनी की किनार पर आये दहलानों की चांदनी में बाहरी व भीतरी किनार पर ६-६ हजार कंगुरे शोभायमान हैं । प्रत्येक दो कंगुरे के मध्य देहलान में बाहरी व भीतरी तरफ दो दो (कुल चार) महराबी द्वार आये हैं । यहां से श्री राजश्यामा जी व सखियां दहलानों में आते-जाते हैं तथा प्रेम व आनंदपूर्वक लीला विहार करते हैं ।

ए जो कहे कंगूरे, एक मंदिर विस्तार ।
दोए द्वार दाएं बाएं और है, गिनती छे को विचार ।।६६।।

ये जो प्रत्येक मंदिर की दहलान के ऊपर कंगुरे कहे गये हैं, उन मंदिरों (दहलानों) में दायें-बायें (संधि) की दीवार में भी दो महराबी द्वार आये हैं । इस प्रकार चारों तरफ के दीवार के मिलाकर कुल ६ महराबी द्वार होते हैं । उनका विचार कीजिये ।

गिनती देखन में छे भए, हिसाब में पांच होए ।
ताकी देखो गिनती, ए शोभा है अति सोए ॥६७॥

इस प्रकार प्रत्येक देहलान में देखने के ६ व गिनती के ५ दरवाजे आये हैं । उनकी गणना देखिये । इसकी शोभा अपरम्पार है ।

यूं हर कंगूरे पांच पांच, गिनती तीस हजार ।
कहूं दरवाजे बैठक, ए चांदनी सुखकार ॥६८॥

इसी प्रकार प्रत्येक कंगूरे के अंतर्गत ५-५ दरवाजे आने से ६००० कंगूरों के ३०,००० दरवाजे होते हैं । यह चाँदनी और दहलानों की बैठक अति सुखकारी है।

इत अन्दर या छज्जे बैठक, हादी रूहों और हक ।
बात करे मिल रस भरी, क्यूं कहूं सुख इशक ॥६९॥

इन दहलानों के अंदर या इसके चारों तरफ किनार पर आये छज्जों में श्री राज श्यामा जी व सखियां बैठते हैं, और आपस में मिलकर प्रेम रस से भरी बातें करते हैं । श्री राज जी के प्रेम के सुखों का किस प्रकार वर्णन करूं ?

और दोए सौ एक हांस के, गुरज दोए सौ एक होए ।
ताकी गुमटी दोए सौ एक रंग की, तापर धजा फेहेरात है सोए ॥७०॥

रंगमहल की चाँदनी पर २०१ हाँस की संधि में २०१ बड़े गुर्ज शोभा ले रहे हैं । उन गुर्जों पर अलग–अलग २०१ रंगों की २०१ नूरमयी गुम्मटियाँ सुशोभित हैं, जिन पर रंगबिरंगी ध्वजा फहरा रही है ।

ए रंग सब जुदे जुदे ए गुमटियों सुखकार ।
रंग जंग करे आप में, बीच जुगल सरूप बिहार ॥७१॥

ये सारी गुम्मटियां अलग-अलग रंगों की हैं, जो आनंददायक शोभा प्रस्तुत कर रही हैं । उनकी रंगबिरंगी किरणें आपस में टकराती हुयी जंग करती प्रतीत होती हैं । इन रंगबिरंगी किरणों के मध्य युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी

प्रेम व आनंद पूर्वक लीला विहार करते हैं ।

इन ध्वजा किनारे घूंघरी, छेड़े फुम्मक लटकत ।
ए नूर कह्या न जावहीं, सिरे झाबा झलकत ।।७२।।

इन ध्वजों के किनारे फुम्मक में घुंघरी लटक रहे हैं व ऊपर झाबा झलकार कर रहा है । इनके दिव्य प्रकाश की शोभा अकथनीय है ।

दरवाजे उपर के, एह छज्जे देहेलान ।
सो उंचे चढ़े चांदनीअ में, घेरा नूर रोशन जिमी आसमान ।।७३।।

रंगमहल के मुख्य दरवाजे के हांस के छज्जे (पड़शाल) व दहलान (स्तम्भ) उसी प्रकार दसवीं चांदनी में भी आये हैं । दसवीं चांदनी की किनार पर चारों तरफ दहलानों, १२,००० गुम्मटियों, २०१ बड़ी गुम्मटियों, कंगूरे-कांगरियों की शोभा आयी है, जिसकी नूरमयी रंगबिरंगी किरणें धरती-आकाश सब जगह जगमगाती हुई दिखायी दे रही हैं ।

मरजादा दस मंदिर लो, चांदनी से उंचे जान ।
सो नूर रोशनी झलकत, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।७४।।

दरवाजे के दस मंदिर के हाँस की शोभा चाँदनी से ऊंची आई है (एक भोम ऊंचे देहलान आये हैं, जिसमें दस स्तम्भों की चार हारें आयी हैं) जिसकी नूरमयी रोशनी चारों ओर झलकार कर रही है । उसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में बसी होती है ।

लम्बाई दस मंदिर लों, चौड़ाई चार की होए ।
ज्यूं ही तले त्यूं ही उपर, शोभित है अति सोए ।।७५।।

१० मंदिर की हांस में चाँदनी में १० मंदिर लंबी व ४ मंदिर चौड़ी देहलान की शोभा आई है । ये स्तम्भ नीचे के भोमों के अनुसार ही रंगों व नगों के शोभायमान हैं (क्रमशः हीरा, माणिक, पुखराज, पाच, नीलवी)।

चारों खुने चार गुमटी, चारों तरफ कठेड़ा बैठक ।
तिन कठेड़े द्वार एक, जित कबूं बैठत हक ।।७६।।

दस मंदिर के हांस में आये दहलानों की चाँदनी के चारों कोनों पर चार गुम्मटियों की शोभा है तथा चारों ओर किनार पर कठेड़े से लगकर बैठक (सिंहासन व कुर्सियों) की शोभा है । उस कठेड़े में एक दरवाजा है (जहां दोनों

गुर्जो के द्वार हैं), वहाँ श्री राज श्यामाजी कभी कभी विराजमान होते हैं ।

इत दुलीचन पर, रूहें बैठनहार ।
मिल मीठी बातां करे, संग जुगल सरूप बिहार ॥७७॥

यहां गलीचों पर सखियाँ अक्सर बैठती हैं, तथा युगल स्वरूप के साथ मीठी मीठी बातें करते हुए कई तरह से आनंदपूर्वक लीला विहार करती हैं ।

चांदनी मध चबूतरा, दोए सौ छोटी हांस दरम्यान ।
तिनके चारों तरफों उतरती, सीढ़िया चार तू जान ॥७८॥

दसवीं आकाशी (छत) के मध्य में एक कमर भर ऊंचा चबूतरा है, जिसमें २०० छोटे हाँस हैं । इसके चारों दिशा में ४ सीढ़ियाँ उतरी हैं ।

गिरद फिरता कठेड़ा, मध्य बड़ा सिंघासन ।
ता उपर छत्री बनी, गिरद खेले रूहें रोशन ॥७९॥

चबूतरे की किनार पर चारों तरफ कठेड़े की शोभा है । चबूतरे के मध्य में एक बड़ा सिंहासन रखा है, जिसके ऊपर छत्र की शोभा है । इसके चारों तरफ सखियां (ब्रह्मप्रियाएं) अनेक प्रकार से खेलते हुए हांस-विलास करती हैं ।

जुगल सरूप बैठत, इन सिंघासन जब ।
रूहें अरज करत है, और सुख पावें तब ॥८०॥

जब युगल स्वरूप श्री राजश्यामाजी सिंहासन पर विराजते हैं, तो सखियाँ अर्जी (प्रेम भरी बातें, साथ में खेलने के लिये निवेदन) करते हुए अपार सुख पाती हैं ।

सैयां चबूतरे पर, बैठत हैं सबै भराए ।
कोई खेले हंसे रमे, ए सुख आवत न जुबाए ॥८१॥

१२,००० सखियाँ सम्पूर्ण चबूतरे पर बैठ जाती हैं, कोई सखी खेलती है, कोई हँसती है, तो कोई आनंदपूर्वक रमण करती है । ये सुख इस जिह्वा के शब्दो में नहीं आ सकते ।

चांदनी के चारों कोने, चार चेहेबच्चा नूर ।
ताके सोले हांस बने, क्यूं कहूं चेहेबच्चा जहूर ॥८२॥

रंगमहल की चाँदनी पर बीच के चबूतरे के चारों कोनों पर चार चेहेबच्चे आये हैं, जो १६-१६ हाँस के हैं । उन चेहेबच्चों की शोभा बेशुमार है ।

चेहेबच्चा सोले हांस का, बन्यो चबूतरों दरम्यान ।
गिरद फिरता कठेड़ा, चार सीढ़ियां चार तरफ जान ॥८३॥

एक मंदिर के चौड़े चबूतरे (रौंस) के मध्य १६ हांस का चेहेबच्चा आया है । ऐसे ही चारों चेहेबच्चे शोभायमान हैं । इस चबूतरे की किनार पर चारों तरफ कठेड़ा आया है तथा चारों तरफ से जल चबूतरे पर सीढ़ियां उतरी हैं ।

चबूतरे गिरदवाए, फूल बाग बने नूर ।
बीच फुहारे उछलत, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥८४॥

मध्य के चबूतरे के चारों ओर चाँदनी पर नूरमयी फूलों के बाग सुशोभित हैं । जिनके बीच बीच में नहरों व फव्वारों की शोभा अकथनीय है ।

ज्यों तले के चार चेहेबच्चे, तिन मुकाबिल चांदनी के होए ।
एह शोभा है अति बड़ी, सो शोभित है अति सोए ॥८५॥

जिस प्रकार नीचे के चार १६ हांस के चेहेबच्चों की शोभा है, उसी प्रकार चांदनी में भी मध्य के चबूतरे के चारों कोनों में चार १६ हांस के चेहेबच्चे शोभायमान हैं ।

हर मंदिरों आवन के, दादरे बने सब नूर ।
द्वार सब आवे तब खुले, फेर मिल जाए चांदनी जहूर ॥८६॥

रंग महल के प्रत्येक मंदिर से ऊपर आने के लिये नूरमयी सीढ़ियाँ बनी हैं । जब चाँदनी पर आना होता है, तब दरवाजे (छत) खुल जाते हैं । उसके बाद दरवाजे (छत) बंद होकर एक समान छत हो जाता है ।

जो खड़े रहे चांदनी, सो तले से दे दिखाए ।
सो तले खड़ी रहेते, ता उपर लों शोभाए ॥८७॥

जो चांदनी में खड़े रहते हैं, वे नीचे प्रथम भोम से दिखायी देते हैं, और जो नीचे के भोम में खड़ी रहती है, वह ऊपर चांदनी तक शोभायमान होती है ।

सो सब नूर वास्ते, इत कहूं नाहीं अटकाव ।
नाहीं पटन्तर निमूना, तो क्यों कहूं ए भाव ॥८८॥

क्योंकि यहां की सारी शोभा नूरमयी होने से कहीं भी कोई वस्तु आड़े नहीं आती है । इसका कोई दूसरा नमूना है ही नहीं, तो वर्णन किस प्रकार करें ?

चांदनी पर खड़े रहिये, सब ठौरों देखत पुखराज ।
चारों बन ठौर सब नूर की, होत सब इत काज ॥८९॥

जब चाँदनी पर (उत्तर दिशा) में खड़े होते हैं तो पुखराज पहाड़, चारों वन (बड़ोवन, ताड़वन, मधुवन, महावन) आदि सारे नूरमयी स्थान दिखायी देते हैं । इस प्रकार मन की इच्छानुसार सुख प्राप्त होते हैं ।

सातों घाट दोए पुल, कुंज बन होज कौसर ।
नेहेर मोहोल जित फुहारे, परत चौबीस गुरजो पर ॥९०॥

पूर्व में सातों घाट तथा दोनों पुल (केल पुल व बट पुल) दिखायी देते हैं। दक्षिण में कुंज-निकुंज, हौज कौसर तालाब व २४ हाँस के महल दिखायी देते हैं, जहां (चांदनी पर) २४ फुहारें उछलकर २४ गुर्जों पर गिरते हैं ।

और मानिक मोहल के, और गृद फिरते ताल ।
सब देखाई देत है, होत मोमिन दिल खुसाल ॥९१॥

साथ ही दक्षिण दिशा में माणिक पहाड़ तथा उसके चारों ओर आये तालों आदि की सारी शोभा दिखायी देती है, जिसे देखकर ब्रह्मप्रियाओं का हृदय प्रसन्न हो जाता है ।

बन नेहेरां आगे हवेलियां, ए जो कही चार हार ।
आगे रांग सागरन की, जित मोहोलों करत बिहार ॥९२॥

वन की नहरों (वन के महलों) के आगे जो चार हार हवेलियां कही गयी हैं, उसकी शोभा तथा सागरों के चारों ओर आयी बड़ी रांग के हवेलियों की शोभा भी दिखायी देती है, जहां श्री राजश्यामा जी एवं सखियां लीला विहार करते हैं ।

आठो सागरों की मोहलात, बीच टापू जो नूर ।
सब देखाई दे चांदनी से, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥९३॥

आठों सागरों के बड़ी रांग की महाहवेलियां एवं नूरमयी टापू महल इत्यादि की संपूर्ण शोभा चाँदनी से दिखाई देती है । इस अवर्णनीय शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं ?

महामत कहे ए मोमिनों, एह नेक कह्या तुम कारन ।
इन को वार न पार कहूं, सो तुम सब जानत रोशन ॥९४॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आपके लिये ही परमधाम का थोड़ा सा वर्णन किया है । इसका कोई पारावार नहीं है । उसकी शोभा को आप अच्छी तरह जानते हो ।

प्रकरण २७, चौपाई १५३१

अब सबकी जमा को प्रकरण

प्रसंग - श्री महामति जी श्री रंगमहल के नौ भोम दसवीं आकाशी के विस्तार का वर्णन कर रहे हैं । मंदिर, हवेलियों, स्तम्भों की गणना बतायी गई है, जिनमें युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी सखियों के संग लीला विहार करते हैं ।

कहुं सब जमा की, नव भोम लों विस्तार ।
दोए हार मंदिरन की, चार चार हवेलियां सुमार ।।१।।

रंगमहल की नौ भोमों की सम्पूर्ण गणना विस्तार से कहता हूं। रंगमहल के प्रत्येक भोम में मंदिरों की दो हारों के भीतरी तरफ चौरस हवेलियों के चार हारों की शोभा आयी है ।

ताके अन्दर मंदिर, गिनती ताकी होए ।
और मूल मिलावे के मंदिर, चौथी भोम निरत के सोए ।।२।।

उन हवेलियों के अंदर विद्यमान मंदिरों की गणना होगी । मूल मिलावे के मंदिर और चौथी भोम में विद्यमान नृत्य की हवेली की भी गणना की जायेगी ।

और पांचमी भोम पौढ़न के, नव चौकों सुमार ।
इन सबकी जमा मंदिरन की, नव भोम जुदे जुदे करो विचार ।।३।।

तथा पांचवी भोम में जो शयन के नौ चौक (महाहवेलियां) हैं, उन सबको मिलाकर मंदिरों की गणना की जायेगी । नौ भूमिका के मंदिरों का अलग-अलग विचार कीजिये ।

नव लाख पचीस हजार, चार सौ और बारे उपर ।
तिन मंदिरन के द्वार की, गिन जमा करो खातर ।।४।।

रंगमहल की नौ भोम में कुल मन्दिरों की संख्या ९,२५,४१२ है । अब

उन मंदिरों के द्वारों की पूर्ण गणना करेंगे ।

द्वार अट्ठइस है लाख, और सत्तावन हजार ।
पाँच सौ छियालीस ता उपर, होए जुगल सरूप बिहार ।।५।।

रंगमहल के मंदिरों में कुल २८,५७,५४६ दरवाजे आये हैं, जहाँ पर श्री युगल स्वरूप विहार करते हैं ।

हर एक मंदिर के, ए जो मंदिर कहे गृदवाए ।
सो देखन के पांच भए, गिनती में चार होए ।।६।।

रंगमहल के चारों ओर जो बाहरी हार मंदिर आये हैं, उनमें से एक मंदिर में दिखने में ५ किंतु गिनती के ४ दरवाजे शोभायमान हैं ।

लाल चबूतरों के, देखन के छेः होए ।
हिसाब में पांच है, कहे द्वार गिनती सोए ।।७।।

रंगमहल की उत्तर दिशा में लाल चबूतरे से लगकर जो १२०० मंदिर आये हैं, उनमें दिखने में ६ किंतु गिनती के ५ दरवाजे शोभायमान हैं ।

और हवेलिन के, देखन के द्वार चार ।
हिसाब में तीन तीन हैं, करे जुगल सरूप बिहार ।।८।।

अंदर हवेलियों के प्रत्येक मंदिरों में दिखने में ४-४ किंतु गिनती के ३-३ दरवाजे आये हैं, जहाँ युगलस्वरूप विहार करते हैं ।

भुलवनी में देखन के, द्वार देखत चार ।
हिसाब में दो कहे, जित रूहें रमन हार ।।९।।

भुलवनी के मंदिरों में दिखने में ४ किंतु गिनती के २ दरवाजे आए है जहाँ पर सखियाँ हांस-विनोद करती हैं ।

पांचमी भोम में, देखने के है चार ।
हिसाब में तीन कहे, ताको मोमिन करो विचार ।।१०।।

पाँचवी भोम के ९ चौकों के प्रत्येक मंदिर में दिखने में ४ किंतु गिनती के ३ दरवाजे आये हैं । हे मोमिनों, उसका विचार कीजिये ।

कहूं थम्भन का हिसाब, बाईस लाख पचीस हजार ।
सात सौ तीस उपर, सबका मोमिन देखो सुमार ।।११।।

रंगमहल के अंदर स्थित सम्पूर्ण स्तम्भों की संख्या २२,२५,७३० है । ब्रह्मात्माओं, आप उन सबका हिसाब देखिये।

तिन थम्भन के मेहेराब, अड़तालीस लाख छियालीस हजार ।
उपर तीन सौ छिहत्तर, जित नित होत बिहार ॥१२॥

उन सभी स्तम्भों की ४८,४६,३७६ महरावें आई हैं । जहाँ अहर्निश प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं होती हैं ।

कहूं चबूतरन के, गिनती हिसाब ठौर ।
हर हवेली आगे आठ, बिना मोमिन ना देखें और ॥१३॥

रंग महल के अंदर सम्पूर्ण चबूतरों की गिनती बता रहे हैं । प्रत्येक हवेली के चारों ओर (मुख्य दरवाजे के दायें-बायें) ८ चबूतरे आये हैं, जिन्हें ब्रह्मात्माओं के अलावा कोई नहीं देख पाता।

छाछठ हजार छै सौ अट्ठाइस, ए सबको कियो सुमार ।
और नव भोम के, चोतरी सीढ़ियाँ करो विचार ॥१४॥

सम्पूर्ण चबूतरे ६६,६२८ होते हैं । अब ९ भोमों में छोटे चबूतरों (चांदों) और उनकी सीढ़ियों का विचार करो ।

छे हजार चोतरी, सीढ़िया छत्तीस हजार ।
हर द्वार आगे छ छ, तीन दाए बाए किनार ॥१५॥

६,००० चबूतरों (चांदों) की ३६,००० सीढ़ियाँ आयी हैं । हर दरवाजे के आगे चबूतरों (1–1चांदों) के दायें-बायें ३-३ सीढियाँ आई हैं ।

ताकी गिनती चोतरन की, जो छूटक विस्तार ।
सात भोम लेखा किया, तले उपर छोटा विस्तार ॥१६॥

सातों भोमों (तीसरी ने नौवी) में नीचे ऊपर के छोटे चबूतरों की अलग-अलग गिनती विस्तार से की है ।

जो तीसरी भोम की, छे मंदिर चौतरी ।
छे सीढ़ियां दो बाहिर, हर मंदिर आगे उतरी ॥१७॥

तीसरी भोम के दहलान के दायें-बायें जो ३-३, कुल ६ मंदिर हैं, उनके पश्चिम दिशा के दरवाजे के सामने ६ चबूतरे (चांदे) शोभा ले रहे हैं । जिनसे दायें-बायें ३-३ सीढ़ियाँ उतरी हैं ।

यों छे द्वार आगे कहे, छे चौको छत्तीस चोतरी नूर ।
ताके सात छक बेयालिस, सीढ़ी दोए सौ बावन जहूर ॥१८॥

इस प्रकार ६ दरवाजों के आगे ६ चबूतरों (चांदो) से ३६ नूरमयी सीढ़ियां उतरी हैं । इस प्रकार सात भोम (तीसरी से नौवी) में ७x ६=४२ चबूतरों की कुल २५२ सीढ़ियाँ शोभायमान हैं ।

ए दस मंदिरन की देहेलान, जो चढ़ती चली उपर ।
तिन की चोतरी सीढ़ियाँ, नेक जमा करो खातर ॥१९॥

दस मंदिर की दहलान तीसरी भोम से लेकर नौवी भोम तक एक के ऊपर दूसरी आती गयी है । उनके छोटे चबूतरों और सीढ़ियों की सब गणना बता चुके हैं।

अब देखो तुम गलियां, नवों भोम में सब ।
तीस हजार एक सौ अड़सठ, सब मिल देखो जब ॥२०॥

अब आप नौ भोम के कुल गलियों की संख्या देखो । नौ भोमों में कुल ३०,१६८ गलियाँ आई हैं । आप सब मिलकर इनकी शोभा देखो।

तब तुम को उपजे अंग में, हक का जो इशक ।
तिन आकार के सरत से, सब विध होए बेसक ॥२१॥

तब आपके हृदय में प्रियतम श्री राज जी का इश्क पैदा होगा और तन में इश्क आने से सब प्रकार से बेशक हो जायेंगे।

अब कहूं हवेलिन की, आठ हजार तीन से ।
ए देखो तुम बेवरा, मिल कर बैठो तिन में ॥२२॥

अब हवेलियों की संख्या कहती हूं । कुल ८,३०० हवेलियां आयी हैं । उनकी शोभा का वर्णन देखकर अब सब सुंदरसाथ मिलकर उनमें बैठो ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए कही भोम दस धाम ।
वार ना पार वाहेदत का, ए नाहीं फना बुध काम ॥२३॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! रंगमहल की १० भोमों का वर्णन किया है । स्वलीला अद्वैत परमधाम की भूमिका का कोई पारावार नहीं है । उसका वर्णन करना नश्वर संसार की बुद्धि से सम्भव नहीं है ।

प्रकरण-२८, चौपाई-१५५४

कलस लिखा है

प्रसंग - लाल दास जी महाराज कृत बड़ी वृत में श्री राज जी ब्रह्मात्माओं को हुक्म की महिमा बता रहे हैं । शब्दातीत परमधाम की अखंड लीला का वर्णन कर रहे हैं, जिसकी खबर अक्षरब्रह्म को भी नहीं है । श्री राज जी का हुक्म ही आपको ब्रह्म वाणी के माध्यम से परमधाम की अखंड लीला दिखा रहा है । ब्रह्मात्माओं के वास्ते अर्श का इलाही खजाना इस जमीन पर लेकर आएं हैं । तीन ब्रह्मांड और छः दिन की ब्रह्म लीला का वर्णन हुआ है । तीन सृष्टि - जीवसृष्टि, ईश्वरी सृष्टि और ब्रह्मसृष्टि के भेद रूहों के वास्ते जाहिर हुए हैं ।

अब तुम सुनो मोमिनों, ए नेक कह्या अरस ।
इन को वार न पार कहूं, जेता कहे तिनसे सरस ।।१।।

हे सुंदरसाथ जी ! अब आप ध्यान से सुनिये । हमने परमधाम का थोड़ा सा वर्णन किया है । इसका तो पारावर (अंत, सीमा) ही नहीं है । इस शोभा का जितना भी वर्णन करते हैं, वह पहले से और अधिक सुंदर व आकर्षक लगता है ।

केहेनी उत पोहोंचे नहीं, ए तो शब्दातीत के पार ।
जाकी नहीं खबर नूर को, ए जो कह्या नित बहार ।।२।।

उस दिव्य परमधाम तक यहां के शब्द नहीं पहुंचते । वह तो शब्दातीत कहे जाने वाले बेहद मण्डल (अखण्ड ब्रज-रास) से भी परे है । इसका ज्ञान अक्षर ब्रह्म को भी नहीं है, जो परमधाम की अखण्ड लीला विहार का वर्णन किया गया है ।

एह तो हक का हुकम, तुमको दिखावत इत ।
वास्ते तुम को जगावने, उठाया चाहे क्यामत ।।३।।

यह तो श्री राजजी का हुक्म ही आपको जागृत करने के लिये यहाँ परमधाम का वर्णन सुना रहा है । वह आपको परमधाम मूलमिलावे में जागृत करके कियामत करना चाहता है ।

तो खिलवत खाना अरस का, जाहेर किया इन ठौर ।
तुम वास्ते इन जिमीय में, बका फजर करी भोर ।।४।।

इसीलिये इस नश्वर संसार में परमधाम के रंगमहल की गुह्य बातें

(स्वरूप, लीलाएं) प्रकट की हैं । आपके कारण ही इस अज्ञानमयी जगत् में अखण्ड परमधाम के ज्ञान का उजाला (प्रभात) किया है ।

पेहेले आए तुम वृज में, रहे अग्यारे बरस और बावन दिन ।
एक रात रहे रास में, भई जोगमाया रोशन ।।५।।

आप ब्रह्मसृष्टियाँ परमधाम से सर्वप्रथम ब्रजमंडल में आये । वहां ११ वर्ष ५२ दिन तक अनेक प्रकार से लीला किये । उसके बाद योगमाया के नित्य वृंदावन में जाकर, वहां की एक रात में रास लीला खेले ।

तहां तुम को देखाइया, एक विरह और बिलास ।
फेर रही तुमें उमेद, छूटे न जिमी की आश ।।६।।

वहां धाम धणी ने हमें विरह और विलास दोनों का अनुभव कराया । किंतु फिर भी हमारी दुख का खेल देखने की चाहना बाकि रह गयी । मायावी जगत की आशा पूरी नहीं हुयी ।

तब एह ब्रह्माण्ड तीसरा, रचया तुम कारन ।
जैसा पहले था तैसा हुआ, ए तीसरा भया सुपन ।।७।।

तब आपके लिये इस तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड की रचना हुयी । पहले के ब्रह्माण्ड में जैसे ब्रजमण्डल, यमूना जी, वृंदावन आदि थे, वैसे ही सब कुछ तीसरे स्वाप्निक ब्रह्माण्ड में पुनः बन गये ।

एही कहे तीन तकरार, लैलत कदर के ।
तिन में आए रसूल, जिमी बरारब किए ।।८।।

ये ही महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीन भाग (तकरार) कहे गये हैं । तीसरे भाग (ब्रह्माण्ड) में अरब की धरती पर रसूल स.अ.व. आये ।

तहां आए दावत करी, वास्ते गिरो मोमिन ।
तब तुम अजूं आए नहीं, राह सरियत बताई सब जन ।।९।।

वहां आकर मोमिन (ब्रह्मात्माओं) की खातिर सारी दुनिया को शाश्वत सुख व शांति की दावत (आमंत्रण) दी । उस समय आप सब मोमिन खेल में नहीं आये थे । इसलिये सब लोगों को शरीयत की राह बता दी ।

वाएदा किया हम आवेंगे, होए मेरी तीन सूरत ।
बसरी मलकी और हकी, दसमी अग्यारे बारै सरत ।।१०।।

मुहम्मद साहब ने पुनः आने का वायदा किया और कहा कि मेरी कुल तीन सूरतें होंगी- बशरी, मलकी और हकी । बाकि दो सूरतें दसवीं, अग्यारहवीं व बारहवीं सदी में जाहिर होंगी ।

जब एह सूरत आवहीं, करें दावत इन जहान ।
तब जो ईमान ल्यावहीं, होए मोमिनों गिरो पेहेचान ।।११।।

मेरी ये सूरतें संसार में जब आयेंगी, तब सारे संसार को ब्रह्मज्ञान का दावत (आमंत्रण) देंगी । उस समय ब्रह्मात्माओं को उनकी पहचान होगी, और वे उन पर विश्वास ले आयेंगे।

हक सुभान भेजेगा, अरस सेती उतरे मोमिन ।
फिरस्ते नूर मकान से, सब दुनी देखे रोशन ।।१२।।

जब हक सुब्हान (प्रियतम अक्षरातीत) अर्शे आज़म (परमधाम) से मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को तथा नूर मकान (अक्षर धाम) से फरिश्तों (ईश्वरी सृष्टि) को संसार रूपी खेल देखने भेजेंगे, तब सारी दुनियाँ ब्रह्मज्ञान का प्रकाश देखेगी ।

आवे जबराईल इनों वास्ते, होए मोमिनों पर निगेबान ।
करे वकीली इनों की, होए तीनों गिरों की पेहेचान ।।१३।।

उन मोमिनों के लिये जिब्रील (राजजी का जोश) आयेगा । वह ब्रह्मात्माओं की निगेहबानी करेगा (नजर में रखेगा) और वकील की तरह सत्य-असत्य की पहचान करायेगा । तब उन्हें तीनों सृष्टि की पहचान हो जायेगी ।

आम खास खासल खास, जुदे मरातबे होवे तीन ।
चले चाल तीनों जुदी, तीनों ठौर पोहोंचे तीनों तन ।।१४।।

आम (जीव सृष्टि), खास (ईश्वरी सृष्टि) व खासलखास (ब्रह्मसृष्टि) तीनों की अलग-अलग महिमा (शोभा) है । उन तीनों की रहनी भी अलग अलग होती है। अंततः तीनों अपने-अपने मूल (उद्गम) स्थानों में पहुंचेंगे ।

जो आया जिन ठौर से, तिन का तहां ही बिसराम ।
खाना वही रूह खावहीं, उनका वही इसलाम ।।१५।।

जो सृष्टि जहाँ से आयी है, वहीं पर उसका आनंद होता है, वहीं उसे शांति प्राप्त होती है । वहीं का ज्ञान उसे अच्छा लगता है ।

उतरे अरस अजीम से, कहे खासल खास मोमिन ।
खास गिरो फिरस्तन की, इनका नूर मकान है तन ।।१६।।

दिव्य परमधाम (अर्शे अज़ीम) से खासुलखास मोमिन (ब्रह्मसृष्टियां) संसार में अवतरित हुये हैं और खास गिरोह फरिश्तों (ईश्वरी सृष्टि) की है, जिनके मूल तन अक्षरधाम में हैं ।

तीसरी खलक आम जो, इन का घर मलकूत ।
सो सरियत को छोड़े नहीं, सो पकड़े रहे नासूत ।।१७।।

तीसरी जो आम खलक जीव सृष्टि है, उसका घर (मूल उद्गम स्थान) बैकुंठ है । वे शरीयत (कर्मकांड के नियम-सकाम भक्ति) नहीं छोड़ते, क्योंकि इनकी संसारिक कामनायें कभी खत्म नहीं होती ।

मोमिन हकीकत लेय के, पोहोंचे जाये मारफत ।
अरस दिल इन का कह्या, आए बैठी हक सूरत ।।१८।।

ब्रह्मात्माएं प्रियतम अक्षरातीत का सत्य ज्ञान (हकीकत) लेकर मारिफत (परम सत्य) को प्राप्त करेंगी । इनका दिल खुदा का अर्श कहा है । हक माशूक का स्वरूप उनके दिल में आकर विराजमान हो जाता है ।

मुतकी नूर मुलक से, सो संग ना छोड़े मोमिन ।
ए वारस अपने ठौर के, रहे दिल इनों का रोशन ।।१९।।

परहेजगार ईश्वरी सृष्टि, जो अक्षर धाम से आये हैं, वे ब्रह्मसृष्टि का साथ नहीं छोड़ते। वे अपने अक्षरधाम के हकदार (वारिस) हैं । उनका दिल ब्रह्मज्ञान से प्रकाशमान रहता है ।

तीसरी आम मलकूत, जिनको उदर उपासना काम ।
ते सभी संग इन के रहे, रहे दिल अपने ठाम ।।२०।।

तीसरी जो वैकुंठ की जीवसृष्टि (आमखलक) है, उनका पूजा पाठ मात्र पेट के पालन पोषण (संसारिक स्वार्थ) के लिये होता है । वे भी ब्रह्मसृष्टियों के साथ में रहेंगे पर उनका दिल अपने मूल उद्गम स्थान (वैकुण्ठ) पर ही लगा रहेगा ।

जब नव से नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब ।
मिसल गाजी मोमिन, हजरत ईसा उतरे तब ।।२१।।

रसूल मुहम्मद साहब को दुनिया से गए जब ९९० वर्ष ९ महिने हो गए, तब मर्द (आत्मबल से युक्त) ब्रह्मात्माओं की जमात के साथ हजरत ईसा (सतगुरु निजानंद स्वामी के रूप में) पुनः संसार में आए ।

साल चालीसों पैगंमरी, उतरी तिनों को इत ।
किल्ली कलाम अल्ला की, सो ल्याए अपनी सरत ।।२२।।

परब्रह्म अक्षरातीत के हुक्म से ईसारूहूल्ला (श्रीश्यामाजी) को ४० वर्ष की पैगंबरी (बादशाही) प्राप्त हुई । कुर्आने पाक के रहस्यों को खोलने के लिये तारतम ज्ञान रूपी चाबी वे अपने साथ लेकर आए ।

तिन आन दावत करी, उन बखत ल्याए ईमान ।
वही गिरो मोमिन की, भई तिनों को पेहेचान ।।२३।।

उन्होंने आकर सारी दुनिया को ब्रह्मज्ञान की दावत (आमंत्रण) दी । उस समय जो विश्वास लाये, वे ही ब्रह्मात्माएं (मोमिन) हैं, जिनको प्रियतम परब्रह्म की पहचान हो गई है ।

तिन किल्ली दई इमाम की, बका द्वार खोले जब ।
तिन दावत करी जहान में, गिरो मोमिन मिले आए तब ।।२४।।

हजरत ईसा रूहूल्ला (निजानंद स्वामी) ने तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) रूपी चाबी, जब इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) को दी, तब उन्होंने अखण्ड परमधाम का द्वार खोल के सारे संसार को ब्रह्मज्ञान की दावत दी। उस समय मोमिन (ब्रह्मात्माएं) जागृत होकर उनसे मिलीं ।

जो हुआ तिनसे मुनकर, वही काफर काला दज्जाल ।
होवे दोजक तिन को, कबूं ना होए खुसाल ।।२५।।

जिन्होंने इस सत्य ज्ञान को ठुकरा दिया (नहीं माना), वे ही दज्जाल के स्वरूप नास्तिक लोग हैं । अंततः उन्हे दोजख (पश्चाताप) ही प्राप्त होगा, वे कभी भी सुख-शांति को नहीं प्राप्त कर पायेंगे ।

आए तिन बखत में, सोई गिरो मोमिन ।
तिन पेहेचान्या हक को, तिन का हुआ दिल रोशन ।।२६।।

उस समय जो ईमान (विश्वास) लेकर धामधणी के चरणों में आए, वे ही सच्चे मोमिन आत्माएं है । उन्होंने ही प्रियतम अक्षरातीत की पहचान की, जिससे उनका दिल ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित हो गया ।

करे सरे तोरे को खबर, बखत बताया क्यामत ।
जो हुए तिनसे मुनकर, तिनको आई दोजक की सरत ।।२७।।

कियामत के समय की जानकारी देते हुए शरीयत के बादशाह को खबर दी गई । फिर भी जो ईमान नहीं लाये और पैगाम को ठुकरा दिया, उनके लिये दोजख की घड़ी नजदीक है ।

एह तो बोलावे इसलाम में, पोहोंचावे ठौर हक ।
दुनियां को छोड़ावही, ए तामे ल्यावे सुभे शक ।।२८।।

आप इमाम महदी साहिब (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) दुनिया वालों को शाश्वत सुख-शांति के लिये आमंत्रित कर रहे हैं, उन्हें खुदायी इल्म (ब्रह्मज्ञान) दे रहे हैं, दुनियावी ख्वाहिशों (आशा–तृष्णा) को छुड़ा रहे हैं, किंतु वे लोग उसमें भी संशय करते हैं ।

एह खेंचे तरफ हक की, इत देवे हक पैगाम ।
ए तिन को मारन चाहे, और नाम धरावे इसलाम ।।२९।।

वे बुद्ध निष्कलंक स्वरूप (इमाम महदी साहिब) एक परब्रह्म अक्षरातीत की उपासना का संदेश देकर, उनके अखण्ड सुखों की तरफ सबको खींच रहे हैं, और कुछ दुनिया वाले उन्हें दीने इस्लाम के नाम पर मारना चाहते हैं ।

इन द्वार खोले बका के, तिन में बोलावे बतावे हक ।
ए सामे लड़ाईयां करें तिनसों, तिन को हुआ बखत दोजक ।।३०।।

श्री जी साहिब ने अखंड परमधाम का ज्ञान दुनिया में प्रकट कर दिया है और प्रियतम परब्रह्म का स्वरूप बताकर परमधाम में बुला भी रहे हैं । किंतु अज्ञानी लोग सामने आकर उनका विरोध करते हैं । ऐसे लोगों के लिये दोजख (नर्क) का समय नजदीक है ।

इन खोली आठों भिस्त को, और दई हक पेहेचान ।
सरा तिन को माने नहीं, ल्यावे नहीं ईमान ।।३१।।

हक तआला (प्रियतम परब्रह्म) की पहचान कराके इमाम महदी साहिब ने आठों बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) के दरवाजे खोल दिये हैं । किंतु शरीयत (कर्मकाण्ड के नियमों) का पालन करने वाले लोग उस ज्ञान को नहीं मानते हैं, तथा उस पर विश्वास नहीं लाते हैं ।

चाहिए मदत करना तिनका, जो एक दीन करे इसलाम ।
ए सामे तिनसों लड़े, जाने हम किया दीन का काम ।।३२।।

जो धार्मिक मतभेदों को दूर करके एक सत्य धर्म की स्थापना करना चाहता है, हमें उसकी सहायता करनी चाहिये । लेकिन कट्टरपंथी कर्मकाण्डी उसका विरोध व झगड़ा करने को ही अपना धर्म समझते हैं ।

अन्दर बैठा दुश्मन, दिया जाहेर नजर में दीन ।
राह मारी सबों की अन्दर, तो छीन ल्याया आकीन ।।३३।।

उनके अंदर अज्ञान-दुर्बुद्धि का रूप दज्जाल बैठा है, जो सभी आदम की औलाद (दुनिया वालों) का दुश्मन है । वह सबकी नजरों में धर्म के जाहिरी स्वरूप को ही सत्य दर्शा रहा है । इस प्रकार अंदर (हृदय) से भ्रमित करके सबको पथभ्रष्ट कर रहा है और परमात्मा के प्रति सबका विश्वास छीन लिया है ।

ना तो बुरा ना चाहे कोई आप को, थे सब कोई उमेदवार ।
दिन होएगा सिफाएत का, तब हम पावें दीदार ।।३४।।

नहीं तो इस संसार में कोई भी अपना बुरा नहीं चाहता । समस्त दुनिया वाले इस आशा में थे, कि मुहम्मद साहब हमारी सिफायत (ज्ञान प्रदान) करेंगे और हमें अल्लाह तआला (परमात्मा) का दीदार होगा (यहां तारतम ज्ञान के द्वारा चितवनि कर दीदार प्राप्त करने का प्रसंग है, ना कि तन के दीदार का)।

जब की दुनी पैदा भई, सब तिनके थे उम्मेदवार ।
हमको होए सिफाएत, पावें हक दीदार ।।३५।।

जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुयी है, तभी से सारी दुनिया ब्रह्मज्ञान पाने की इच्छुक है, कि हमें कोई परमात्मा के स्वरूप, धाम व लीला की पहचान कराये, जिससे हम ध्यान द्वारा परमात्मा का दर्शन प्राप्त कर सकें ।

जब इत आए रसूल, करी सिफाएत ।
कौल अपना पूरा किया, करी जाहिर दावत ।।३६।।

जब रसूल साहब संसार में हकी सूरत के रूप में पुनः आये, तब उन्होंने तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) के द्वारा सिफायत करके अपना वादा पूरा किया और दुनिया वालों को शाश्वत सुख व शांति की दावत (आमंत्रण) दी ।

तब मोमिन ल्याए ईमान, आलम ल्याई इत सक ।
वह तो आए पीछे फेर, अब आया समे दोजक ।।३७।।

तब मोमिन (ब्रह्मात्माएं) उन पर ईमान (विश्वास) लाये, किंतु अन्य सारे लोगों ने संशय किया । दुनिया वाले भी बाद में ईमान तो ल्याए, किंतु तब दोजख का समय सामने आ गया ।

ए अग्यारे सौ बरस आगूं, करी इत आए पुकार ।
इत कान किनों ना दिया, गिरो मोमिन हुए खबरदार ।।३८।।

रसूल साहब ने ग्यारह सौ वर्ष पहले से ही आकर (सिफायत व अल्लाह के दीदार से संबंधित) उपरोक्त सारी बातें बता दी थीं, किंतु किसी ने भी उनकी बातें ध्यानपूर्वक नहीं सुनी । अब उन बातों को पढ़कर मोमिन (ब्रह्मात्माएं) सावचेत हो रहे हैं (मुहम्मद हकी सूरत पर यकीन कर रहे हैं) ।

भिस्त दोजक जाहिर हुई, कहे जो सात निसान ।
हुई कायम क्यामत, कर देउं ताकी पेहेचान ।।३९।।

अब बहिश्त व दोजख दोनों जाहिर हो गये हैं । जो सात बड़े निशान रसूल साहब ने बताये थे, वे भी स्पष्ट हो चूके हैं । इस प्रकार कियामत कायम (स्थित) हो चूकी है। अब उसकी पहचान कराता हूं।

छे दिन वाके कुरान में, सो खुले माएने जब ।
तब जानों आया बखत, काएम हुई साएत तब ।।४०।।

जब कुर्आने पाक में लिखे खुदा के ६ दिन के रहस्य खुल गए, तब समझो कि कियामत का समय आ गया। तब यह सारा संसार अखण्ड हो जायेगा।

दाभा हुई जाहिर, उगा सूर मगरब ।
रोशन तिन में है नाही, हुई सब में खसलत हैवानी तब ।।४१।।

कुर्आन पाक में लिखे अनुसार दाब्बतुलअर्ज जानवर (मनुष्य में पशु के गुण) संसार में प्रकट हो गया है, जिससे दुनिया के तमाम लोगों के अंदर हैवानी फितरत (पाश्विक वृत्ति) आ गयी है । पश्चिम वालों (दुनिया) के दिलों में अज्ञानता रूपी बिना रोशनी के सूर्य का उदय हो गया है ।

नातर दावत रसूल की, क्यों छोड़े इन ठौर ।
कौन खाले कलाम अल्ला को, है महंमद बिना कोई और ।।४२।।

नहीं तो जिसके पास थोड़ी सी भी समझ हो, वह ऐसे अनमोल समय में रसूल साहब (हकी सूरत) की दावत को कैसे ठुकरा सकता है ? कलाम अल्लाह के मायने हकी सूरत मुहम्मद के सिवाए अन्य कौन स्पष्ट कर सकता है ?

क्यूं फेरे मुंह तिनसों, क्यों ना सुने तिनके कलाम ।
वह न्यामत छोड़ के, जाए लगे दुनी के काम ।।४३।।

आखिर दुनिया वाले उन (मुहम्मद हकी सूरत) से मुंह किस प्रकार फेर सकते हैं ? क्यूं उनके वचनों को ध्यानपूर्वक नहीं सुनते हैं ? उस अखण्ड न्यामत (इल्मे लदुन्नी) को ग्रहण करना छोड़ के संसारिक कार्यों में लगे हुए हैं ।

करी लड़ाई दज्जाल ने, मुकाबिलें इमाम और मोमिन ।
जाए मदत करी दज्जाल की, होता था एक दीन रोशन ।।४४।।

ऐसे खुदाई इल्म के प्रचार-प्रसार (औरंगजेब) के समय में दज्जाल ने इमाम महदी और मोमिनों से पूरी ताकत से लड़ाई की (बाधा डाला) । तत्कालीन काजियों, दरबारियों ने दज्जाल की मदद की और औरंगजेब तक सत्य ज्ञान नहीं पहुंचने दिया । नहीं तो सारी दुनिया एक दीन (एक धर्म) हो जाती ।

लागे मारन राह तिन की, साहेदी ढांकी जाए हक ।
रसूल की दावत पर, तिन में ल्याए सक ।।४५।।

दज्जाल ने अविश्वासी लोगों के दिलों में बैठकर उन्हें पथभ्रष्ट कर दिया, और परमात्मा के सत्य ज्ञान को ढांप दिया । वे रसूल साहब (हकी सूरत) की दावत (खुदायी ज्ञान के आमंत्रण) पर संशय करने लगे ।

हुआ आजूज माजूज जाहेर, क्यामत के दिन ।
खाने लगे सब सय को, खोले माएने देखो रोशन ।।४६।।

कियामत के इस महत्त्वपूर्ण समय में याजूज व माजूज (दिन रात रूपी दुनिया के काल) जाहिर हो गये हैं और सारी कायनात (सृष्टि) को खाने लगे (लोग हजारों-सैकड़ों की संख्या में मरने लगे हैं) । कुर्आन के इन कथनों के गूढ़ार्थ को समझिये ।

धरी करनाए मोह पर, असराफीले गाई फिरकान ।
कस्त न करती दुनियां, अजूं क्यों न सुनत कान ।।४७।।

अश्राफील (जागृत बुद्धि) अपने मुंह पर रनसिंघा रख के कुर्आन का गायन कर रहा है (कुर्आन के गुह्य अर्थ प्रकट कर रहा है), किंतु दुनिया वाले

जरा भी ध्यान नहीं दे रहे हैं । अभी भी ब्रह्मज्ञान की पुकार क्यों नहीं सुनते हो ?

ईसा मेहेदी एक बखत, होवे जाहिर इत ।
तिनों खोल के बका द्वार को, दिखाई हक के नजीक साएत ।।४८।।

ईसा रूहूल्ला व इमाम महदी साहिबुज्जमां एक ही समय (ग्यारहवी सदी) में प्रकट होंगे, ऐसा धर्मग्रंथों में लिखा है। अब उन्होंने अखण्ड परमधाम का ज्ञान दुनिया में प्रकट कर दिया है और मूल मिलावे के उस घड़ी की पहचान करा दी है, जहां हम प्रियतम अक्षरातीत के चरणों में विराजमान हैं ।

न्यामत अरस अजीम की, ल्याए बका से इत ।
आए इन नासूत में, जाहिर करी दावत ।।४९।।

उन्होंने दिव्य परमधाम के अखण्ड ज्ञान का खजाना यहाँ संसार में ला दिया है। इस मृत्युलोक में आकर परमधाम के शाश्वत सुखों की दावत जाहिर की है।

इनकी दावत से, जो कोई हुआ मुनकर ।
सो ताबे हुआ दज्जाल के, हुआ खिताब काफर ।।५०।।

इनकी दावत (खुदायी इल्म) को जिसने भी ठुकराया, वह अज्ञान के स्वरूप दज्जाल के आधीन हो गया और उसे 'नास्तिक' (काफिर-अविश्वासी) की उपाधि मिली ।

दाभा आसा चुभाइया, स्याह मोह हुआ तिन ।
मोहोर करी तिन मोहो पर, सोई सुपेत मोह मोमिन ।।५१।।

कुर्आन के अनुसार दाब्बतुलअर्ज जानवर के हाथों में मूसा पैगम्बर की छड़ी तथा सुलेमान की मुहर होगी । वह जिसे छड़ी चुभायेगा, उसका मुंह काला हो जायेगा और जिसके मुंह में मुहर करेगा, उस मोमिन का चेहरा उज्जवल हो जायेगा।

दाभ तूल अर्ज मक्के से, जाहेर होसी सब ठौर ।
एक हाथ आसा मूसे का, दूजे सलेमान की मोहोर ।।

सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन ।
आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन ।।

उज्जल मुख मोमिन कहे, स्याह मुख कहे काफर ।
या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखिर ।।

(खुलासा प्र.१५ चौ.३०,३१,३२)

एह तो आगे से कही, महंमद अलेहसलाम ।
सोए वाएदा पूरन भया, जाहिर हुआ दीन इसलाम ।।५२।।

यह भविष्यवाणी मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने ग्यारह सौ साल पहले से ही कह दी थी । अब वह वादा (भविष्यकथन) पूर्ण हुआ और मुहम्मद हकी सूरत द्वारा सत्य-शांति का मार्ग प्रकट हो चूका है ।

साबित हुआ तिन में, बुलावत हादी इत ।
ए तिन को मारा चाहे, मानत नहीं क्यामत ।।५३।।

मुहम्मद साहब के द्वारा कहे गये भविष्यकथन सत्य सिद्ध हो रहे हैं, तथा हादी (सद्गुरू) इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) सभी दुनिया वालों को शाश्वत अखण्ड सुखों के लिये आमंत्रित कर रहे हैं । किंतु नासमझी की वजह से रूढिवादी कट्टरपंथी उन्हें मारना चाहते हैं और कियामत की निशानियों को नहीं मानते हैं ।

अब इन का इन्साफ करो, सांच झूठ तफावत दोए ।
कौन दावत करत है, और किन को बुलावत कोए ।।५४।।

अब इसका न्याय करो । सत्य व असत्य दोनों में बहुत अंतर होता है । सोचो कि कौन ब्रह्मज्ञान (खुदाई इल्म) की दावत दे रहा है ? किनको जगाया जा रहा है ?

कौन इन से मुनकर, और कौन ल्याया ईमान ।
हक प्रापत किन को भई, ताकी करो पेहेचान ।।५५।।

कौन उस सत्य ज्ञान को नहीं मान रहा है, और कौन उस पर विश्वास ला रहा है ? परमात्मा की प्राप्ति किन्हे हुई है ? उसकी पहचान कीजिये ।

रसूल आए किन वास्ते, ए किनको खोले कलाम ।
किन लई सिफाएत महंमद की, हुआ दाखल कौन इसलाम ।।५६।।

रसूल साहब किनके वास्ते आये ? तथा किन्हें क़ुरान के भेद खोलकर बता रहे हैं ? किन्होंने मुहम्मद (हकी सूरत) की सिफायत (इल्मे लदुन्नी) प्राप्त

किया ? और कौन सत्य-शांति के मार्ग में शामिल हुआ ?

कौन इनसे लड़ता है, किनके दिल रही सक ।
किन मुनकर मोह फेरया, इनमें को है मुनाफक ॥५७॥

कौन इनसे लड़ रहा है? किनके दिल में संशय बना हुआ है ? किसने हकी स्वरूप से अपना मूँह फेरा व संदेश नहीं माना ? तथा कौन इसमें मुनाफिक (दोगले) हैं ?

रखो तराजू अपने दिल पर, तोल के कहो अवल ।
तुम कौन वस्त भारी करी, देखो दिल निरमल ॥५८॥

सर्वप्रथम अपने दिल में न्याय की तराजू रखकर निर्मल हृदय में उपरोक्त कथनों का चिंतन करके बताओ कि आपने किस वस्तु (माया या राजजी) को ज्यादा महत्त्व दिया ?

तुम केती दुनियां पकड़ी, केती पांउ भरत तरफ हक ।
गुजरान कहां करत है, बाकी केती रही सुभे सक ॥५९॥

तुमने कितना दुनियाँ को पकड़ा है (संसारिक चाहनाएं, चिंताएं कितनी हैं) और हक तआला (प्रियतम परमात्मा) की तरफ कितने कदम भरते हो (कितनी रहनी में हो)? कहाँ गुजरान (समय व्यतीत) करते हो और कितने संशय अभी भी बाकी हैं ?

स्वाद कबीला लगता है, के हक की निसवत ।
के वजूद प्यारा लगा, के हक की मोहब्बत ॥६०॥

आप को झूठे परिवार में आनंद मिलता है या श्री राज जी की निस्बत (आत्मिक संबंध) में सुख मिलता है ? अपना मायावी वजूद प्यारा लगता है या श्री राज जी का प्यार अच्छा लगता है ?

हो आपे अपना हक में, आपे कर पुरसीस ।
जब आओ इन्साफ पर तब पाओ बकसीस ॥६१॥

आप स्वयं ही सत्य पूर्वक अपना न्याय करो । जब सत्य न्यायपूर्ण निष्कर्ष पर आओगे, तब परब्रह्म की कृपा प्राप्त होगी ।

अब देखो मरातबा मोमिनों, जिनकों हुई सिफाएत ।
हुआ तिन को दीदार हक का, तिनों देखी वह साएत ॥६२॥

अब उन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की महिमा देखो, जिन्हें मुहम्मद हकी सूरत की सिफायत (तारतम ज्ञान) प्राप्त हुयी है । उन्हे ही परमात्मा का दर्शन प्राप्त हुआ है और उन्होंने परमधाम मूल मिलावे की उस घड़ी को देखा है, जहां ब्रह्मात्माओं के मूल तन (परात्म) विराजमान हैं ।

जब वह देखी साएत, उतरी दुनी दिल से मुरदार ।
वह पोहोंचा बका मिने, तिन पाया परवरदिगार ॥६३॥

जब ब्रह्मात्माओं ने मूलमिलावे (हाहूत) की उस घड़ी को देख लिया(पहचान लिया), तो उनके दिल से नश्वर माया का ज़हर (आशा-तृष्णा) उतर गया । उनकी सुरता अखण्ड परमधाम में पहुंच गयी और उन्होने प्रियतम अक्षरातीत का दर्शन प्राप्त कर लिया ।

तिनको मोहजल क्या करे, कछु चले न माया का बल ।
मन सैतान मर गया, वे तो सेहेजे होए गए निरमल ॥६४॥

ऐसे जीवनमुक्त ब्रह्ममुनि का मोहसागर (सुख-दुःख, मान-अपमान आदि) क्या बिगाड़ सकता है ? उसके सामने माया की शक्ति काम नहीं करती है । मन में विराजमान मोह–अज्ञान रूपी शैतान खत्म हो गया और वे तारतम ज्ञान के द्वारा आसानी से निर्मल हो गये ।

रहा आकार देखन का, वह बैठे नूर के पार ।
उतरत अरस से न्यामत, भेजत परवरदिगार ॥६५॥

उन मोमिनों (ब्रह्ममुनियों) का शरीर संसार में मात्र दिखने में उपस्थित लगता है, किंतु उनकी सुरता अक्षर से भी परे मूल मिलावे में पहुंच गयी होती है , जहां उनकी परात्म विराजमान है। परमधाम से उनके पास अनेक प्रकार की नैमतें (अखण्ड सुख) प्रियतम अक्षरातीत भेजते रहते हैं ।

जिनको दोस्त कर लिखत, अपने कलाम बीच हक ।
शराब तहूरा इनों को, पिलावत प्याले इशक ॥६६॥

अपने कलाम (कुर्आन पाक) में हक तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) जिन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को अपना दोस्त करके लिखते हैं । (ध्यान द्वारा अपने स्वरूप व परमधाम का दर्शन कराके) उन्हें अपने इश्क रूपी पवित्र शराब के प्याले पिला रहे हैं ।

क्या कहूं सुख तिनको, जापर लिखत रमूजें हक ।
कौल याद दिलावत, कहे तुम मेरे माफक ।।६७।।

इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के सुखों की क्या कहूँ ? जिनके लिये हक तआला श्री राज जी कुर्आन पाक में संकेतों में अनेक प्रकार से प्रेम भरे वचन लिखते हैं । परमधाम में कहे वचन (अलस्तो बिरब्बीकुंम, कालू बला) याद दिलाते हैं और कहते हैं, कि हम-तुम एक समान (एक स्वरूप) हैं ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जाए अजमावत हक ।
बैठाए नजर अपनी तले, सो राखी ना कछु ए सक ।।६८।।

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों का किस प्रकार वर्णन करूं? जिनको स्वयं अक्षरातीत आज़मां रहे हैं (परीक्षा ले रहे हैं) । मूल मिलावे में अपनी नजरों के सामने बैठाकर संसार रूपी खेल दिखा रहे हैं, इस विषय में उन्होंने किसी प्रकार का संशय नहीं रखा है।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जाए हक बतावत अपनी ठौर ।
हिदायत कर बुलावत, जिन नजर करो तरफ और ।।६९।।

उन ब्रह्मात्माओं के सुख कैसे कहूँ ? जिनको श्री राज जी अपने निजघर की पहचान करा रहे हैं, उन्हें प्यार से समझाकर अपने घर बुला रहे हैं, कि अब परमधाम के अतिरिक्त और कहीं नजर (चिंतन) मत करो ।

क्यूं कहूं सुख इनों के, औलिया कहे हक कलाम ।
तुम हीं उतरे अरस से, है तुमारा घर इसलाम ।।७०।।

उन ब्रह्मात्माओं के सुख किस प्रकार कहूं ? जिन्हें कलाम अल्लाह (कुर्आन) में हक तआला (प्रियतम परब्रह्म) औलिया कहते हैं । आप ही अर्शे आज़म (परमधाम) से इस संसार में आये हो । शाश्वत सुख-शांति का धाम परमधाम ही तुम्हारा निजघर है ।

क्यूं कहूं सुख इन गिरो के, जो वारस कहे फिरकान ।
बिगर पढ़े आवत, पावत हक पेहेचान ।।७१।।

ब्रह्मात्माओं के सुखों का किस प्रकार वर्णन करूं? जिन्हें कुर्आन पाक (आदि समस्त धर्मग्रंथों) का वारिस कहा जाता है । इन्हें ग्रंथों को पढ़े बिना ही परब्रह्म की पहचान हो जाती है ।

ज्यों बिगर मेहेनत मता का, बाप का बेटा वारस ।
त्यूं ही पांचों दिन की, भए मोमिन वारस अरस ।।७२।।

जैसे बिना परिश्रम के ही बाप की सम्पत्ति उसके वारिस बेटे को प्राप्त हो जाती है, वैसे ही छठे दिन की लीला में खुदा के पाँचो दिन (ब्रज, रास, अरब, देवचंद्रजी, महामतिजी) और परमधाम के सुखों के वारिस मोमिन हैं ।

तो कुरान हदीसा इनों की, खोले भिस्त के द्वार ।
जिनको मेहेरे करे मोमिन, ताको पोहोंचावे पार ।।७३।।

इसी कारण कुर्आन व हदीसों में लिखा है कि इन ब्रह्मात्माओं के लिये परमधाम का दरवाजा खुला है । जिनके ऊपर मोमिन कृपा करते हैं, उन्हें वे (तारतम ज्ञान प्रदान करके) भव सागर से पार पहुँचा देते हैं ।

जैसी बंदगी खुदाए की, तैसा नफा इनों का दीदार ।
तिन उपर रेहेमत, भेजत परवरदिगार ।।७४।।

प्रियतम परब्रह्म के प्रेम में डूबे इन ब्रह्मात्माओं के दर्शन खुदा की बंदगी के समान हैं । उन ब्रह्मात्माओं के ऊपर परवरदिगार (प्रियतम परब्रह्म) अपनी रहमत (कृपा) भेजते रहते हैं ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जाकी जिकर करत सुभान ।
ए जिकर हक की करे, आवे इनों का दिया ईमान ।।७५।।

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों का किस प्रकार वर्णन करूँ, जिनकी चर्चा स्वयं हक सुब्हान (प्रियतम अक्षरातीत) करते हैं । वे ब्रह्मात्माएं भी प्रियतम परब्रह्म की चर्चा-स्मरण में गर्क (डूबे) रहते हैं । वे ही, जिन्हें तारतम ज्ञान सुनाकर एक परब्रह्म पर विश्वास दिलाते हैं, उसे ही ईमान (परमात्मा पर विश्वास) आता है ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जिनों को इन जिमी रहे वाहेदत ।
इनों को हक सुभान, उठाया चाहे क्यामत ।।७६।।

इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के सुखों का वर्णन किस प्रकार करूं ? जो इस माया संसार में रहते हुए भी अद्वैत (वहदत) की स्थिति प्राप्त कर लेते हैं । उन्हें प्रियतम परब्रह्म कियामत की इस बेला में मूल मिलावे में जागृत करना चाहते हैं ।

क्यों कहूं सुख मोमिन के, जाको हक कहे बुजरक ।
ए दाना रब्ब से हुए, किये रद्द चौदे तबक ॥७७॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों का वर्णन किस प्रकार करूं ? जिनकी महिमा प्रियतम अक्षरातीत स्वयं सर्वोपरि कहते हैं । उन ब्रह्मात्माओं को स्वयं प्रियतम अक्षरातीत ने तारतम ज्ञान व जागृत बुद्धि देकर समझदार किया है । उन्होंने चौदह लोकों के सुखों की चाहनाओं को अपने दिल से समाप्त कर दिया होता है।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, कहे आखर मुहम्मद अलेह सलाम ।
रहे रात दिन फिकर इनकी, वास्ते इनों के द्वा मांगे इस ठाम ॥७८॥

उन मोमिनों के सुख किस प्रकार कहूं ? जिनके विषय में मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने कहा था, कि वे आखिर में आयेंगे और वे स्वयं उनकी रात-दिन चिंता करते हैं और उनके लिये दुआ भी मांगते हैं, कि वे जब आखिरत में आयेंगे, तब उन्हें किसी प्रकार की तकलीफ ना हो ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, इन जिमी बैठ देखत ।
अरस की गलियों में फिरे, जाकी हक करत सिफत ॥७९॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों के विषय में क्या कहूं ? जो इस माया जगत में रहते हुए भी अखण्ड परमधाम का दर्शन करते हैं तथा परमधाम की नूरमयी गलियों में लीला विहार करते हैं । इसीलिये तो प्रियतम अक्षरातीत धर्मग्रंथों में उनकी महिमा का बखान करते हैं ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जिनके वास्ते हुआ हुकम ।
और जोस दिया अपना, कहे आओ अरस में तुम ॥८०॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों का किस प्रकार वर्णन करूं ? उन्हीं के वास्ते इस सृष्टि की रचना का हुक्म हुआ । प्रियतम अक्षरातीत ने उन्हें अपना जोश भी प्रदान किया है और उन्हें कह रहे हैं, कि अपने निजघर परमधाम वापस आ जाओ ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जिनको दई जाग्रत बुध ।
खिलवत खाना गैब का, दई जो सारी बका की सुध ॥८१॥

उन ब्रह्मसृष्टियों के सुख किस प्रकार कहूं ? जिन्हें राजजी ने जागृत बुद्धि प्रदान की है और अखण्ड परमधाम की गुह्य खिलवत (रंगमहल) की सारी जानकारी (ज्ञान) दे दी है।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, दई किल्ली तारतम हक ।
बसबसा शैतान का, भानी सारी शक ॥८२॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुख किस प्रकार कहूं ? जिन्हें हक तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) ने तारतम ज्ञान रूपी चाबी प्रदान की है । शैतान जो सबके दिलों में बैठकर सबको भ्रमित करता रहता है, वे सारे संशय तारतम ज्ञान के द्वारा दूर कर दिये हैं।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जाए खिताब दिया रूहन ।
तुमहीं उतरे अरस से, खिताब खास गिरो मोमिन ॥८३॥

इन ब्रह्मात्माओं के सुखों के विषय में क्या कहूँ जिनको रूह (ब्रह्मात्मा) का खिताब दिया है और कहते हैं, कि तुम ही परमधाम से अवतरित हुये हो । साथ ही उन्हें खासुलखास मोमिनों का खिताब (उपाधि) दिया है ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, पांचों रोशनी बका की नूर ।
उतरी इनों के वास्ते, इत इनों ने किया जहूर ॥८४॥

उन ब्रह्ममुनियों के सुख किस प्रकार कहूं ? पांचो दिव्य शक्तियां इन्हीं के वास्ते परमधाम से अवतरित हुयी हैं । जिसके द्वारा उन्होंने सारे संसार में परब्रह्म की पहचान को जाहिर कर दिया ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, हकीकत मारफत खोले द्वार ।
रहे सेहेरग से नजीक, इत बैठे पाया दीदार ॥८५॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों का वर्णन कैसे करूँ ? जिनके लिये हकीकत (सत्य ज्ञान) व मारिफ्त (परमसत्य) का द्वार प्रियतम अक्षरातीत ने खोल दिया है और बताया कि मोमिन शाहरग (प्राणनली) से भी नजदीक मूल मिलावे में रहते (बैठे) हैं । इस प्रकार ब्रह्मात्माओं ने यहीं संसार में रहते हुए भी प्रियतम परब्रह्म के दर्शन प्राप्त कर लिये ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जिन खोले सातों निशान ।
हक सुभान इनों की, करत इत पेहेचान ॥८६॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों का वर्णन कैसे करूँ ? जिन्होंने कियामत की सातों निशानियां स्पष्ट कर दी हैं । हक सुब्हान (अक्षरातीत परब्रह्म) उनकी पहचान दुनिया वालों को करवा रहे हैं ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जाको खावंद किए इसलाम ।
एही बकसे जिनको, ए दाखिल होए इसलाम ॥८७॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुख मैं किस प्रकार कहूं ? जिन्हें परब्रह्म अक्षरातीत ने सत्य-शांति के मार्ग (ज्ञान) का स्वामी बनाया है । वे ही, जिन्हें तारतम ज्ञान द्वारा समझायेंगे, वह इस सत्य-शांति के मार्ग में आयेगा ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जाको हके बकसी नबूअत ।
एही सकल जहान के, करे क्यामत की दावत ॥८८॥

उन ब्रह्ममुनियों के सुख किस प्रकार कहूं ? जिन्हें परब्रह्म अक्षरातीत ने ज्ञान (नबूवत) का सारा अधिकार दिया है । वे ही तारतम ज्ञान के द्वारा सारे संसार को कियामत (अखण्ड मोक्ष) की दावत (आमंत्रण) करेंगे ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जिनों साहेदी दई सुभान ।
इन जिमी जाहेर किए, अरस के निशान ॥८९॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुख किस प्रकार कहूं ? जिन्होंने एक परब्रह्म अक्षरातीत के स्वरूप व धाम की साक्षी दी और इस नश्वर जगत् में भी परमधाम के २५ पक्षों को जाहिर किया ।

क्यूं कहूं सुख मोमिन के, जाकी मदत करे हक ।
भेजे वसीयतनामें को, भानी सारी सक ॥९०॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों के विषय में किस प्रकार कहूं ? जिनकी सहायता स्वयं प्रियतम अक्षरातीत करते हैं । (औरंगजेब को सत्य ज्ञान का संदेश पहुंचाते समय) उन्ही की सहायता के लिये परब्रह्म अक्षरातीत ने मदीने से दिल्ली में औरंगजेब के पास वसीयतनामे भिजवाये, जिसके द्वारा कियामत के विषय में सारे संशय दूर हो गये ।

ऐसी कई सिफतें मोमिन की, जिनको नहीं सुमार ।
हक सुभान इनों को, बैठाए नूर के पार ॥९१॥

इस प्रकार उन मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) की महिमा का कोई पारावर नहीं है । हक सुब्हान श्री राज जी ने इन्हें अक्षरधाम से भी परे परमधाम में बैठा दिया (मूल मिलावे में बैठे होने का ज्ञान करा दिया) ।

दुनी जाने ए मोमिन, बैठे इनमें इत ।
आप जैसे जाने इने, ए तो हक की जात सिफत ।।९२।।

दुनिया वाले समझते हैं, कि ब्रह्मात्माओं के तन हमारे बीच संसार में ही बैठे हैं । वे उन्हें अपने जैसा ही समझते हैं, किंतु मोमिन आत्माएं तो हक जात (परब्रह्म के ही समान सच्चिदानंद स्वरूप) हैं । इनकी महिमा हक के ही समान है।

जेती सिफत खुदाय की, रहे सोई बीच मोमिन ।
महकक बोले इनों वास्ते, सो रहे मोमिन दिल रोशन ।।९३।।

परब्रह्म के स्वरूप में जितनी भी विशेषता (सत् चिद् आनंद) होती है, वह सारी विशेषता ब्रह्मात्माओं (के मूल स्वरूप) के अंदर भी होती है । उनके विषय में ही कहा गया है, कि उनके दिलों में ब्रह्मज्ञान जांच-परखकर दृढ़ किया होता है ।

सत चित और आनन्द, एह है दिल मोमिन ।
एह ब्रह्म सृष्ट ब्रह्म समान है, रहे इनों के अरस में तन ।।९४।।

ब्रह्मसृष्टियों का हृदय परब्रह्म के समान ही सच्चिदानंद होता है । यह ब्रह्मसृष्टि ब्रह्म के समान ही होती है । इनके मूल तन (परात्म) वास्तव में परमधाम मूल मिलावे में हैं ।

तहां बैठे खेल देखाइया, दुनियाँ चौदे तबक ।
तहां से आए सुपन में, पकड़े बजूद या इशक ।।९५।।

प्रियतम अक्षरातीत ने उस परमधाम मूल मिलावे में बैठाकर इन्हें चौदह लोकों से युक्त संसार रूपी खेल दिखाया है । वहीं से उनकी सुरता इस स्वाप्निक जगत में आयी है। अब उनके सामने चुनौती है कि वे शरीर को प्राथमिकता दें या धणी के प्रेम को।

सो शके भानने का, किए सब उपाए ।
जेता शबद उठत है, एही राह बतावत ताए ।।९६।।

इनके पूर्ण संशय मिटाने के लिये धाम धणी ने सब उपाय किये । दुनिया में जितने भी शब्द (ज्ञान की बातें) ग्रन्थों में हैं, वे सब माया को असत्य व परमधाम को सत्य बताते हैं ।

सौगंद इत करते हैं, हक सुभानू तुम खातर ।
हो मैं तुमारे नजीक, तुम राखो दिल सबूर ।।९७।।

आप ब्रह्मात्माओं के लिये ही हक सुब्हान श्री राज जी सौगंध खाकर कहते हैं, कि मैं तुम्हारे नजदीक हूँ । तुम अपने दिल में धैर्य और संतोष रखो ।

इलम मेरा उनों में, जाए करो जाहेर ।
मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थें बाहेर ।।

(खिलवत १३/४४)

करो याद मेरे गुन को, सुकर ल्याओ बजाए ।
क्या दई न्यामत तुम को, कौन ठौर दिए पोहोंचाए ।।९८।।

मेरे गुणों (कृपाओं) को याद करो, और हमेशा शुक्रगुजार रहो । मैंने आपको तारतम ज्ञान के रूप में कौन सा खजाना दिया है और तुम्हें कहाँ पहुँचा दिया है (कहाँ मूल मिलावे में बैठे होने का ज्ञान करा दिया है) ?

कैसी निसबत कर दई, पाया कौन रब ।
करो दुनी से मुकाबिल, था कैसा तुमारे तब ।।९९।।

परब्रह्म अक्षरातीत से कैसा दिव्य आत्मिक संबंध कर दिया (आत्मिक संबंध की पहचान करा दिया) और कैसा अखण्ड परमधाम पा लिया? इससे पहले संसार में आपकी स्थिति कैसी थी ? जरा उससे तुलना करो ।

तुमे राखे कैसे पनाह बीच, था कैसा तुमारा हाल ।
भागते थे फेरून से, सो अब कैसे किए खुसाल ।।१००।।

मैंने (राजजी) हर प्रकार की मुसीबतों से रक्षा करते हुए तुम्हें किस प्रकार अपनी पनाह (शरण) में रखा ? इससे पहले आपकी कैसी स्थिति थी ? फिरऔन (औरंगजेब) से किस प्रकार भागते थे ? अब (पन्ना जी में) किस प्रकार आपको मैंने प्रसन्नचित्त कर दिया ?

हुए बेयालिस फिरके फेरून, हुओ रोंद नील में गरक ।
तुम को पढ़ाए फिरकान, खोले माएने बुजरक ।।१०१।।

फिरऔन (औरंगजेब) के ४२ फिरके हुए, जिन्हें परमात्मा ने नील नदी (ब्रह्मज्ञान) में डुबोकर नष्ट कर दिया । उस प्रियतम अक्षरातीत ने आपको कुर्आन पाक पढ़ाया और उसके गूढ़ार्थ स्पष्ट किया ।

और वेद कतेब के माएने, खोल न सके कोए ।
सो तुम को सुगम किए, सबों को प्रापत तुमसे होए ।।१०२।।

इसके अतिरिक्त वेद-कतेब ग्रंथों के वास्तविक अर्थ आज तक कोई नहीं समझ सका था । वह सब आपके लिये सुगम (आसान) कर दिया । सारी दुनिया को वेद-कतेबों के रहस्य आप से ही प्राप्त होंगे ।

किए खलीफे तुम को, जिमीन मसरक मगरब ।
पूरब पश्चिम दक्खिन, राह पावे तुमारे सब ।।१०३।।

परब्रह्म अक्षरातीत ने तुम्हें पूर्व व पश्चिम देशों सहित सारे संसार का धर्मगुरू बना दिया । पूर्व-पश्चिम एवं दक्षिण अर्थात् हिंदू मुसलमान और वामपंथी सब तुमसे आत्म कल्याण का मार्ग पायेंगे ।

दुनियां चौदे तबक, करत आश ईश्वरी सृष्ट ।
सो तुमारे चरन की रैन, बांछने का रखे इष्ट ।।१०४।।

चौदह लोकों की दुनिया अपने आत्म कल्याण के लिये, जिस ईश्वरी सृष्टि (देवी–देवता) के कृपा की आशा रखती है, वह ईश्वरी सृष्टि तुम्हारी चरण रज की कामना रखती है ।

खेल खावंद जो त्रैगुन, सो भजे अंतसकरन ।
तुम को सेवे स्नेह सों, पर पोहोंचे ना खाक चरन ।।१०५।।

त्रिदेवा, जो १४ लोकों के स्वामी हैं, वे अपने अंतः करण में तुम्हारा (ब्रह्मसृष्टि-गोपियों का) ही ध्यान करते हैं और हृदय में स्नेहपूर्वक सेवा भी करते हैं, परन्तु तुम्हारी चरण रज को नहीं प्राप्त कर पाते हैं ।

दीदार तुमारा चाहिया, जो कहावत अक्षर भगवान ।
तिन को त्रैगुन खोजत, कर ना सके पेहेचान ।।१०६।।

त्रैगुण प्रधान देव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) जिन अक्षरब्रह्म को खोजते रहते हैं, किंतु उसका ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते हैं । वे अक्षरब्रह्म तुम्हारे दर्शन की चाह रखते हैं (ऐसी तुम्हारी महिमा है) ।

जबराइल जोस आवत, ठौर नूर मकान जो नूर ।
सो करे तुमारी वकीली, सो पोहोंच न सके हजूर ।।१०७।।

धणी का जोश-जिब्रील फरिश्ता, जिसका स्थान अक्षरधाम है, वह

तुम्हारे अंदर विराजमान होकर, तुम्हे सत्य-असत्य की पहचान कराता है । वह भी मूल मिलावे तक नहीं पहुंच सकता है ।

तुम आए तिन घर से, तुम देखो अपना ठौर ।
याद करो एक गुन को, कहूं नजर ना करो और ।।१०८।।

आप उस दिव्य परमधाम (रंगमहल) से आये हो । अब अपने निजघर की तरफ ध्यान करो । प्रियतम धामधणी की कृपाएं तो अनंत हैं, किंतु उसमें से एक कृपा को भी याद कर लो । अपना ध्यान अन्य किसी जगह ना लगाओ ।

अब आया बखत, उठने का एही दिन ।
वही चार घड़ी पिछला, वही मूल मेला देखो रोशन ।।१०९।।

अब वह समय आ चूका है । परमधाम मूल मिलावे में जागृत होने का यही दिन (समय) है । परमधाम में अभी भी वही चार घड़ी दिन पिछला (दिन पूरा होने में चार घड़ी बाकि है - सायं ४.३० बजे का समय) है । अब उसी मूल मिलावे की शोभा को देखो ।

अब वही साएत है, जो हुआ तुमसे हक सो मजकूर ।
वही गरम आवाज कान में, देखो बैठी हक हजूर ।।११०।।

अभी भी वही पल-घड़ी है, जिसमें खेल में आने से पहले प्रियतम धाम धणी के साथ आपकी बातचीत हुयी थी । अभी भी वही जोशीली आवाज कानों में गूंजायमान हो रही है । ध्यान द्वारा देखो, किस प्रकार धणी के चरणों में हम आत्माएं विराजमान हैं ।

याद करो हक साएत, जिनमें उतरे तुम ।
इन साएत दरम्यान में, छः दिन देखाए हुकम ।।१११।।

परमधाम मूल मिलावे की वह घड़ी याद करो, जिसमें तुम संसार रूपी खेल में उतरे हो। उसी पल के अंतर्गत, उसी घड़ी में धाम धणी ने अपने हुक्म से माया जगत के छः दिन की लीला दिखायी है ।

एक दिन कह्या बृज का, दूसरा दिन है रास ।
तहां विरह बिलास देखाए के, रही पीछे तुमारी आश ।।११२।।

पहला दिन ब्रज लीला का और दूसरा दिन रास लीला को कहा है, जहां प्रियतम ने तुम्हे विरह तथा विलास की लीला दिखायी । किंतु उसके पश्चात् भी आप की दुःख रूपी खेल देखने की चाहना बनी रह गयी ।

तब एह ब्रह्माण्ड तीसरा, रचया तुम कारन ।
तहां हके भेजा रसूल, ताको कह्या तीसरा दिन ।।११३।।

तब आपकी इच्छा पूर्ति के लिये इस तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड की रचना की गई । यहां सर्वप्रथम रसूल मुहम्मद साहब को भेजा, जिसे तीसरा दिन कहा गया ।

तुम वास्ते हक सुभान ने, किया चौथा दिन ।
पैदर पै भेजे रसूल, जिन जहान करी रोशन ।।११४।।

हमारे लिये ही प्रियतम परब्रह्म (हक सुभान) ने चौथे दिन की लीला की। उससे पूर्व अनेकों संदेशवाहक एक के बाद एक दुनिया में भेजे गये, जिन्होंने संसार को एक परब्रह्म का संदेश दिया और आखिरत (कलियुग के अंतिम समय) की निशानियां बतायीं।

चौथे दिन रूह अल्ला, ले आए किली हकीकत धाम ।
हुई दावत तिन की जाहिर, बीच दीन इसलाम ।।११५।।

चौथे दिन की लीला में रूहअल्ला श्री श्यामा जी परमधाम के रहस्यों को प्रकट करने वाली तारतम ज्ञान रूपी चाबी लेकर आये, तथा सारे संसार को सत्य व शांति का मार्ग प्रदान करने वाले ब्रह्मज्ञान (खुदाई इल्म) का आमंत्रण दिया । उनकी दावत निजानंद संप्रदाय के रूप में जाहिर हुई ।

पांचमा दिन इमाम का, इनके जुदे कहे कारन ।
तिन दावत करी जहान में, ल्याए किताब रोशन ।।११६।।

पाँचवा दिन इमाम महदी साहिबुज्जमां का है । इनके आने का एक विशेष कारण था । इन्होंने संसार में इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) लाया तथा सारे संसार को शाश्वत सुख व शांति के मार्ग में आने का आमंत्रण (दावत) दिया ।

सब किया वास्ते मोमिन के, एह देख्या चाहिए तुम ।
इन जिमी जगावत, हक सुभान का हुकम ।।११७।।

यह सब कुछ आप ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के वास्ते किया गया है, उसे आपको समझना चाहिये। इस माया जगत में प्रियतम अक्षरातीत का हुक्म ही आपको जगा रहा है ।

अब आया समैया, जो तुमसों करी सरत ।
तुमारे दिल हादी ल्याइया, बका ठौर हक सूरत ।।११८।।

अब वह समय आ गया है, जिसका तुमसे (कुर्आन पाक व अन्य धर्मग्रंथों में) वायदा किया था । हादी (सद्गुरु) इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) ने इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) के द्वारा तुम्हारे दिल में परमधाम तथा परब्रह्म का स्वरूप बसा दिया है ।

एह तो दिन जुमे का, सब जमा होए मोमिन ।
बिछौने सिफाएत पर, हके किये रोशन ।।११९।।

अब यह दिन तो जुम्मे का (छठा दिन) है, जिसमें सभी मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को जागकर एकट्ठा होना है । मुहम्मद हकी सूरत की सिफायत (अनुशंसा) रूपी बिछौने पर बैठाकर प्रियतम अक्षरातीत ने आपके हृदय को ब्रह्मज्ञान से रोशन किया है ।

आए बिछौने सिफाएत पर, जिन करो और विचार ।
तुमको देखावत इन जिमी, काएम नित बिहार ।।१२०।।

अब आप सिफायत (हकी सूरत की कृपा) रूपी बिछौने पर आ चूके हो । अब आप परमधाम के अतिरिक्त अन्य कोई भी चिंतन मत करो । आपको प्रियतम अक्षरातीत, परमधाम में नित्य प्रति होने वाली अखण्ड लीला विहार का दर्शन करा रहे हैं ।

तिनको छोड़ कहां जात हो, दौड़त हो मृग जल ।
तहां कछू है नहीं, देखो चित्त निरमल ।।१२१।।

उन अखण्ड सुखों को छोड़कर आप मृगजल (रेगिस्तान में प्रतिबिम्बित जल) के समान झूठे संसारिक सुखों की तरफ कहां भागे जा रहे हो ? अपने निर्मल हृदय से विचार करो, यहां कुछ भी नहीं है (यह माया मात्र एक भ्रम है)।

एह तो दिन है जुमे का, हुए पैगंमर सब एक ठौर ।
देखो माएने कलाम के, है कोई तुम बिन और ।।१२२।।

यह तो छठा दिन (जुम्मे का) है, जिसमें सभी पैगम्बर स्वरूप मोमिन एक ही जगह एकत्रित हुए हैं । कलाम अल्लाह का वास्तविक आशय पहचानिये । वे पैगम्बर आप ब्रह्मात्माओं के सिवा अन्य कोई नहीं है ।

जो अवतार कहे तो तुममें, वेद कतेब के वचन ।
होए पैगंमर भी तुमसे, कर देखो दिल रोशन ।।१२३।।

चाहे अवतार कहो, तो भी आपसे ही वेद-कतेब के रहस्यों का स्पष्टीकरण होगा । यदि पैगम्बर कहो, तो भी वे सारे कार्य आपके द्वारा ही होंगे। अपने हृदय में विचार कर देखिये ।

इत हुआ हिसाब सबन का, छिपी ना रही रंचक ।
तुमारी हक सुभान ने, पेहेले दिन भानी सुभे सक ।।१२४।।

इस प्रकार यहां सबका न्याय (सारी बातों का स्पष्टीकरण) हो गया, किसी प्रकार का जरा भी रहस्य छिपा नहीं रहा । प्रियतम अक्षरातीत ने आप सबका संशय पहले ही समाप्त कर दिया है ।

देख खेल पीछे फिरो, आओ सातमो दिन ।
तब तो हजूर हक के, आए बातें करो रोशन ।।१२५।।

अब खेल देखकर (संसारिक इच्छाओं से निवृत्त होकर) सातवें दिन में आओ और वापस अपने घर चलो तथा प्रियतम अक्षरातीत के चरणों में (मूल मिलावे) में जागृत होकर धाम धणी से आनंदपूर्वक बातें करो ।

जब हुकम हक सुभान का, वाएदा पोहोंचा इत ।
मोमिन अपने वतन में, उठे बखत क्यामत ।।१२६।।

जब अपने समय के अनुसार प्रियतम परब्रह्म का आदेश आ पहुंचा, तब कियामत के समय ब्रह्मात्माएं अपने निजघर मूल मिलावे में जाग्रत हो गयीं (जायेंगे)।

वही साएत दरम्यान में, आए पोहोंचे हक हजूर ।
लगे बातें करने, बीतक अपनी मजकूर ।।१२७।।

उसी पल-घड़ी में (सायं ४.३० बजे) मूल मिलावे में प्रियतम के चरणों में जागृत हो गये और हंसते हुए इस खेल में बीती बातों पर चर्चा करने लगे ।

पूछा हक सुभान ने, करो बातें अपने इशक ।
कैसा खेल तुम देख्या, कछु रही जागने में शक ।।१२८।।

प्रियतम श्री राज जी ने उनसे पूछा कि संसार रूपी खेल में जाकर तुम्हारा इश्क (प्रेम) कैसा रहा ? तुमने कैसा खेल देखा ? क्या वहां (तारतम

ज्ञान के द्वारा) जागृत होने में कुछ संशय रह गया था ?

लगे हांसी करने आपस में, हंस हंस गिरे एक ठौर ।
एक ऊपर दूजी पड़े, लगे बातें करने जोर ।।१२९।।

सभी सखियां आपस में मिलकर हंसी-मजाक करने लगती हैं और हंसते-हंसते एक-दूसरे पर गिरने लगती हैं । इस प्रकार उत्साह-आनंद पूर्वक आपस में बातें करने लगती हैं ।

एक एक को पूछत, बीतक बातें जो गुजरान ।
वह लगी बतावने, सब होने लगी पेहेचान ।।१३०।।

एक-दूसरे से खेल में बीती बातों को पूछने लगती हैं । दूसरी सखी खेल में गुज़री सारी बातें बताने लगती है । इस प्रकार सबको एक-दूसरे की सारी बीती बातों की पहचान होने लगती है ।

हक सुभान उत्तर, देने लगे इन को जब ।
बैठियां मेरे नजीक, क्या सक मान्या तुम तब ।।१३१।।

तब सखियों को श्री राज जी जवाब देते हैं, कि आप (यहां मूल मिलावे में) मेरे शहरग (प्राणनली) से भी नजदीक बैठे हो । यह बात जब आपको बतायी गयी, तब आपको इस बात में कुछ संशय हुआ था ?

एह तो खेल साएत का, तुमको देखाया मैं इत ।
तुम भूल कर क्यों जान्या, मैं तुम को दिखाई साइत ।।१३२।।

यह खेल तो पल मात्र का था, जो मैंने आपको यहाँ दिखाया है । फिर आप क्यूं संशय में पड़ गये कि जैसे मैंने आपको बहुत लम्बा खेल दिखा दिया हो ?

मैं तुमको पेहेले कहया, तुम भूलोगे इन ठौर ।
मिल झूठे कबीले मिने, जाए बातें लगें और ।।१३३।।

मैंने आपको पहले ही कहा था कि आप संसार में जाकर अपना निजस्वरूप भूल जाओगे । वहां झूठे परिवार में मिलकर (मोह-माया से युक्त होकर) और ही बातें करने लगोगे ।

पैगंबर पुकारया, तुम को किए खबरदार ।
केते बेर मैं तुम को कह्या, मैं तुमारा परवरदिगार ।।१३४।।

तारतम ज्ञान का संदेश देने वाले ने कितनी पुकार लगायी और आपको सावधान किया । मैंने कितने बार तुमसे कहा कि, मैं ही तुम्हारा प्रियतम स्वामी हूं ।

मैं तुमको ना जगावत, ना तुम होते हुसियार ।
न देखावत उन जिमी, धाम का नित बिहार ।।१३५।।

अगर मैं आप को (तारतम ज्ञान से) नहीं जगाता तो आप (माया को छोड़कर) सतर्क नहीं होते और न ही उस नश्वर जगत में परमधाम की नित्य लीला विहार का दर्शन कर पाते ।

तो तुम अब केहेतियां, ना था हमारा अखत्यार ।
मैं शक कछु ना रखी, जगाए किए खबरदार ।।१३६।।

और उस स्थिति में अब तुम कह सकती थी कि हमें कुछ भी नहीं पता था। मैंने तारतम ज्ञान से जगाकर सावधान कर दिया था, जरा भी संशय नहीं रखा था ।

ना दावत दिल में आवहीं, मैं तुमसो सम खाए कहूं सुकन ।
तुमारे दिल आवे नहीं एह, हमको किन दिए वचन ।।१३७।।

मैं तुमसे कसम खाकर कहता हूँ कि उस दिव्य ज्ञान को आप आत्मसात् नहीं कर सके। ना ही यह विचार तुम्हारे दिल में आया कि हमें ऐसी दिव्य वाणी किसने प्रदान की है ।

किनने भेजा इलम, किन के आए कलाम ।
कौन ल्याया कुंजीय को, इत कौन देखावत इसलाम ।।१३८।।

ऐसा दिव्य ज्ञान हमारे पास किसने भेजा है ? ये किन के वचन हैं ? तारतम ज्ञान रूपी कुंजी (सभी धर्मग्रंथों के रहस्य खोलने वाली चाबी) कौन लेकर आया है ? यहां परमधाम के शाश्वत सुखों को कौन दिखा रहा है ?

मेरी रेहेमत तुम ऊपर, आई पैदर पे जब ।
विचार ना करो तिन का, हम आए कौन सबब ।।१३९।।

मेरी रहमत (कृपायें) तुम पर निरंतर होती रही (पुनः पुनः तारतम ज्ञान के द्वारा जगाता रहा), तब भी तुमने विचार नहीं किया कि हम इस माया जगत में क्यों आए हैं ?

हम तो बैठे हजूर में, बेर न लगी लगार ।
हम को क्यों कर छोड़ेगा, हमारा परवरदिगार ।।१४०।।

आपने यह विचार नहीं किया कि हम तो मूल मिलावे में प्रियतम धाम धणी के चरणों में बैठी हैं । वहां एक पल भी समय नहीं बीता है । हमारे प्रियतम हमें एक पल के लिये भी किस प्रकार छोड़ सकते हैं ?

रूहें उत्तर देत हैं, सनमुख हक सुभान ।
हम समझे सब बात को, कछू छिपी ना रही पेहेचान ।।१४१।।

तब श्री राज जी के सामने सब सखियाँ कहेंगी कि हम (संसार रूपी खेल में) सारी बातों को समझ गयी थीं। हमारे मन में किसी प्रकार का संशय नहीं रहा था।

जब तुम सामे देखहीं, तब कछु न आवें नजर ।
फेर देखे तरफ खेल के, जाने कब होसी फजर ।।१४२।।

किंतु संसार रूपी खेल में जब हम आपका ध्यान करती थीं तो माया अस्तित्वहीन हो जाती थी । जब पुनः माया की तरफ दृष्टि करती थीं तो ऐसा लगता था कि पता नहीं खेल कब खत्म होगा ।

कब हम जागे वतन में, कब बातें करें सनमुख ।
हादी हमको देखावत, अपने घर को सब सुख ।।१४३।।

उस समय हमें ऐसा लगता था, कि हम कब अपने परमधाम में जागृत होंगे और कब धणी से बातें करेंगे ? सद्गुरु स्वरूप श्रीश्यामाजी हमें अपने घर के अखण्ड सुख दिखा रहे हैं ।

पर जगाए कोई ना जागहीं, रद बदल न आवे याद ।
मुंह फेरूंगा इन खेल से, याद न आवे बुनियाद ।।१४४।।

इतना जगाने (ज्ञानचर्चा सुनानें) के बाद भी कोई नहीं जागा । परमधाम में हुई प्रेम वार्तालाप याद नहीं आया । तब मैंने निश्चय किया कि ऐसे इन्हें निजघर की याद नहीं आयेगी । इस संसार से इनका ध्यान परमधाम की तरफ मोड़ना होगा ।

यूं बातें कई करने लगीं, कई उत्तर फेर फेर ।
कई हांसी हुई इन में, सब देखेंगे दूजी बेर ।।१४५।।

इस प्रकार अनेक बातें करने लगीं । पुनः पुनः प्रश्न-उत्तर करने लगीं । जिससे कई तरह से हंसी-मजाक होने लगा । सब कहने लगे कि क्या दुबारा खेल देखना है ?

अब अघाए इन खेल से, कैसे बनाए के देखे दुःख ।
हम देखी साहेबी हक की, पाए पटन्तर इशक के सुख ।।१४६।।

सखियां कहने लगीं कि अब हम इस खेल से तृप्त हो गए हैं । अब उसे पुनः बनाकर किस प्रकार देख सकती हैं? अब हमने आपकी साहेबी पहचान ली है और इश्क के सुख का भेद भी पा लिया है ।

उठे तबहीं झीलन को, जो चेहबच्चा धाम किनार ।
दूसरी भोम भुलवनी, लगे करन बिहार ।।१४७।।

अब तुरंत ही झीलना के लिये मूल मिलावे से उठकर चल पड़ते हैं । जो चेहेबच्चा (खड़ोकली) रंगमहल की दूजी भूमिका में किनारे (उत्तर दिशा में) आया है, जहां भुलवनी के मंदिर भी हैं, वहां जाकर लीला विहार करने लगते हैं ।

अब कहूं इन खेल की, जो दुनियां की बीतक ।
ज्यों कर पोहोंचे भिस्त में, इनों पाया अपना हक ।।१४८।।

अब पुनः इन संसार रूपी खेल की बीतक कहता हूं कि किस प्रकार दुनिया वाले बहिश्तों में पहुंचे और किस प्रकार उन्हें सत्य परब्रह्म की पहचान हुयी ।

सन एक हजार नब्बे, जब भई दावत इमाम ।
तब से गिरो मोमिन की, भई दाखल इसलाम ।।१४९।।

हिजरी सन् १०९० (संवत १७३५, हरिद्वार) में जब इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) ने शाश्वत सुख व शांति के मार्ग की दावत दी, तब से मोमिन रूहें (ब्रह्मात्माएं) दीने इस्लाम हकीकी (सत्य धर्म) में शामिल हो गयीं ।

भए चालीस बरस तिन पर, अब अग्यारे पर भई तीस ।
तब तमाम खलक ने, पाई हक बकसीस ।।१५०।।

हिजरी सन् १०९० के पश्चात् जब ४० वर्ष और व्यतीत हुए तब हिजरी सन् ११३० हो गया । तब सारी दुनिया ने परब्रह्म अक्षरातीत की बख्शीश (कृपा) पायी ।

बाकी बारे के सत्तर, पूल सरात भई जब ।
एह खबर पोहोंची मलकूत में, विष्नु खबर पाई तब ।।१५१।।

बारहवीं सदी के जब ७० साल बाकी रहे, तब पुल सिरात कायम की गयी, अर्थात् कर्मकांड का जमाना आया । तब वैकुण्ठ में विष्णु भगवान को जागृत बुद्धि के द्वारा सत्य ज्ञान की पहचान हुयी ("मेरी बुध जाये विष्णु को देसी खबर")।

तब रोया इन बात को, देखा आदम का मरातब ।
और फरजंद आदम के, तहां देख्या गंज इलाही सब ।।१५२।।

तब बुद्धनिष्कलंक स्वरूप (इमाम महदी स्वरूप आदम) की महिमा की पहचान होने पर विष्णु भगवान को बहुत पश्चाताप होगा। और श्री प्राणनाथ जी के अनुयायी सुंदरसाथ के हृदय में परमधाम के ज्ञान का खजाना देखकर सोचेगा... ।

क्यूं ना किया मोहे आदमी, जो इनों निसबत राखत ।
खाक होता तिन जिमी की, इत आइ हक की जात ।।१५३।।

तब विष्णु भगवान (अजाजील फरिश्ते) ने कहा - ऐ परवरदिगार ! आपने मुझे आदमी क्यों नहीं बनाया, जबकि आप मनुष्य तन धारी ऐसे आत्माओं से संबंध (निस्बत) रखते हो । नहीं तो कम से कम उस धरती की धूल ही हो जाता, जहां ब्रह्मस्वरूपा आत्माएं आयी थीं ।

यूं रोए के पीछा फिरा, तब नूर के खुले नैन ।
फेर याद किया सुपन को, उठी आठों भिस्तें इन ।।१५४।।

इस प्रकार पश्चाताप करते हुए अजाजील (विष्णु भगवान) की सुरता अपने मूल स्थान अव्याकृत में वापस चली जाती है । तब अक्षरब्रह्म के नेत्र खुल जाते हैं और वह जागकर इस स्वप्नवत् खेल को याद करता है । तब अक्षर के हृदय में आठ बहिश्तें खड़ी हो जाती हैं, जिनमें समस्त संसारी जीव अखण्ड हो जाते हैं ।

तिन के बड़े मरातबे, जिनका जैसा होए ।
सो सिफाएत के सुकन में, कह्या बेवरा सोए ।।१५५।।

जिनकी जैसी रहनी थी, उसे वैसा ही मर्तबा (ऊपर की बहिश्त) प्राप्त हुयी । सिफायत के वचनों (ब्रह्मवाणी) में इसका स्पष्टीकरण किया गया है ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए नेक कह्या घर तुम ।
एह तुमको देखाइया, हक सुभान के हुकम ।।१५६।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! हमने संक्षिप्त में तुम्हारे घर (परमधाम) की हकीकत कही है । यह श्री राज जी महाराज के हुक्म ने आपको दिखाया है ।

प्रकरण-२९, चौपाई-१७१०

धाम का बरनन नवों भोम का तमाम हुआ । आशिक महकक कैसे हैं । हज तमाम

प्रसंग - निम्न प्रकरण में महामति श्री लालदास जी द्वारा तीनों सृष्टियों की गति और मति का वर्णन हुआ है । ब्रह्मात्माओं की यात्रा, परिक्रमा तथा दर्शन परमधाम में है । उनके दिल व दिमाग किस प्रकार के होते हैं, वे लक्षण संक्षेप में बताए हैं ।

जब हज तमाम हुई, काबा जो इभराम ।
एह वास्ते इसलाम, पोहोंचने बका ठाम ।।१।।

जब श्यामा जी (इब्राहिम स्वरूप देवचंद्र जी) के निजघर परमधाम रूपी काबे का हज (ध्यान) सम्पूर्ण हुआ, यह अखण्ड परमधाम पहुंचने का कारण बना, क्योंकि वही शाश्वत सुख शांति का मार्ग है ।

ए जारत घर खुदाए की, तवाफ मक्के की इत ।
हक हजूर की साएत, उठना है क्यामत ।।२।।

परमात्मा के धाम का दर्शन करना ही ज्यारत है, और परमधाम के पच्चीस पक्ष में ध्यान द्वारा भ्रमण करना ही मक्के की परिक्रमा है । परमधाम मूल मिलावे में उस पल-घड़ी में उठना ही कियामत है ।

जो कोई बीच इसलाम के, मोमिन उमेदवार ।
सो रहे हुकम में, तो पोहोंचे परवरदिगार ।।३।।

जो कोई भी मोमिन सत्य व शांति के धाम परमधाम के चाहने वाले हैं, वे प्रियतम परब्रह्म के हुक्म के अनुसार चलेंगे, तो निश्चय ही वे धाम धणी के चरणों में पहुंच जायेंगे ।

मोमन हक हजूर में, रूबरू रूह सनमुख ।
इनको आप दिमाक की, कबूं ना होवे दुःख ।।४।।

मोमिन रूहें, जो प्रियतम परब्रह्म के चरणों में मूल मिलावे में विराजमान हैं, उन्हें कभी भी अहंकार के कारण दुख नहीं होता है ।

मुत्तकी संग मोमिन के, वे तरफ ना छोड़े हक ।
ए मुस्ताक दीदार के, रहे इशकै में गरक ।।५।।

परहेजगार ईश्वरी सृष्टि भी ब्रह्मात्माओं के साथ रहती है और परब्रह्म की सत्य राह कभी भी नहीं छोड़ती । वे प्रियतम परब्रह्म के दीदार के तीव्र अभिलाषी होते हैं तथा दिन रात इश्क (इश्के हकीकत) में ही डूबे रहते हैं ।

और तीसरी सृष्ट, जो मलकूती पैदास ।
तिनों को इन जिमीन की, कबूं ना छूटे आस ।।६।।

और तीसरी जीव सृष्टि, जो वैकुंठ से पैदा हुयी है, उनके मन से इस झूठे संसार की आशा कभी भी नहीं छूटती है ।

गिरों तीनो रहेत हैं, मोमिन के गृदवाए ।
तिनों कों अरकान हज के, ल्यावे हुकम बजाए ।।७।।

इस संसार में ब्रह्मात्माओं सहित तीनों प्रकार की सृष्टियाँ रहती हैं । वे ब्रह्मात्माएं कुर्आन में वर्णित हज के नियमो (परमधाम की चितवनि) को परमात्मा का आदेश मानकर पूरा करती हैं ।

एह हमको आखरत का, वाके बका के होए ।
बिना मोमिन ए हकीकत, पाए ना सके कोए ।।८।।

यही हमारा आखिरत का वास्तविक हज (तीर्थ) है, जो अखण्ड परमधाम का है। ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई भी परमधाम का ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता है ।

ए रहे ना बंधे इन में, होए नीयत साफ सूरत ।
एह आएत विख्यात क्यामत की, हक हजूर वही साएत ।।९।।

वे मोमिन सांसारिक बंधनों में कभी भी बंधे नहीं रहते हैं । उनका हृदय व लक्ष्य हमेशा पवित्र होता हैं । यह कियामत की प्रसिद्ध आयत है कि संसार रूपी खेल खत्म होने पर परमधाम (अर्श आज़म) में जब जागृत होंगे, तो वहां

वही पल-वही घड़ी होगी । एक पल भी समय व्यतीत नहीं हुआ होगा ।

जब इन देखी साएत, रूहें हादी हक नजर ।
तब इत रात जो लैल की, होए के चुकी फजर ॥१०॥

जिसे परमधाम मूल मिलावे की उस घड़ी का दर्शन हो जाता है, जिसमें श्री राजश्यामा जी एवं सखियां विराजमान हैं, उसके लिये इस अज्ञानमयी महिमावान रात्रि (लैलतुलकद्र) की प्रातः (ब्रह्मज्ञान का उजाला) हो जाती है ।

बुरा ना चाहे काहू को, मन में ना धरे रोस ।
हिरस न करे काहूं की, कबूं ना होए फरामोस ॥११॥

वे ब्रह्मसृष्टियाँ संसार में किसी का बुरा नहीं चाहतीं और न ही अपने मन में किसी के प्रति क्रोध रखती हैं । पराये धन या वस्तु के प्रति लोभ-तृष्णा भी नहीं रखतीं तथा माया से कभी भी असावधान (भ्रमित) नहीं होतीं ।

एक जुबांन से मारना, दूजा हाथ दराज ।
और बुरा ना दिल से, टूटे ना अंत इन काज ॥१२॥

एक जिह्वा से किसी को कष्ट पहुंचाना, दूसरा अपने हाथों से किसी को मारना, तीसरा दिल से किसी का बुरा चाहना - ये तीनों कार्यों का परहेज जीवन के अंत तक नहीं टूटता ।

होए वाके गुना काहूं से, इन मक्के दरम्यान ।
सजा न पोहोंचे तिन को, ऐसे आप सुजान ॥१३॥

यदि इस मक्के (पवित्र स्थान) के आसपास उनके द्वारा किसी के प्रति गुनाह हो जाता है, तो भी सजा उन तक नहीं पहुंचती, (क्योंकि वे निःस्वार्थ, निष्काम भाव से एक मात्र परमात्मा का लक्ष्य लेकर कार्य कर रहे होते हैं) । वे ऐसे ज्ञानवान, निष्काम होते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए यूं ही लिखे सुकन ।
देखो अपने दिल में, जागो चित्त चेतन ॥१४॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे ब्रह्मात्माओं ! आपके प्रति कुर्आने पाक में इसी प्रकार के वचन लिखे हैं । आप अपने दिल में इस तथ्य का विचार कर अपने चित्त को सावचेत (चेतन) कर जागृत हो जाओ ।

प्रकरण-३०, चौपाई-१७२४

प्रकरण दीन इस्लाम का

प्रस्तुत प्रकरण में तीनों सृष्टियों (ब्रह्म, ईश्वरी व जीव) के लक्षण बताये गये हैं । वचन (ज्ञान), चाल (रहनी), दशा (आत्मिक स्थिति) से इनकी पहचान होती है ।

फेर कहूं हकीकत, राह दीन इसलाम ।
जिन सेती बका मिने, पाइए अखण्ड आराम ।।१।।

अब पुनः सत्य शांति के मार्ग की वास्तविकता कहता हूँ, जिस पर चलकर दिव्य परमधाम (अर्श आज़म) के अखंड सुख प्राप्त होंगे ।

इन दुनिया चौदे तबक में, जब की है पैदास ।
तब के सब कोई ढूंढत, एही रहे दिल आस ।।२।।

इस चौदह लोकों के संसार में, जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुयी है, तब से सभी ऋषि-मुनिजन परब्रह्म के स्वरूप व अखण्ड परमधाम की खोज करते रहे हैं। उनके दिल में एकमात्र यही आशा थी..... ।

क्यूं बका में पहुंचिए, क्यूं कायम होवे हम ।
मिसल तैसी मेहेनत करें, पोहोंचे हक सुभान हुकम ।।३।।

कि किस प्रकार हमें अखण्ड मोक्ष प्राप्त हो सकता है ? किस प्रकार हम अखण्ड धाम में पहुंच सकते हैं ? किसके समान परिश्रम करें तो परमात्मा के आदेश से हम उन तक पहुंच सकें ?

जिनसे हक राजी रहे, हम सोई करे उपाए ।
सोई साधन कर सेवहीं, वही मेहेनत दिल ल्याए ।।४।।

जिस कार्य से परमात्मा प्रसन्न हों, हम वही उपाय करेंगे । उसी साधना के द्वारा परमात्मा की उपासना करेंगे, और उसी प्रकार तप करेंगे ।

ता कारन वेद वचन, कहे स्वांस नारायन मुख।
तहां से पाया ब्रह्मा ने, छूटे जरा मरन क्यों दुःख ।।५।।

इसी कारण नारायण भगवान के मुख के श्वांस से वेद के वचन आये हैं। नारायण भगवान से उस ज्ञान को ब्रह्मा जी ने पाया, किंतु उस ज्ञान से बुढ़ापा व मृत्यु का दुःख नहीं छूटा ।

तहां से पाया नारद, और ब्रह्मा के पुत्र चार ।
वेद चार ताके कहे, सब देव लगे तिन लार ।।६।।

फिर ब्रह्मा जी से उस ज्ञान को नारद जी ने और ब्रह्मा के चारों सनकादिक पुत्रों ने प्राप्त किया । उस ज्ञान के अंतर्गत चार वेद कहे गये हैं। उन वेदों के बताए मार्ग पर सभी देवतागण (हिन्दू) चलने लगे ।

करम उपासना ज्ञान की, तीन काण्ड भए जब ।
खट शास्त्र तिनके भए, सब विश्व लगी जाए तब ।।७।।

चारों वेदों के अंतर्गत जब कर्मकांड, उपासना कांड और ज्ञान कांड, इन तीनों की रचना हुयी, तब उनसे ६ शास्त्रों की रचना हुयी । तब इन शास्त्रों का ही सारा संसार अनुकरण करने लगा ।

मूल में नेति निगम कह्या, चार ज्ञान पाया निवरत ।
बिन ठौर ठहराए क्या कहे, क्यूं पोहोंचे जाए के तित ।।८।।

मूल रूप से वेदों ने परमात्मा को 'नेति नेति' (यह नहीं, यह नहीं) कहा है । खोज करते हुए अंततः चार प्रकार की मुक्ति का ज्ञान पाया । उस परब्रह्म के धाम को जाने बिना वहाँ कैसे पहुँच सकते थे ?

ए तो कही त्रिगुन की, खेल खावंद जो कोए ।
और इनसे पैदा भए, इत कही न जाए सोए ।।९।।

यह तो त्रिगुण प्रधान देवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की स्थिति है, जो कि इस १४ लोकों रूपी संसार के स्वामी हैं और इनसे जो जीव उत्पन्न हुये हैं, उनकी स्थिति तो कहने योग्य भी नहीं है । वे तो और ज्यादा अज्ञानता में डूबे हैं।

ए तो पैदाश की कही, और खावंद त्रिगुन ।
अब कहूं ब्रह्म सृष्ट की, जो खास गिरो मोमिन ।।१०।।

इस प्रकार जीव सृष्टि का वर्णन किया है, जिनके मालिक त्रिगुण प्रधान देव (त्रिदेवा) हैं । अब ब्रह्मसृष्टियों की स्थिति का वर्णन करूंगा, जिन्हें खासुलखास मोमिन कहा गया है ।

शास्त्र तीनों सृष्ट कही, जीव ईश्वरी ब्रह्म ।
कौल फैल हाल जुदे जुदे, तिनके कहूं नसीब करम ।।११।।

शास्त्रों में तीन प्रकार की सृष्टि - जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि, ब्रह्मसृष्टि का वर्णन आता है, जिनके वचन (ज्ञान), चाल (रहनी), दशा (आत्मिक स्थिति) तीनों भिन्न होते हैं । अब उनके कर्म व भाग्य (नियति) के विषय में कहूंगा ।

साधन तीनों करत हैं, अपनी ठौर की सब ।
है ज्ञान उपासना करम की, कर विवेक देखिए जब ॥१२॥

विवेक पूर्वक चिंतन करके देखें तो तीनों सृष्टियां (ब्रह्म, ईश्वरी, जीव) अपने मूल स्थान के अनुसार ही क्रमशः ज्ञान, उपासना व कर्मकाण्ड की साधना करते हैं ।

ए दुनियां चौदे तबक, किया ब्रह्म सृष्ट कारन ।
इन आगे निरत करत हैं, माया भेख बनाए त्रैगुन ॥१३॥

यह चौदह लोकों का संसार ब्रह्मसृष्टियों को दिखाने के लिये ही रचा गया है । तीन गुणों से उत्पन्न हुयी सारी सृष्टि अनेक प्रकार के मायावी वेश बनाकर उनके सामने लीला कर रही है ।

जीव सृष्ट दरम्यान में, बनावत भेख अनेक ।
वास्ते पैदा ब्रह्म सृष्ट के, सबका मतलब एक ॥१४॥

जीव सृष्टि इस संसार में कई तरह के वेश धारण करती है । उनकी उत्पत्ति ब्रह्मसृष्टियों के लिये ही हुयी है । इन सबका एक ही प्रयोजन है ।

एह खेल एक साएत का, याको निमख ना लागी वार ।
ए रूहें हजूर हक के, रहे सुख नित बिहार ॥१५॥

यह संसार रूपी खेल मात्र एक पल का है । परमधाम में एक क्षणमात्र समय भी नहीं हुआ है। वे ब्रह्मात्माएं प्रियतम परब्रह्म के चरणों में बैठी हैं और सदा से परमधाम के अखण्ड सुख लीला विहार में रमण करती हैं ।

ताको देखाए तीन तकरार, लैलत कदर के जब ।
ए तीनों में उतरी रूहें, सोई याद दिया इत सब ॥१६॥

उन ब्रह्मसृष्टियों को प्रियतम परब्रह्म ने महिमामयी संसार रूपी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीन भाग (ब्रज, रास, जागनी) दिखाये हैं । तीनों ही ब्रह्मांडों में ब्रह्मात्माएं अवतरित हुई हैं । प्रियतम अक्षरातीत उन्हें यहाँ सब याद दिला रहे हैं।

चिनार इन रूहन की, क्यूं कर पेहेचानी जाए ।
इन माया मोह अंधेर में, कौन राह बतावे ताए ॥१७॥

इन ब्रह्मात्माओं की क्या निशानी है, उन्हें कैसे पहचाना जा सकता है? इस माया-मोह से परिपूर्ण अज्ञानमयी जगत् में उन्हें कौन परमधाम की राह बतायेगा ?

इनों में मूल अंकूर का, रहे इशक ईमान ।
सो छूट काया छूटे नहीं, चाह हक की रहे पेहेचान ॥१८॥

परमधाम का मूल संबंध होने से इन ब्रह्मात्माओं के अंदर इश्क (प्रेम) व ईमान (विश्वास) स्वभाविक रूप से रहता है । इस कारण भले ही उनका शरीर छूट जाये, परन्तु उनके हृदय से प्रियतम परब्रह्म की चाहत खत्म नहीं होती, क्योंकि उन्हें प्रियतम अक्षरातीत की पूर्ण पहचान होती है ।

इनों को खोज वतन की, अभिलाषा रहे अंग ।
क्यूं मिले अपनी जात को, उठे एही अंग में तरंग ॥१९॥

इनके हृदय में अपने निजघर के खोज की चाह रहती है । किस तरह से अपने निजघर में जागृत हों और श्री राज श्यामा जी एवं सखियों से मिलें ? उनके अंग में यही उत्साह-उमंग उठता रहता है ।

कहां से हम आए इत, क्यूं पोहोंचे अपने ठौर ।
कोई राह बतावे हम को, चेत कर खोज की दौर ॥२०॥

इस माया जगत् में हम कहाँ से आए हैं ? अपने निजघर किस प्रकार जा सकते हैं ? कोई तो हमें हमारे निजघर का रास्ता बताए, इस प्रकार सावचेत होकर वे सत्य की खोज करते रहते हैं ।

जब बातों कानों सुनें, मन मोहोबत रहेवे हक ।
इनों का एही आराम, ए तो ऐसे अरस आशिक ॥२१॥

जब आपने धणी (प्रियतम प्राणनाथ) व अपने निजघर की हकीकत (ज्ञान) सुनते हैं, तो उनके हृदय में प्रियतम अक्षरातीत का प्रेम उमड़ पड़ता है । ये परमधाम के ऐसे आशिक हैं, जिन्हें श्री राज जी के प्रेम में ही आराम (सुख-शांति) मिलता है ।

जिनको हक मोहोबत बिन, और ना कछु सोहाए ।
ए चौदे तबक ऐसे लगे, काग बिष्टा दिखाए ॥२२॥

उन आत्माओं को प्रियतम श्री राज जी के प्रेम के अतिरिक्त अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता है । चौदह लोकों का ऐश्वर्य उन्हें कौए के विष्ठा के समान प्रतीत होता है ।

जो ता ऊपर मन चले, तो विख ए पास पर चले चित ।
इनों को अरस अजीम बिन, और न संचेवित ॥२३॥

अगर मन में सांसारिक सुखों की चाहना उत्पन्न हो जाती है, तो ब्रह्मात्माएं उन्हें विष के समान जानकर वहाँ से मन हटा लेती हैं । इन ब्रह्मात्माओं के दिल में परमधाम में जागृत होने के अतिरिक्त और कोई इच्छा नहीं होती ।

मोमिन में मूल अंकूर का, रेहेत इशक का बल ।
असल ईमान है इन में, रहे सदा दिल निरमल ॥२४॥

ब्रह्मात्माओं में प्रियतम अक्षरातीत से मूल संबंध के कारण इश्क का बल रहता है । इनके अंदर सत्य ज्ञान से उत्पन्न असल ईमान (विश्वास) होता है । इनका हृदय सदा ही निर्मल रहता है ।

बातां सुनने रसूल की, दिल में अति उलास ।
श्रवनों सबद इनों को, रहे ईमान विश्वास ॥२५॥

प्रियतम का संदेश सुनने के लिये इनके हृदय में अत्यंत उल्लास भरा होता है । प्रियतम की वाणी सुनने में ही उन्हें आनंद मिलता है । प्रियतम की वाणी के प्रति दिल में पूर्ण विश्वास होता है ।

कोई बात सुनावे हक की, तापर टूक टूक कर डारे तन ।
आप बिकावे अंग से, वार डारे तन मन धन ॥२६॥

उन्हें (ब्रह्मसृष्टि को) जब कोई धाम धणी की वाणी सुनाता है, तो वे उस पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देते हैं । उनके आधीन हो जाते हैं । उस पर तन-मन-धन से समर्पित हो जाते हैं ।

मोमिन को एही लक्षन, कोई पीछा ना रखे अंग ।
हक खिजमत सनमुख रहे, उठे नए नए अंग तरंग ॥२७॥

ब्रह्मात्माओं की यही पहचान होती है, कि वे सेवा के कार्य में समर्पित

होने के लिये किसी भी तरह से पीछे नहीं रहते । सदैव श्री राजजी की सेवा में उपस्थित रहते हैं । उनके हृदय में सेवा के नये-नये विचार उठते रहते हैं ।

मोमिन सब एक तन हैं, रहे एकै आतम ।
एक रूह सुख पावे सबकी, रहे कोमल चित नरम ।।२८।।

सभी मोमिन (ब्रह्ममुनि) एक तन (एक स्वरूप) होते हैं, उन सबमें एक ही आत्मा होती है। एक आत्मा के सुख से सभी आत्माएँ सुख अनुभव करती हैं। इनका चित्त सदैव नरम व कोमल रहता है ।

सम दृष्टि शीतल रहे, मद मोह न रहे अहंकार ।
पल ना फिरे हक सूरत से, रस स्वाद परवरदिगार ।।२९।।

उनकी दृष्टि सबके प्रति एक समान व शीतलता (हित की भावना) लिये रहती है । उनके हृदय में माया (धन, पद, प्रतिष्ठा, यौवन) का नशा, मोह(आकर्षण) तथा अहंकार जरा भी नहीं रहता है । एक पल के लिये भी उनका ध्यान श्री राजजी के स्वरूप से नहीं हटता है । प्रियतम के प्रेम में ही उन्हें आनंद की अनुभूति होती है।

मोमिन को और ना सोहावहीं, बिना हक कलाम ।
कब जागे हम धाम में, ठौर अरस बका इसलाम ।।३०।।

ब्रह्मात्माओं को श्री राज जी की वाणी के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता है । वे सदैव शाश्वत सुख व शांति से युक्त अपने अखंड परमधाम में जागृत होने की प्रतिक्षा करते रहते हैं ।

एही द्वा मांगे तुम पे, पूरी भई हमारी आश ।
सिताब उठाओ इस जिमी से, रहे एही दृढ विश्वास ।।३१।।

वे ब्रह्मात्माएं आप प्रियतम अक्षरातीत से यही प्रार्थना करती हैं, कि "हमारी खेल देखने की सारी इच्छा पूर्ण हो गयी है । हमें शीघ्रातिशीघ्र इस दुःखरूप संसार से लेकर परमधाम चलिये ।" उनके मन में यही विश्वास दृढ़ होता है ।

जा मरने से जग डरे, सो मोमिन मन उमंग ।
कब जावें हक हजूर, सिताब पोहोंचे सैयां संग ।।३२।।

जिस मृत्यु से सारी दुनिया डरती है, उसके प्रति ब्रह्मात्माओं के हृदय में उत्साह रहता है कि कब हम अपने निजघर मूल मिलावे में जागृत होंगे, हम सभी

आत्माएं शीघ्रातिशीघ्र परमधाम पहुंच जायें ।

जिन काल डराए सब डरे, सो आप काल डरत ।
त्रैगुन विष्नु महाविष्नु लों, मोह अहं लो जात ।।३३।।

जिस मृत्यु के नाम से सारी दुनिया डरती है, वह काल ब्रह्मसृष्टियों से डरता है । सम्पूर्ण त्रिगुणात्मक जगत् सहित विष्णु भगवान, आदिनारायण भी उस काल के आधीन हैं । महाप्रलय में मोह तत्व (नींद) तथा अहंकार (आदिनारायण) तक सम्पूर्ण जगत् लय को प्राप्त हो जाता है ।

जित बैठी रूह मोमिन, तहां काल को त्रास ।
तिस वास्ते ब्रह्मसृष्ट की, सब चरन रज राखे आश ।।३४।।

जिस तन में मोमिन रूह (ब्रह्मात्मा) विराजमान होती है, वहां काल (मृत्यु) भी आने से डरता है । इसी कारण सारी दुनिया ब्रह्मसृष्टि के चरण धूलि की आशा (कामना) रखती है ।

जिन अक्षर की नजर से, कई कोट उपजत इण्ड ।
पल फिरे फना होत है, त्रैगुन समेत ब्रह्माण्ड ।।३५।।

जिस अक्षर ब्रह्म के पलकों के इशारे मात्र से त्रिगुण (त्रिदेवा) सहित कई करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय को प्राप्त हो जाते हैं ।

सो अक्षर इन रूहन का, रखे मनोरथ मन ।
मैं पाऊ इनों का दीदार, देखो इशक रूहें मोमिन ।।३६।।

वे अक्षर ब्रह्म अपने हृदय में उन ब्रह्मात्माओं के दर्शनों की चाहना रखते हैं, कि मुझे उन सखियों का तथा रंगमहल में होने वाली प्रेमलीला का दर्शन प्राप्त हो ।

इन अक्षर के उपरान्त, नाम ना लिये जाए ।
सिफत सारे इनकी करें, सो आवत नहीं जुबांए ।।३७।।

उन अक्षर ब्रह्म के पश्चात् अन्य किसी का नाम लेने की आवश्यकता नहीं है , क्योंकि अन्य सब तो इन्हीं अक्षर ब्रह्म की स्तुति करते हैं, फिर भी जिह्वा से उनका वर्णन नहीं हो पाता है ।

हक सुभान इनों को, करत हजूर अपने याद ।
खिलवत इसारतें रमूजें, देखो असल अपनी बुनियाद ।।३८।।

हक सुब्हान (परब्रह्म अक्षरातीत) उन्हें परमधाम मूलमिलावे में पल-पल स्मरण करते हैं । खिल्वत (मूल मिलावे) की गुह्य बातें, जिन्हें संकेतों में कुर्आन में लिखा है, उन्हें देखकर अपने मूल संबंध (निस्बत) की पहचान कीजिये ।

इनों पर अपना मासूक, भेजा रसूल अलेह सलाम ।
तुम बुलाओ रूहन को, खोल देयो मेरे कलाम ।।३९।।

प्रियतम धाम धणी ने उन ब्रह्मात्माओं के लिये अपने माशूक (श्यामाजी) को रसूल अलैहिस्सलाम (तीनों सूरतों) के रूप में भेजा, और कहा कि उन ब्रह्मात्माओं को मेरी वाणी (कलाम अल्लाह-कुर्आन) स्पष्ट करके परमधाम बुलाओ।

याद देयो तुन इनो को, मुझसों किया कौल तुम ।
हम कबूं ना फेरहीं, खेल में तुमारा हुकम ।।४०।।

उन्हें याद कराना कि 'आप सबने मिलकर मुझसे परमधाम में वादा किया था कि माया रूपी खेल में जाकर हम कभी भी आपका आदेश नहीं ठुकरायेंगे'।

अब मैं तुमको बुलावत, तुम आओ अपने ठौर ।
जिन भूलो इन खेल में, बात ना विचारो और ।।४१।।

अब मैं (श्री राज जी) आप सभी आत्माओं को अपने निजघर बुला रहा हूं , आप अपने निजघर वापस चलिये। इस मायावी जगत् के मोह (झूठे आकर्षण) में अपने निजस्वरूप को ना भूलिये। अन्य किसी भी बात का विचार मत कीजिये।

ए जो चौदे तबक, ए वस्तोगते कछुए नाहीं ।
ए तो देखन मात्र है, तुम क्यूं लगत इनके माहीं ।।४२।।

यह जो चौदह लोकों का संसार है, यह वास्तव में कुछ भी नहीं (अस्तित्वहीन) है । यह तो दृश्य मात्र है, आप इसके आकर्षण में क्यूं फंसते हो ?

ए जो सुख तुम देखत, सो तो सरूप है दुःख ।
तुम मिल मांग्या मैं देखाया, तुम आओ अपने बीच सुख ।।४३।।

सांसारिक विषयों में आपको यह जो सुख दिखायी पड़ रहा है, वास्तव में वह दुःख स्वरूप है। आपने परमधाम में दुःख का खेल देखने की चाहना की

थी, तो मैंने आपको दिखा दिया। अब इसका मर्म (दुखस्वरूप) समझकर अपने निजसुखों में वापस आ जाओ।

जिन कोई इच्छा राखो, अब देखो खेल बनाए ।
जो चाहो सो मांग लेयो, तुमको सब कुछ दिया बताए ॥४४॥

अब दिल में किसी प्रकार की संसारिक इच्छा (आशा–तृष्णा) ना रखो। संसार को मात्र दृष्टा भाव से खेल की तरह (दृश्य रूप में) देखो। आपको सारी पहचान करा दी है, अब (श्री राज जी से संबंधित)जो भी मनोकामना हो, मांग लो।

जिन मोमिनो को अरस से, लिख भेजत हक कलाम ।
यूं करके समझावत, बीच दीन इसलाम ॥४५॥

जिन ब्रह्मात्माओं के लिये प्रियतम अक्षरातीत परमधाम से वचन लिखकर भेजते हैं, उनको शाश्वत सुख-शांति की राह इस प्रकार (पूर्वोक्त चौ. अनुसार) समझाते हैं ।

हक सुभान जिनों को, पल पल करत याद ।
पैदरपे भेजत पैगंबर, करने याद असल बुनियाद ॥४६॥

प्रियतम परब्रह्म जिन ब्रह्मात्माओं को पल पल याद करते हैं, जिन्हें परमधाम की याद दिलाकर जागृत करने के लिये एक के बाद एक संदेशवाहक भेजते हैं ।

मोमिन दिल अरस कर, ले धरा अपना तखत ।
तहां बैठे बातां करे, पोहोंचा उठना बखत क्यामत ॥४७॥

उन ब्रह्मात्माओं के दिलों को अपना धाम बनाकर उस पर अपना सिंहासन रख दिया है, और उस पर विराजमान होकर उनसे बातें करते हैं, कि अब परमधाम मूल मिलावे में जागृत होने का समय हो गया है । इसे ही कियामत कहते हैं ।

अब नेक कहूं मुतकै की, जो इन के संग सिरदार ।
इनों नूर की ख्वाएस, रहे देखन चाह बिहार ॥४८॥

अब थोड़ा संयमी (मुतकी) ईश्वरी सृष्टियों के विषय में भी कहता हूं, जो कि शिरोमणी ब्रह्मसृष्टियों के साथ रहती हैं । ये अक्षर ब्रह्म की इच्छा के स्वरूप हैं , जिनको श्री राज जी की इश्कमयी लीला देखने की चाह होती है

(अक्षर की जो चाहना है, वही इनके दिल में होती है)।

नूर चाहया दीदार, रूहन का देखन ।
सो खास गिरो कही मुतकै, रहे संग मोमिन ।।४९।।

अक्षर ब्रह्म ने ब्रह्मप्रियाओं के दर्शन की चाह की थी । इस कारण से अक्षर ब्रह्म ने अपनी २४,००० सुरता धारण करके ईश्वरी सृष्टि के रूप में उतारी है, जो सदैव ब्रह्मात्माओं के सानिध्य में रहती हैं ।

तिनको इन मुरदार की, रहे न कबूं आश ।
सोहोबत रहे मोमिन की, रहे ईमान दृढ़ विश्वास ।।५०।।

ईश्वरी सृष्टि को भी इस नश्वर दुनिया की कोई चाहना नहीं होती है । वे सदैव ब्रह्मात्माओं के सानिध्य में रहते हैं तथा परमात्मा के प्रति इनका विश्वास दृढ होता है ।

इनों को छींट दिमाक की, रहे ना कछूं रंचक ।
मिलावे रूहन में, तिनों सो रहे इशक ।।५१।।

इन ईश्वरी सृष्टियों में अहंकार का जरा भी नामोंनिशान भी नहीं होता है । वे हमेशा ब्रह्मसृष्टियों के समूह में रहती हैं और उन्हीं से इनका स्नेह होता है ।

बैर न काहूं सो राखे, रहे सज्जनता सनमुख ।
सम दृष्टि शीतल सदा, पावे जिकर में सुख ।।५२।।

वे किसी से वैरभाव भी नहीं रखते हैं । सबके प्रति सज्जनता का व्यवहार करते हैं । सबके प्रति समान दृष्टि व सबके हित की भावना रखते हैं । परब्रह्म स्वामी की चर्चा वाणी में ही उन्हें सुख मिलता है ।

दुनियां की सोहोबत में, कबूं ना बैठत जाए ।
इनों को हक मोहोबत की, बातें दिल सो गाए ।।५३।।

सांसारिक कामनाओं से युक्त मनुष्यों की संगत में कभी भी नहीं बैठते हैं। प्रियतम अक्षरातीत की प्रेम भरी बातें दिल में गाती रहती हैं ।

रसना सो रटत है, जिकर हक सुभान ।
इनों की दौड़ ईमान पर, रहे बका ठौर पेहेचान ।।५४।।

अपनी जिह्वा से वे निरंतर प्रियतम परब्रह्म की ही चर्चा व स्मरण करते रहते हैं । इनका सारा प्रयास दृढ़ विश्वास पर आधारित होता है । इन्हें अखण्ड

परमधाम की पूर्ण पहचान होती है ।

अहिनिस रहे बेराग में, और नफस के दुश्मन ।
लीला नित बिहार में, फिरताई रहे मन ॥५५॥

उनके हृदय में रात-दिन संसार के प्रति वैराग्य की भावना बनी रहती है । वे इंद्रियों की ख्वाहिशों (इच्छाओं) के दुश्मन होते हैं । उनका मन अखंड परमधाम की नित्य लीला विहार में ही भ्रमण करता रहता है ।

ममता इन के अंग में, ना रहे कुटुंम परिवार ।
हकीकत मारफत के, इनों को खोले द्वार ॥५६॥

उनके हृदय में सांसारिक सगे-संबंधियों, कुटुम्ब परिवार के प्रति ममता (राग) नहीं होता है । परब्रह्म स्वामी उन्हें हकीकत (सत्य ज्ञान) तथा मारिफ्त (परमसत्य) के रहस्य स्पष्ट कर देते हैं ।

ए सुकर बजावें हक का, कबूं ना भूले गुन ।
याद करे हक न्यामत, रहे सदा प्रफुल्लित मन ॥५७॥

वे परब्रह्म अक्षरातीत के प्रति सदैव शुक्रगुजार (कृतज्ञ) रहते हैं । उनकी कृपायें कभी भी नहीं भूलते । परमधाम की अखण्ड सम्पदा पच्चीस पक्ष को सदैव याद करते रहते हैं तथा हर परिस्थिति में सदैव प्रसन्नचित्त रहते हैं ।

सिरक न ल्यावे कबहूं, कछु देखे ना हक बिन ।
इनकी सूरत कबहूं, चित फिरे ना चरन मोमिन ॥५८॥

एक परमात्मा के सिवा अन्य किसी की पूजा (शिर्क) नहीं करते हैं । उनकी चित्तवृत्ति एक परब्रह्म स्वामी के सिवा अन्य कहीं नहीं जाती । उनका चित्त ब्रह्ममुनियों के चरणों से सदैव जुड़ा रहता है ।

और कई लक्षन है इनमें, हक सनमुख के जे ।
सो हिसाब क्यूं कर कहूं, गिरो मुतकी जानियो ए ॥५९॥

इन ईश्वरी सृष्टियों के और भी कई लक्षण हैं, जो धामधणी के सदैव सम्मुख रहती हैं । इनकी रहनी को कहां तक व्यक्त करूं ? उपरोक्त कहे हुए लक्षण जिनमें हो, उन्हें ईश्वरी सृष्टि समझना ।

अब कहूं मुनाफक की, लक्षनों से करी पेहेचान ।
इनो का दिल दुनियां मिने, दौड़त शबद जान ॥६०॥

अब कपट धर्मी (दोगले) लोगों के विषय में कहूंगा । लक्षणों से ही उनकी पहचान होती है । इनका हृदय सदैव दुनिया की ख्वाहिशों की तरफ भागता रहता है और उनके शब्द दूसरी दिशा में भागते रहते हैं (माहें मैले बाहेर उजले, सो तो कहे मुनाफक) ।

जुबांन मिने ईमान, दिल में नाहीं करार ।
सक सुभे कबू ना मिटे, पोहोंचे ना परवरदिगार ।।६१।।

वे जिह्वा से तो विश्वास की बातें करते हैं, किंतु दिल में शांति नहीं होती, क्योंकि उनका संशय कभी भी (कितना भी ज्ञान सुनने पर भी) नहीं मिटता और वे परब्रह्म अक्षरातीत की पहचान नहीं कर पाते हैं ।

रहे संग मोमिन के, कहे हम भए ईमानदार ।
हम तो सांचे मोमिन, हम सेवें परवरदिगार ।।६२।।

ये कपट धर्मी लोग ब्रह्मात्माओं के साथ में ही रहते हैं, और कहते हैं, कि हमें परमात्मा पर पूर्ण विश्वास (ईमान) है । हम तो सच्चे सुंदरसाथ (मोमिन) हैं, और हम भी प्रियतम श्री राज जी की सेवा-उपासना करते हैं ।

दिल कुटुम परिवार में, रहे हमेशां गरक ।
कबूं सावचेत होए के, बात ना कहे तरफ हक ।।६३।।

इनका हृदय कुटुम्ब परिवार के सांसारिक सुखों में हमेशा मग्न रहता है, कभी भी गम्भीरता पूर्वक प्रियतम अक्षरातीत से संबंधित बातें नहीं करते हैं ।

ममता मोह अहंकार की, कबूं छूटे ना अंतसकरन ।
बाहेर काहूं ना दिखावहीं, कहे हम सांचे मोमिन ।।६४।।

उनके अंतःकरण से कभी भी ममता-मोह-अहंकार का आवरण नहीं छूटता । अपने हृदय की वास्तविक स्थिति बाहर कभी भी प्रकट नहीं करते हैं । ऊपर से कहते हैं, कि हम ही सच्चे सुंदरसाथ हैं ।

लगी जड़े पाताल में, माया असत मन ।
आस पास बांधे रहे, तपत रहे सब तन ।।६५।।

इनका जीव, मन अधोगति की ओर ही लगा रहता है । असत्य माया में ही इनका मन बंधा रहता है । इनका शरीर काम-क्रोध, राग-द्वेष की अग्नि से तप्त रहता है ।

श्रवना देत सनेह सों, मन की न जाने कोए ।
अन्दर मैंले बाहिर उजले, ए मिसल मुनाफक होए ।।६६।।

दिखने में तो ऐसा लगता है कि वे बहुत ही प्रेमपूर्वक ज्ञान चर्चा सुन रहे हैं, किंतु उनके मन की स्थिति कोई नहीं जानता । उनका शरीर तो बाहर से उज्जवल होता है, किंतु अंदर से मन मलीन (कपट, बेईमानी से परिपूर्ण) होता है । इसलिये उन्हें मुनाफिक (दोगला) कहा जाता है ।

शक सुभे मेटे नहीं, उमेद न दिल इसलाम ।
उपर से ऐसे कहे, हम करत दीन का काम ।।६७।।

उनका संशय कभी भी दूर नहीं होता है, ना ही उनके दिल में परमधाम या मोक्ष की कोई चाहना होती है । किंतु बाहरी रूप से ऐसा प्रदर्शित करते हैं, कि हम धर्म का कार्य कर रहे हैं ।

तुम वास्ते हम छोड़या, अपना कुटुम परिवार ।
हम सांचे हैं मोमिन, हमको और ना बेहवार ।।६८।।

वे बाहरी रूप से दिखावा करते हुए ऐसा कहते हैं, कि हे धाम धणी ! मैंने आपकी खुशी के लिये अपने कुटुम्ब-परिवार की आशा छोड़ दी है । हम सच्ची ब्रह्मात्माएं हैं । हमको अन्य किसी कार्य-व्यवहार से मतलब नहीं हैं ।

हमारे घर की जो मता, तिन के खावंद तुम ।
हम को फुरमाओ सो करें, हम चले तुमारे हुकम ।।६९।।

वे कहते हैं, "हे धाम धणी ! हमारे घर में जो भी धन-सम्पत्ति है, वह सब आपकी ही है । आप हमें जैसी आज्ञा देंगे, हम उसका पालन करेंगे ।"

जाने ना नफा नुकसान को, पर छूटे ना क्यूं ए कर ।
रहे आधीन मन के, कहे हम सब ऊपर ।।७०।।

वे वास्तविक (आत्मिक) लाभ या हानि को नहीं समझते । फिर भी दिखावा नहीं छूटता है । हमेशा अपने मन के आधीन रहते हैं, और कहते हैं, कि हम ही सेवा-समर्पण में सर्वोपरि हैं ।

यूं सिफत मुनाफक की, केती कहूं बनाए ।
जोड़ लीजो तुम इनसों, ए जो दिया फल दिखाए ।।७१।।

इस प्रकार कपट धर्मी लोगों की वास्तविकता का कितना वर्णन करूं ?

आप स्वयं ही इनकी स्थिति, परिणाम व लक्षणों को देखकर पहचान लेना ।

कहूं इन दरम्यान की, ए जो रहे कुफरान ।
कम अकल रहे इनों की, कछू ना सके पेहेचान ।।७२।।

अब इनके बीच में रहने वाले अविश्वासी, नास्तिक जीवों के विषय में कहूंगा । इनकी बुद्धि अत्यंत कमजोर होती है । वे सत्य की पहचान नहीं कर पाते हैं ।

भली बुरी समझें नाहीं, ना नफा नुकसान ।
आस पास बंधे रहे, ना हक की पेहेचान ।।७३।।

ऐसे लोग भली-बुरी की समझ नहीं रखते हैं, ना ही इन्हें लाभ-हानि की पहचान होती है । इन्हें परब्रह्म की भी पहचान नहीं होती है । आसपास के लोगों (मित्रों), सगे संबंधियों से बंधे हुए देखा-देखी उनके मार्ग का अनुसरण करते रहते हैं।

ना निष्टा चरचा की, ना श्रवना रहे स्वाद ।
ना घर जाने अपना, ना असल ठौर बुनियाद ।।७४।।

ना ही इनकी ज्ञान-चर्चा सुनने में निष्ठा होती है, ना ही उन्हें सुनने में कोई आनंद आता है । ना ही अपने मूल घर की पहचान होती है और ना ही परमात्मा के धाम की पहचान होती है ।

रखे रसम लौकिक की, घर खेत कुटुम परिवार ।
अहंकार ताको बहे, रहे माया मगन बेहेवार ।।७५।।

वे लौकिक रीति-रिवाजों (परम्पराओं) का ही पालन करते रहते हैं । अहंकार से युक्त होकर घर, खेत, कुटुम्ब परिवार आदि मायावी कार्यों में ही मग्न रहते हैं ।

कछू जो बाकी होवहीं, माया बेहेवार में जब ।
चित पर ले समें की, करने बैठे तब ।।७६।।

माया के व्यवहार में अगर कुछ कमी रह जाती है, तो दिल में उसी की चिंता लेकर परेशान होते रहते हैं ।

कछु भला होए अपना, बुरा अगले का चाहें ।
सब से विरोध बांधही, ऐसा सरूप देखाए ।।७७।।

अपना कुछ भला हो जाये, इसके साथ ही अन्य व्यक्ति के बुरे की भी कामना करते हैं । उनके ऐसे व्यवहार की वजह से सबसे वैर भाव हो जाता है ।

कटुक जुबां मुख बोलहीं, रस ना पाइए नेक ।
प्रीत ना रखे काहूं सो, फिसाद करे अनेक ॥७८॥

मुख से कटुवचन ही बोलते हैं, कभी भी मीठे वचन नहीं बोलते । किसी से भी प्रेम-व्यवहार नहीं रखते, हर किसी से झगड़ा ही करते रहते हैं ।

अपने भले वास्ते, सबका करे संघार ।
कछू ना ल्यावे दिल में, भला बुरा विचार ॥७९॥

अपने लाभ (सुख) के लिये अन्य प्राणियों की हिंसा करते रहते हैं और अपने मन में अच्छे-बुरे का जरा भी विचार नहीं लाते ।

एक बीता जिमी के वास्ते, सबों को बरजे गेल ।
जिन मेरी राह कोई निकसों, दिल में राखें मेल ॥८०॥

एक बित्ता (६ इंच) जमीन के लिये सबका रास्ता रोकते हैं और कहते हैं, कि मेरी मालिकी के रास्ते से कोई न निकले । ये मन में ऐसी मलीनता (नफरत का भाव) रखते हैं ।

भली बुरी ना बूझहीं, ना नफा ना नुकसान ।
धरम छोड़ अधरम लेवहीं, काहूं पर ना करें एहसान ॥८१॥

उन्हें ना ही अच्छे-बुरे की पहचान होती है और ना ही अपना लाभ-हानि समझ में आता है । धर्म के सत्य मार्ग को छोड़कर वे अधर्म के मार्ग का अनुसरण करने लगते हैं और कभी भी परोपकार के कार्य नहीं करते , ना ही कृतज्ञता का भाव व्यक्त करते हैं ।

मेरा हादी कौन है, मोहीं राह बताई कित ।
मैं चल्या कहां जात हो, क्यों कर पहोंचे तित ॥८२॥

मेरा सद्गुरु कौन है ? उसने मुझे कहां की राह बतायी है ? और मैं किस ओर चला जा रहा हूं ? वहां किस प्रकार पहुंच पाऊंगा ? इन विषयों के बारे में उन्हें कुछ भी पहचान नहीं होती है ।

ना सुध इसलाम की, ना सुध हक कलाम ।
ना रखे सोहबत मोमिन, करे निंदा के काम ॥८३॥

उन्हें ना शांति के सत्य मार्ग की पहचान होती है, ना ब्रह्मवाणी की पहचान होती है, ना ही वे ब्रह्ममुनियों से सत्संग करते हैं । मात्र निंदा के कार्य में ही लगे रहते हैं ।

भली ना कहेवे काहूं को, सबकी बुरी निकसे मुख ।
उपाय सोई करहीं, जिनसे होए दोजक दुःख ॥८४॥

किसी की अच्छी बात अपने मुख से नहीं कहते, सबकी बुराई ही उनके मुख से निकलती है । दिन-रात वही प्रयास करते रहते हैं, जिनसे उन्हें नर्क/दुःख ही की प्राप्ति होनी है।

अहंकार दिमाक में, रात दिन फेरे मन ।
रहे सदा सिरक के शामिल, बराबरी करे मोमिन ॥८५॥

रात-दिन अपने मन में अहंकार लिये फिरते हैं । एक परब्रह्म को छोड़ कर स्वार्थ वश बहुदेव पूजा (शिर्क) में शामिल रहते हैं और ब्रह्मात्माओं की बराबरी करते रहते हैं ।

यूँ कई सिफते इनकी, सो आवत नहीं जुबांन ।
तुम कीजो मुकाबिल इनके, तब होवे पेहेचान ॥८६॥

इस प्रकार जीव सृष्टि की इस अगाध महिमा का जुबां से वर्णन नहीं हो सकता है। उनकी रहनी से तुलना करो तब आपको उनकी पहचान हो जायेगी । (तुलना दूसरे की नहीं बल्कि स्वयं की इन रहनी से करना है, और पहचानना है कि हम किस रास्ते पर चल रहे हैं ।)

कह्या तीनों का बेवरा, मुतकै मुनाफक काफर ।
फेर समझ खासल खास की, ए सिफत सब ऊपर ॥८७॥

इस प्रकार संयमी - ईश्वरी सृष्टि, दोगले-मुनाफिक तथा अविश्वासी-काफिरों तीनों का निरूपण किया है । इसके बाद खासुलखास ब्रह्मसृष्टि की रहनी समझिये, जिनकी महिमा सर्वोपरि है ।

ठौर तीनों के ए कहे, अक्षर नूर की पैदाश ।
बीज अंकूर जुदे जुदे, रहे अपने ठौर विश्वास ॥८८॥

इन तीनों का मूल उद्गम स्थान अलग-अलग कहा गया है और सबका अपने मूल स्थान पर ही विश्वास रहता है । ईश्वरी सृष्टि अक्षर ब्रह्म से उत्पन्न हुई है।

अक्षर की सूरत की, मुतकै परहेजगार ।
ए पोहोंचे अपने वतन में, जो नूर है ला के पार ॥८९॥

संयमी ईश्वरी सृष्टि अक्षर ब्रह्म की सुरताएं हैं । ये अपने निजघर अक्षरधाम पहुंचेंगे, जो कि निराकार से परे है ।

और काफर मुनाफक, ए मलकूती पैदाश ।
तिनों को इन जिमी की, क्यूं ए ना छूटे आश ॥९०॥

काफिर और मुनाफिक दोनों वैकुंठ (त्रैगुण) से पैदा हुए हैं । उनके हृदय से इस झूठे संसार की चाहना नहीं छूटती ।

मोमिन नूर बिलंद से, और आए अक्षरातीत के ठौर ।
रूहों को हक कदम बिना, आश ना रेहेवे और ॥९१॥

ब्रह्मात्माएं अक्षरातीत परब्रह्म के दिव्य परमधाम से आए हैं, जिनके हृदय में प्रियतम परब्रह्म के चरणों के अतिरिक्त अन्य कोई आशा नहीं रहती है ।

जिन पर हक सुभान की, रहे मेहेर नजर रेहमत ।
तिन वास्ते रसूल भेज्या, उठाया चाहे क्यामत ॥९२॥

उन ब्रह्मात्माओं पर प्रियतम अक्षरातीत की प्रेम भरी कृपादृष्टि हमेशा रहती है , उन्हें जागृत करने के लिए अपना संदेशवाहक (श्यामा जी) को भेजा, जो उन्हें कियामत के समय जागृत करना चाहते हैं ।

इन मोमिनों के वास्ते, हके लिखे अपने कलाम ।
आप आए साहेदी दई, बीच दीन इसलाम ॥९३॥

उन ब्रह्मात्माओं के लिये ही प्रियतम अक्षरातीत ने अपने वचन कुर्आन में लिखवाये । आपने स्वयं रसूल के रूप में आकर दीने इस्लाम की स्थापना करके ब्रह्मात्माओं की साक्षी दी ।

इन मोमिन के वास्ते, बंध बांधे बीच फिरकान ।
आखर को इनों की, सब कहे ए पेहेचान ॥९४॥

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही कुर्आन में भविष्यवाणी व उनकी पहिचान लिखकर आखिरत में होने वाली लीला को पूर्व निश्चित कर दिया ।

इन मोमिन के वास्ते, उतारी रेहेमत हक ।
आए अरस अजीम से, पिलाए नूर प्याले इशक ॥९५॥

इन ब्रह्मात्माओं के कारण ही प्रियतम अक्षरातीत ने परमधाम से कृपाएं (तारतम ज्ञान, जागृत बुद्धि आदि) दुनिया में उतारीं और परमधाम से आकर इश्क (परमधाम के स्वरूप व लीलाओं) के दिव्य प्याले पिला रहे हैं ।

इन मोमिन के वास्ते, उठाई आठों भिस्त ।
इनों वास्ते चौदे तबक को, पोहोंचाए अपनी कस्त ।।९६।।

इन ब्रह्मात्माओं के कारण जीवों को ८ बहिश्तों में अखंड किया गया है । इनके कारण ही १४ लोकों की दुनियाँ को अपनी कृपा का पात्र बनाया ।

जिन मोमिन के वास्ते, हक आप हुए आशक ।
मोमिन मेरे माशूक, इनमें जिन कोई ल्याओ शक ।।९७।।

जिन ब्रह्मात्माओं के लिये प्रियतम परब्रह्म स्वयं आशिक (प्रेमी) हुए और कहा, कि ब्रह्मात्माएं (मोमिन) मेरी माशूक हैं, इसमें जरा भी संशय मत करो ।

जिन मोमिनों को रमूजे, लिख भेजत रसूल साथ ।
जोश हुकम उतारा अरस से, सो रखा मोमिनों के हाथ ।।९८।।

उन ब्रह्मात्माओं के लिये परब्रह्म ने (कुर्आन पाक में) सांकेतिक कथन लिखकर रसूल साहब के साथ भिजवाये, अर्शे अज़ीम (परमधाम) से अपना जोश व हुक्म की शक्ति भी अवतरित की, और यह अखंड खजाना उन्होंने उन्हीं ब्रह्मात्माओं के हाथों में रख दिया ।

इन मोमिनों के वास्ते, किए लैल के तीन तकरार ।
मुनारों मुल्ला चढ़ाए के, याद करो परवरदिगार ।।९९।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही महिमामयी संसार रूपी रात्रि के तीन भाग (ब्रज, रास, जागनी) बनाये गये । मस्जिद की मिनारों पर मुल्ला को चढ़ाकर बाँग (अजान) देने का नियम भी ब्रह्मात्माओं के लिये ही बना दिया, ताकि वे अज़ान सुनकर प्रियतम परवरदिगार का स्मरण-ध्यान करने बैठ जायें ।

अब आओ तुम मोमिनों, अपने ठौर अरस ।
आए बातें मुझसों करो, बीतक अपनी सरस ।।१००।।

प्रियतम अक्षरातीत कहते हैं, 'हे ब्रह्मात्माओं ! अब अपने निजघर परमधाम में वापस आ जाओ और आकर मुझसे प्रेमपूर्वक बातें करो, कि किस

प्रकार संसार रूपी खेल देखा।

क्यूं कर याद मुझको किया, कैसा देखा खेल तुम ।
कैसा दिल रहा खेल में, क्या बजाए हुकम ।।१०१।।

संसार रूपी खेल में आपने मुझे किस प्रकार याद किया ? आपने कैसा मायावी खेल देखा ? संसार में आपका दिल किस तरफ रहा (संसार की तरफ या राजजी की तरफ) ? आपने वहां क्या मेरे आदेश का पालन किया ?

तुम वास्ते सिफाएत के, मैं रसूल को कहे सुकन ।
तिन तुम को बताये दई, अरस गलियां रोशन ।।१०२।।

आप ब्रह्मात्माओं के लिये ही मैंने रसूल (हकी सूरत) से सिफायत के वचन तारतम वाणी के रूप में कहे और उन्होंने परमधाम की नूरमयी गलियों की पहचान करा दी ।

तुमको जगाए जुगते, राख सुपन आकार ।
अरस देखाया इन जिमी, लिया बीच नित बिहार ।।१०३।।

इस प्रकार स्वाप्निक तन के रहते हुए भी उन्होंने युक्ति पूर्वक - परमधाम की वाणी सुनाकर - आप सबको जगा दिया । इस मायावी जगत् में रहते हुए भी आपको दिव्य परमधाम का साक्षात्कार करा दिया और परमधाम की नित्य लीला विहार में आपको शामिल कर लिया ।

ए मेहेर मोमिनों को, करत हक सुभान ।
सो गिनती में आवे नहीं, तो क्यूं कर कहूं जुबांन ।।१०४।।

यह सम्पूर्ण मेहर (लाड) प्रियतम अक्षरातीत श्री राजजी ने ब्रह्मात्माओं पर की है। जिसकी गिनती करना ही सम्भव नहीं है तो उसका वर्णन इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार करूं?

महामत कहे ए मोमिनों, तुमारा घर इसलाम ।
खेल देख पीछे फिरो, जाग उठो घर धाम ।।१०५।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी, तुम्हारा घर तो शाश्वत शांति का धाम परमधाम है । अब यह संसार रूपी खेल देखकर, अर्थात्, इस से निवृत्त होकर वापस अपने निजघर चलो और मूल मिलावे में जागृत हो जाओ ।

प्रकरण ३१, चौपाई १८२९

अब कहूं चांदनी चौक की

सुंदरसाथ के चित्त को परमधाम के सुखों में लगाने के लिये अक्षरातीत पूर्णब्रह्म ने रंगमहल के मुख्य द्वार के सम्मुख आए चाँदनी चौक की शोभा का अद्‌भुत वर्णन इस प्रकरण में किया है ।

एह सिफायत के सुकन, महंमद सुने जो कान ।
म्याराज में जो हक हजूर, करी मजकूर सुभान ।।१।।

ये परमधाम की वाणी सिफायत के वचन हैं, जिन्हें मुहम्मद साहब ने शबे मेअराज (दर्शन की रात्रि) में परब्रह्म के समीप मूल मिलावे में जा कर सुने थे, जिन्हें (नब्बे हजार हर्फ) हक सुब्हान तआला (परब्रह्म स्वामी) ने उनसे कहा था ।

जो देख्या तिन बखत, अरस अजीम का ठौर ।
सो तब जाहिर ना किया, सो अब हक बताया भोर ।।२।।

उस समय जो परमधाम (अर्श अज़ीम) देखा था, उसे उस समय संसार में जाहिर नहीं किया था । उस परमसत्य को अब हकी स्वरूप में आकर बता रहे हैं और ब्रह्मज्ञान रूपी भोर (सुबह) कर रहे हैं ।

अब कहूं चांदनी चौक की, जो आगे अरस के बड़े द्वार ।
चारों तरफो चौखुटी, जित नित होत बिहार ।।३।।

अब चांदनी चौक की शोभा का वर्णन करता हूं, जो रंगमहल के मुख्य द्वार के सामने आया है । यह समचौरस (चौकोन) आकृति में है, जहां नित्य प्रति प्रेम-आनंद से परिपूर्ण लीलाएं होती हैं ।

एह चौक पांच सौ मंदिर भए, एह घाट अमृत वन ।
ताके दोनों तरफों वन बन्या, चांदनी बीच रोशन ।।४।।

यह चौक अमृत वन के अंतर्गत आया है । अमृत वन २००० मंदिर लम्बा और ५०० मंदिर चौड़ा है । जिसके पश्चिम में रंगमहल के लगकर १६६ मंदिर की लम्बी-चौड़ी जगह में जगमगाता हुआ, खुले आकाश वाला चांदनी चौक आया है । इसके दोनों तरफ अमृत वन शोभायमान है ।

दोए हिस्से लिए वन ने, चांदनी चौक दरम्यान ।
इनका बेवरा देखियो, अरस दिल मोमिन पेहेचान ।।५।।

५०० मंदिर में से दायें–बायें के दो हिस्से (१६६-१६६ मंदिर) में अमृत वन है, तथा मध्य के एक हिस्से (१६६ मंदिर) में चांदनी चौक है । इसका विवरण देखिये, अर्श दिल ब्रह्मात्माओं के पास उसकी सारी पहचान होती है ।

हार एक दरखत चल्या, दोए मंदिर लों हद सुमार ।
ताके दोए सौ पचास जमा, इन दरखतों करो विचार ।।६।।

अमृत वन में दो-दो मंदिर की दूरी पर वृक्षों की पंक्तियां आई हैं । उसकी ५०० मंदिर की चौड़ाई में २५० वृक्ष होते हैं ।

अस्सी अस्सी और तीन तीन, आए तरफ बाएं दाहेने दोए ।
चौरासी रहे बीच में, सो चांदनी हद कही सोए ।।७।।

चाँदनी चौक के दायें-बायें (उत्तर-दक्षिण) अमृत वन में (१६६–१६६ मंदिर की चौड़ाई में) ८३-८३ वृक्ष आये हैं । बीच में ८४ वृक्षों की जगह (१६८ मंदिर) में चांदनी चौक है ।

ए हद तरफ पाट घाट की, धाम द्वार पाट दरम्यान ।
बेआलीस बेआलीस, दोनों बाजू तूं जान ।।८।।

चांदनी चौक की पूर्व दिशा (पाट घाट की तरफ) की सीमा में (धाम दरवाजा और पाट घाट के बीच में) दो मंदिर की रौंस (रास्ते) के दायें-बायें अमृत वन में ४२-४२ वृक्ष आये हैं ।

बीच में पड़ा रास्ता, सो धाम द्वार पाट सनमुख ।
दोरी बंध लग नूर लों, सो क्यों कहूं याके सुख ।।९।।

रंगमहल के मुख्य दरवाजे के सामने चांदनी चौक व अमृत वन के मध्य से होता हुआ दो मंदिर का चौड़ा रास्ता सीधे पाट घाट तक गया है, इसी प्रकार यमुना जी के उस पार भी अक्षर धाम तक ऐसा रास्ता है, जिससे रंगमहल व अक्षर धाम के मुख्य द्वार जगमगाते हुए आमने-सामने दिखायी देते हैं । इस मनोहारी सुखदायी शोभा के विषय में क्या कहूं ?

जहां बेआलीस दरखत, तहां मेहेराब एकतालीस ।
बाएं दाहेने दोउ बने, ए रस्ता पाई हक बकसीस ।।१०।।

चांदनी चौक के पूर्व सीमा से लगकर अमृत वन में रास्ते के दायें-बायें जो ४२-४२ वृक्ष आये हैं, उनके मध्य डालियों की ४१-४१ महराबें शोभायमान

हैं । यह सारी शोभा राजजी की कृपा से दिल में आयी है ।

ए मेहेराब दरखतन के, एकतालीस एकतालीस दोए ठौर ।
बीच में एक भर रस्ता चल्या, सो सीधा चल्या दौर ।।११।।

वृक्षों की डालियों के ये महराब रास्ते के दायें-बायें शोभायमान हैं । बीच में दो मंदिर का चौड़ा रास्ता सीधे पाट घाट तक गया है ।

यूं जमा चौरासीय की, तिरासी पड़े मेहेराब दरखत ।
नूर रोशनी अरस की, सो क्यूं कर कहूं सिफत ।।१२।।

इस प्रकार ८४ वृक्षों के मध्य दोनों तरफ कुल ८३ महरावें आयी हैं । इस प्रकार रत्नों के समान जगमगाती वृक्षों की नूरमयी रोशनी की शोभा किस प्रकार कहूं ?

यों असल अनार तरफ की, दूजी तरफ जांबू ठौर ।
ऐसे दरखत यों ही मेहेराब, तीन ठौर देखो और ।।१३।।

इसी प्रकार अमृत वन की उत्तर दिशा में अनार वन के वृक्षों की तथा दक्षिण दिशा में जाम्बू वन के वृक्षों की शोभा है । तीनों वनों में ऐसे ही जगमगाते हुए वृक्ष व महराबों की शोभा है ।

तिरासी तिरासी दोए तरफ, तीसरे चौरासी जान ।
ताके तिरासी मेहेराब, रखो सब ठौरों पेहेचान ।।१४।।

चाँदनी चौक के दोनों ओर अमृत वन में ८३-८३ वृक्ष हैं और सामने पूर्व दिशा में ८४ वृक्ष (रौंस के दायें-बायें जो ४२-४२ वृक्ष) आए हैं । पूर्व के इन ८४ वृक्षों के मध्य कुल ८३ महरावें आयी हैं । इस प्रकार सभी स्थानों की शोभा पहचानो ।

इन दरखतों की भोम दोए, तीसरे चांदनी और ।
इनकी हद पांच सौ लग, जमुना हद किनारे ठौर ।।१५।।

अमृतवन के इन वृक्षों की ऊंचाई दो भोम (तीसरी चांदनी) है । अमृत वन की चौड़ाई ५०० मंदिर की है और लम्बाई (पश्चिम से पूर्व) यमूना जी के किनारे (पुखराजी रौंस) तक (२००० मंदिर की) है ।

ए जो कहे धाम गृद ठौर के, हर छज्जे तले दोए द्वार ।
तिन मंदिर द्वार के बैठिए, देख जिमी पेड़ सुखकार ।।१६।।

इससे पहले जो रंगमहल के चारों ओर आये बाहरी हार मंदिरों का वर्णन किया है, जिनमें प्रत्येक मंदिर में छज्जों (झरोखों) के नीचे दो-दो दरवाजे हैं। जब उन मंदिरों के द्वारों से बैठकर देखते हैं तो सामने धाम चबूतरे से एक भोम नीचे धरती पर विद्यमान नूरी वृक्ष दिखायी देते हैं ।

जो बैठिए छज्जो पर, भोम नजर आवे दरम्यान ।
दूसरी भोम छज्जे बैठिए, तो चांदनी नजर पेहेचान ॥१७॥

यदि प्रथम भोम के झरोखों में बैठते हैं, तो वनों की बीच की दूसरी भूमिका नजर आती है और जब रंगमहल की दूसरी भोम के छज्जों में बैठते हैं तो वनों की तीसरी चांदनी दिखायी देती है ।

ऐसी पांचों घाट की, चांदनी भोम बराबर ।
तामें तीन धाम मुकाबिल, नींबू नारंगी दोए सरभर ॥१८॥

अमृत वन के समान ही पाँचों वनों (लिबोई, अनार, अमृत, जांबू, नारंगी) की दो भोम तीसरी चाँदनी आयी है । इन पाँचों घाटों (वनों) में से तीन घाट (अनार, अमृत, जांबू) रंगमहल के ठीक सामने आये हैं । नींबू व नारंगी के वन उपरोक्त तीनों वनों की सीध में आये हैं ।

पांचों घाट के कहे, भोम चांदनी बराबर ।
एह शोभा है अति बड़ी, सो जुबां कहे क्यूं कर ॥१९॥

पाँचों घाटों (वनों) की शोभा - भूमिका व चांदनी एक समान अति सुंदर आई है । यह शोभा सर्वोपरि है, जिसका वर्णन इस झूठी जिह्वा से सम्भव नहीं है।

अब कहूं दोए चबूतरा, जो इन चांदनी दरम्यान ।
तिनका बेवरा करों, लीजो मोमिनों तुम पेहेचान ॥२०॥

अब चाँदनी चौक के मध्य आये दो चबूतरों का वर्णन करता हूं, जिनका विवरण समझ कर दिल में धारण कर लेना ।

महामत कहे ए मोमिनों, कही चांदनी आगे द्वार ।
फेर कहूं बेवरा तिनका, तुम देखो अपना बिहार ॥२१॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! रंगमहल के मुख्य दरवाजे के सामने स्थित चाँदनी चौक का वर्णन किया है । इसका वर्णन पुनः करूंगा । आप अपने निजघर के रमणीय स्थलों की शोभा देखिये।

पांच हिस्से चांदनी के, जितनी जिमी की ठौर ।
तामे एक हिस्से एक चबूतरा, बाकी दोए हिस्से रहे और ।।१।।

पूर्व से पश्चिम की तरफ चांदनी चौक की लम्बाई १६६ मंदिर के पांच हिस्से ३३-३३ मंदिर के बने है । इनमें से मध्य के एक हिस्से में ३३ मंदिर का लम्बा-चौड़ा समचौरस कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है, तथा इसके पूर्व व पश्चिम में २-२ हिस्से खाली हैं, जिसमें नूरमयी रेती बिछी है ।

दोए हिस्से धाम दिवाल तरफ, दोए हिस्से जमुना तरफ ।
एक हिस्से भर चबूतरा, कह्यो जाए ना एक हरफ ।।२।।

चबूतरे के पूर्व में रंगमहल की तरफ दो हिस्से (६६ मंदिर) हैं, तथा चबूतरे की पश्चिम में जमुना जी की तरफ भी इसी प्रकार दो हिस्से (६६ मंदिर) हैं । इन दोनों के मध्य में एक हिस्से (३३ मंदिर) में कमर भर ऊंचा चबूतरा है, जिसकी शोभा शब्दों से परे है ।

ऐसे ही इन मुकाबिल, कह्यो चबूतरा और ।
ऐसे है पांच हिस्से बने, दोनों चबूतरे ठौर ।।३।।

इसी प्रकार चांदनी चौक में दो चबूतरे उत्तर व दक्षिण में आये हैं । उत्तर से दक्षिण की तरफ भी चांदनी चौक (१६६ मंदिर) के पांच हिस्से (३३-३३ मंदिर) होते हैं ।

ऐसो ही पांचो हिस्से, इन चांदनी की ठौर ।
अनार जांबू की तरफ में, दोउ बाजू चबूतरे दोए ।।४।।

इसी प्रकार चांदनी चौक में उत्तर से दक्षिण तरफ भी पांच हिस्से बने हैं, जिनमें १-१ हिस्सा (३३-३३ मंदिर) अनार वन व जाम्बू वन की तरफ खाली है, तथा मध्य का एक हिस्सा (३३ मंदिर) भी खाली है । इसके अतिरिक्त (मध्य के हिस्से के दायें-बायें) बचे दो हिस्सों में उत्तर व दक्षिण में दो कमर भर ऊंचे चबूतरे हैं ।

एक बाट आया चबूतरे, भया दोनों के दरम्यान ।
और एक बाट और रह्या, चबूतरे दरखतों बीच जान ।।५।।

दोनों में से प्रत्येक चबूतरा ३३-३३ मंदिर के एक-एक भाग में आया है, जो जाम्बू व अनार वन की तरफ के दोनों खाली हिस्सों के मध्य आये हैं। इन दोनों चबूतरों के मध्य एक खाली हिस्सा (३४ मंदिर का) और है।

यूं पांचो हिस्से बराबर भए, देखो मोमिनों तुम ।
एह तुम को देखावत, हक सुभान का हुकम ।।६।।

इस प्रकार ये पांचों हिस्से बराबर हैं। हे सुंदरसाथ जी! इसे ध्यान पूर्वक देखिये। श्री राज जी का आदेश ही आपको चांदनी चौक की शोभा दिखा (समझा) रहा है।

तैतीस मंदिर भए, हर चबूतरे कहा ठौर ।
भई चौतीस मंदिर हद, सो चौक दरम्यान का और ।।७।।

दोनों चबूतरे ३३-३३ मंदिर के लम्बे-चौड़े हैं। दोनों चबूतरों के बीच में ३४ मंदिर की जगह है।

और तैंतीस तैंतीस की हद, रहे चबूतरे वन दरम्यान ।
ए दोनों चबूतरों देखिए, हादी दे मोमिनों पेहेचान ।।८।।

तथा ३३-३३ मंदिर की जगह चबूतरे व वनों के बीच में (उत्तर व दक्षिण में बाहरी तरफ) आयी है। इन दोनों चबूतरों की शोभा देखिये। हादी श्री श्यामा जी ने ब्रह्मात्माओं को इसकी पहचान करा रहे हैं।

अब धाम पाट के बीच में, देखो हिसाब मोमिन ।
दोए हिस्से तरफ धाम के, दोए हिस्से तरफ बन ।।९।।

अब रंगमहल व पाट घाट के बीच में अर्थात् पूर्व से पश्चिम की तरफ चाँदनी चौक का हिसाब देखिये। 33–33 मंदिर के लम्बे दो हिस्से रंगमहल की तरफ हैं तथा दो हिस्से अमृत वन की तरफ (पूर्व में) हैं। (उनके मध्य में 33 मंदिर का चबूतरा है)।

एक हिस्से भर चबूतरा, सो दोउ हिस्सों के दरम्यान ।
सो मंदिर हद तैंतीसमो, छासठ सरसठ दोए पेहेचान ।।१०।।

दोनों तरफ के दो–दो हिस्सों के मध्य में एक हिस्से (३३ मंदिर) में चबूतरा है, चबूतरा ३३ मंदिर का लम्बा-चौड़ा है, और इसके पूर्व-पश्चिम के हिस्से क्रमशः ६६-६७ मंदिर के लम्बे हैं।

धाम तरफ रहे सरसठ, छासठ हद पाट तरफ ।
एह हद चांदनी चौक की, एह है शब्दातीत हरफ ।।११।।

(चबूतरे की पश्चिम में) रंगमहल की तरफ ६७ मंदिर की जगह है, व (चबूतरे के पूर्व में) पाट घाट की तरफ ६६ मंदिर की जगह आयी है । इस प्रकार कुल १६६ मंदिर की लम्बी-चौड़ी जगह में चाँदनी चौक आया है, जिसका वर्णन शब्दातीत है ।

तरफ चबूतरा अनार की, तहां दरखत है लाल ।
दूजा जांबू तरफ का, तहां सबज रंग खुसाल ।।१२।।

अनार वन की तरफ उत्तर दिशा में जो चबूतरा है, वहां पर लाल रंग का वृक्ष है तथा जाम्बू वन की तरफ दक्षिण दिशा में जो दूसरा चबूतरा है, वहां हरे रंग का वृक्ष है, जिनकी रत्नों के समान जगमगाती हुयी नूरी शोभा देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है ।

एह चबूतरा चौरस, चारों तरफ बराबर ।
चारों तरफों कठेडा, दरम्यान द्वार बने यूं कर ।।१३।।

ये दोनों चबूतरे समचौरस हैं, इनकी लम्बाई- चौड़ाई चारों दिशा में बराबर है । चारों दिशाओं में सीढ़ियों के सामने द्वार की शोभा है, बाकि जगह में चबूतरे के किनार पर कठेड़े की शोभा है ।

चारों तरफों तीन तीन सीढ़ियां, दरम्यान में द्वार दरखत ।
सो दरखत रहेत बगले के, रहे बीच हक तखत ।।१४।।

चबूतरे की चारों दिशाओं के मध्य से तीन-तीन सीढ़ियां उतरी हैं, जिनके सामने कठेड़ा द्वार है। चबूतरे के ठीक मध्य में वृक्ष आया है । इस वृक्ष के बाजू में श्री राज श्यामा जी का सिंहासन आया है ।

इत छांहा रहेत है, सब चबूतरे भराए ।
मानों जडाव जुगत ज्यों, रोशनी आसमान पोहोंची धाए ।।१५।।

यहां वृक्षों की डालियां इस प्रकार फैली हैं, कि उनकी छाया सम्पूर्ण चबूतरे पर होती है । वृक्षों की डालियां सुंदर रत्नजड़ित चंदवा के समान जगमगा रहे हैं, जिनकी रोशनी आकाश में जगमगाती हुयी दिख रही है ।

जब हक हादी बैठत, ऊपर इन तखत ।
गदेले कुरसिंया, हाजर होवे इन बखत ।।१६।।

जब श्री राज श्यामा जी चबूतरे पर सिंहासन पर विराजमान होते हैं, तो गद्देदार कुर्सियां सखियों की सेवा में हाजिर हो जाते हैं ।

तहां रूहें भराए बैठत, घेर के हक सुभान ।
इहां खिलौने आवे मूजरे, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।१७।।

सखियां सम्पूर्ण चबूतरे पर श्री राज श्यामा जी को घेरकर बैठ जाती हैं । इस समय सखियों के खिलौने अर्थात् पशु-पक्षियां श्री राज श्यामा जी के दर्शन व अभिवादन के लिये आते हैं । इसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती है।

इत सुख कई भांत के, एह जिमी चेतन ठौर ।
हक सुभान मोमिन बिना, काहू ना देवे और ।।१८।।

परमधाम की इस चेतन भूमिका में कई तरह के सुख विद्यमान हैं, जो श्री राज जी ब्रह्मात्माओं के सिवाए अन्य किसी को नहीं देते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, एह तुम करो याद ।
तुम तो बैठे बका मिने, देखो असल ठौर बुनियाद ।।१९।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी, तुम इस लीला को याद करो । तुम वास्तव में इसी अखण्ड परमधाम में मूल मिलावे में बैठे हो । अपने निजस्वरूप व प्रियतम अक्षरातीत से मूल संबंध को याद करो ।

प्रकरण ३३, चौपाई १८६९

दोए चबूतरे दरम्यान के, पडा रस्ता रोशन ।
फेर तिनका कहूं बेवरा, सुनो तुम मोमिन ।।१।।

चांदनी चौक में स्थित दोनों चबूतरों के मध्य में दो मंदिर का चौड़ा एक रास्ता (रौंस) आया है । अब पुनः उसका विवरण कहूंगा । हे सुंदरसाथ जी ! आप उसे ध्यानपूर्वक सुनिये ।

एह चौक मंदिर चौंतीस भर, दस मंदिर बड़े द्वार के जान ।
बारे बारे दाएं बाएं, गिनों चौंतीस किया आसान ।।२।।

दोनों चबूतरों के मध्य में ३४ मंदिर की जगह है, जिसमें से १० मंदिर

रंगमहल के मुख्य दरवाजे की हांस के सामने आए हैं । इसके दायें-बायें १२-१२ मंदिर की जगह और है । इस प्रकार कुल ३४ मंदिर की जगह होती है ।

एह अठत्तर मंदिर की, जब छोडिए हद ।
अब कहूं धाम के छज्जन की, इहां लग सरहद ।।३।।

दस मंदिर की हांस के दायें बायें ७८-७८ मंदिर की जगह और चांदनी चौक की सीमा में होते हैं । रंगमहल के मंदिरों के झरोखे (छज्जे) यहां तक दिखायी देते हैं । इसके आगे वृक्षों की डालियां झरोखों से मिली हुयी हैं ।

इन अठत्तर का बेवरा, बारे मुकाबिल एक तरफ ।
आगे तैंतीस छोड़ चबूतरे, कहे हर दरखत के हरफ ।।४।।

इस ७८ मंदिर का विवरण सुनिये । मध्य के (दरवाजे की हांस के) दस मंदिर के एक तरफ (उत्तर या दक्षिण कोई भी तरफ) चबूतरे तक १२ मंदिर की जगह है । फिर ३३ मंदिर का चबूतरा है । इस प्रकार दोनों तरफ के चबूतरे हैं ।

और तैंतीस छोड़ तरफ बन के, गिनती छासठ जमा कर ।
बारे ता उपर कहे, यूं जमा कीए अठत्तर ।।५।।

इसके पश्चात् पुनः ३३ मंदिर की जगह चबूतरे व वन (उत्तर में अनार वन तथा दक्षिण में जाम्बू वन) के मध्य आयी है । इस प्रकार दस मंदिर के हांस से उत्तर तथा दक्षिण दिशा में चांदनी चौक में कुल ७८ (३३+३३+१२) मंदिर की जगह होती है ।

एह छोड़ के चलिए, तब आइए जाम्बू के घाट ।
तिनका कहूं बेवरा, एह है हक दिल माफक ठाट ।।६।।

जब (दक्षिण दिशा में) ये ७८ मंदिर की जगह पार करते हैं, तब जाम्बू वन में पहुंच जाते हैं, अब उसका वर्णन करूंगा। यह सारी शोभा श्री राजजी के दिल के अनुसार है ।

एह जुगत तरफ अनार की, जांबू जुगत तरफ यूं कर ।
ऐ दोनों तरफ बराबर, देखियो नीके कर ।।७।।

अनार वन की तरफ की शोभा (७८ मंदिर) भी ऐसी ही है। जांबू वन के तरफ की शोभा (७८ मंदिर) भी उसके समान है । दोनों तरफ बराबर दूरी है । इस शोभा को ध्यानपूर्वक देखिये ।

इन अठत्तर मंदिर की, छज्जे अठत्तर नूर ।
ए पेड तरफ चांदनी, जाको रोशन झलकत नूर ।।८।।

दस मंदिर की हांस के दायें बायें स्थित ७८-७८ (बाहरी हार) मंदिरों की बाहरी दीवार में ७८-७८ नूरमयी छज्जे हैं । इनके सामने चांदनी चौक के आगे वृक्षों की पंक्ति है, वह जगमगाते हुए नूरमयी झलकार कर रहे हैं ।

ताके पेड़ मेहेराब, गिनती एक सौ छप्पन ।
हर मंदिर के दोए दोए, पेड़ से लगते रोशन ।।९।।

उन ७८ मंदिरों में १५६ महराब (दरवाजे) शोभायमान हैं । हर मंदिर में दो-दो दरवाजे हैं, जो चांदनी चौक की सीमा (७८-७८ मंदिर) तक जगमगाते हुए शोभायमान हो रहे हैं ।

ऐसे छज्जे ऐसे मेहेराब, तुम दोनों तरफों जान ।
एक अमृत वन की हद लों, अत झलकत नूर पेहेचान ।।१०।।

ऐसे छज्जे (झरोखे) व महराबें (दरवाजे) दस मंदिर की हांस के दोनों तरफ हैं । इस प्रकार दोनों तरफ अमृत वन की सीमा तक ये झरोखे व दरवाजे नूरमयी झलकार करते दिखायी दे रहे हैं ।

अब अमृत वन का बेवरा, तीन भाग भए ठौर ।
ए मंदिर भए पांच सौ, हांस सोले बीस मंदिर और ।।११।।

अब अमृत वन का विवरण प्रस्तुत करेंगे । अमृत वन के ५०० मंदिर की चौड़ाई के तीन भाग हैं, जिसमें से मध्य के एक भाग में चांदनी चौक है । ५०० मंदिर के १६ हांस (१६x३०=४८०) व बीस मंदिर होते हैं ।

ताके तीनों का बेवरा, एक सौ छासठ का बेवरा दरम्यान ।
सो तो कहे आइयां, बाकी दोनों दाएं बाएं के जान ।।१२।।

उन तीनों भागों का विवरण देखिये । तीनों में से मध्य के १६६ मंदिर चौड़े भाग का वर्णन तो हो गया है । अब दायें-बायें के दो भाग का विवरण समझिये ।

तामे एक अनार मे लगा, एक सो सरसठ हद हार ।
ता के एक सौ सरसठ छज्जे बने, हक हादी करत बिहार ।।१३।।

उसमें से एक हिस्सा (चांदनी चौक की उत्तर दिशा में) अनार घाट

(वन) की सीमा से लगा है, जो १६७ मंदिर का लम्बा है । इस हिस्से में रंगमहल की बाहरी हार मंदिरों की बाहरी दीवाल में १६७ छज्जे (झरोखे) बने हैं जहां श्री राज श्यामा जी रमण करते हैं ।

हर मंदिर एक छज्जा, दोए दोए मेहेराब नूर ।
तिनों की जमा तीन सौ चौंतीस, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।१४।।

यहां प्रत्येक मंदिर में एक-एक झरोखा व दो-दो महरावें (दरवाजे) आई हैं । उन १६७ मंदिरों के कुल मिलाकर ३३४(१६७x२) दरवाजे होते हैं । इनकी शोभा किस प्रकार कहूं ?

ए जो अठतर छज्जे कहे, ताकी बाएं दाएं तरफ हार ।
ताके ऊपरा ऊपर नव भोम लौं, ताको मोमिन कर देखो सुमार ।।१५।।

दस मंदिर की दरवाजे की हांस के दायें-बायें (चांदनी चौक की सीमा में) जो ७८-७८ मंदिरों के ७८-७८ छज्जे (झरोखे) कहे हैं, उनके दायें–बायें भी (तीनों भागों में) झरोखों की पंक्तियां हैं। हे सुंदरसाथ जी! उनके एक के ऊपर एक नौ भोम तक आये झरोखों व दरवाजों की गणना देखिये ।

पडे सात सौ दोए छज्जे, चांदनी के सनमुख ।
नब्बे पड़े द्वार पर, क्यूं कहूं जुबां एह सुख ।।१६।।

उन ७८ मंदिरों के नौ भोमों के कुल ७०२ (७८x९) झरोखे होते हैं, जो चांदनी चौक के सम्मुख शोभायमान हैं तथा दरवाजे की हांस में नव भोम दसवी चांदनी तक ९०(९x१०) छज्जे शोभायमान हैं । उनकी नूरी शोभा को देखकर जो सुख प्राप्त होता है, उसके विषय में क्या कहें ?

एक सौ सरसठ छज्जे पड़े, तरफ बाएं दाएं दोए ।
सो उंची चढ़ी नव भोम लों, उपरा उपर कही सोए ।।१७।।

चाँदनी चौक के दायें-बायें अमृत वन के बाकि दोनों हिस्सों के सामने रंगमहल के बाहरी हार मंदिरों में १६७-१६७ छज्जे (झरोखे) आये हैं । यह शोभा एक के ऊपर एक नौ भोम तक आयी है ।

सात सौ दोए छज्जे पड़े, दोनों तरफों चौदह सौ चार ।
और नव दरवाजे के, तीन हजार दोए तरफ की हार ।।१८।।

दस मंदिर की हांस के दायें-बायें ७८-७८ मंदिरों के नौ भोमों के कुल

१४०४ (७०२+७०२) छज्जे होते हैं । दरवाजे की हांस के ९ छज्जे हैं (दसवीं चांदनी तक नब्बे छज्जे होते हैं), तथा चांदनी चौक के दोनों तरफ के भाग में लगभग ३००० छज्जे (३००६) होते हैं ।

जमा इन सबन की, पैंतालिस सौ होए ।
एक एक घाट के नव भोम लों, देखो मोमिन सोए ॥१९॥

इस प्रकार अमृतवन के सामने नौ भोम के कुल ४५०० (१४०४+९०+३००६) छज्जे हुए । हे सुंदरसाथ जी ! अब प्रत्येक घाट के सामने रंगमहल के ९ भोमों की शोभा देखिये ।

जमा छज्जे दोए बाजू के, छे उपर तीन हजार ।
नव कहे दरवाजे के, दोए पेहेले कहे विचार ॥२०॥

चांदनी चौक के दोनों तरफ के १६७-१६७ मंदिरों के नव भोमों के कुल छज्जे ३००६ होते हैं और दरवाजे के हांस के एक भोम के ९ छज्जे कहे हैं । दरवाजे की हांस के दायें-बायें के ७८-७८ मंदिरों के नव भोम के छज्जे (१४०४) पहले ही कह दिये हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, एह कहे सिफाएत सुकन ।
ए जो लेवे दिल में, सोई खास गिरो मोमिन ॥२१॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी, ये सिफायत के वचन (परमधाम की वाणी) हैं । इन्हें जो अपने दिल में ग्रहण करेंगे, वही खासुलखास ब्रह्मसृष्टि होंगे।

प्रकरण ३४, कुल चौपाई १८९०

धाम के सनमुख

इस प्रकरण में रंग भवन के पूर्व के बाहरी हार मंदिरों की बाहरी दीवार दीवार की शोभा का वर्णन है । वहां के पशु, पक्षी, चाँद, सूरज, जिमी सब चेतन व नूरमयी हैं, जिसकी शोभा का कोई पारावर नहीं है, जो सदैव अनंत आनंद देने वाले हैं । यमूना जी के उस पार जो अक्षरधाम है, उसकी शोभा व ऐश्वर्य का वर्णन किया गया है।

धाम द्वार सनमुख, ए जो अक्षर ठौर नूर ।
भांत तरह श्री धाम की, नाहीं निमूना और ।।१।।

रंगमहल के मुख्य द्वार के सामने यह जो नूरमयी अक्षर धाम है, इसकी शोभा बिलकुल रंगमहल की तरह (नौ भोम दसवीं आकाशी) है । जिसकी कोई उपमा नहीं है ।

ऐसे ही नव भोम दसमी चांदनी, चार बड़े हैं द्वार ।
तिन आगे चार चबूतरे, ता के सोले कहे सुमार ।।२।।

रंगमहल के समान ही अक्षरधाम की भी नौ भोम दसवीं आकाशी (छत) है । फर्क इतना है कि अक्षरधाम में चारों दिशा में बड़े (मुख्य) दरवाजे हैं, जिनके आगे ४-४ चबूतरे (दो मुख्य द्वार से लगकर तथा दो चांदनी चौक में) हैं । चारों दिशा के मिलाकर कुल १६ चबूतरे होते हैं ।

रस्ते बने दोरी बंध, बाग बगीचे सब नूर ।
वन छाहां मानो चन्द्रवा, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।३।।

यहां नूरमयी बगीचों के मध्य रास्ते सब एक सीध में आये हैं । वनों की डालियां ऊपर जाकर आपस में इस प्रकार मिल गयी हैं, जैसे नूरमयी रत्नजड़ित चन्द्रवा हों । वे नीचे धरती पर घनी छाया प्रदान कर रही हैं । उसकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं ?

इत मोहोल झरोखे नूर के, नूर थम्भ दीवाल ।
बन जिमी सब चेतन, जो सदा रहेत खुसाल ।।४।।

यहां अक्षरधाम में महल, झरोखे, स्तम्भ, दिवार, वन व धरती आदि सभी नूरमयी व चेतन हैं, जो सदैव प्रसन्नचित्त रहते हैं ।

इत पशु पंखी सब नूर के, नूर आसमान चांद सूर ।
नक्षत्र सितारे सब नूर के, सो कह्या न जाए जहूर ।।५।।

यहां के पशु-पक्षी सब नूर के हैं । आकाश, सूर्य, चाँद, नक्षत्र, सितारे आदि सभी नूरमयी हैं, जिनकी शोभा अकथनीय है ।

जल बादल बिजली, गरजत नूर आसमान ।
वाएं खुश्बोए नूर की, एह देखो नूर मकान ।।६।।

वहां जल, बादल, बिजली तथा आकाश में होने वाली गर्जना भी

नूरमयी है । वायु तथा सुगंधि भी नूर के ही हैं । इस प्रकार अक्षरधाम की शोभा देखिये ।

जिमी जानवर सब नूर के, चेतन सब प्रकाश ।
नूर नूर सो लरत हैं, जोत न माए आकाश ।।७।।

यहां की धरती, पशु-पक्षी सब नूरमयी, चेतन व स्वप्रकाशमयी हैं । नूरमयी रंगबिरंगी किरणें आपस में टकराकर जंग करती प्रतीत होती हैं, जिनकी अपार ज्योति आकाश में नहीं समा पाती है ।

एह जिमी बन बाग का, याको वार न पार सुमार ।
मोहोल मंदिर और गलियां, पार ना इन के द्वार ।।८।।

इस धरती, वन व बगीचों का कोई पारावर (सीमा-संख्या) नहीं है । ये असंख्य व अनंत हैं । महल, मंदिर, गलियाँ तथा दरवाजे भी बेहिसाब हैं ।

एह तो जिमी बाहेदत की, सब चेतन एक रस नूर ।
एकै आतम सब में, सो कह्या न जाए जहूर ।।९।।

यह तो परमधाम की स्वलीला अद्वैत भूमिका है । यहां की प्रत्येक वस्तु चेतन, एकरस व नूरमयी है । सबके अंदर एक ही आत्मा (श्री राजजी) हैं । उसकी महिमा इस जिह्वा से नहीं कही जा सकती है ।

बीच जमुना बहत है, एह सदरतुल बही कह्या नूर ।
नूर पार अरस अजीम, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।१०।।

अक्षरातीत धाम (रंगमहल) व अक्षरधाम के बीच नूरी यमुना जी आयी है, जो कि सिद्रतुलमुंतहा (अक्षरधाम) और रंगमहल के बीच बहती है। अक्षरधाम के पार अर्श अज़ीम (रंगमहल) है । इसकी शोभा किस प्रकार कहूं ?

ज्यों सात घाट पाट है, तैसे ही है द्वार ।
बन पाट सब एक ज्यों, सब रस्ते एकै सुमार ।।११।।

रंगमहल की तरफ जैसे सात घाट, पाट घाट व वन हैं, वैसी शोभा अक्षरधाम की तरफ भी है । रंगमहल के मुख्य दरवाजे के समान अक्षरधाम के मुख्य द्वार की भी शोभा है । उसी प्रकार अक्षरधाम की तरफ भी बगीचों व गलियों की शोभा आयी है ।

नूर साहेबी अति बड़ी, जाकी नेत्र कटाक्षे फिराए ।
कई कोट इण्ड उपजे खपे, फेर और पैदा हो जाए ।।१२।।

अक्षर ब्रह्म की साहेबी (ऐश्वर्य) महान् है । उनकी आंखो के इशारे मात्र से (पलक झपकने मात्र समय में) कई करोड़ो ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय को प्राप्त हो जाते हैं और फिर से पैदा हो जाते हैं ।

नूर सूरता बताए, लखमी जी रहे संग ।
वए बराबर एक रस, रहे अक्षर की अरधांग ।।१३।।

अक्षर ब्रह्म की नूरमयी सुरता की स्वरूप महालक्ष्मी जी उनके साथ रहती हैं। इनकी उम्र अक्षर ब्रह्म समान किशोर और शोभा एक रस है । वह अक्षर ब्रह्म की अर्धांगिनी के रूप में शोभायमान हैं ।

इन मोहोल लखमी के, रहे कई खेल खुसाली अपार ।
मोहोल मंदिर ठौर बैठक, ताको नाहीं सुमार ।।१४।।

इस अक्षरधाम में महालक्ष्मी जी के बेशुमार खेल खुब खुशहालियाँ (पशु-पक्षी) रहते हैं । यहां महल, मंदिर व बैठकों का कोई शुमार नहीं है ।

एह पातसाही अति बड़ी, जाको पोहोंच न सके कोए ।
ए साधन साधन पाइए, उपाय ना कोई होए ।।१५।।

अक्षर ब्रह्म की बादशाही बहुत बड़ी है । जहाँ तक कोई नहीं पहुंच सकता । इन्हें पाने का ना तो कोई साधन (ऐश्वर्य) है, और ना ही कोई उपाय ।

सो नूर साहेबी अति बड़ी, एह जबराईल मुकाम ।
पैदास सब फिरस्तन की, एही जानो तुम ठाम ।।१६।।

इस अक्षर ब्रह्म की साहेबी अत्यन्त महान है । यही जिब्रील का ठिकाना है । अन्य सभी फरिश्तों की भी उत्पत्ति इसी स्थान से हुई है । यह तुम निश्चय जानो ।

एह नूर जलाल नूर जमाल, ए एकै दोउ है तन ।
लखमी तन है इन का, ए एकै जात रोशन ।।१७।।

ये अक्षर ब्रह्म व अक्षरातीत परब्रह्म दोनों एक ही तन हैं और महालक्ष्मी जी अक्षर ब्रह्म की अंगरूपा हैं । ये सब एक ही स्वरूप - हक की जात हैं ।

हादी रूहें एक तन, हक हादी एक नूर ।
ए पांचो वाहेदत, सो शब्दातीत जहूर ॥१८॥

श्री श्यामा जी व सखियां एक तन (स्वरूप) हैं, तथा श्री राज जी व श्यामा जी का भी एक ही स्वलीला अद्वैत नूरी स्वरूप है । इस तरह अक्षर ब्रह्म व महालक्ष्मी सहित ये पांचों अद्वैत स्वरूप हैं, जिनकी शोभा शब्दातीत है ।

इन जिमी वाहेदत में, कोई दूजा कह्या न जाए ।
एकै जात हक की रहे, सो कायम सदा इप्तदाए ॥१९॥

परमधाम की इस स्वलीला अद्वैत भूमिका में किसी को भी दूसरा नहीं कहा जा सकता है । यहां प्रत्येक वस्तु श्री राजजी का ही स्वरूप है, अर्थात् सच्चिदानंद स्वरूप है, जो अनादि व अखण्ड है ।

ए पातसाही हक की, जो है नूरजमाल ।
दाएम आवत मुजरे को, जोए उलंघ नूरजलाल ॥२०॥

ये सब कुछ अक्षरातीत परब्रह्म श्री राजजी का ही ऐश्वर्य है। जो नित्य प्रति यमूना जी पार करके अक्षरातीत परब्रह्म के दर्शनों व अभिवादन के लिये चांदनी चौक आते हैं ।

मूजरा कर पीछा फिरे, पोहोंचे नूर मकान ।
जहां सेती पैदा होवहीं, चौदे तबक जिमी आसमान ॥२१॥

फिर अभिवादन व दर्शन करके अपने अक्षरधाम वापिस चले जाते हैं, जहां से चौदह लोकों से युक्त इस सारी सृष्टि की रचना होती है ।

इन चौदे तबक के फिरस्ते, खोज करे अक्षरब्रह्म ।
इन त्रैगुन की गम, पोहोंचत लगे सत आतम ॥२२॥

इन १४ लोकों के देवी देवता अक्षर ब्रह्म की खोज करते हैं । त्रिगुण प्रधान देवों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) की पहुँच अक्षर ब्रह्म के सत अंग (चित्त के स्वरूप) सबलिक ब्रह्म तक है । (ऐ माया ब्रह्म सबलिक, ए त्रैगुन की परआतम)

ए जो ब्रह्मपुर का, जित जरा मरन ना धरम ।
दाह ब्रह्म हिरदा आकाश, सो अक्षर ठौर ना पोहोंचे करम ॥२३॥

यह जो दिव्य ब्रह्मपुर धाम (परमधाम) है, जहां जन्म-मरण रूपी धर्म (गुण) नहीं है । इसी का दाहक (नूरत्व का) गुण अक्षर ब्रह्म के हृदय रूपी

आकाश (योगमाया) में व्याप्त है. इस कारण जीव सृष्टि के कर्म अक्षर धाम तक भी नहीं पहुँच सकते ।

तहां कमल कह्या, सब अक्षर का हिरदे कमल ।
तहां सूछम आतमा रहेत है, ए जो मन अक्षर निरमल ।।२४।।

वहां जिसे कमल कहा गया है, यह अक्षर ब्रह्म का हृदय ही कमल है, जहां सूक्ष्म आत्मा (सुरत-मन की क्रिया शक्ति) रहती है । यह अक्षर ब्रह्म का मन अत्यंत निर्मल है ।

जैसी वस्त बका मिने, तैसी इहां देखाई देत ।
ए सुपन जीव न समझहीं, बका खुसबोए ना लेत ।।२५।।

अखण्ड परमधाम में जो भी (वृक्ष, नदियां, महल, पशु-पक्षी आदि) लीलारूप सामग्री हैं, वे सब प्रतिभास (परछाई) रूप से इस योगमाया के ब्रह्मांड में भी दिखायी देते हैं । स्वाप्निक जगत के जीव इस भेद को नहीं समझ पाते । इस कारण वे परमधाम के अखण्ड सुखों की खुश्बु से वंचित रह जाते हैं ।

एह ठौर बका देखें, सो तो खास गिरो मोमिन ।
फिरस्ते पोहोंचे नूर लों, लगे मोमिन सोहोबत रोशन ।।२६।।

इस अखण्ड परमधाम का जो दर्शन करते हैं, वे तो खासल खास ब्रह्मात्माएं हैं । इन की संगत से तारतम ज्ञान के प्रकाश में ईश्वरी सृष्टियां (फरिश्ते) अक्षर धाम तक पहुंचती हैं ।

ए बका ठौर कौल करी, रसूल अलेह सलाम ।
घर जबराईल जबरूत, सो देख्या सबों इस ठाम ।।२७।।

रसूल अलैहिस्सलाम ने अपने वचनों (कुर्आन) में इसी परमधाम (अर्शे आज़म) का (सांकेतिक) वर्णन किया है । यह अक्षरधाम (जबरूत) जो जिब्रील का ठिकाना है, उसे अब इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) के द्वारा सबने देख लिया है ।

तो एह जाहिर इत हुआ, रूहें फिरस्ते उतरी गिरो दोए ।
सो उठे अपने ठौर में, सो कह्या क्यामत रोज सोए ।।२८।।

इसी कारण यहां परमधाम का ज्ञान जाहिर हुआ है । कुर्आन के कथनानुसार रूहें (ब्रह्मात्माएं) और फरिश्ते (ईश्वरी सृष्टि) दोनों यहां से संसार रूपी खेल देखने आये हैं । वे सब अपने मूल तनों में जागृत हो जायेंगे, जिसे

कियामत का दिन कहा गया है ।

इत हकीकत बोहोत है, हिसाब न गिनती पार ।
ए तो अक्षर अक्षरातीत की, सदा नित बिहार ।।२९।।

यहां की हकीकत (ज्ञान) बेशुमार (अनंत) है । ना ही उसकी कोई गिनती है (अनगिनत), ना ही हिसाब (बेहिसाब) । यह तो अक्षर ब्रह्म व अक्षरातीत परब्रह्म की नित्य लीला विहार है ।

महामत कहे ए मोमिनों, एह कह्या अक्षर ठौर ।
आगे जोए के पार की, सो कहूं अब लीला और ।।३०।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे ब्रह्मात्माओं ! यह अक्षर ब्रह्म के धाम का वर्णन किया है । इसके पश्चात् यमूना जी के उस पार रंगमहल की लीला का वर्णन कहूंगा।

प्रकरण ३५, चौपाई १९२०

जांबू घाट

यहाँ रंगमहल की नजदीकी परिक्रमा का वर्णन हुआ है। रंगभवन के प्रवेश द्वार के सम्मुख आए अमृत वन के दक्षिण में जांबू घाट आया है । उसकी शोभा हमारे चित्त में बैठाने के वास्ते यह उपाय किया गया है ।

जांबू घाट किनारे जोए के, आए लगा धाम दिवाल ।
दरखत पेड़ अढ़ाई सौ, जाको देखे होत खुसाल ।।१।।

जांबू घाट श्री यमुना जी के किनारे से लेकर रंगमहल की पूर्वी दीवार (बाहरी हार मंदिरों) तक शोभा ले रहा है । इसमें ५०० मंदिर की चौड़ाई में वृक्षों की २५० पंक्तियां हैं, जिन्हें देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है ।

इन हद मंदिर पांच सौ, सोले हांस बीस मंदिर ।
सत्रह हांस लों हद कही, मोमिन आओ ताके अन्दर ।।२।।

इस जाम्बूं वन की चौड़ाई ५०० मंदिर है, जिनके १६ हांस व २० मंदिर होते हैं । (एक हांस के तीस मंदिर होते हैं)। इस प्रकार रंगमहल के लगभग १७ हांस के सामने जाम्बू वन आया है । हे सुंदरसाथ जी ! इसके अंदर आईये ।

झरोखे इन के पांच सौ, हर मंदिर झरोखा एक ।
ऐसे पांच सौ है नवे भोम लों, इत सुख देखन के अनेक ।।३।।

जाम्बू वन के सामने रंगमहल की बाहरी हार (५००) मंदिरों की बाहरी दीवार में पांच सौ झरोखे शोभायमान हैं । प्रत्येक मंदिर की बाहरी दीवार में एक झरोखा है । इस प्रकार जाम्बू वन के सामने रंगमहल के सभी नौ भोमों में ५००-५०० झरोखे हैं, जिनकी जगमगाती हुई शोभा को देखने में अपार सुख मिलता है।

हर हार नव छज्जे, पांच सौ ऐसी हार ।
उभी गिनिए तो पांच सौ, आड़ी गिनिए नव हार ।।४।।

नीचे से ऊपर की तरफ नौ भोमों में (प्रत्येक पंक्ति में) नौ झरोखे हैं । ऐसी ५०० (आड़ी) पंक्तियां (नीचे से ऊपर की तरफ) हैं । खड़ी पंक्तियां गिने तो ५०० पंक्तियां होती हैं और आड़ी पंक्तियां गिनें तो नौ पंक्तियां होती हैं ।

ऐसे आड़ी गिनिए तो पांच सौ, ऊपरा ऊपर नव होए ।
ए गिनती छज्जे हद कही, नूर रोशन झलकत सोए ।।५।।

आड़ा गिनने पर ५००-५०० झरोखों की नौ पंक्तियां एक के ऊपर एक नौ भोमों में आयी हैं । इस प्रकार झरोखों की संख्या कही हैं, जिनकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ झलकार कर रही है ।

एह चबूतरा जो चल्या, जमुना किनार वार पार ।
तामे गिनती एह जांबू वन की, हद को देखो विस्तार ।।६।।

यमुना जी के किनारे जो जाम्बू घाट का चबूतरा (पाल) आया है, वैसा ही यमुना जी के उस पार भी आया है । उसमें जाम्बू वन (बड़ोवन) के वृक्षों की संख्या (विस्तार) देखिये ।

पांच हार ऊपर चबूतरे, दोए दरखत दोए किनार ।
तीन आए दरम्यान में, ए ठौर रमन सुखकार ।।७।।

पाल के चबूतरे पर वृक्षों की पांच हारें (पंक्तियां) आई हैं, जिसमें से २ हारें दोनों किनारों पर तथा ३ हारें उनके बीच में आयी हैं । यह स्थान रमण के लिये आनंददायक है ।

ए पांच भोम बराबर, मेहेराब एक इत दोए ।
दरखतों दरम्यान में, पड़ा मेहेराब सोए ॥८॥

इनकी ऊंचाई ५ भोम के बराबर है । प्रत्येक दो वृक्षों के बीच डालियां मिलकर महराब का रूप ले रही हैं । इस प्रकार सभी जगह महराबें शोभा ले रही हैं ।

डारी सो डारी लगी, मानों मेहेराबी द्वार ।
इत दोए सौ पचास दरखत, ए बने दोरी बंध हार ॥९॥

डालियों से डालियां इस प्रकार मिल गयी हैं, जैसे कि वे महराबी द्वार हों । जाम्बू घाट की चौड़ाई (५०० मंदिर) के सामने जाम्बू वन में (२-२ मंदिर की दूरी पर) वृक्षों की २५० पंक्तियां कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं ।

भोम छहां वन शोभित, मानों चंद्रवा नूर ।
यूं भोम पर भोम शोभित, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥१०॥

वृक्षों की दोनों भोमें घनी छाया से शोभायमान हैं । डालियों की छत रत्नजड़ित नूरमयी चंद्रवा के समान शोभायमान हो रही है । इस प्रकार प्रथम भोम के ऊपर दूसरी भोम शोभायमान है, उसकी शोभा किस प्रकार कहूं ?

(१०० हाथ के वृक्ष हैं, जिनमें ४४ हाथ की ऊंचाई के बाद तना से डालियों निकलनी शुरू होती हैं, जो ८८ हाथ की ऊंचाई में जाकर आपस में मिल जाती हैं , इसके ऊपर १०० हाथ तक डालियां, पत्ते, फल, फूल मिलकर घना छत बना देते हैं । इसके ऊपर दूसरी भोम में पुनः तना निकलता है और उसी प्रकार ४४ हाथ की ऊंचाई से डालियां निकलना प्रारम्भ होती हैं ।)

जहां हद कोना धाम का, लगा जांबू नारंगी वन ।
आए वट पीपल चौकी मिली, जहां चारों मोड़ रोशन ॥११॥

जहां रंगमहल का अग्नि कोण है, वहां एक तरफ जाम्बू वन है, दूसरी तरफ नारंगी वन है तथा तीसरी तरफ बट-पीपल की चौकी शोभायमान है । इस प्रकार चार रस्ता के समान शोभा है ।

रहे चेहेबच्चा सोले हांस का, धाम कोने दरम्यान ।
इत एक गुरज ऐसी उठी, लग चांदनी से ऊंचा निकस्या जान ॥१२॥

यहां रंग महल के अग्नि कोण में १६ हांस का चेहेबच्चा शोभा ले रहा

है । यहाँ पर (हांसों की संधि में) एक गुर्ज इस प्रकार शोभायमान है, जो ऊपर की तरफ जाते हुए रंगमहल की चांदनी से भी एक भोम ऊपर निकल गया है ।

ताकी एक हांस भर मरजादा, कोने दोनों तरफ लिये दबाए ।
आधा हांस तरफ जांबू के, आधा वट पीपल तरफ लिये जाए ।।१३।।

उस गुर्ज का एक हांस (पहल) रंगमहल के कोने के दोनों हांसों में से थोड़ा-थोड़ा हिस्सा लेकर बना है । गुर्ज का इस हांस (दीवार) का आधा हिस्सा जाम्बू वन के तरफ के मंदिर से लेकर बना है, तथा आधा हिस्सा बट-पीपल की चौकी के तरफ के मंदिर से लेकर बना है । (सभी गुर्ज ६६ हाथ के लम्बे –चौड़े हैं, जो दोनों तरफ के मंदिरों से ३३-३३ हाथ की जगह लेकर बने हैं)

यूं करते एक हांस भर, इन गुरज की मरजाद ।
तिन को लगा चबूतरा, कहूं तिन के सुख स्वाद ।।१४।।

इस प्रकार गुर्ज के एक हांस (दीवार) की सीमा आई है । रंगमहल के चबूतरे के एक हांस में १६ हांस के चेहेबच्चे के चबूतरे का एक हांस लगा है । उसकी शोभा व आनंद का वर्णन करता हूं ।(१६ हांस के चेहेबच्चे का एक हांस रंगमहल के एक हांस के बराबर ३० मंदिर का है)

इन चबूतरे के बने, सोले हांस सुखदाए ।
बीस पगथियां रहे इन के, सो दोनों तरफों चढ़िये धाए ।।१५।।

इस चेहेबच्चे का चबूतरा १६ हांस का है, जो आनंददायक है । इस चबूतरे के चाँदे से दोनों तरफ २०-२० बड़ी सीढ़ियाँ उतरी हैं, जिन पर दौड़ते हुए चढ़ जाईये ।

ए वन मरजादा इनकी, चारों आए लगी इन ठौर ।
गिरद फिरता कठेड़ा, सो जड़ाव जुगत बन्या और ।।१६।।

वनों (जाम्बू, नारंगी, बट–पीपल की चौकी) की डालियां चारों ओर से आकर चेहेबच्चे के जल चबूतरे तक छाया करती हैं । चेहेबच्चे के चबूतरे की किनार पर चारों तरफ (सीढ़ियों की जगह छोड़कर) कठेड़े की शोभा है, इसमें कुछ अलग ही प्रकार से रत्न जड़े हैं ।

एक तरफ गिरद कुण्ड की, कठेड़ा बन्या अति नूर ।
एक तरफ सीढ़ियन के, देखे बैठे वन का जहूर ।।१७।।

एक तो कुंड (चेहेबच्चे) की तरफ चबूतरे की किनार पर नूरमयी कठेड़े की शोभा है, दूसरा बाहर सीढ़ियों की तरफ कठेड़े की शोभा है, जहां बैठकर वनों की नूरमयी शोभा निहारते हैं ।

तीसरी सीढ़ी तरफ नारंगी की, और पेहेले कही जो दोए ।
तीनों तरफ हैं सीढ़ियां, नूर झलकत रोशन सोए ॥१८॥

दो सीढ़ियां जाम्बू वन तथा बट-पीपल की चौकी की तरफ हैं, तथा तीसरी सीढ़ी नारंगी घाट की तरफ है, जो पहली दो सीढ़ियों की तरह ही आयी है । चेहेबच्चे के तीनों तरफ सीढ़ियों की नूरमयी किरणें झलकार कर रही हैं ।

पेहेले एक बड़ी सीढ़ी, ता के दाएं बाएं बीस ।
उतरी दोउ बाजू को, ए पाइए हक बकसीस ॥१९॥

तीनों दिशाओं की सीढ़ियों में सर्वप्रथम एक बड़ी सीढ़ी (चांदा) है, जिसके दायें-बायें २०-२० सीढ़ियाँ उतरी हैं । श्री राजजी की कृपा से यह शोभा समझ में आती है ।

कई जुगते इत रमन की, कई जुगते सुख वन ।
कई मेवे रस स्वाद के, सो झलकत नूर रोशन ॥२०॥

यहां कई प्रकार से रमण करते हैं । इन वनों में कई प्रकार के सुख हैं, यहां कई प्रकार के स्वाद व रस के परिपूर्ण मेवे हैं, जिनकी नूरमयी रंगबिरंगी किरणें चारों तरफ झलकार कर रही हैं ।

वन दरखत रस्ते परे, सो दोरी बंध सुखदाए ।
जो धाम के नजीक, ताकी दो दो भोम दिखाए ॥२१॥

इन वनों के वृक्षों के मध्य रास्ते बने हैं, जो बिल्कुल एक सीध में हैं व सौंदर्य से युक्त सुखदायी हैं । रंगमहल के नजदीक जो वन आये हैं, उनकी ऊंचाई दो-दो भोम की है ।

तीसरी भई चांदनी, सो रोशन झलकत नूर ।
जमुना किनारे हार की, सो बनी पांचों भोम जहूर ॥२२॥

उन वनों की तीसरी चाँदनी है, जिनकी नूरमयी किरणें चारों ओर झलकार कर रही है । यमुना जी के किनारे पाल पर आये (बड़ोवन) वृक्षों की ऊंचाई ५ भोम है ।

चौक मुकाबिल चौक बने, रस्ता मुकाबिल रस्ता जान ।
द्वार मुकाबिल द्वार बने, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।२३।।

यहां चौक के सामने चौक, रास्ते के सामने रास्ते और डालियों की महराबी द्वारों के सामने महराबी द्वार आये हैं। इसकी पहचान मोमिनों के दिलों में रहती है ।

इत हक हादी रूहें रमे, इत दरखतों तले बन ।
शोभा इन जिमी की, रेती झलकत नूर रोशन ।।२४।।

इन नूरमयी वृक्षों की छाया तले श्री राज श्यामा जी एवं सखियां अनेक प्रकार से रमण करते हैं, खेल-रामतें करते हैं । यहां वनों के नीचे धरती की शोभा इस प्रकार है कि यहां हीरे मोती के सदृश रंगबिरंगी रेती बिछी है, जिसकी नूरमयी किरणें चारों ओर झलकार कर रही हैं ।

रेती इन जिमीय की, देखिए एक जरे की ओट ।
तो सूर न आवे नजरों, जो उदे होवे कोटान कोट ।।२५।।

परमधाम की नूरमयी धरती की रेती ऐसी नूरमयी है, कि उसके एक कण के सामने यहाँ के करोड़ों सूर्य भी उग जायें तो वे भी दिखायी नहीं देंगे ।

ऐसी जोत पात फूल में, ऐसी जोत डारी दरखत ।
तैसी जोत फलन में, क्यूं कहूं शोभा सुख इत ।।२६।।

ऐसी दिव्य ज्योति वृक्षों के पत्तों व फूलों में है । वैसी ही ज्योति वृक्षों की डालियों में है । वैसा ही दिव्य प्रकाश फलों में है । उस नूरमयी अद्‌भूत सौंदर्य से युक्त शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं ?

ए भोम अखण्ड चेतन, सब खुसबोए बेहेकत वन ।
याकी जोत न माए आकाश में, होत सुने प्रफुल्लत मन ।।२७।।

परमधाम की धरती अखण्ड व चेतन है । सम्पूर्ण वन सुगंधि से युक्त है । उनकी नूरमयी अपार किरणें आकाश में नहीं समा पातीं हैं । इनकी शोभा का श्रवण ही कर लेने मात्र से मन प्रसन्न हो जाता है ।

एक छज्जे तले दोए खिड़कियां, ताके बने मेहेराब दोए ।
ताके एक हजार गिनती, जांबू वन हद कही सोए ।।२८।।

रंगमहल की प्रत्येक बाहरी हार मंदिरों की बाहरी दीवार में एक छज्जे

(झरोखे) एवं दो छोटे दरवाजे (खिड़किया) शोभायमान हैं । इस प्रकार जाम्बू वन की सीमा के ५०० मंदिरों में १००० महराबें (दरवाजे) शोभायमान हैं ।

रमते हक हादी रूहें, बैठे देखो रमते छज्जों द्वार ।
ए तो बका भोम का, क्यूं कहूं सुख बिहार ॥२९॥

इन झरोखों व दरवाजों के आसपास श्री राज श्यामा जी एवं सखियों को खेलते हुए या बैठे हुए देखिये । उस अखण्ड परमधाम की दिव्य प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाओं का किस प्रकार वर्णन करूं ?

रूहें रमें इन वन में, कबूं संग हादी और हक ।
कबूं मीठी बातां करे, लिए सुख अंग इशक ॥३०॥

इन वनों में सखियां कभी श्री राज श्यामा जी के साथ रमण करती हैं, तो कभी अपने हृदय में अनंत प्रेम लेकर आनंदपूर्वक धणी से मीठी बातें करती हैं ।

सरूप सुन्दर सोहामना, वय किशोर अंग नूर ।
रस भीगे बातां करें, कई झलकत भूखन जहूर ॥३१॥

सखियों का स्वरूप किशोर अवस्था का अत्यंत सुंदर, सुहावना व नूरमयी है । वे प्रेम के रस में भीगे धामधणी से बातें करती हैं । उस समय उनके आभूषणों की नूरमयी किरणें चारों तरफ झलकार करती हुई दिखती हैं ।

किरना भोम वन की, किरना भूखन सिनगार ।
तेज जोत अंग नूर की, सो अतंत है सुखकार ॥३२॥

वनों की धरती की किरणें हों या आभूषणों व श्रृंगार की किरणें या नूरमयी अंगों की (जवाहरातों के समान) जगमगाती हुई तेजोमयी किरणें, ये सभी अत्यंत सुखदायी हैं ।

जोत जवेर अंग भूखन, जुदे जुदे रंग करे जंग ।
भूखन सूर सोहामनों, कई लेहरा उठे तरंग ॥३३॥

उनके अंगों में शोभित आभूषणों से अलग-अलग जवाहरातों की अलग-अलग रंगों की किरणें निकलकर आपस में जंग करती प्रतीत होती हैं । उन आभूषणों से मधुर सुहावना स्वर तथा ध्वनि की तरंगे निकलती हैं ।

क्यूं कहूं इन समे की, क्यूं कहूं फिरत देत हैं सुख ।
क्यूं कहूं सुख रूहन के, जो करें बातें हक सनमुख ।।३४।।

इस समय के सुख कैसे कहूँ जो वनों में भ्रमण करते हुए धाम धणी अपनी अंगनाओं को देते हैं ? उन ब्रह्मप्रियाओं के सुख कैसे कहूं जो उन्हें राजजी के सामने खड़े होकर प्रेम भरी बातें करने पर मिलता है ?

कई विहार होत वन में, सुख देत हक सुभान ।
सो ख्वाब आकार क्यूं केहे सके, इत क्यूं न होए पेहेचान ।।३५।।

इस प्रकार वनों में अनेक प्रकार से लीला विहार करते हुए प्रियतम श्री राजजी जो सुख प्रदान करते हैं, उसका वर्णन इस स्वाप्निक तनों से किस प्रकार सम्भव है ? यहाँ पहचान क्यों नहीं होती है (किस प्रकार हो सकती है)?

महामत कहे ए मोमिनों, कह्या जांबू वन का ठौर ।
नेक कह्या एह तुमको, इत कई सागर भरे सुख और ।।३६।।

श्री महामति जी ब्रह्मात्माओं से कहते हैं, कि यहां आप के लिये ही जाम्बू वन का संक्षिप्त में वर्णन किया है । यहाँ पर सागर के समान अनेकों सुख विद्यमान हैं ।

प्रकरण ३६, चौपाई १९५६

बट पीपल की चौकी

कहूं बट पीपल के चौकी की, हांस पचास भर नूर ।
दरखत जोत जवेर ज्यूं, सो कह्यो न जाए जहूर ।।१।।

अब बट-पीपल के चौकी की नूरी शोभा का वर्णन करता हूं, जो रंगमहल की दक्षिण दिशा में ५० हांस (१५०० मंदिरों) के सामने शोभायमान है। यहां के वृक्ष जवाहरातों के समान जगमगा रहे हैं, जिसकी शोभा अवर्णनीय है ।

नारंगी के घाट के, अढ़ाई सौ दरखत की हद ।
बट पीपल की पांच हार लों, गिनती कही दरखत सरहद ।।२।।

नारंगी वन के वृक्षों की २५० पंक्तियां, बट-पीपल की चौकी के वृक्षों की पांच हारों के सामने आये हैं । (दोनों की चौड़ाई ५००-५०० मंदिर की है ।)

ए दरखत पांच हार, जिमी से भोम है चार ।
सो लगी धाम दिवाल को, चौथी भोम लों करो विचार ।।३।।

बट-पीपल के वृक्षों की पांच हारें हैं, जिनकी ऊंचाई जमीन से चार भोम (पांचवी चांदनी) है । इसके चारों भोमों की डालियां रंगमहल के चारों भोमों के छज्जों से क्रमशः मिली हैं ।

लम्बी हार दरखत की, गिनती पन्द्रे लों होए ।
सो पचास हांस भर आइयां, नूर झलकत रोशनी सोए ।।४।।

यहां वृक्षों की लम्बी हार है, जिसमें ५० हांस (१५०० मंदिर) में १००-१०० मंदिर के १५ बगीचे हैं, जिनमें बट-पीपल के नूरमयी जगमगाते हुए वृक्ष क्रमशः शोभायमान हैं ।

पन्द्र पचे पचोतरा, दरखत गिनती सुमार ।
हक हादी रूहें रमें, नित्याने करत बिहार ।।५।।

१५ वृक्षों की ५ हारें आने से कुल ७५ वृक्ष होते हैं । श्री राज श्यामा जी व सखियाँ, यहाँ नित्य प्रति प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीला विहार करते हैं ।

इनके चार चार चौक परे, भई ताकी चौदे हार ।
जमा चौदे चौको छप्पन, ए गिनती देखो सुमार ।।६।।

बट-पीपल के ५ वृक्षों की १५ हारों के बीच १४ चौकों की ४ हारें आयी हैं, जिनके कुल मिलाकर ५६ चौक होते हैं । इसकी गणना पर विचार कीजिये ।

इत छप्पन बने चबूतरे, नूर चेहेबच्चे छप्पन ।
तित फुहारे उछरत, झलकत नूर रोशन ।।७।।

इन ५६ चौकों (बगीचों) में चबूतरे के मध्य ५६ नूरी चेहेबच्चे शोभायमान हैं, जिनसे फव्वारे उछलते हुए नूरमयी रोशनी के साथ झलकार कर रहे हैं ।

हिंडोले एक सौ तीस बने, ता को बेवरा सुनो तुम ।
एह तुमको दिखावत, हक सुभान का हुकम ।।८।।

बट-पीपल की चौकी के एक भोम में १३० हिंडोले शोभायमान हैं।

उसका विवरण सुनिये । श्री राज जी का आदेश ही आपको यह दिखा (बता) रहा है ।

लम्बाई पन्द्रे चोको साठ भए, चौड़ाई चौदे हार ।
ताके चौदे पंचे सत्तर, ए भए एक सौ तीस सुमार ।।९।।

लम्बाई में १५ हिंडोलों की ४ हारें (१५x ४=६०) व चौड़ाई में १४ हिंडोलों की ५ हारें (१४x ५=७०) आने से कुल १३० (६०+७०) हिण्डोले होते हैं ।

चार भोम के देखिओ, पांच सौ बीस सुमार ।
हक हादी रूहें हींचत, पांवे अतंत सुख करार ।।१०।।

इस प्रकार चारों भोमों के कुल ५२० (१३०x४) हिंडोले होते हैं । श्री राजश्यामा जी व सखियाँ इन झूलों में झूलते हए अत्यंत सुख व शांति प्राप्त करते हैं ।

नेहेरे तले चलत हैं, ताकी लम्बाई भई चार ।
चौड़ाई भई चौक की, ए अट्ठारे गिनो सुमार ।।११।।

इन हिण्डोलों के नीचे जमीन पर लंबाई में ४ नहरें व चौड़ाई में १४ नहरें शोभा ले रही हैं । तब सब मिलाकर १८ नहरें हुई । (यहां किनारे के चारों नहरों को नहीं गिना गया है ।)

चार चेहेबच्चे चांदनी पर, बने ऊंचे ऊपर वन ।
शबद न पोहोंचे इनको, क्यों कर कहूं रोशन ।।१२।।

बट-पीपल के वृक्षों की पाँचवी चाँदनी पर चारों कोनों में ४ चेहेबच्चे आये हैं, जिनकी शोभा यहाँ के शब्दों से बयां नहीं हो सकती । उनसे निकलने वाले दिव्य प्रकाश का वर्णन किस प्रकार करूं ?

चांदनी जो वन की, ताके तीनों तरफ कठेड़ा वन ।
जोत जड़ाव ज्यों झलकत, होए देखे प्रफुल्लीत मन ।।१३।।

बट पीपल की चाँदनी में तीन तरफ (पूर्व, पश्चिम व दक्षिण में) किनार पर कठेड़े की शोभा है । जिसमें से निकलने वाली किरणें रत्नों के समान चमक रही हैं, जिसे देखकर मन प्रफुल्लित हो जाता है ।

जब चांदनी बैठिए, तब निरत भोम देत देखाए ।
सो तो शोभा अति बनी, इत जुबां कही न जाए ॥१४॥

जब बट-पीपल की पांचवी चाँदनी में बैठते हैं, तब नृत्य की हवेली से युक्त रंगमहल की चौथी भूमिका दिखाई देती है । यह शोभा अपरम्पार व अवर्णनीय है ।

हांस पचास भर मंदिर, गिनती डेढ़ हजार ।
डेढ़ हजार छज्जे परे, तीन हजार तिन द्वार ॥१५॥

रंगमहल की दक्षिण दिशा के ५० हांस में बाहरी हार मंदिरों के १५०० मंदिर विद्यमान हैं, जिनमें एक भोम में १५०० छज्जे (झरोखे) तथा ३००० दरवाजे शोभायमान हैं ।

तीनों भोम के छज्जे पड़े, तले से ले चौथी भोम दरम्यान ।
नव हजार खुले रहे, छे भोम के पेहेचान ॥१६॥

पहली भोम से लेकर चौथी भोम के दरम्यान तीनों भोमों के छज्जे पड़े हैं । (जिनसे बट-पीपल के वृक्षों की डालियां आकर मिली हैं) इसके ऊपर चौथी से लेकर नवी भोम तक शेष छै भोमों के ९००० छज्जे खुले हैं । (इनसे वृक्षों की डालियां न मिलने से सामने खुला आकाश है)

हर हांस में तीस तीस, ऐसे गुरज हैं पचास ।
ताके डेढ़ हजार भए, देखन की रखो आस ॥१७॥

प्रत्येक हांस में ३०-३० मंदिरों के ३०-३० झरोखे होते हैं । ५० हांस में ५० गुर्ज हैं (५० हांस की संधि में ४९ गुर्ज हैं, तथा १-१ गुर्ज अग्नि व नैऋत्य कोने में हैं।)। जिनमें कुल १५०० झरोखे शोभायमान हैं । उनका दर्शन करने की आशा दिल में उत्पन्न करो।

एह एकावन गुरज पड़े, ओगन पचास वट पीपल की होए ।
दोए पड़े दोए चेहेबच्चा, मोमिनों देखो सोए ॥१८॥

रंगमहल की दक्षिण दिशा में कुल ५१ गुर्ज शोभायमान हैं, जिनमें से ४९ गुर्ज बट पीपल की चौकी के सामने हैं और बाकी २ गुर्ज दोनों कोनों (अग्नि–नैऋत्य) में स्थित १६ हांस के चेहेबच्चों के सामने आये हैं ।

दो गुरज दरम्यान में, छज्जे तीस पड़े नूर ।
ठड़ी जब देखिए तीस तीस, भासत हार जहूर ॥१९॥

प्रत्येक २ गुर्जों के मध्य में ३०-३० नूरी झरोखे शोभायमान हैं । जब सामने खड़े होकर देखते हैं, तो ३०-३० झरोखों की पंक्तियां दिखाई देती हैं ।

गिनती हांस पचास लों, डेढ़ हजार सुमार ।
तिरछी नव हारें बनी, सुख मोमिन देखन हार ॥२०॥

रंगमहल की दक्षिण दिशा के ५० हाँस में १५०० झरोखे हैं, जिनकी नीचे से ऊपर की तरफ खड़ी नौ हारें दिखायी देती हैं । इस आनंददायी शोभा को मात्र ब्रह्मात्माएं ही देखते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए कह्या पचास हांस नूर ।
बट पीपल की चौकी, नेक कह्या तिनका जहूर ॥२१॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे ब्रह्मात्माओ ! यह रंगमहल की दक्षिण दिशा के ५० हाँस के सामने स्थित बट पीपल की चौकी की शोभा का संक्षिप्त में वर्णन किया है ।

प्रकरण ३७, चौपाई १९७७

फूल बाग लिखा है

फूल बाग की शोभा

फूल बाग व नूर बाग रंग भवन की पश्चिम दिशा में उपर व नीचे एक समान शोभा ले रहे हैं । नूर बाग जमीन पर व फूल बाग, नूर बाग के ऊपर पहली भोम में आया है । अनेकों नूरमयी स्तम्भों, फव्वारों, फूलों, नहरों, चेहेबच्चों आदि का विस्तृत विवरण निम्न दो प्रकरणों में ब्रह्मात्माओ के वास्ते किया गया है ।

अब कहूं फूलबाग की, जो धाम लगता चबूतर ।
तरफ पश्चिम को देखिए, पचास हांस भर बराबर ॥१॥

अब फूलबाग की शोभा का वर्णन करूंगा, जो कि रंगमहल की पश्चिम दिशा में ५० हांस (१५०० मंदिरों) के सामने धाम चबूतरे से लगते हुए

शोभायमान है ।

धाम की चारों तरफ कही, पचास हांस आगे द्वार नूर ।
पचास हांस बट पीपल के, फूलबाग पचास हांस जहूर ।।२।।

रंगमहल की चारों दिशाओं की शोभा कही गयी है । पूर्व दिशा में मुख्य दरवाजे की हांस एवं ५० हांस (पहल) हैं । (धाम का दस मंदिर का हांस बनने से ५१ हांस दिखने के होते हैं, किंतु गिनती के ५० हांस ही होते हैं ।) इनके सामने यमूना जी के उस पार अक्षर धाम की शोभा है । दक्षिण दिशा के ५० हांस के सामने बट पीपल की चौकियां हैं । पश्चिम दिशा में ५० हांस (पहल) के सामने फूलबाग शोभायमान है ।

पचास हांस लाल चबूतरा, एह कही चारों तरफ ।
नूर रोशनी इनकी, कह्यो जाए ना एक हरफ ।।३।।

उत्तर दिशा में ५० हांस (पहल) में से ४० हांस के सामने लाल चबूतरे की शोभा आई है । (शेष १० हांस के सामने ताड़वन आया है) । इस प्रकार चारों तरफ की शोभा कही गयी है । इनकी नूरमयी रोशनी के विषय में एक शब्द भी कहना सम्भव नहीं है ।

पर नेक तामें कह्या, चौक आगे बिना द्वार ।
और बट पीपल चौकी कही, नेक कहूं फूलबाग विस्तार ।।४।।

फिर भी उसमें से पूर्व दिशा में मुख्य दरवाजे के सामने आये चांदनी चौक का तथा दक्षिण दिशा में आयी बट-पीपल की चौकी का थोड़ा वर्णन कर दिया है । अब फूलबाग के विषय में थोड़ा वर्णन करूंगा।

सौ बाग कहे ऊपर, सौ बाग लों कह्या नूर बाग वन ।
तिनका कहूं बेवरा, देखो दिल रोशन ।।५।।

१०० बगीचे फूलबाग के ऊपर व १०० बगीचे नूरबाग के नीचे हैं । उनका विवरण प्रस्तुत करेंगे । इनकी नूरमयी शोभा को हृदय में देखिये (बसाईये) ।

इन पचास हांस में, दस कहे हैं चौक नूर ।
पचास हांस भर हद कही, देखो इनका जहूर ।।६।।

रंगमहल की पश्चिम दिशा के ५० हांसों (पहलों) के सामने (५-५ हांस

के लम्बे-चौड़े) १० नूरमयी चौक (बगीचे) आये हैं । नूरबाग व फूलबाग की लम्बाई-चौड़ाई ५०-५० हांस की है । (जिनमें दस बगीचों की दस हारें हैं)

दस बारी अन्दर पैठन की, इन चौक से होए ।
फेर इनका कहूं बेवरा, फेर देखो मोमिनों सोए ।।७।।

नूरबाग की पूर्व दिशा के १० चौकों (बगीचों) से रंगमहल की पहली भोम के बाहरी हार मंदिरों में जाने के लिये चबूतरे के अंदर से होती हुई १० खिड़कियाँ (सीढ़ियां) आई हैं । उसका वर्णन बाद में करूंगा, तब उनकी शोभा को देखियेगा।

चारों कोने चार चेहेबच्चे, सोले हांस भर मरजाद ।
ए नूर बका की रोशनी, देख ल्यो इन का स्वाद ।।८।।

नूर बाग के चारों कोनों में १६ हांस (पहल) के चार चेहेबच्चे आये हैं। नूरमयी अखंड परमधाम की जगमगाती शोभा को देखकर उसका आनंद लीजिये ।

फूलबाग चौड़ो चौरस, पचास हांस मरजाद ।
चार कोने चार चेहेबच्चा, मोमिन ले बका स्वाद ।।९।।

फूलबाग बहुत ही लम्बा-चौड़ा व समचौरस है । जो कि ५० हाँस (१५०० मंदिर) का लम्बा-चौड़ा है । इसके चारों कोनों में १६ हांस के ४ चेहेबच्चों की अपरम्पार शोभा आई है, जिनका सुख ब्रह्मात्माएं लेती हैं ।

धाम दिवाले लगते, मंदिर डेढ़ हजार ।
हर मंदिर एक छज्जा, सो डेढ़ हजार सुमार ।।१०।।

रंगमहल की पश्चिम दिशा में बाहरी हार के १५०० मंदिर विद्यमान हैं । प्रत्येक मंदिर में एक छज्जा (झरोखा) शोभायमान है, जिससे १५०० मंदिरों में कुल १५०० झरोखे होते हैं ।

तीन हजार मेहेराब, हर मंदिर दोए दोए ।
एक छज्जा दोए मेहेराब, ए गिनती कही सोए ।।११।।

प्रत्येक मंदिर में २-२ दरवाजे (महराब) शोभायमान हैं । १५०० मंदिरों के कुल ३००० दरवाजे होते हैं । इस प्रकार प्रत्येक मंदिर में २ दरवाजों के बीच १ झरोखा शोभायमान है ।

हर मेहेराब आगे चेहेबच्चा, ताकी सुमार तीन हजार ।
हर चेहेबच्चे पांच फुहारे, हक हादी रूहें देखनहार ॥१२॥

प्रत्येक दरवाजे के आगे (फुलबाग की पहली आड़ी नहर में) एक चहबच्चा शोभायमान है, इस प्रकार पहली नहर में कुल ३००० चेहेबच्चे शोभा ले रहे हैं । प्रत्येक चेहेबच्चे से ५-५ फव्वारे छूटते हैं जिनकी शोभा श्री राज श्यामा जी व सखियाँ देखती हैं ।

चारों तरफों चार फुहारे, उछरत पड़े बीच सोए ।
एक उठे दरम्यान में, बिना मोमिन न समझे कोए ॥१३॥

चारों दिशाओं के ४ फव्वारों का जल उछलकर दिशा के अन्य चहबच्चों में गिरता है, तथा दिशा के चेहेबच्चों से जल उछलकर मध्य के चहबच्चे में गिरता है । मध्य के एक फव्वारे का पानी उछलकर उसी चहबच्चे में गिरता है, जिसका भेद ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं ।

बीच का जो फुहारा, उछरत मानो मोती ज्यों नूर ।
एह शोभा हक दिल माफक, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥१४॥

५ फव्वारों में से बीच का जो फव्वारा है, उसका जल उछलते हुए नूरमयी मोतियों के सदृश लगता है । यह सारी शोभा राजजी के दिल के अनुरूप है, जिसका वर्णन किस प्रकार करूं ?

छज्जे रूहें बैठत, फूलबाग देखिए सनमुख ।
दोउ बाजु फूहारे उछरत, क्यूं कहूं जुबां ए सुख ॥१५॥

रंगमहल की पश्चिम दिशा में आये झरोखों में सखियां जब विराजमान होती हैं, तब सामने फूलबाग की शोभा दिखायी देती है, जिसमें सखियों को अपने (झरोखों के) दोनों तरफ (दरवाजों के सामने) फव्वारे उछलते हुए दिखायी देते हैं, उन सुखों का जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करूं ?

इत गुरजे एकावन, ओगन पचास पड़ी दरम्यान ।
आए दोए चेहेबच्चे इन पर, ताकि मोमिन करो पेहेचान ॥१६॥

रंगमहल की पश्चिम दिशा में कुल ५१ गुर्ज आये हैं, जिनमें से दोनों कोनों के गुर्जों के मध्य 49 गुर्जें हैं। कोने के दोनों गुर्जों के सामने दो १६ हांस (पहल) के चेहेबच्चे आये हैं । हे सुंदरसाथ जी, इनकी पहचान कीजिये ।

अब कहूं बगीचन की, ए जो दस दस की हार ।
दोए दोए सौ कहे, करे जुगल सरूप बिहार ।।१७।।

अब फूल बाग व नूरबाग के बगीचों का वर्णन करेंगे । दोनों में १०-१० बगीचों की १०-१० हारें शोभायमान हैं । फूलबाग व नूरबाग के मिलाकर २०० बगीचे होते हैं, जहां युगल स्वरूप विहार करते हैं ।

हर बगीचे पांच चबूतरा, चेहेबच्चा चबूतरा दरम्यान ।
हर चबूतरे कठेड़ा, चारों तरफ पेहेचान ।।१८।।

हर बगीचे में ५-५ चबूतरे शोभा ले रहे हैं । प्रत्येक चबूतरे के बीच में चेहेबच्चा आया है तथा चबूतरे के चारों तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

हर चबूतरे बनी, तिनके चारों तरफ ।
तहां दो दो सीढ़ियां, एह सुनते पावे सरफ ।।१९।।

प्रत्येक चबूतरे की चारों दिशा में २-२ सीढ़ियां हैं । इसकी शोभा सुनकर परमधाम की पहचान होती है । (तीसरी सीढ़ी के रूप में चबूतरा है)

ए जो सौ बाग कहे, ताके पांच सौ चबूतरे ।
पांच सौ चेहेबच्चे बने, एह शोभा सब ऊपर ।।२०।।

फूलबाग में कुल १०० बगीचे कहे गये हैं, जिनके कुल (१००x ५=) ५०० चबूतरे हुए । ५०० चबूतरे के ५०० चेहेबच्चे होते हैं, जिनकी शोभा सर्वोपरि है ।

इत बाईस रस्ते पड़े, इन बगीचों दरम्यान ।
अग्यारे उभा अग्यारे आड़े, ए बाग हदे करो पेहेचान ।।२१।।

इन १०० बगीचों (१० बगीचों की १० हारों) के बीच में ११ आड़े, ११ खड़े रास्ते हैं । कुल २२ रास्तों की शोभा आई है । फूलबाग की शोभा की पहचान कीजिये।

ए जो सौ बगीचे कहे, ताके बीस रस्ते दरम्यान ।
चार चेहेबच्चे छोटे पड़े, सो रस्ते बीच पेहेचान ।।२२।।

यह जो १०० बगीचे कहे गये हैं, उनके मध्य जो २० रास्ते आये हैं, उनमें ४-४ छोटे चेहेबच्चे शोभायमान हैं ।

ऐसे सौ बगीचे, तहां हर एक में चार ।
ए जो पड़ी रस्ते चौकड़ी, तहां ए सुभान के सुखकार ।।२३।।

ऐसे १०० बगीचे हैं, जिनमें से प्रत्येक में चार चेहेबच्चे हैं, जहां रास्तों (रौंसों) की चौकड़ी पड़ी है , वहां श्री राज जी के ये सुखदायी चेहेबच्चे हैं ।

ए जो बाइस रास्ते बड़े कहे, तिन की चौकड़ी रस्ते दरम्यान ।
सो एक सौ आठ भई, ताकी करो पेहेचान ।।२४।।

यह जो २२ रास्ते बड़े कहे गये हैं, (आड़ी-खड़ी ११-११ रास्ते), उनकी चौकड़ी (क्रॉसिंग) रास्तों में १०८ होते हैं, उनकी पहचान कीजिये ।

नव हार पड़ी दस दस की, ताके नब्बे सुमार ।
नव बाएं नव दाहिनें, दोए रस्ते किनारे हार ।।२५।।

दस-दस चौकड़ी की नौ हारें (पंक्तियां) आयी हैं, जिससे कुल ९० चौकड़ी हुईं। इसके अतिरिक्त किनारे के दोनों रास्ते में ९-९ चौकड़ी (चेहेबच्चे) हैं ।

इनकी जमा अठारे, नब्बे पहले कही जे ।
यूं सब एक सौ आठ भए, तुम देखो मोमिनो ए ।।२६।।

दोनों किनारों के रास्ते (रौंस) की १८ चौकड़ी हुयी, तथा मध्य के रास्तों के ९० चौकड़ी हुए थे । इस सबको मिलाकर १०८ चौकड़ी हो गये, हे सुंदरसाथ जी ! इनकी शोभा देखिये ।

यूं बाईस नेहेरें पड़ी, ऊपर इन रस्तन ।
सो तो जंजीरा बंध भई, आड़ी उभी रोशन ।।२७।।

इसी प्रकार (आड़े-खड़े ११-११ रास्तों) कुल २२ रास्तों के मध्य २२ नहरें आयी हैं, जो आड़ी-खड़ी जंजीरों की भाँति बँधी हुई दिख रही हैं ।

एह तीनों तरफ कठेड़ा, बाहेर लिए भर किनार ।
ताके लटकता छज्जा, सो अति शोभा बनी सुखकार ।।२८।।

फूलबाग के तीन तरफ (उत्तर, पश्चिम, दक्षिण) किनार पर कठेड़ा शोभायमान है । कठेड़े के आगे लटकता हुआ (ढालदार) छज्जा अत्यंत सुन्दर एवं सुखदायी लग रहा है ।

ऊंचा नव भोम लों, डेढ़ हजार बनी हार ।
ताके छज्जे तेरे हजार, पांच सौ ऊपर सुमार ।।२९।।

रंगमहल की पश्चिम दिशा में प्रथम भोम से नौ भोम तक प्रत्येक भोम में १५०० छज्जे (झरोखे) शोभायमान हैं । ९ झरोखों की १५०० हारें दिखती हैं । कुल मिलाकर १३,५०० (१५००x९) झरोखे हुए ।

और तिरछी जो देखिए, तो डेढ़ हजार की नव हार ।
इत हक हादी रूहें, नित्याने करत बिहार ।।३०।।

अगर तिरछा (आड़ा) देखें तो १५०० झरोखों की नौ हारें दिखती हैं । यहाँ श्री राज श्यामा जी व सखियाँ नित्य प्रति प्रेम व आनंद पूर्वक लीला विहार करते हैं ।

ए जो चारों चेहेबच्चे, बने चारों कोनों पर ।
तिन की नेहेरें सब में, फिरवली यों कर ।।३१।।

ये जो फूलबाग के चारों कोनों पर चार बड़े (१६ हांस के) चेहेबच्चे आए हैं, उनका पानी फूलबाग के समस्त नहरों में विचरण करता है ।

बीच दरखत फूलन के, बने जो दोरी बंध ।
हजार हजार पांखड़ी, रहे एक एक के सनंध ।।३२।।

उन नहरों के मध्य बगीचों में फूलों के वृक्ष कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं । वहां के 1-1 फूलों में हजार-हजार पंखुडियां विद्यमान रहती हैं ।

इत कई रंग एक फूलन में, लाल नीले पीले गुलाल ।
हक हादी रूहन को, एह देखे होत खुसाल ।।३३।।

यहां फूलबाग के एक-एक फूल में लाल, नीले, पीले, गुलाबी आदि कई कई रंग होते हैं । जिन्हें देखकर श्री राज श्यामा जी व सखियां प्रसन्न हो जाते हैं।

फूल रस्ते दोरी बंध, सुगन्ध बेहेकत बन ।
नूर जवेर ज्यूं झलकत, सो क्यों कर कहूं रोशन ।।३४।।

फूलों के वृक्ष व रास्ते कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं । फूलबाग में चारों तरफ सुगंधित हवा बह रही है । ये पुष्प नूरमयी जवाहरातों के समान जगमगा रहे हैं । उसके दिव्य प्रकाश की शोभा किस प्रकार कहूं ?

इत शीतल मंद सुगन्ध की, बाव बेहेकत सुखदाए ।
रंग लेहेरा उठत फूलन की, देत झकोरे ताए ॥३५॥

यहां मंद गति से बहती शीतल, सुगंधित, सुखदायक हवा वातावरण को महका रही है । फूलों से निकलने वाली रंगबिरंगी तेजोमयी किरणें हवा के झोंको से लहरा रही हैं ।

इत जुगल सरूप देखिए, रमते फिरे फूल बन ।
बस्तर भूखन अंग के, सो जंग करत नूर रोशन ॥३६॥

यहां युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी को फूल बाग में रमण करते देखिये । उनके नूरी अंगों में विराजमान वस्त्राभूषणों से निकलने वाली रंगबिरंगी नूरमयी किरणें, आपस में टकराती हुई जंग करती प्रतीत होती हैं ।

रूहें रमें संग राज के, इत बैठक बिछौने नूर ।
शोभा इन बखत की, सो क्यूं कर कहूं जुबां जहूर ॥३७॥

यहाँ कई प्रकार की बैठकों पर नूरी बिछौने बिछे हुए हैं । यहां श्री राजजी के साथ में ब्रह्मप्रियाएं अनेक प्रकार से लीला विहार करती हैं । इस समय की शोभा का इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करूं ?

पशु पंखी इत खेलत, लवा तीतर मोर चकोर ।
कई रंग परन नूर झलकत, जुबां जिकर रटन की शोर ॥३८॥

यहां फूलबाग में अनेक प्रकार के पशु-पक्षी लवा, तीतर, मोर एवं चकोर आदि अनेक प्रकार से खेल करते हैं और अपनी रसना जिह्वा से प्रियतम श्री राज जी का गुणगान करते हुए शोर करते हैं । इनके पंखों से कई रंगों की नूरी किरणें झलकार करती हैं ।

जात कई पशुअन की, पंखी अलेखे जात ।
ए तो बका भोम चेतन, क्यूं कहूं शोभा की बात ॥३९॥

यहां पशुओं की अनेकों प्रजातियां हैं, इसी प्रकार पक्षियों की भी असंख्य जातियां हैं । यह तो अखण्ड परमधाम की चेतन भूमिका है, उसकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं ?

ए सुख अरस अजीम के, रहे मोमिन दिल दरम्यान ।
हक याद करावें हबीब पे, तुम ताकी करो पेहेचान ॥४०॥

दिव्य परमधाम के ये सुख ब्रह्मात्मा के दिल में बसे होते हैं । जिसे श्री राजजी अपनी प्यारी श्रीश्यामाजी के द्वारा याद करवा रहे हैं । आप उसकी पहचान कीजिये ।

ए लीला शब्दातीत की, जो नूर के पार बिहार ।
भई सिफाएत मोमिनों को, इत एही सुख पावन हार ।।४१।।

यह लीला शब्दातीत परमधाम की है, जो अक्षर से भी परे का लीला-विहार है। ब्रह्मात्माओं पर मुहम्मद हकी सूरत की सिफायत हुयी है(उन्हें तारतम ज्ञान मिला है), तो वे इस मिथ्या संसार में रहते हुए भी परमधाम के अखण्ड सुख प्राप्त कर रहे हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, फूल बाग देखो तुम ।
एह तुम को दिखाईया, हक सुभान का हुकम ।।४२।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुन्दरसाथ जी ! फूलबाग की सुन्दर शोभा को देखिये, जिसे श्री राज जी का हुक्म (आदेश) आपको दिखा रहा है ।

प्रकरण ३८, चौपाई २०१९

नूर बाग लिख्या है

कहूं हकीकत नूर बाग की, जो तले इन चबूतर ।
हक हादी रूहन की, कहूं मोमिनों की खातर ।।१।।

अब नूर बाग की शोभा कहता हूं, जो इस फूलबाग के चबूतरे के नीचे जमीन में आया है । श्री राज श्यामा जी व सखियां जहां लीला विहार करते हैं, उसका वर्णन ब्रह्मात्माओं के लिये करूंगा।

जैसे सौ बाग ऊपर, तैसे ही सौ बाग तले नूर ।
एह रोशनी नूर जमाल की, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।२।।

जैसे १०० बगीचे ऊपर फूलबाग में हैं, वैसे ही नीचे भी नूरबाग में १०० बगीचे हैं । ये दोनों बाग अक्षरातीत का नूर हैं । उनकी दिव्यता का वर्णन किस प्रकार करूं ?

ऐसे ही चबूतरे बने, ऐसे ही चेहेबच्चे ।
ऐसे ही फुहारे उछरत, ऐसे नूर नेहेरे भरे ए ।।३।।

फूलबाग में जेसे चबूतरे, नहरें, चेहेबच्चे, फव्वारे शोभायमान हैं, नूरबाग में भी वैसे ही चबूतरे, नूरी जल से भरे नहरें, चेहेबच्चे, उछलते हुए फव्वारे शोभायमान हैं ।

ऐसे ही चौक सब ठौर के, ऐसे ही गलियां रस्ते नूर ।
कई रंग शोभा इन नूर बाग की, जुबां आवत नाहीं जहूर ।।४।।

फूलबाग के समान ही नूरबाग में भी सभी स्थानों में नूरमयी चौक, गलियाँ और रास्ते अनेक रंगों से युक्त शोभा ले रहे हैं । जिनका वर्णन इस जुबाँ से करना असंभव है ।

कई दरखत फूलन की, कई रंग ना पार सुमार ।
किनारे पेड़ केलन के, करे जुगल सरूप बिहार ।।५।।

नूरबाग में फूलों के अनेकों वृक्ष हैं, जिनके रंगों का कोई पारावार (सीमा) नहीं है । नूरबाग के किनारे केले के वृक्ष शोभा ले रहे हैं । श्री राज श्यामा जी यहाँ अनेक प्रकार से लीला विहार करते हैं ।

तले थम्भ कठेडा मेहेराब, जुगत ऊपर की सब जान ।
नेहेरे फुहारे उछरत, ए नूर मोमिन दिल पेहेचान ।।६।।

नूरबाग में फूलबाग की ही तरह नहरें, फव्वारें, चबूतरे शोभायमान हैं, मात्र स्तम्भों व महराबों की शोभा विशेष है। जिसकी दिव्य शोभा की पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती है ।

इन रस्ते गलियन में, जब फिरते देखिए हक ।
रूहें संग शामिल रहे, भरी जोर इश्क ।।७।।

नूरबाग की इन गलियों और रास्तों में, जब श्री राज श्यामाजी को भ्रमण करते देखते हैं, तो उनके साथ में इश्क में पूर्णतः सराबोर सखियां भी शामिल रहती हैं ।

काहूं चौक बैठन के बैठहीं, चारों तरफ फुहारे नूर ।
सुगन्ध इन दरखत की, कई बेहेकत जोत जहूर ।।८।।

नूरबाग में बैठने के अनेकों चौक हैं, जिनमें श्री राजश्यामा जी व

सखियां विराजमान होते हैं । चारों तरफ फव्वारों से नूरमयी जल उछलते हुए दिखायी देते हैं तथा फूलों के वृक्षों से सुगंधित वायु चारों तरफ वातावरण को महका रही है । फूलों की रंगबिरंगी किरणें चारों तरफ जगमगाती हुयी दिखायी देती हैं ।

एह लीला शब्दातीत की, कहेने शबद में नूर सुखन ।
इत नाहीं निमूना इन का, एह तो बका ठौर रोशन ।।९।।

यह तो शब्दातीत परमधाम की दिव्य लीला है । इन नूरमयी सुखों का वर्णन माया के शब्दों से करना है । इस संसार में उसका कोई उदाहरण नहीं है । वह तो नूरी प्रकाश से युक्त अखण्ड परमधाम है ।

ज्यादा इन नूर बाग में, थम्भ मेहेराब नूर ।
ए सब किनारे पर पड़े, झलकत नूर जहूर ।।१०।।

नूरबाग में नूरी स्तम्भ व महरावें, फूलबाग की अपेक्षा अधिक हैं, जो कि सभी बगीचों की किनार पर विद्यमान हैं और चारों तरफ रंगबिरंगी किरणों से नूरी झलकार कर रहे हैं ।

छे सौ थम्भ हर बगीचे पड़े, ऐसे बगीचे सौ एक ।
ता को साठें हजार जमा, इत रोशनी कई देखो अनेक ।।११।।

प्रत्येक बगीचे में (चारों तरफ किनार पर) ६००-६०० स्तम्भ विद्यमान हैं । इस प्रकार १०० बगीचों में कुल ६०,००० स्तम्भ होते हैं । इनकी नूरमयी अनंतानंत रंगबिरंगी किरणों की शोभा देखिये ।

साठ हजार मेहेराब पड़े, इन थम्भों दरम्यान ।
रस्ते इत बाइस पड़े, छे हजार थम्भ रोशन जान ।।१२।।

इन ६०,००० स्तम्भों के मध्य ६०,००० महरावें शोभायमान हैं । बगीचों के मध्य २२ रास्ते हैं, जिनके बाहरी किनार पर अतिरिक्त ६००० नूरी स्तम्भ जगमगाते हुए शोभायमान हैं (कुल ६६,००० स्तम्भ) होते हैं) ।

कहूं ताको बेवरा, सुनो तुम मोमिन ।
लगता दिवाल धाम की, डेढ़ हजार थम्भ रोशन ।।१३।।

हे सुंदरसाथजी, आप इनका विवरण सुनिये । रंगमहल के चबूतरे से लगकर नूरबाग में १,५०० स्तम्भ आए हैं ।

और साढ़े चार हजार, तीनों तरफ रोशन ।
एह जोत जवेरों झलकत, सौ जानत दिल मोमिन ।।१४।।

और बाकी ४५,०० स्तम्भ नूरबाग के बाकी तीन दिशा (उत्तर, दक्षिण, पश्चिम) में आये हैं । इन स्तम्भों से जो जवाहरातों के समान रंगबिरंगी नूरमयी किरणें झलकार कर रही हैं, उसकी शोभा ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं ।

छे हजार थम्भ के, बने छे हजार मेहेराब नूर ।
डेढ़ हजार तरफ धाम की, दिवाल में अलंकार जहूर ।।१५।।

बाहरी किनार पर आये इन ६,००० स्तम्भों के मध्य ६,००० नूरमयी महरावें शोभायमान हैं, जिनमें से १५०० महरावें पूर्व में रंगमहल के चबूतरा की दीवार में अलंकृत (अक्शी) हैं ।

तामें दस खिड़कियां, हर बगीचे एक होए ।
तहां से बीस सीढ़ी चढ़ती, दिवालों अन्दर बनी सोए ।।१६।।

रंगमहल की इस दीवार में प्रत्येक बगीचों के सामने १-१, कुल १० खिड़कियां (छोटे दरवाजे) शोभायमान हैं, जहां से चबूतरे के अंदर से होते हुए २० सीढ़ियां चढ़ी हैं (जो रंगमहल के बाहरी हार मंदिरों के संधि के दरवाजों में पहुंचती हैं) ।

यों दर दिवाल से चढ़िए, एक मंदिर की हद से ।
चढ़िए सीढ़ियों ऊपर से, जाइए दूसरे द्वार हद मे ।।१७।।

इस प्रकार दिवालों (चबूतरे) में स्थित दरवाजों (दसों सीढ़ियों) से ऊपर चढ़िये । सीढ़ियों की दूरी लगभग १ मंदिर (एक मंदिर और 33 हाथ) की है, जो बाहरी हार मंदिरों की संधि के दरवाजे में पहुंचती हैं ।

और जो धाम से आइए, तो एक द्वार की हद नूर ।
तहां सेती उतरते, निकलिए दूसरे द्वार जहूर ।।१८।।

अगर रंग महल के मंदिरों से नूर बाग में आना हो तो मंदिरों के संधि के दरवाजे से उतरते हुए चबूतरे में स्थित दूसरे द्वार से नूरबाग में निकलिये ।

और साढ़े चार हजार मेहेराब, सो तीनों तरफों जान ।
ए तो थम्भ पेहेले कहे, ए ता के मेहेराब पेहेचान ।।१९।।

और नूरबाग के तीन दिशा (उत्तर, दक्षिण, पश्चिम) में किनार पर

४५०० महरावें आयी हैं, जिनके ४५०० स्तम्भों का वर्णन पहले किया जा चूका है । ये ४५०० महरावें उन्हीं स्तम्भों पर शोभायमान हैं ।

इत पांच सौ चबूतरे, हर बगीचों चेहेबच्चे नूर ।
चार और छोटे आए, यों सौ के नव सौ जहूर ॥२०॥

इस प्रकार फूलबाग के समान ही नूरबाग में भी १०० बगीचों में ५०० चबूतरे (प्रत्येक बगीचे में ५ चबूतरे) शोभायमान हैं, जिनमें नूरमयी चेहबच्चे हैं । इनके अतिरिक्त प्रत्येक बगीचों में ४-४ और छोटे चेहेबच्चे आये हैं । इस प्रकार कुल ९०० (९x१००) चेहेबच्चे होते हैं ।

यूं जमा सब की कही, थम्भ छासठ हजार ।
डेढ़ हजार लगे दिवाल के, बेहेरन के सुखकार ॥२१॥

इस प्रकार कुल मिलाकर ६६,००० स्तम्भ होते हैं । उनमें से १५०० अक्शी स्तम्भ रंगमहल के चबूतरे की दीवाल पर हैं, यहां विहार करने पर अनंत सुख प्राप्त होता है ।

महामत कहे ए मोमिनों, कह्यो नूरबाग विस्तार ।
तुम नजर फेरो अपनी, तरफ परवरदिगार ॥२२॥

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! नूरबाग की शोभा का वर्णन किया है । अब तुम अपनी सुरता को प्रियतम अक्षरातीत की तरफ फिराओ ।

प्रकरण ३९, चौपाई २०४१

अब अन्न वन लिखा है

नूरबाग व फूल बाग की पश्चिम दिशा में अन्न वन शोभायमान है, उसका यहां सूक्ष्म रूप में वर्णन हुआ है । इसकी पश्चिम दिशा में दूब (हरे घास) का मैदान आया है, जहाँ हरे पीले रंग की दूब, दुलीचा के रूप में शोभायमान है । इसके भी पश्चिम में बहुत बड़ा रेती का मैदान है, जहां पर पशुओं पर सवारी की लीला होती है। जैसे ही धाम धणी इच्छा करते हैं, सब पशु आकर खड़े हो जाते हैं ।

अब कहूं अन्न वन की, जो पश्चिम तरफ नूर द्वार ।
तहां से सनमुख चलिए, करिए अन्न वन बिहार ।।१।।

अब अन्न वन की शोभा का वर्णन करता हूं, जो नूरबाग की (नूरी महराबी द्वारों के) पश्चिम में आया है । उन नूरी महराबों से सामने (पश्चिम में) चलिये, और अन्न वन में आकर विहार कीजिये ।

रस्ता मुकाबिल रस्ता, चौक मुकाबिल चौक अन्न ।
दोरी बंध चल्या गया, झलकत नूर रोशन ।।२।।

नूरबाग के रास्तों के सामने अन्नवन में भी रास्ते (नहरों के चबूतरें) तथा चौक (बगीचों) के सामने चौक शोभायमान हैं । सारी शोभा पंक्तिबद्ध आयी है, जिनकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ झलकार कर रही है ।

जहां रस्ता आए पड़ा, रस्तन की चौक दरम्यान ।
तहां चेहेबच्चे पड़े, चलते हर रस्ते पेहेचान ।।३।।

जहां आड़े रस्तों से खड़े रस्ते आकर मिल गये हैं, वहां चौकड़ी पर मध्य में चेहेबच्चा शोभायमान है । इसी प्रकार प्रत्येक रास्तों की चौकड़ी पर चेहेबच्चे हैं ।

जंजीरे ज्यूं जल चले, अन्न वन तरफ ले घेर ।
इत विस्तार वन कई भांत का, सो कहूंगी आगे फेर ।।४।।

इन आड़े-खड़े रस्तों (चबूतरों) में नहरों का जल जंजीर के समान विचरण कर रहा है, जिन्होंने अन्नवन को चारों तरफ से घेर लिया है । यहां वन का अनेक प्रकार से विस्तार है, जिसका वर्णन आगे फिर से किया जायेगा ।

अन्न वन आगे दूब है, हरी पीरी कहीं सुपेत ।
तहां रस्ते सब चौक बने, ए सुख रूहें लेत ।।५।।

अन्न वन के आगे दूब दुलीचा के बगीचे हैं, जिनमें हरी, पीली तथा कहीं सफेद रंग की घास (दूब) भी आई है । यहां रास्तों (नहरों के चबूतरे) के मध्य चौक (बगीचे) शोभा ले रहे हैं । इनका सुख ब्रह्मप्रियाएं लेती हैं ।

मानो चौक दुलीचा, बिछाया सब ठौर ।
खिलौने आशक हक के, सो खेलत है ठौर ठौर और ।।६।।

यहां ऐसा प्रतीत होता है, जैसे बगीचों में सभी जगह दूब का ही दुलीचा बिछाया गया है । प्रियतम श्री राज जी के आशिक पशु-पक्षी (खिलौने) यहां जगह-जगह खेलते हुए दिखायी देते हैं ।

आगे सागर लों, पश्चिम दिश मैदान ।
आगे आइयां हवेलियां, सब सबज रंग की जान ।।७।।

दूब दुलीचा के आगे पश्चिम दिशा में सागरों तक रेती का मैदान (पश्चिम का चौगान) आया है, जिसमें हीरे मोती के समान जगमगाती हुयी नूरमयी रेती बिछी है । इसके पीछे की तरफ दधि सागर की हवेलियाँ आयी हैं, जो कि हरे रंग में शोभायमान हैं ।

एह तो बका ठौर की, वस्तां है अपार ।
असवारी जानवरों की, सब जानत परवरदिगार ।।८।।

ये तो अखण्ड परमधाम की अपरम्पार लीला स्थली है । यहां पश्चिम की चौगान में पशुओं पर सवारी की लीला होती है, जिसे प्रियतम अक्षरातीत जानते हैं ।

कई असवारी पशुअन की, सब इत हाजर होए ।
जो नेक लिया दिल में, तो आए खड़े सब सोए ।।९।।

यहां अनेक प्रकार के दिव्य पशुओं पर सवारी होती है । सभी प्रकार के पशु यहां हाजिर रहते हैं । दिल में सवारी की थोड़ी सी भी इच्छा करते ही वे पशु पक्षी सवारी के लिये सामने आकर खड़े हो जाते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए नेक कह्या तुम ।
आगे तुमे देखाऊंगी, जो करेगा हक हुकम ।।१०।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथजी ! यहां मैंने संक्षिप्त में वर्णन किया है । अब आगे श्री राजजी जैसा आदेश करेंगे, वैसा आपके समक्ष वर्णन करूंगी।

प्रकरण ४०, चौपाई २०५१

रंगभवन की परिक्रमा करते हुए अब उत्तर दिशा में आ जाते हैं, यहां रंगमहल के ४० हाँस के सामने स्थित लाल चबूतरे की शोभा का वर्णन कहूंगा। यहां के छज्जे, द्वार, जालियाँ, सिंहासन, कुर्सियाँ, सामने के वृक्ष, सीढ़ियाँ, बडे जानवरों के अखाड़ें अति सुखदायी है ।

अब कहूं लाल चबूतरा, चालीस हांस मरजाद ।
एह लाल मानक की, सो बका भोम बुनियाद ।।१।।

अब लाल चबूतरे का वर्णन करता हूं , जो ४० हांस (पहल) का लम्बा है । यह चबूतरा लाल माणिक का है, जो अखण्ड परमधाम का ही नूर है ।

तीनों तरफ कठेड़ा, जड़ाव ज्यूं जुगत ।
हद बारे सौ मंदिर, हर मंदिर तीन तीन द्वार इत ।।२।।

लाल चबूतरे के तीनों तरफ (पूर्व, पश्चिम व उत्तर में) कई प्रकार के रत्नों से जड़ा हुआ कठेड़ा अद्‌भुत शोभा ले रहा है । लाल चबूतरा रंगमहल की उत्तर दिशा में बाहरी हार के १२०० मंदिरों के सामने विद्यमान है । उन १२०० मंदिरों में से प्रत्येक की बाहरी दीवाल में ३-३ दरवाजे शोभायमान हैं । (यहां मंदिरों की बाहरी दीवार में झरोखे नहीं हैं)

ताके द्वार छत्तीस सौ, तीन अन्दर हैं द्वार ।
एक दाएं एक बाएं, एक सनमुख देखनहार ।।३।।

इस प्रकार उन १२०० मंदिरों के (बाहरी दीवार के) कुल ३६०० दरवाजे होते हैं । उन बाहरी हार मंदिरों की अंदर की तीनों दीवारों में तीन दरवाजे आये हैं । दो दरवाजे दायें-बायें की दीवारों में तथा एक दीवार भीतर की दीवार में है ।

देखन में छे द्वार भए, हिसाब के पांच होए ।
लेखे छे हजार भए, गिनती कही मैं सोए ।।४।।

इस प्रकार उन बाहरी हार मंदिरों में दिखने में ६ दरवाजे दिखते हैं, किंतु हिसाब के पांच दरवाजे होते हैं । इस प्रकार उन १२०० मंदिरों में कुल ६००० (१२००x५) दरवाजे शोभायमान हैं ।

इन चालीस हांस में, है चालीस सिंघासन ।
एह जवेर जुगत जडाव ज्यों, सो झलकत नूर रोशन ।।५।।

लाल चबूतरे के इन ४० हाँसों में ४० सिंहासन हैं, जिनमें कई रंगों के

जवाहरात युक्ति पूर्वक जड़े हुए हैं, जिनसे नूरमयी रोशनी चारों तरफ झलकार कर रही है ।

कहूं ऊपर छत्र है, कोउ खुले कोउ ढपिल ।
हक हादी रूहें बैठत, इत देखत खिलौने मिल ।।६।।

किसी सिंहासन पर छत्र है, कोई सिंहासन ऊपर से खुला है, तो कोई ढका हुआ है । यहां पर जब श्री राजश्यामाजी व सखियाँ विराजमान होते हैं, तो सब मिलकर लाडले पशु-पक्षियों (जो सखियों के खिलौने हैं) के खेल-तमाशे देखते हैं ।

कई गदेले कुरसियां, कई बैठन ठौर अनेक ।
शोभा सिफत इनकी, ए तो हिसाब बाहिर नेक ।।७।।

यहां पर बैठने के लिये अनेक प्रकार की गद्‌देदार कुर्सियां विद्यमान हैं । यहां कई प्रकार के बैठने के स्थान हैं । इनकी शोभा, सुंदरता व गणना बेशुमार है।

इत एकतालीस गुरज भए, एक फूल बाग तरफ ।
आई चालीस लाल चबूतरे पर, सिफत कह्यो न जाए एक हरफ ।।८।।

लाल चबूतरे के सामने रंगमहल की ४० हांस (पहल) में कुल ४१ गुर्ज हैं, जिनमें से एक फूलबाग की तरफ (वायव्य कोण में) है। बाकि ४० गुर्ज लाल चबूतरे के समक्ष हैं, जिनकी शोभा के विषय में एक शब्द भी कहना सम्भव नहीं है ।

एक आया चेहेबच्चे पर, उनतालीस चबूतरे पर ।
तिनके छज्जे खिड़कियां, कहूं मोमिन की खातर ।।९।।

उन चालीस गुर्जों में से एक गुर्ज खड़ोकली की तरफ (लाल चबूतरे की किनार पर) आया है । शेष ३९ गुर्ज लाल चबूतरे के अंदर आये हैं । उन गुर्जों में आये छज्जों व खिड़कियों (दरवाजों) की शोभा ब्रह्मात्माओं के लिये कहूंगा।

गुरज में पांच द्वार पड़े, तीन बाहेर दोए भीतर ।
दरम्यान में दिवाल रही, भया द्वार दो मंदिर ।।१०।।

प्रत्येक गुर्ज में ५ दरवाजे आए हैं, जिसमें से ३ दरवाजे बाहरी तीनों

दीवाल में तथा २ दरवाजे भीतरी दीवाल में आए हैं । ये भीतरी दीवाल के दरवाजे दायें-बायें मंदिरों के हैं ।

हर गुरजों यूं ही जानियो, नव भोम लों विस्तार ।
दोए सौ हांस के गुरज में, इत यूं ही कीजो विचार ।।११।।

९ भोमों के सभी गुर्जो की शोभा इसी प्रकार जानिये । साथ ही रंगमहल के २०० (२०१) हांस (पहल) के सम्पूर्ण गुर्जों की शोभा इसी प्रकार समझिये ।

इन भोम तरे लगते, बने एकतालीस दरखत ।
लगत दरखत कठेड़ा, किनार चबूतरे इत ।।१२।।

लाल चबूतरे के किनारे (उत्तर दिशा में) चबूतरे व कठेड़े से लगकर एक भोम नीचे बड़ोवन के ४१ वृक्ष शोभायमान हैं ।

हर हांस कठेड़ा बना, द्वार बन्या दरम्यान ।
ए गुरज मुकाबिल दरखत, द्वार आगे एक चौतरी जान ।।१३।।

लाल चबूतरा के सामने प्रत्येक हांस (पहल) के मध्य में चांदों से सीढ़ियां उतरी हैं । वहां चांदों के सामने कठेड़ा नहीं हैं (द्वार बना है) बड़ोवन के वृक्ष रंगमहल के गुर्जों के सामने आये हैं ।

ताके दाएं बाएं सीढ़ियां, गिनती बीस सुमार ।
तहां से तले जिमीअ के, उतर कीजे बिहार ।।१४।।

उन चांदों के दायें-बायें २०-२० सीढ़ियां उतरी हैं, वहां से नीचे बड़ोवन की जमीन पर उतरकर लीला विहार कीजिये ।

ए एकतालिस दरखत, जाए लगे चांदनी धाम ।
हक हादी रमन को, रूहों के पूरे मनोरथ काम ।।१५।।

बड़ोवन के इन ४१ वृक्षों की डालियां रंगमहल की चांदनी से जाकर लगी हैं (इनकी एक भोम रंगमहल की दस भोम के बराबर है) । यहां पर श्री राजश्यामा जी सखियों के साथ कई तरह से रमण करके उनकी मनोकामना पूर्ण करते हैं ।

दूसरी भोम का छज्जा चल्या, सो चालीस हांस भर एक ।
ऊपर ता के गुमटियां, शोभा इत अनेक ।।१६।।

लाल चबूतरे के ऊपर रंगमहल की चाँदनी से लगता हुआ ४० हाँस लंबा व एक हाँस चौड़ा (बड़ोवन की डालियों का) छज्जा शोभा ले रहा है । उसके ऊपर सामने दसवीं चांदनी की (दहलानों की छत पर आयी) गुम्मटियां शोभा ले रही हैं ।

इनके दरम्यान में, गुरज पड़िया एक आए ।
तो तीस मंदिर भर छज्जा चल्या, हद चालीस हांस पोहोंचाए ।।१७।।

इन गुम्मटियों के बीच-बीच में प्रत्येक हांस (पहल) की संधि में गुर्ज व बड़े गुम्मट आये हैं । इनके आगे ३० मंदिर चौड़ा व १२०० मंदिर (४० हाँस) लम्बा बड़ोवन की डालियों का छज्जा आया है ।

यों ही चालीस हांसो, कठेड़े उतरता चबूतरा ।
तहां से सीढ़ियां उतरती, इन शोभा अति करार ।।१८।।

इस प्रकार लाल चबूतरे की सभी ४० हाँसो के सामने मध्य में कठेड़ा द्वार के सामने चांदे से सीढ़िया उतरी हैं । इनकी शोभा अत्यंत आनंदकारी है ।

इत हक हादी रूहें, बैठत सिंघासन ।
बड़े जानवरों का, लेत मुजरा रोशन ।।१९।।

यहां सिंहासन व कुर्सियों पर श्री राज श्यामा जी व सखियां विराजमान होते हैं, और बड़े-बड़े नूरमयी पशुओं का अभिवादन स्वीकार करते हैं ।

आप अपनी मरजादा, खड़े रहे जानवर ।
नेक तो मैं कहूं, सो मोमिनों की खातर ।।२०।।

यहां लाल चबूतरे के समक्ष बड़ोवन के अखाड़ों में सभी प्रकार के जानवर अपनी - अपनी मर्यादा में (अनुशासित रूप से कतारबद्ध) खड़े रहकर शोभा बढ़ाते हैं । ब्रह्मात्माओं के लिए उस शोभा का संक्षिप्त में वर्णन करूंगा।

एक प्रकरन धरो है, श्री महाराजा जी को छन्द ।
नाम सब तू बंध कहे हैं, सो धरना इस ठाम ।।२१।।

अगला प्रकरण 'श्री महाराज श्री छत्रसाल जी को छन्द' है । नाम तो सभी बंधन कहे गये हैं, किंतु इस संसार में नाम रखना पड़ता है ।

महामत कहे ए मोमिनों, एह देखियो तुम ।
ए जो लाल चबूतरा कह्या, हक सुभान का हुकम ।।२२।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! लाल चबूतरे की शोभा देखिये, जिसे धणी के आदेश से कहा है।

प्रकरण-४१, चौपाई-२०७३

छन्द महाराजा को लिखा है

प्रस्तुत प्रकरण में महाराजा श्री छत्रसाल जी की आतम ने चितवन द्वारा परमधाम को देखकर जो लज्जत ली है, उसको दोहों व छन्द के रूप में प्रकट किया है। उनकी सुरता जहां जहां पहुँचती गई, छंदों में प्रकट हुई है । सर्वप्रथम वे धणी की स्तूति व प्रार्थना करते हैं, कि माया से छूटकर हम धाम के सुख लें। उनकी मेहर से ही हमारा चित्त धाम में टिक सकता है । प्रथम भोम मूल मिलावे से चलते हुए नव भोम, दसवीं आकाशी, फिर उत्तर के तीनों वनों के अनेकों पशु - पक्षियों के नामों का विवरण आया है ।

धाम धनी विनती करों तोसों, दे बल बुध कृपा कर मोसों ।
माया याको कोन चबावे, त्रैगुन समेत सबे डहकावे ।।१।।

हे मेरे धाम के धणी ! प्राणों के प्रीतम ! आपसे विनती करती हूं, कि आप कृपा करके मुझे बल व बुद्धि प्रदान करें । क्योंकि यह माया बहुत प्रबल है । इसका कौन नाश कर सकता है ? यह त्रिदेवा सहित सबको डराती है ।

सो तो मोही को डहकावे, तो तन सूरत लग नहीं पावे ।
कबहूं घर धरनी मह जाई, कबहूं हितू मित सुत भाई ।।२।।

यह माया मुझे भी डराती है, इसलिए मेरे तन व मन (सुरता) आपके चरणों में नहीं लग पाते हैं । मेरा मन कभी घर में, कभी पत्नी में, तो कभी भाइयों, दोस्तों व पुत्रों में लग जाता है ।

कबहूं करे कुटम को जेठे, देह दुख फिरी आवे हेठे ।
कबहूं खेल खिलौने मन लावे, कबहूं अश्व पश्व दोरावे ।।३।।

कभी परिवार के जेठे (बड़े भाई) बलदिवान के दिल में बैठकर माया दुःख देती है, तो कभी देह दुख बीच में आ जाता है । कभी मन खेल खिलौने

खेलने में लग जाता है, तो कभी घोड़े-हाथी दौड़ाने में लग जाता है ।

कबहूं दरबार सजे सिनगारा, जीव बांधत लागे नाहीं वारा ।
दान पुंन थीर रहने न पावे, नेकी मति को धक्का दिवावे ।।४।।

कभी कभी दरबार में जाने के लिये श्रृंगार से मन सजने लगता है । जीव को माया के बंधन में बंधने में जरा भी समय नहीं लगता है । दान-पुण्य का भाव एक क्षण भर भी स्थिर नहीं रह पाता है । माया के बंधन सद्‌बुद्धि को भी बदल देते हैं ।

लिए फिरे कुत्ता सो डोरे, कहे पुत्र नीको भयो मोरे ।
खेंचा खेंची सब हीं करें, कहूं पाउ नहीं ठाहर धरे ।।५।।

यह माया सभी प्राणियों को कुत्ते की तरह अपने वश में लेकर फिरती है । माया के वशीभूत मनुष्य पुत्र प्राप्ति के बाद प्रसन्न होकर कहते हैं, कि बहुत अच्छा हुआ कि मुझे पुत्र मिला । सभी आपस में खैंचा खैंच करते हैं । माया के कारण कोई शान्ति से नहीं रह पाता है ।

ऐसी विध अपनो कर लीनों, तब मन प्रभु को सरने दीन्हों ।
जोर जेरे सोई तन डाढ़े, अब मोहे पीउ बिन को काढे ।।६।।

इसी तरह माया ने मुझे भी अपने वश में कर लिया । तब मैंने अपना मन धणी के चरणों (शरण) में दे दिया । जो कोई भी माया से जोर लगाता है, माया उसका पतन कर डालती है । अब मुझे मेरे प्रीतम के बिना माया से कौन निकालेगा?

झूठी जिमी झूठो संसारा, झूठो माया को विस्तारा ।
तामें यो कलयुग वर्तमान, कैसे प्रभु तोहे करो बखान ।।७।।

यह धरती झूठी है, संसार भी झूठा है । यह सब झूठी माया का ही विस्तार है । उन सब पर वर्तमान में कलयुग व्याप्त है । हे धणी! आपसे अपनी दुःखद स्थिति का कैसे वर्णन करूं ?

पांच तत्त्व गुन तीनों भए, इन तीनों के उहां शबद न गए ।
तिन ते भए कुल आकार, ते तेरो कहा करे विचार ।।८।।

यह संसार पांच तत्त्व व तीन गुण से बना है । तीनो गुणों से पैदा शब्द आप तक नहीं पहुँच सकते हैं । यह शरीर पूर्ण रूप से *इन तीनों गुणों से बना है,*

तो ये आपका विचार किस प्रकार कर सकते हैं*?*

सतजुग त्रेता सत भयो, द्वापर पुनी नीके चल गयो ।
या कलजुग आयो अंध घोर, चलो ना कछु आतम को जोर ।।९।।

सतयुग व त्रेतायुग में सत्य का वातावरण रहा और द्वापर भी अच्छा ही रहा, लेकिन यह कलयुग आया है, जो घोर अज्ञानता व मोह से परिपूर्ण है । यहाँ आत्मा की शक्ति कुछ भी काम नहीं करती ।

जो बल तेरो पाउं राज, तो सुधरे मेरे सब काज ।
तेरी कृपा को लेश जो होए, तो मेरो का करिहै कोए ।।१०।।

हे मेरे श्री राज ! अगर मुझे आपका सहारा (शक्ति) मिले, तो मेरे सभी काम सुधर जाये । आपकी लेशमात्र भी कृपा हो, तो मेरा कोई क्या बिगाड़ सकता है ?

तेरी कृपा कलजुगे मारो, तेरी कृपा ब्रह्मांडै तारों ।
तेरी कृपा जूरे सब साथ, कृपा होए सब ऊपर साथ ।।११।।

आपकी कृपा ने ही कलियुग को मारा है । आपकी ही कृपा ने ही ब्रह्मांड को भी भव से पार कर दिया है । अगर आपकी कृपा सब सुंदरसाथ पर हो, तो सभी सुंदरसाथ इकठ्ठे होंगे ।

श्री देवचन्द्र जी ए दरशन भयो, तबहीं तिमर हिरदे को गयो ।
बोहोर धाम को कह्यो बखान, जो जैसों सब हतो उनमान ।।१२।।

जब आपका दर्शन श्री देवचन्द्र जी को हुआ, तो उनके हृदय की अज्ञानता मिट गई और उन्होंने परमधाम की शोभा का बहुत विस्तृत वर्णन किया।

बसरी खबर साथ की दई, जैसी इच्छा अक्षर को भई ।
बात कही घट रही कृपाल, देखन लगे धाम त्रैकाल ।।१३।।

बशरी स्वरूप मुहम्मद साहब ने परमधाम व सुंदरसाथ की सब खबर दी, कि किस प्रकार अक्षर ब्रह्म के दिल में सखियों के दर्शन की इच्छा हुयी । कुर्आन पाक में कृपा के सागर प्रियतम अक्षरातीत की कही हुई सभी बातें सत्य सिद्ध होने लगीं । परमधाम तथा भूत, वर्तमान व भविष्य की सारी बातें तारतम वाणी से पता चल गयी हैं ।

अरू पुनू बुध जो निरमल भई, खबर धाम की साथें दई ।
तिनों पास मेहेराज बुलाए, कहे राज चीन्ह बताए ।।१४।।

फिर सब सुंदरसाथ की बुद्धि निर्मल हो गई । धणी श्री देवचंद्र जी के धामगमन की घड़ी नजदीक है, ऐसी खबर सुंदरसाथ ने मिहिरराज जी को दी । देवचंद्रजी ने मिहिरराजजी को अपने पास बुलाया और उन्हें भविष्य में होने वाली बातें बतायी ।

कहे तुम इन्द्रावती आऊ, तू जगाए साथ को ल्याऊ ।
साकुण्डल अरू सकुमार, दोउ दीन किए सिरदार ।।१५।।

सतगुरु श्री निजानन्द स्वामी जी ने उनसे कहा कि, "इंद्रावती तुम आओ ! तुम सभी सुंदरसाथ को जगा कर लाओ । सकुण्डल और सकुमार, इन दोनों को धर्म का शिरोमणि बनाया गया है ।"

जब तुम को ए मिलहे होए, दोउ दीन एक करिहै सोए ।
हम तो अब पधारत धाम, तुम ले सिर हुकम कीजियो काम ।।१६।।

सतगुरु देवचंद्र जी ने इंद्रावती जी से कहा, कि जब ये दोनों जागृत होकर आपको मिलेंगे तो ये हिन्दू-मुस्लिम दोनों को एक कर देंगे । अब हम परमधाम (इंद्रावती के धाम हृदय में) पधारेंगे । अतः आप सुंदरसाथ को जगाने का हुक्म अपने सिर पर लो ।

इन अपनी बुध फैलाई, जहां लो मानुष पोहोंच में आई ।
मथि भव सिंध निरवारो, लरबल कछू दज्जाल दल मारो ।।१७।।

श्री इन्द्रावती सखी ने अपनी जाग्रत बुद्धि को, जहाँ तक मनुष्यों में पहुँचा सकीं, वहां तक पहुंचाया । भवसागर को मथ के सुंदरसाथ को निकाला, किंतु कुछ सुंदरसाथ को अज्ञान रूपी दज्जाल ने दबा रखा था ।

तब मैं करी बुध परवेश, माया उनें न लगी लेस ।
वे तो हो रहे अन्तरध्यान, अब हम कहां पावें वह ग्यान ।।१८।।

तब मैंने (राजजी ने) उन सुंदरसाथ के अंदर जागृत बुद्धि का प्रवेश करवाया । ताकि ये माया उन्हें लेशमात्र भी दुःखी न करे । अब धाम धणी (महामति जी) भी अंतर्ध्यान हो रहे हैं, अब हम (छत्रशालजी) वह ज्ञान कहां से प्राप्त करेंगे ?

जोर कृपा कर पिऊ ने दई, तो कैसे जग शोभा लई ।
यह तो बात अगम पग धरनो, श्री राज बुध बिन कैसे बरनों ।।१९।।

अक्षरातीत पिया जी ने श्री इन्द्रावती पर पूर्ण कृपा की और उनके तन को शोभा प्रदान की । श्री राज जी की बुद्धि के बिना शब्दातीत परमधाम का वर्णन कैसे हो सकता है ?

दोहा :- जो रे कृपा श्री देवचन्द्रजी पर, सो कीनी मेहेराज ।
सोई सकुण्डल पर करो, श्री जान आपनी राज ।।२०।।

हे धणी ! जिस प्रकार आपने श्री देवचन्द्र जी तथा श्री मिहिरराज जी पर कृपा की है, उसी प्रकार मुझ साकुण्डल को अपनी जान कृपा करें ।

धाम मोहोल जमुना सुवन, सुखहीं को सब साज ।
मन अटको सो केहेन को, क्यूं होए कृपा बिन राज ।।२१।।

परमधाम के रंगमहल, यमूना जी, सुंदर वन सब सुख के ही स्वरूप हैं, जिनका वर्णन करने के लिए मन में इच्छा हो रही है । किंतु धणी की कृपा के बिना यह कैसे संभव होगा ?

छंद : करी कृपा राज कृपानिधान, बरनों सुधाम बन शुभ स्थान ।
बरनों सुजोए सुख सात घाट, बरनों तलाव वन ठाट बाट ।।२२।।

कृपा निधान श्री राज जी ने कृपा की है, तो परमधाम के सुन्दर वनों का, सुंदर यमूना जी, सुखमयी सातों घाट तथा वनों से घिरे हौज कौसर तालाब का वर्णन करूंगा।

बरनों पहाड़ पुन पुखराज, मानिक पहाड समेत साज ।
पशु पक्षी बरनन कहीए जेते, कीजे ना देर सुमत है देत ।।२३।।

उसके पश्चामत् पुनः पुखराज पहाड़ व माणिक पहाड़ की सारी शोभा तथा परमधाम के सम्पूर्ण पशु-पक्षियों का वर्णन कीजिये, उसके लिए सुंदर जाग्रत बुद्धि प्रदान करने में देर न कीजिये।

दो हार महल बारा हजार, गृदवाए फिरते बोहोत विस्तार ।
जित राज सखी खेलत नित, पल नहीं वियोग आनंद चित्त ।।२४।।

रंगमहल में सर्वप्रथम मंदिरों की दो हारें आयी हैं, जिनमें ६-६ हजार, कुल १२००० मंदिर शोभायमान हैं । जहां श्री राज जी सखियों के साथ नित्य

प्रति लीला विहार करते हैं । वहां पलमात्र का भी वियोग नहीं है, सभी सदैव प्रसन्नचित्त रहते हैं ।

हीरा एक अद्वैत ठौर, इसमें इशक दूजा ना और ।
चहूं हार हवेली दरम्यान, मोमिन जुबांन आवे बखान ।।२५।।

परमधाम एक नूरमयी हीरे की स्वलीला अद्वैत भूमिका है । यहां इश्क के अतिरिक्त कुछ अन्य है ही नहीं । रंगमहल में दोनों हार मंदिरों के भीतरी तरफ हवेलियों की चार हारें हैं । जिसका वर्णन मात्र ब्रह्मात्माएं ही कर सकती हैं।

कहे सके नहीं कोई सुपन सृष्ट, जो दिव्य दृष्ट तम जाई मेट।।२६।।

स्वप्न की सृष्टि परमधाम का वर्णन नहीं कर सकती है । जो दिव्य दृष्टि आप देते हैं, उस तारतम ज्ञान से सम्पूर्ण अज्ञानता नष्ट हो जाती है ।

मिलावा मूल पंचमे ठौर, इन कहन करन आगे न और ।
दिवाल थम्भ मेहेराब द्वार, चोताराए अगिनत सुमार ।।२७।।

चार चौरस हवेलियों के आगे पाँचवी गोल हवेली मूल मिलावा शोभायमान है, जिसकी शोभा अकथनीय है । यहां के स्तम्भ, दिवालें, महरावें, दरवाजे व चबूतरे बेशुमार शोभा लिये हुए हैं ।

प्रकाश भूम झलके सू नूर, चहूं दिस उठे क्यूं कहूं जहूर ।
भोम प्रथम कहिए गृदवाए वन, पन्ना लाल हीरा रतन ।।२८।।

नूरमयी धरती का नूरमयी प्रकाश चारों ओर झलकार कर रहा है, उसकी शोभा किस प्रकार कहूं ? सर्वप्रथम रंगमहल के प्रथम भोम की शोभा कहूंगी, जिसके चारों ओर वनों की शोभा है । प्रथम भोम में चारों ओर पन्ना, माणिक, हीरा आदि रत्न जड़े हुए हैं ।

लागी किरन शीतल सुहाए, रमे राज सखी सुख कह्यो न जाए ।
हादी ए हक नित नए बिलास, प्रफुल्लत बदन अंग अंग उलास ।।२९।।

इनकी किरणें शीतल, सुंदर व सुखदायी हैं । श्री राज श्यामा जी व सखियाँ अंग अंग में उल्लास भरकर नित्य प्रति नये-नये हांस-विलास करते हैं, उस आनंद का वर्णन करना सम्भव नहीं है । सभी के अंग अंग प्रफुल्लित व उल्लास से परिपूर्ण होते हैं ।

हर महल मध्य कई कई बिलास, रूहे रमें राज सो नित प्रकाश ।
इनको लवा अनगिनत सुख, क्यूं कह्यो जाए इन सुपन मुख ।।३०।।

श्री राज जी के साथ सखियां नित्य प्रति प्रत्येक महलों के अंदर कई-कई प्रकार से हांस-विलास करते हैं । उन अनंत सुखों का लेशमात्र वर्णन भी इस स्वप्न तन के मुख से सम्भव नहीं है ।

लागी सीढी जे चहूं ओर, बढती आवाज अति उठत जोर ।
जब भोम दूसरी चढिए आए, विध विध बिलास मुख कह्यो न जाए ।।३१।।

रंगमहल की चारों तरफ कई सीढ़ियां शोभायमान हैं । सीढ़ियों से जब सखियाँ प्रथम भोम से दूसरी भोम में चढ़ती हैं, तो उस समय आभूषणों की मधुर ध्वनि गूंजायमान होती है, जिसके सुख इस झूठी जिह्वा से नहीं कहे जा सकते ।

गृदवाए मोहोल बारा हजार, लागे सुदेश सामे है द्वार ।
और थम्भन की दोए हार, त्रे गली भली लागी सुढार ।।३२।।

दूजी भोम में भी चारों तरफ घेरकर ६-६ हजार मंदिरों की दो हारें आयी हैं, जिनमें कुल १२००० मंदिर शोभा ले रहे हैं । उन दोनों हार मंदिरों के दरवाजे, महराबें आमने सामने शोभायमान हैं । मंदिरों की दोनों हारों के मध्य स्तम्भों की दो हारें व तीन गलियां शोभायमान हैं ।

एक भोम त्यूं कहिए सो दोए, बिना मोमिन और जाने ना कोए ।
चारों तरफ आप अपनी भांत, बैठक कठेडे सुई पाती पात ।।३३।।

रंगमहल की पहली भोम की शोभा के समान ही बाकी भोमों की शोभा आयी है । जिसे ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त कोई नहीं जानता । दूजी भोम से आठवीं भोम तक *चारों तरफ ३३ हाथ के छज्जे कठेड़े की शोभा से युक्त कुछ अलग ही प्रकार से आये हैं ।*

हद पचास हांस शोभा अमान, हजार डेढ़ द्वारी बखान ।
सब गोख बनी वन थम्भ चार, बैठक बिछौने छब अपार ।।३४।।

रंगमहल की एक दिशा में ५० हांस (पहल) में १५०० मंदिर, अपार शोभा से युक्त हैं, जिनकी बाहरी दीवारों में १५०० झरोखे छोटे द्वारों से युक्त शोभायमान हैं । जिन पर चार छोटे स्तम्भों पर छत बनी है, झरोखे में बैठने के लिये सुंदर बिछौने बिछे हैं । यहां से सामने वनों की सुंदर शोभा दिखायी देती है

ता पर सिंघासन धरो आए, गादी सुफेद तकिया बनाए ।
बैठे सुमधि तेहे जुगल सरूप, मूरत किशोर शोभा अनूप ।।३५।।

उस झरोखे में बिछौने के ऊपर सिंहासन आया है, जिसमें सुन्दर श्वेत गद्दी, तकिया सुशोभित हो रहे हैं । उस पर मध्य में अनुपम शोभा से युक्त किशोर वय युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी विराजे हैं ।

सो रौंस चढ़ गोखरे आए, प्रनाम करे सब सिर नवाए ।
कछु नहीं विरोध चकोर बाज, नाचे पशु बिहंसाए राज ।।३६।।

जब मंदिर से सीढ़ियां चढ़कर छज्जे (झरोखे) में आते हैं, तब वनों में विराजमान चकोर, बाज इत्यादि पक्षी धाम धणी को सिर झुका कर प्रणाम करते हैं, उनमें (चकोर व बाज में) आपस में किसी प्रकार का द्वेष भाव नहीं होता है । वे पशु-पक्षी अनेक प्रकार से नृत्य करके, खेल तमाशे करके धाम धणी को हंसाते हैं ।

बंचर मलादे लेत जब, देख साथ सब हंसत तब ।
छंदः - दे सुबुधी निज बुधी मोहि, आठों पोहोर हों जपहूं तोहि ।।३७।।

वनचर (वन में विचरण करने वाले) पशु जब गुलाटियां लेते हैं, तब सब सखियाँ देखकर हँसती हैं । हे धणी, अपनी महान निज बुद्धि मुझे प्रदान कीजिये, जिससे मैं आठों प्रहर आपको याद करता रहूँ ।

तू अंग भई अरधांग बाम, बारा सहस्त्र निज केल काम ।
नव भोम कही दसमी आकाश, ता मध्य करते हैं नित बिलास ।।३८।।

१२०० ब्रह्मसृष्टियाँ, जो आपकी अर्धांगिनी (वाम अंग) हैं, वे निजलीला के स्वरूप हैं, जो नौ भोम दसवीं आकाशी में नित्य प्रति हांस-विलास करती हैं ।

तीन बन बने शोभा अमान, सुख साल का की करे ग्यान ।
पशु नाम है - हाथी गैंड भैंसा अरन, बच सिंघ रीछ हुड़ा हरन ।।३९।।

लाल चबूतरे के आगे (उत्तर दिशा में) अपरंपार शोभा एवं सुख से भरे तीन वन - बड़े वन, मधुवन व महावन शोभायमान हैं । जिनमें अनेकों पशु पक्षी-हाथी, गैंडा, भैंसा, अरन, बच, सिंह, रींछ, हुडा, हिरण आदि निवास करते हैं ।

चितराई जाख सामर पराह, कस्तूरी मृग पाढ़ा वराह ।
गुर खसु रहे गाए सुदेश, वर बकरियां छब अधिक लेत ।।४०।।

चित्राई, जांख, शामर, पराह, कस्तूरी मृग, पहाड़ा, बर्रा, गुर्खसु, गाय, बकरियाँ आदि शोभा ले रहे हैं ।

मेढा इरा मेछेरा कुलंग, रंगई द्रुम तिन में हुलंग ।
तिंद्रुआए चीता अरू सिंघ बाघ, केसरी सहक में बोहोत आग ।।४१।।

मेंढक, हीरा, मद्येरा, पुन्नद, रगाई, द्रुम, कुल्लंग, तेंदुआ, चीता, सिंह, बाघ व केसरी सिंह, जिसमें बहुत शक्ति है ।

सागोस साएर गीदर सलेम, चुहें गिलेम के अध कोम ।
बरनो न जाए लधु जीव अंग, गिरदान एक में अधी रंग ।।४२।।

सागोश, सायर, गीदड, सलेम, चूहे, गिलहरी की अनेकों जातियां हैं । मुझ से इन छोटे जीवों के अंगों का वर्णन नहीं हो सकता, जिनके एक गर्दन में कई रंग विद्यमान हैं ।

रिंगी चले रीछ के सम सुदेश, सेई गिर रीमी और भैंस ।
रहे चरख भैंग सालोर गोह, बंच रहे नाच बहू मनह मोर ।।४३।।

रिंगी भी रीछ के समान तेजी से चलता है । गिरमी, भैंस, चरक, भैंग, सैलूर, गौह, मोर आदि चलते हुए अनेक प्रकार की कलाएँ करते हैं ।

मुंह स्याह पूंछ लेबे लंगूर, चढ रहे द्रुमन फल भखे फूल ।
फिरे स्वान संग ए आस पास, नोरा बिल्ली घर में बिलास ।।४४।।

काले मुंह व लम्बी पूंछ वाले लंगूर फल-फूल खा रहे हैं । नेवला, बिल्ली व कुत्ते परमधाम में फिरते हुए सर्वत्र विहार करते हैं ।

गरूण गरू रूब परन आए, मन करे राज संग जाए ।
पक्षी नाम बाज और बरही बनाउ, पर कुहीत्र मोतै बोहोत चाउ ।।४५।।

गरूड, गरू, रूब इत्यादि पक्षी मन की इच्छानुसार श्री राजजी के साथ साथ चलते हैं । बाज, बरही, बनाउ, कुहित्र, मातई इत्यादि पक्षी बहुत उमंग से विभिन्न लीलाएँ करते हैं ।

चढि जाए गीध और चील काग, ता मध और खरगोश बाज ।
लठार लीगर रिंगीस चान, बांसोए बेसरा भर दिवान ।।४६।।

गिद्ध, चील, काग के बीच में खरगोश, बाज, लठार, लीगर, रींगिस, चान, बांसुर, बेसरा इत्यादि अद्भुत लीला करते हैं ।

मनयार किरखि रोती पाई, धुतर सियांसर जांन तांई ।
तलाऊ मधि रेहे हंस रेन, मुक्ताए चुंगें जे बांध नेम ।।४७।।

मनयार, किरखी, रोती, धूतर, सियासर इत्यादि लीला करते हैं और तालाब के मध्य हंस नियमित मोती चुगते हैं ।

चानोटी पीठ गच गवावंत, हुकार बंगार सब एक संग ।
स्याह ठेक नीले सुपेत, कुरकुरू कुली कुलूनि बोहोत हेत ।।४८।।

चानोटी, हाथी की पीठ पर बैठकर हुंकार करके एक साथ बोलते हैं । काले नीले व सफेद कुरकुरू व कुलूंनी बहुत प्यार से छलांगे मारते हैं ।

मुरगाई सौन चुरकाई झुण्ड, गिरराई करबूले लाल मुंड ।
हब्यो सीये राई नीले के कोम, चकही चकहां बिव मनोर्हेम ।।४९।।

मुर्गाई, सोन, चुर्काई के झुण्ड, गिरराई, लाल मुंह वाले करबुले, नीले रंग के चिरई, चकई, चकवा मनोरम खेल खेलते हैं ।

लमगुनु और मटरग ऐ आई, पन्नि लवा चिरे पुनु टिराई आई ।
सिंह मुरग जरी तीतर चकोर, द्रुम दंत बैठी कर मोर सोर ।।५०।।

लंगुन, मटरई, पनीलाओं, सिरपुनु, टिराई, सिंह, मुरग, जरी, तीतर, चकोर वृक्षों पर बैठकर मोर इत्यादि बहुत शोर करते हैं ।

लवा बटेराहू की अदाव, सुरसां करै चुर बोहोत आव ।
महरै अवल खांगला गीलाई, गैंगातिलीका किली किलापी ।।५१।।

लवा, बटेराहु, सुरसा, चूर, महरई, अवल, खांगला, गिलाई, गेंगा, तिलिका, किली किलापी कई तरह की लीला करते हैं ।

धनि चिरई और कठफोर जोर, टिटही छब कर भोर सोर ।
कुरचे चरज किरवान काई, जल जुडुराज बानी रटाई ।।५२।।

धन चिरई, कठफोर, टिटही, कुरचे, चरण किरवान, जुडुराज, बहुत शोर करते हुए धनी के गुणगान करते हैं ।

चेपुनू उलख फिरि रेन हेत, तुकरदा रूपु वोहो सेंत ।
वस्ता कबूतर चितो खाई, कनि कई पांडकीया कृष्न आई ।।५३।।

चेपुनू, उलख रात्रि में सैर करते हैं और तुकरदा व सफेद रूपु, वस्ता, कबूतर, चितोखाई, कनि कई काले पांड़कीया इत्यादि आए हैं ।

मुनई रई करबुले छिर कपोत, बोले बिहगूम भउदै होत ।
लागे सुदेस पपीहा बोल, पीलक मउ रंगिनी अमोल ।।५४।।

मुनई, रई, करबुले, छिर, कबूतर, सुदेश, पपीहा, पीलक, उरंगिनी कई प्रकार की आवाजें करते हैं ।

पंग अखिचोंच चंमडरे लाल, खुमरी हरे बारंग रसाल ।
हारिलि न देवे धरनी पाई, दिन रैनि रहे द्रुम फलन खाई ।।५५।।

पंग, अखिचोंच, लाल चमगादड, खुमरी, हरे बारंग, रसाल, हारिली आदि पक्षी दिन-रात वृक्षों पर रहते हुए फल खाते हैं । धरती पर पैर रखते ही नहीं हैं ।

इक सेत स्याह चेपोलालाल, धर करवयां बहुवन रसाल ।
भरया अंगन अरू बोसताई, पट सुआ चिरइयां घर की आई ।।५६।।

सफेद स्वाह, चेपोलालाल, धर करवयां, भरया, बोसताई इत्यादि चिड़ियाँ वनों में बहुत रसीली आवाजें करती हैं ।

दहियर पवेपर झुंराई, झुंडन बिगेरी छिमराई ।
सोनइनउ खंजन चंडूल, कुटिया सारद और बरई कूल ।।५७।।

दहियर, पवेपर, झुराई, झुंडन, बिगेरी, छिमराई, सोनइनउ, खंजन, चंडूल, कुटिया, सारद और बरई कुल के झुंड शोभा लेते हैं ।

लाल द्रुम बुलबुल अमोल, तूती सुरंग बोले सुबोल ।
रंगपिए पोहोप को भवरलाई, बोहो पोहोपन गुंजीत झुण्ड जाई ।।५८।।

बुलबुल, अमोल, तूती, सुरंग, रंगपिये, पोहोप, भंवरलाई, बोहो, गुंजीत के झुंड के झुंड शोभा लेते हैं ।

धुबियान रहे मोहोलान पास, सुन स्याह रंग बानी सुबास ।
बैठे सिंघासन शिर छत्र चँवर, बाजे बाजत कई ठौर ठौर ।।५९।।

काले रंग के धुबियान रंग महल के पास रहकर सुंदर वाणी बोलते हैं और यहां छत्र से युक्त सिंहासन पर श्री राज श्यामा जी विराजते हैं । कई चंवर डोलाते हैं । इस समय कई प्रकार के बाजे जगह-जगह बजते हैं ।

पशु पक्षी जुरी एक ठौर आई, परनाम करी सो सिर नमवाई ।
थल में जेतेक जल में तितेक, बरनों कहा मत है कितेक ।।६०।।

संपूर्ण परमधाम के पशु-पक्षी, जल और थल (जमीन) के सभी जानवर इकठ्ठे होकर लाल चबूतरे के सामने बड़ोवन में आते हैं तथा श्री राजजी के चरणों में सिर झुकाते हैं । उस शोभा का इस मंद बुद्धि से हम कितना वर्णन करें?

दोहा : रंग नीले सिर लाल दृग, जोरा सह तरहाई ।
जब ही राज आवे तले, तब सारस केहेलाई ।।६१।।

नीले रंग के लाल सिर वाले दृंग जोड़े (नर–मादा) के साथ आते हैं । जब श्री राज जी लाल चबूतरे से नीचे जमीन पर आते हैं, तो उस समय सारस धणी के गुणगान करता है ।

सारस के आरस नहीं, जगत अपने काज ।
बद के तन सदीके करें, जब फिर आवे राज ।।६२।।

सारस में जरा भी आलस्य नहीं होता है। जब श्री राज जी पुनः आते हैं, तब सारस पक्षी सभी अदाओं से तन बदन से सिज्दा बजाते हैं ।

बोले डोले भाव सों, एली बेली कोर रे ।
न रहत महलन में, सुताल जात चल भोर ।।६३।।

ये प्रातः काल बड़े प्रफुल्लित भाव से बोलते हुए, नाचते-डोलते हुए महलों से निकलकर ताल पर आते हैं ।

दोहाः - ताल नेहेरे सघन बन, महलन अटक रह्यो ।
रूप जुदे पुखराज को, सुका परजात कह्यो ।।६४।।

हौज कौसर तालाब, नहरें, महल व घने वनों की शोभा में मेरा चित्त अटका हुआ है । पुखराज पहाड़ की शोभा तो अलग ही है, जिसे वर्णित नहीं किया जा सकता ।

कह्यो कापे रूप बन्यों पुखराज, सब साथ सों जाई विराजत राज।
भई हांस हजार की गेरतरी, छबि काकी जुबांन सों जात धरी ।।६५।।

पुखराज पहाड़ की शोभा अकथनीय है । चारों ओर हजार हांस (पहल) अपार शोभा से युक्त हैं । जहाँ श्री राजश्यामा जी, सखियों के साथ विराजते हैं, उस शोभा का वर्णन किस जिह्वा से करूं?

जिमी सेंत परे जो फूलल से, तकते मन हो मन मेरो बसे ।
बन्यों जो फूल धतूरे की भांत, लगे चौखंभ तो चारहूं पास ।।६६।।

सफेद जिमी पर मोती के समान अनेकों प्रकार के फूल शोभा ले रहे हैं, जिन्हें देखकर मन वहीं रूक जाता है । चारों ओर स्तम्भों से युक्त पुखराज पहाड़ की शोभा धतूरे के फूल जैसी आई है ।

लगी जिहीं आई सीढ़ी दोहूं ओर, बनी मोहलातीतें कई कई कोर।
चढयो चढ़तो चढ़तो विस्तार, लग्यो भीयां आई तरे ते पहार ।।६७।।

पुखराज पहाड़ के उत्तर व पश्चिम में दो सीढ़ियाँ (घाटी) आई हैं । वहां अनेक प्रकार के महल बने हुए हैं। पुखराज पहाड़ में नीचे से ऊपर की तरफ महलों की चौड़ाई बढ़ते गई है । जो पहाड़ के रूप में शोभा ले रही है ।

बन्यो तिहे मधि तलाव अनूप, सब साथ सो जाए रमे तहां भूप ।
बनी तिहि और घनी मोहोलात, चलि नेहेरें तिहिं भधि हो जात ।।६८।।

पुखराज पहाड़ के पूर्व में बंगले के ऊपर जवेरों के महलों बीच में पुखराजी ताल शोभा ले रहा है, जिसके पूर्व में दहलानों के बीच नहरें आयी हैं । यहाँ आकर प्रियतम अक्षरातीत ब्रह्मप्रियाओं के साथ लीला विहार करते हैं ।

बनी गुरजे दोउ ओर दिये, तिहि मधि हो चारउ धार खिपे ।
भई जहां चादरें सोरह ठौर, गिरे मधि कुण्ड पर जल झोर ।।६९।।

दो गुर्जों के बीच देहेलान से ४-४ नहरें चलती हैं, जिनसे कुल १६ धाराओं के रूप में जल अधबीच के कुंड में मधुर गर्जना के साथ गिरते हुए शोभायमान हो रहा है । (सात दहलानों में से एक के बाद एक क्रमशः चार दहलानों में चार नहरें चलती हैं)

सुगेरी बनी मोहोलातें तहां, रमे रूहें करे बिसराम जहां ।
एकधार गई हो पहार तले, कई बंगला बागन होए फिरे ।।७०।।

ताल के चारों ओर जवेरों के महलों में श्री राज जी सखियों के साथ लीला विहार तथा विश्राम करते हैं । पुखराजी पहाड़ के नीचे एक बड़ी नहर हो गयी है । कई नहरें बंगलों के बगीचे में होकर चल रही हैं ।

नल छूटत ठौरन ठौर नयो, बुधि पंग भई गुरू गुंग की ज्यों ।
कही न जाए इन सुख की बात, सो मोमन दिल है साख्यात ।।७१।।

बंगले के चबूतरे के ऊपर फीलपाइयों के अन्दर बने हुए जानवरों के मुख से जल तीर के समान छूटता है । जैसे गुरू के बिना मनुष्य बुद्धि व जुबान से असहाय व गूंगा हो जाता है, उसी तरह परमधाम के सुखों की बात यहाँ नहीं की जा सकती । ये सुख तो ब्रह्मप्रियाओं के दिलों में साक्षात् बसा होता है ।

दोहा : बिसराम रूहें करें, रमत राज के संग ।
श्री ठकुरानी अंग राज को, सबे राधिका संग ।।७२।।

यहां सखियां श्री राज जी के साथ अनेक प्रकार से लीला विहार करते हुए आनंद लेती हैं । श्री श्यामा जी, श्री राज जी की हृदय स्वरूपा हैं व सभी सखियां श्री श्यामा जी के अंग हैं ।

प्रकरण-४२ चौपाई-२१४५ ।। छन्द सम्पूर्ण ।।

दस हाँस की विधि

रंगभवन की उत्तर दिशा में लाल चबूतरे के पूर्व के दस हाँसों में कैसी शोभा है, उसका इस प्रकरण में वर्णन किया गया है । इन दस हांसों (पहलों) के समक्ष ताड़वन है, खड़ोकली भी इसी के अंतर्गत है, जो तीन भोम गहरी है ।

चालीस हांसो कह्या, लाल चबूतरा नूर ।
बाकी हांस दस रहे, ताके कहूं जहूर ।।१।।

रंगभवन की उत्तर दिशा में वायव्य कोण के १६ हांस (पहल) के चेहेबच्चे से पूर्व की तरफ के ४० हाँस के सामने धाम चबूतरे से लगता हुआ नूरमयी लाल चबूतरा शोभायमान है । इसकी पूर्व दिशा में ईशान कोने तक जो १० हांस बचते हैं, उनके सामने की शोभा का वर्णन करूंगा।

दोए हांस भर साठ मंदिर, लाल चबूतरे चेहेबच्चे दरम्यान ।
तहां आए ताड़ वन लगा, मंदिर भर जे ए जान ।।२।।

लाल चबूतरा और खड़ोकली के बीच दो हाँस (६० मंदिर) आये हैं (एक हाँस में ३० मंदिर होते हैं) । वहाँ पर रंगमहल के चबूतरे से एक मंदिर की दूरी पर ताड़वन शोभा ले रहा है ।

ए जो लगता दिवाल को, मंदिर भर मरजाद ।
लाल चबूतरे से चलिए, द्वार धाम पोहोंच करो याद ।।३।।

रंगमहल की दीवार से लगकर जो १ मंदिर का चौड़ा रास्ता (रौंस) आया है, उस पर होते हुए लाल चबूतरे से चलकर धाम दरवाजे तक पहुंच जाईये । इस शोभा को याद कीजिये ।

इत दोए हांस के दरम्यान, पड़ी गुरज एक ।
एक लगा चेहेबच्चे, दूसरी भोम को नेक ।।४।।

यहाँ पर २ हाँसों के बीच एक गुर्ज आया है । दूसरा गुर्ज चेहेबच्चे से लगकर आया है, चेहेबच्चा दूसरी भोम में खुला है ।

एक लाल चबूतरे किनार पर, ए तीनों कही जान ।
इन के एक सौ बीस मेहेराब, छज्जे साठों पेहेचान ।।५।।

एक गुर्ज लाल चबूतरे की पूर्वी किनार पर है । इस प्रकार ये तीन गुर्ज कहे गये हैं, जिनके मध्य साठ मंदिरों में साठ छज्जे (झरोखे) व १२० महराबें (दरवाजे) शोभायमान हैं ।

यूं ऊपरा ऊपर लों, नव भोम लों होए ।
मेहेराब तले की भोम लों, और छज्जे कहे सोए ।।६।।

इस प्रकार की महराबों (दरवाजों) और छज्जों (झरोखों) की शोभा प्रथम भोम से लेकर नौवीं भोम तक आयी है ।

एक हांस भर चेहेबच्चा, दूसरी भोम लों जान ।
तीस तीस की हार चारों तरफ, एक सौ सोले पेहेचान ।।७।।

एक हाँस (३० मंदिर) का लंबा-चौड़ा चेहेबच्चा (खड़ोकली) ताड़वन की जमीन से रंग महल की दूसरी भोम तक आया है, जिसके चारों तरफ ३०-३० मंदिर (की जगह) है । चारों ओर के मिलाकर कुल ११६ मंदिर होते हैं ।

चार कम चार कोने के, फेर फेर गिनती में आवत ।
तीनों तरफों में जे चली, मंदिर लों चौड़ाई जित ।।८।।

चारों कोनों के चार मंदिर दो तरफ गिनती में आते हैं । इस कारण १२० में चार मंदिर कम हो जाते हैं । खड़ोकली के तीन (उत्तर, पूर्व, पश्चिम) तरफ एक मंदिर की चौड़ाई में ३०-३० मंदिर आये हैं ।

ताके छज्जे पड़े तीस तीस, सो तीनों तरफों भए ए ।
ताके तीस तीया नब्बे, ए भए गिनने के ॥९॥

इन मंदिरों में की बाहरी दीवारों में तीनों दिशाओं में ३०-३० (झरोखे) आये हैं । तीनों तरफों के मिलाकर कुल ३०x ३=९० झरोखे होते हैं ।

इत मेहेराब भए साठ साठ, साठ तिया एक सौ अस्सी नूर ।
ए तो जो ऊपर कहे, सब झलकत नूर जहूर ॥१०॥

एक दिशा में ३० मंदिरों के ६०-६० महराब (दरवाजे) होते हैं । तब तीनों तरफों के कुल मिलाकर ६०x ३=१८० दरवाजे हुए । इनकी रंगबिरंगी नूरी किरणें चारों तरफ झलकार कर रही हैं ।

इन चेहेबच्चे की तीन तरफ, एक भोम लों मंदिर ।
तहां गिनती नब्बे भए, आओ मोमिन ता के अन्दर ॥११॥

इस चेहेबच्चे के तीन तरफ एक भोम (रंगमहल की प्रथम भोम) तक मंदिर आये हैं । तीनों तरफ के मिलाकर कुल ९० मंदिर (८८ मंदिर-कोने के दो कम) होते हैं । (चौथे तरफ एक मंदिर की मोटी दीवाल आयी है) सुंदरसाथ जी, उन मंदिरों के अंदर प्रवेश कीजिये ।

इन चेहेबच्चे के ऊपर, एक मंदिर चौड़ाई गृदवाए ।
पड़े अठ्ठाइस द्वार ने, दोए द्वार दांए बांए शोभाए ॥१२॥

ऊपर दूजी भोम में चेहेबच्चे के चारों तरफ (नीचे के मंदिरों के ऊपर) एक मंदिर का चौड़ा रास्ता है । चेहेबच्चे के सामने दक्षिण दिशा में रंगमहल की बाहरी हार २८ मंदिरों के दरवाजे शोभायमान हैं । दो दरवाजे इनके दायें-बायें के मंदिरों के हैं (जो कि गुर्जो से लगे हैं) ।

सो दोनों गुरजों को लगते, तीनों तरफों कठेड़ा नूर ।
धाम दिसा कठेड़ा नहीं, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥१३॥

दायें-बायें के दोनों मंदिर गुर्जों से लगे हैं । खड़ोकली के तीनों तरफ रास्ते (रौंस) की किनार पर नूरमयी रत्नजड़ित कठेड़े शोभायमान हैं । रंगमहल

की तरफ कठेड़ा नहीं है । इस प्रकार खड़ोकली की शोभा किस प्रकार कहूं ?

तले से उपर लों, तीनों तरफ आया वन ।
सो तो नूर जवेर ज्यूं, झलकत हैं रोशन ॥१४॥

खड़ोकली के चबूतरे की तीन दिशाओं (उत्तर, पूर्व, पश्चिम) में भोम भर नीचे जमीन पर ताड़वन की शोभा है, जिसके वृक्षों की डालियां तीन तरफ से खड़ोकली के जल चबूतरे तक छाया कर रही हैं । ये वृक्ष नूरमयी रत्नों के समान चारों तरफ झलकार कर रहे हैं ।

बाकी सात हांस रही, तरफ नींबू की जान ।
एक मंदिर लों जे चली, ताकि करो पेहेचान ॥१५॥

खड़ोकली के पूर्व दिशा में, नींबू घाट की ओर, रंगमहल के ईशान कोण के गुर्ज तक, रंगमहल के ७ हाँस बाकी रहते हैं । धाम चबूतरे से लगकर एक मंदिर चौड़ा रास्ता पश्चिम से पूर्व तरफ गया है । इसकी पहचान कीजिये ।

हर मंदिर के दोए द्वार, पड़ा छज्जा एक ।
सो उपर के जे शोभित, इत शोभा सुख अनेक ॥१६॥

इन सात हांसो के प्रत्येक मंदिर की बाहरी दीवार में दो-दो दरवाजे एवं एक-एक झरोखे शोभायमान हैं । इनके ऊपर की भोमों में भी इसी प्रकार दरवाजे व झरोखे शोभायमान हैं, जिनकी सुंदरता को निहारने से अपार सुख मिलता है ।

एक हांस भर देखिए, तीस छज्जे साठ द्वार ।
ऐसे सात हांस बने, ताको कर देखो सुमार ॥१७॥

यहां प्रत्येक हांस (३० मंदिर) में तीस झरोखे एवं ६० दरवाजे शोभायमान हैं । इसी प्रकार सातों हांसों की शोभा है । उसका विवरण देखिये ।

साठ द्वार तो तले की भोम, नव भोम लों छज्जे जान ।
आठ गुरज इत आए, एक खड़ोकली को पेहेचान ॥१८॥

साठ द्वार तो एक ही भोम के (एक हांस के) होते हैं, ऐसे दरवाजे और झरोखे नौ भोम तक शोभायमान हैं । इन सातों हांसों (पहलों) की संधि में आठ गुर्ज आये हैं, जिसमें से एक गुर्ज खड़ोकली से लगकर (पूर्व) में है ।

ए लगा आए कोने को, सो चेहेबच्चा सोले हांस का होए ।
इनकी हकीकत आगे, कहूंगा सब सोए ।।१९।।

तथा एक गुर्ज रंगमहल के ईशान कोण में स्थित है, जो सोलह हांस के चेहेबच्चे से लगकर शोभायमान है । इसका वर्णन बाद में करूंगा।

महामत कहे ऐ मोमिनों, तुम हो आशक हक ।
मेहेर अरश से उतरी, तापर जिन ल्याओ शक ।।२०।।

श्री महामति जी कहते हैं कि, हे सुंदरसाथ जी ! आप प्रियतम, परब्रह्म के आशिक (प्रेमी) हो तथा आप के ऊपर परमधाम से धणी की कृपा अवतरित हुयी है । इस कथन में जरा भी संशय ना करो ।

प्रकरण-४३, चौ.२१६५

ताड़ वन को प्रकरण

इस प्रकरण में रंगमहल के उत्तर में ईशान कोने से लाल चबूतरे तक के दस हाँसों के समक्ष आये ताड़ वन की शोभा व लीला का वर्णन है । बड़े-बड़े वृक्षों की डालियों में हिंडोले, बगीचों के चारों ओर फव्वारे, नहरें अति रमणीय हैं।

अब कहूं ताड़ वन की तुमें, तुम देखो मिल मोमिन ।
दस हांस लों हद है, तुम करो दिल रोशन ।।१।।

अब, आपके समक्ष ताड़ वन की शोभा का वर्णन करते हैं । आप सब ध्यान पूर्वक समझिये । यह ताड़ वन रंगमहल की उत्तर दिशा में (लाल चबूतरा की पूर्व दिशा) में बाहरी हार मंदिरों की दस हांस के सामने आया है । आप अपने हृदय में इसकी शोभा को बसाईये ।

लम्बाई इन घाट की, सोले हांस बीस मंदिर ।
चौड़ाई दस हांस लों, आओ मोमिन ताके अन्दर ।।२।।

ताड़वन की लम्बाई १६ हाँस २० मंदिर की तथा चौड़ाई १० हाँस की है । सुंदरसाथ जी, आप इसके अंदर प्रवेश करके इसकी शोभा देखिये ।

इनके मुकाबिले, आए लगा नींबू घाट ।
ताड़वन में चौक पड़े, बन्यो अति सुन्दर ठाट ।।३।।

ताड़वन के पूर्व में (लगभग उसी चौड़ाई - ५०० मंदिर में) नींबू का घाट (वन) शोभा ले रहा है । ताड़वन के अंदर बहुत सुंदर चौक (बगीचे) बने हुए हैं ।

हांस भर चौड़ा चौखुटे, बन्यो चौक विस्तार ।
जिन चौकन में जाली बनी, देखन का सुखकार ।।४।।

यहां के प्रत्येक चौक (बगीचे) १ हाँस के लंबे-चौड़े समचौरस हैं । इन चौकों में ताड़वन के वृक्षों की डालियों, फुलों व पत्तों से सुंदर जालियाँ (महराब व छत) बनी हैं, जो देखने में अति मनोहारी हैं ।

एक दूसरे पेड़ के, जाली शोभित दरम्यान ।
हर मंदिर के दरखत, तहां द्वार मेहेराबी जान ।।५।।

प्रत्येक दो वृक्षों के मध्य में इसी प्रकार जालियां शोभायमान हैं । मंदिर-मंदिर की दूरी पर आये वृक्षों की डालियां आपस में मिलकर महराबी द्वार की शोभा बना देती हैं ।

द्वार बने जाली के, सुमार तीस दरखत ।
ताके चौकोने बने, चौक एक सौ बीस लों इत ।।६।।

एक बगीचे में ३१ वृक्षों की ३१ हारें (१-१ मंदिर की दूरी पर) हैं । एक पंक्ति में आये प्रत्येक ३१ वृक्षों के मध्य ३० जालीदार महराबें (द्वार) शोभायमान हैं । एक बगीचा ३० मंदिर का लम्बा-चौड़ा है, जिससे एक बगीचे के चारों तरफ किनार पर कुल १२० वृक्ष होते हैं ।

एक सौ बीस मेहेराब पड़े, वने एक सौ सत्तर ।
चौकन की गिनती कही, खड़ोकली एक चौक भर ।।७।।

इस प्रकार एक बगीचे की किनार पर चारों तरफ वृक्षों की डालियों के कुल १२० महराब बने हैं । ताड़वन में इस प्रकार कुल १७० बगीचे हैं, जिनमें से एक बगीचे की जगह में खड़ोकली विद्यमान है ।

दोए चौक दोए हांस के, लाल चबूतरे खड़ोकली दरम्यान ।
सात चौक सात हांस के, सो कोने दरम्यान जान ।।८।।

दो बगीचे लाल चबूतरे और खड़ोकली के बीच में दो हांस में हैं तथा ७ बगीचे खड़ोकली के पूर्व में ईशान कोण तक हैं ।

या दस चौक दस हांस के, यूं दस दस की सत्रह हार ।
यूं करते एक सौ सत्तर, याको कह्या सुमार ।।९।।

इस प्रकार दस हांस (पहल) में दस बगीचों (चौकों) की १७ पंक्तियां शोभायमान हैं । ये सब मिलाकर कुल १७० चौक होते हैं ।

ठढ़ी गिनिए पुखराज से, सत्रह सत्रह की दस हार ।
इन दरम्यान दरखत, बेहेरन के सुखकार ।।१०।।

पुखराज पहाड़ से रंगमहल की ओर खड़ी गिनती करने से १७-१७ चौकों (बगीचों) की १० हारें होती हैं । इन बगीचों में वृक्षों के मध्य विहार करने पर अत्यंत आनंद का अनुभव है ।

बट पीपल सर उमर, और नारियर के दरखत ।
तिन दरखतों में हिंडोले, ताकी भोम मुकाबिल इत ।।११।।

इन बगीचों में मध्य में बट, पीपल, सर, ऊमर और नारियल के वृक्ष आए हैं । इन वृक्षों की डालियों की महराबों में हिण्डोले शोभायमान हैं । इन वृक्षों की भोमें रंगमहल के भोमों के समान आयी हैं (प्रत्येक बगीचे के किनार पर आये वृक्षों की एक हार की रंगमहल के १० भोम के बराबर १ भोम आयी है ।)

दरखत चांदनी मुकाबिल, और दरखत दरम्यान ।
सो भोमे उपर भोमे, हर भोम हिंडोले जान ।।१२।।

किनार पर आये १२० वृक्षों की रंगमहल के दस भोम के बराबर एक ही भोम आयी है और बीच में आये २९ वृक्षों की २९ हारों की रंगमहल के समान भोम के ऊपर भोम (दस भोम) आये हैं, जिनकी प्रत्येक भोम में हिण्डोले शोभायमान हैं ।

अन्दर दरखतों चौक पड़े, हिंडोले के चौक दरम्यान ।
यूं ही हर भोम सब चौक में, मोमिन करो पेहेचान ।।१३।।

भीतर के वृक्षों की पंक्तियों के मध्य चौक बने हुए हैं । उन चौकों के मध्य में हिण्डोले आये हैं । इसी प्रकार प्रत्येक भोम में सभी चौकों में हिण्डोले

आये हैं । हे सुंदरसाथ जी ! इस शोभा की पहचान कीजिये ।

सोए सोए हिंडोले झूलहीं, कोई बैठे झूलत ।
कोई खड़ी झूलत, यूं सुख पावे इत दरखत ।।१४।।

ताड़वन के इन हिण्डोलों में कोई सखी लेटकर झूलती है, तो कोई सखी बैठकर झूलती है, कोई सखी खड़े-खड़े झूलती है । इस प्रकार सखियां ताड़वन में अपार आनंद प्राप्त करती हैं ।

ताड़वन और चौक के, ए जो कहे दरखत ।
धाम चांदनी छज्जे मुकाबिल, सब पोहोंचे आए इत ।।१५।।

ताड़वन के किनारे के तथा मध्य के ये जो भी वृक्ष कहे हैं, वे रंगमहल की चांदनी के छज्जे के बराबर पहुंच गये हैं ।

तले जिमी के नव रस्ते, दस चौके दरम्यान ।
दोए रस्ते दोए बगलों, लिबोई लाल चबूतरे तरफ जान ।।१६।।

ताड़वन में १० चौकों (बगीचों) के बीच ९ रास्ते (रौंसें) आये हैं तथा इन १० बगीचों के दायें-बायें लाल चबूतरे और लिबोई वन की तरफ भी दो रास्ते हैं ।

मंदिर भर की चौड़ाई, सो दोए चौको दरम्यान ।
ए जो अग्यारे गुरज धाम लगती, रस्ते चले तहां से पेहेचान ।।१७।।

प्रत्येक २ बगीचों के मध्य में १ मंदिर की चौड़ी रौंस है, जो रंगमहल के ११ गुर्जों के ठीक सामने (दक्षिण से उत्तर की तरफ) शोभायमान है ।

एक गुरज लाल चोतरे, हद लों आई जब ।
दूजी लाल चबूतरे खड़ोकली, आई दरम्यान में तब ।।१८।।

एक गुर्ज लाल चबूतरे की पूर्वी किनार पर (रंगमहल के बाहरी हार मंदिरों से लगकर) है तथा दूसरा गुर्ज लाल चबूतरे व खड़ोकली के मध्य में आया है ।

तीसरी लगी खड़ोकली, चौथे खड़ोकली की दूसरी तरफ ।
सो तो लगती छज्जे पर, रहे मोमिन दिल सरफ ।।१९।।

तीसरा गुर्ज खड़ोकली से लगकर पश्चिम में विद्यमान है । चौथा गुर्ज खड़ोकली के पूर्व में खड़ोकली से लगकर आया है । ये दोनों गुर्ज खड़ोकली व

रंगमहल के मध्य आये छज्जे से लगे हैं, जिसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिल में होती है ।

और छे आई सात हांस के, दरम्यान में जान ।
अग्यारमी सोले हांस के, चेहेबच्चे पड़े पेहेचान ।।२०।।

इन चार गुर्जों के पश्चात् ६ गुर्ज खड़ोकली के पूर्व के सात हांसों की संधि में आये हैं । (४ और ६ मिलाकर १० गुर्ज हो गये) फिर ११ वां गुर्ज ईशान कोण के १६ हांस के चेहेबच्चे के सामने आया है ।

ए अग्यारे गुरज से, अग्यारे रस्ते चले जब ।
लई दिस पुखराज को, पोहोंचे आगे जाए तब ।।२१।।

इन ११ गुर्जों के सामने ताड़वन के मध्य से पुखराज (उत्तर) की तरफ ११ रास्ते गये हैं ।

ए गुरज है जे ऊपर, तिनसे सीढ़ी उतरती जान ।
आई रस्ते जिमी पर, अग्यारे रस्ते ऐसे पेहेचान ।।२२।।

ये जो ११ गुर्ज हैं, जो धाम चबूतरे पर रंगमहल की बाहरी हार मंदिरों से लगकर आये हैं । उनके सामने धाम चबूतरे से ११ सीढ़ियां उतरी हैं, जो कि ११ रास्तों के ठीक सामने हैं । सभी ११ रास्तों की शोभा ऐसी ही जानिये ।

अठारे रस्ते आड़े कहे, नींबूई की तरफ ।
एक धाम जे लगता, दूसरा वन की सरफ ।।२३।।

इसी प्रकार ताड़वन के बगीचों की १७ हारों के मध्य व दायें–बायें पश्चिम से पूर्व की तरफ आड़े १८ रास्ते कहे गये हैं, जिसमें से पहला धाम चबूतरे से लगता हुआ (एक मंदिर की दूरी पर) है तथा दूसरा केलवन से लगता हुआ (ताड़वन के उत्तर में) है ।

और सोरह रस्ते दरम्यान में, चल गये जमुना किनार ।
चोतरे के आई लगे, चले लिबोई में जाए विचार ।।२४।।

इन दोनों रास्तों के मध्य (बगीचों की १७ पंक्तियों के मध्य) १६ रास्ते और हैं, जो नींबू वन के मध्य से होते हुए यमुना जी की पाल (चबूतरे) तक गये हैं ।

हर बगीचे आस पास, साम सामे सनमुख ।
चढ़ता चढ़े नव भोम लों, कह्यो जाए ना शोभा सुख ।।२५।।

ताड़वन के सभी बगीचे व वृक्ष एक दूसरे के सामने कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं, जो भोम के ऊपर भोम नौ भोम १० वीं चांदनी तक गये हैं । यह सुख व शोभा अवर्णनीय है ।

एक भोम में तीस तीस, तैसे ही नव भोम ठौर ।
ताके दोए सौ सत्तर, चारों के एक हजार अस्सी गिनो जोर ।।२६।।

ताड़वन के बगीचों में एक दिशा में एक भोम में ३० हिण्डोले हैं, नौ भोम के २७० (३०x९) तथा चारों दिशा के १०८० (२७०x४) होते हैं ।

और हर बगीचा भीतर, दरखतों के दरम्यान ।
तीस तीस की तीस हारें, ता बीच हिंडोले जान ।।२७।।

इस प्रकार प्रत्येक बगीचे के अंदर वृक्षों के मध्य ३० महराबों की ३० हारें हैं, जिन पर हिण्डोले शोभायमान हैं ।

रस्तन में खड़े रहिए, सब मेहेराब देखाई देत ।
ए शोभा नूर जमाल की, मोमिन दिल में लेत ।।२८।।

रास्तों में खड़े होकर देखने पर ताड़वन की सभी महराबें दिखाई देती हैं । यह शोभा प्रियतम अक्षरातीत की है, जिसे ब्रह्मात्माएं अपने दिल में धारण करती हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, कह्या ताड़वन ठौर ।
ए धाम सखी बिना, कोई न जाने और ।।२९।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथजी ! यह ताड़वन की शोभा का वर्णन किया है, जिसे धाम की सखियों (ब्रह्मप्रियाओं) के बिना कोई नहीं जानता ।

प्रकरण-४४ चौपाई-२१९४

बड़े वन के दरखत

इस प्रकरण में बड़े वन के वृक्षों का चित्रण किया गया है । रंगमहल की उत्तर दिशा में रंगमहल की चाँदनी से लगता हुआ यह वन चालीस हाँस तक शोभा ले रहा है । इसके पूर्व में ताड़वन तथा उत्तर में मधुवन हैं । जानवरों का अभिवादन व खेल बड़ोवन के इन्हीं चौकों में होता है ।

अब कहूं लाल चबूतरे से, चालीस हांस लों है दरखत ।
बड़ो वन चल्या इत लों, दरखत एकतालीस इत ।।१।।

अब लाल चबूतरे के ४० हांसों (पहलों) के सम्मुख आये बड़ोवन की शोभा का वर्णन करता हूं। लाल चबूतरे से लगकर बड़ोवन के वृक्षों की ४१ पंक्तियां उत्तर दिशा में गयी हैं ।

एह एकतालिस हारें चली, तरफ एक पुखराज ।
रूहें इत रमत हैं, संग ठकुरानी श्रीराज ।।२।।

इन ४१ वृक्षों की ४१ पंक्तियां पुखराज की तरफ (उत्तर दिशा में) गयी हैं । यहां सखियां, श्री राज श्यामाजी के साथ अनेक प्रकार से खेल-रामतें करती हैं ।

एह चौक चौड़ा, चालीस हांस लग हद विस्तार ।
तरफ पुखराज की लम्बाई, सोले हांस बीस लों किनार ।।३।।

इस बड़ोवन की चौड़ाई ४० हांस (पहल) की है तथा पुखराज की तरफ लम्बाई १६ हांस व २० मंदिर (५०० मंदिर) की है । (लाल चबूतरे से उत्तर तरफ ४१ वृक्षों की १७ हारें १० भोम ऊंची हैं । इसके बाद की १७ हारें २५० भोम ऊंची हैं तथा उसके उत्तर में ५०० भोम ऊंचा मधुवन शोभायमान है ।)

एकतालिस दरखत की, चौके बनी जो हार ।
लम्बाई हार अट्ठारे लों, कही मोमिनों की खातर ।।४।।

लाल चबूतरे से उत्तर की तरफ ४१ वृक्षों की जो १८ पंक्तियां हैं, उनके मध्य ४० चौकों (अखाड़ों) की जो १७ हारें आयी हैं, उसकी शोभा ब्रह्मात्माओं के वास्ते कह रही हूं ।

हार सत्रह चालीस चौक की, जहां मुजरे आवत जानवर ।
हक सुभान आवत, लेने मोजरे की खातर ।।५।।

लाल चबूतरे के समक्ष जो ४० अखाड़ों की १७ हारें हैं, वहां सभी पशु दर्शन व अभिवादन के लिये आते हैं, तब श्री राज जी, श्यामा जी व सखियों के संग लाल चबूतरे पर अभिवादन स्वीकार करने के लिये विराजमान होते हैं ।

ए वन लगा जाए के, चांदनी के मुकाबिल ।
धाम चांदनी ताड़ वन की, एक हुई देखों दिल निरमल ।।६।।

इस बड़े वन की एक भोम है, जो रंगमहल की दसवीं चांदनी के बराबर है । लाल चबूतरे से लगती हुई पहली पंक्ति के वृक्षों की डालियां रंगमहल की चांदनी से जाकर मिल गयी हैं । रंगमहल की चाँदनी, ताड़वन की चांदनी व बड़ेवन की चाँदनी एक हो गई है । यहाँ की शोभा निर्मल हृदय से देखिये।

इन दरखतों चौक पड़े, तिन हर चौक हिंडोले जान ।
ताकी कहूं गिनती, मोमिन करो पेहेचान ।।७।।

बड़ोवन के वृक्षों के मध्य, जो अखाड़े (चौक) आये हैं, उनके चारों ओर वृक्षों की महराबों में हिण्डोले शोभायमान हैं । उनकी गणना कहते हैं । सुंदरसाथजी, उसकी पहचान कीजिये ।

ताके चालीस छज्जे चौक के पड़े, ताके हिंडोले बारे सौ अस्सी नूर।
देखने के चार चार, लेखे दो दो का मजकूर ।।८।।

सभी चौकों (अखाड़ों) के ऊपर वृक्षों की डालियों, फूलों व पत्तों की छत है । प्रत्येक चौक के चारों तरफ वृक्षों की महराबों में हिण्डोले हैं, एक चौक में देखने के ४ और गिनती के २ झूले होते हैं । ४० चौकों की १६ पंक्तियों के कुल १२८० (४०x२x१६) हिण्डोले होते हैं ।

ज्यूं भुलवनी के द्वार, है देखन के चार ।
है हिसाब के दोए, त्यों ही जानो बिहार ।।९।।

जिस प्रकार भुलवनी के मंदिरों में देखने के ४ और हिसाब के २ दरवाजे आए हैं, उसी प्रकार लाल चबूतरे के हिंडोलों की गणना समझिये ।

और इनहीं चौक में, सोले हिंडोले आए और ।
आए तरफ फूल बाग के, बारे से छानवे भए इस ठौर ।।१०।।

बड़ोवन के इन्हीं अखाड़ों (चौक) में १६ हिण्डोले और आये हैं, जो कि फूलबाग (पश्चिम) की तरफ के १७ वृक्षों के मध्य १६ महराबों में आये हैं । इस

प्रकार कुल १२९६(१२८०+१६) हो जाते हैं ।

इन दरखतों के दरम्यान, भोम केहेना होए ।
छात सबन की एक है, मोहोला जानवर लेवे हक सोए ।।११।।

इन सभी वृक्षों की डालियां १० भोम ऊपर जाकर आपस में सुंदर महराबों और एक ही छत के रूप में मिल गयी हैं, जिससे यहां रंगबिरंगे रत्नों से जड़े भवन के जैसी शोभा हो गयी है । यहां श्री राजजी सभी जानवरों का अभिवादन स्वीकार करते हैं ।

एह पचास हांस लों, सब चांदनी भई एक ।
इहां ठौर रमन के, विवेक है अनेक ।।१२।।

इस प्रकार रंगमहल की उत्तर दिशा के सम्पूर्ण ५० हांस (पहल) के सामने बड़ोवन व ताड़वन की एक ही चांदनी (छत) बन गयी है । यहां हांस-विलास, लीला विहार करने के अनेक प्रकार के साधन हैं ।

चांदनी धाम के आगे छज्जा, एह तिनको लगा आए वन ।
हर हांस कठेड़े द्वार है, तहां से वन पर आए रूहें मोमिन ।।१३।।

रंगमहल की दसवीं चांदनी में किनार पर जो छज्जा आया है, ताड़वन व बड़ोवन के वृक्षों की डालियां उनसे आकर मिल गयी हैं । उन छज्जों के किनार पर जो कठेड़े आये हैं, उनमें हांस-हांस के मध्य में द्वार बने हुए हैं । जहां से रंगमहल की चांदनी से वनों की चांदनी पर सखियां आती हैं ।

वन की चांदनी के हिस्से, पातो पात मिले नूर ।
मानो दुलीचा बिछाया, सो कह्यो न जाए जहूर ।।१४।।

वनों की चांदनी इस प्रकार बनी है, कि वृक्षों की नूरमयी डालियां, फल-फूल, पत्ते आपस में मिल कर रंगबिरंगी चित्रकारी से युक्त रत्नजड़ित दुलीचे के समान छत बना दिये हैं। उसका वर्णन नहीं हो सकता है ।

पचास हांस लो लम्बाई, सत्रह हांस लों चौड़ाई होए ।
दोनों तरफ वन कठेड़ा, फूलबाग लिबोई तरफ सोए ।।१५।।

ताड़वन और बड़ोवन की चांदनी मिलाकर कुल ५० हांस (पहल) की लम्बी व १७ हांस की चौड़ी छत दिखायी देती है, जिसके दोनों तरफ - पूर्व में फूलबाग की तरफ व पश्चिम में नींबू वन की तरफ चांदनी की किनार पर वृक्षों

का ही कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

एक तरफ धाम की गुमटी, पचास हांस लो तीन हजार ।
तीनों हजार द्वार पड़े, सो मोमिन देखनहार ।।१६।।

वनों (ताड़वन + बड़ोवन) की चांदनी की एक तरफ (दक्षिण में) रंगमहल की चांदनी के दहलानों में आयी ५० हांस की ३००० गुम्मटियां दिखायी दे रही हैं । प्रत्येक दहलानों के बाहरी तरफ के दो-दो दरवाजे - कुल ३००० दरवाजे शोभायमान हैं, जिन्हें ब्रह्मात्माएं ही देखती हैं ।

गुरज दोए बाजू दरम्यान में, एकावन सुमार ।
उगन पचास दो दरम्यान में, दोए दोए बाजू करो विचार ।।१७।।

दोनों कोनों (वायव्य और ईशान) के गुर्जों को लेकर रंगमहल की उत्तर दिशा में कुल ५१ गुर्ज होते हैं । कोने के दोनो गुर्जों के मध्य ४९ गुर्ज हैं ।

ताके द्वार पड़े चांदनी पर, चेहेबच्चे चारों तरफों चार ।
ज्यों बट पीपल की चांदनी पर, और छोटी नाहीं सुमार ।।१८।।

उन ५१ गुर्जों में भी द्वार शोभायमान हैं । बट पीपल की चांदनी की भांति बड़े वन की चाँदनी के भी चारों कोनों पर ४ चेहेबच्चे आए हैं और छोटे चेहेबच्चों का तो हिसाब ही नहीं है ।

कई नेहेरां तापर चले, कई फुहारे उछरत ।
ए शोभा नूर जमाल की, क्या कहे जुबां सुपन की इत ।।१९।।

यहां वनों की चाँदनी पर कई नहरें चल रही हैं व अनेकों फव्वारे उछल रहे हैं । यह संपूर्ण शोभा अक्षरातीत नूरजमाल की है । उसके विषय में यहां की स्वप्न की जुबाँ क्या वर्णन कर सकती है ?

बड़े वन की तरफ पुखराज के, चली केल मुकाबिल ।
भोम दूसरी धाम से उंची, देखो दिल निरमल ।।२०।।

बड़े वन की १७ हारों की उत्तर दिशा में पुखराज की तरफ बड़ोवन के वृक्षों की जो पंक्तियां (१८ वीं पंक्ति से लेकर ३४ वी पंक्ति तक) आयी हैं, उनकी दूसरी भोम रंगमहल से भी ऊंची है (१८ वीं हार से ३४ वीं हार तक बड़ोवन के वृक्ष २५० भोम ऊंचे हैं) । उनके समान चौड़ाई में, उसके पूर्व में केलवन विद्यमान है, जिसकी शोभा निर्मल हृदय से देखिये ।

ए वन के द्वार पड़े, इत चांदनी के उपर ।
हद पचास हांस लों, कहूं मोमिनो की खातर ।।२१।।

१० भोम ऊंचे बड़ोवन की चांदनी से २५० भोम ऊंचे बड़ोवन की दूसरी भोम में जाने के लिये पूरे ५० हांस में वृक्षों की डालियों के महराबी द्वार बने हुए हैं । उसकी शोभा ब्रह्मात्माओं के वास्ते कह रहा हूं।

इत एकवन दरखत की, कही जो चालीस हांस ।
ताके आठ सौ सरसठ, दरखत कहे सुमार ।।२२।।

चालीस हांस में २५० भोम ऊंचे बड़ोवन के 41 वृक्ष तथा ताड़वन की सीमा के 10 वृक्ष मिलाकर कुल 51 वृक्ष होते हैं। जिनकी 17 हारें हैं। इस प्रकार ५१ वृक्षों की १७ हारें होने से कुल ८६७ (५१x१७) वृक्ष हिसाब में होते हैं ।

इन भोम में हिंडोले, जैसी जुगत कही इन ठौर ।
सोई इन में जानियों, और केतिक भांत है और ।।२३।।

२५० भोम ऊंचे बड़ोवन में भी १० भोम ऊंचे बड़ोवन के समान ही हिण्डोले शोभायमान हैं । कुछ हिण्डोले भिन्न प्रकार के भी हैं ।

साढ़े आठ सौ चौक तले, साढ़े आठ सौ उपर ।
इन चौक में कई हिंडोले, जुगत ए ही पटन्तर ।।२४।।

८५० चौक नीचे की भोम में और ८५० चौक ऊपर की भोमों में आए हैं । यहां के चौकों में कई प्रकार के हिंडोले आए हैं (२५० भोम ऊंचे बड़ोवन में ५१ वृक्षों की १८ हारों के मध्य ५० चौकों की १७ हारे हैं, जिनके कुल ८५० (५०x१७) चौक होते हैं ।)

महामत कहे ए मोमिनों, एही खिलवत मुकाबिल ।
वस्त दोऊ कहूं नहीं, नेक तुम खातर कही नकल ।।२५।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह शोभा रंगमहल के समान है । हकीकत में इस शोभा का कहीं कोई उदाहरण नहीं है । यह अद्वितीय है । आपके लिये संक्षिप्त में वर्णन किया है ।

प्रकरण-४५, चौपाई-२२१९

अब कहू मधुवन की

इस प्रकरण में मधुवन का वर्णन किया गया है, जो ताड़वन तथा बड़ेवन के उत्तर से चलकर पुखराज की तरफ बढ़ता हुआ महावन तक पहुँचा है । रंगभवन की चाँदनी से बड़ोवन, मधुवन व महावन के वृक्षों की सीढ़ीनुमा शोभा पुखराज पहाड़ तक गई है ।

अब कहूं मधुवन की, जो बड़े वन आगे नूर ।
एह मुकाबिल पुल के, सब रोशन झलकत जहूर ।।१।।

अब नूरमयी मधुवन की शोभा का वर्णन करता हूं , जो बड़ोवन की उत्तर दिशा में आया है । पूर्व में यह केलपुल की सीध में आया है । इसकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ जगमगा रही है ।

बड़े वन से ऊंची, दूनों है विस्तार ।
दरखतों के मेहेराब, जानत परवरदिगार ।।२।।

मधुवन की ऊंचाई बड़े वन से दुगुनी (५०० भोम) है । इनके महराबों की शोभा वास्तव में प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

इन दरखतों में, नेहेरें बनी सब ठौर ।
चेहेबच्चे फुहारे उछरत, कई हिंडोले बने कई और ।।३।।

मधुवन के वृक्षों की चारों दिशाओं में नहरें शोभायमान हैं । चारों कोनों में चेहेबच्चे हैं, जिनमें से ५-५ फव्वारे उछल रहे हैं । वृक्षों की डालियों की महराबों में हिण्डोले लटक रहे हैं ।

चांदनी के तीनों तरफ, कठेड़ा बन्या सुखदाए ।
एक तरफ फूल बाग के, दूसरी पुल तरफ शोभाए ।।४।।

मधुवन की चाँदनी के किनार में तीन दिशा में सुंदर रत्नजड़ित सुखदायी कठेड़ा शोभा ले रहा है । एक कठेड़ा पश्चिम दिशा में फूलबाग की तरफ है, तो दूसरा पूर्व में केलपुल की तरफ है ।

तीसरी तरफ धाम के, चौथे महावन के मेहेराब ।
तरफ मधुवन चांदनी, उपर चेहेबच्चे हैयाती आब ।।५।।

तीसरा कठेड़ा रंगमहल की तरफ दक्षिण दिशा में शोभायमान है । मधुवन की चांदनी के चौथी तरफ (उत्तर दिशा में) १००० भोम ऊंचे महावन के

वृक्षों की महराबें दिखायी दे रही हैं । मधुवन की चांदनी में भी उसी प्रकार नहरों, चेहेबच्चों, फव्वारों की अद्‌भूत शोभा दिखायी दे रही है ।

इत कई ठौर रमन के, हिसाब न गिनती होए ।
ए तो शब्दातीत के, जुबां पोहोंच न सके कोए ।।६।।

यहां हांस-विलास-रमण करने के लिये अनेकों स्थान हैं, जिनकी गणना करना सम्भव नहीं है । यह तो शब्दातीत परमधाम की शोभा है, जिसके वर्णन में माया के शब्द नहीं पहुंच सकते ।

पेहेले चांदनी ताड़ वन की, लाल चबूतरे का बन्या वन ।
तीसरे चांदनी धाम की, भई बराबर एक रोशन ।।७।।

सर्वप्रथम ताड़वन की चांदनी, लाल चबूतरे से लगकर आये बड़ोवन के १७ हारों की चांदनी तथा रंगमहल की चांदनी - तीनों मिलकर एक बराबर ऊंचे आये हैं।

तिनसे ऊंचे दरखत, सो बड़े वन के होए ।
सो तो केल मुकाबिले, ए दोए बड़े वन चांदनी कही सोए ।।८।।

इस चांदनी (१० भोम ऊंचे बड़ोवन की १७ हारों) के पश्चात् (उत्तर में) २५० भोम ऊंचे बड़ोवन की १७ हारे हैं, जो कि पूर्व में आये केल वन की सीध में हैं । इस प्रकार बड़ोवन में भी दो प्रकार की चांदनी (१० भोम, २५० भोम) हो गयी ।

तीसरी चांदनी मधुवन की, सो इनसे ऊंची दूनी जान ।
सो तो मुकाबिले पुल के, और फूलबाग तरफ पेहेचान ।।९।।

मधुवन की चांदनी बड़ोवन की २५० भोम ऊंची चांदनी से भी दुगुनी ऊंची (५०० भोम की) है । मधुवन, पूर्व में आये केलपुल की चौड़ाई की सीध में है तथा इसके दक्षिण में फूलबाग आया है । (मधुवन पुखराज पहाड़ के चारों ओर आया है, जिससे फूलबाग के उत्तर से होते हुए पुखराज की पश्चिम दिशा में गया है) ।

इहां हद चली महावन की, सो इन से दूनी लग आसमान ।
फेर चांदनी पर चांदनी, चढ़ती चढ़ी तू जान ।।१०।।

मधुवन के उत्तर में महावन शोभायमान है, जो कि मधुवन से भी दुगुना

(१००० भोम) ऊंचा है । इस प्रकार बड़ोवन से लेकर महावन तक चांदनी क्रमशः सीढ़ियों के समान चढ़ते जाती है ।

कई पेड़ पर पेड़ चले, कई भोमे पर भोम होए ।
चांदनी आगे चली चांदनी, शोभा केहेने में न आवे सोए ॥११॥

कई पेड़ो पर पेड़, भोमों पर भोमें बनी हुयी हैं तथा चाँदनी के आगे चाँदनी चढ़ती हुई शोभायमान है । यहाँ की शोभा कहनी से परे हैं ।

इत कई भांते चांदनी चली, जाकी गिनती नाहिं सुमार ।
इन घेर लिया पुखराज को, ए हक हादी जाननहार ॥१२॥

यहाँ कई प्रकार की बेशुमार चाँदनी हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती । मधुवन व महावन, पुखराज पहाड़ को चारों ओर से घेरकर आये हैं । इनकी शोभा श्री राज श्यामा जी ही जानते हैं ।

ए तो कही गृद चांदनी की, इनों को नाहीं सुमार ।
पातसाइयां खिलौनन की, जित होत नित बिहार ॥१३॥

इस प्रकार पुखराज पहाड़ के चारों ओर आये मधुवन व महावन की चांदनी की शोभा का वर्णन किया है । यहां सखियों के खिलौने अर्थात् पशु–पक्षियों का साम्राज्य (ऐश्वर्य) है। जहां *नित्य प्रति अनेक प्रकार की प्रेम व आनंद व परिपूर्ण लीलाएं होती हैं ।*

अब कहूं तले जिमी का बेवरा, जो है दरखतों की हार ।
फिरवली पुखराज को, ताको कहा विस्तार ॥१४॥

अब इन वनों के नीचे आयी धरती की शोभा का वर्णन करेंगे, जहां वृक्षों की पंक्तियां पुखराज को चारों ओर से घेरकर आयी हैं ।

ज्यूं भोमे छज्जे बढ़ चर्ली, इन पहाड़ पुखराज ।
ज्यों दरखतें छातें बढ़ चर्ली, मुकाबिल चांदनी काज ॥१५॥

जिस प्रकार पुखराज पहाड़ की प्रत्येक भोम के छज्जे बढ़ते गए हैं, उसी प्रकार पुखराज पहाड़ की २५० भोम ऊपर चाँदनी से मिलने के लिये महावन के वृक्षों के छज्जे (डालियां) भी बढ़ते गये हैं ।

डारी पर पेड़ दरखत, यूं बढ़ता चल्या सबन ।
है ना इनकी गिनती, झलकत नूर रोशन ।।१६।।

महावन के वृक्षों की (पुखराज के तरफ की) डालियों पर पुनः वृक्ष खड़े हैं। इस प्रकार वृक्षों के छज्जे पुखराज की तरफ बढ़ते गये हैं । इनकी गणना सम्भव नहीं है । चारों तरफ इनकी रंगबिरंगी नूरी किरणें रोशनी फैलाते हुए झलकार कर रही हैं ।

हार पेड़न की घाटी से, फिरवली गृदवाए ।
आए मिली दोनों कुण्ड को, दोउ तरफ फिरी गृदवाए ।।१७।।

महावन के वृक्षों की हार पश्चिम की घाटी के पश्चिम से व उत्तर की घाटी के उत्तर से घूमते हुए दोनों कुण्डों (अधबीच का कुण्ड व मूल कुण्ड) से आकर मिली है। इस प्रकार पुखराज पहाड़ के दोनों तरफ घेरकर (उत्तर व दक्षिण) महावन शोभायमान है ।

जेता चौड़ा तलाव है, तेती छेटी दरम्यान ।
गृद ऐसी जानिओं, इनकी बोहोत है पेहेचान ।।१८।।

हौजकौसर तालाब जितना चौड़ा है, उतनी ही चौड़ाई पुखराज पहाड़ की है । परिधि भी उतनी ही है। इस प्रकार इसका विवरण बहुत है ।

इत जानवर बड़े कहे, इन वन के माफक ।
कई खेलौने पातसाइयां, एह जानत है सब हक ।।१९।।

यहाँ पर वनों की ऊंचाई अनुसार जानवर भी ऊंचे-ऊंचे हैं । अनेकों प्रकार के सखियों के लाडले पशु-पक्षी (खिलौने) हैं, जो वनों में राज्य करते हैं, जिसे श्री राज जी ही बेहतर जानते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, आगे आया पुखराज ।
जहां नित्याने सैंया, रमन को पधारे संग राज ।।२०।।

श्री महामति सुंदरसाथ से कहते हैं, कि महावन के आगे (उत्तर में) पुखराज पहाड़ शोभा ले रहा है, जहाँ नित्य प्रति सखियां श्री राज श्यामा जी के साथ रमण करने के लिये जाती हैं ।

प्रकरण-४६, चौपाई-२२३९

पहाड़ जो पुखराज का, ऊंचा लाख जोजन ।
गृद चौड़ाई लाख की, देखे रूह मोमिन ।।१।।

पुखराज नग का जो पहाड़ है, वह एक लाख योजन ऊंचा है । जिसकी परिधि (गोलाई) भी एक लाख योजन की है, जिसे मात्र ब्रह्मात्माएं ही देख पाती हैं।

गृद फिरता चबूतरा, कहा हांस एक हजार ।
पेड़ फिरते हजार हांस, हक हादी रूहें नित बिहार ।।२।।

पुखराज पहाड़ में सर्वप्रथम जमीन में हजार हाँस का एक गोल चबूतरा शोभा ले रहा है, जिसके चारों तरफ पुखराजी रौंस में हजार हांस के सामने बड़ोवन के वृक्षों की दो हारें आयी हैं । यहां श्री राजश्यामा जी एवं सखियां नित्य ही लीला विहार करते हैं ।

थम्भ हजार हांस सकड़ी, चबूतरे हांस बड़ो विस्तार ।
ता पर फिरता कठेड़ा, बीच बीच बने हैं द्वार ।।३।।

हजार हांस (पहला) के चबूतरे के मध्य भोम भर ऊंचे चौरस चबूतरे पर पांच स्तम्भ (पांच पेड़ आधार स्तम्भ के रूप में) हैं, हजार हांस का चबूतरा बहुत ही लम्बा-चौड़ा है । इसके किनार पर चारों तरफ कठेड़े की शोभा है, जिनमें हांस-हांस के मध्य में कठेड़ा द्वार बना है ।

चारों थम्भ लगे चबूतरे, सो तरफों चारों जान ।
दोए सीढ़ियाँ पश्चिम उत्तर, नूर झलकत नूर आसमान ।।४।।

मध्य के चौरस चबूतरे की चारों दिशा में चार स्तम्भ रूप महल शोभायमान हैं (पांचवा पेड़ बीच में हैं) । पश्चिम व उत्तर दिशा में दो घाटी की सीढ़ियां शोभायमान हैं , जिनका नूर आसमां तक जगमगा रहा है।

चढ़ती चढ़ती छातों पर, थम्भ बने अति नूर ।
केतिक छातें बराबर, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।५।।

इन पांचों पेड़ों पर क्रमशः प्रत्येक भोमों में छज्जे बढ़ते गये हैं, जिनकी किनार पर प्रत्येक भोम में नूरमयी स्तम्भ शोभायमान हैं । कई छज्जे आमने सामने से समान ऊंचाई पर निकले हैं, जो २५० भोम के पश्चात् आकर आपस में मिल गये हैं । उसकी नूरी शोभा का किस प्रकार वर्णन करें ?

छज्जे गोख कठेड़े बने, फिरते फिरे गृदवाए ।
कई अन्दर मोहोल बने, सो आवत नहीं जुबांए ।।६।।

पुखराज की छठी भोम से लेकर २५० भोम तक चारों तरफ घेरकर स्तम्भ व कठेड़े से युक्त छज्जे ही छज्जे शोभायमान हैं । उनके अंदर कई प्रकार के रत्नजड़ित महल शोभायमान हैं, जिनकी महिमा शब्दों में नहीं आ सकती है ।

फेर उपर छात चढ़ती चली, थम्भ चढ़ते चले गिरद फेर ।
यूं चढ़ता उपर लों, कहूं हजार हांस दोए बेर ।।७।।

२५० भोम के पश्चात् पुनः १००० भोम तक छज्जे बढ़ते गये हैं। चारों तरफ स्तम्भ आते गये हैं। इस प्रकार १००० भोम ऊपर तक छज्जे, स्तम्भ, महल बनते गये हैं । हजार हांस की शोभा पुनः दूसरी बार कहूंगा।

हजार हांस जो चबूतरे, त्यूं हीं हजार हांस उपली छात ।
थम्भ चार तले से लगे तिन को, फेर कहूं ताकी बात ।।८।।

नीचे जमीन पर जितना लम्बा-चौड़ा भोम पर ऊंचा हजार हाँस का गोल चबूतरा आया है, हजार भोम उपर उतनी ही लम्बी-चौड़ी १००० हाँस की चाँदनी आई है । पहाड़ के नीचे चार आधार स्तम्भ के रूप में चार महल आये हैं । उनकी शोभा का वर्णन पुनः कहता हूं।

एक एक थम्भन में, जाने श्रीधाम मोहोल सब ठौर ।
ऐसे चौक मोहोल गलियां, बिना मोमिन न जाने कोई और ।।९।।

इन प्रत्येक आधार स्तम्भों के अंदर ऐसा लगता है, जैसे सबके अंदर रंगमहल ही विद्यमान हो । वैसे ही चौक, महल, गलियां शोभायमान हैं, जिन्हें ब्रह्मप्रियाओं के सिवा अन्य कोई नहीं जानता ।

दोए सीढ़ी दोए तरफ, पश्चिम उत्तर को जान ।
ता बीच पेड़ थम्भन का, सो मोमिन दिल पेहेचान ।।१०।।

पुखराज पहाड़ के उत्तर व पश्चिम दिशा में दो सीढ़ियाँ (घाटियां) शोभा ले रही हैं । उनके बीच में (हजार हांस के चबूतरे पर) आधार स्तम्भों के रूप में ५ पेड़ विद्यमान हैं । उसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती है ।

इन सीढ़ियों चढ़े पुखराज पर, तले दोनों के दो बड़े द्वार ।
तिन आगे दोए चबूतरे, तहां से चढ़ते करें बिहार ।।११।।

इन दोनों घाटियों की सीढ़ियों से पुखराज पहाड़ (की चांदनी) पर चढ़ा जाता है । नीचे जहां पर सीढ़ियां प्रारम्भ होती है, वहां पर (उत्तर व पश्चिम में) दो बड़े मुख्य द्वार बने हैं । उसके सामने (दायें-बायें) दो चबूतरे हैं । यहां से सीढ़ियां चढ़ते हुए आनंदपूर्वक लीला विहार करते हैं ।

दोए चबूतरे दरम्यान के, जब चढ़िए सीढ़ी पर ।
दोए बाजू दिवाल चढ़ी, बने तापर मंदिर ॥१२॥

दोनों चबूतरों के मध्य से जब सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, तब सीढ़ियों के दोनों तरफ जो दीवार चढ़ी है, उसमें मंदिरों (महलों) की शोभा आई है ।

ता पर बनी चांदनी, बनी हार पगथी यों ।
दिवाल पर बनी कांगरी, नूर जोत झलके ता पर ॥१३॥

उन मंदिरों की चांदनी, सीढ़ियों के दोनों तरफ पंक्तिबद्ध रूप से ऊंची होती गई है। उन मंदिरों की दीवालों के ऊपर छत में कांगरी की शोभा है, जिसकी नूरमयी किरणें चारों ओर झलकार कर रही हैं ।

यूं दोए बाजू हर सीढ़ी, दिवाल छज्जे मोहोल जान ।
अव्वल कहूं तले की, मोमिन करो पेहेचान ॥१४॥

इस प्रकार प्रत्येक सीढ़ी के दोनों तरफ दीवार के रूप में महल व छज्जे आये हैं । सर्वप्रथम नीचे की शोभा का बयान करते हैं । हे सुंदरसाथजी ! उसकी पहचान कीजिये।

एक दिवाल सीधी चढ़ी, एक हांस भर कही सोए ।
तामे मोहोल पोरी बनी, ताके छज्जे पुखराज तरफ होए ॥१५॥

सीढ़ियों के दोनों तरफ प्रत्येक हांस में दीवार (महल) एक-एक भोम ऊपर चढ़ते गए हैं, जिनमें महल एवं महराबी द्वार आए हैं । इन महलों के छज्जे (सातवीं भोम से) पूर्व दिशा में पुखराज की तरफ निकलते गये हैं ।

दोए बाजू मोहोल बने, ताके छज्जे दोनों तरफ ।
ए कहुं सीढ़ियों के अन्दर, कह्यो जाए ना एक हरफ ॥१६॥

सीढ़ियों के दोनों तरफ महल बने हैं, इन महलों के छज्जे भी दोनों (बाहरी) तरफ आए हैं । महलों के अंदर तरफ आयी सीढ़ियों की शोभा में एक शब्द भी नहीं कहा जा सकता ।

ए जो चारों थम्भ कहे, ताके गृद चौरस ।
ए जो चबूतरे पर चबूतरा, सो अतंत बन्या सरस ।।१।।

हजार हांस (पहल) के गोल चबूतरे के मध्य में जो भोम भर ऊंचा चौरस चबूतरा है, उस पर चारों दिशाओं में चार आधार स्तम्भ रूप महल शोभायमान हैं । ये महल चौरस हैं, जिसकी शोभा बहुत ही प्यारी है ।

तापर फिरता कठेड़ा, रतन झलकत मनि नूर ।
ता बीच बने चार द्वारने, सो क्युं कर कहूं जहूर ।।२।।

उस चौरस चबूतरे की किनार पर चारों तरफ रत्नजड़ित कठेड़े शोभायमान हैं, जिनके चारों दिशाओं के मध्य में सीढ़ियां उतरी हैं, जिनके सामने चार कठेड़ा द्वार शोभायमान हैं । उसकी शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं ?

ए थम्भ उपर छात लों, निकसे उपर हवेलियों चार ।
ताके पार किनारे देखत, ताको मोमिन करो विचार ।।३।।

ये चार दिशाओं के चार आधार स्तम्भ (महल) हजार भोम ऊपर चांदनी तक गये हैं, और चांदनी में चार हवेलियों के रूप में निकले हैं । चांदनी में विद्यमान आकाशी महल के चारों तरफ चाँदनी के किनारे तक की शोभा ब्रह्मात्माएं विचारें ।

तो बड़ा चबूतरा थम्भ का, सो निकसता चल्या बाहिर ।
थम्भ चारों आए दरम्यान, सो देखत हैं जाहिर ।।४।।

चारों आधार स्तम्भों के मध्य में पांचवा बड़ा आधार स्तम्भ रूप महल है, जिसमें से (छठी भोम से) छज्जे चारों तरफ इस प्रकार निकलते (बढ़ते) गये हैं, कि दिशा के चारों आधार स्तम्भ भी उसके अंतर्गत आ गये हैं ।

ए सीढ़ियाँ दोनों चबूतरों, चढ़ने को सब ठौर ।
हक हादी रूहें खेलत, बिना मोमिन न जाने और ।।५।।

हजार हांस (पहल) के चबूतरे की संधि में चबूतरे की किनार पर चारों

तरफ हजार गोल चबूतरे (चांदे) हैं, जिनके दायें-बायें से सीढ़ियां उतरी हैं । इस प्रकार जगह-जगह चढ़ने के लिये सीढ़ियां विद्यमान हैं । यहां श्री राजश्यामा जी एवं सखियां अनेक प्रकार से खेल-रामतें करते हैं, जिन्हें ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त कोई नहीं जानता है ।

कहे आठ पेड़ पुखराज के, ताके बड़े आए मेहेराब ।
ए मरातबा मोमिन का, जो बीच बका हैयाती आब ।।६।।

पुखराज पहाड़ के आठ पेड़ (पांच आधार स्तम्भ, दो घाटियां व एक पुखराजी ताल) कहे गये हैं, जिनके मध्य बड़े-बड़े (१४) महराब आए हैं । यह तो ब्रह्मात्माओं की महिमा है, जो परमधाम के अखण्ड अमृत रूपी सुख उन्हें प्राप्त हैं ।

चारों थम्भ के चार कहे, उनके चारों भए अन्दर ।
और चार तरफ दोए सीढ़ियन के, दोए लगती पहाड़ी तले बाहिर ।।७।।

चारों दिशाओं के चारों स्तम्भों के मध्य चार महराबें हैं और दिशा के स्तम्भों से मध्य के स्तम्भ की तरफ भी चार महराबें आयी हैं और चार महराबें दोनों सीढ़ियों (घाटियों) की तरफ आयी हैं तथा दो महराबें पुखराजी ताल (पहाड़ी के तले) की तरफ आई है ।

आठमा पेड़ पहाड़ी कहीं, जो चौथे हिस्से तक ।
हर हांस दोए सौ पचास लों, जित खेले रूहें हादी हक ।।८।।

आठवां पेड़ पहाड़ (पुखराजी ताल) कहा गया है, जो पुखराज पहाड़ के चौथे हिस्से (२५० हांस) का लम्बा-चौड़ा आया है (बंगले के चबूतरे की एक दिशा में २५० हाँस आये हैं) । यहाँ श्री राज श्यामा जी व सखियाँ अनेक प्रकार से हांस-विलास करते हैं ।

ऊंची आधे पुखराज लो, इहां लग पोहोंची आए ।
हार तले फिलपाएन की, सो चारों तरफों फिरता आए ।।९।।

पुखराजी ताल की ऊंचाई पुखराज पहाड़ की अपेक्षा आधी है (पुखराज पहाड़ की कुल ऊंचाई आकाशी महल मिलाकर २००० भोम-८ लाख कोस होती है, पुखराजी ताल की ऊंचाई १००० भोम है) । पुखराजी ताल के नीचे बंगले के चबूतरे पर चारों तरफ फीलपायों (हाथीके पैर जैसे मोटे स्तम्भों) की पंक्तियां

आयी हैं ।

ए जो तेइस सौ चार बंगले, इन फिलपाए दरम्यान ।
ताकी छात लगी पहाड़ को, इत बोहोत है पेहेचान ।।१०।।

इन फीलपाइयों की हारों (और बड़ोवन के वृक्षों की हारों) के मध्य में २३०४ (४८x४८) बंगले शोभा दे रहे हैं । उन बंगलों की छठी चांदनी पुखराजी ताल के नीचे लगी हैं । यहाँ की शोभा अपरम्पार है ।

इत छातों पर छातें चली, थम्भ पर थम्भ दिवालों द्वार ।
चढ़ते चढ़ते लग छात लों, ताकी क्यूं कहूं भोम सुमार ।।११।।

बंगलों की छठी चांदनी में, जहां से पुखराजी ताल का प्रारम्भ होता है, ताल के चारों तरफ प्रत्येक भोम में छज्जे बढ़ते गये हैं । यहां छतों के ऊपर छत, स्तम्भों के ऊपर स्तम्भ व दीवार के ऊपर दीवार आये हैं । इस प्रकार छज्जे बढ़ते हुए चांदनी तक गये हैं । उनका कहां तक वर्णन करें ?

कई बैठक कचेरिआ, कई मोहोल मंदिर गलिअन ।
जहां हक हादी रूहें खेलत, सो जानत दिल मोमिन ।।१२।।

यहां कई बैठकें, कचहरियाँ, महल, मंदिर व गलियाँ शोभा ले रहे हैं, जहाँ पर श्री राज श्यामा जी सखियों के साथ लीला विहार करते हैं । ये बातें ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं ।

इत गोख छज्जे कई कचेरियां, चारों तरफों देखत ।
थम्भ दीवाल सब नूर के, हर एक भोम में इत ।।१३।।

यहां कई गोख, छज्जे, कचहरियां हैं, जहां से चारों तरफ की शोभा देखते हैं। प्रत्येक भोम में अनेकों नूरमयी स्तम्भ, दीवार इत्यादि शोभायमान हैं ।

चौक चबूतरे द्वार ने, अनेक मंदिर मोहोलात ।
ए जवेर अरश भोम के, कही जाए न ताकी बात ।।१४।।

यहां चौक, चबूतरे, दरवाजे और अनेकों मंदिर-महल विद्यमान हैं । ये परमधाम के नूरमयी जवाहरात हैं, जिनकी शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है।

हक हादी रूहें रमें, इन मोहोल आवे जब ।
मोजरे को आवत, सब खेलने तब ।।१५।।

इन महलों में आकर जब श्री राज श्यामा जी व सखियाँ अनेक प्रकार से खेल-रामतें करते हैं, तब सभी खूब खुशहालियाँ (पशु-पक्षियां) भी श्री राज श्यामा जी के दर्शन करने व खेल कर्तब दिखाने आते हैं ।

इन मोहोलो जब आरोगत, बैठत जुगल किशोर ।
रूहें गृद घेर बैठत, मिल बात करत हैं जोर ।।१६।।

इन महलों में आकर जब श्री राज श्यामाजी व सखियां आरोगते हैं, तब सखियां युगल स्वरूप को चारों तरफ से घेरकर बैठ जाती हैं, और आरोगते हुए आपस में जोर-शोर से बातें करती हैं ।

हक मीठे नैन अवलोकत, जब इन रूहों सनमुख ।
ए नैनों नैन मिलावहीं, क्यूं कहूं जुबांए सुख ।।१७।।

जब प्रियतम श्री राज, सखियों को सामने से प्रेम भरी दृष्टि से निहारते हैं, और उनके नेत्रों से नेत्र मिलाते हैं, तो इन सुखों का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है।

महामत कहे ए मोमिनों, एह कह्या तुमारा ठौर ।
तुम बिना ए मोहोल को, सो समझत नाहीं कोइ और ।।१८।।

श्री महामति जी कहते हैं कि, हे सुंदरसाथ जी ! यह आपके घर परमधाम का वर्णन किया है । आपके सिवाय इन महलों को कोई और नहीं समझ सकता ।

प्रकरण-४८, चौपाई-२२७३

पुखराज की

फेर कहूं पुखराज की, जो बेवरा छात ऊपर ।
गृदवाए फिरती एक रस, रंग पात बराबर ।।१।।

पुखराज पहाड़ की शोभा का पुनः वर्णन कहूंगा, जो हजार भोम ऊपर हजार हांस की चांदनी बनी है । पुखराज की फिरती हुई गोल चाँदनी एक रस (समान शोभा से युक्त) है, जिसमें रंगों की शोभा नीचे के ही समान है ।

ए हजार जो फिरते गुरज, बीच बनी दिवाल ।
दरवाजा भोम पांच लों, देख मोमिन होत खुसाल ।।२।।

चाँदनी की किनार पर चारों तरफ १००० गुर्ज घेरकर आए हैं, जिनके मध्य ५ भोम ऊंची दीवार आई है (जिनके अंदर हवेलियां हैं) । इनके चारों दिशाओं में ४ बड़े दरवाजे हैं, जो ५ भोम ऊंचे हैं । जिन्हें देखकर ब्रह्मात्माएं खुश हो जाती हैं।

एह जो हजार गुरजें कहीं, हजार गुरज जुदे जवेर ।
जुदे जुदे रंगों झलकत, ताको कहूं बेवरा फेर ।।३।।

ये जो हजार गुर्ज कहे गये हैं, वे सभी अलग - अलग रत्नों के आये हैं । उनसे अलग - अलग रंगों की किरणें निकल रही हैं, उनका पुनः वर्णन करता हूं।

दाएं बाएं हर हवेलियां, भोम पांच छठी चांदनी ।
पांच दरवाजे हर हवेली, शोभा उपरा ऊपर बनी ।।४।।

इन गुर्जों के दाये - बायें हवेलियां आई हैं, जिनकी पांच भोम व छठी चांदनी है । इन पांचों भोमों में प्रत्येक हवेली में पांच दरवाजे हैं, जो एक के ऊपर एक शोभायमान हैं ।

द्वार आगे दोए चबूतरा, तरफ वजीरी चौखुन दोए ।
द्वार आगे का बना, दोउ चोतरों बीच है सोए ।।५।।

चारों बड़े दरवाजों के आगे (दायें बायें) दो विशाल चौकोर चबूतरे हैं । दोनों चबूतरों के बीच महराबी द्वार की अद्‌भुत शोभा आई है ।

ए जो बड़ा छज्जा फिरता, तापर कठेडा गृदवाए ।
तिन आगे जेह ढलकती, सो नूर अतंत शोभाए ।।६।।

इन हवेलियों के बाहरी तरफ चारों ओर एक ४०० कोस का छज्जा घेरकर आया है, जिसकी किनार पर चारों तरफ कठेड़े की शोभा है । कठेड़े के आगे नूरमयी ढालदार छज्जा शोभा ले रहा है ।

छज्जे ऊपर हार हवेलियां, तापर चबूतरे दोए ।
और तहां से छज्जा छोटा चल्या, गिरद फिरता है सोए ।।७।।

इस छज्जे पर हवेलियों के दरवाजे के दोनों ओर आये चबूतरे शोभा ले

रहे हैं । उसके आगे छोटा (ढालदार) छज्जा घेरकर आया है ।

कहे हजार हांस के, बने हजारों द्वार ।
चार सामी सीढ़िअन के, सोई चार बड़े दरबार ।।८।।

इस प्रकार चांदनी पर १००० हाँस हवेलियों के सभी १००० दरवाजे आए हैं, जिनमें से चारों दिशा में चार बड़े दरवाजे दरबार के रूप में शोभा ले रहे हैं, इन्हीं में से उत्तर व पश्चिम दिशा के दो बड़े दरवाजों के सामने घाटी के सीढ़ियों की शोभा आई है ।

हर द्वार आगे शोभित, कहे चबूतरे दोए ।
द्वार माफक सबन के, बने चबूतरे सोए ।।९।।

हजार हांस के प्रत्येक दरवाजे के आगे जो २-२ चबूतरे कहे गये हैं, वे दरवाजे के अनुसार ही लम्बे चौड़े हैं ।

ता ऊपर गुरज पड़े, कही गिनती दोए हजार ।
ए ऊंची निकलती गुमटी, ए शोभा अति सुखकार ।।१०।।

ये चबूतरे स्तम्भ व महराबों सहित चौरस गुर्ज के रूप में ऊपर के तरफ गये हैं, जिनकी गिनती २००० कही गयी है (प्रत्येक हांस में दो चबूतरे) । ये गुर्ज छठी चांदनी से भी ऊपर तक गये हैं, जिनके ऊपर गुम्मटियों की शोभा है, जो अत्यंत आनंददायक है ।

यामे आठ गुरज बड़े कहे, जो आगूं बडे द्वार ।
इत चबूतरो कठेडा, हक हादी रूहों का बिहार ।।११।।

इनमें से चारों दिशा के ८ गुर्ज (चबूतरे) बड़े हैं, जो दिशा के बड़े दरवाजों के सामने हैं । इन चबूतरों की किनार पर तीन दिशा में कठेड़े की शोभा है, जहां श्री राजश्यामा जी एवं सखियां विहार करती हैं ।

ए जो फिरती हवेलियां, चली दो गुरजों दरम्यान ।
तिन द्वार आगे पगथिआं, मोमिनो करो पेहेचान ।।१२।।

हजार हांस की हवेलियों की संधि में हजार गोल गुर्ज आये हैं । दो गुर्जों के मध्य इन हवेलियों के द्वार के आगे ३-३ सीढ़ियाँ हैं । हे सुंदरसाथजी! आप इसकी पहचान कीजिये।

दोए हवेलियों बीच में, जेती जिमी होए ।
तहां त्रपोलियां शोभित, कहे मेहेराब पंद्रा सोए ।।१३।।

प्रत्येक दो हवेलियों के बीच जितनी जगह आई है, वहां दो स्तम्भों की हार तीन गलियाँ शोभायमान हैं । पांचों भोमों की मिलाकर कुल १५ महराबें होती हैं ।

इत भी पांचो भोम है, छात पर बनी छात ।
पांच त्री पंद्रे मेहेराब, मोमिन सुनो एह बात ।।१४।।

इन त्रिपोलियों सहित हवेलियों की ५ भोम छठी चाँदनी आई है । छत के ऊपर छत व स्तम्भ के ऊपर स्तम्भ आये हैं, जिनसे तीन महराबों की पांच भोम में कुल १५ (५X३) महराबें होती हैं । सुंदरसाथजी, उसका विवरण सुनिये ।

पश्चिम उत्तर दोए सीढ़ियां, सो लगी छज्जे किनार ।
द्वार दरम्यान गुरज दिवाल, दोए आगे चबूतरे दरम्यान ।।१५।।

पश्चिम व उत्तर दिशा में जो दो घाटी की सीढ़ियां है, वे पश्चिम व उत्तर के बड़े दरवाजों के सामने छज्जे की किनार से लगी हैं । इन बड़े दरवाजों के दायें बायें गुर्ज व हजार हांस के दिवाल हैं। बड़े दरवाजों के आगे (दायें–बायें) दो चबूतरे भी हैं।

ए छज्जा चौक इन द्वार का, दोए सीढ़ियां लगी इन किनार ।
सब ठौरों कठेड़ा फिरता, ता को मोमिन करो विचार ।।१६।।

इस छज्जे, द्वार व चबूतरों के मध्य आये चौक के सामने दोनों घाटी की सीढ़ियां आकर लगी हैं, इस छज्जे के किनार पर चारों तरफ घेरकर कठेड़े की शोभा है । हे सुंदरसाथ जी ! उसका विचार कीजिये ।

और कहे त्रिपोलियां, ता आगे कहे एक चबूतर ।
ता पर चार थम्भ बने, बनी छात ता पर ।।१७।।

और जो त्रिपोलियों का वर्णन किया है, उसके आगे (भीतरी तरफ) एक चबूतरा है । जिस पर चार स्तम्भ हैं, जिस पर छत आयी है ।

ए जो छात ऊपर की, जाकी हजार हांस विस्तार ।
ए ठौर सब बराबर, ता के छज्जे फिरते कहे विचार ।।१८।।

यह जो हजार भोम ऊपर हजार हांस की चांदनी है । यह पुरी चांदनी बराबर है, जिसके किनार पर चारों तरफ छज्जे घेरकर आये हैं ।

ए जो चार हवेलियों हार, ताकी जिमी ऊंची भई ठौर ।
सो गुरज दिवाल दरम्यान में, आगे भई छज्जे शोभा जोर ।।१९।।

हजार हांस (पहल) की चांदनी की किनार पर आयी चार हार हवेलियों की जमीन चांदनी से कमर भर ऊंची आयी है, जिस पर गुर्ज, दीवाल आदि सारी शोभा है । इसके आगे (बाहरी तरफ) ४०० कोस का छज्जा बहुत ही शोभायमान हो रहा है । सभी गुर्ज हवेलियों की दीवार की संधि में आए हैं । गुर्जों के आगे छज्जों की अपार शोभा है ।(एक हांस के अंदर चार हवेलियों की चार हारें आयी हैं)

जब चार हार छोड़ आगे चले, जिमी उतरती भई सोए ।
छज्जे गिरद बराबर एक रस, कही शोभा अति सोए ।।२०।।

चार हार हवेली को छोड़कर भीतरी तरफ चलते हैं, तो बगीचे की जमीन कमर भर नीचे आयी है । बाहरी तरफ छज्जे चारों ओर एक समान शोभा से युक्त आये हैं ।

एह एक हांस की कही, यूं ही हजार हांसो सब ठौर ।
दोए सीढ़ियों बीच विवेक है, और फेर आगे कहूंगी और ।।२१।।

जिस प्रकार एक हाँस की शोभा का वर्णन किया है, उसी प्रकार १००० हाँस की शोभा आयी है । दो सीढ़ियों के बीच की विस्तृत शोभा का वर्णन आगे किया जायेगा ।

महामत कहे ए मोमिनों, रमो पुखराज में तुम ।
एह तुमको दिखावत, हक सुभान का हुकम ।।२२।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आप पुखराज पहाड़ के रमण कीजिये, जहाँ की शोभा तुम्हें श्रीराज जी का आदेश दिखा रहा है ।

प्रकरण-४९, चौपाई-२२९५

पुखराज पहाड़ की हजार हाँस की हवेलियों (मोहोलात) के अन्दर की दीवार

दो हार दिवाल कही, ए जो हवेलिन की चली सब ।
एक बाहेर की पेहेली कही, कहूं हकीकत अंदर की अब ।।१।।

हजार हाँस हवेलियों के बाहर की तरफ व अन्दर की तरफ दो दीवार चारों ओर घेरकर आई हैं (जिनके मध्य में चार हार हवेलियां विद्यमान हैं) । बाहरी दीवार का वर्णन हो चुका है । अब अन्दर की दीवार का वर्णन करेंगे ।

जैसा जाहेर दिवाल में, तैसा ही अन्दर दिवाल ।
दरवाजे सामी दरवाजे, जित पैठत हुई खुसाल ।।२।।

बाहरी दीवाल की शोभा जिस प्रकार की है, उसी प्रकार अंदर के दीवाल की भी शोभा है । बाहर की तरफ आये दरवाजों के समान ही अंदर की तरफ भी दरवाजे आये हैं, जहां से प्रवेश करते हुए अंदर की शोभा देखकर सखियां अत्यंत आनंदित हो जाती हैं ।

दोए चबूतरे आगे द्वार के, ता पर बने गुरज दोए ।
ए बजीरियां चौकोनी कहीं, चढ़ती गुमटी सिरे सोए ।।३।।

दरवाजे के आगे (दायें-बायें) दो चबूतरे आये हैं, जिनके ऊपर स्तम्भ व महराब सातवीं चांदनी तक गये हैं, जिससे उनकी शोभा दो चौरस गुर्जों के समान दिखायी दे रही है ।

ज्यूं बाहेर दिवाल कोट की, तैसी अन्दर दिवाल जान ।
तैसे ही छज्जे बने, तैसे द्वार जे फिरती जान ।।४।।

जैसी बाहर की दीवार किले के समान है, वैसे ही अंदर की दीवार भी है। उसी प्रकार दरवाजे व चबूतरों के ऊपर छज्जे चारों तरफ घेरकर शोभा ले रहे हैं ।

तैसे ही त्रिपोलिए, दोए गुरज दोए हजार ।
हर दरवाजे दोए दोए, हक हादी रूहें करे बिहार ।।५।।

वैसे ही दो हवेलियों के मध्य त्रिपिलियों की शोभा है । हजार हांस में दरवाजों के आगे कुल २ हजार गुर्ज (चबूतरे पर) शोभायमान हैं, जहाँ श्री राज श्यामा जी व सखियाँ आनन्द की लीला करते हैं ।

नाहीं गुरज कोने के, ए जो फिरती बारे हजार ।
और सबे इत जानियों, बड़ी चांदनी अति सुखकार ।।६।।

हवेलियों की संधि में बाहरी दीवार में जो हजार गोल गुर्ज आये हैं, वे भीतरी दीवाल में नहीं है, और बाकि सारी शोभा उसी प्रकार है । इस प्रकार पुखराज की चांदनी की शोभा अत्यंत सुख दायक है ।

दोए हार दिवाले कही, ए जो हवेलियों लगती नूर ।
दोए हार दिवाल दरम्यान, तिनका क्युं कर कहूं जहूर ।।७।।

इस प्रकार बाहरी व भीतरी - दोनों दीवारों की शोभा कही है, जिनके मध्य में नूरमयी चार हार हवेलियां शोभायमान हैं । उनकी शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं ?

द्वार सामे द्वार कहे, हवेली सामे हवेली ।
चबूतरे सामे चबूतरे, तापर चौबीस बनी पौली ।।८।।

चार हार हवेलियों में दरवाजों के सामने दरवाजे, हवेली के सामने हवेली व चबूतरे के सामने चबूतरे शोभायमान हैं । जहां आमने-सामने हवेलियों के दरवाजे व चार चबूतरे हैं, वहां पर २४ महराबों की शोभा आई है ।

चार हार हवेलियों, ता बीच तीन गली जान ।
हर एक में तीन तीन, दोए हार थम्भों बीच पेहेचान ।।९।।

४ हार हवेलियों के मध्य तीन गलियाँ आई हैं । प्रत्येक हांस में चार हार हवेलियों के मध्य त्रिपोलियों की तीन-तीन हारें हैं, जिनमें से प्रत्येक में स्तम्भों की दो हारें हैं ।

यूं फिरती गृदवाए, है एही जुगत सब ठौर ।
कहे चार हार हवेली के कोने, तहां चौबीस मेहेराब है और ।।१०।।

इसी प्रकार चारों तरफ हजार हांस में स्थित हवेलियों की शोभा आयी है । चार हार हवेलियों के जहां कोने हैं, वहां भी २४ महराबों की शोभा आई है ।

यूं अन्दर तिन कोने पड़े, हर हवेलियों के गृदवाए ।
हर कोने चौबीस मेहेराब, ए बहत्तर मेहेराब सुखदाए ।।११।।

इस प्रकार एक पंक्ति में चार हवेलियों के मध्य तीन कोने (चौकड़ी) आये हैं, जिनके ७२ (२४x३) महराब होते हैं । इन महराबों की शोभा बहुत ही

सुखदायी है ।

यूं चौबीस त्री बहत्तर, महेराबों पधारत श्री राज ।
हादी रूहें संग रहें, सब पूरे मनोरथ काज ।।१२।।

इस प्रकार ७२ (२४x३) मेहेराबों के बीच श्री राज श्यामा जी, सखियों के साथ पधारकर अनेक प्रकार की प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं करके सब की मनोकामना पूर्ण करते हैं ।

ए गलियां पंद्रे मेहेराब की, फिरती आई सब ठौर ।
हर भोम में छात हैं, छठी चांदनी बराबर और ।।१३।।

३ महराबों की पांच भोम में १५ महरावें होती हैं । ये गलियां सभी हवेलियों में सभी हांसों (पहलों) में आई हैं । सभी पांच भोमों में छत आती गयी है, इनके ऊपर एक बराबर छठी चांदनी आयी है ।

इत आवे रमन को, हादी रूहें सुभान ।
है कई सुख इत मोहलन में, ऊंचे सो मोमिन दिल पेहेचान ।।१४।।

यहां श्री राजश्यामा जी व सखियाँ लीला विहार करने के लिए आते हैं । इन ऊंचे ऊंचे महलों में कई प्रकार के सुख हैं, जिनकी पहचान ब्रह्मात्माओं को ही होती है ।

दोए दरवाजे साम सामी, पांच भोम लग ऊंचे होए ।
इत चार हार हवेलियों, कहे साम सामी चालीस सोए ।।१५।।

हवेलियों के दरवाजे आमने-सामने पांच भोम तक आये हैं । चार हार हवेलियों के मध्य एक पंक्ति में ८ दरवाजे हैं। पांच भोमों के कुल ४० दरवाजे होते हैं ।

कहूं अब मेहेराबों का बेवरा, हर हवेली पांच पांच भए ।
पांच चोक बीस कहे, बीस सामने हार के कहे ।।१६।।

अब महराबों (दरवाजों) का वर्णन करता हूं। प्रत्येक हवेली की एक दिशा में पांचों भोम के ५-५ दरवाजे आने से एक पंक्ति की चार हवेलियों के २० दरवाजे हुए तथा इसी प्रकार २० दरवाजे सामने की हार के हैं ।

यूं चालीस मेहेराब, भए त्रिपोलिए नब्बे नूर ।
पंद्रे त्री पैंतालिस कहे, ताको क्यूं कर कहूं जहूर ।।१७।।

इस प्रकार एक त्रिपोलिये के दायें-बायें पांच भोम के ४० दरवाजे होते हैं । ९० नूरमयी त्रिपोलिया आए हैं । पाँचो भोम के एक ओर के ४५ (१५x३) त्रिपोलिया (गलियां) हैं । उनकी शोभा बेहिसाब है (एक तरफ से तीन त्रिपोलिया हैं, जिनके पांच भोम के १५ त्रिपोलियां होते हैं । उनकी ४५ (१५x३) गलियां होती हैं । दोनों तरफ की कुल ९० गलियां होती हैं) ।

यूं दोनों हार में नब्बे भए, ए त्रिपोलिए सुखदाए ।
हक हादी रूहें देखत, सो अतंत है सुखदाए ॥१८॥

इस प्रकार दोनों ओर के (आड़ी–खड़ी) कुल ९० सुखदायी त्रिपोलिया होते हैं, जिन्हें श्री राजश्यामा जी व सखियां देखते हैं तो उन्हें अपार सुख होता है।

त्रिपोलियों आगे एक, कह्या चबूतरा चौरस ।
तापर चार थम्भ बने, चढते छठी चांदनी सरस ॥१९॥

त्रिपोलियों के आगे एक चौरस चबूतरा आया है जिस पर ४ स्तम्भ आए हैं । ये छठी चांदनी तक गये हैं, जिसकी अत्यन्त सुंदर शोभा बनी है ।

एक पोर के अन्दर, चबूतरे सोले सुमार ।
हर हवेली आगे दोए दोए, साम सामें सोले सोले विचार ॥२०॥

प्रत्येक हवेली के आगे २-२ चबूतरे आये हैं, जिससे एक त्रिपोलिये में हवेलियों के आमने सामने ४-४ चबूतरे आने से एक भोम के कुल १६ चबूतरे हुए ।

हर चबूतरे चार थम्भ, तरफ छज्जे कहे तीन ।
छज्जे छज्जे तीन मेहेराब, ए करके देखो आकीन ॥२१॥

प्रत्येक चबूतरे पर ४ स्तम्भ आये हैं, जिसके तीन तरफ छज्जे आये हैं । इन तीनों छज्जों (छत) के नीचे तीन महराब आये हैं । इनका विश्वास करके ध्यान द्वारा साक्षात्कार कीजिये।

दोए छज्जे दोए चूबतरे, एक आगे कह्या द्वार ।
हक हादी रूहें नित, इत आए करें बिहार ॥२२॥

२ चबूतरों के ऊपर २ छज्जे हैं, तथा एक छज्जा दरवाजे के आगे (दोनों चबूतरो के मध्य) आया है । श्री राजश्यामा जी व सखियाँ यहां अखंड रूप

से लीला विहार करते हैं ।

हर पौर आगे दोए चबूतरे, हर चबूतरे थंभ चार है ।
एक भोम के आठ थम्भ, पांचो के चालीस सुमार ।।२३।।

प्रत्येक दरवाजे के आगे २ चबूतरे और प्रत्येक चबूतरे पर ४ स्तम्भ आए हैं । तब (एक द्वार के आगे) एक भोम के ८ स्तम्भ व ५ भोम के ४० स्तम्भ हुए ।

ऐसी चार हार हवेलिआ, ताके एक सौ भए साठ ।
दूजी तरफ एक सौ साठ, यूं तीन सौ बीस ठाट ।।२४।।

चार हवेलियों के एक दिशा के ४ दरवाजों व ८ चबूतरों के पांच भोमों के कुल १६० स्तम्भ होते हैं । इसी प्रकार सामने के चार हवेलियों के चार दरवाजों के भी १६० स्तम्भ होते हैं । आमने-सामने ८ हवेलियों के कुल ३२० स्तम्भ होते हैं ।

हर भोम इन थम्भन के, भए दस मेहेराब ।
हर भोम के एक से, पांचो के पचास पाओ सवाब ।।२५।।

प्रत्येक भोम में हवेली की एक दिशा के दरवाजे के सामने (८ स्तम्भों पर) १० महरावें आई हैं । तब ५ भोम की कुल ५० महरावें हुई ।

चार हार के दोए सौ, दूजी तरफ दोए सौ और ।
यों गिनती चार सौ कहीं, देखियों हवेलियों के ठौर ।।२६।।

तब चार हवेलियों की एक दिशा के चार दरवाजों की पांचों भोम की २०० महरावें हुई । आमने-सामने आठ हवेलियों की कुल ४०० महरावें हुयी ।

यूं ही सब ठौरों के दोए तरफ, आठों हवेलियों जान ।
ए निसवत बिना काहूं को, होए नाहीं पेहेचान ।।२७।।

इसी प्रकार सभी त्रिपोलियों के दोनों तरफ आठों हवेलियों की शोभा जानिये । इसकी पहचान धाम धणी से मूल आत्मिक संबंध के बिना सम्भव नहीं है ।

हवेली की चार पोरी, हर पोरी दोए चबूतरे ।
और हवेली हार थम्भन की, यूं ही अन्दर हार थम्भ भर ।।२८।।

एक हवेली के चारों ओर ४ दरवाजे आए हैं । प्रत्येक दरवाजे के दायें

बायें २ चबूतरे आए हैं । स्तम्भों की हार जैसे बाहर विद्यमान है, वैसे ही अंदर भी आयी है ।

हर मंदिर अन्दर के, थम्भ हार भई नूर ।
अन्दर चबूतरे सब आगे, भए कठेड़े नूर जहूर ॥२९॥

हवेलियों में मंदिरों की हार के भीतरी तरफ नूरमयी स्तम्भों की हार शोभायमान है । इनके अंदर चबूतरे की शोभा है, जिसकी किनार पर चारों तरफ नूरमयी कठेड़ा शोभायमान है ।

कहूं चेहेबच्चे बने, कहूं फुहारे उछरत ।
कहूं फूलबाग बने, यूं शोभा सुख कई नित ॥३०॥

इस चबूतरे में कहीं चहबच्चे हैं तो कहीं फव्वारे उछल रहे हैं, तो कहीं फूलों के बगीचे हैं। इस प्रकार की शोभा को देखकर नित्य प्रति अतंत सुख प्राप्त होता है ।

यूं पांचो भोम सब हवेलियों, ताकी जुगत है अनेक ।
ए तो है सुमार बिन, ए केहे ना सके एक ॥३१॥

इस प्रकार पाँचों भोमों की सब हवेलियाँ कई प्रकार की शोभा से युक्त हैं । ये तो अनंत व असंख्य हैं, जिसमें से एक की शोभा का वर्णन करना भी सम्भव नहीं है ।

ए तो हक दिल माफक, एह अकल जुबां देह ख्वाब ।
ए बका ठौर चेतन, ए मोमिन पीवे हैयाती आब ॥३२॥

हवेलियों की संपूर्ण शोभा श्री राजजी के दिल के अनुसार है । सपने के तन की अक्ल व झूठी जुबां, अखण्ड चेतन सुखों का वर्णन नहीं कर सकते । इसके अखण्ड सुखों का रसपान ब्रह्मात्माएं ही करती हैं ।

तो अरस दिल मोमिन कह्या, हक बेसक पाइए सब ।
जब पूछो अरस गलियां, बताए देवे सब तब ॥३३॥

इसी कारण मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के दिल को खुदा का अर्श (परमात्मा का धाम) कहा गया है । उनके मन में परमात्मा के विषय में किसी प्रकार का संशय नहीं होता है । उनसे परमधाम की गलियों के विषय में पूछेंगे तो वे जर्रे-जर्रे के विषय में बता देंगे ।

महामत कहे ए मोमिनों, एह कह्या पहाड़ पुखराज ।
तुमको हक सुभान ने, पूरे मनोरथ काज ।।३४।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह पुखराज पहाड़ का वर्णन किया है । हक सुब्हान श्री राजजी ने आपकी सारी इच्छा पूर्ण कर दी है ।

प्रकरण-५० चौपाई २३२९

पुखराज पहाड़ के हजार हांस के महलों की चांदनी

अब कहूं पुखराज की, विस्तार जो चांदनी ।
और बड़े द्वार चार की, देखो मोमन ठौर अपनी ।।१।।

अब पुखराज पहाड़ के हजार हाँस के महलों की चांदनी तथा दिशा के ४ बड़े दरवाजों की शोभा का वर्णन किया जायेगा, हे सुंदरसाथ जी ! अपने निजघर की शोभा देखिये ।

पेहेले हार हवेलियों, ए जो कही चार ।
तिन ऊपर की चांदनी, जित नित होत बिहार ।।२।।

पहले जो चार हार हवेलियों का वर्णन किया गया है, उनके ऊपर छठी चांदनी की शोभा देखिये, जहां नित्यप्रति प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं होती हैं ।

पांच भोम छठी चांदनी, ए जो फिरतियां गृदवाए ।
हक हादी बैठक देखिए, शोभा आवत नाही जुबांए ।।३।।

४ हार हवेलियों की ५ भोम छठी चांदनी, हजार हांस में घेरकर आयी है, यहां श्री राज श्यामा जी की बैठक की शोभा देखिये, जो कि अवर्णनीय है ।

दोए तरफ दिवाल में, कांगरी है सब ठौर ।
गृद दोए तरफों छज्जे, ए शोभा अति जोर ।।४।।

चांदनी में (बाहरी–भीतरी) दोनो तरफ दीवार के ऊपर सम्पूर्ण हजार हांस में कांगरी की शोभा आई है । दीवार के दोनों तरफ (बाहरी–भीतरी) छज्जे अपरम्पार शोभा लिये हुए हैं ।

हजार गुरज ऊंचे लगे, इन चांदनी से होए ।
ता पर बनी चांदनी, ता पर कठेड़ा कह्या सोए ।।५।।

हजार हांस की संधि में आये हजार गोल गुर्ज चांदनी से एक भोम ऊपर गये हैं, जिस पर चांदनी (छत) बनी है । चांदनी के किनार पर कठेड़े की शोभा है।

तिन आगे छज्जे बने, हक हादी रूहें कबूं बैठत ।
हक बीच में शोभित, सो क्यूं कहूं शोभा इन बखत ।।६।।

उन कठेड़ो के आगे ढालदार छज्जों की शोभा है । यहाँ गुर्जों की चांदनी में श्री राज श्यामाजी एवं सखियां जब भी विराजमान होते हैं, तब सखियों के बीच शोभायमान श्री राजजी की शोभा अवर्णनीय होती है ।

और जो कही बजीरियां, ए जो कहे गुरज ।
ताकी दोए हजार गिनती, है एह मोमिनों का हज ।।७।।

दरवाजों के दायें-बायें जो २००० चौरस गुर्ज कहे गये हैं, उनकी शोभा बजीरियों (चौरस गुर्जों) के रूप में है । ध्यान द्वारा इनका दर्शन करना ही ब्रह्मात्माओं का हज (तीर्थ) है ।

तापर कलश कांगरी, गुमटियों पर होए ।
ए सब रंग जवेर के, शोभा कही न जाए सोए ।।८।।

उन चौरस गुर्जों की चांदनी पर अनेक रंगों के रत्नों से युक्त गुम्मटियाँ, कलश, कांगरी शोभायमान हैं । इन सब की शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

दोए गुरज दरम्यान में, त्रिपोलियां सब ठौर ।
ता आगे छज्जे बने, ए शोभा सुख अति जोर ।।९।।

दो गुर्जों के बीच (अंदर की तरफ हवेलियों के मध्य) सब जगह त्रिपोलिया शोभा ले रहे हैं । त्रिपोलियों के आगे भीतरी तरफ अपार शोभायुक्त छज्जे विद्यमान हैं ।

तापर कलस कांगरी, सब ऊपर भरी नूर ।
एह सिफत इन जुबां, क्यूं कर कहूं जहूर ।।१०।।

उन छज्जों की चांदनी में नूरमयी जगमगाते हुए कलश कांगरियों की

शोभा है । इसकी प्रशंसा इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार करूं ?

ज्यों बजीरियां गुरजों की, बाहेर की दोए हजार ।
तैसी ही अन्दर की, हक हादी रूहें करें बिहार ।।११।।

हवेलियों के बाहरी ओर जिस प्रकार २००० बजीरियों (चौरस गुर्जों) की शोभा है, ऐसे ही अंदर की तरफ भी २००० चौरस गुर्ज शोभायमान हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां प्रेम व आनंदपूर्वक लीला विहार करते हैं ।

ए हवेली के द्वार कहे, गिनती उपरा उपर ।
ताकि बजीरियां, तिन माफक, नाहीं निमूना पटन्तर ।।१२।।

इन हवेलियों के एक के ऊपर एक पांचों भोमों के दरवाजों की गिनती कह चूके हैं । उनके चौरस गुर्जों की संख्या (प्रति दरवाजे २ गुर्ज) व शोभा भी उसी के अनुसार होगी । उस शोभा का दुनिया में कोई उदाहरण नहीं है ।

इन दोए बजीरियों माफक, बीच में बनी बैठक ।
तापर कलश कांगरी, है हक के दिल माफक ।।१३।।

दो बजीरियों (चौरस गुर्जों) के मध्य में, उसी के बराबर लम्बी-चौड़ी बैठक शोभायमान है । उसकी किनार पर चांदनी में कलश, कांगरी आदि की शोभा है, जो राजजी के दिल की इच्छा के अनुसार है ।

ए जो पंद्रे त्रिपोलियां, कहे दोनों तरफ ।
तापर बैठक बनी, रहे मोमिन दिल सरफ ।।१४।।

यह जो पंद्रह त्रिपोलिये दोनों तरफ (आड़ी–खड़ी) कहे गये हैं, उनकी चांदनी पर बैठक बनी है, जिसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में रहती है ।

तापर आठ थम्भ कहे, आठ मेहेराब तापर ।
तीन तीन साम सामे, दोए दांए बाएं बराबर ।।१५।।

त्रिपोलियों के भीतरी तरफ आठ स्तम्भों (४-४ स्तम्भों की दो हारों) पर आठ महराबें शोभायमान हैं । जिनमें से तीन-तीन महराबें आमने सामने हैं, व १-१ महराब दायें-बायें है ।

ता पर कलश कांगरी, तीनों तरफ कठेड़ा शोभाए ।
हक हादी रूहें रमें, एह शोभा अति सुखदाए ।।१६।।

इन बैठकों पर किनार पर तीन तरफ कठेड़े की शोभा है । तथा उनकी चांदनी पर किनार पर कलश व कांगरियां शोभायमान हैं । यहाँ श्री राज श्यामा जी व सखियाँ रमण करते हैं, जिसकी शोभा अत्यंत सुखदायी है ।

हर मंदिर हर भोम के, गोख थम्भ गुमटी है नूर ।
ता पर बने कलश, याकी गिनती नाहीं जहूर ।।१७।।

प्रत्येक मंदिर (हवेली) की हर भोम में गोख व स्तम्भों की शोभा है, जिनके ऊपर चांदनी में गुम्मटियां शोभा ले रही हैं । गुम्मटियों पर कलश की शोभा है, जिसकी गणना करना सम्भव नहीं है ।

यूं ही बाहेर अन्दर जानियों, विस्तार नाहीं सुमार ।
हक हादी रूहें रमन को, सब मोमिन देखनहार ।।१८।।

इसी प्रकार हवेलियों के अन्दर व बाहर दोनों तरफ की शोभा जानिये, जिनकी कोई सीमा नहीं है । यहां श्री राज श्यामा जी व सखियां जिस प्रकार से रमण करते हैं, वह शोभा ब्रह्मात्माएं ही ध्यान द्वारा देखती हैं ।

कई बिहार ठौर इनके, कई बैठकें विस्तार ।
मैं नेक कही इसारतें, बोहोत मोमिन दिल विचार ।।१९।।

यहां पर लीला विहार के अनेकों स्थान हैं, अनेकों बैठकें जगह-जगह हैं । मैने संकेत में थोड़ा सा वर्णन किया है । ब्रह्मात्माएं अपने दिल से शोभा का विचार करें ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए देखो मोहोल पुखराज ।
कहूं बैठक चार द्वार की, जित खेले रूहें संग राज ।।२०।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि सुन्दर साथ जी, पुखराज पहाड़ के महलों की शोभा को देखो । अब चारों दिशा के चारों बड़े दरवाजों की शोभा का वर्णन करूंगा, जहाँ युगल स्वरूप, सखियों के साथ लीला करते हैं ।

प्रकरण-५१, चौपाई-२३४९

पुखराज पहाड़ चांदनी के बड़े चारो दरवाजों की शोभा

कहूं हजार द्वार पुखराज के, तामें चार बड़े द्वार ।
तिन आगे दोए चबूतरे, जित जुगल सरूप करत बिहार ।।१।।

पुखराज पहाड़ के १००० हाँस के महलों के बाहरी व भीतरी तरफ हजार-हजार दरवाजे आये हैं, चारों दिशा के हांस में ४ बड़े दरवाजे शोभायमान हैं । उन दरवाजों के सामने दायें-बायें २-२ चबूतरे शोभायमान हैं, जिन पर युगल स्वरूप अनेक प्रकार की लीलाएं करते हैं ।

इन चबूतरों उपर, चार थम्भ हर एक उपर ।
ता उपर छात बनी, गुरज चल्या तिन पर ।।२।।

इन प्रत्येक चबूतरे के चारों कोनों में चार स्तम्भ आए हैं । इन स्तम्भों के ऊपर छत बनी है, जो ऊपर चौरस गुर्ज के रूप में गयी है ।

इत चार द्वार आगूं कहें, आठ चबूतर ता पर ।
आठ गुरज बने, सो कहे दोए हजार गुरज ऊपर ।।३।।

इस प्रकार चारों बड़े दरवाजों के आगे आठ चबूतरे कहे गये हैं, जिनके ऊपर आठ गुर्ज हैं । ये आठों गुर्ज, हजार हांस के २००० गुर्जों से (पांच भोम और) ऊपर गये हैं ।

ए गुरज बड़े द्वार के, सो ऊंचे लग आसमान ।
इन समे के कई बिहार सुख, सो मोमिन करो पेहेचान ।।४।।

बड़े दरवाजों के ये बड़े गुर्ज आकाश तक (११ भोम) ऊंचे गये हैं । जब श्री राज श्यामा जी एवं सखियां यहां आते हैं, तो कई प्रकार से हांस-विलास करते हैं । हे सुंदरसाथजी ! उन सुखों की पहचान कीजिये ।

यूं ही दोए चबूतरे अन्दर, बने चार गुरज ता पर ।
ता पर छात कठेड़ा छज्जे पर, सो है उंचे सब ऊपर ।।५।।

इसी प्रकार बड़े दरवाजों के भीतरी तरफ भी दो चबूतरे विद्यमान हैं । इस प्रकार प्रत्येक बड़े दरवाजे के बाहरी व भीतरी तरफ मिलाकर कुल ४ गुर्ज होते हैं, जिनके ऊपर छत पर कठेड़े वे छज्जे की शोभा है। इस प्रकार ये गुर्ज अन्य २००० गुर्जों से पांच भोम ऊंचे हैं ।

कठेड़ा बैठक बनी, हर चबूतरे झलके जवेर ।
है दोनों चबूतरों पर, तों कह्या फेर दूजी बेर ।।६।।

इन चबूतरों की किनार पर रत्नजड़ित कठेड़ों की शोभा है, जिससे दोनों चबूतरों पर नूरमयी बैठक बन गयी है । प्रत्येक चबूतरे पर अनेक रंगों के रत्न जगमगाते हुए दिखायी दे रहे हैं । इस शोभा को दर्शाने के लिये ही चबूतरों की शोभा का पुनः वर्णन किया है ।

ए जो कहे चार द्वार, ता आगे आठ चबूतर ।
हर चबूतरों चार थम्भ, एक गुरज बनी ता पर ।।७।।

यह जो चारों दिशा के चार बड़े दरवाजे कहे गये हैं, इनके आगे (बाहरी तरफ) कुल ८ चबूतरे हैं । उनमें से प्रत्येक चबूतरे में ४ स्तम्भ हैं, जो एक गुर्ज के रूप में ऊपर की तरफ जा रहे हैं ।

यूं आठ चबूतरे बाहिर, ऐसे ही आठ बने अन्दर ।
गोख कठेड़ा छज्जे बेठक, मानो बने नूर मंदिर ।।८।।

जैसे ८ चबूतरे चारों दरवाजों में बाहरी तरफ हैं, वैसे ही ८ चबूतरे अन्दर की तरफ आये हैं, जिनके ऊपर गोख, कठेड़ा व छज्जे बैठक के रूप में शोभायमान हैं । ऐसे प्रतीत होता है, जैसे नूरमयी जगमगाते हुए मंदिर बने हुए हैं ।

ए द्वार पुखराज माफक, चबूतरा तिन माफक ।
छज्जे बने तिन माफक, जहां बैठक करत हैं हक ।।९।।

ये चारों बड़े दरवाजे पुखराज पहाड़ के अनुसार ऊंचे आए हैं और दरवाजों के अनुसार चबूतरे भी ऊंचे आये हैं, जहां विद्यमान होकर श्री राजश्यामा जी अनेक प्रकार से हांस-विलास करते हैं ।

इन दोनों चबूतरों, चौक पड़ा दरम्यान ।
चढ़ती बाहिर सीढ़ियां, अन्दर उतरती पेहेचान ।।१०।।

बड़े दरवाजों के सामने स्थित दोनों चबूतरों के मध्य, उतना ही लम्बा चौड़ा चौक है। जहां सामने से बाहरी तरफ से ३-३ सीढ़ियां चढ़ी हैं, और अंदर की तरफ से ३-३ सीढ़ियां उतरी हैं ।

इन द्वार उपर कही चांदनी, सो चौड़ी एक हांस भर ।
तिन पर बन्या कठेड़ा, सो कह्या मोमिन खातर ।।११।।

इन ५ भोम ऊंचे बड़े दरवाजों के ऊपर एक हाँस लम्बी-चौड़ी छठी चाँदनी की शोभा आई है, जिसके अन्दर व बाहर की तरफ कठेड़े की शोभा है । इसका वर्णन ब्रह्मात्माओं के लिये किया है (छठी चांदनी से १० वीं चांदनी तक महलों की एक समान शोभा आयी है) ।

ए जो चांदनी हवेलिन की, तहां से ए ऊंची जान ।
दोए बंगलों सीढ़ियां बनी, ताकि करो पेहेचान ।।१२।।

हजार हांस की हवेलियों की जो छठी चांदनी है, उसकी अपेक्षा चारों दरवाजों की चांदनी ज्यादा ऊंची (१० भोम) है । दरवाजे की सातवीं भोम से दोनों तरफ हवेलियों की छठी चांदनी पर भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं ।

हवेली की चांदनी से, चांदनी बड़े द्वार ।
तहां दरम्यान बनी सीढ़ियां, जित नित होत बिहार ।।१३।।

हवेलियों की चाँदनी से बड़े दरवाजों की चाँदनी ज्यादा ऊंची आई है, उनकी संधि में (हवेलियों की छठी चांदनी से दरवाजों की सातवीं चांदनी के मध्य) सीढ़ियां बनी हैं, जहां नित्य प्रति आनंद की लीलाएं होती हैं ।

ऐसी ही चार द्वार पर, सारी जुगत एक जान ।
शोभा सब बराबर, ताकी करो पेहेचान ।।१४।।

चारों बड़े दरवाजों के ऊपर संपूर्ण शोभा व बनावट इसी प्रकार एक समान आयी है, उसकी पहचान कीजिये ।

कहूं जमा चबूतरन की, दोए बाहिर अन्दर दोए ।
हर एक पर चार थम्भ, सोले हजार भए यूं कर सोए ।।१५।।

अब संपूर्ण चबूतरों की गणना कहूंगा, दरवाजों के अन्दर व बाहरी तरफ २-२ चबूतरे आए हैं । प्रत्येक चबूतरे में ४-४ स्तम्भ आए हैं । एक हवेली के अंदर व बाहर के चबूतरों के मिलाकर १६ स्तम्भ हुए, जिनके हजार हांस के कुल १६००० स्तम्भ होते हैं ।

द्वार एक हजार कहे, ऐसे ही अंदर हजार ।
ताकी जमा गुरज चार हजार, जित नित होत बिहार ।।१६।।

१००० हांस में १००० दरवाजे बाहर की तरफ और १००० दरवाजे अंदर की तरफ आये हैं । उनके चौरस गुर्ज अंदर-बाहर के कुल मिलाकर ४,००० होते हैं, जहां नित्य ही आनंद की लीलाएं होती हैं ।

गृद कही जो चांदनी, तिन गिरद फिरती हवेलियों हार ।
चारों थम्भ तले से, निकसे चांदनी पर निहार ।।१७।।

पुखराज की चाँदनी में चारों तरफ किनार पर हजार हांस में घेरकर चार हार हवेलियां आयी हैं । पुखराज पहाड़ के नीचे चबूतरे से जो चार आधार स्तम्भ रूप महल ऊपर गये हैं, वे हजार भोम ऊपर चांदनी में निकलते हैं, उनकी शोभा देखिये।

ए हवेलियों के निकट हैं, ए जो बड़े थम्भ चार ।
ए ऊंचे निकसे आसमान लों, इन में कई सुख नित बिहार ।।१८।।

ये जो चारों आधार स्तम्भ रूप बड़े महल हैं, वे आकाशी महल की हवेलियों के अंतर्गत हैं । ये हवेलियां आकाश (और १००० भोम) तक ऊंची गयी हैं, जहां लीला विहार करने में अनंत प्रकार के सुख हैं ।

कई मोहोल छज्जे कठेड़ा, कई चांदनिआं चढ़ती जोर ।
थम्भ माफक मोहोल है, बिन मोमिन ना देखे और ।।१९।।

आकाशी महल में अनेकों महल, छज्जे, कठेड़े शोभायमान हैं, जो कि चांदनी पर, ऊपर आकाश की तरफ जाते दिख रहे हैं । यहां स्तम्भ महलों के अनुसार ही हैं, जिन्हें ब्रह्मात्माओं के सिवा अन्य कोई नहीं देख पाता है ।

कई इन चांदनी पर, कई चेहबच्चे बाग वन ।
कई नेहेरे चलत हैं, सो झलकत नूर रोशन ।।२०।।

पुखराज पहाड़ की चाँदनी पर (आकाशी महल के चारों ओर) कई वन, बगीचे, चेहेबच्चे हैं व अनेकों नहरें चल रही हैं, जिनकी नूरमयी रोशनी चारों ओर झलकार कर रही है ।

एही चांदनी गृद कही, जाको लाख जोजन विस्तार ।
इत कई भाव मोहोल बने, करे जुगल सरूप बिहार ।।२१।।

पुखराज की हजार भोम ऊपर इस चाँदनी की गृद (परिधि) ४ लाख कोस (एक लाख योजन) की है । जिसके ऊपर बने कई प्रकार के महलों में युगल स्वरूप विहार करते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, कही चांदनी बड़े द्वार ।
आगे और केहेत हों, जो मोहोल आकाशी सुखकार ।।२२।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथजी ! चाँदनी के बड़े चारों दरवाजों की शोभा का वर्णन किया है । अब आगे सुखदायी आकाशी महल का वर्णन करूंगा।

प्रकरण ५२ चौपाई २३७१

पुखराज पहाड़ के आकाशी मोहोल

इन चांदनी दरम्यान में, मोहोल आकाशी नूर ।
एक सौ आठ गुरज कहे, नेक कहूं ताको जहूर ।।१।।

पुखराज पहाड़ के १००० हाँस की चाँदनी के मध्य तीसरे हिस्से में १,००० भोम ऊंचा नूरमयी आकाशी महल शोभायमान है, जिसके चारों तरफ १०८ गुर्ज (१०४ चौखुंटे गुर्ज व ४ गोल गुर्ज) विद्यमान हैं । उनकी शोभा का थोड़ा सा वर्णन किया जायेगा।

जहां लों विस्तार पेड़ का, थम्भ मूल चल्या पुखराज ।
तहां असवारी आवत, हादी रूहें संग राज ।।२।।

पुखराज पहाड़ के मूल में आये आधार स्तम्भ रूप महलों का इस आकाशी महल तक विस्तार है । यहां अनेक प्रकार के बड़े बड़े पशुओं पर सवारी की लीला करने के लिये श्री राज श्यामा जी व सखियां आते हैं ।

ऊपर चौरस हवेली, सो कही पेड़ माफक ।
कहूं ताको बेवरा, ए दिया बकसीस हक ।।३।।

आकाशी महल में आधार स्तम्भों (महलों) के ऊपर उतनी ही लम्बी-

चौड़ी हवेलियां आयी हैं । यहाँ उसका वर्णन करेंगे, जो राजजी ने कृपा कर पहचान दी है ।

ए हवेली है चौरस, चार गुरज कोनो चार ।
चारों तरफों चार द्वार हैं, करे जुगल सरूप बिहार ।।४।।

आकाशी महल की हवेलियां चौरस हैं, जिनके चारों कोनों में चार गोल गुर्ज शोभायमान हैं । तथा चारों दिशा में चार द्वार हैं, जहां युगल स्वरूप लीला विहार करते हैं ।

हर एक द्वार आगे, बने चबूतरे दोए ।
हर चबूतरे चार थम्भ, दोए दीवाल लगते कहे सोए ।।५।।

प्रत्येक दरवाजे के आगे (दायें-बायें) २ चबूतरे आये हैं । हर चबूतरे पर (चारों कोनों में) ४-४ स्तम्भ हैं । उनमें से दो स्तम्भ दीवार से लगते हुए (अक्शी) हैं ।

दोए चबूतरे किनार पर, ता पर बनी जो छात ।
दोनों पर दोए गुरज चली, ए क्यूं कहूं शोबा हक जात ।।६।।

तथा बाकी २ स्तम्भ चबूतरे की बाहरी किनार पर हैं । उन चारों स्तम्भों के ऊपर छत आई है, जिन पर स्तम्भ, महराबें, कठेड़े प्रत्येक भोम में आये हैं, जिससे दोनों चबूतरे, ऊपर गुर्ज के रूप में जाते दिख रहे हैं । श्री राज जी के ही स्वरूप (सच्चिदानंद) इन गुर्जों की शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

हर भोम छज्जे चले, दोए गुरजों दरम्यान ।
द्वार बड़े पर द्वार चढ़ता, सो मोमिन करो पेहेचान ।।७।।

दोनों गुर्जों के मध्य प्रत्येक भोम में छज्जे आये हैं । बड़े दरवाजे पर बड़ा दरवाजा ऊपर तक प्रत्येक भोम में आया है । हे सुंदरसाथ जी ! आप उसकी पेहेचान कीजिए ।

हर एक गुरज पर, चारों तरफ द्वार बने चार ।
एक पड़ा दिवाल तरफ, सो क्यूं कर कहूं सुमार ।।८।।

प्रत्येक गुर्ज में चारों तरफ ४ महराब (महराबी द्वार) आए हैं । एक महराब पीछे दीवार की तरफ (अक्शी) आया है जो अपरम्पार शोभा से युक्त है ।

एक पड़ा दिवाल तरफ, दोए दांए बाएं होए ।
एक पड़ा तरफ बाहिर, शोभा कही न जाए सोए ॥९॥

गुर्ज पर आये चार महराबों में से एक महराब पीछे दीवार की तरफ है, दो महराबें दायें-बायें हैं तथा एक महराबी द्वार सामने बाहर की तरफ हैं । यह शोभा अवर्णनीय है ।

यूं चढता चला आसमान में, याको मोहोल आसमानी नाम ।
यूं ही तीनों द्वार पर, ठौर बनी इस ठाम ॥१०॥

इस प्रकार गुर्ज व महल एक के ऊपर एक आकाश तक गये हैं, इसका नाम ही आकाशी महल है । अन्य तीन दिशाओं के मुख्य दरवाजे की शोभा भी इसी प्रकार है ।

इत कमाड़ है कंचन, भए सब द्वार के जमा ।
चौक पड़ा आगे द्वार के, सीढ़ी चढ़ती लग आसमान ॥११॥

इन सभी दरवाजों के किवाड़ कंचन के हैं । दरवाजों के आगे चौक सुशोभित हैं, जहां से सीढ़ियाँ आसमान (चांदनी) तक गई हैं ।

मोहोल से आवे उतरती, झलके सीढ़ीयां नूर रोशन ।
चढ़ के अन्दर जावना, होए ना बिना मोमिन ॥१२॥

महलों से उतरती हुई नूरमयी सीढ़ियां अत्यंत झलकार करती हैं । ब्रह्मात्माओं के बिना सीढ़ियाँ चढ़कर अन्दर जाना किसी और के लिये संभव नहीं है ।

ए जो चौक दिवालों चारों तरफ की, तहां हर दिवाल तेरे द्वार ।
छे दाएं छे बाएं बने, बड़ा दरवाजा बीच विचार ॥१३॥

आकाशी महल के चारों तरफ दीवार है, जिसमें प्रत्येक दिशा में १३-१३ दरवाजे आए हैं । मध्य के बड़े दरवाजे के दोनों ओर (दायें-बायें) ६-६ दरवाजे शोभा ले रहे हैं ।

यूं तेरे चोकों बावन, भए द्वार चारों तरफ ।
ए बिहार नूर जमाल का, कहयो जाए ना एक हरफ ॥१४॥

इस प्रकार चारों तरफ के कुल ५२ (१३x४) दरवाजे हुए । यह अद्वितीय सौंदर्यवाले अक्षरातीत के लीला विहार का स्थान है, जिसकी शोभा में

एक शब्द भी कहना सम्भव नहीं है ।

यूं हर द्वार आगे, कहे चबूतरे दोए ।
तापर दोए गुरज बने, एक सौ चार भए सोए ॥१५॥

इसी प्रकार (चारों दिशा के बड़े दरवाजे के समान) इन सभी दरवाजों के आगे २-२ चबूतरे आए हैं । जिन पर स्तम्भ, महराब व कठेड़े प्रत्येक भोम में आते गये हैं, जिससे वे दो चौरस गुर्जों के समान शोभायमान हो रहे हैं । आकाशी महल के चारों दिशा के (५२ दरवाजों के) कुल १०४ चौरस गुर्ज होते हैं ।

और चार गुरज गोल कोने के, यूं एक सौ भए आठ ।
एह हक के दिल माफक, मोहोल आसमानी ठाट ॥१६॥

इनके अतिरिक्त चारों कोनों में चार गोल गुर्ज हैं, जिन्हें मिलाकर कुल १०८ गुर्ज होते हैं । आकाशी महल की यह सारी शोभा व ऐश्वर्य श्री राजजी के हृदय के अनुसार है ।

हर द्वार आगे दोए चबूतरा, चौक पड़ा दरम्यान ।
सीढ़ियां उतरती सबन के, ता की करो पेहेचान ॥१७॥

प्रत्येक दरवाजे के आगे स्थित २ चबूतरों के मध्य एक चौक आया है । उस चौक में अंदर से सीढ़ियां उतरी हैं । उसकी पहचान कीजिये ।

रौंस जे सब चबूतरन, गुरज दिवालों द्वार ।
ए सब ठौरों फिरवली, जहां नित होत बिहार ॥१८॥

आकाशी महल के चारों ओर रौंस पर ये चबूतरे, गुर्ज, दीवारें व दरवाजे चारों तरफ घेरकर आये हैं, जहां नित्य ही प्रेम व आनंदपूर्ण लीलाएं होती हैं ।

और जब द्वार से पैठिए, अन्दर तेरे हवेलियों हार ।
तेरे तेरे चारों तरफों, एक सौ उनत्तर सुमार ॥१९॥

इन सब दरवाजों से अंदर प्रवेश करें तो अंदर १३ हवेलियों की १३ पंक्तियां चारों तरफ से दिखती हैं । कुल १६९ हवेलियां होती हैं ।

ता में पचीस हवेली, ता को बड़ो विस्तार ।
ता में छे छे चारों तरफों, एक दरम्यान सुखकार ॥२०॥

उनमें से एक मध्य की व चारों दिशा की ६-६ मिलाकर कुल २५ हवेलियाँ, अन्य हवेलियों की अपेक्षा से बड़ी हैं ।

बड़े द्वार सामे बड़ा द्वार, छोटे सामे छोटा द्वार ।
जुगत छोटे बड़े जानियों, करे इत जुगल सरूप बिहार ।।२१।।

प्रत्येक हवेली के बड़े दरवाजे के सामने (सामने की दूसरी हवेली का) बड़ा दरवाजा व छोटे दरवाजे के सामने छोटा दरवाजा शोभायमान है । इस प्रकार छोटी व बड़ी हवेलियां सब साथ में आयी हैं, जहां युगल स्वरूप लीला विहार करते हैं ।

साम सामी हवेलियां, तिन द्वार सामी तेरे द्वार ।
इन हर एक हवेलियों, मंदिर नाहीं सुमार ।।२२।।

सभी हवेलियां आमने-सामने आयी हैं । हवेलियों की दो पंक्तियों के मध्य, १३ हवेलियों की १३ दरवाजों के सामने अगली पंक्ति की १३ हवेलियों के १३ दरवाजे आये हैं । इन सभी हवेलियों के अंदर बेशुमार मंदिर विद्यमान हैं।

इन हवेली दरम्यान, चली थम्भों की हार ।
हर मंदिर आगे दोए दोए, सुख देखन मोमिन हार ।।२३।।

इन सभी हवेलियों के मध्य स्तम्भों की दो दो पंक्तियां विद्यमान हैं । प्रत्येक मंदिर के आगे दो-दो स्तम्भ हैं, जिनका सुख सुंदरसाथ ही देखते हैं ।

हर हवेली आगे बने, चेहबच्चे फूलबाग वन ।
कई फुहारे उछरत, सो जानत दिल मोमिन ।।२४।।

प्रत्येक हवेलियों के आगे (पुखराज की चांदनी में) फूलों के बगीचे, चेहेबच्चे व वन शोभायमान हैं । उन चेहेबच्चों में कई फव्वारे उछल रहे हैं, जिसे ब्रह्मात्माओं का हृदय ही जानता है ।

इन हवेलियों आगे, पड़ी थम्भन की हार ।
हर हवेली द्वार सामे द्वार, साम सामे बने चबूतरे चार ।।२५।।

इन हवेलियों के आगे (हवेलियों की दो पंक्तियों के बीच) स्तम्भों की दो हारें शोभायमान हैं । प्रत्येक हवेली के द्वार व दोनों चबूतरों के सामने अगली पंक्ति के हवेली का द्वार व चबूतरे आये हैं, जिससे आमने-सामने कुल चार चबूतरे शोभायमान हैं ।

तहां पड़े चौबीस मेहेराब, हर दोए हवेलियों द्वार ।
जहां जुगल सरूप, नित्याने करत बिहार ।।२६।।

जहां आमने सामने हवेलियों के दरवाजे व चबूतरे आये हैं, वहां २४ महरावें शोभायमान हैं । यहां युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी प्रेम व आनंद पूर्वक नित प्रति लीला विहार करते हैं ।

यूं चार कोने हवेलिन के, पड़े मेहेराब चौबीस ।
हर ठौरो यूं देखियो, आवे हादी की बकसीस ।।२७।।

इसी प्रकार जहां ४ हवेलियों के कोने हैं, वहां भी (त्रिपोलियों की चौकड़ी पर) २४ महरावें शोभायमान हैं । सभी जगह ऐसी ही शोभा है, जो श्री श्यामा जी की कृपा से समझ में आता है ।

जहां दोए हवेलिन की, सामी पड़ी दरम्यान ।
तहां त्रिपोलिए बने, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।२८।।

जहां हवेलियों की दो हारें आमने सामने आयी हैं, वहाँ उनके मध्य में दो स्तम्भों की हार व तीन गलियां शोभायमान हैं, जिसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिल में रहती है ।

संधे दोए हवेलिन के, राह पड़ी दरम्यान ।
तहां एक गुरज उठा, गिनती अड़तालीस पेहेचान ।।२९।।

इस प्रकार हवेलियों की दो पंक्ति के मध्य जहां त्रिपोलिया आये हैं, वहाँ उनके सामने बाहरी रौंस पर चौरस गुर्ज उठे हैं । एक दिशा में १३ हवेलियों के मध्य १२ गुर्ज होते हैं, तब चारों दिशा के कुल मिलाकर ४८ गुर्ज होते हैं ।

ऐसे चारों तरफों, अड़तालीस त्रपोलिए होए ।
हर एक त्रपोलिए, एक गुरज बनी इत सोए ।।३०।।

आकाशी महल के चारों तरफ ४८ त्रिपोलियों के सामने ४८ गुर्ज विद्यमान हैं । जिन्हें त्रिपोलियों के गुर्ज कहते हैं ।

बारे द्वार हर गुरज में, साम सामे शोभाए ।
नव बाहेर तीन अन्दर, सो शोभा कही न जाए ।।३१।।

इन सभी (त्रिपोलियों के) गुर्जो में १२-१२ महरावें आयी हैं । जिनमें से नौ महरावें बाहरी ओर (तीन दिशा में) तथा तीन महरावें अंदर की

ओर हैं । इस प्रकार आमने–सामने शोभायमान इन गुर्जों की शोभा अवर्णनीय है ।

ऐसे ही छात चढ़ती चली, ऐसे ही थम्भ द्वार ।
ऐसे त्रपोलिए ऐसे गुरज, ऐसे छज्जों द्वार विस्तार ।।३२।।

त्रिपोलियों के गुर्जो पर इसी प्रकार छत के ऊपर छत, स्तम्भ व महरावों के ऊपर स्तम्भ व महरावें आयी हैं । वैसे ही त्रिपोलिये व गुर्ज ऊपर की भोमों में भी आये हैं । उसी प्रकार छज्जों व द्वारों का विस्तार है ।

ए चढ़ता चल्या उंचा, जाए पोहोंचा आसमान ।
शोभा इन मोहोल की, आवत नाहीं जुबांन ।।३३।।

इस प्रकार आकाशी महल की हवेलियाँ भोम पर भोम ऊंचे चढ़ते हुए आसमान (१००० भोम) तक पहुँच गई हैं । इन महलों की शोभा अकथनीय हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, ए मोहोल नाम आसमान ।
जो मेहेर करे मोमिन, तब होवे पेहेचान ।।३४।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुन्दरसाथ जी ! इस महल का नाम आकाशी महल है । यदि ब्रह्ममुनि कृपा करके किसी को यह ज्ञान दे दें, तो ही किसी को परमधाम की पहचान हो सकती है ।

प्रकरण ५३, चौ.२४०५

आकाशी महल के गुरजों का बेवरा

अब कहूं गुरज का, बेवरा जो विस्तार ।
गिनती एक सौ छप्पन, बेवरा मोमिन देखनहार ।।१।।

अब आकाशी महल में आये गुर्जो का विस्तार से वर्णन करता हूं। आकाशी महल के चारों ओर कुल १५६ गुर्ज आए हैं, जिनकी हकीकत ब्रह्मात्माएं जानती हैं ।

तामें चार गुरज चौकोना, और कहे द्वार बावन ।
हर द्वार आगे दोए दोए, एक सौ चार जमा रोशन ।।२।।

१५६ गुर्जों में से चार गुर्ज चारों कोनों के हैं, जो गोल हैं । चारों दिशा

में, जो ५२ दरवाजे कहे गये हैं, उनमें से प्रत्येक के सामने २-२ चबूतरे हैं । ५२ दरवाजों के कुल १०४ चौरस गुर्ज होते हैं ।

सब एक सौ आठ भए, अड़तालिस कहीं और ।
हर हवेली की हद पर, दिवाल लगती कहीं ठौर ।।३।।

चारों दिशाओं के १०४(५२x२) तथा चार कोनों के ४ गुर्ज मिलाकर कुल १०८(१०४+४) गुर्ज होते हैं । इनके अतिरिक्त ४८ गुर्ज ४८ त्रिपोलियों के सामने बाहरी दीवार से लगते हुए रौंस पर आए हैं । कुल मिलाकर १५६(१०८+४८) गुर्ज होते हैं ।

बारे बारे हर दिवाल में, ऐसी तरफों चार ।
ए हक हादी रूहें जानत, जो नित करें विहार ।।४।।

इस प्रकार बाहरी दीवार से लगकर प्रत्येक दिशा में १२-१२ त्रिपोलियां के गुर्ज हैं । यह सम्पूर्ण शोभा श्री राज श्यामा जी व सखियाँ जानती हैं, जो नित्य प्रति यहां लीला विहार करते हैं ।

हर भोम में छज्जे चले, द्वार थम्भ बैठक ।
थंभ पर थंभ चल गए, बने सब गुरजों बुजरक ।।५।।

प्रत्येक भोम में छज्जे, स्तम्भ, महरावें, बैठकें बनती गयी हैं । स्तम्भ के ऊपर स्तम्भ प्रत्येक भोम में आते गये हैं । इस प्रकार सभी गुर्ज एक के ऊपर एक बनते गये हैं ।

यामें चौरस गुरजों पर, बन्या गुमट चौरस ।
गिरद लटकता छज्जा बन्या, उपर कह्या कलश ।।६।।

हजार भोम ऊपर आकाशी महल की चांदनी में १०४ चौरस गुर्जों पर १०४ गुम्मट शोभायमान हैं । इसके चारों तरफ किनार पर लटकता छज्जा बना है, और गुम्मट के ऊपर कलश शोभायमान है ।

और गोल गुरजों पर, बन्यों चांदनी जोर ।
सब ठौरो खुली कांगरी बनी, फिरत कांगरी कही और ।।७।।

चारों कोनों के गोल गुर्जो के ऊपर अत्यंत रमणीय चाँदनी आयी है । (गुम्मट नहीं है, खाली स्थान बैठक के रूप में है) खुली चाँदनी के चारों तरफ किनार पर कांगरी शोभायमान है । इसी प्रकार सम्पूर्ण चांदनी की किनार पर भी

कांगरी विद्यमान है ।

उपर बनी चरनी, सो सब ठौरो शोभाए ।
दीवाल कांगरी सब में, सो जुबां आवत नाहीं ।।८।।

चाँदनी के चारों ओर किनारे भोम भर ऊंची दीवार आयी है (जो परिक्रमा के लिये चौड़ी है), जिस पर चढ़ने के लिये जगह-जगह सीढ़ियाँ बनी हैं । दीवार की किनार पर काँगरी सब जगह आयी है । यह शोभा अवर्णनीय है ।

मध्य मिने बड़ा चबूतरा, दरम्यान सिंघासन ।
हक हादी रूहें बैठत, होत आसमान रोशन ।।९।।

आकाशी महल की चाँदनी के मध्य में एक बड़ा (लम्बा–चौड़ा कमर भर ऊंचा) चबूतरा आया है, जिस पर सिंहासन शोभायमन हो रहा है । श्री राजश्यामाजी एवं सखियां जब यहां विराजमान होते हैं, तो ऊपर सारा आसमां जगमगा उठता है ।

हर मंदिर के बने, गोख थम्भ गुमटी बनी ।
सो हर भोमों फिरत गृदवाए, है मोमिनों अपनी ।।१०।।

सभी मंदिरों (हवेलियों) की प्रत्येक भोम में चारों तरफ गोख, स्तम्भ, गुर्ज व ऊपर गुम्मटियाँ शोभा ले रही हैं । यह सब ब्रह्मात्माओं की अपनी न्यामत है ।

प्रकरण-५४, चौपाई २४१५

पुखराज पहाड़ के आठ पेड़ (पुखराजी ताल) का बेवरा

कहूं पेड़ आठमा, पहाड़ी लगती पुखराज ।
असवारी कर आवत, हादी रूहें संग राज ।।१।।

पुखराज पहाड़ के आठवें पेड़ (पुखराजी ताल) की शोभा कहूंगा, जो पुखराज पहाड़ से लगते हुए उसके पूर्व दिशा में आया है । यहां सुखपालों में सवार होकर श्री राज श्यामाजी व सखियां विहार करने आते हैं ।

पुखराज लाख जोजन लों, ऊंचा लग आसमान ।
ताके आगे लों ए आइयां, ता मध्य ताल पेहेचान ।।२।।

पुखराज पहाड़ एक लाख योजन (४ लाख कोस) ऊंचा आसमान तक शोभा ले रहा है। उसके आगे (पूर्व में) महलों के बीच पुखराजी ताल सुशोभित है ।

ताके चारों तरफ मोहोल, बने हैं सब ठौर ।
ताको बेवरा देखत, बिना मोमिन न जाने कोई और ।।३।।

पुखराजी ताल के चारों तरफ जेवरों (जवाहरातों) के महल आए हैं, जिसका विवरण ब्रह्मात्माओं के सिवाए कोई नहीं जानता ।

ए पहाड़ चौथे हिस्से लों, पुखराज की जान ।
ऐसी चार तरफों जमा, लाख जोजन पेहेचान ।।४।।

पुखराज पहाड (४ लाख कोस-१००० हांस) के चौथे हिस्से (१ लाख कोस-२५० हांस के लम्बे चौड़े जगह) में पुखराजी ताल शोभा ले रहा है, जिसकी गृद (परिधि) ४ लाख कोस (एक लाख योजन) की आई है ।

एह पहाड़ को तलाब चौरस, चारों हांस बराबर ।
ता के मध्य में ताल है, सो शोभा सब उपर ।।५।।

पुखराज पहाड़ का यह तालाब चौरस है, जिसके चारों हाँस बराबर हैं । महलों के मध्य पुखराजी ताल है, जिसकी शोभा सर्वोपरि है ।

ए जो आई चांदनी, चांदनी से बीस भोम नीची जान ।
ए बीसो भोम मोहोल बने, ताकी कहूं पेहेचान ।।६।।

पुखराज पहाड़ की हजार भोम ऊपर स्थित १००० हाँस की चाँदनी से २० भोम नीचे (९८० भोम ऊपर) पुखराजी ताल शोभा ले रहा है। पुखराजी ताल के चारों ओर इन २० भोमों में (२० भोम ऊंचे) जेवरों के महल शोभायमान हैं । अब उसकी शोभा का वर्णन करेंगे ।

बीस भोम तले जल है, मोहोल बने तरफ चार ।
ता मे बड़ा मोहोल लगता, पुखराज के सुखकार ।।७।।

पुखराजी ताल के चारों ओर २० भोम ऊंचे जवेरों के महल शोभायमान हैं । महलों की चांदनी से देखने पर २० भोम नीचे पुखराजी ताल दिखायी पड़ता है । पश्चिम दिशा में पुखराज की चांदनी पर स्थित मनोहारी आकाशी महल

दिखायी पड़ता है ।

तापर बनी है चांदनी, सो गृद छज्जे बराबर ।
ए छज्जा चांदनी एक भए, ए शोभा सब ऊपर ।।८।।

पुखराजी ताल के चारों ओर जवेरों के महलों की २० भोम २१ वीं चांदनी बनी है, यह २१ वीं चांदनी पुखराज पहाड़ के चारों ओर आये ४०० कोस के छज्जों के बराबर ऊंचा है ।

ए जो चार द्वार बड़े पुखराज के, तामे का एक द्वार पड़ा इत ।
ता आगे दोए चबूतरा, दोए अन्दर चबूतरे जित ।।९।।

पुखराज पहाड़ की चांदनी में चारों दिशा में किनार पर जो चार बड़े दरवाजे आये हैं, उनमें से एक पूर्व दिशा का बड़ा दरवाजा पुखराजी ताल की तरफ आया है । उस बड़े दरवाजे के बाहरी व भीतरी तरफ दो-दो चबूतरे शोभायमान हैं ।

चारों गुरजे इत बनी, चारों चबूतरों पर जो छात ।
हर चबूतरे चार थम्भ, हर गुरज छात चल्या जात ।।१०।।

उन चारों चबूतरों पर गुर्जों के रूप में प्रत्येक भोम में छत, ४ स्तम्भ व कठेड़ों की शोभा है ।

दोए चबूतरों बीच देहेलान, बनी दोए चबूतरों दरम्यान ।
कठेड़ा चारों चबूतरों पर, ताकी छातों पर छात जान ।।११।।

दो चबूतरों के बीच (पूर्व में) दहलान (पुखराजी ताल के पश्चिम की दहलान) की शोभा आई है । बड़े दरवाजे के बाहर व भीतर के चारों चबूतरों पर कठेड़ा शोभायमान है, जिनके छत (भोम) पर छत (भोम) आते गये हैं ।

ताके द्वार आगें उतरती, सीढ़ियां ऊपर आई देहेलान ।
दोए दाए बाए आए, बड़े चबूतरे पेहेचान ।।१२।।

पूर्व के बड़े दरवाजे के आगे जो सीढ़ियां उतरी हैं, वह पुखराजी ताल के पश्चिम के दहलानों के सामने उतरी हैं । उन सीढ़ियों के दायें-बायें दो बड़े चबूतरे आये हैं ।

ए जो चबूतरा ताल पर, गृद फिरा सब ठौर ।
तीनों तरफों वन है, जुगत देखी कहूं और ।।१३।।

पुखराजी ताल के चारों तरफ जो चबूतरा विद्यमान है, उसमें तीन दिशाओं में (जवेरों के महलों के बाहरी व भीतरी तरफ) वनों की शोभा है । उसकी बनावट जो मैंने देखी है, उसे आगे कहता हूं (ताल के पूर्व व पश्चिम में ८ स्तम्भों की १४ हारें दहलान के रूप में शोभायमान हैं । इसके अतिरिक्त बाकि सभी जगह जवेरों के महलों के बाहरी व भीतरी तरफ बड़ोवन के वृक्षों की ५-५ हारें शोभायमान हैं) ।

दोए पेड़ लगे चबूतरे, कठेड़ा ताके दरम्यान ।
नाहीं दरखत तरफ एक, सो तरफ पुखराज की जान ।।१४।।

पुखराजी ताल के दोनों तरफ वृक्षों की एक-एक पंक्तियां चबूतरे की किनार पर लगी हैं, जहां चबूतरे के किनार पर कठेड़े की शोभा है । पुखराज पहाड़ की तरफ (पश्चिम दिशा में) वृक्ष नहीं आये हैं ।

ए जो चल्या चबूतरा, चारों तरफों गृदवाए ।
दोए गुरजों बीच वन रही, इत मानो द्वार दिखाए ।।१५।।

पुखराजी ताल के चारों तरफ यह जो चबूतरा घेर कर आया है, उस पर पूर्व व पश्चिम के दोनों दहलानों के मध्य (जवेरों के महलों के दोनों तरफ) बड़ोवन की शोभा है । वृक्षों की डालियां आपस में मिलकर सुंदर महराबी द्वार के रूप में शोभायमान हैं ।

वन फिरता आया चबूतरा, हद बनी लग गुरज ।
दोनों बाजू आए मिल्या, देख मोमिन दिल गरज ।।१६।।

ताल के चबूतरे पर चारों तरफ घेरकर दोनों दहलानों के मध्य वन आया है। यह वन दहलानों के दोनों बाजू से आकर मिला है । ब्रह्मात्माएं हृदय की जिज्ञासा पूर्वक इसका ध्यान करते हैं ।

प्रकरण-५५, चौपाई-२४३१

पुखराजी ताल का बेवरा

ए जो ताल पहाड़ी पर, ताके चारों तरफों चबूतरा ।
ताके दोए हिस्से जवेर वन, बीच मोहोल रखो दिल पर ।।१।।

यह जो पुखराजी ताल पहाड़ के ऊपर शोभायमान है, उसके चारों तरफ चबूतरा (९८१ वी चांदनी) शोभायमान है । उसके चौड़ाई में तीन हिस्से हैं, जिसमें से मध्य के एक हिस्से में जेवरों के महल हैं तथा इसके बाहरी व भीतरी तरफ दो हिस्सों में जवाहरातों के वन शोभायमान हैं ।

ए तीनों हिस्से बराबर, मोहोल बीच दोए हिस्से बन ।
तीनों हिस्से बराबर, मोमिन दिल रोशन ।।२।।

चबूतरे के तीनों भाग बराबर हैं । मध्य के एक हिस्से में महल व बाहरी–भीतरी तरफ के दो हिस्सों में बड़ोवन की शोभा है । इसकी शोभा ब्रह्मप्रियाओं के दिलों में बसी होती है ।

ए बीस भोम उपरा ऊपर, गृद फिरी चांदनी आए ।
ए जो बड़े द्वार आगे छज्जो चांदनी, ताए मिली सुखदाए ।।३।।

महलों व वृक्षों के २० भोम एक के ऊपर एक शोभायमान हैं । इनकी एक ही २१ वीं चांदनी चारों तरफ आयी है (बीच में ताल खुला है) । पुखराज पहाड़ के पूर्व के बड़े दरवाजे के आगे जो छज्जा विद्यमान है, उससे यह (जवेरों के महलों व वनों की २१ वी) चांदनी मिली है ।

ए जो छज्जा निकलता, आगे बड़े द्वार ।
तिन बराबर चली चांदनी, कहे बनी तरफ चार ।।४।।

पुखराज के पूर्व के बड़े दरवाजे के आगे यह जो छज्जा निकला है, जवेरों के महलों की २१ वीं चांदनी भी, उसी के बराबर ताल के चारों ओर आयी है ।

आए दोए गुरज दरम्यान में, सोई बन्या बड़ा द्वार ।
आए निकलते किनारे चबूतरे, इन गुरजों बड़ो विस्तार ।।५।।

पुखराज के पूर्व में दोनों गुर्जों (चबूतरों) के मध्य बड़े दरवाजे की शोभा है। उनके आगे छज्जे निकले हैं। इन गुर्जों का बहुत विस्तार (ऊंचे) है।

चार घड़नाले तले चबूतरे, जित पड़या दोए गुरज दरम्यान ।
इत सात मेहेराब पड़े, चार घड़नाले बीच तिन जान ।।६।।

पूर्व के बड़े दरवाजे के चबूतरों के नीचे चार घड़नाले (नहरें) विद्यमान हैं, जिनके ऊपर सात महरावें हैं, इन चार घडनालों में चार नहरें प्रवाहित हो रही हैं (इन चार घड़नालों का पानी पुखराजी ताल के पश्चिम की दहलान की २१ वी चांदनी के भीतर गुप्त रूप से आगे बढ़कर ताल पर २० भोम ऊपर से गिरता है।

बड़े द्वार सामें इन गुरजों का, इहां पड़ा मानों द्वार ।
ताकी जुगत देखियों, जित नित होत बिहार ।।७।।

पुखराज के पूर्व के बड़े दरवाजे के सामने इन गुर्जों (चबूतरों) के नीचे गुप्त द्वार बना है, जिससे पानी गुप्त रूप से दहलानों की चांदनी में आता है । उसकी शोभा देखिये, जहां नित्य ही लीला विहार होता है ।

आगे दोए गुरज कहे, साम सामे मुकाबिल ।
इत चारों बीच मोहोल बन्या, वहे बीच घड़नाले निरमल ।।८।।

आगे पुखराजी ताल के पूर्व में जो दहलान आयी है, वह अधबीच के कुण्ड के पश्चिम के दहलान से मिलकर १००० भोम तक गयी है । इसके पूर्व व पश्चिम दोनों तरफ कोनों में दो-दो गुर्ज विद्यमान हैं, जिनके मध्य ८ स्तम्भों की १४ हारें महल के रूप में शोभायमान हैं । उनमें आठ स्तम्भों के मध्य ७ दहलानें बनी हैं, जिनमें से एक छोड़कर एक चार दहलानों में चार घड़नाले बनी हैं, जिनमें चार नहरों के रूप में निर्मल जल प्रवाहित हो रहा है।

दोए बाजू हार थम्भन की, बीच घड़नालों जाए ।
तहां कठेड़ा बैठक, यूं ही चारों घड़नालो पर सुखदाए ।।९।।

एक छोड़कर एक चार दहलानों में घड़नालों का जल (कमर भर गहरी नहरों के रूप में) प्रवाहित हो रहा है । प्रत्येक घड़नालों के दायें-बायें कठेड़ा शोभायमान है । प्रत्येक दो घड़नालों के मध्य एक खाली दहलान बैठक के रूप में शोभायमान है ।

तथा भोम पर छात बनी, सो गिनती उनीस लों होए ।
बीसमी बनी चांदनी, कठेड़ा गृद फिरता सोए ।।१०।।

पुखराजी ताल के पूर्व के दहलान की भोम के ऊपर भोम १९ छतें हैं, व २० वी चांदनी की छत है (कुल २० छते हैं, यानि २१ वी चांदनी है) । इन सभी भोमों में दहलानों की किनार पर कठेड़े की शोभा है ।

यूं सात मेहेराब आगे कहे, त्यूं ही दोए गुरजों दरम्यान ।
ऐसे ही सात मेहेराब पड़े, तले चारों घड़नाले पेहेचान ॥११॥

जैसे दो गुर्जो के मध्य सात मेहराब (आठ दहलानों के मध्य) पहले कहे गये हैं, उसी प्रकार अधबीच के कुण्ड के पश्चिम के दहलानों में भी आठ स्तम्भों की १४ हारें (सात दहलानं) विद्यमान है, जिनके मध्य एक छोडकर एक क्रमशः चार दहलानों में चार घडनाले से जल प्रवाहित हो रहा है (जल पुखराजी ताल से आकर पूर्व की ओर जा रहा है) ।

इत छे हार थम्भन की, तीन दातों पर ।
चार घड़नाले बीच में, कहे मोमिनों की खातर ॥१२॥

स्तम्भों की कुल ८ पंक्तियां हैं, जिनमें से दो पंक्तियां दोनों किनारों पर तथा ६ पंक्तियां मध्य में हैं । उनमें से एक छोड़कर एक चार दहलानों में चार घड़नाले हैं और तीन दहलानें घड़नालों के दायें बायें बैठक के रूप में शोभायमान हैं ।

तीन मेहेराब ता बीच में, तिन से चलिए जब ।
तब नेहेरे दोए बाजू देखिए, चारों घड़नाले जब ॥१३॥

चार घड़नालों के मध्य स्थित तीन दहलानों (महाराबों) में होकर जब पूर्व दिशा में बढ़ते हैं, तो दोनों तरफ (दायें-बायें) नहरें प्रवाहित होती दिखायी देती हैं ।

इत चढ़त उतरत पगथी कही, गिनती भी कही चार ।
हर एक नल चार छत्र बनी, चार चौक सोले सुमार ॥१४॥

अधबीच के कुण्ड के पश्चिम में स्थित दहलानों की ९७८ भोम से लेकर ९८१ भोम तक चार छज्जे उल्टी सीढ़ियों के रूप में आये हैं (चारों छज्जे क्रमशः ४०० कोस, ८०० कोस, १२०० कोस, १६०० कोस के आये हैं) । ९८१ भोम के छज्जे से ४ नहरों का पानी ४ नल के द्वारा नीचे के तीनों छज्जों पर उतरता है । इस प्रकार चारों छज्जों से ४-४ धारायें - कुल १६ धाराएं ४८० भोम नीचे अधबीच के कुण्ड में गिरती हैं ।

सो सोले चादरे गिरत हैं, तले कुण्ड के जब ।
इन छातों परदक्षिणा दीजिए, सब तले भासत है तब ।।१५।।

जब १६ धारायें नीचे (जमीन से लगभग ५०० भोम ऊपर स्थित) अधबीच के कुण्ड में गिरती हैं, तब इस शोभा को दहलानों की सभी भोमों से देखने पर अत्यंत सुंदर दृश्य दिखायी देता है ।

प्रकरण-५६, चौपाई-२४४६

पुखराजी ताल की पाल का बेवरा

इन ताल की पाल पर, चारों तरफ मंदिर ।
तिनका बेवरा देख के, आओ मोमिन अन्दर ।।१।।

पुखराजी ताल के चारों तरफ पाल पर अनेक प्रकार के महलों (मंदिरों) की शोभा है । उसका विवरण समझ के सुंदरसाथ जी अब उसके अंदर आ जाईये।

पुखराज तरफ के मंदिर, ताकी भोम है बीस ।
तिन मेहेराब छज्जे चले, ए पाइए हक बकसीस ।।२।।

पुखराज पहाड़ की तरफ जो महल (दहलान) आये हैं, उनकी बीस भोम २१ वी चांदनी है । वहां ८ स्तम्भों की १४ हारों पर महराबें व छत एक के ऊपर एक आते गये हैं । यह शोभा श्री राजजी की कृपा से ही समझ में आती है ।

इनके फिलपाए मेहेराब, छातों पर बनी छात ।
दूर चांदनी लों चलता, कहूं कठेड़ा बैठक बात ।।३।।

इन दहलानों के स्तम्भ फीलपाये (हाथियो के पैरों) के समान (मोटे) हैं, जिन पर महराब के ऊपर महराब, छत के ऊपर छत २० भोम तक आये हैं । जिनकी किनार पर कठेड़े की शोभा है, जिससे यहां कठेड़ा बैठक की सुंदर शोभा बन गयी है ।

सब ठौर कठेड़ा बने, हर भोम पर झलकत नूर ।
सिफत इन बैठक की, क्यूं कर कहूं जहूर ।।४।।

प्रत्येक भोम में किनार पर सभी जगह नूरमयी कठेड़े आये हैं । प्रत्येक

भोम में स्तम्भों की नूरमयी रंगबिरंगी किरणें झलकार कर रही हैं । इस बैठक की शोभा किस प्रकार कहूं ?

ए सब द्वार थम्भ देखाई देत हैं, बनी पाल झरोखे सब ।
हक हादी रूहें रमन के, संग सुख देखिए तब ॥५॥

ये सब स्तम्भ व महराबें (महराबी द्वार) पाल पर से दिखायी देते हैं । ये दहलानें झरोखे के समान ताल के सामने पाल पर शोभायमान हैं । श्री राज श्यामा जी एवं सखियां जब रमण के लिये आते हैं, तब यहां का आनंद पता चलता है ।

एक कठेड़ा उपर चांदनी, और तले कठेड़ा चबूतर ।
ए हक हादी की बैठक, एह शोभा सब उपर ॥६॥

एक तो ताल के चारों तरफ चबूतरे (पाल) की किनार पर (ताल की तरफ) कठेड़ा है, दूसरा ऊपर चांदनी में चारों तरफ से ताल पर आये छज्जों की किनार पर भी कठेड़ा शोभायमान है । इस प्रकार श्री राजश्यामा जी की बैठक की यह शोभा सर्वोपरि है ।

कहूं दाएं बाएं दोए असलें, उत्तर दक्खिन दिस मोहोलात ।
साम सामी जवेर जंग करें, सब चेतनता हक जात ॥७॥

अब ताल के दायें-बायें (उत्तर-दक्षिण) में आये जवेरों के महलों की शोभा का वर्णन करेंगे । आमने-सामने से दोनों तरफ के जवाहरातों के महलों से रंगबिरंगी तेजोमयी किरणें निकलकर आपस में टकराती हुयी जंग करती प्रतीत होती हैं । क्योंकि ये सब चेतन व श्री राजजी के समान सच्चिदानंद स्वरूप हैं ।

दोए हांसो दोनों तरफों, बन्या जे दरखत वन ।
दोए बीच मोहोल बन्या, सो झलकत नूर रोशन ॥८॥

ताल के दोनों तरफ, जवेरों के महलों के बाहरी व भीतरी तरफ बड़ोवन के वृक्षों की ५-५ हारें शोभायमान हैं । उन के बीच में जवेरों के महल शोभायमान हैं, जिनकी नूरमयी किरणें चारों और झलकार कर रही हैं ।

एक हिस्सा लिया मोहोल ने, दोए हिस्सा लिया वन ।
यूं चबूतरे भर लिया, किनारे कठेड़ा दोए बाजू रोशन ॥९॥

ताल के दोनों तरफ पाल के चौड़ाई में तीन हिस्से हैं । मध्य के एक हिस्से में जवेरों के महल हैं तथा दायें-बायें के दो हिस्सों में बड़ोवन है । इस

प्रकार ताल की पाल (चबूतरा) पूर्ण रूप से भर गयी है । पाल की बाहरी किनार पर दोनों तरफ कठेड़े की शोभा है ।

ए जो मोहोल दरम्यान, अन्दर कई मंदिरों की हार ।
ए जुगत सब जवेर की, साम सामे बने द्वार ।।१०।।

वनों के मध्य स्थित जवेरों के महलों के अंदर मंदिरों की कई हारें हैं । इनकी सारी बनावट जवाहरातों की है तथा उन मंदिरों के द्वार आमने-सामने विद्यमान हैं ।

वन के दोए तरफ पड़े, इन मोहोलों के द्वार ।
हक हादी रमन को, इन द्वार बैठक बिहार ।।११।।

इन महलों के द्वार बाहरी व भीतरी दोनों तरफ वनों के सामने आये हैं । श्री राज श्यामा जी यहां अनेक प्रकार से लीला विहार करते हैं एवं दरवाजे के पास आये चबूतरों पर बैठते हैं ।

इन मोहोलन के, छज्जे पड़े तरफ वन ।
दोनों बाजू शोभित, थम्भ मेहेराब झलकत रोशन ।।१२।।

इन महलों के छज्जे भी दोनों तरफ (बाहरी व भीतरी) वनों के सामने आये हैं । उन छज्जों के स्तम्भ व महराबें दोनों तरफ जगमगाती हुयी दिखायी देती हैं ।

यूं हर एक भोम में, ए दोनों तरफों जान ।
बीस भोम लग चांदनी, सो मोमिनो करो पेहेचान ।।१३।।

इसी प्रकार की शोभा २० भोम तक प्रत्येक भोम में बाहरी व भीतरी दोनों तरफ विद्यमान है । सुंदरसाथ जी, इसकी पहचान कीजिये ।

प्रकरण-५७, चौपाई-२४५९

इत कई हारों दरखतों की, इत चौक पड़े सब ठौर ।
हर दरखत दोरी बंध, मिने कई झूले हिडोले और ।।१।।

पुखराजी ताल की पाल पर वृक्षों की कई पंक्तियां शोभायमान हैं, जिनके मध्य में जगह-जगह अनेकों चौक आये हैं । सभी वृक्ष एक सीध में हैं, जिनकी डालियों के महराबों के मध्य अनेकों हिण्डोले (झूले) शोभायमान हैं ।

यूं ही बीस भोम दरखतों की, छात बनी उपर छात ।
तलाब तरफ छज्जे बने, सो क्यूं कर कहूं एह बात ।।२।।

इसी प्रकार वृक्षों की २० भोम आयी है । डालियों, फूलों व पत्तों की सुंदर छत एक के ऊपर एक आती गयी है, जिनके छज्जे पुखराती ताल की तरफ (जल चबूतरे तक) बने हैं । इस अद्वितीय शोभा का कैसे वर्णन करुं ?

बने थम्भ मेहेराब बन के, एसे बने तरफ दोए ।
हर भोमें बीच देखियो, कठेड़ा बन का शोभित सोए ।।३।।

वृक्षों की डालियों, फूलों व पत्तों के ही स्तम्भ, महराबें व छत बनी हैं । इस प्रकार पुखराजी ताल के दोनों तरफ वनों की शोभा है । वृक्षों की प्रत्येक भोम में डालियों के छज्जों की किनार पर (बाहरी तरफ व भीतरी तरफ) डालियों के ही रत्नों के सामान जगमगाते हुए कठेड़े शोभायमान हैं ।

ऊपर बन्या कठेड़ा चांदनी, मोहोल बन दरखत ।
एह दोए दोनों बाजू असले, रोशन नूर झलकत ।।४।।

जवेरों के महलों व वड़ोवन के वृक्षों की २० भोम ऊपर एक ही चांदनी आयी है, जिसके किनार पर बाहरी व भीतरी दोनों तरफ कठेड़े की शोभा है । इस प्रकार पुखराजी ताल के दोनों तरफ जवेरों के महल व बड़ेवन की शोभा है, जिसकी नूरमयी किरणें चारों तरफ जगमगा रही हैं ।

जैसी जुगत इस बाजू की, तैसे ही तरफ दूसरी जान ।
थम्भ मेहेराब मंदिर, दरखत चौक कठेड़ा पेहेचान ।।५।।

पुखराजी ताल के उत्तर दिशा में स्तम्भ, महराब, मंदिर, वृक्ष, चौक व कठेड़ों की जैसी शोभा है, वैसी ही शोभा दक्षिण दिशा में भी है ।

प्रकरण - ५८, चौपाई - २४६४

तले कहे फिलपाए, जो कहे बंगलन के गृदवाए ।
तिन उपर छातें चली, सो छातें छात शोभाए ।।१।।

पुखराजी ताल के नीचे बंगलों के चारों तरफ फीलपाये (हाथियों के पैरों के सामान मोटे-मोटे स्तम्भ) शोभायमान हैं । इन स्तम्भों की भोम पर भोम आती गयी है।

सुधाई फिलपाएन की, चली उंची लग आसमान ।
जवेर मोहोल जो पाल पर, सो ता उपर सब जान ।।२।।

बंगलों के चारों तरफ जो फीलपाये आये हैं, वे आकाश (९८० भोम) तक ऊंचे गये हैं । पुखराजी ताल के चारों तरफ जो जवेरों के महल आये हैं, वे इन्ही फीलपायों के ऊपर स्थित हैं ।

ए जो कह्यो मोहोल, जवेर का दोऊ ठौर ।
ताके तीन तरफ छज्जे, सो लगत बन्या शोभा जोर ।।३।।

पुखराजी ताल के दोनों ओर ये जो जवेरों के महल आये हैं, उनके छज्जे तीन तरफ (उत्तर-दक्षिण-पूर्व) से ताल पर आये हैं, जिनकी शोभा अत्यंत सुंदर है ।

ताके दोनों तरफों वन बन्या, कहूं तीसरी तरफ भी आए ।
चारों गुरजों बीच बन नहीं, गिरत चादरें छज्जे शोभाए ।।४।।

जवेरों के महलों के दोनों तरफ (उत्तर-दक्षिण में) वनों की शोभा है । तथा तीसरी तरफ (पूर्व में) भी वनों की शोभा है । किंतु चारों गुर्जों के मध्य आये पुखराजी ताल के पूर्व की व अधबीच के कुण्ड के पश्चिम की दहलानों की जगह में वन नहीं आये हैं । इन दहलानों के पूर्व में ४ छज्जे सीढ़ियों के समान आये हैं, जिनसे अधबीच के कुण्ड में १६ धाराएं गिरती हुयी शोभायमान होती हैं।

एह छज्जा पाल बराबर, तापर कहे दरखत ।
इन छज्जे से जो कही, सो सोले चादरें गिरत ।।५।।

इन दहलानों में ८ स्तम्भों की १४ हारें बराबर प्रत्येक भोम में आती गयी हैं, जिनके दायें–बायें (पुखराजी ताल के दोनों ओर) वृक्ष शोभायमान हैं । इन दहलानों के छज्जों से (९८० भोम ऊपर से) जल १६ चादरों (धाराओं) के रूप में अधबीच के कुंड में गिर रहा है।

तीन छज्जे तले तीन सीढ़ियां, चौथी छज्जे किनार ।
हर सीढ़ी चार चादरें, चार चौक सोले कही सुमार ।।६।।

९८१ वीं भोम में प्रथम छज्जा आया है, जिसके नीचे ३ छज्जे उल्टी सीढ़ियों के रूप में शोभायमान है । प्रत्येक छज्जे से ४-४ धारायें - कुल १६ धारायें गिर रही हैं ।

प्रसंग - बड़ी वृत के इस प्रकरण में अधबीच के कुंड का वर्णन हुआ है । पुखराज पहाड़ के तीसरे हिस्से में अधबीच का कुंड सुशोभित है ।

अब कहूं हकीकत कुण्ड की, जित सोले चादरें गिरत ।
कहूं तले की हकीकत, फेर ऊपर आईयो तित ।।१।।

अब अधबीच के कुण्ड की वास्तविकता कहूंगी, जहां १६ धाराएं ४८० भोम ऊपर गिर रही हैं। पहले नीचे अधबीच के कुण्ड के चबूतरे का वर्णन किया जायेगा, फिर ऊपर कुण्ड का वर्णन समझेंगे ।

चार हार फिलपाइन की, चारों तरफ बराबर ।
यामे एक हार लई बंगलन, फेर कहे जमा खातर ।।२।।

अधबीच के कुण्ड के चबूतरे पर फीलपायों (मोटे स्तम्भों) की चार हारें चारों तरफ घेरकर शोभा ले रही हैं । चबूतरे के पश्चिम तरफ बंगले का चबूतरा शोभायमान है ।

और जो तीन तरफ कही, तहां फिलपाइए है और ।
कई हार दरम्यान फिलपाइए, तहां मेहेराब बने ठौर ठौर ।।३।।

बाकी तीन तरफ (उत्तर, दक्षिण व पूर्व) बहुत सारे फीलपाये (मोटे स्तम्भ आये हैं), कई फीलपाये बगीचों के मध्य चेहेबच्चों में भी है, जहां जगह-जगह महराबें बनी हुई है ।

कई सीढियां चढ़न को, हर फिलपाइयों विस्तार ।
छात पर छात मोहोल बने, कई बैठक नित बिहार ।।४।।

सभी फीलपायों में ऊपर जाने के लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इनके ऊपर प्रत्येक भोमों में महल (जिन्हें फीलपायों के महल कहते हैं) बने हुए हैं, जहाँ कई प्रकार की बैठकें हैं, जिन में नित्य प्रति अनेक प्रकार की लीलाएं होती हैं ।

ज्यों बंगले मोहोल छाते बने, हद तलाव तले जो जाए ।

त्यों ही इनकी हद चली, कुण्ड लों पोंहोची धाए ।।५।।

जिस प्रकार बंगलों की चांदनी में पुखराजी ताल बना है (पुखराजी ताल के नीचे बंगलों की चांदनी है), उसी प्रकार अधबीच के कुण्ड के नीचे इन फीलपायों, बड़ोवन व बगीचों की छठी चांदनी आयी है ।

इत चारों तरफों मोहोल हैं, ए जो तले ऊपर दरम्यान ।
ताके तीनों तरफ छज्जे बने, सो हर भोमों तुम जान ।।६।।

अधबीच के कुण्ड की छठी भोम में कुण्ड के चारों तरफ महल आये हैं, जिन्हे फीलपायों के महल कहते हैं, क्योंकि इनके नीचे फीलपाये आये हैं । इन महलों की प्रत्येक भोम में तीन तरफ छज्जे शोभायमान हैं ।

चौथी तरफ के कहे, मोहोलों मिले मोहोल सब ।
इत कुण्ड तलावे आईए, सब मालूम होवे तब ।।७।।

चौथी तरफ (पश्चिम में) दहलानें (८ स्तम्भों की १४ हारें) आयी हैं, जो कि बंगले के पूर्व के दहलानों से मिलते हुए ऊपर गयी हैं । यहां पुखराजी ताल व अधबीच के कुण्ड में आयेंगे, तो यहां की सारी शोभा स्पष्ट हो जायेगी ।

एह ताल कुण्ड तले के, मिल मोहोल हुए सब एक ।
कई मेहेराब कचेरी बैठक, कई चेहेबच्चे फुहारे अनेक ।।८।।

ये दहलानें पुखराजी ताल व अधबीच के कुण्ड के नीचे के हैं । दोनो तरफ के दहलानें एक साथ मिलकर ऊपर तक आये हैं । इन महलों (दहलान व अधबीच के कुण्ड के भोमों) में कई स्तम्भें, महराबें, कचहरियां, बैठकें, चेहेबच्चे फव्वारें शोभायमान हैं ।

कई थंभ गली हवेली बनी, कई चौक चबूतरे अन्दर ।
सब भोमन में देख के, आओ मोमिन ताके अन्दर ।।९।।

अधबीच के कुण्ड के भोमों में कई हवेलियों, स्तम्भ, गलियां बनी हुयी हैं, जिनके अंदर कई चौक, चबूतरे शोभायमान हैं । इन सभी भोमों की शोभा देखकर सुंदरसाथ जी चितवनि के द्वारा उनके अंदर आईये ।

इत चौथा हिस्सा पहाडी का, ताको तीसरे हिस्से दरम्यान ।
एह कुण्ड की हद चली, ताकी मोमिन करो पेहेचान ।।१०।।

पुखराज पहाड के चौथे हिस्से में (२५० हांस-१ लाख कोस का लम्बा-

चौड़ा) बंगले का चबूतरा है, और उसके तीसरे हिस्से में (३३,३०० कोस का लम्बा-चौड़ा) अधबीच के कुण्ड का चबूतरा है । सुंदरसाथ जी इसकी पहचान कीजिये ।

इन पहाड के चारों तरफों, छज्जा चल्या गृदवाए ।
कुण्ड को भी फिरवल्या, सो छज्जे छज्जों शोभाए ।।११।।

पुखराजी ताल के चारों तरफ घेरकर जिस प्रकार छज्जा आया है, उसी प्रकार अधबीच के कुण्ड की चारों तरफ भी ४०० कोस का चौड़ा छज्जा घेरकर आया है । इस प्रकार आमने-सामने छज्जे शोभायमान हो रहे हैं ।

यूं हर भोम में देखिए, थम्भ कठेड़ा सब ठौर ।
छज्जों किनारे देखिओ, ए शोभित है अति जोर ।।१२।।

इस प्रकार अधबीच के कुण्ड के प्रत्येक भोमों में किनार पर छज्जों, स्तम्भ व कठेड़ों की अद्‌भूत शोभा है ।

प्रकरण ६० चौपाई २४८२

इस प्रकरण में अधबीच के कुंड पर मधुर गर्जना के साथ गिरने वाली सोलह धाराओं का वर्णन है । ये धारायें आसमान की ऊंचाइयों से गिरती प्रतीत होती हैं जो आत्मा को शांति प्रदान करती हैं ।

अब फेर कहूं ऊपर कुण्ड की, चारों कोनो गुरज चार ।
तले सो लेकर छज्जा लों, गिरत सोले चादरें सुखकार ।।१।।

अब पुनः ४९६ भोम ऊपर आये अधबीच के कुण्ड की शोभा का वर्णन किया जायेगा । दहलानों के चारों कोनों में चार गुर्ज हैं, जो कि नीचे चबूतरे से लेकर ऊपर (सोलह धाराओं के चार) छज्जों तक गये हैं, जहां से पानी १६ चादरों के रूप में गिरते हुए मनोहर दृश्य प्रस्तुत कर रहा है ।

दोए गुरज छज्जे तले लगी, जहां सोले चादरें गिरत ।
भई दोए मुकाबिल तिनके, सो साम सामी शोभत ।।२।।

जहाँ से १६ चादरें गिर रही हैं, वहा छज्जे के नीचे २ गुर्ज आये हैं । इन्हीं के सामने (दहलान के पश्चिम में) २ गुर्ज और शोभा ले रहे हैं । इस प्रकार दहलान के पूर्व व पश्चिम में आमने-सामने ४ गुर्ज शोभायमान हैं ।

हर गुरजों छज्जे मेहेराब, जो कही अलंग गुरजे दोए ।
ता पर बनी चांदनी, गृद कठेड़ा शोभित सोए ।।३।।

इन सभी गुर्जों में छज्जे एवं महारावें आयी हैं । जो दो गुर्जें सीधी हजार भोम तक गयी हैं, उनके ऊपर चांदनी (छत) बनी है, जिसके किनार पर कठेड़े की शोभा है ।

ए जो कुण्ड कह्या तिनके, सोले चादरें गिरे दरम्यान ।
चारो तरफों मोहोल बने, सो मोमिन करें पेहेचान ।।४।।

यह जो अधबीच का कुण्ड कहा है, उसमें सोलह धाराओं का पानी ४८० भोम ऊपर से गिरता है । इसके चारों तरफ (खास) महल शोभायमान हैं, जिसकी पहचान ब्रह्मसृष्टि ही करेगी ।

चारों तरफों चबूतरा, सो फिरया कुण्ड गृदवाए ।
है चौखुटा चारों तरफ, इत कठेड़ा सुखदाए ।।५।।

कुंड के चारों तरफ चौरस चबूतरा (पाल) आया है, जिसके किनारे पर कुण्ड की तरफ कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

तिनसे उतरती सीढ़ियां, बनी है तरफ चार ।
तीन तरफ की मोहोलात, भोम उपरा उपर चार विचार ।।६।।

उस चबूतरे से कुण्ड में चारों तरफ से सीढ़ियां उतरी हैं । कुण्ड के तीन तरफ (उत्तर, दक्षिण, व पूर्व) में खास महलों की शोभा है, जिनकी एक के ऊपर एक चार भोमें शोभायमान हैं ।

तरफ चौथी चादरन की, सो मोहोल ऊंचा लग आसमान ।
तिन छज्जों बैठक देखिए, चादरें पड़े कुण्ड दरम्यान ।।७।।

चौथी दिशा (पश्चिम) में दहलानें (धारायें) हैं, जो हजार भोम ऊपर आकाश तक ऊंचे गये हैं । उनकी भोमें बैठक के रूप में शोभायमान हैं, जहां से बैठकर पूर्व की ओर देखते हैं तो १६ धारायें, खास महलों के मध्य कुण्ड में गिरती हुयी दिखायी देती हैं ।

इत जल गरजत, देखे श्रवनों दे सुख ।
कई मिहीं बूंदे फुही उछरत, होत चेहेन देखे सुख ।।८।।

गिरता हुआ जल मधुर गर्जना उत्पन्न कर रहा है, जिसे सुनकर व देखकर आनंद की अनुभूति होती है । इतनी ऊंचाई से पानी गिरने के कारण पानी की अनंत बारीक बूंदे फुहारों के समान उछलती हैं । जिसे देखकर अत्यंत आनंद की प्राप्ति होती है ।

प्रकरण ६१ चौपाई २४९०

इस प्रकरण में पुखराज पहाड़ से जल के उतरने की विधि का वर्णन है।

इत आई मेड़ दोए पहाड़, जो सांध दरम्यान ।
तहां से नेहेर एक उतरत, सो कई भोम उतरती जान ।।१।।

यहां पर दो पहाड़ों (पुखराज पहाड़ व पुखराजी ताल) की संधि में मेड़ (पानी उतरने का रास्ता) आई है, जहाँ से कुछ पानी एक नहर के रूप में उतरते हुए कई भोमों में पानी पहुंचाते हुए नीचे आता है ।

जब आई हद बंगले, उपर फिलपाईअन ।
तहां सेती दोए होए चली, पूरब तरफ रोशन ।।२।।

इस नहर का पानी सब भोमों में होते हुए बंगलों व फीलपायों की छठी चांदनी में आता है । यहां से नहर दो भागों में विभाजित होकर पूर्व की तरफ जाती है (इसमें से एक नहर का पानी चेहबच्चों से होकर फीलपायों में पहुंच जाता है, जो फीलपायों में बने जानवरों के मुख से निकलता है) ।

इहां से दो नेहेरें चलीं, एक दक्खिन एक उत्तर ।
ए चारों तरफ फिरवली, मिली दोए पुखराज तरफ यों कर ।।३।।

तथा दूसरी नहर का पानी पुनः दो भागों में विभाजित होकर उत्तर व दक्षिण दिशा में जाता है, और चांदनी के बगीचों में पानी पहुंचा कर चारों तरफ घूमकर पुनः पश्चिम में (पुखराज की तरफ) जाता है और पांच भोम ऊपर से पुखराज व बंगले के चबूतरे के मध्य आये कुण्ड में गिरता है ।

फेर एक होए चली, इन बंगलों हार दरम्यान ।
तले चबूतरे तरफ पूरब, आए पोंहोची जिमी में जान ।।४।।

नीचे बंगले के चबूतरे की तरहटी में जाकर सारा पानी पुनः एक हो जाता है, और पूर्व की तरफ जाता है ।

आगे नजीक कुण्ड है, तहां जमुना मूल कहलाए ।
इन कुण्ड गृद चबूतरा, तामे बन फिरता आए ।।५।।

बंगले के चबूतरे के पूर्व में अधबीच का कुंड आया है, जो यमूना जी का मूल कहलाता है । कुंड के चारों ओर चबूतरे के ऊपर घेरकर बन आया है ।

प्रकरण ६२ चौपाई २४९५

इस प्रकरण में बंगले के चबूतरे पर आए बंगलों और चेहेबच्चों का वर्णन है। घेर कर आए फिलपाइयों में बने नूरी जानवरों के मुख से निकलते फव्वारे अद्‌भुत हैं।

ए जो एक चबूतरा, ता पर फिलपाइए गृदवाए ।
तामे फुहारे कैं उछरत, सो उपर चबूतरे आए ।।१।।

यह जो बंगले का चबूतरा है, उसमें चारों तरफ फीलपाये (हाथी के पैर के समान मोटे स्तम्भ) शोभायमान हैं । उनमें कई फव्वारे उछलते हैं, जो चबूतरे पर गिरते हैं ।

कई फुहारें गौमुख, कई छूटें मुख जानवर ।
कई हाथी सूंडो चले, चले सब ठौरों उपर ।।२।।

उन फीलपायों में कई जगह गौमुख की आकृति बनी है, जिनसे कई फव्वारे निकल रहे हैं । इसी प्रकार कई अन्य प्रकार के जानवरों के मुखों से भी फव्वारे छूट रहे हैं । कई जगह हाथी के सूंड की आकृति बनी है, जिनसे फव्वारे निकल रहे हैं ।

फीलपाइयो दरम्यान में, ए जो बंगलन की हार ।
अडतालीस की गिनती, रहे बराबर तरफ चार ।।३।।

फीलपायों के बीच में बंगलों की हारें हैं, जिनमें एक पंक्ति में ४८ बंगले हैं । चारो तरफ से देखने पर ४८ बंगलो की ४८ हारें शोभा ले रही हैं ।

पांच भोम बंगलन की, तामें मंदिर बारे हजार ।
कई साज संदूकें बैठक, करे जुगल सरूप बिहार ।।४।।

बंगलों की ५ भोमें हैं, जिनमें से प्रत्येक भोम में १२-१२ हजार मंदिर

आये हैं । उन मंदिरों में श्रृंगार के वस्त्राभूषण संदूकों में रखे हैं । यहां बैठकर युगल स्वरूप अनेक प्रकार से लीला विहार करते हैं ।

लगी इन की छात पहाड़ी को, तिन छातों पर छात अनेक ।
इन का हिसाब है नहीं, ए जो कही छात एक ॥५॥

इन बंगलों की छठी चांदनी पुखराजी ताल से लगकर नीचे आयी है । इसके ऊपर भी पुखराजी ताल के चारों ओर अनेकों भोमें, छज्जे, स्तम्भ आये हैं, जिनकी गणना सम्भव नहीं है । यहां एक छत का बयान किया गया है ।

हर एक बंगलन के, आगे शोभित बड़ावन ।
तहां कुण्ड बीच फुहारे उछरत, साम सामे बैठे रोशन ॥६॥

प्रत्येक बंगले के सामने (चारों तरफ) बड़ोवन के वृक्ष शोभायमान हैं । वहां बगीचों में कुंडों के बीच में फव्वारे उछल रहे हैं । श्री राज श्यामा जी व सखियाँ आमने सामने बैठकर फव्वारों का आनन्द लेते हैं ।

कई नेहरा इत चलहीं, कई कुण्ड चेहबच्चे नूर ।
नाहीं हिसाब इन का, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥७॥

बंगलों के चारों तरफ बगीचों में कई नहरें चलती हैं और कई कुंड तथा नूरमयी चहबच्चे आये हैं । इस बेशुमार शोभा का वर्णन कैसे करें ?

प्रकरण ६३ चौपाई २५०२

पुखराज पहाड़ के पूर्व में आये बंगलो के चबुतरे के भीतरी चेहेबच्चों की शोभा

पुखराज पहाड़ की पूर्व दिशा में पुखराज के चबूतरे से लगकर बंगले का चौरस चबूतरा है । इसमें बाहर की ओर से सर्व प्रथम बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारें, फिर मनोहारी जल फुहारो से सुशोभित फीलपायों की चार हारें, पुनः बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारें आयी हैं। इसके भीतर आड़ी-खड़ी नहरों के बीच ४८ बंगलों की ४८ हारें व ४८ चेहेबच्चों की ४८ हारें क्रमशः शोभायमान हैं । ये बंगले पांच भोम ऊंचे हैं । प्रत्येक बंगले और चेहेबच्चे के चारों ओर बगीचे शोभायमान हैं । इस प्रकरण में इन चेहेबच्चों की शोभा का, चेहेबच्चों पर आई बैठकों का और चेहेबच्चों से उठते फव्वारों का वर्णन है ।

एह चबूतरे सब कहे, एह जो बंगलन की हार ।
वन नेहेरा उपर जिमी के, जित झीलें नित बिहार ।।१।।

यह जो बंगलों के चबूतरे का वर्णन किया गया है । जहाँ ४८ बंगलों की ४८ पंक्तियां आयी हैं, उनके चारों तरफ जमीन में वन तथा नहरों की शोभा आयी है, जहां नित्य प्रति झीलना आदि लीला विहार करते हैं ।

चबूतरन पर चेहेबच्चे, सबों कठेड़े बेठकें गृदवाए ।
चारों तरफ उतरती सीढियां, तहां से बन भोम आए ।।२।।

इन बंगलों के बीच बीच में क्रमशः ४८ चेहेबच्चों की जो ४८ हारें विद्यमान हैं, वे चेहेबच्चे भोम भर ऊंचे चबूतरे के मध्य में शोभायमान हैं । चेहेबच्चे के चारों तरफ चबूतरे पर सुंदर बैठक बनी है, जिसकी किनार पर रत्नजड़ित सुंदर कठेड़े की शोभा है । चबूतरे से चारों दिशा के मध्य में भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं, जहां से उतरकर वनों की भूमि में आते हैं ।

हर चेहेबच्चन में, उछरत फुहारे चार ।
एक का पड़े दूसरे, ए अति शोभा सुखकार ।।३।।

इन सभी चेहेबच्चों में ४ - ४ फव्वारे उछल रहे हैं । एक चेहेबच्चे का पानी उछलकर चारों तरफ के चार चेहेबच्चों में जाता है । यह शोभा अपार सुखकारी है ।

ए फुहारे उछरत, तरह मेहेराबी जान ।
एक पड़े जाए दूसरे, यू सब ठौरों पेहेचान ।।४।।

ये फव्वारें महराबों के रूप में उछलते हुए दूसरे चेहेबच्चे में जाते हैं । ऐसे ही सब जगह जानिए ।

प्रकरण ६४ चौपाई २५०६

श्री रंगमहल की उत्तर दिशा में स्वर्णिम आभा से जगमगाते पुखराज पहाड़ का वर्णन है । पुखराज के भोम भर ऊंचे चबूतरे की पूर्व दिशा में बंगले का चबूतरा शोभायमान है ।

ए जो हजार हांस चबूतरा, पुखराज के गृदवाए ।
जो उंचा तले जिमीअ से, अति देत शोभाए ।।१।।

यह जो पुखराज का हजार हांस का गोल चबूतरा है, वह जमीन से भोम भर ऊंचा है, उसकी शोभा अपरम्पार है ।

वन की जिमी बंगलन की, सो बड़े चबूतरे मुकाबिल ।
उंचाई बराबर ए कहे, जिन की पेहेले कही नकल ।।२।।

बंगले का चबूतरा वन की जमीन से भोम भर ऊंचा है, जो कि पुखराज के चबूतरे के बराबर है, जिसका वर्णन पहले किया जा युका है ।

और चबूतरे पर चबूतरा, बड़े थम्भ कहे चार ।
ता बराबर बंगलन का चबूतरा सुखकार ।।३।।

पुखराज के हजार हांस के गोल चबूतरे पर मध्य के तीसरे हिस्से में भोम भर ऊंचा चौरस चबूतरा आया है, जिस पर चारों दिशा में ४ बड़े आधार स्तम्भ रूप महल शोभा ले रहे हैं । इस चौरस चबूतरे के बराबर अत्यंत सुखदायी बंगले के चबूतरे आये हैं (बंगले के चबूतरे के ऊपर पुनः एक-एक भोम के चबूतरे पर सभी बंगले आये हैं) ।

और चेहेबच्चन के चोतरे, सो भी तिन बराबर ।
ए शोभा अपार है, ता की नेक देउं खबर ।।४।।

चेहेबच्चे के चबूतरे भी उसके बराबर हैं, जिसकी शोभा अपरम्पार है, उसकी थोड़ी सी पहचान कराऊंगा।

अब तुम सुनो मोमिनों, कहूं हकीकत बंगलन ।
हर हार अड़तालीस की, ठौर जवेर नूर रोशन ।।५।।

हे सुंदरसाथ जी, अब आप ध्यान से सुनिये, बंगलों की शोभा का वर्णन किया जा रहा है । बंगला के चबूतरे पर ४८ बंगलों की ४८ हारें विद्यमान हैं, जहां चारो ओर नूरमयी जवाहरातों की रोशनी जगमगा रही है ।

ए चारों तरफ बराबर, हर हार अड़तालीस ।
यूं तेइस सौ चार भए, ए पाइए हक बकसीस ।।६।।

चारों तरफ से बंगलों की उतनी ही पंक्तियां (48) हैं। ४८ पंक्तियों के कुल २३०४ बंगले होते हैं । यह शोभा श्री राजजी की कृपा से ही पता चलती है ।

चेहेबच्चे हर बंगले, सो होत दोए दरम्यान ।
गिनती तेइस सौ चार भए, इत नाहीं चबूतरा जान ।।७।।

प्रत्येक दो बंगलों के मध्य १-१ बड़े चेहेबच्चे आये हैं । उनकी भी ४८ की ४८ पंक्तियां (बंगलों के बीच बीच में क्रमशः) आने से कुल २३०४ चेहेबच्चे होते हैं । बंगलों व चेहेबच्चों के मध्य में चबूतरा नहीं है ।

हर एक चबूतरे, गृद चारों तरफ मंदिर ।
द्वार बगीचों देखिओं, आओ मोमिन ताके अन्दर ।।८।।

बंगलों में प्रत्येक चबूतरे की किनार पर चारों तरफ रौंस की जगह छोड़कर मंदिरों की एक पंक्ति आयी है, जिसके चारों दिशा में मुख्य द्वार हैं। बंगलों के चारों ओर बगीचों की अद्‌भूत शोभा देखते हुए सुंदरसाथ जी, बंगलों के अंदर आईये ।

हर एक चबूतरे, मंदिर बारे हजार ।
द्वार भी गिनती तितनी, इन बारे करो सुमार ।।९।।

प्रत्येक बंगलों में चबूतरे पर (बंगले की एक भोम में कुल) १२,००० मंदिर आये हैं व इतने ही दरवाजे आये हैं ।

चबूतरे के चारों तरफों, कठेड़ा गृद शोभाए ।
बैठक बिछौने ता पर, ए शोभा सुखदाए ।।१०।।

चबूतरे की चारों दिशा में किनार पर कठेड़े की शोभा है । जिनके भीतरी तरफ रौंस में सुंदर बिछौने और बैठक की शोभा है, जो अत्यंत मनोहारी है ।

चारों तरफ उतरती, सीढ़ी उतरती तरफ वन ।
हक हादी जब बैठत, इत झलकत नूर रोशन ।।११।।

चबूतरे की चारों दिशा के मध्य से वनों की तरफ भोम भर की सीढ़ियां उतरी हैं । जब श्रीराजश्यामा जी व सखियां यहां विराजमान होते हैं, तो यहां चारों तरफ नूरमयी रोशनी जगमगाती है ।

चबूतरों बीच चेहेबच्चा, उछरत फुहारे चार ।
पांच भोम लग पोहोंचत, पड़त चारों तरफ विचार ।।१२।।

जो ४८ चेहेबच्चों की ४८ हारें बंगलों के बीच बीच में क्रमशः आयी

हैं, उनमे भोम भर ऊंचे चबूतरों के मध्य बड़े चेहेबच्चे शोभायमान हैं, जिनमें ४-४- फव्वारे उछल रहे हैं, जो कि पांच भोम ऊंचाई तक उछलते हुए चारों तरफ के अन्य चेहेबच्चों में गिरते हैं ।

सो तरे मेहेराबी होत है, खड़े एक दूजी सनमुख ।
एक का जावे चार में, क्यूं कहे जुबां एह सुख ॥१३॥

एक चेहेबच्चे के चार फव्वारे उछलकर चारों दिशा के चार चेहेबच्चों में जाते हैं । इस प्रकार फव्वारों की शोभा महाराबों के समान दिखायी देती हैं ।

एक एक में चार पड़े, एक के पड़े तरफ चार ।
यूं फुहारे उछरत, करें जुगल सरूप बिहार ॥१४॥

इस प्रकार प्रत्येक चेहेबच्चे में चारों दिशा के चार चेहेबच्चों से आकर चार फव्वारे गिरते हैं, तथा एक चेहेबच्चे से चार फव्वारे उछलकर चारों दिशा के चार चेहेबच्चों में गिरते हैं । इस प्रकार उछलते हुए फव्वारों के मध्य श्री युगल स्वरूप विहार करते हैं ।

नेहेरें चली इन बीच में, अड़तालीस भई हार ।
फेर दूजी आई अड़तालीस, यूं छानबे भई सुमार ॥१५॥

इन चेहेबच्चों व बंगलों के मध्य ४८+४८ कुल ९६ (९७) नहरों की ९६ (९७) हारें आयी हैं ।

हर एक बगीचे के, चक्रावे जल पड़े चार ।
पड़े चार हजार छ सौ साठ, ए गिनती कही सुमार ॥१६॥

हर एक बगीचे में ४ चकरीदार फव्वारे हैं, जिनका पानी उछलकर उसी चेहेबच्चे में गिर जाता है । इस प्रकार कुल ४६६० चकरीदार फव्वारे आए हैं।

जेतेक है बगीचा, तेते चक्रावे होए ।
इत फूल फल वन डार की, सब खुसबोए माहें कही सोए ॥१७॥

जितने बगीचे आये हैं, उतने ही चकरीदार फव्वारे आये हैं । वनों की डालियों, फलों व फूलों की अपार सुगंधि चारों ओर वातावरण को महका रही है।

ज्यूं पांच भोम बंगलन की, तैसे ही पांचो भोम वन ।
भोम भोम की मिल गई, शोभित सब रोशन ॥१८॥

जिस प्रकार बंगलों की पांच भूमिकाएं हैं, उसी प्रकार उनके चारों तरफ

आये वनों के भी पांच भोम (जमीन से छः भोम) हैं । वनों की भोमें बंगले की भोमों से मिलते हुए आयी हैं, जिसका नूरमयी प्रकाश चारों तरफ रोशन हो रहा है ।

हर भोम बंगलन की, मंदिर चौबीस सौ ।
यूं ही पांचों भोम के, गिनती बारे हजार इन में ॥१९॥

बंगलों के मंदिरों की प्रत्येक भोमों में २४००-२४०० मंदिर विद्यमान हैं। पांचों भोम के मिलाकर कुल १२००० मंदिर होते हैं । (बंगलों की एक भोम में मंदिरों की पांच भोमें हैं । इस प्रकार बंगलों की एक भोम में कुल १२००० मंदिर होते हैं) ।

तरफ चारों कह्या इनकी, ताके चारों बाजू चार द्वार ।
छे छे सौ हर एक में कही, करें जुगल सरूप बिहार ॥२०॥

मंदिरों की उपरोक्त हारें चारों दिशा में घेरकर आयी हैं, जिनके मध्य चारों दिशा में चार मुख्य दरवाजे विद्यमान हैं । प्रत्येक दिशा में (दरवाजो के दायें–बायें) ६००-६०० मंदिर आये हैं ।

हर एक बड़े द्वार के, मंदिर तीन तीन से बाजू दोए ।
यूं छे चौक चौबीस, ए पांचों भोम देखिओ सोए ॥२१॥

चारों दिशा के चारों बड़े दरवाजों के दायें-बायें ३-३ सौ मंदिर विद्यमान हैं । इस प्रकार चारों दिशा के मिलाकर कुल २४०० मंदिर (एक भोम के) होते हैं । मंदिरों की पांचों भोम के कुल १२००० मंदिर होते हैं ।

ताके द्वार मंदिरन के, सनमुख हार दरखत ।
ए दोरी बंध हार चली, ऐसे सरस शोभित ॥२२॥

उन मंदिरों के द्वारों के सम्मुख जमीन में वृक्षों की पंक्तियां एक सीध में हैं, जिनकी बहुत ही मनोहारी शोभा है ।

प्रकरण ६५, चौपाई २५२८

बंगलन की भोम मंदिर

इस प्रकरण में एक बंगले का वर्णन विस्तार से किया गया है । बंगले की हर भोम में बारह हजार नूरी मंदिर हैं, जिनकी शोभा और सुख ब्रह्मात्माएं जानती हैं ।

हर एक भोम मिने, मंदिर बारे हजार ।
कहे राज के हुकम से, सुख मोमिन देखन हार ।।१।।

बंगलो की प्रत्येक भोम में १२,००० मंदिर विद्यमान हैं, जिसका वर्णन श्री राज जी के आदेश से किया जा रहा है, और उन सुखों को मात्र ब्रह्मात्माएं ही देखते हैं ।

साठ हजार मंदिर, हर एक बंगले विस्तार ।
ऐसे तेइस सौ चार बंगले, ए जानत परवरदिगार ।।२।।

इस प्रकार एक बंगले के पांच भोम के कुल ६०,००० मंदिर होते हैं । ऐसे कुल २३०४ बंगले हैं, जिनकी शोभा परब्रह्म अक्षरातीत ही जानते हैं ।

हर भोम मिने बारे हजार, अन्दर मोहोल थम्भ कई और ।
द्वार सब मोहोल माफक, छज्जे कठेड़े बने ठौर ठौर ।।३।।

बंगलों की प्रत्येक भोम में (मंदिरो की पांच भोमों में) १२,००० मंदिर तथा इनके भीतरी तरफ १२,००० स्तम्भ शोभायमान हैं । मंदिरों के अनुसार ही दरवाजे, छज्जे, कठेड़े जगह-जगह शोभायमान हैं ।

चौक चबूतरे देहेलान, कई चौकियां माचिया सिंघासन ।
कई सन्दूकें पलंग बिछौने, सो झलकत नूर रोशन ।।४।।

बंगलों में कई चौक, चबूतरे व दहलान शोभायमान हैं । मंदिरो के अंदर कई चौकियाँ, माचियां, सिंहासन, संदूक, पलंग व बिछौने विद्यमान हैं, जो नूरमयी रोशनी की झलकार कर रहे हैं ।

सोवरन की सीढ़िआं, हर भोम चढ़न की होए ।
कमाड़ चौकठ नूर की, क्यूं कहूं शोभा इन मुख सोए ।।५।।

प्रत्येक भोम में चढ़ने के लिये सोने (स्वर्ण) की सीढ़ियाँ विद्यमान हैं । दरवाजों के चौकठ व किवाड़ नूरमयी झलकार से युक्त हैं, जिनकी शोभा का वर्णन माया की इस झूठी जिह्वा से कैसे किया जाए ?

एह चबूतरा कह्या, आया तीनों तरफ गृदवाए ।
सो आए लगा पुखराज को, रही चबूतरे भराए ।।६।।

बंगले का चबूतरा पश्चिम में पुखराज के चबूतरे से लगा है, इसके अतिरिक्त अन्य तीनों दिशाओं में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा विद्यमान है। सम्पूर्ण चबूतरा बंगलों, चहबच्चों, फीलपायों व बड़ोवन के वृक्षों से भरा हुआ है।

इत हर एक रूहों के, कई खूब खुसाली हजार ।
जब हुकम करे एक को, दौड़े कई हजार नाहीं सुमार ।।७।।

यहाँ बंगलों में एक-एक सखी की सेवा के वास्ते कई हजारों खूब खुशालियाँ रहती हैं । जब सखियां किसी एक को हुक्म करती हैं, तो हजारों दौड़ती हुई आ जाती हैं ।

कई इन चबूतरे, पड़े बड़े मेहेराब ।
ए बका ठौर चेतन की, पाए मोमिन हैयाती आब ।।८।।

बंगले के चबूतरे पर कई बड़ी महराबें (फीलपायों की) शोभा ले रही हैं। इस चेतन परमधाम का इश्क रूपी अखंड जल (अमृत) ब्रह्मात्माओं ने पाया है ।

एह चबूतरा आए लगा, कुण्ड कई चबूतरे मुकाबिल ।
तीनों तरफों कठेड़ा, कुण्ड में जल निरमल ।।९।।

बंगले के चबूतरे के पूर्व में अधबीच के कुंड का चबूतरा आकर लगा है । अधबीच के कुण्ड के चबूतरे के तीनों तरफ (पूर्व, उत्तर व दक्षिण) कठेड़ा आया है, तथा कुंड में निर्मल जल भरा है ।

तिन से उतरती दूसरी, तिन चबूतरे दरम्यान ।
एह कुण्ड पड़ा बीच में, कठेड़ा चारों तरफों जान ।।१०।।

अधबीच के कुंड के पूर्व में ढपो चबूतरा है । अधबीच के कुण्ड की तलहटी से पानी नहर द्वारा ढपो चबूतरा की तलहटी में प्रवेश करता है। अधबीच का कुंड (पुखराज व मूलकुण्ड) बीच में आया है । ढपो चबूतरे की किनार पर कठेड़ा शोभा ले रहा है ।

प्रकरण ६६, चौपाई २५३८

अब कहूं दूसरा कुण्ड (मूलकुंड)

इस प्रकरण में यमुना जी एवं मूलकुंड का वर्णन किया है । मूलकुंड से प्रकट होकर यमुना जी पूरे ठाट-बाट (ऐश्वर्य) के साथ प्रवाहित होती है । यमुना जी का नूर मानो आसमान जमीन में व्याप्त हो रहा है।

अब कहूं इन कुण्ड की, जहां मूल जमुना ठौर ।
जल चबूतरे से उतर के, पूर जल प्रवेश किया जोर ।।१।।

अब उस कुण्ड का वर्णन करता हूं , जो यमूना जी का मूल उद्‌गम स्थान है । ढपो चबूतरा की तलहटी से जल का विशाल भण्डार मूलकुण्ड की तलहटी में प्रवेश करता है ।

दोए बाजू जल आइयां, साम सामी झलूबे डार ।
भइ छाहां कुण्ड पर, ए सुख जानत परवरदिगार ।।२।।

मूल कूण्ड की तलहटी में कुण्ड के पूर्व पश्चिम की तरफ जल (नहरों में) दिखायी दे रहा है। मूल कुण्ड के चबूतरे पर उत्तर-दक्षिण से वृक्षों की डालियाँ आमने-सामने से आकर मूल कुंड के जल चबूतरे तक छाया कर रही हैं, जिससे मूल कुंड के चबुतरे पर एक सुंदर चंद्रवा के समान छत की शोभा आई है । यहाँ के सुख धाम धणी ही जानते हैं ।

एक भोम लो ऊंची, भई चारों तरफों मोहोलात ।
एक भोम लों पानी में, जहां आवत घड़नाले जात ।।३।।

मूल कुंड की तलहटी में कुण्ड के चारों तरफ (बाहरी जमीन से) एक भोम ऊंचे- कुल दो भोम ऊंचे महल शोभायमान हैं । मध्य में कुण्ड के चारों तरफ दीवार है, जिसकी पूर्व में एक महराब से यमूना जी प्रकट होती है ।

कुण्ड के चारों तरफ कठेड़ा, और कह्या चबूतर ।
तिनके तीनों तरफ कठेड़ा, ए जो दोए कहे यूं कर ।।४।।

(मूल कुण्ड के चबूतरे पर) कुंड के चारों तरफ कठेड़ा शोभायमान है और चबूतरे की बाहरी किनार पर भी तीन दिशा में (उत्तर, दक्षिण व पूर्व में) कठेड़े की शोभा आई है । इस प्रकार चबूतरे के भीतरी व बाहरी दोनों तरफ कठेड़े की शोभा है ।

और तरफ फीलपाईअन के, बड़ा चबूतरा और ।
सो आईयां इन उपर, तीनों तरफ कठेड़ा इन ठौर ।।५।।

अधबीच के कुंड (के फीलपायों) की तरफ जो बड़ा चबूतरा (ढपो चबूतरा) है, वह मूल कुंड के चबूतरे के पश्चिम में आया है जिसके तीन तरफ कठेड़ा शोभायमान है ।

इन दोनों चबूतरे, मोहोलात कही अन्दर ।
नूर रोशनी झलकत, मोमिन आओ इन मंदिर ।।६।।

ढपो चबूतरा व मूल कुण्ड का चबूतरा - इन दोनों के अंदर (तलहटी में) महलों की शोभा है, जिनकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ झलकार कर रही है। हे सुंदरसाथ जी ! इन मंदिरों में आईये ।

जब चबूतरे मोहोलों, पैठिए मेहेराबी द्वार ।
जाए निकले तरफ बंगले, जित होत नित बिहार ।।७।।

जब इस तलहटी में चबूतरे की दीवार पर आये दरवाजों से प्रवेश करते हैं । तो तलहटी में आये महलों व बगीचों की शोभा देखते हुए अंदर ही अंदर ढपो चबूतरा की तलहटी व अधबीच के कुण्ड की तलहटी से होते हुए (संधि की दीवार में आये दरवाजों से) बंगले की तलहटी में पहुंच जाते हैं, जहां नित्य प्रति प्रेम व आनंद की लीलाएं होती हैं ।

एक तरफ सामे दूसरी, निकलिये पटी जमुना के ठौर ।
दोए दरम्यान कुण्ड बड़ा, मोहोल ठौर बनी जुदी जुदी और ।।८।।

तलहटी से पूर्व दिशा की ओर जायें तो पटी (ढपी) यमूना जी में पहुंच जाते हैं । बंगले और ढपी यमूना जी के मध्य में दो कुण्ड (अधबीच का कुण्ड व मूल कुण्ड) आये हैं, जिनकी तलहटी कई प्रकार के महलों की शोभा से युक्त है

जब मोहोल से चलिए एक नेहेर चली और ।
ताके दोनों तरफों बैठक, थम्भ देहेलान मेहेराबी और ।।९।।

जब मूल कुंड की तलहटी में आये महलों से पूर्व की ओर चलते हैं, तो एक नहर और दिखायी देती है, (जो यमूना जी के रूप में प्रकट होती है)। इसके दोनों ओर पाल पर स्तम्भो की दो हारें हैं, जहां सुंदर बैठकों की शोभा है ।

एह नेहेर आए पोहोंची कुण्ड को, मोहोल बैठक चारों ठौर ।
तरफ पश्चिम बैठिए, बंगले देखिए जल सोर ।।१०।।

अधबीच के कुण्ड की तलहटी से सारा जल नहर के द्वारा मूलकुण्ड की तलहटी में पहुंचता है । मूल कुण्ड के चारों ओर (तलहटी में) महल व बैठकें शोभायमान हैं । मूल कुण्ड के चबूतरे में पश्चिम दिशा में बैठते हैं, तो पुखराजी ताल की शोभा दिखती है तथा १६ धारायें गिरने की मधुर ध्वनि सुनायी देती है।

जब पूरब तरफ बैठिए, तब जमुना लों टीलों देत देखाए ।
दोए बाजू हार थम्भन की, चबूतरा दोनों तरफों चले जाए ।।११।।

जब कुंड के चबूतरे पर पूर्व में बैठते हैं तब यमूना जी के ऊपर भी गुम्मटियां दिखायी देती है । यमूना जी के दोनों तरफ पाल (चबूतरे) पर स्तम्भो की दो-दो हारें आयी हैं ।

कुण्ड के चबूतरे से लगी, पड़ी जमुना की छात ।
थम्भ मेहेराब तिन तले चले, सो क्यूं कहूं या की बात ।।१२।।

यमूना जी के दोनों तरफ आये स्तम्भो की छत (मरोड़ तक की) आधी दूरी तक यमूना जी के ऊपर भी आयी है, जो मूल कुण्ड के चबूतरे से मिली है। इस छत के नीचे पाल पर स्तम्भ व महराबें यमूना जी के दोनों तरफ बराबर चली जा रही हैं ।

दोए किनारे लगी कांगरी, गुमटी कलस चली तीन हार ।
ढंपी जमुना लों इन भांत, करे जुगल सरूप बिहार ।।१३।।

पाल पर आये स्तम्भों की छत पर दोनों किनारे कांगरी की शोभा है तथा गुम्मटों व कलशों की कुल तीन हारें पूर्व की ओर जा रही हैं (दो हारें दोनों पाल की छत पर व एक हार यमूना जी की छत पर है) । इस प्रकार की शोभा ढपी यमूना जी तक है, जहां युगल स्वरूप लीला विहार करते हैं ।

आंगू खुली जमुना चली, दोए बाजू चबूतर ।
थम्भ मेहेराब छात बनी, दोए हार गूरज गुमटी दोए ऊ पर ।।१४।।

मरोड़ तक की आधी दूरी के बाद यमूना जी खुली है । अर्थात् दोनों तरफ पाल पर उसी प्रकार स्तम्भ, छत व गुम्मटें आयी हैं, किंतु यमूना जी के ऊपर छत नहीं आयी है । यहां से दोनों तरफ के पालों की चांदनी में गुम्मटियों की १-१ कुल दो हारे आयी हैं ।

दो दो हार कांगरी बनी, दोउ छातों किनार ।
बाहिर से वन ढांपिया, जित जुगल सरूप बिहार ।।१५।।

दोनों पाल की छतों के दोनों किनार पर कांगरी की २-२ हार बनी है । दोनों तरफ पुखराजी रौंस पर आये बड़ोवन के वृक्षों ने पाल के दहलानों को ढंक कर यमूना जी के जल चबूतरे तक छाया प्रदान की है । यहां युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी व सखियां अनेक प्रकार से लीला विहार करते हैं ।

ढांपी छातों दरखत मिली, दोनों तरफों से आए ।
खुली जमुना वन मोहोल को, ढांप्या सब देखाए ।।१६।।

ढपी जमुना जी में दोनों तरफ से वृक्षों की डालियों ने आकर सम्पूर्ण छत को ढांप लिया है । जबकि खुली यमूना जी में वृक्षों की डालियों ने दोनों तरफ से आकार पाल के दहलानों को ही (यमूना जी के जल चबूतरे तक) ढांपा है ।

प्रकरण ६७, चौपाई २५५४

ढ़पी जमुना

इस प्रकरण में ढंपी यमुना जी का वर्णन प्यारी ब्रह्मांगनाओं के लिए हुआ है । यमुना जी कुछ दूरी तक ढंपी प्रवाहित होती हैं, फिर खुले रूप में प्रवाहित हो कर ईशान कोने से मुड़ कर दक्षिण दिशा की ओर चली जाती है । यमुना जी के मरोड़ पर आए चारों महल और उनकी महराबों में आए हिंडोलों की शोभा का मनाहारी वर्णन हुआ है ।

अब कहूं हकीकत, ढांपी जमुना की ठौर ।
तिन के अन्दर की कहूं, फेर मोमिन देखियो और ।।१।।

अब ढपी यमुना जी के अन्दर की शोभा का वर्णन करता हूं। फिर आगे की शोभा को सुंदरसाथ जी! बाद में देखियेगा ।

चली चार हार थम्भन की, दो चबूतरों किनार ।
कठेड़ा दोनों तरफों, हक हादी करें बिहार ।।२।।

दोनों पालों की दोनों किनार पर स्तम्भों की कुल ४ हारें शोभायमान हैं । पालों की दोनों किनार पर कठेड़े आये हैं, जहाँ श्री राज श्यामा जी विहार करते

हैं ।

दोउ किनार उतरती, सीढ़ियां दोनों तरफ चबूतर ।
तहां जल में ठाढ़े रहिए, तहां वन के खातर ।।३।।

चबूतरे (पाल) से दोनों तरफ किनार पर (जगह–जगह) सीढ़ियाँ उतरी हैं । यहाँ से एक तरफ (अंदर की तरफ) यमूना जी के जल रौंस पर सीढ़ियां उतरी है, यहां आकर यमूना जी की शोभा देखिये। दूसरी (बाहर की) तरफ सीढ़ियों से उतरकर बड़ोवन की शोभा देखिये ।

एह पगथियां रे चल गए, दूर लों पोहोंचिए धाए ।
इन ठौर बिलास के, कई सुख देत देखाए ।।४।।

पाल से बाहरी तरफ की इन सीढ़ियों से उतर के दौड़ते हुए दूर तक (रेती रमण में) चले जाईये । यहां हांस-विलास के बहुत सारे स्थान दिखायी दे रहे हैं ।

जहां जमुना लौट चली, पूरब से तरफ दक्खिन ।
तहां चारों कोने चार मोहल पड़े, तहां झूले चार हिंडोलन ।।५।।

यमूना जी पूर्व में ईशान कोने तक जाकर दक्षिण दिशा में मुड़ गयी है । मोड़ पर यमूना जी के चारों कोनों में ४ महल आए हैं, जिनकी महराबों में ४ झूले लगे हुए हैं ।

चौकोने मरोड़ जमुना को, तिनके उंचे मोहोल आसमान ।
तापर कलश कांगरी, अन्दर चार दरवाजे जान ।।६।।

यमूना जी की मोड़ चौकोण (९० डिग्री) है, वहां चारों कोनों में चार महल हैं, जो आकाश तक ऊंचे हैं । उन पर कलश व कांगरी की शोभा बनी है, उनकी चारों दिशाओं में चार दरवाजे विद्यमान हैं ।

तीन मोहोल जमुना पर, एक पड़ो तरफ वार ।
चबूतरा लगता चल्या, इत होत अति बिहार ।।७।।

तीन महल यमूना के एक तरफ (उस पार) हैं, तथा चौथा महल यमूना जी के इस पार है । ये चारों महल पाल (चबूतरा) पर आये हैं, जहां अत्यंत आनंददायी लीलाएं होती है ।

लगी हिंडोले एक को, जंजीरे तरफ चार ।
चली दो दो गुमटी बीच, जुगल सरूप बेठनहार ।।८।।

चारों महलों की गुम्मटियों के बीच महराबें बनी हैं । चारों महराबों में चार जंजीरें लटक रही हैं,जिनमे चार हिण्डोले शोभायमान हैं । प्रत्येक दो गुम्मटियों के मध्य एक हिण्डोला शोभायमान है, जहां युगल स्वरूप विराजमान होकर झुलने का आनंद लेते हैं ।

दोए किनारे दोए हिंडोले, दोए परे जल पर ।
यूं साम सामें झलकत, पड़ा चौक जल उपर ।।९।।

चार में से दो हिण्डोले यमूना जी की किनार पर हैं तथा दो हिण्डोले यमूना जी के जल पर लटक रहे हैं । इस प्रकार चारो हिण्डोलें आमने सामने विराजमान हैं, जिनकी ताली यमूना जी के ऊपर पड़ती है ।

जेती जमुना चौड़ी चलीं, तेती दूर पडे मोहोल ।
इत हक हादी रूहें, झूलत इन हिंडोलन ।।१०।।

यमूना जी जितनी चोड़ी है, उतनी ही दूरी पर ये चारों महल स्थित हैं । इन हिण्डोलों में श्री राज श्यामा जी व सखियां झूलते हुए हांस-विलास करते हैं ।

यूं ही हिंडोले चलते चले, सो पुल को लगे आए ।
ए नूर जवेर रोशनी, अतंत है सुखदाए ।।११।।

इसी प्रकार महल व हिण्डोले यमूना जी के दोनों तरफ केल पुल तक आते गये हैं । इनके नूरमयी जवाहरात चारों तरफ जगमगाते हुए रोशनी फैला रहे हैं, जो कि अत्यंत सुखदायी व मनोहारी हैं ।

प्रकरण ६८, चौपाई २५६५

पुल की विधि

इस प्रकरण में यमूनाजी पर आए पुलों की शोभा का वर्णन बड़ी युक्ति से किया है, ताकि ब्रह्मात्मायें इस ज्ञान के माध्यम से अपनी सुरता परमधाम में ले जा सकें और चितवन के द्वारा इन पुलों पर श्रीराजश्यामाजी के साथ विहार करके निज वतन के अखंड सुखों का स्वाद लें ।

कहूं हक़ीकत पुल की, साम सामी दोए ठौर ।
दरम्यान सातों घाट कहे, किनारे छुटक देहुरी और ।।१।।

अब दोनों पुलों (केल पुल व बट पुल) की शोभा वर्णन कर रहे हैं । दोनों पुल आमने-सामने शोभायमान हैं, जिनके मध्य में यमूना जी के दोनों ओर सात घाट विद्यमान हैं । यमूना जी के दोनों किनारे जल रौंस में, सातों घाटों की संधि में ६-६ छूटक द्योहरियां आयी हैं ।

सुनो हक़ीकत मोमिनों, पुल एक हीरे की जान ।
ताकी पांच भोम छठी चांदनी, ताकी करो पेहेचान ।।२।।

पुल की बनावट के विषय में सुनिये सुंदरसाथ जी, यह पुल एक हीरे का (संधि रहित) है, जिसकी पांच भोम छठी चांदनी है, उसकी पहचान कीजिये ।

चौड़ी लम्बी बराबर, जमुना पर बराबर ।
जेती जमुना चौड़ी, तेती शोभित तिन पर ।।३।।

यमूना जी जितनी चौड़ी है, उतना ही लम्बा-चौड़ा यह पुल यमूना जी पर शोभायमान है ।

इन मोहोल के फिलपाइए, उठे जिमी से जल दरम्यान ।
अग्यारे अग्यारे की हार कही, चारों तरफ पेहेचान ।।४।।

इस पुल महल में सर्वप्रथम ११ फीलपायो (स्तम्भों) की ११ हारें जल के भीतर, जल की जमीन में उठे हैं ।

ताकी कही गिनती, एक सौ एक बीस ।
दस घड़नाले ता बीच में, ठौर पावे हक बकसीस ।।५।।

उन स्तम्भों की कुल संख्या १२१ होती है । ११ स्तम्भों के बीच १० घड़नाले (महरावें) शोभायमान हैं । इसकी शोभा श्री राजजी की कृपा से पता चलती है ।

कहूं तिन अन्दर की, दोए सौ बीस है द्वार ।
दस दस दिवालों लगते, जो देखन के अलंकार ।।६।।

इन स्तम्भों के मध्य आड़ी-खड़ी कुल मिलाकर २२०(११०+११०) महरावें होती हैं । इनमें से १०-१० महरावें यमूना जी के पूर्व व पश्चिम की दीवार पर अलंकार के रूप में (अक्शी) आयी हैं ।

बाकी रहे दोए सौ, सो रहे दरम्यान ।
फिलपाइयों पर छात कही, फेर देखो ताकी पेहेचान ।।७।।

इन २० महराबों के अतिरिक्त बाकि २०० महराबें उनके मध्य में हैं । इन सभी स्तम्भो (फीलपायों) पर छत (पुल) बनी है । उसकी शोभा एक बार पुनः देखिये ।

दोए किनारे जमुना के, कहे जो बाजू दोए ।
चार घड़नाले तापर आए, दोनों बाजू देखियो सोए ।।८।।

यमूना जी के दोनों तरफ किनार पर १२५ मंदिर का चौड़ा, कमर भर गहरे पानी वाला जल चबूतरा आया है । जिस पर दोनों तरफ २-२ कुल ४ घड़नाले हैं ।

छे घड़नाले बाकी रहे, तेउ जल दरम्यान ।
तीन तीन पाइए चबूतरे, फेर ताकी कहूं पेहेचान ।।९।।

उनके अतिरिक्त बाकि छे घड़नाले उनके बीच में आये हैं । दोनो तरफ ३-३ स्तम्भ जल चबूतरे पर आये हैं, उसकी पहचान फिर से कहता हूं।

दोउ बाजू चबूतरे, एक तले लगता चबूतर ।
बाकी हार पांच पानी मिने, फेर कहूं मोमिन की खातर ।।१०।।

यमूना जी के दोनों तरफ पाल के रूप में चबूतरे आये हैं तथा १-१ जल चबूतरा यमूनाजी के अंदर दोनों तरफ किनार पर आया है, जिन पर स्तम्भों की ३-३ हारे आयी हैं । बाकि पांच हारें जल की जमीन में आयी हैं । सुंदरसाथ के वास्ते उसका पुनः स्पष्ट रूप से वर्णन करूंगा।

ए जो छात पेहेले कही, तिन की तरफे चार ।
चारों तरफों द्वार पड़े, दस दस गिनती देखो सुमार ।।११।।

जल की जमीन पर आये स्तम्भों की छत (पुल), जिसका वर्णन पहले किया है, उस पर ११ स्तम्भों की ११ हारें पुनः आयी हैं । उसकी चारों दिशाओं में ११-११ स्तम्भों के मध्य १०-१० महराबी द्वार बने हैं ।

दोए बाजू जल पर पड़ी, पड़ी तिनके छज्जे पर मेहेराब ।
छज्जे किनारे थम्भ कठेड़ा, सुनते पावे बका सबाब ।।१२।।

पुल की दो दिशाएं (उत्तर व दक्षिण) जल की तरफ हैं । वहां छत

(दूजी भोम) से छज्जे (५० मंदिर के) निकले हैं, जिसके किनारे स्तम्भ व कठेड़े शोभायमान हैं, जिसे सुनते ही परमधाम का अखण्ड सुख प्राप्त होता है ।

और दोए बाजू तरफ जिमीअ के, तहां चबूतरे दोए ।
तापर थम्भ कठेड़ा, छाते मेहेराब चली सोए ॥१३॥

तथा पुल की दो दिशाएं (पूर्व व पश्चिम) जल रौंस व वन की तरफ हैं । वहां दो चबूतरे पाल के रूप में शोभायमान हैं । इन दोनों दिशाओं में पुल की किनार पर स्तम्भ व कठेड़े शोभायमान हैं, जिनकी पांच भोम तक महरावें शोभायमान हैं ।

इन छज्जे छज्जे फिरवलिए, पुल मोहोल गृदवाए ।
नूर जवेरों झलकत, अतन्त हैं सुखदाए ॥१४॥

पुल महल के चारों तरफ जो ५० मंदिर का चौड़ा छज्जा निकला है, उस पर चारो तरफ घूमिये । चारों तरफ नूरमयी रंगबिरंगे जवाहरात जगमगा रहे हैं, जिनकी शोभा अत्यंत सुखदायी है ।

यों ही पांच भोम लों, चढ़ता चढ़े थम्भ द्वार ।
ऐसे ही मेहेराब कठेड़ा, करे जुगल स्वरूप बिहार ॥१५॥

इसी प्रकार पांच भोम तक स्तम्भ, द्वार, महरावें, कठेड़े शोभायमान हैं । जहां युगल स्वरूप आनंदपूर्वक लीला विहार करते हैं ।

दोए तरफ छज्जे पानी पर, दोए तरफ पड़े वन ।
नूर जवेरों झलकत, ए जंग करे सब रोशन ॥१६॥

पुल महल के छज्जे दो तरफ पानी पर पड़े हैं तथा दो तरफ वन से लगे हैं । इन नूरमयी जवाहरातों की रंगबिरंगी किरणें आपस में टकराते हुए चारों तरफ जगमगा रही हैं ।

प्रकरण ६९ चौपाई २५८१

पुल के अंदर की विधि

इस प्रकरण में यमूना जी पर आए पुलों के भीतर की शोभा का वर्णन है । ताकि सुंदरसाथ अपनी आत्मिक नज़र परमधाम में ले जा सकें । पुल में आए स्तम्भो की हार और उनकी नूरी महराबों में हिडोलों का वर्णन है। नूरी चांदनी के दर्शन करवाएं हैं ।

क्यू कहूं मोहोल अन्दर की, फिलपाइए एक सौ एकइस ।
तिनके पड़े मेहेराब, सो भए लेखे दोए सौ बीस ।।१।।

पुल महल के अंदर की शोभा किस प्रकार कहूं? यहां ११ स्तम्भों की ११ पंक्तियां (कुल १२१ स्तम्भ) शोभायमान हैं, उनकी आड़ी-खड़ी कुल २२० महराबें होती हैं।

ताके हर एक भोम में, पड़े चौक सौ एक ।
ऐसे पांच भोम के पांच सौ, यूं गृदवाए देखिओ नेक ।।२।।

इन स्तम्भों के मध्य प्रत्येक भोमों में दस चौकों की दस हारें कुल १००(१०x१०) चौक आये हैं, तब पांच भोम के कुल ५०० चौक होते हैं ।

हर एक भोम के, मेहेराब देखो तुम ।
दोए सौ बीस गिनती, देखावत हक हुकम ।।३।।

आप प्रत्येक भोम के महारावों की शोभा देखिये, इसे श्री राजजी का हुक्म दिखा रहा है, कि प्रत्येक भोम में २२० महरावें शोभायमान हैं ।

ऐसे पांचो भोम के, अग्यारे सौ सुमार ।
जित हक हादी रूहें, नित करत बिहार ।।४।।

इस प्रकार पांच भोमों के कुल ११०० महरावें होती हैं, जहां श्री राज श्यामा जी व सखियां नित्य प्रति लीला विहार करते हैं ।

इन के पड़े जो द्वार, अग्यारे सौ होए ।
पड़े अग्यारे सौ हिंडोले, हक हादी झूलत सोए ।।५।।

इन स्तम्भों के ११०० महाराबी द्वार होते हैं, जिनमें ११०० हिण्डोले शोभायमान हैं, जहां श्री राजश्यामा जी व सखियां झूला झूलती हैं ।

ज्यों बट पीपल के हिंडोले, झूलत चौक होए एक ठौर ।
त्यों ही हिंडोले इनके, यूं ही पांचो भोम में और ।।६।।

जिस प्रकार बट पीपल की चौकी के हिण्डोले झूलते समय चारों दिशा से एक जगह आते हैं और ताली पड़ती है, उसी प्रकार पुल महल में भी प्रत्येक चौक में चार हिण्डोलों की ताली पड़ती है । इसी प्रकार पांचों भोमों में झूलते हैं।

अब देखो एह चांदनी, बराबर चौरस चावक ।
चारों तरफो कठेड़ा, जित बैठक रूहें हक ।।७।।

अब केल पुल की छठी चांदनी की शोभा देखिये । चारों तरफ से बराबर चौरस है । चारों तरफ किनार पर कठेड़े की शोभा है, जहां श्री राजश्यामा जी व सखियां विराजमान होकर अनेक प्रकार से हांस विलास करते हैं ।

इन कठेड़े के बाहिर, लटकत छज्जा गृदवाए ।
मोहोल अन्दर सीढ़ियां, तहां से चांदनी चढ़िए धाए ।।८।।

इस कठेड़े के बाहरी तरफ लटकता हुआ छज्जा चारों तरफ आया है । पुल महल के अंदर (स्तम्भों में) आयी सीढ़ियों से दौड़ते हुए सखियां चांदनी में चढ़ जाती हैं ।

तिन चांदनी पर दुलीचा, ता पर सिंघासन
गृद कुरसियां बेठक, दिल चाहे पोहोंचे रोशन ।।९।।

उस छठी चांदनी में नूरमयी दुलीचा बिछा है, जिस पर सिंहासन विद्यमान है । सिंहासन के चारों ओर बैठने हेतु कुर्सियां हैं, जो कि इच्छा मात्र से प्रकट हो जाती हैं ।

इत जुगल सरूप, आवे असवारी जब ।
रूहें संग आए के, झूलत हिंडोले तब ।।१०।।

केल पुल पर जब श्री राजश्यामा जी व सखियां सुखपालों में सवार होकर आते हैं, तब यमूना जी के ऊपर पुल पर सुशोभित हिण्डोलों में झूलने का आनंद लेते हैं ।

प्रकरण ७० चौपाई २५९१

पुल निकट केल घाट

इस प्रकरण में केल घाट का मनोरम वर्णन है । यमुना जी की पाल पर आए वृक्षों की पांच हारों और उनकी पांच भोम छठी चांदनी की अदभूत शोभा का विस्तार से वर्णन हुआ है । सातों घाटों के दरम्यान आई छूटक-छूटक देहुरियाँ का मोमिन इसी ब्रह्म वाणी की बरकत से चितवन से अनुभव करते हैं ।

अब कहूं पुल निकट, रहे केल का घाट ।
तिन के चौक पड़े, बन्यो अति सुन्दर ठाट ।।१।।

अब केल पुल के निकट स्थित केल घाट का वर्णन कर रहे हैं । यहां बड़ोवन के वृक्षों की ५ हारों के मध्य अति सुंदर चौक बने हैं ।

चल्या आया चबूतरा, मूल जमुना से दोनों पार ।
सो जाए पोहोंचा हौज लों, होत दोनों तरफ मेहेराब ।।२।।

यमूना जी के दोनों तरफ जो कमर भर उंचा चबूतरा (पाल) आया है, वह हौज कौसर ताल तक गया है । वहां (अग्नि कोण के मोड़ से हौज कौसर तक) यमूना जी के दोनों तरफ पाल पर स्तम्भ, महराबें व ९०-९० देहूरियां शोभायमान हैं ।

इन चबूतरों पर चली, पांच हार दरखत ।
ताकी भोम पांचमी, छठी चांदनी खुसबख़त ।।३।।

इस पाल पर बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारें चली हैं, जिनकी पांच भोम छठी चांदनी आनंददायक है ।

छे घाट लों यों ही चल्या, सात माहे बट घाट ।
तिनकी भी पांच भोम, छठी चांदनी ठाट ।।४।।

पाल पर छै घाट इसी प्रकार (बड़ोवन की पांच हारें) आये हैं । सातवां घाट बट का है, जिनकी (एक बड़े बट के वृक्ष की) भी पांच भोम छठी चांदनी शोभायमान है ।

छूटक चली है देहुरियां, इन सातो घाटों दरम्यान ।
सो उपर इन चबूतरे, ताको बेवरा सुने पेहेचान ।।५।।

इन सातों घाटों की संधि में यमूना जी के दोनों तरफ जल रौंस पर ६-६ छूटक द्योहरियां आयी हैं, उसका विवरण सुनिये ।

जैसी जुगत बाहिर है, तैसी जुगत जमुना पर ।
जुगल सरूप नित्याने, इत करत बिहार ।।६।।

जैसी युक्ति (बनावट) यमूना के बाहरी तरफ (पश्चिम में) है, वैसी ही युक्ति यमूना ही के भीतरी तरफ (पूर्व में) है । श्री युगल स्वरूप नित्य प्रति यहां लीला विहार करते हैं ।

ए जो पांच हार दरखत की, तिन में पड़े चौक चार हार ।
ऐसे ही पांचों भोम के, ए सुख मोमिन देखनहार ।।७।।

यमूना जी के पाल पर ये जो बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारें आयी हैं, उनके मध्य चौकों की चार हारें आयी हैं । इस प्रकार बड़ोवन के पांचो भोमों के सुख हैं, जिन्हें ब्रह्मात्माएं ही देखती हैं ।

इन चौक सातों घाट में, वार पार हिंडोले जान ।
हक हादी रूहें झूलत, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।८।।

यमूना जी के दोनों तरफ सातों घाटों के इन चौकों में हिण्डोले शोभायमान हैं, जहां श्री राज श्यामा जी व सखियां झूलती हैं । इसकी पहचान मोमिनों के दिलों में होती है ।

चौक केलों के कई पड़े, तामें कहूं एक जुगत ।
ऐसे ही सातों घाट में, इत कहूं केल दरखत ।।९।।

केल घाट में केलों के वृक्षों के मध्य कई प्रकार के चौक बने हैं, उसमें से एक शोभा का वर्णन करता हूं । ऐसे ही सातों घाटों में शोभा जानिये । यहां केले के वृक्षों की शोभा कह रहा हूं।

एह जो चला चबूतरा, जमुना भर किनार ।
तिन लगता केल हार, लटकत जल उपर ।।१०।।

यह जो चबूतरा (पाल) यमूना जी के दोनों किनार पर आया है । उस पर यमूना जी के तरफ किनार पर आये केलों के वृक्षों की डालियां जल पर (जल चबूतरे तक) लटकते हुए शोभायमान हैं ।

कच्चे पके केलों कतरे, लटकत जल उपर ।
बीच बीच द्वार बनी, ढांकी जुगत मेहेराब इन पर ।।११।।

कच्चे पक्के केलों के गुच्छे यमूना जी के जल (जल चबूतरे) के ऊपर

लटकते हुए शोभायमान हैं । बीच बीच में केलों के वृक्षों की डालियों से महराब व छत बने हैं, जिससे नीचे पाल की सारी शोभा ढक गयी है ।

आगे इन के चौक चले, ताके चारो तरफ दिवाल ।
सो पड़ी पेड़ थम्भन की, लटकत केल पुल खुसाल ।।१२।।

केलों के चौक में चारों तरफ वृक्षों के थड़ो (तना) के स्तम्भ तथा डालियों की दीवाल (महराबें) आयी है । इस प्रकार केल घाट की डालियां केलपुल की तरफ भी जाकर उनके छज्जों से मिली हैं ।

इत चारों तरफो चौक में, लटके पुल केलन ।
तले चौक के रेती बनी, सो झलकत नूर रोशन ।।१३।।

पाल पर केलों के वृक्षों के मध्य आये चौक के ऊपर वृक्षों की डालियां पुल (छत) के समान लटक रही हैं, जिसकी छांव तले नीचे चौक में नूरमयी रेती जगमगा रही है ।

ऐसे ही हार चौकन की, ताकी गिनती नाहीं सुमार ।
चौकौ दरम्यान गली चली, सो ढांपी पात सुखकार ।।१४।।

इसी प्रकार वृक्षों के मध्य आये चौक बेशुमार (असंख्य) हैं । इन चौकों में आनंददायी गलियां बनी हुयी हैं, जो वृक्षों की डालियों व पत्तों से ढकी हुयी हैं ।

चौक पेड़ मेहेराब बने, सो हर ठौर जान ।
इन गलिओं चौक आइए, इत द्वार बने नूर पेहेचान ।।१५।।

केल घाट में चौक, वृक्ष व महराबें सभी जगह बनी हुयी हैं । इन गलियों व चौकों में आईये, यहां वृक्षों की डालियों के नूरमयी महराबी द्वार बने हुये हैं ।

इन चौक दरम्यान में, कई बने छूटक दरखत ।
नारिअर सुपारी आंबरे, कई छूटक शोभित इत ।।१६।।

पाल पर बड़ोवन के वृक्षों की ५ हारों के मध्य चौकों में नारियल, सुपाड़ी, आंवले आदि के कई छोटे (दो भोम ऊंचे) वृक्ष आये हुए हैं (एक चौक में २४ छोटे वृक्षों की २४ हारें हैं) ।

ए चौक मिल्या जाए बड़ेवन को, जित हिंडोलें हींचत ।
इत खुसाली खूबियां, शोभित इन दरखत ।।१७।।

केल घाट में आये बड़ोवन के वृक्षों की ५ हारें पश्चिम की तरफ जाते हुए रंगमहल के उत्तर में आये बड़ोवन से मिल गये हैं, जहां पर श्री राज श्यामा जी व सखियां हिण्डोलों में झूला झूलते हैं । इन वृक्षों में अनेक प्रकार के पशु पक्षी (खूबी खुशाली) शोभायमान हैं ।

प्रकरण ७१ चौपाई २६०८

अब कहूं लिबोई घाट की, हारो दोर दरखत ।
भोम पांच छठी चांदनी, इत रोशन नूर देखत ।।१।।

अब लिबोई (नीम्बू) के घाट की शोभा का वर्णन करूंगा। यहां वृक्षों की सभी (५) पंक्तियां एक सीध में हैं, जिनकी पांच भोम छठी चांदनी नूरमयी रोशनी से युक्त दिखायी दे रही है।

ए किनार जमुना का, इत बड़े और दरखत ।
हार पांच तिन की कही, इत शोभित नूर अतंत ।।२।।

यमूना जी की किनार पर विद्यमान ये वृक्ष अत्यंत बड़े बड़े हैं । इन नूरमयी वृक्षों की पांच पंक्तियां शोभायमान हैं (एक घाट में ५ वृक्षों की १० हारें हैं) ।

ए किनारे जमुना के, शोभित चबूतरा नूर ।
उतरती पगथिआं, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।३।।

यमूना जी के किनारे यह नूरमयी चबूतरा (पाल) अत्यंत शोभायमान हो रहा है । इस पाल से यमूना जी के जल रौंस पर जगह-जगह ३-३ सीढ़ियां उतरी हैं, उसकी शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं ?

और तले जल चबूतरा, आइए उतर पगथिआं रोस तापर ।
कमर लों उंचो जल रहे, सो कह्या मोमिनो खातर ।।४।।

और जल रौंस से यमूना जी के अंदर स्थित कमर भर गहरे पानी वाले जल चबूतरे पर ३-३ सीढ़ियां उतरी हैं । यह शोभा ब्रह्मात्माओं के लिये ही वर्णन किया है ।

आगे पांच हार छोड़ के, चले नीबूं दरखत ।
तिन की दो भोम तीसरी, चांदनी अतंत शोभित ।।५।।

पाल पर आये बड़ोवन के वृक्षों की ५ हारों के पश्चात् (पश्चिम में पुखराजी व वन की रौंस छोड़कर) नीम्बू के वृक्ष (लिबोई वन) आये हैं, जिनकी दो भोम तीसरी चांदनी अत्यंत शोभायमान है ।

एक भोम तले जिमीन की, दूसरी हद दरम्यान ।
तीसरी कही चांदनी, ताकी करो पेहेचान ।।६।।

लिबोई (नीम्बू) वन की प्रथम भोम जमीन पर, रंगमहल के चबूतरे से एक भोम नीचे है । दूसरी भोम रंगमहल की प्रथम भोम के बराबर ऊंचाई पर है । तीसरी चांदनी रंगमहल की दूसरी भोम के बराबर है, उसकी पहचान कीजिये ।

इन की हद ताड़ वन लों, सो केता कहूं विस्तार ।
चौक चौक पड़ते चले, बीच बीच बने हैं द्वार ।।७।।

नीम्बू वन की सीमा पश्चिम में ताड़वन तक (500 मंदिर चौड़ी व २००० मंदिर लम्बी) है । उसका विस्तार किस प्रकार कहूं ? वृक्षों की हारों के मध्य क्रमशः चौक बनते गये हैं, जिनके बीच-बीच में वृक्षों की डालियों के महराबी द्वार बने हुए हैं ।

पेड़ जुदे लम्बी डारियां, छाते मिली सब एक ।
नीले पीले फूल बने, शोभित हर दरखतों अनेक ।।८।।

नीचे सभी वृक्ष अलग-अलग हैं, ऊपर जाकर उनकी लम्बी डालियां आपस में मिलकर चंद्रवा के समान एक सुंदर छत का निर्माण कर दिये हैं । उन प्रत्येक वृक्षों में हरे, पीले आदि अनेक रंगों के फूल शोभायमान हैं ।

फूल की जागा फूल बने, फल बने फल ठौर ।
मानों चन्द्रवा नूर का, उपरा उपर बने और ।।९।।

छत में जहां फूल होना चाहिए (जहां फूल अच्छा लगेगा), वहां फूल बने हैं । जहां फल होना चाहिए, वहां फल शोभायमान हैं । ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे नूरमयी चंदवा प्रत्येक भोमों में एक के ऊपर एक शोभायमान हैं ।

पात डारी बृख नूर के, झलकत जोत आकाश ।
पेड़ हार दोरी बन्ध, एह कह्यो न जाए प्रकाश ।।१०।।

पत्तों, डालियों व वृक्षों का नूर आकाश तक जगमगा रहा है । वृक्षों की सभी पंक्तियां सीध में हैं, उनका दिव्य प्रकाश अवर्णनीय है ।

प्रकरण ७२ चौपाई २६१८

अनार को घाट

श्री महामति जी "परमधाम की बड़ी वृत्त" के इस प्रकरण में अनार के घाट का वर्णन ब्रह्मसृष्टियों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं, ताकि श्री राज जी की लाडली रूहें इस इलम की बरकत से अपनी आत्मिक नज़र परमधाम के अलौकिक अनार घाट में मोड़ सके और चितवन से हक हादी और रूहों के संग लीला विहार करें ।

अब कहूं घाट अनार का, उपर इन चबूतर ।
एह चबूतरा हीरे का, किया जाहिर मोमिनों खातर ।।१।।

अब यमूना जी के पाल (चबूतरे) पर आये अनार के घाट की शोभा का वर्णन किया जायेगा । यह चबूतरा एक हीरे का है, जिसकी शोभा को सुंदरसाथ के वास्ते ही प्रकट किया है ।

दोए हार दोए किनार पर, तीन आई चबूतरे दरम्यान ।
ए पांचो हार दरखतन की, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।२।।

पाल के दोनों किनार पर वृक्षों की दो पंक्तियां हैं तथा उनके मध्य में तीन पंक्तियां हैं । वृक्षों की इन पांचों पंक्तियों की पहचान ब्रह्मप्रियाओं के दिल में रहती है ।

जमुना तरफ जो हार की, तिन आगे पगथी जड़ाव ।
तले उतरा पानी चबूतरा, सो क्यूं कहूं याको भाव ।।३।।

यमूना जी के तरफ जो वृक्षों की पंक्ति है, उसके सामने पाल से जल रौंस पर तीन रत्नजड़ित सीढ़ियां उतरी हैं । उसके भी आगे जल रौंस से जल चबूतरे पर पुनः तीन सीढ़ियां उतरी हैं, उसकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करें?

अनार की दोए भोम भई, तिन भोम दरखत और ।
यूं उपरा उपर पांच भोम, सो बनी घाट भर ठौर ठौर ।।४।।

बड़ोवन के पांच हारों के मध्य चौकों में स्थित अनार के वृक्षों की दो भोम तीसरी चांदनी है, तथा बड़ोवन के वृक्षों की एक के ऊपर एक पांच भोम छठी चांदनी है । इस प्रकार सम्पूर्ण घाट में शोभा है ।

पांच भोम छठी चांदनी, दोरी बंध दरखत ।
चौक पड़े सब तिन के, करे हक़ को खुसबखत ।।५।।

बड़ोवन के पांच भोम छठी चांदनी (छत) वाले ये वृक्ष कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं । उन सभी वृक्षों के मध्य बहुत से चौक भी आये हैं । यह सारी शोभा श्री राज जी को प्रसन्न कर देती है ।

इन चौक चौक दरम्यान में, बने रस्ते दोरी बंध ।
जुगते अति सोहामनी, या की क्यूं कहूं शोभा सनंध ।।६।।

इन सभी चौकों के मध्य युक्ति पूर्वक बिल्कुल सीधे-सीधे सुहावने रास्ते आये हैं, इनकी शोभा व बनावट का किस प्रकार वर्णन करें ?

इन छह छाते बराबर, मानों चन्द्रवा नूर ।
सो भोम उपर भोम शोभित, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।७।।

इन वनों की छः भोमें एक के ऊपर एक नूरमयी चंदवा के समान सुशोभित हैं । उनकी शोभा का वर्णन किस प्रकार करें ?

फल फूल अनार के, लालक करे झलकार ।
जुगल सरूप सैयन सों, नित्याने करे बिहार ।।८।।

यहां अनार के फलों व फूलों की लालिमा चारों तरफ नूरमयी झलकार कर रही है । यहां श्री राजश्यामा जी सखियों के साथ नित्य प्रति लीला विहार करते हैं ।

ए मुकाबिल धाम के, हद पांच सौ मंदिर ।
पांच सौ पड़े झरोखे, हजार खिड़की तले सुंदर ।।९।।

यह घाट रंगमहल के सामने (पूर्व में) है । इस वन की चौड़ाई ५०० मंदिर है (रंगमहल के पूर्व में तीन वन हैं - अनार, अमृत व जाम्बू) । इनके सामने रंगमहल के बाहरी हार मंदिरों के (बाहरी दीवारों में) ५०० झरोखे व

१००० छोटे दरवाजे शोभायमान हैं (प्रत्येक मंदिर में प्रत्येक झरोखे के दायें-बायें १-१ दरवाजे होते हैं) ।

इत हार दरखतन की, दोए मंदिर आगे एक दरखत ।
सुमार हार अढाई सौ, इत सुखकारी है अतित ॥१०॥

रंगमहल के दो मंदिरों के सामने अनार वन में वृक्षों की एक पंक्ति आयी है । इस प्रकार ५०० मंदिरों के सामने वृक्षों की २५० पंक्तियां आयी हैं ।

इन दरखत की दोए भोम, एक आई दरम्यान ।
दूसरी भई चांदनी, ताकी करो पेहेचान ॥११॥

इन वृक्षों की दो भोम तीसरी चांदनी है । जिसमें से प्रथम भोम जमीन पर, दूसरी भोम रंगमहल की पहली भोम के सामने तथा तीसरी चांदनी रंगमहल की दूसरी भोम के बराबर ऊंची है । उसकी पहचान कीजिये ।

जब खिड़की ठाढ़े रहिए, तब तले भोम जिमी दिखाए ।
जब छज्जे बैठिए, दरम्यान भोम नज़रों आए ॥१२॥

जब रंगमहल के प्रथम भोम के मंदिरों के दरवाजे में खड़े रहते हैं तो वनों की प्रथम भोम की धरती दिखायी देती है, किंतु जब झरोखों में बैठते हैं तो दूसरी भोम दिखायी देती है । (वृक्षों के प्रथम भोम की डालियां रंगमहल के प्रथम भोम के झरोखों के नीचे लगे हैं, जो धाम चबूतरे से २२ हाथ ऊपर हैं, जो दरवाजे से भी 11 हाथ ऊपर हैं) ।

दूसरी भोम धाम की बैठिए, तब चांदनी नज़रों आए ।
इत बिलास कई भांत के, सो क्यूं कर कहूं जुबांए ॥१३॥

जब रंगमहल की दूसरी भोम में बैठते हैं, तब वनों की तीसरी चांदनी नजर आती है । यहां कई प्रकार के सुख-विलास के साधन हैं, उसका किस प्रकार वर्णन करें ?

इत संधे वाला मिल्या, एक कोने अनार ।
दूजी नींबूइ ताड़ वन, चौथी धाम दिवाल किनार ॥१४॥

ईशान कोणे के १६ हांस के चेहेबच्चे के सामने इन चारों की संधि बनी हैं एक तरफ अनार वन है, इसकी उत्तर में नीम्बू वन है । नीम्बू वन के पश्चिम में ताड़वन है तथा ताड़वन के दक्षिण में व अनार वन के पश्चिम में रंगमहल है ।

इत चारों कोने दरम्यान, सोले हांस चबूतर ।
धाम की हांस एक, सुन जमा करो खातर ।।१५।।

इन चारों के बीच में रंगमहल के ईशान कोण में सोलह हांस का चबूतरा (चेहेबच्चा) शोभायमान है, जो रंगमहल की एक हांस से मिला हुआ है ।

आधा हांस एक तरफ, आधा दूजी तरफ होए ।
इन चबूतरे गुरज चली, बीच चबूतरे चेहेबच्चों कह्या सोए ।।१६।।

ईशान कोण में धाम चबूतरे के दो हांसों के आधे–आधे हांस से १६ हांस के चबूतरे का एक हांस मिला है। इस ६ हांस के चबूतरे के मध्य में चेहेबच्चा है। इसी के सामने रंगमहल की बाहरी दीवार से लगकर एक गुर्ज ऊपर की तरफ गया है ।

सोले हांस कही तिन की, गुरज पड़े चबूतरे किनार ।
सो दिवाल को लगता, चांदनी उंची निकस्या सुखकार ।।१७।।

इस चेहेबच्चे के १६ हांस कहे गये हैं, इसके सामने रंगमहल की बाहरी हार मंदिरों से लगता हुआ गुर्ज आया है, जो रंगमहल की चांदनी से भी एक भोम ऊपर गया है (जिस पर गुम्मट, ध्वजा, पताका की शोभा है) ।

हांसे हांस उतरती सीढ़ियां, आई सब ठौरो गृदवाए ।
हर हांस सीढ़ी एक बड़ी कही, सीढ़ी दाएं बाएं उतराए ।।१८।।

चेहेबच्चे की प्रत्येक हांस से चारों तरफ सीढ़ियां उतरी हैं । प्रत्येक हांस में एक बड़ी सीढ़ी (चांदा) है, जिसके दायें-बायें तरफ सीढ़ियां उतरी हैं ।

जैसी परकोटे की, है हौजकौसर की तरफ ।
एह शोभा है अति बड़ी, कह्यो ना जाए एक हरफ ।।१९।।

हौजकौसर ताल की तरफ (अग्नि कोण के) १६ हांस के चेहेबच्चे में कठेड़े की जैसी शोभा है, यहां भी वैसी ही है । यह शोभा अत्यंत महान् है, जिसका वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

चबूतरो गृद कठेड़ा, सो तीनों तरफ शोभाए ।
बाहेर रौंस को लगता, उतरती सीढ़ियां है सुखदाए ।।२०।।

१६ हांस के चबूतरे के बाहरी तरफ तीन ओर कठेड़े की शोभा है (रंगमहल की तरफ नहीं है) तथा बाहरी तरफ रौंस से लगती हुई सीढ़ियां उतरी

हैं ।

सो दोनों तरफो बीस बीस, ए जो सीढ़ी चढ़िए चबूतर ।
एह कही इन भोम में, सो मोमिन की खातर ।।२१।।

चांदे के चबूतरे से दोनों तरफ २०-२० सीढ़ियां उतरी हैं । इस प्रकार परमधाम की शोभा ब्रह्मात्माओं के लिये कह दिया है ।

प्रकरण ७३ चौपाई-२६३९

पाटघाट

इस प्रकरण में श्री रंगमहल के धाम दरवाजे के सामने यमूना जी पर आए पाट घाट की शोभा का वर्णन हुआ है । जल में झलकार करते सोलह नूरी स्तम्भ और पाट पर सुशोभित बारह स्तम्भ और उनकी शोभा का वर्णन विस्तार से ब्रह्मात्माओं के वास्ते हुआ है ।

कहूं हक़ीकत पाट घाट की, जो श्री धाम द्वार सनमुख ।
एह अमृत बन बड़ा घाट, क्यूं कहूं जुबांए सुख ।।१।।

अब पाट घाट की शोभा का वर्णन किया जायेगा, जो कि रंगमहल के मुख्य द्वार के सामने (पूर्व में) शोभायमान है । यह पाट घाट, अमृत वन का ही घाट है, जिसकी शोभा अवर्णनीय है ।

सोलह थम्भ कहे जल में, ताको रंग आसमान ।
एह नज़र मोमिन की, पोहोंचत है पेहेचान ।।२।।

पाट घाट में सर्वप्रथम जल की जमीन में १६ स्तम्भ आये हैं, जिनका रंग आसमानी (नीला) है । यहां तक ब्रह्मात्माओं की ही ज्ञान दृष्टि पहुंच पाती है ।

कहूं थम्भों का बेवरा, सुनो मोमिनों तुम ।
एह तुम को केहेलावत, हक़ सुभान का हुकम ।।३।।

अब पाट घाट के स्तम्भों का विवरण कहूंगा । सुंदरसाथ जी, आप ध्यानपूर्वक सुनिये । यह श्री राजजी का हुक्म ही आपसे कहलवा रहा है ।

आए चार थम्भ किनार पर, सो तो ऊपर चबूतर ।
चार तिन के सामने, जो आए जल भीतर ।।४।।

जल की जमीन में ४ स्तम्भों की चार हारें आयी हैं, जिनमें से पश्चिम की प्रथम पंक्ति की चार स्तम्भ जल चबूतरे पर आये हैं । पूर्व की अंतिम पंक्ति के चार स्तम्भ जल की जमीन पर आये हैं (पाट घाट १५० मंदिर का लम्बा-चौड़ा है, जिसके स्तम्भ ५०-५० मंदिर की दूरी पर आये हैं, किंतु जल चबूतरा १२५ मंदिर का चौड़ा है, इस कारण ४ स्तम्भों की तीन हारें जल चबूतरे पर है तथा ४ स्तम्भ जल की जमीन में हैं) ।

दो दाएं दोए बाएं बने, ए आए थम्भ चार ।
एक ऊपर चबूतरे, लगत किनारे एक विचार ।।५।।

दो दो (कुल ४) स्तम्भ दायें-बायें (उत्तर-दक्षिण में) हैं, तथा एक पंक्ति जल चबूतरे पर किनारे दीवाल से लगते हुए (अक्शी) आये हैं ।

यूं चार चार थम्भ चारों तरफ, तीन तीन घड़नाले होए ।
ए साम सामे मुक़ाबिले, शोभित है अति सोए ।।६।।

इस प्रकार चारों दिशा में ४-४ स्तम्भ दिखायी देते हैं, जिनके मध्य ३-३ घड़नाले आमने-सामने शोभायमान हैं ।

तीन मेहेराब तरफ धाम के, सो दिवाल में अलंकार ।
तीन तरफ अक्षर के, सो जल में करें झलकार ।।७।।

रंगमहल की तरफ (पश्चिम दिशा) के चार स्तम्भ यमूना जी के पश्चिम की दीवार से लगे हैं अर्थात् अक्शी स्तम्भ हैं, जिनके मध्य तीन अक्शी महराबें आयी हैं । पूर्व (अक्षर) के तरफ की तीन महराब खुले हैं, जो कि जल में झलकार कर रहे हैं ।

तीन अलंकार बट तरफ, और केल भए तीन ।
दो उपर चबूतरे, एक एक जल में करें आकीन ।।८।।

तीन महराबें बट घाट (दक्षिण) की तरफ आये हैं, तथा तीन महराबें केल घाट (उत्तर) की तरफ आये हैं । इनके सबके मध्य में दो स्तम्भों की दो हारे हैं, वे जल चबूतरे पर आयी हैं । उनकी चारों तरफ १-१ महराबें पानी में झलकार कर रही हैं ।

जमा नव घड़नाले खुले, तीन दिवाल में अलंकार ।
यूं बारे थम्भ बारे घड़नाले, ताको कह्या सुमार ।।९।।

इस प्रकार तीन दिशा के ३-३ महराबें (घड़नाले) कुल नौ महराबें खुली हैं तथा चौथी पश्चिम तरफ की तीन महराबें दीवाल पर अक्शी आयी हैं । इस प्रकार चारों तरफ किनार के १२ स्तम्भों व १२ महरावें का यह विवरण हुआ ।

एक हीरे की पाट है, सो बनी थम्भ घडनाले पर ।
तीन हिस्सा ढांपी चली, रही सात हिस्से खुली ऊपर ।।१०।।

इन सोलह स्तम्भों व महराबों पर एक हीरे की पाट बनी है । इस पाट ने यमूना जी का तीन हिस्सा (१५० मंदिर चौड़ा) ढांप लिया है और बाकि सात हिस्सा (३५० मंदिर चौड़ा) खुला है । (यमुना जी ५०० मंदिर चौड़ी है, जिसमें १५०-१५० मंदिर के लम्बे-चौड़े दो पाट यमुना जी के पूर्व-पश्चिम में आये हैं, मध्य में २०० मंदिर की यमुना जी खुली है)

पाट के चारों तरफ कठेड़ा, पाच थम्भ दोए बीच द्वार ।
और सब कठेड़ा, बाहेर छज्जा लटकन हार ।।११।।

पाट घाट के चारों तरफ किनार पर कठेड़े की शोभा है । पाट के पश्चिम में जो पाच नग के (हरे रंग के) दो स्तम्भ आये हैं, उनके बीच कठेड़ा नहीं है (द्वार है), बाकि सभी जगह में पाट की किनार पर कठेड़े की शोभा है । कठेड़े के आगे (बाहरी तरफ) लटकता हुआ छज्जा है ।

तीनों तरफ लटकता छज्जा, सो तीनों जल तरफ ।
ए शोभा है अति बड़ी, कह्यो जाए न एक हरफ ।।१२।।

तीनों तरफ (उत्तर, पूर्व, दक्षिण) में कठेड़े के बाहरी तरफ जल पर लटकता हुआ छज्जा शोभायमान है । यह शोभा अत्यंत बड़ी है, जिसके विषय में एक शब्द भी नहीं कहा जा सकता है ।

चारों कोने चार थम्भ बने, रंग नीलवी करे झलकार ।
नूर तरफ दोए मानिक, बट तरफ दोए हीरे सुखकार ।।१३।।

पाट घाट में चारों कोनों में नीलवी के चार स्तम्भ नीले रंग की झलकार कर रहे हैं । अक्षर धाम की तरफ (पूर्व में) दो स्तम्भ माणिक्य के लाल रंग के हैं तथा बटघाट की तरफ (दक्षिण) के दो स्तम्भ हीरे के सफेद रंग के हैं ।

धाम तरफ दोए पाच के, केल तरफ दोए पुखराज ।
ए बारे थम्भ बारे मेहेराब, इत सैयों संग बिराजत राज ।।१४।।

रंगमहल की तरफ (पश्चिम) के दो स्तम्भ पाच के हरे रंग के हैं तथा केले के घाट (उत्तर) के दो स्तम्भ पुखराज के पीले रंग के हैं । इस प्रकार पाटघाट के ऊपर चारों तरफ (पांच रंग के) कुल १२ स्तम्भों पर १२ महरावें हैं, जहां श्री राज श्यामा जी के साथ सखियां विराजते हैं ।

ता पर छात चांदनी, चारों तरफ कठेड़ा नूर ।
सब ठौरो छज्जा लटकत, सो झलकत नूर ज़हूर ।।१५।।

इन बारह स्तम्भों पर छत (चांदनी) बनी हुयी है, जिसके चारों तरफ किनार पर कठेड़े की शोभा है । कठेड़े की बाहरी तरफ चारों ओर छज्जा लटक रहा है, जिसकी नूरमयी किरणें चारों तरफ झलकार कर रही हैं ।

ता चांदनी पर दुलीचा, पाट पर दुलीचा नरम ।
सिफ़त दोनों की क्यूं कहूं, अति बारीक नरम पसम ।।१६।।

पाट घाट की चांदनी पर भी दुलीचा बिछा है तथा पाट घाट में भी अत्यंत नरम दुलीचा बिछा है । उन दोनों दुलीचों की विशेषता किस प्रकार बताऊं ? दोनों ही अत्यंत बारीक, नरम व पश्मी दुलीचे हैं ।

हक़ हादी रूहें जब बैठत, तब चारों तरफ दिखाए ।
एक धाम तरफ को, एक दोनों तरफ पुल दोए सुखदाए ।।१७।।

जब श्री राज श्यामा जी व सखियां पाट घाट पर विराजमान होते हैं, तब यहां से चारों तरफ की शोभा दिखायी देती है । एक तरफ (पश्चिम में) रंगमहल दिखता है, दो तरफ (उत्तर व दक्षिण में) मनोहारी केल व बट पुल दिखायी देते हैं ।

एक अक्षर ठौर की, नज़रों आवत तरफों चार ।
हक़ हादी रूहें बैठत, इत सुख करत बिहार ।।१८।।

तथा एक तरफ (पूर्व में) अक्षर धाम दिखायी देता है । इस प्रकार चारों तरफ की शोभा नजर आती है । यहां श्री राज श्यामाजी व सखियां विराजमान होते हैं, तो अनेक प्रकार से प्रेम व आनंदपूर्वक लीला विहार करते हैं ।

प्रकरण ७४, चौपाई २६५७

अमृत बन की शोभा

परमधाम के केन्द्र में श्री रंगमहल है । श्री रंगमहल की पूर्व दिशा में मुख्यद्वार के सामने चांदनी चौक और अमृत वन आया है । इस प्रकरण में इसकी शोभा का और रंगमहल के मुख्य द्वार के १० मंदिर के हांस का, मुख्य द्वार और मुख्यद्वार से चांदनी चौक में उतरती सीढ़ियों का विस्तृत वर्णन है ।

अब कहूं अमृत बन की, जो है पाट को घाट ।
चबूतरे तले ऊपर के, दोउ ऐसे ही बन्यो है ठाट ।।१।।

अब अमृत वन की शोभा का वर्णन करेंगे । जिसके सामने यमूना जी पर पाट घाट आया है । यमूना जी के किनार पर पानी के अंदर जल चबूतरा व बाहर पाल का चबूतरा- यह दोनों समान रूप से शोभायमान हैं ।

ऐसे ही पांच हार दरखत की, चली आई जमुना वार पार ।
दोरी बंध चबूतरे, चली आई पांचो हार ।।२।।

यमूना जी के दोनों तरफ पाल पर समान रूप से बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारें आयी हैं । दोनों पाल व वृक्षों की हारें पंक्तिबद्ध रूप से शोभायमान हैं।

बनी पांचो भोम ऊपरा ऊपर, दरखत चन्द्रवा मानों नूर ।
रोशनी झलके आसमान में, सो क्यूं कर कहूं ज़हूर ।।३।।

इन वृक्षों की पांच भोमें एक के ऊपर एक बनी हैं । वृक्षों की डालियां, फल, फूल आपस में मिलकर सुंदर रत्नजड़ित नूरमयी चंद्रवा के समान छत बना दिये हैं । उनकी रंगबिरंगी किरणें आकाश तक जाकर जगमगा रही हैं । उसकी शोभा किस प्रकार कहें ?

इत कई दरखत मेवन के, याकी गिनती न आवे पार ।
जित हक़ हादी रूहें, नित्याने करत बिहार ।।४।।

यहां मेवों के अनेकों वृक्ष हैं, जिनकी संख्या अनंत है । यहां श्री राज श्यामा जी व सखियां नित्य ही आनंदपूर्वक लीलाएं करते हैं ।

कई चौक थम्भन के, दरखत पेड़ दिवाल ।
ए थम्भ दरखत के बने, बने द्वार करत खुसाल ।।५।।

वृक्षों के मध्य कई चौक बने हैं । वृक्षों के थड़ स्तम्भ के रूप में व

डालियां दीवार (महराब) के रूप में शोभायमान हैं । इस प्रकार महराबी द्वार अत्यंत सुंदर व सुखदायी शोभा से युक्त हैं ।

कई चौक चौक बीच गलियां, सब ढांप लई वन की डार ।
इत रेती नरम रमन की, करे जुगल स्वरूप बिहार ।।६।।

इन वृक्षों के मध्य अनेकों चौक व चौकों के मध्य अनेकों गलियां विद्यमान हैं, जिन्हें वृक्षों की डालियों ने ढांप लिया है । यहा नूरमयी नरम रेती रमण के लिये हैं, जहां युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी, सखियों के साथ अनेक प्रकार से हांस-विलास करते हैं ।

ए दरखत सातों घाट की, जल पर झलूबे दोउ किनार ।
फल डारी पेड़ प्रतिबिंब पड़े, सुख रूहें लेवनहार ।।७।।

इस प्रकार सातों घाटों के वृक्षों की डालियां यमूना जी के ऊपर दोनों तरफ से जल चबूतरे तक छाया कर रही हैं । यमूना जी के निर्मल जल पर वृक्षों, फल व डालियों के सुंदर रंगबिरंगे प्रतिबिम्ब पड़ रहे हैं, जिनके सुख ब्रह्मात्माएं ही लेती हैं ।

अखोड अंजीर अमृत, उप छाहां अंगूर ।
शोभा नूर दरखत की, सो क्यूं कर कहूं ज़हूर ।।८।।

अमृत (बड़ो) वन के वृक्षों के मध्य चौकों में अंजीर, अंगूर की बेलें मंडल की तरह छाया कर रही हैं । इन नूरमयी वृक्षों की शोभा का वर्णन किस प्रकार करें ?

तरफ धाम की जो चले, ए जो नूर दरखत ।
तापर दोए भोम तीसरी चांदनी, सुख देत संझा बख़त ।।९।।

पाल के पश्चिम में रंगमहल की तरफ जो नूरमयी वृक्ष गये हैं, उनकी दो भोम और तीसरी चांदनी है। संध्या के समय इन वनों में विशेष रूप से आनंद प्राप्त होता है ।

चौक चौक मुकाबिले, द्वार मुक़ाबिले द्वार ।
गलियों मुकाबिले गलियों, सब बने दोरी बंध हार ।।१०।।

वृक्षों के चौकों के सामने चौक, महराबी द्वारों के सामने द्वार, गलियों के सामने गलियां सब पंक्तिबद्ध रूप से शोभायमान हैं ।

ए जो पेहेले पांचो भोम कही, पीछे कही तीन भोम दरखत ।
ता के एक द्वार पड़े, तीन भोम चांदनी इत ॥११॥

यह जो पहले पाल पर आये पांच भोम ऊंचे वृक्षों का वर्णन किया गया, फिर रंगमहल के सामने दो भोम तीसरी चांदनी के वृक्षों का वर्णन हुआ । इन सबके महराबी द्वार दो भोम (तीसरी चांदनी) तक समान रूप से आये हैं ।

एह बन चल्या आए धाम लों, एक हिस्सा इन का रह्या ।
हद चांदनी लों धाम की, द्वार सनमुख भया ॥१२॥

यह अमृत वन रंगमहल के सामने तक आया है । अमृत वन के ही एक हिस्से (१६६ मंदिर) में रंगमहल के मुख्य द्वार के सामने चांदनी चौक आया है ।

और हिस्से दोए दोए बाजू, आए लगा धाम दिवाल ।
जब बैठ झरोखे देखिए, तब अतंत होइए खुसाल ॥१३॥

चांदनी चौक के दायें-बायें दो हिस्सों में अमृत वन शोभायमान है, जो धाम चबूतरे से लगकर विराजमान है । जब रंगमहल के झरोखों में बैठकर वनों की शोभा देखते हैं, तो मन अत्यंत प्रसन्न हो जाता है ।

एक सौ सड़सठ मंदिर भर, ए जो बन अमृत ।
हद लगा अनार को पैठते तरफ दाहेनी इत ॥१४॥

चांदनी चौक के उत्तर दिशा में (दाहिने तरफ एक हिस्से में) १६७ मंदिर की जगह में अमृत वन के वृक्ष हैं, जो अनार वन की सीमा से लगे हैं ।

एक सौ सड़सठ मंदिरों, हद है अमृत वन ।
धाम चांदनी सो लगा, सो झलकत नूर रोशन ॥१५॥

रंगमहल के मुख्य द्वार के सामने स्थित चांदनी चौक के दोनों तरफ १६७-१६७ मंदिर की चौड़ाई में अमृत वन शोभायमान है जिसमें से नूरमयी प्रकाश चारों तरफ झलकार कर रहा है ।

और एक तरफ जांबू बन के, एक सौ सरसठ मंदिर भर ।
पैठते बाँई तरफ के, आए लगा बराबर ॥१६॥

चांदनी चौक की बायीं तरफ (दक्षिण दिशा में) १६७ मंदिर की जगह में जो अमृत वन आया है, वह जाम्बू वन की सीमा से लगा है ।

एक सौ सरसठ छज्जा लगे, दाएं बाएं दोऊ तरफ बन ।
एक तरफ मेहेराब बने, तीन सौ चौंतीस रोशन ।।१७।।

चांदनी चौक के दायें-बायें दोनों तरफ अमृत वन के सामने रंगमहल की बाहरी हार के मंदिरों के १६७-१६७ छज्जे (झरोखे) आये हैं, जिनसे वनों की डालियां आकर मिली हुयी हैं । इन प्रत्येक झरोखों के दायें-बायें दो-दो दरवाजे हैं, जिससे एक तरफ (उत्तर की तरफ) के १६७ मंदिरों के कुल ३३४ दरवाजे होते हैं ।

तीन सौ चौंतीस मेहेराब, तरफ दूसरी होए ।
इहां खड़े बन देखिए, बिन मोमिन न समझे कोए ।।१८।।

उसी प्रकार दूसरी (दक्षिण) तरफ के १६७ मंदिरों के ३३४ दरवाजे होते हैं । इन दरवाजों व झरोखों में खड़े होकर वनों की शोभा देखिये । ब्रह्मात्माओं के सिवा इनकी शोभा को और कोई नहीं समझ सकता है ।

और एक सौ छाछठ बीच में, दस मंदिर के छज्जा होए ।
सो पड़ा बड़े द्वार पर, बाकी एक सौ छप्पन भर कह्या सोए ।।१९।।

इन दोनों भागों के मध्य में १६६ मंदिर के लम्बे-चौड़े चांदनी चौक के सामने रंगमहल के मुख्य द्वार का १० मंदिर का हांस है, जिसके ऊपर के भोमों में १० मंदिर के लम्बे छज्जे विद्यमान हैं । दस मंदिर के हांस के दायें-बायें (चांदनी चौक के सामने) ७८-७८ (कुल १५६) मंदिर की जगह है ।

इन बड़े द्वार की तरफ दोए, तहां मंदिर अठत्तर ।
ताके छज्जे पड़े दोउ बाजू, एक सौ छप्पन यूं कर ।।२०।।

रंगमहल के इस बड़े (मुख्य) दरवाजे के दोनों तरफ (चांदनी चौक के समक्ष) ७८-७८ मंदिर हैं । दोनों तरफ के कुल मिलाकर १५६ झरोखे होते हैं ।

हर छज्जे चार थम्भ, दोए बाहेर दोए दिवाल ।
तीनों तरफ कठेडा, उपर गुमटी करे खुसाल ।।२१।।

इन प्रत्येक झरोखों (छज्जों) में सर्वप्रथम चार स्तम्भ आये हैं, जिनमें से दो स्तम्भ बाहरी तरफ व दो स्तम्भ भीतरी तरफ दीवाल में आये हैं । छज्जे के बाहरी तीनों तरफ किनार पर कठेड़े की शोभा है । इन स्तम्भों की छत पर गुम्मटी की शोभा है, जिसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है ।

हर छज्जे मिने पड़े, चार चार मेहेराब ।
एक अन्दर तीन बाहेर, कह्या बेवरा इन के वाब ।।२२।।

सभी झरोखों में चार स्तम्भों के मध्य चार-चार महरावें शोभायमान हैं, उनमें से एक महराब अंदर की तरफ है तथा तीन महराब बाहरी तीनों तरफ हैं । इस प्रकार इनका विवरण कहा है ।

यूं ही एक सौ छप्पन मेहेराब, पड़े इन बाजू दोए ।
हर मंदिर दोए दोए, दो बाजू गिनती में सोए ।।२३।।

इसी प्रकार १५६-१५६ मेहराब (दरवाजे) दस मंदिर के हांस के दोनों तरफ आये हैं । प्रत्येक मंदिर में दो-दो दरवाजे हैं ।

एक सौ छप्पन दुनी तीन सौ बारे, दस द्वार आगे और ।
मिल जमा तीन सौ बाइस, द्वार सनमुख चांदनी के ठौर ।।२४।।

दोनों तरफ के मिलाकर ३१२ (१५६x२) महरावें (दरवाजे) होते हैं, तथा दस मंदिर के हांस के सामने १० महरावें आयी हैं, तब कुल मिलाकर ३२२ महरावें चांदनी चौक के सामने होती हैं ।

दोए चबूतरे दोए तरफ, बड़े धाम के आगे द्वार ।
लम्बाई चार मंदिर माफक, चौड़ाई दो की है सुखकार ।।२५।।

रंगमहल के मुख्य द्वार के सामने दायें-बायें दो सुखदायी चबूतरे विद्यमान हैं, जिनकी लम्बाई चार मंदिर की व चौड़ाई दो मंदिर की है ।

दोए मंदिर माफक, है इन के दरम्यान ।
तहां बीस पगथिया है, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।२६।।

इन दोनों चबूतरों के मध्य में २ मंदिर का लम्बा-चौड़ा चौक विद्यमान है । इसके सामने पूर्व में २० सीढ़ियां आयी हैं, जिनकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में रहती है ।

तीनों तरफ कठेडा, मेहेराब है चार चार ।
दोनों पर बीस थम्भ, सुख मोमिन देखनहार ।।२७।।

इन चबूतरों की बाहरी तीनों तरफ, किनार पर कठेड़े की शोभा है, चबूतरे की बाहरी व भीतरी तरफ ५-५ स्तम्भों के मध्य ४-४ महरावें शोभायमान हैं । दोनों चबूतरों के मिलाकर कुल २० स्तम्भ होती हैं । इन सुखों को देखने

वाली मात्र ब्रह्मात्माएं हैं ।

तामे दस लगे दिवाल को, दस चबूतरे किनार ।
ताके रंग जुदे जुदे, करे जुगल सरूप बिहार ॥२८॥

उनमें से १० स्तम्भ मंदिरों की दीवार से लगे हुए (अक्शी) हैं, तथा १० स्तम्भ दोनों चबूतरों की बाहरी किनार पर हैं । ये १० स्तम्भ अलग-अलग नगों व रंगों के हैं । यहां चबूतरों पर श्री युगल स्वरूप के साथ सखियां अनेक प्रकार से लीला विहार करती हैं ।

इन दोनों चबूतरों, चार हीरा चार मानिक ।
और चार कहे पुखराज, इत ठौर बैठन की हक ॥२९॥

दोनों चबूतरों पर कुल मिलाकर हीरा के चार स्तम्भ हैं, माणिक के चार स्तम्भ हैं व पुखराज के भी चार स्तम्भ हैं। यहाँ चबूतरे पर श्री राज श्यामा जी व सखियां विराजमान होते हैं । (इन दोनों चबूतरों के बाहरी व भीतरी किनार पर चौक से बाहर की तरफ क्रमशः हीरा, माणिक्य, पुखराज, पाच व नीलवी के स्तम्भ आये हैं । दोनों चबूतरों में कुल मिलाकर एक-एक नग के ४-४ स्तम्भ शोभायमान हैं)

चार पाच चार नीलवी, रहे बीसों थम्भ बिराज ।
इत सखिया संग हादी के, बातें करत संग राज ॥३०॥

हीरा, माणिक्य, पुखराज के पश्चात् पाच व नीलवी के ४-४ स्तम्भ शोभायमान हैं । इस प्रकार दोनों चबूतरों पर कुल मिलाकर २० स्तम्भ आये हैं । यहां सखियां श्री राज श्यामा जी के साथ प्रेम भरी बातें करते हुए अनेक प्रकार से हांस-विलास करती हैं ।

एक चोतरा के देखिओ, एक हीरा लगता दिवाल ।
ताके लगता मानिक, लगता पुखराज सुखकार ॥३१॥

एक चबूतरे के स्तम्भों का विवरण देखिये । मध्य चौक से लगते हुए पहला स्तम्भ हीरे (सफेद रंग) का है । उससे लगता हुआ दूसरा स्तम्भ माणिक्य(लाल रंग) का है । उससे लगता हुआ तीसरा स्तम्भ पुखराज (पीले रंग) का है ।

तहां लगता पाच है, तहां लगता नीलवी नूर ।
यूं ही बने किनार पर, यूं दूसरे चोतरे जोत ज़हूर ॥३२॥

पुखराज के स्तम्भ से लगता हुआ चौथा स्तम्भ पाच (हरे रंग) का है, और पाच के स्तम्भ से लगता हुआ नीलवी (नीले रंग) का नूरमयी स्तम्भ है । इसी प्रकार चबूतरे की बाहरी किनार पर भी स्तम्भ आये हैं । दूसरे चबूतरे पर भी इसी प्रकार स्तम्भ आये हैं ।

इन थम्भ के उपर, आया छज्जा भोम दूसरी ।
यों ही थम्भ छज्जे मेहेराब, हद नवों भोम लों भरी ॥३३॥

इन स्तम्भों के ऊपर दूसरी भोम में दो छज्जे (४ मंदिर लम्बे व दो मंदिर चौड़े) आये हैं । इसी प्रकार स्तम्भ, छज्जे व महराबें नौ भोम तक विराजमान हैं । (दूसरी भोम में छज्जा दो भागों में विभाजित है, तीसरी भोम से ९वीं भोम तक १० मंदिर के लम्बे और २ मंदिर के चौड़े छज्जे आये हैं) ।

मेहेराब दरवाजा धाम का, तीन तरफ चौकठ लाल दिवाल ।
दोए बाजू तीसरी ऊपर, रंग मानिक करे खुसाल ॥३४॥

जो रंगमहल का मुख्य दरवाजा (महराब) है, उसकी तीनों तरफ (ऊपर, दायें व बायें) चौकठ व दीवाल लाल रंग की है, जिसमें आये माणिक के नग की सुंदरता (लाल रंग) प्रसन्नचित्त कर रही है ।

तीन मनी आकृत सूरज, होए मेहेराब तरफ दोए ।
तीसरी सिर दरम्यान में, जंग करे सूर सो सोए ॥३५॥

दरवाजे की महराब के ऊपर तथा दायें-बायें रत्नों से सूर्य की तीन आकृतियां बनी हैं । इनकी नूरमयी किरणें आकाश के सूर्य से जंग करती प्रतीत होती हैं ।

दोए कमाड रंग दरपन, झलकत सामी वन ।
बेनी पर नंग झलकत, सो क्यूं कर कहूं नूर रोशन ॥३६॥

धाम दरवाजे के दोनों किवाड़ दर्पण रंग के हैं, जिस पर सामने के वनों के सुंदर प्रतिबिम्ब झलक रहे हैं । बेनी (फ्रेम) में कई रंगों के नग जगमगा रहे हैं । उनकी नूरमयी रोशनी का किस प्रकार वर्णन करें ?

तामे कई कटाव नकस जवेर, शोभित नंग चौक चौफेर ।
ए नूर शोभा सुख सुनते, मोमिन होत हैं जेर ॥३७॥

दरवाजे के चारों ओर दीवाल में कई फुलों के कटाव हैं, जवाहरातों की

नक्काशकारी है, चारों तरफ विभिन्न स्थानों (चौकों) में अनेकों प्रकार के नग जड़े हैं । इस नूरमयी शोभा-सुंदरता का मनोहारी वर्णन सुनकर ब्रह्मात्माएं आधीन (समर्पित) हो जाती हैं ।

कई गौख खिड़की जाली जवेर, कई कटाव दिवाल चौक चौफेर ।
क्यूं कहूं बका ठौर की, गिनती नूर जवेर ॥३८॥

बाहरी हार मंदिरों में अनेकों गोख, दरवाजे व जालीदार दीवालें आयी हैं । चारों तरफ दीवालों के चौक में कई प्रकार के फुलों-बेलों के कटाव हैं । अखण्ड परमधाम की शोभा और नूरमयी जवाहरातों की संख्या का वर्णन किस प्रकार करें ?

ए जो दोए चबूतरों के, चौक दोए मंदिर माफक ।
सो आया दरम्यान में, तहां सीढ़ी बीस बुजरक ॥३९॥

ये जो दो चबूतरों के मध्य में दो मंदिर का लम्बा-चौड़ा चौक आया है, उसके सामने से २० बड़ी सीढ़ियां (चांदे) उतरी हैं ।

चौक भर चौड़ी सीढ़ियां, दोए किनारों चबूतर ।
दोए किनारों दिवाल, उतरी कमर लों जिमी पर ॥४०॥

चौक की चौड़ाई (२ मंदिर) के बराबर चौड़ी सीढ़ियां उतरी हैं । चौक के दोनों तरफ चबूतरे हैं, तथा सीढ़ियों के दोनों तरफ किनार पर कमर भर ऊंची दीवाल है, जो सीढ़ियों सहित नीचे जमीन में पहुंची है ।

दोउ तरफों किनारे कांगरी, कई भांत दोरी नंग जडित नूर ।
ए सिफत कहूं क्यूं कर, ए तो बका चेतन ज़हूर ॥४१॥

सीढ़ियों के दोनों तरफ किनार पर कमर भर ऊंची दीवाल के ऊपर कांगरी की शोभा है, जिसमें कई प्रकार से रेखाएं (दोरी) और नूरमयी नग जड़े हुये हैं । इनकी प्रशंसा किस प्रकार करें ? ये तो अखण्ड परमधाम के चेतन नग हैं ।

प्रकरण ७५ चौपाई २६९८

हक सूरत की साइत
(प्रियतम अक्षरातीत के स्वरूप के सुखों को प्राप्त करने की घड़ी)

सूरत हक़ सुभान की साइत, कोई न पावे सुख बिना मोमिन ।

खासल खास है गिरो रब्बानी, पावे सोई जाके अरस में तन ।।१।।

इस महत्वपूर्ण घड़ी में प्रियतम अक्षरातीत के स्वरूप का सुख ब्रह्मात्माओं के सिवा अन्य कोई प्राप्त नहीं कर सकता है । जिनके मूल तन परमधाम मूल मिलावे में विद्यमान हैं, वे ही खासुलखास रब्बानी गिरोह (ब्रह्मप्रियाएं) हैं ।

वारसी रहसी हक़ जात में, सो दिल किया छत्रसाल को रोशन ।
भए भरम को चौदे लोक में, सोए किए थिर सबों के मन ।।२।।

जो हक जात (अद्वैत स्वरूप) ब्रह्मात्माएं हैं, वे ही ब्रह्मज्ञान के वारिस (उत्तराधिकारी) होंगे । इस कारण छत्रशाल जी के हृदय को ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित किया है । १४ लोकों का सारा संसार संशय में पड़ा हुआ था, तारतम ज्ञान के द्वारा उन सभी के मनों को स्थिर किया है ।

दोए गुरजो दरम्यान में, भई हार हवेली चार ।
सौ चौरस भई बराबर, बड़ा बीच बन्या है द्वार ।।३।।

पुखराज की हजार हांस की चांदनी में किनार पर जो महल आये हैं, उनमें प्रत्येक दो गुर्जों के मध्य (एक हांस में) चार हवेलियों की चार हारें आयी हैं । वे सभी हवेलियां समचौरस हैं। उनके चारों दिशाओं के मध्य में बड़े दरवाजे आये हैं।

ए चार चौको सोले, भई जमा एह जब ।
सोले पांच अस्सी, हज़ार सुमार कही तब ।।४।।

चार हवेलियों की चार हारें आने से कुल १६ हवेलियां होती हैं । उनकी पांच भोमों की ८० हवेलियां हुयीं । इसी प्रकार हजार हांस में हवेलियां विद्यमान हैं ।

ए लाख जोजन उंचा, लाखै की चौड़ाए ।
ए जो कही हवेलियां, सवा जोजन लों पोहोचाए ।।५।।

पुखराज पहाड़ एक लाख योजन (चार लाख कोस) ऊंचा है तथा उसकी

गृद भी एक लाख योजन की है । ये जो हजार हांस की हवेलियां कही हैं, उनकी ऊंचाई जमीन से लगभग सवा लाख योजन होती है ।

ए जो कही दोए गुरजे, बड़े द्वार दरम्यान ।
हर पोर के सोले चबूतरे, ताकी करो पेहेचान ।।६।।

प्रत्येक हांस के बड़े दरवाजों के सामने (बाहरी दीवार से लगकर) दो गुर्ज (चबूतरे) आये हैं । द्वार से अंदर प्रवेश करने पर दायें-बायें दोनों तरफ की ४-४ हवेलियों के १६ चबूतरे दिखायी देते हैं । उनकी पहचान कीजिये ।

ऐसे द्वार हज़ार कहे, ताके सोले हज़ार सुमार ।
ए तो कहे चबूतरे, होत नित बिहार ।।७।।

हजार हांस में ऐसे हजार द्वार हैं, जिनके कुल १६००० चबूतरे होते हैं । इन चबूतरों में नित्य प्रति प्रियतम परब्रह्म की लीला होती है ।

और छे छे चबूतरे, त्रपोलियो आगूं जान ।
ताकी जमा छे हज़ार, यूं बाईस हज़ार पेहेचान ।।८।।

इसी प्रकार स्तम्भों की तीन त्रिपालियों के सामने छै-छै चबूतरे हैं (प्रत्येक त्रिपोलिये के सामने दो–दो चबूतरे हैं) । उनके हजार हांस के कुल ६,००० चबूतरे होते हैं । इसी प्रकार कुल १६०००+६०००=२२,००० चबूतरे आये हैं ।

अब थम्भ एक पोर में, चार सौ चालीस सुमार ।
ए थम्भ त्रपोलियो सुध, ए होत नित बिहार ।।९।।

एक द्वार के सामने गली में त्रिपोलियों के स्तम्भों की कुल संख्या ४४० है । जहां नित्य प्रति लीला विहार होता है ।

चबूतरों के थम्भ कहे, सो तो तीन सौ बीस ।
त्रपोलियों के एक सौ बीस, पाईए हक़ बकसीस ।।१०।।

एक गली में आमने सामने हवेलियों के कुल १६ चबूतरे हैं, जिनकी पांचों भोमों के कुल स्तम्भ ३२० होते हैं, तथा त्रिपोलियों के ६ चबूतरों के पांचों भोमों के १२० स्तम्भ होते हैं (एक चबूतरे में ४ स्तम्भ x ६ चबूतरे x ५ भोम कुल=१२०) । इनकी शोभा श्री राज जी की कृपा से ही पता चलती है ।

ऐसी पोर हज़ार, ताके थम्भ चार लाख चालीस हज़ार ।
तिन थम्भ के मेहेराब, कहूं ताको सुमार ॥११॥

दरवाजों के सामने ऐसी एक हजार गलियां हैं, जिनके कुल स्तम्भ ४,४०,००० होते हैं । अब उन स्तम्भों की महराबों की संख्या कहेंगे ।

कहूं ताको बेवरा, पांच भोम लों विस्तार ।
तिनका बेवरा देखिओ, मोमिन करो विचार ॥१२॥

उन चबूतरों की पांचों भोमों का विवरण देखिये । किस प्रकार पांच भोम का विस्तार है ? सुंदरसाथ जी, उसका विचार कीजिये ।

और त्रपोलिया आगे की, चबूतरा पर थम्भ जो नूर ।
ताकी एक लाख बीस हजार, देखो मोमिनो जहूर ॥१३॥

और स्तम्भों की दो हारों से बनने वाली तीन गलियों (त्रिपोलियों) के आगे जो चबूतरे हैं, उन पर एक लाख बीस हजार नूरमयी स्तम्भ आये हैं । सुंदरसाथ जी ! उनकी शोभा देखिये ।

हवेलिन के आगे, ए जो कह्या हज़ार ।
तिन आगे चबूतरा, पांचों भोम का विस्तार ॥१४॥

हवेलियों के आगे जो हजार दरवाजे कहे हैं, उनके आगे (दायें-बायें) दो चबूतरे शोभायमान हैं, जो पांचों भोम तक (गुर्ज के रूप में) आये हैं ।

तिन पर चार चार थम्भ, ताकी जमा सुमार ।
तीन लाख बीस हज़ार, थम्भ नूर सुखकार ॥१५॥

उन प्रत्येक चबूतरों पर चार-चार स्तम्भ आये हैं, उनकी कुल संख्या देखिये । कुल ३,२०,००० नूरमयी मनोहारी स्तम्भ आये हैं (एक गली में ८ हवेलियों के १६ चबूतरे हैं, जिनके कुल स्तम्भ ६४ हुए । पांच भोम के ३२० स्तम्भ हुए, हजार हांस के ३,२०,००० स्तम्भ हुए) ।

अब कहूं मेहेराब की, खड़ी पौरी दरम्यान ।
त्रपोलियों के कहूं, गिन कैसे पेहेचान ॥१६॥

अब खड़ी पौरी (गली) के त्रिपोलियों के महराबों की संख्या कहूंगा। उन बेशुमार महराबों की संख्या कैसे पहचानी जाये ?

हर त्रिपोलिए हार पांच के, मेहेराब में बेसुमार ।
तिन के एक हज़ार के, नब्बे हज़ार सुमार बिचार ।।१७।।

प्रत्येक त्रिपोलियों के हार के पांच भोमों में बेशुमार महरावें आयी हैं । हजार हांस के कुल ९०,००० गलियां होती हैं (हवेलियों की चार हारों के मध्य ३ त्रिपोलिये हैं, जिनके ९ गलियां होती हैं, जिनके पांच भोम के ४५ गलियां हुई । इसी प्रकार आड़ी खड़ी दोनों तरफ की कुल ९० गलियां हुई, जिनके हजार हांस के ९०,००० गलियां हुई) ।

चार सौ मेहेराब, हर एक पौर में होए ।
तैसी हजार पाट कही, भई चार लाख गिनती सोए ।।१८।।

दरवाजे के सामने की प्रत्येक त्रिपोलिये में चार सौ महरावें शोभायमान हैं, तब हजार हांस के कुल ४ लाख होते हैं ।

एह पांचों भोम में, लेखा देखो मोमिन ।
एह विचार देखिओ, जो होए दिल रोशन ।।१९।।

इस प्रकार पांचों भोमों का हिसाब होता है, जिसका सुंदरसाथ जी ! विचार कीजिये, जिससे आपके हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाये ।

एक बंगले एक एक भोम, मंदिर बारे हजार ।
ताकी पांच भोम के, साठो कही सुमार ।।२०।।

एक बंगले में एक भोम में १२,००० मंदिर हैं तब पांचों भोमों के कुल ६० हजार मंदिर होते हैं ।

ऐसे कही बंगले, तेइस सौ और चार ।
अड़तालीस की हार कही, देखो चारों तरफो सुमार ।।२१।।

ऐसे ४८ बंगलों की ४८ पंक्तियां विद्यमान हैं, जिससे बंगलों की कुल संख्या (४८x४८) २३०४ होती है ।

जमा सब मन्दिरन की, तेरे करोर बयालीस लाख ।
चालीस हजार ता उपर, ए मोमिन दिल तू राख ।।२२।।

तब सभी बंगलों में मंदिरों की कुल संख्या १३,४२,४०,००० होती है । सुंदरसाथ जी इसे अपने दिल में धारण कीजिये ।

प्रकरण ७६ चोपाई २७२०

इश्क रबद का प्रकरण

इशक रबद अरस में, रहे जिमी वाहेदत ।
तहां जुदागी न पाइए, करी हक रमूजे एक साएत ।।१।।

परमधाम की स्वलीला अद्वैत (वहदत की) भूमिका में इश्क का वार्तालाप हमेशा से होता रहता था । वहां कभी भी जुदायी सम्भव नहीं है । तब एक बार प्रियतम अक्षरातीत ने सखियों को संकेत किया ।

सब कोई इशक अपना, बड़ा बतावत जोर ।
हम आशक हैं हक के, सब रूहें कहे ठौर ठौर ।।२।।

वहां सभी दृढ़तापूर्वक अपना ही प्रेम सबसे बड़ा कहते थे । सखियां जगह जगह कहती थीं कि "हम श्री राजजी के आशिक (प्रेमी) हैं ।"

हकें कह्या मैं आशक, महंमद मासूक इत ।
रूहों का मैं आशक, यह तुम जानो निसबत ।।३।।

श्री राज जी ने कहा कि "मैं आप सबका आशिक हूं, श्यामा जी (मुहम्मद) माशूक (प्रेमास्पद) हैं, तथा रूहों (ब्रह्मप्रियाओं) का भी मैं आशिक हूं । यही वास्तविक संबंध है" (आशिक उसे कहते हैं, जो ज्यादा प्यार करता है और अपना सर्वस्व अपने माशूक पर न्यौछावर कर देता है) ।

रूह हादी की कहे मैं आशक, एह है मेरा काम ।
हक माशूक और रूहें, एह तुम जानो इस ठाम ।।४।।

तब श्री श्यामा जी ने कहा कि, "मैं आप सबकी आशिक हूं । प्रेम करना मेरा काम है । श्री राजजी व सखियां दोनों मेरे माशूक हैं । यही परमधाम की वास्तविकता है ।"

रूहें कहें हम बंदे, खावंद हमारे तुम ।
हम आशक तुम मासूक, ऐसा चाहिए करो हुकम ।।५।।

तब सखियां कहती हैं, कि "हम आपकी अंगनायें (बंदे-आपको रिझाने वाले) हैं, आप हमारे प्रियतम स्वामी हो । वास्तव में हम आशिक और आप माशूक होने चाहिए । ऐसा आदेश दीजिये (हमारी बात मान जाईये)"

हक कहे रबद मैं ना करुं, तुमको देखाउं और बेर ।
तब तुमे जाहिर होएगा, बेवरा देखाउं फेर ।।६।।

तब श्री राज जी ने कहा कि मैं आपसे इस विषय में ज्यादा बात नहीं करूंगा, इसका स्पष्टीकरण बाद में (संसार रूपी खेल दिखाकर) करूंगा, तब आपको मेरे इश्क की पहचान हो जायेगी । इसका निरूपण फिर कभी करूंगा ।

तब हके लिया दिल में, इन जिमी वाहिदत ।
क्यूं कर होवे बेवरा, अब ही इन साएत ॥७॥

तब परब्रह्म अक्षरातीत ने दिल में विचार किया कि इस स्वलीला अद्वैत (वहदत) भूमिका में इसका निरूपण तुरंत ही किस प्रकार से हो (कि, किसका इश्क बड़ा है ?)

ए जो जिमी इशक की, दरखत बेल फूल पात ।
सब ठौरों पशु पंखियां, ए तो बका हक जात ॥८॥

यह जो अखण्ड परमधाम की इश्कमयी भूमिका है । यहां के वृक्ष, बेल, फूल, पत्ते, पशु-पक्षियां, सभी लीलारूप सामग्री परब्रह्म के ही स्वरूप (सच्चिदानंद) हैं ।

जुदाई इनमें ना होवै, ना नया पुराना होए ।
ना पैदा फना होवहीं, ना कबू जुदाई होए ॥९॥

परमधाम में कभी भी जुदायी नहीं होती, ना ही कोई वस्तु नयी (नये गुणधर्म की) बनती है, ना ही पुरानी होती है । ना ही यहां कुछ उत्पत्ति या नाश होता है । (परमधाम पूर्णात्पूर्ण है, वहां कोई कमी ही नहीं है तो नयी वस्तु बनाने की आवश्यता भी नहीं है। इच्छा के अनुसार प्रत्येक वस्तु दृष्टिगोचार होती है, सभी सुख प्राप्त होते हैं।)

बिना जुदाई साहेबी, मेरी ना देखी जाए ।
क्यूं कर जुदाई करों, क्यूं इन के दिल में आए ॥१०॥

सखियां जुदायी के बिना कभी भी मेरी साहेबी (ऐश्वर्य) को नहीं जान सकती हैं । किस प्रकार इन्हें अपने से जुदा करूं ? इनके हृदय में इश्क व साहेबी की पहचान किस प्रकार हो सकती है ?

ए मांगे खेल मुझ पे, मैं बरजे तीन बेर ।
इन को चाह चुभ रहे, तीन बेर मांगे ए फेर ॥११॥

(श्री राजजी ने विचार किया कि) सखियां मुझसे खेल मांगेंगी । मैं उन्हें

तीन बार मना करूंगा । उनके हृदय में मायारूपी खेल देखने की इच्छा दृढ़ हो जायेगी और वे पुनः पुनः तीन बार मुझसे खेल देखने की इच्छा करेंगी ।

होवे चाह जो नूर को, मैं रूहों का देखों इशक ।
इन दोनों के मतलब से, होवै बेवरा मुतलक ॥१२॥

तथा अक्षर ब्रह्म के दिल में भी इच्छा उत्पन्न होगी कि मैं सखियों की इश्क की लीला देखूं । इस प्रकार अक्षर ब्रह्म व सखियों, दोनों की इच्छा पूर्ण करने हेतु संसार रूपी खेल की रचना की जायेगी और इश्क व साहेबी का निरूपण हो जायेगा ।

होवे एक लैल के, जब तीन तकरार ।
रूहों उतारों तिन में, कहूं तुमारा परवरदिगार ॥१३॥

जब इस अज्ञानता से युक्त संसार रूपी महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीन भाग (ब्रज, रास व जागनी) होंगे, उनमें सखियों की सुरता को भेजूंगा और कहूंगा कि मैं तुम्हारा प्रियतम स्वामी हूं ।

जगावे तीसरे तकरार में, इनों को करों खबरदार ।
बका दरवाजे खोल के, इनों को करों उस्तवार ॥१४॥

तब तीसरे भाग (जागनी के ब्रह्माण्ड) में (तारतम ज्ञान के द्वारा) उन्हें जगाकर सावधान करूंगा, और अखण्ड परमधाम का ज्ञान देकर इनके ज्ञान व ईमान (विश्वास) को दृढ़ करुंगा ।

जानें बैठे अरस में, ताकी भानों सुभें शक ।
ऐसे जगाउं इनों को, सब जाने मुझ माफक ॥१५॥

उनके संशय मिटाकर ऐसी स्थिति कर दूंगा कि उन्हें ऐसा अनुभव होगा कि वे परमधाम मूल मिलावे में ही बैठे हैं । उन्हें इस तरह से जागृत कर दूंगा कि सभी को मेरे समान ही ज्ञान हो जायेगा ।

जेता मेरो दिल में, सो रहे इनों के दिल विचार ।
परदा कछूए ना रहे, देख नित बिहार ॥१६॥

मेरे हृदय में जितना ज्ञान है, वह सब उनके दिल में चिंतन होगा । परमधाम की लीला देखने के पश्चात् हमारे बीच में किसी भी प्रकार का पर्दा (अंतर) रहेगा नहीं ।

मैं कहूं संदेशे इनों को, लिखते जो अपने कलाम ।
रसूल करे इनों पर दावत, जाहेर करे इसलाम ।।१७।।

मैं अपने वचन (कलाम) लिखकर उन्हें भेजकर संदेशा कहूंगा । रसूल (संदेश वाहक) उन्हें सत्य शांति के मार्ग की दावत (आमंत्रण) करेगा और परमधाम के अखण्ड सुखों को जाहिर करेगा ।

तब बेवरा इशक का, होवेगा इन ठौर ।
इन कसरत में बैठ के, आवने केता करे इनो जोर ।।१८।।

तब इस संसार में इश्क का निरूपण हो जायेगा । उस दुख के संसार में बैठकर वे मेरे पास आने के लिये कितना जोर लगाती हैं ?

मैं इनों को जगाऊंगा, भांन के सुभे शक ।
इनों को इन जिमी में, करो वाहेदत माफक ।।१९।।

वहां मैं उन्हें (तारतम ज्ञान द्वारा) जगाऊंगा, और उनके सभी प्रकार के संशय दूर कर दूंगा । इस माया की द्वैत भूमि में भी उन्हें परमधाम के समान अद्वैत (वहदत) की स्थिति में पहुंचा दूंगा ।

ए तब बाते मुझ सों करे, सब सांच जान्या जाए ।
हजूर अपने बैठाए के, ऐसे हीं देऊ जगाए ।।२०।।

वे तब मुझसे बातें करेंगी, सभी सत्य को भी पहचानेंगी । उन्हें मूल मिलावे में बैठे होने का ज्ञान कराके आसानी से जगा दूंगा ।

कहे एक दूजी को, सांच साहेदी बतावे ठौर ।
पर आप जागन को, इत बोहोतक करे ज़ोर ।।२१।।

वहां सखियां (आत्माएं) एक दूसरे को सत्य ज्ञान सुनाकर साक्षी देंगे, परंतु स्वयं जागृत होने के लिये बहुत प्रयास करेंगी (लेकिन जागृत नहीं हो पायेंगी) ।

मैं आजमाऊ इनों को, इन तीनों तकरार ।
देखे कैसे चिन्होंगे, अपना परवरदिगार ।।२२।।

मैं संसार रूपी खेल के तीनों भागों में उन्हें आजमाऊंगा (परीक्षा लूंगा) । यह देखने के लिये कि वे अपने प्रियतम स्वामी को किस प्रकार पहचानती हैं ?

जो बात लै हके दिल में, सो तो आगूं हुई जान ।
इन रूहों खेल में, मेरी बेशक देऊ पेहेचान ।।२३।।

जो बात श्री राजजी ने अपने दिल में ले लिया तो उसे पहले ही हुआ समझिये । उन्होंने दिल में लिया कि इन आत्माओं को संसार रूपी खेल में (तारतम ज्ञान के द्वारा) मेरा संशयरहित पहचान (ज्ञान) दूंगा ।

ऐसाई उपज्या दिल में, नूर जलाल का बिचार ।
रूहें रमें क्यूं हक सों, क्यूं कर करत बिहार ।।२४।।

श्री राजजी ने जैसा दिल में लिया था, उसी के अनुसार अक्षर ब्रह्म के दिल में विचार उत्पन्न हुआ कि ब्रह्मप्रियाएं श्री राज जी के साथ किस प्रकार लीला विहार करती हैं ?

कैसा इशक इनों का, रहे हक सों कैसा प्यार ।
हक इनों से क्यूं कर कहे, रहे कैसा नित बिहार ।।२५।।

प्रियतम अक्षरातीत के साथ वे किस प्रकार प्रेम करती हैं ? परब्रह्म उनके साथ किस प्रकार प्रेम पूर्वक बातें करते हैं ? नित्य प्रति किस प्रकार की लीलाएं करते हैं?

एह अग्या से उपज्या, रूहों को मनोरथ इत ।
हम देखे नूर जलाल का, कैसा खेल कुदरत ।।२६।।

इसी प्रकार श्रीराजजी के आदेश से सखियों के मन में भी इच्छा उत्पन्न हुई कि "हम अक्षरब्रह्म की लीला देखना चाहती हैं, कि वे प्रकृति की लीला कैसी करते हैं ?

जब पिछला दिन रह्या, एक पोहोर बाकी जब ।
तब हक हादी उठे, धाए रूहें पोहोंची तब ।।२७।।

जब दिन पूरा होने में एक प्रहर बाकी था (दोपहर ३ बजे), तब श्री राजश्यामा जी, तीजी भोम के नीले-पीले मंदिर उठते हैं और सखियां दौड़ती हुयी उनके पास पहुंच जाती हैं ।

पूछा हादी की रूह ने, आज जाए कहां रमन ।
तब कह्या रूहों ने, आज उपजा हमारे मन ।।२८।।

तब श्री श्यामा जी ने सखियों से पूछा कि आज रमण करने कहां जाना

है ? तब सखियों ने कहा कि आज हमारे मन में एक इच्छा उत्पन्न हुयी है ।

भगवान जी कौन खेल करें, देखें आज एह जाए ।
तब हादी की रूह ने, यूं कर दिया बताए ॥२९॥

अक्षर भगवान जी किस प्रकार का खेल (लीला) करते हैं ? आज हम जाकर देखना चाहती हैं । तब श्री श्यामा जी ने उनसे इस प्रकार बताया ।

एह खेल कुदरत का, करत हैं सदाए ।
इन में तुम क्या देखोगे, सो हम को देओ दिखाए ॥३०॥

श्यामा जी ने कहा कि अक्षरब्रह्म तो सदा से ही प्राकृतिक जगत को बनाने-मिटाने की लीला करते हैं । उसमें आप क्या देखोगे ? हमको बता दीजिये।

हक ढीग ठाढ़े हुते, क्या इत कह्या रूहन ।
चाह उपजी खेल देखने, कहे हुआ हमारा मन ॥३१॥

वहां पास में श्री राज जी खड़े थे, उन्होंने कहा-सखियां क्या कह रही हैं? सखियों ने कहा, कि हमारे मन में अक्षर ब्रह्म की प्राकृतिक जगत की लीला देखने की इच्छा उत्पन्न हुयी है ।

तब बरजे हक सुभान ने, एह तुम देखन नाही जोग ।
तुम जाओ जब खेल में, तब रहे ना मुझ सों संजोग ॥३२॥

तब प्रियतम श्री राज जी ने सखियों को मना किया कि यह माया रूपी खेल देखने योग्य नहीं है । जब तुम संसार रूपी खेल में जाओगी, तब हमारा संबंध तुम्हें याद नहीं रहेगा ।

भूलोगे तुम अरस को, और भूलो अपना तन ।
और मुझ को भूल जाओगे, न याद आवे असल वतन ॥३३॥

तुम अपने परमधाम को भूल जाओगी, अपना निजस्वरूप (मूल तन) भी भूल जाओगी । यहां तक कि तुम मुझे भी भूल जाओगी । तुम्हें अपना निजघर जरा भी याद नहीं आयेगा ।

तब कह्या रूहों ने, हम क्यों भूले हक ।
कोई तन अपना भूलत, क्यूं भूले तुम सों इशक ॥३४॥

तब सखियों ने कहा कि हम आपको किस प्रकार भूल जायेंगे ? भला कोई अपने तन को भी भूलता है ? हम आपके प्रेम को क्यूं भूल जायेंगे ?

तब कह्या हक ने, तुम देखोगे और देश ।
तहां वजूद तुमारे, पेहेनेंगे औऱ भेष ।।३५।।

तब श्री राज जी ने कहा कि आप दूसरा ही संसार देखोगी, जहां तुम्हारे शरीर भी बदल जायेंगे । तुम्हारे रूप व वेश–भूषा सब बदल जायेंगे।

कोई कहे मैं मेहेतारी, कोई बेटा होए के आए ।
कोई भाई भतीजे कबीला, कोई जोरू भेष दिखाए ।।३६।।

कोई कहेगा कि मैं तुम्हारी मां हूं, कोई बेटा बनकर आ जायेगा । कोई भाई तो कोई भतीजा बन जायेगा, और कोई पत्नि का रूप धारण कर लेगी । इस प्रकार एक झूठा परिवार बना लोगी ।

काहूं बेटा कर बोलावही, कोई बाप कर करे साद ।
तुमको तिनसे इशक, बडो आवे सवाद ।।३७।।

किसी को आप बेटा कहकर बुलाओगी। कोई किसी को पिता बनाकर प्रसन्न करेगी। उनके प्रेम में आपको बहुत आनंद आयेगा ।

ए पूजे पानी आग पत्थर, तुम भी चलो तिन लार ।
एह ठौर अरस भूलोगे, कहां है परवरदिगार ।।३८।।

वे परिवार वाले पानी, पत्थर व आग को ही परमात्मा मान कर पूजा करेंगे । उनके पीछे–पीछे आप भी उसी रास्ते पर चलने लगोगी । वहां जाकर अपना परमधाम भूल जाओगी और तुम्हारे दिल में यह विचार भी नहीं आयेगा कि हमारा प्रियतम स्वामी कौन है व कहां है ?

तब कह्या रूहों ने, हमारा क्यूं होए ऐसा हाल ।
तुम को कैसे भूलहीं, बातां सुनते होत खुसाल ।।३९।।

तब सखियों ने कहा कि हमारी ऐसी स्थिति किस प्रकार हो जायेगी ? हम आपको किस प्रकार भूल जायेंगी? इस प्रकार खेल की अद्‌भूत बातें सुनकर सखियां और उत्साह (प्रसन्नता) से भर जाती हैं ।

पर जब उत जाओगे, तब कोई ना रहे हुसियार ।
अपनो सुख काएम, भूलोगे नित बिहार ।।४०।।

श्री राजजी कहते हैं, कि जब आप वहां चली जाओगी, तब आप में से कोई भी सावधान नहीं रहेगी, और अपने परमधाम के नित्य लीला विहार के

अखण्ड सुखों को भूल जाओगी ।

तब कह्या रूहों ने, हम को कहां भेजोगे दूर ।
अपने कदम छोड़ाओगे, एह कैसा मज़कूर ।।४१।।

तब सखियों ने कहा कि, क्या आप हमको अपने चरणों से अलग करके परमधाम से कहीं दूर भेजोगे ? यह कैसा खेल है ?

तब कह्या हक सुभान ने, कहूं भेजो ना दूर तुम ।
रहो मेरे हजूर में, बैठो पकड़ कदम ।।४२।।

तब हक सुब्हान (प्रियतम अक्षरातीत) ने कहा, कि आपको मैं कहीं भी दूर नहीं भेजूंगा । आप सब मेरे समक्ष (मूल मिलावे में) यहीं मेरे चरणों को ही बैठोगी।

मैं तुम ऊपर रसूल, भेजों पैदर पे तुम ।
साहेद करूंगा मैं फिरस्ते, कोई जगाए न सके तब ।।४३।।

मैं तुम्हे जगाने के लिये एक के बाद एक (लगातार) अनेक संदेश वाहक (रसूल) भेजूंगा । मैं फरिश्तों को भी गवाह रखूंगा किंतु आपको कोई भी जगा नहीं पायेगा ।

सब संदेशे इत के, मैं लिखों अपने बीच कलाम ।
पर तुम क्यूं ए ना मानोगे, मैं सौगंद खाऊं उस काम ।।४४।।

मैं यहां की सारी बातें संदेश के रूप में अपने वचनों में लिख कर भेजूंगा । परंतु मैं सौगंध खाकर कहता हूं कि आप किसी भी प्रकार से नहीं मानोगी ।

तब कह्या रूहों ने, क्या हम ऐसे होसी नादान ।
जो तुम भेजोगे रसूल, हम सके न ताए पेहेचान ।।४५।।

तब सखियों ने कहा, कि क्या हम ऐसे नादां (अनजान) हो जायेंगे, कि आप अपना संदेशवाहक भेजोगे, और हम उसे नहीं पहचान सकेंगे ?

तुम खाओगे सौगंद, हम ना माने तब ।
ऐसी तो हम ना करें, तुम आओ जगावन जब ।।४६।।

आप सौगंध खाओगे तो भी हम आपकी बात नहीं मानोगे। जब आप हमें जगाने आओगे, तब हम ऐसा कभी भी नहीं कर सकते ।

तुमारे फुरमान को, हम क्यूं सकेंगे फेर ।
तुमको याद करते, हम दरद न आवे दिल बेर ।।४७।।

आपका आदेश हम किस प्रकार ठुकरा देंगे? क्या आपको याद करते हुए हमारे दिल में एक क्षण के लिये भी दर्द नहीं उत्पन्न होगा ?

एह खेल कैसा होएगा, जिनमें तुम न आओ याद ।
तिन तन अपना, भूल जाओंगे क्यूं बुनियाद ।।४८।।

यह खेल का है, जिसमें हमें आपकी याद नहीं आयेगी? जहां अपने मूल तन व मूल संबंध को हम कैसे भूल जायेंगे ?

तब कह्या हक सुभान ने, तुमारा ऐसा ना रहे इशक ।
उहां ठौर ऐसी देखोगे, क्यूं ए ना भाजे सुभे शक ।।४९।।

तब हक सुब्हान श्री राज जी ने कहा कि वहां जाकर तुम्हारा ऐसा प्रेम नहीं रहेगा । वहाँ ऐसी दुनिया देखोगे, जहां किसी भी प्रकार से संशय नहीं मिटता ।

क्या एता ज़ोर इशक का, हम को ना करे मदत ।
और हम पर आवे रसूल, कौल याद दिलावे जित ।।५०।।

सखियां कहती हैं, कि हम आपसे इतना ज्यादा प्यार (इश्क) करती हैं, तो क्या यह प्रेम हमारी सहायता नहीं करेगा ? और हमें जगाने रसूल (संदेशवाहक) भी आयेगा, और हमें हमारी बातें याद दिलायेगा ।

तुम हम को उठाओ, देओगे याद साएत ।
कौल अलस्त बे रब्ब का, क्यूं भूले हम तित ।।५१।।

आप हमें जगाकर परमधाम की इस घड़ी की याद दिलाओगे, तब हम वहां आपके वचन – "अलस्तो बिरब्बी कुंम (क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं ?" किस प्रकार भूल जायेंगे ?

तब कह्या हक सुभान ने, जो आया तुमारे ऐसा दिल ।
तो आओ तुमको दिखाए, बैठो एक ठौर सब मिल ।।५२।।

तब प्रियतम अक्षरातीत ने कहा, कि यदि आप सबके दिल में खेल देखने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो ही गयी है तो आओ, मैं आप सबको वह दिखा ही देता हूं । सब एक जगह एक साथ मिलकर बैठ जाओ ।

तीन बेर इनों बरजे, तीन बेर फेरे वचन ।
सो तीनों बेर इनों देखाए के, पीछे दिल करों रोशन ।।५३।।

प्रियतम श्री राज जी ने उन्हें तीन बार मना किया तथा सखियों ने तीन बार उन वचनों को ठुकराया । इस कारण प्रियतम ने निश्चय किया कि इन सखियों को तीन बार (ब्रज, रास, जागनी) माया दिखाऊंगा, तत्पश्चात् उनके हृदय को तारतम ज्ञान से प्रकाशित करूंगा।

एह चार घड़ी लो रबद, हुआ रूहों हादी और हक ।
रह्या पिछला बाकी चार घड़ी, रबद हुआ वास्ते इशक ।।५४।।

इस प्रकार चार घड़ी (१.३० घण्टे) तक श्री राज, श्यामा जी और सखियों ने आपस में प्रेम संबंधी वार्तालाप किया । जब दिन पूरा होने में (सायं ५ बजने में) चार घड़ी (१.३० घण्टे) बाकी थे (सायं ४-३० बजे)

आइयां तले जिमी पेले, उतरी तीसरी भोम से जब ।
चौक पांचमें तले भोम में, आए के बैठे सब तब ।।५५।।

तब श्री राजश्यामा जी व सखियां तीसरी भोम से उतरकर प्रथम भोम में पांचवी गोल हवेली (मूल मिलावे) में आकर बैठ जाते हैं ।

करे एक दूजी को सावचेत, जिन कोई भूलों तुम ।
मैं भूलों तो तू मुझ को, जगाए देओ आतम ।।५६।।

तब सखियां एक दूसरे को सावधान करते हुए कहती हैं, कि हममें से कोई भी नहीं भूलेगी । यदि मैं भूलूं तो तू मुझे जगा देना ।

अंग सो अंग लगाए के, मिल बैठियां एक तन ।
हुआ हुकम भगवान पर, वैसा ही हुआ सुपन ।।५७।।

तब सभी सखियां अंग से अंग लगाकर एक स्वरूप होकर बैठ गयीं । तब अक्षर भगवान पर भी वैसा ही हुक्म हुआ , और उसी अनुसार वह स्वप्न देखने लगे।

जैसा जाग्रत देखत, तैसा नींद में देखत ।
एह पेहेली तकरार, हुआ सुपना तब ।।५८।।

अक्षरब्रह्म संसार रूपी खेल जागृत अवस्था में जैसा देखते थे, अब वैसा ही नींद में देखने लगे । यह संसार रूपी खेल का पहला भाग (ब्रज) था, जब

स्वप्न प्रारम्भ हुआ ।

हुआ हुकम रूहन पर, उतरे खेल में जब ।
रूह हादी की इन में, हुकम जोश दिया तब ।।५९।।

फिर श्यामा जी व सखियों पर भी हुक्म हुआ और उनकी सुरता भी खेल में अवतरित हुयी । तब श्री राजजी ने उनके साथ अपने हुक्म व जोश (आवेश) की शक्ति भेजा।

सूरत नूर मनोरथ, ता पर जोश धनी धाम ।
नंद घर परवेस करें, उतरे रूह मोमिन के काम ।।६०।।

अक्षर ब्रह्म की सुरता जिसने सखियों का प्रेम देखने की इच्छा की थी, वह धामधणी के जोश (आवेश) सहित नंदबाबा के घर में प्रवेश करती है । यह जोश ब्रह्मात्माओं के काम से (सुख देने के लिये) ही उतरा है । ***(सो सुरत ले धनी को आवेश, नंद घर कियो प्रवेस।। श्रीमुखवाणी)***

अग्यारे बरस और बावन दिन, रहे ब्रज में जब ।
हक सुभान दिल में, किया विचार जो तब ।।६१।।

ब्रज मण्डल में रहते हुए जब ११ वर्ष ५२ दिन हो गये, तब मूल स्वरूप श्री राज जी ने अपने दिल में विचार किया ।

के इनों को कछू खबर नाहीं, ना मेरी अपनी पेहेचान ।
इनों को कछू कीजे जाग्रत, ऐसा दिल में लिया सुभान ।।६२।।

अक्षर ब्रह्म व सखियों को कुछ भी ज्ञात नहीं है, ना ही उन्हें मेरी पहचान है । उन्हें कुछ जागृत किया जाये । श्री राज जी ने ऐसा अपने दिल में विचार किया ।

तब जोगमाया करी, होए आधी नींद नूर तब ।
सत भोम हुए नजीक, कहूं ताकी मजकूर ।।६३।।

तब श्री राजजी ने अखंड योगमाया की रचना कर दी, जिससे अक्षर ब्रह्म की आधी नींद उड़ गयी और अखण्ड धाम उनके नजदीक हो गया । उसका विवरण कहता हूं ।

हुकम हक सुभान का, हुआ नूर पर जब ।
अंग सबे चेतन भए, हुई जोगमाया तब ।।६४।।

परब्रह्म अक्षरातीत का हुक्म जब अक्षर ब्रह्म पर हुआ, उनकी बुद्धि आदि सब अंग चेतन (अर्धजागृत) हो गये, तब योगमाया (अर्द्धजागृति की स्थिति) हो गयी ।

भोम सबे भई चेतन, जमुना बन नूर प्रकाश ।
भए पांचों तत्व चेतन, ताकी जोत न माए आकाश ।।६५।।

परब्रह्म अक्षरातीत की शक्ति (योगमाया) से वृंदावन की धरती सब चेतन हो गई, यमूना जी, वन सभी नूरमयी प्रकाश से युक्त हो गये । पांचों तत्व चेतन हो गये, उनसे निकलने वाली तेजोमयी किरणें आकाश में नहीं समा पा रही हैं।

लई बुलाए रूहन को, देखी परख्या जब ।
तब कछू न रह्या तिनो दिल में, माया का लेस जो तब ।।६६।।

वहां नित्य वृंदावन में सखियों को बांसुरी बजाकर बुला लिया और सखियों से उथले वचन कहकर उनको परख भी लिया । सखियों के मन में जब माया का लेशमात्र भी न रहा -

फेर रमने लगे रूहन सों, कियो बिहार अति सुख ।
हक सुभान दिल में लिया, इनों मोपे माग्या मूल दुख ।।६७।।

तो फिर सखियों के साथ रास रमण करने लगे । इस प्रकार लीला-विहार करते हुए अत्यंत सुख प्रदान किया । तब श्री राजजी ने अपने दिल में विचार किया, कि इन्होंने मुझसे मूल रूप से दुःख की मांग की थी ।

सुख तो अपने घर में, रहे हमेशा इनों पास ।
पर इनों जो मोपे माग्या, इनों की सोई पुरनी आश ।।६८।।

सुख तो अपने घर (परमधाम) में हमेशा से ही इनके पास है, किंतु इन्होंने मुझसे जो दुख मांगा है, इनकी वही इच्छा पुरी करनी है ।

तब अपना जोश नूर पर, खेंच के लिया जब ।
तब अक्षर आतम चौंक के, जागी चौंक मूल में तब ।।६९।।

तब श्री राजजी ने अक्षर ब्रह्म पर से अपनी जोश (आवेश) की शक्ति खींच ली । तब अक्षर ब्रह्म की आत्मा चौंक कर अपने मूल तन (परात्म) में अक्षर धाम में जागृत हो गयी ।

रास आया जाग्रत बुध में, ए जो भया अवतार ।
यूं अखंड रास किया, जब याद करें विचार ।।७०।।

इस प्रकार जागृत होने पर अक्षर ब्रह्म ने रास लीला का स्मरण किया, तब रास लीला अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि में अखण्ड हो गयी । इसी जागृत बुद्धि का अवतार अभी हुआ है ।

इत रूहों ब्रह देखिया, जेता माग्या दुःख ।
सो सारा इन देखाया, फेर प्रगट देखाया सुख ।।७१।।

यहां वृंदावन में सखियों ने विरह के रूप में पूर्ण रूप से दुख देख लिया, जितना उन्होंने मांगा था । उसके बाद श्री राजजी ने पुनः सुख प्रकट किया।

इत ब्रह बिलास देखे, रही इच्छा इनों की जब ।
झीलना कर आरोगे, एह सुपन भागा तब ।।७२।।

इस प्रकार यहां विरह -विलास देखने के पश्चात् सखियों ने जब इच्छा की (कि हमें उस घर ले चलो, जहां हम आपसे एक पल के लिये भी जुदा ना हों), तब यमूनाजी के तट पर झीलना व भोजन करने के पश्चात् स्वप्न (योगमाया) खत्म हो गया ।

नूर अपनी ठौर को, रूहें अपने मकान ।
लिया हक सुभान दिल में, इनों को भई पेहेचान ।।७३।।

तब अक्षर ब्रह्म अपने धाम में तथा सखियां अपने रंगमहल में जागृत हो गयीं । तब श्री राजजी ने दिल में लिया कि इन्हें अभी पूर्ण पहचान नहीं हुयी है ।

तब फेर हुकम किया, ऐसा ही उपजे सुपन ।
यूं ही नूर अक्षर का, फेर के फेरा मन ।।७४।।

तब श्री राज जी ने पुनः हुक्म (संकल्प) किया, कि वैसा ही स्वप्न (संसार) पुनः खड़ा हो । तब पहले के समान पुनः अक्षर ब्रह्म की चित्तवृत्ति को श्री राजजी ने खेल में डाल दिया ।

पेहेले इन के नूर ने, दिल में किया विचार ।
मैं ब्रज में नंद द्वार, किन विध किया विहार ।।७५।।

किंतु इससे पूर्व अक्षर ब्रह्म ने अपने दिल में ब्रज लीला का स्मरण किया कि मैं किस प्रकार ब्रजमण्डल में नंदबाबा के घर गया था ? किस प्रकार

वहां लीला विहार किया था ?

जिन को सत सरूप, दिल में करे याद ।
सोई भया काएम, हुई अक्षर बुनियाद ।।७६।।

जिनको अखण्ड स्वरूप अक्षर ब्रह्म अपने दिल में याद करते हैं, वह उसी क्षण उनके हृदय में अखण्ड हो जाता है ।

तीसरे एह ब्रह्माण्ड, पैदा हुआ जब ।
खबर ना पड़ी किन को, ऐसे ही उठाया तब ।।७७।।

यह तीसरा ब्रह्माण्ड (वैसे का वैसा) जब पुनः उत्पन्न हुआ, तब वहां पहले के समान ब्रजमण्डल, राधा, कृष्ण सब उत्पन्न हुए, किंतु किसी को भी बीच में हुए प्रलय का ज्ञान नहीं हुआ (कि यह ब्रह्माण्ड नया है) ।

नंद जाने मैं नंद हूं, जसोमती जाने वह हम ।
गोप ग्वाल कंस, तहां वही बुध करी हुकम ।।७८।।

नंदबाबा ने समझा कि मैं वही नंदबाबा हूं, यशोदा जी ने भी समझा कि मैं वही हूं । गोपियों, ग्वाल बाल व कंस सबने अपने आप को पहले जैसा ही समझा । क्योंकि श्री राजजी ने हुक्म के द्वारा वही पहलेवाली बुद्धि सबको प्रदान की ।

अग्यारे बरस बावन दिन, सात दिन भए जब ।
चार दिन मथूरा मिने, आए कंस को मारया जब ।।७९।।

११ वर्ष व ५२ दिन तो पहले हो चुके थे, उस पर सात दिन जब हो गये, तब उसके पश्चात् श्री कृष्ण जी (गौलोकी शक्ति) चार दिन मथुरा में रहे और कंस का वध किया ।

एक सौ तेइस बरस, मथुरा द्वारका कियो राज ।
भोम भार उतार के, सब में अवतार उठी आवाज ।।८०।।

उसके पश्चात् १२३ वर्ष मथुरा व द्वारिका में (विष्णु की शक्ति से युक्त) श्री कृष्ण जी ने राज्य किया । महाभारत युद्ध के द्वारा पृथ्वी का भार हल्का किया (दुष्टों का वध करवा के)। सबने उन्हें विष्णु के १६ कला सम्पूर्ण अवतार के रूप में जाना ।

ब्रज रास की खबर, पड़ी न काहूं जब ।
जोश हुकम नूर जमाल का, आया बरारब तब ॥८१॥

जब ब्रज व रास लीला में श्री कृष्ण जी के तन में विराजमान अक्षरातीत की किसी को पहचान नहीं हुयी, तब अरब में मुहम्मद साहब के रूप में अक्षरातीत का जोश (आवेश) व हुक्म पुनः आया ।

त्रेसठ बरस तहां रहे के, जाको कह्या रसूल नाम ।
वायदा कर पीछे फिरे, जाहिर किया दीन इसलाम ॥८२॥

अरब में ६३ वर्ष रहे, वहां उनका नाम रसूल (संदेशवाहक) कहा गया । उस समय उन्होंने वहां दीने इस्लाम (सत्य-शांति का मार्ग) प्रकट किया, और आखिरत में आने का वायदा करके वापस चले गये ।

आए रूह अल्ला दसमी में, रहे चोहोतर बरस ।
तिन किल्ली दई इमाम को, खोला अज़ीम अरस ॥८३॥

ईसा रूह अल्लाह (श्यामा जी) दसवीं सदी (हिजरी) में आये, जो दुनिया में ७४ वर्ष रहे । उन्होंने इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) को इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) रूपी कुंजी प्रदान की, जिसके द्वारा उन्होंने अखंड परमधाम का द्वार खोल दिया ।

इमामे अग्यारै में, दावत करी इसलाम ।
पूरब पश्चिम दक्खिन उत्तर, सब को दिया पैगाम ॥८४॥

इमाम महदी साहिबुज्जमां ने ग्यारहवीं सदी (हिजरी) में पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण (चारों दिशाओं) में सारी दुनिया को ब्रह्मज्ञान का संदेश देते हुए शांति-आनंद के मार्ग (निजानंद-परमधाम के अखण्ड सुखों) की दावत (आमंत्रण) दी (इस्लाम का अर्थ परमधाम होता है, उसे ही निज-आनंद कहते हैं) ।

रहे बरस छहत्तर, भए दूनी में जब ।
तीन सौ तेरे मुसलिम, इनों पकड़े कदम तब ॥८५॥

इमाम महदी साहिब दुनिया में ७६ वर्ष रहे, तब ३१३ सच्चे विश्वास वाले (ईमान वाले) सुंदरसाथ उनके चरणों में आये ।

छे दिन वाके क़ुरान में, लिखे बीच फिरकान ।
कहूं बेवरा तिन का, मोमिन पावें पेहेचान ॥८६॥

कुर्आन पाक में इन्हें ही खुदा के छः दिन कहा गया है। उसका विवरण कहूंगाए जिससे कि सुंदरसाथ को उसकी पहचान हो जाये ।

थे एक दिन हम ब्रज में, भया रास में दूजा दिन ।
तीसरे दिन रसूल, किया इसलाम रोशन ॥८७॥

पहले दिन हम ब्रजमण्डल में आये थे, दूसरा दिन रास लीला का था । तीसरे दिन रसूल मुहम्मद साहब का था, जिसमें उन्होंने (शांति व आनंद का मार्ग) दुनिया में प्रकट किया ।

चौथे दिन रूह अल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम ।
पांचमा दिन इमाम का, आए किया दीन का काम ॥८८॥

चौथे दिन ईसा रूहूल्लाह श्री श्यामा जी तारतम ज्ञान रूपी चाबी लाये, जिसके द्वारा परमधाम की हकीकत (सत्य ज्ञान) दुनिया में जाहिर किया । पांचवा दिन इमाम महदी का था, जिसमें उन्होंने सत्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर दुनिया में धर्म का कार्य किया ।

छठा दिन है जुमे का, ईसा मुक्त दीन होए ।
जमा होए सब मोमिन, इनों बिन न पावे कोए ॥८९॥

छठा दिन जुम्मे का मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) का है, जिसमें ईसा रूहूल्लाह (श्री श्यामा जी) का मोक्ष प्रदान करनेवाला सत्यधर्म जाहिर हो जायेगा । सभी ब्रह्मात्माएं (मोमिन) जागृत होकर एकत्र हो जायेंगे । उनके बिना अन्य कोई इस सत्य ज्ञान को नहीं प्राप्त कर सकता है ।

उठाई आठों भिस्त को, होए मुकाबिले दोजक ।
ले वारसी अपनी सब कोए, पोहोंचे ताले माफक ॥९०॥

आठों बहिश्तें कायम कर दी गयीं, जो दोजख (नर्क) के पास ही कायम हुयीं। (संसार में माया का दुख नर्क है और परमधाम का सुख जन्नत है) । ब्रह्मात्माएं अपनी विरासत (उत्तराधिकार) प्राप्त करेंगी । समस्त जीव अपने अंकुर व भाग्य के अनुसार परमधाम का सुख प्राप्त करेंगे ।

रूह मोमिन कदमों तले, लई हक सुभान ।
तासो लगे बातें पूछने, कहो अपनी पेहेचान ॥९१॥

प्रियतम अक्षरातीत ने ब्रह्मात्माओं को अपने चरणों में जागृत कर दिया

। वहां उनसे खेल की बातें पूछने लगे कि वहां आपको मेरी कैसी पहचान थी ?

कैसा खेल तुम मांगया, क्या सुकर लै बजाए ।
कैसा इशक तुम मे रह्या, हम को देयो बताए ।।९२।।

(परमधाम में उठने के बाद श्री राजजी सखियों से पूछेंगे कि) आपने मुझसे कैसा दुख का खेल देखने की इच्छा की थी ? वहां आपके अंदर कैसा इश्क था ? क्या आपने वहां शुक्र बजाया (मेरा धन्यवाद किया) ? मुझे ये सारी बातें बता दीजिये ।

ए ही साएत मैं तुम को, एह खेल देखाया जब ।
मैं तुमारे साथ था, मुझ सों कैसा प्यार था तब ।।९३।।

यह वही क्षण (सायं ४-३० बजे) है, जिसमें मैंने आप सबको संसार रूपी खेल दिखाया और जब मैं तुम्हारे साथ था, तब मेरे प्रति आपका कैसा प्रेम था?

महामत कहे ए मोमिनो, कई खुसाली बातें होए ।
एह नेक मैं तुम को कह्या, अब आए के देखो सोए ।।९४।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! उस समय कई आनंददायी बातें होंगी । यह तो थोड़ा सा मैंने आपके लिये वर्णन किया है, आप स्वयं आकर देखो कि यहां आने पर कैसा आनंद होगा ।

प्रकरण ७७ चौपाई २८१४

हक तरफ की खोज

इस प्रकरण में विस्तार से यह बताया गया है कि किस प्रकार सृष्टि के आदि काल से सब के हृदय में परमात्मा को पाने की आशा बनी रही है । जिस परमधाम के भेद को त्रिगुण (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) नहीं जान पाए, अक्षर धाम में रहने वाले अक्षरब्रह्म जिस अखंड लीला को नहीं जान पाए, उस अखंड ज्ञान को ब्रह्मात्माओं की संगत से जीवों ने सहज ही प्राप्त कर लिया ।

इन दुनियां चौदे तबक में, जबकी दुनी पैदाश ।
तब के परमेश्वर के पावने, रहेत सबों को आश ।।१।।

इस चौदह लोकों के संसार में, जबसे सृष्टि की उत्पत्ति हुयी है, तब से

सबके हृदय में परमात्मा को पाने की इच्छा बनी रही है ।

आदी सबों के नारायन, जिन सैन किया मोहजल ।
तिन की नाभ कमल से, पैदा ब्रह्मा दिल निरमल ।।२।।

सृष्टि में सर्वप्रथम आदि नारायण हुए थे, जिन्होंने मोहजल (नींद) में शयन किया था। उनकी नाभि कमल से निर्मल हृदय वाले ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुयी।

तिन पेहेले खोज करी, मैं कौन कहां से पैदाश ।
खावंद मेरा कौन है, रहे पावने केरी आश ।।३।।

सर्वप्रथम उन्होंने यह खोजा कि मैं कौन हूं, और कहां से उत्पन्न हुआ हूं? मेरा मालिक कौन है ? इस प्रकार ब्रह्मा जी के हृदय में परमात्मा को पाने की चाहना हो गयी ।

उतरा फेर बीच कमल के, मुदत बरस एक हजार ।
कहूं थाह न पाया तिन का, फेर के हुआ हुसियार ।।४।।

ब्रह्मा जी पुनः कमल नाल के अंदर उतर गये । उन्हें उतरते उतरते १००० वर्ष हो गये, किंतु वे कहीं भी उसका अंत नहीं पा सके । फिर सावचेत हो गये ।

लगे हजार ऊंचे चढ़ते, ए मुद्दत भई हजार दोए ।
तहां तब या बानी सुनी, एक हजार बरस की सोए ।।५।।

उन्हें वापस ऊपर चढ़ने में पुनः १००० वर्ष लग गये । कुल मिलाकर समय २००० वर्ष व्यतीत हो गये । वहां तब ये आकाशवाणी सुनायी दी, जो कि हजार वर्ष की थी ।

तब दर्शन दिया, नारायन इत आए ।
क्या आज्ञा मोको होत है, सो देओ मोको बताए ।।६।।

तब नारायण जी ने आकर उन्हें दर्शन दिया । ब्रह्मा जी ने उनसे कहा कि मेरे लिये क्या आज्ञा है ? मुझे बता दीजिये ।

तुम करो सृष्ट पैदा, जिन से होए विस्तार ।
एही आज्ञा तुम को, करो दिल में करार ।।७।।

नारायण जी ने उनसे कहा कि आप सृष्टि की रचना करो, जिससे दुनिया का विस्तार हो । आपके लिये यही आज्ञा है, अपने दिल में शांति रखिये।

और जो तोको मुसकिल, आए पडे इत कोए ।
तब मोको याद कीजियो, तब ही मेरा पोहोंचना होए ।।८।।

और जब आपको कोई मुश्किल आ जाये, तो मुझे याद कर लेना, मैं तुरंत उपस्थित हो जाऊंगा ।

एती आज्ञा कर के, फिरे जब भगवान ।
तब लगा विचार करने, भए सनकादिक ए जान ।।९।।

इतनी आज्ञा देकर जब नारायण भगवान वापस चले गये, तब ब्रह्माजी विचार करने लगे । उनके चिंतन करने से उनके चारों मानसी पुत्र सनत, सनंदन, सनातन सनत कुमार उत्पन्न हुये ।

तिनो हाथ जोड़ ठाढे रहे, तुम करो आज्ञा हम ।
पैदा सृष्ट की तुम करो, एही है तुमे हुकम ।।१०।।

वे चारों सनकादिक पुत्र हाथ जोड़ कर ब्रह्मा जी के सामने खड़े हो जाते हैं, कि आप हमें आज्ञा करें । ब्रह्मा जी उन्हें कहते हैं, कि "आप सृष्टि रचना का कार्य करो, यही आपको मेरा आदेश है ।

पीछे भजो भगवान को, जवाब दिया इनों तब ।
जो पीछे ही करना, सो पेहेले ही करें हम अब ।।११।।

उसके पश्चात परमात्मा का भजन करना "। तब ब्रह्मा जी के इन वचनों को सुनकर सनकादिक पुत्रों ने जवाब दिया कि जो कार्य बाद में करना ही है, उसे पहले ही अभी हम करेंगे ।

तब ब्रह्मा वचन कहे, क्यूं लोपत आज्ञा तुम ।
कहे हम आज्ञा ना लोपत, पेहेले सृष्ट का किया हुकम ।।१२।।

तब ब्रह्मा जी ने उनसे कहा कि आप सब मेरी आज्ञा मानने से क्यूं इंकार कर रहे हो ? सनकादिक पुत्रों ने कहा कि हम आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर रहे हैं । आपने पहले सृष्टि करने का हुक्म दिया है ।

सो पेहेले तुम भए पिता, तुम करो एह सृष्ट ।
पीछे से हम भए, सो भगवान का भजन की इष्ट ।।१३।।

तो पिता जी, पहले आप ही उत्पन्न हुये हो, तो आप ही सृष्टि की रचना कीजिये । हम आपके बाद हुए हैं, इसलिये हम भगवान की भक्ति करेंगे ।

इतना कहे चल निकसे, तब ब्रह्मा भये कोपमान ।
तब भृकुटी से पैदा भया, तामस रूप पेहेचान ॥१४॥

इतना कहकर सनकादिक पुत्र वहां से चले जाते हैं । तब ब्रह्मा जी बहुत क्रोधित होते हैं, तब उनकी भृकुटी से तमोगुण प्रधान शंकर भगवान उत्पन्न होते हैं ।

तिन पूछी पिता को, कैसी आज्ञा हम को होए ।
तब कह्या करो सृष्ट को, ए वचन मान चलो सोए ॥१५॥

उन्होंने अपने पिता (ब्रह्माजी) से पूछा कि मेरे लिये क्या आज्ञा है । तब ब्रह्मा जी ने उनसे कहा कि सृष्टि की रचना करो, मेरे इस वचन का पालन करो।

इन बोलाए सृष्ट को, आए हज़ार खड़ी ऐसी ।
सोई रूधर अहारी ब्रध, भूत प्रेत तामसी ॥१६॥

तब शंकर भगवान ने सृष्टि का आह्वान किया, तो उन के सामने रक्त का आहार करने वाली हज़ारों तमोगुणी भूत-प्रेत की सृष्टि खड़ी हो गयी ।

तिन मांग्या आहार को, तब आगे आया ब्रह्मा के ।
ए मांगत खाने को, लगी खाने तुझे मुझे ए ॥१७॥

वे भूत-प्रेत शंकर भगवान से भोजन मांगने लगे, तब शंकर भगवान ब्रह्मा जी से कहने लगे कि ये मुझसे भोजन मांग रहे हैं । इनको खाना नहीं दिया तो ये मुझे और आपको खा जायेंगे ।

तब सरन गया ब्रह्मा, याद किया भगवान ।
कौन भांत मैं करों, ए सृष्ट खाने लगी मोही जान ॥१८॥

तब ब्रह्मा जी नारायण भगवान की शरण में आकर उनका ध्यान करते हैं, और प्रार्थना करते हैं, कि अब मैं क्या करुं ? ये सृष्टि तो मुझे ही खाने लगी है ।

तब कह्या ब्रह्मा को, जिन भय मानों तुम ।
कछु सिर ना ल्यावो अपने, देख पीछे मेरा हुकम ॥१९॥

तब नारायण भगवान ने ब्रह्मा जी से कहा कि आप मत डरो । अपने

सिर पर कुछ भी अहं ना लो । देखो, तुम्हारे पीछे मेरा हुक्म खड़ा है ।

जो नजर ब्रह्मा करे, सृष्ट चली जात सब कोए ।
जाने आदि अनादि की, भगवान का हुकम होए ।।२०।।

जब ब्रह्मा जी ने नजर किया तो देखा कि सृष्टि की उत्पत्ति, लय का कार्य सुचारू रूप से प्रारम्भ हो गया है । ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे सृष्टि अनादि काल से ऐसे ही बन व मिट रही है । इस प्रकार नारायण भगवान का हुक्म हुआ ।

ए सृष्ट देखाई सुपन की, बैठाया कर करतार ।
एह वचन तुम कहे, मैं तुमारा करनेवाला भरतार ।।२१।।

इस प्रकार यह स्वप्न की सृष्टि दिखा दी गई और त्रिदेवा को इसका स्वामी बनाकर बैठा दिया। यह वचन उन्होंने कहे, कि मैं ही तुम्हारा कर्ता व भर्तार हूं ।

ए तो सृष्ट इन भांत की, नींद सूरत अक्षर संजोग ।
ताए राह बताई शास्त्रों ने, करम फल का भोग ।।२२।।

सुंदरसाथजी, यह सृष्टि इस प्रकार की है, जो नींद व अक्षरब्रह्म के मन के संयोग से बनी है । इस स्वप्न की सृष्टि को शास्त्रों ने कर्मफल भोग का मार्ग बताया है । (अच्छे कर्म का अच्छा फल व बुरे कर्म का बुरा फल) ।

वेद स्वांस नारायन के, तिन खोज किया विचार ।
किन से एह पैदा हुआ, सो पावे हम करतार ।।२३।।

वेद, नारायण जी के श्वांसों से (पुनः) उत्पन्न हुए हैं, जिन्होंने परमात्मा की खोज करते हुए विचार किया कि यह सृष्टि किनसे उत्पन्न हुयी है (किसने सृष्टि की रचना की है)? उस परमात्मा की हमें प्राप्ति करना है।

तब एक ऋचा ने कह्या, मैं पाई मूल वस्त ।
कैसा ओ सरूप है, कह्यो कर के कस्त ।।२४।।

तब वेद की एक ऋचा ने कहा कि मैंने मूल वस्तु (अनादि तत्व) प्राप्त कर लिया है । तब दूसरी ऋचा ने कहा कि उसका कैसा स्वरूप है ? तब पहली ने उसे यत्नपूर्वक कहा-

वह तो तेज का पूंज है, है किरना सब संसार ।
क्यों ते ऐसा जान्या, बिन बाप न होए करतार ।।२५।।

वह परमात्मा तो तेज पुंज है, और यह सारा संसार उसकी किरणें हैं । तब दूसरी ऋचा ने पुनः कहा कि तूने यह कैसे जाना ? तब पहली ने कहा कि बिना पिता (सृष्टिकर्ता) के यह संसार नहीं हो सकता ।

तब ऋचा दूसरी बोली, पर ते कह्या सो सत वचन ।
पर मैं पाया करतार को, सो देखाऊ तुमे रोशन ।।२६।।

तब दूसरी ऋचा ने कहा कि तुमने सत्य वचन कहा है, परंतु परमात्मा को वास्तव में मैंने पाया है । उसकी पहचान तुम्हें बताती हूं ।

अनंत पांउ तिन के, अनेक बाहु मुख नैन ।
अनेक कान तिन के, छेह न काहूं मुख बैन ।।२७।।

उसके अनंत पांव हैं, अनेक हाथ हैं, अनेकों मुख व नेत्र हैं । उनके अनेक कान हैं, उनके मुख से निकलने वाले वचनों का कोई अंत नहीं है ।

ते क्यूं ऐसा जान्या, के जीव कथुआ चले जब ।
तिन सबो देखत, एती आंखें रखत है तब ।।२८।।

दूसरी ऋचा ने उससे पूछा कि तूने ऐसा कैसे जाना ? तब उसने कहा कि जब कथुवा (नाम का) जीव चलता है, तो वह इतनी आंखें रखता है कि उसे चारों तरफ सब दिखायी देता है ।

पांउ खूट का तिन का, सुनत अपने कान ।
बोहोताइत इन बात से, मोको भई पेहेचान ।।२९।।

उसके पांव बहुत सारे होते हैं और वह अपने कान से प्रत्येक बात सुन लेता है । इस प्रकार अनेक बातों से मुझे परमात्मा की पहचान हुई ।

तब कह्या तीसरी ने, ते कह्या तैसा ही होए ।
पर पाया मैं करतार को, वय किशोर पुरूष सोए ।।३०।।

तब तीसरी ऋचा ने कहा कि तुमने जो कहा है, शायद वैसा ही होगा, परंतु सृष्टि के कर्तार को मैंने पाया है, वह किशोर अवस्था से युक्त पुरूष रूप में है।

क्यूं ते ऐसा जान्या, पूछत चौथी इन ।
तिन को इन उत्तर दिया, जो मैं कह्या तामें नाहीं रोशन ।।३१।।

तब चौथी ऋचा ने उससे पूछा कि तूने ऐसा किस प्रकार जाना ? तब तीसरी ने उत्तर दिया कि मैंने जो कहा है, उसका कोई प्रमाण नहीं है ।

ओ तो शोभायमान हैं, सो मैं ढूंढी सब ठौर ।
वय किशोर सूरत पुरूष बिन, शोभा नहीं कहूं और ।।३२।।

किंतु परमात्मा जो भी है, वह शोभा व सुंदरता से युक्त होगा । मैंने उसे सभी स्थानों में ढूंढा । किंतु मुझे किशोर अवस्था के पुरूष स्वरूप के बिना (से ज्यादा) और कोई शोभा (सुंदरता) कहीं नहीं दिखायी दी ।

तिस वास्ते ओ ऐसा है, मैं जान्या नीके कर ।
तब कह्या चौथी ने, पाया मैं सब पर ।।३३।।

इस कारण मैंने ऐसा दृढ़तापूर्वक निश्चय किया कि वह किशोर पुरूष स्वरूप है । तब चौथी ऋचा ने कहा कि मैंने सबसे श्रेष्ठ ज्ञान पाया है ।

कह्यो कैसा ते देखया, हमको दयो बताए ।
न पांउ न हाथ न है मुख, ना जुबां कान शोभाए ।।३४।।

पांचवी ऋचा ने कहा कि आपने परमात्मा को किस रूप में देखा (जाना) है, वह हमें बताओ । तब चौथी ऋचा ने कहा कि उसके न पांव हैं, न हाथ, न मुख, न जुबां, ना ही कान की शोभा से युक्त है ।

क्यूं ते ऐसा जान्या, कह्या धरया तिन का नाम ।
फना तिन पर आवत, वह तो काएम ठाम ।।३५।।

पांचवी ऋचा ने उससे पूछा कि तुमने यह कैसे जाना ? तब चौथी ऋचा ने कहा कि जिसका नाम रखा जाता है, वह नश्वर होता है । परंतु परमात्मा का धाम (स्वरूप) तो अखण्ड होता है ।

ए निराकार निरंजन, ना नाम ठाम कोई गाम ।
तब पांचमी कह्या, तिन तेने क्या रख्या इस काम ।।३६।।

परमात्मा तो निराकार, निरंजन (अवयव से रहित) है । उसका ना कोई नाम है, ना धाम है, ना ही गांव है । तब पांचवी ऋचा ने उससे कहा कि तूने तो इस प्रकार परमात्मा का कुछ काम (स्वरूप, अस्तित्व) ही नहीं रखा ।

ते तो अबै फना किया, इनों तो कछुक देखाया ठौर ।
इहां तो आसरो रेहेत है, नास्त में ना चले जोर ।।३७।।

तूने तो परमात्मा को अब ही खत्म (अस्तित्वहीन सिद्ध) कर दिया । अन्य ऋचाओं ने तो परमात्मा का कुछ ना कुछ अस्तित्व दर्शाया है । उनके सिद्धांतो से कुछ आश्रय (सहारा) रहता है, किंतु निराकार में तो कुछ भी सिद्धि नहीं होती ।

तब पांचमी ऋचा, लागी करने खोज ।
विचार में आवे नहीं, इत दिल पर दिया बोझ ।।३८।।

तब पांचवी ऋचा परमात्मा की खोज करने लगी, किंतु उसके चित्त में कुछ विचार नहीं आया । उसने अपने दिल पर चिंतन रूपी बहुत बोझ दिया ।

तब छठी ने पूछ्या, पाया ते करतार ।
तब इनने जवाब दिया, आवत नहीं विचार ।।३९।।

तब छठी ऋचा ने पूछा, कि क्या तुम्हें परमात्मा की प्राप्ति हुयी ? तब उसने जवाब दिया कि नहीं, मेरे हृदय में विचार ही नहीं आ रहा है ।

तब कह्या छठी ने, तुम पेहेले आप पेहेचान ।
पीछे मोको देख, पीछे जगत को जान ।।४०।।

तब छठी ऋचा ने कहा कि तुम पहले स्वयं को पहचानो, फिर मुझे जानो और बाद में संसार के विषय में समझो ।

तब इन खोजा आप को, पीछे देख्या तरफ और ।
तब पाया जगत को, तब जान्या अद्वैत ठौर ।।४१।।

तब पांचवी ऋचा ने स्वयं के विषय में खोज किया, फिर दूसरों की तरफ देखा, तब संसार के विषय में ज्ञान पाया और अद्वैत धाम का भी ज्ञान प्राप्त किया ।

फेर पूछा इनने, ते पाया अद्वैत ब्रह्म ।
तब कहें मैं पाइयां, कर दृढ़ अपनी आतम ।।४२।।

फिर छठी ऋचा ने उससे पूछा कि क्या तुम्हें अद्वैत ब्रह्म की प्राप्ति हुयी है ? तब उसने कहा कि मैंने पा लिया है, तुम अपनी आत्मा में दृढ़ कर लो ।

किया दृढ़ मैं आपना, कह्यो मुख से सुकन ।
मैं तो कछुए हुं नहीं, और नाहीं तेरा तन ॥४३॥

पांचवी ऋचा ने पुनः अपने मुख से कहा कि मैंने अपनी आत्मा में दृढ़ कर लिया है, कि मैं (जीव) तो कुछ भी नहीं हूं (अस्तित्वहीन हूं), ना ही तेरे तन का अस्तित्व है ।

और नाहीं जीव ना माया, नाहीं एह जगत ।
वह सत चित आनन्द, एह मैं नीके देख्या इत ॥४४॥

और ना ही जीव का अस्तित्व है, ना माया और ना इस जगत् का अस्तित्व है । वह परब्रह्म सत् चिद् आनंद स्वरूप है, यह मैंने अच्छी तरह से देख लिया है ।

कहो कैसा एह ठौर है, है कौन ठौर अद्वैत ।
मैं तो पेहेले केहे चुकी, मैं नाहीं ना ए अद्वैत ॥४५॥

तब छठवीं ऋचा ने पूछा कि वह कैसा धाम है ? वह अद्वैत धाम कहां पर है ? तब पांचवी ने जवाब दिया कि मैं तो पहले ही आपको कह चूकी हूं कि मैं उस अद्वैत स्वरूप में नहीं हूं ।

जो आप है नाहीं कछु, सो क्यूं कहे है अखंड को ।
असत सत को ना देखहीं, तुम दृढ़ करो यामे ॥४६॥

जो स्वयं अस्तित्व हीन (नश्वर) है, वह अखण्ड परमधाम के विषय में किस प्रकार कह सकता है ? असत्य, सत्य को नहीं देख सकता है, यह तुम दृढ़ निश्चय करो ।

तब कह्या इत वेद ने, हमारा नाम निगम ।
हम उत पोहोंच ना सके, तो क्यों कर होवे गम ॥४७॥

तब यहां वेदों ने कहा कि हमारा नाम निगम है, क्योंकि हम उस परमात्मा तक नहीं पहुंच सके, तो उसका ज्ञान किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ?

नेत नेत केहे पीछे फिरे, तब इत किया विचार ।
ए जो विश्व देखाई देत है, इनों को कौन बताइए सहूर ॥४८॥

तब वेद न इति- न इति (यह नहीं, यह नहीं) कहकर पीछे लौट गये और उन्होंने यहां यह विचार किया कि यह जो संसार दिखायी दे रहा है, इन्हें

परमात्मा के विषय में क्या बताया जाये ?

तब कह्यो आपस में, विश्व माफक दीजे बताए ।
देव गोबर का आंख कौड़ी की, जो दीजे इनों को लार लगाए।।४९।।

तब वेदों की ऋचाओं ने आपस में मिलकर विचार किया कि जैसा संसार है, उसी प्रकार उन्हें ज्ञान बता देते हैं । गोबर का देवता और कौड़ी की आंख बताकर इन्हें एक के पीछे एक चला देते हैं ।

तब उतर आए बैकुंठ, विष्णु को कह्या परब्रह्म ।
दूसरा तो कोई है नहीं, तू हीं खावंद आतम ।।५०।।

तब वेद निराकार से उतर कर वैकुण्ठ पहुंच गये और विष्णु भगवान को कहा कि आप ही परब्रह्म हैं । आपके अतिरिक्त अन्य कोई परमात्मा नहीं है । आप ही सबकी आत्मा के स्वामी हैं ।

ऐसे ही महादेव को, ऐसे ही ब्रह्मा को कहे वचन ।
ऐसे ही गाए देवता, तेंतीस करोड़ रोशन ।।५१।।

वही वचन उन्होंने महादेव जी (शंकर भगवान) को भी कहे और वही वचन ब्रह्मा जी को भी कहे । वैसे ही ३३ करोड़ देवी देवताओं को भी बतलाये ।

फेर आए तले जिमीन के, कह्या तीरथ व्रत तप दान ।
करम काण्ड बताए के, बरन चारों बंधे निदान ।।५२।।

तत्पश्चात् वे (ऋचाएं) धरती (मृत्युलोक) पर आयीं और मनुष्यो से कहा कि तीर्थ, व्रत, दान, तप आदि कर्मकाण्ड ही मुक्ति का मार्ग है । इस प्रकार चारों वर्णों का बंधन बांध दिया ।

ए जो गीता में क्ह्या, उरध मूल मध शाखा ।
एक सत्यक ब्रह्म है, ताकी अरथ कह्या भाषा ।।५३।।

यह जो गीता में श्री कृष्ण जी ने कहा है कि संसार का मूल ऊपर है, मध्य में शाखा है (नीचे पत्तियां हैं)। एक मात्र ब्रह्म ही सत्य है । उसका अर्थ विभिन्न भाषाओं में बताया ।

तिन करम रूपी डोर सों, बांधी सकल जहान ।
ताको असंग हथियार सों, छेद मूल निदान ।।५४।।

जिस कर्म रूपी डोर से सारे संसार को बांधा है। उसका नाश (छेदन) मात्र असंग हथियार (आत्मज्ञान) से ही किया जा सकता है ।

ताके पीछे ढूंढे मारग, जो है अक्षर ब्रह्म ।
जहां चांद सूरज की, ना तेज पावक पोहोंचे आतम ॥५५॥

उसके पश्चात् अक्षर ब्रह्म तक पहुंचने का मार्ग ढूंढना । जहां ना चांद-सूर्य का प्रकाश है, ना ही अग्नि व हवा (पांच तत्व) वहां पहुंच सकते हैं । वहां एक मात्र आत्मा ही पहुंच सकती है ।

ए जो आद पुरूष अक्षर, मै हो ताके सरन ।
एह वचन शास्त्रन के, मत कही त्रिगुन ॥५६॥

ये जो आदि पुरूष अक्षर ब्रह्म हैं (जब संसार नहीं था, अक्षर ब्रह्म तब भी थे), मैं उनके शरण में हूं । इस प्रकार ये वचन शास्त्रों के हैं, जो त्रिदेवा (त्रिगुण प्रधान देव ब्रह्मा, विष्णु, महेश) का ज्ञान है ।

इन त्रैगुन के वचन ले, खोज करे सुपन सृष्ट ।
सो सुन उलंघ ना सके, क्यूं पोहोंचे अद्वैत इष्ट ॥५७॥

इन त्रिदेवों (शास्त्रों) के वचन ग्रहण करके स्वप्न सृष्टि के जीव परमात्मा की खोज करते हैं । तो वे किस प्रकार शून्य (निराकार) को पार कर सकते हैं, किस प्रकार वे अद्वैत स्वरूप परब्रह्म तक पहुंच सकते हैं?

जब इत आए महंमद, तिन दई साहेदी खुदाए ।
मैं कासिद हों तिन का, दई ब्रह्म सृष्ट इत बताए ॥५८॥

जब इस संसार में मुहम्मद साहब आये, तो उन्होंने परमात्मा के स्वरूप की साक्षी दी और ब्रह्मसृष्टियों (मोमिनों) से कहा कि मैं उनका संदेश वाहक (पैगम्बर) हूं।

आखर आवेंगे मोमिन, तामे होवे बुध अवतार ।
असराफिल तिन को कह्या, भेजा परवरदिगार ॥५९॥

उन्होंने बताया कि मोमिन (ब्रह्मात्माएं) आखिरत (कलियुग के अंतिम समय) में दुनिया में आयेंगे। उनके बीच बुद्ध अवतार होगा (जागृत बुद्धि प्रकट होगी), जिसे कुर्आन पाक में अश्राफील फरिश्ता कहा गया है । इसे परब्रह्म स्वामी ने दुनिया में भेजा है ।

विजयाअभिनन्द बुध जी, ब्रह्म सृष्ट सिरताज ।
हाथ हुकम छत्रसाल के, दियो सो अपनो राज ।।६०।।

विजयाभिनंदन बुद्ध जी (इमाम महदी साहिबुज्जमां) प्रकट होंगे, जो ब्रह्मसृष्टियों के सिरताज (शिरोमणि) हैं । उन्होंने महाराजा छत्रशाल (अमीरूल मोमिनीन) के हाथों में जागनी कार्य का सारा उत्तरदायित्व सौंप दिया ।

इत मिलावा मोमिन, तिन खोले अरस अजीम के द्वार ।
ठौर बताई अपनी, जो है नित बिहार ।।६१।।

उस समय इस संसार में ब्रह्मसृष्टियां जागृत होकर एकत्रित हो जायेंगी, और सारी दुनिया के लिये अखण्ड परमधाम के सुखों का दरवाजा (तारतम ज्ञान के द्वारा) खोल देंगी । उन्होंने अपने निजधाम परमधाम का दिव्य ज्ञान दुनिया को दे दिया, जहां उनकी नित्य लीला विहार है ।

जो नहीं प्राप्त त्रैगुन, नहीं अक्षर नूर मकान ।
तो मोमिनो की सोहोबतें, पाई सुपन सृष्ट पेहेचान ।।६२।।

जो ब्रह्मज्ञान त्रिगुण प्रधान देवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को प्राप्त नहीं है, जिस रंगमहल के अंदर की लीला का ज्ञान अक्षरधाम में रहने वाले अक्षर ब्रह्म को नहीं है, वह दिव्य ज्ञान ब्रह्मसृष्टियों की सानिध्यता से स्वाप्निक जीव सृष्टियों को प्राप्त हो गया है ।

अक्षर अक्षरातीत की, इत होए ना काहूं चीनार ।
सो बरकत ब्रह्म सृष्ट को, सब पोहोंचे परवरदिगार ।।६३।।

इस संसार में अक्षर ब्रह्म व अक्षरातीत परब्रह्म की किसी को भी पहचान नहीं थी । अब ब्रह्मात्माओं की कृपा से सारी दुनिया को परब्रह्म अक्षरातीत का ज्ञान हो गया है ।

ठौर वहदांनत की, जो हकीकत मारफत ।
सो सब द्वार को खोल के, मोमिन पोहोंचे महंमद सिफाएत ।।६४।।

अखण्ड स्वलीला अद्वैत परमधाम (वहदत) की हकीकत (सत्य ज्ञान) व मारिफत (परम सत्य), सबका द्वार (रहस्य) खोलकर मोमिन (ब्रह्मात्माएं) मुहम्मद स.अ.व. (श्री श्यामा जी) की सिफायत (अनुशंसा, आत्मज्ञान) को प्राप्त कर लेंगी ।

होत दीदार हक का, इनों मोमिनो की सोहोबत ।
कुरान खोल्या तिन को, जो पोहोंचा इन हकीकत ।।६५।।

इन ब्रह्मसृष्टियों की संगत से (ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने से) दुनिया वालों को परब्रह्म का दीदार हो जायेगा। क़ुर्आन पाक के रहस्य इन्हीं के लिये स्पष्ट किये गये हैं । वे ही क़ुर्आन पाक की हकीकत (वास्तविकता) जानते हैं ।

सिफत इन मोमिन की, करत हक सुभान ।
लिखी इसारतें रमूजे, बीच इन फिरकान ।।६६।।

उन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की प्रशंसा स्वयं प्रियतम परब्रह्म (क़ुर्आन पाक) करते हैं । उन्हीं के लिये हक तआला ने क़ुर्आन पाक में सांकेतिक वचन लिखे हैं ।

अव्वल से आज दिन लों, जेते कोई पैदाश ।
तिनको एही उमेद, रहे दीदार सिफाएत की आश ।।६७।।

सृष्टि के प्रारम्भ से आज दिन तक जो कोई भी मनुष्य पैदा हुए हैं उनके मन में यही उम्मीद रही है, कि किसी तरह ब्रह्मज्ञान (मुहम्मद की सिफायत) प्राप्त हो जाये, और परमात्मा का साक्षात्कार हो जाये ।

आए पोहोंचा सो बखत, पुकारे महंमद अलेह सलाम ।
बिछोना कर सिफाएत को, आओ मोमिन बीच इसलाम ।।६८।।

अब वह समय आ गया है, और मुहम्मद अलैहिस्सलाम (हकी सूरत), इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) का बिछौना बिछाकर सबको पुकार पुकार के आमंत्रित कर रहे हैं, कि सत्य-शांति (निजानंद) के मार्ग पर आ जाओ ।

करी दावत सबन को, पोहोंची पुकार चौदे तबक ।
रूह मोमिन के दिल में, कहूं मिले न सुभे शक ।।६९।।

उन्होंने सबको परब्रह्म के शाश्वत सुखों की दावत (आमंत्रण) दी है । उनकी (ब्रह्मज्ञान) की पुकार चौदह लोकों में पहुंच गयी है । ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के हृदय में किसी प्रकार का संशय नहीं रह गया है ।

इन मोमिन के वास्ते आया जबराइल जब ।
कलाम प्यारे रब्ब के, ल्याया रसूल प्यारे पर तब ।।७०।।

उन ब्रह्मात्माओं के लिये धणी का जोश (जिब्रील) जब आया, तब

प्रियतम परब्रह्म के वचनों को उनके प्यारे रसूल (श्यामा जी) पर लाया।

वास्ते प्यारी उम्मत के, करने को पेहेचान
बका ठौर जाहेर करी, इन जिमी हक सुभान ।।७१।।

उनकी प्यारी ब्रह्मात्माओं (उम्मत) को निजघर की पहचान कराने के लिये अखण्ड परमधाम का ज्ञान दुनिया में परब्रह्म अक्षरातीत ने (जिब्रील के माध्यम से) प्रकट किया है ।

तो वहदांनत की, कही जात ना सुकन ।
जो इन जिमीं में उतरे, खास गिरो मोमिन ।।७२।।

उस स्वलीला अद्वैत परमधाम का ज्ञान दुनिया में कहना सम्भव नहीं था, किंतु वे खासुल खास मोमिन (ब्रह्मात्माएं) दुनिया में अवतरित हुयी हैं, इस कारण वह ज्ञान दुनिया में प्रकट हुआ है ।

होवे छे दिन वाके, बीच लिखे अल्ला कलाम ।
पेहेले दिन थे ब्रज में, थी एक गिरो इसलाम ।।७३।।

इस संसार में ब्रह्मलीला के छः दिन होते हैं, जिसका वर्णन क़ुर्आन में संकेतों में लिखा है। पहले दिन ब्रज मण्डल में परमधाम की ब्रह्मात्माएं आयी थीं।

दूसरे दिन किस्ती चढ़े, जो रास लीला रोशन ।
तहां ब्रिहा बिलास देखाए के, पोहोंचे अपने घरों मोमिन ।।७४।।

दूसरे दिन ब्रह्मात्माएं योगमाया रूपी किश्ती पर चढ़े थे, जहां अखण्ड रास लीला खेली गयी थी । वहां विरह व विलास देखकर ब्रह्मात्माएं अपने निजघर परमधाम में पहुंची थीं ।

रहे मनोरथ मन में, रचया तीसरा इंड ।
जाने आदि अनादि का, हुआ ऐसे ही खड़ा ब्रह्माण्ड ।।७५।।

उनकी दुःख लीला देखने की इच्छा पूर्ण न होने से, पहले के समान हूबहू तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना की गयी । उसमें उत्पन्न समस्त जीवों को ऐसा लगा, जैसे यह पहले वाला (आदिकाल से जो चला आ रहा था) ही ब्रह्माण्ड है (जो कि वास्तव में प्रलय हो गया था) ।

ए तीन तकरार कहे, ए वही लैलत कदर ।
तीसरे आए रसूल, जिमी बरारब पर ।।७६।।

इन्हें (ब्रज, रास व जागनी को) ही लैलतुलकद्र (महिमामयी संसार रूपी रात्रि) के तीन तकरार (भाग) कहा गया है । इस तीसरे ब्रह्माण्ड में अरब की धरती पर रसूल स.अ.व. आये ।

तिन खबर दई खलक को, मेरी होए तीन सूरत ।
बसरी मलकी हकी, तब होवेगी क्यामत ।।७७।।

मुहम्मद साहब ने दुनिया को संदेश दिया कि मेरी कुल तीन सूरतें होंगी । बशरी (मुहम्मद साहब), मलकी (देवचंद्र जी) व हकी (महामति जी) । उसके पश्चात ही कियामत होगी ।

तब उतरे गिरो मोमिन, और फिरस्ते नूर मकान ।
मैं इत आए दावत करों, तब एक दिन होए जहान ।।७८।।

आगे मुहम्मद साहब ने कहा कि उस समय ब्रह्मात्माएं (मोमिन) दुनिया में अवतरित होंगे और अक्षर धाम के फरिश्ते (ईश्वरी सृष्टि) अवतरित होगी । तब मैं हकी सूरत के रूप में आकर सबको शाश्वत सुख शांति का आमंत्रण दूंगा । तब सारा संसार एक दीन (एक धर्म) हो जायेगा ।

मैं आए सिफाएत करो, ए जो खास गिरो मोमिन ।
सो सरत आए मिली, हुआ चौथा दिन रोशन ।।७९।।

उस समय मैं आकर खासुल खास मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की सिफायत करूंगा (उन्हें ब्रह्मज्ञान प्रदान करूंगा) । वह समय आ गया और चौथा दिन प्रकट हो गया ।

तहां रूह अल्ला उतरे, ल्याए किल्ली अल्ला कलाम ।
दिन पांचमें इमाम को, किल्ली पाई इसलाम ।।८०।।

चौथे दिन में ईसारूहअल्ला (श्यामाजी) चौथे आसमां लाहूत से दुनिया में उतरे हैं, और कलाम अल्लाह (क़ुर्आन पाक) के रहस्यों को खोलने की चाबी (इल्मे लदुन्नी) लेकर आये हैं । पांचवे दिन में उन्होंने परमधाम के अखण्ड सुखों की कुंजी (तारतम ज्ञान) इमाम महदी साहिबुज्जमां को प्रदान किया है ।

ए छठा दिन जुमे का, सब मिले गिरो मोमिन ।
वारसी पांचोंअ की, सब पोहोंची इनों रोशन ।।८१।।

यह जुम्मे का छठा दिन है, जिसमें सभी ब्रह्मात्माएं जागृत होकर एकत्रित हो गयी हैं। पांचों दिन की लीला की विरासत (सारा ज्ञान व आनंद)

उन्हें आसानी से प्राप्त हो गयी है।

एही वारस अरस के, मता पांचों जमा भई जब ।
इन को उठना अरस में, वही बखत रोज क्यामत ॥८२॥

वे मोमिन (Chosen People) ही अर्श आज़म (परमधाम - Supreme Heaven) के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं । जब पांचों दिन की लीला का आनंद वे प्राप्त कर लेंगे, तब वे अपने निजघर परमधाम में जागृत हो जायेंगे । वही कियामत का दिन (समय) होगा ।

जो साएत इनों हक सों, किया था मजकूर ।
भए छे दिन उस दरम्यान में, सोई साएत काएम करी जहूर ॥८३॥

खेल में आने से पहले जिस घड़ी (संध्या साड़े चार बजे) में उन ब्रह्मात्माओं ने अपने प्रियतम अक्षरातीत से वार्तालाप किया था, उसी पल में संसार में छः दिन की लीला हो गयी । उस पल-क्षण (छः दिन की सारी लीला) को प्रियतम परब्रह्म ने अखण्ड कर दिया है।

बातें इन साएत की, करने लगे मोमिन जब ।
अरस की रूहन को, याद आवन लगी तब ॥८४॥

परमधाम मूल मिलावे की उस घड़ी की बातें जब ब्रह्मात्माएं करने लगेंगी, तब परमधाम की आत्माओं को अपने निजघर की याद आने लगेगी ।

हक किए कौल खुदाए से, बैठे बका के ठौर ।
वही साएत वही खावंद, इत कोई ना पोहोंचे और ॥८५॥

उस अखण्ड परमधाम में मूल मिलावे में विराजमान आत्माओं ने प्रियतम परमात्मा से वायदा किया था । अभी वही क्षण है, और वे ही प्रियतम अक्षरातीत हमें बुला रहे हैं । उन ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई भी वहां नहीं पहुंच सकता है ।

दूसरा तो कोई है नहीं, तो क्यूं कह्यो जाए सुकन ।
एह खेल देखलावने, इन जिमी मोमिन ॥८६॥

इस संसार में ब्रह्मात्माओं के लिये ही यह वाणी कही जा रही है, उनके अतिरिक्त अन्य कोई है ही नहीं तो किसके लिये वाणी कही जायेगी ? यह संसार रूपी खेल देखने के लिये परमधाम से ब्रह्मात्माएं दुनिया में आयी हैं ।

अब ए मोमिन इन जिमी, खोलत बका द्वार ।
हक हादी रूहन को, जो है नित बिहार ॥८७॥

अब वे ब्रह्मात्माएं इस संसार में अखण्ड परमधाम का ज्ञान जाहिर कर रही हैं, जो श्री राज श्यामा जी व ब्रह्मप्रियाओं का नित्य लीला विहार है ।

भोम अखंड जो चेतन, जाको वार न पार सुमार ।
इन आकार के सनमंध, कह्यो ना जात बिहार ॥८८॥

अखण्ड परमधाम की चेतन भूमिका, जिसका कोई पारावार (अंत) नहीं है, इस पंचभौतिक तन के माध्यम से उसका वर्णन करना सम्भव नहीं होता है ।

इन कहे से होत है, रूहन को बडो बिसराम ।
जो कोई ईमान ल्यावत, सो दाखल होत इसलाम ॥८९॥

परंतु यहां परमधाम का वर्णन करने से आत्मा को बहुत शांति मिलती है, जो कोई भी इस पर विश्वास लाता है, वह शाश्वत सुख व शांति के मार्ग में शामिल होकर परमधाम के अखण्ड सुखों को प्राप्त कर लेता है ।

एक पात न गिरे बन में, ना पशुअन का बाल ।
ना पंखी का पर गिरे, रहे इशक हाल खुसाल ॥९०॥

उस दिव्य परमधाम के वनों से एक पत्ता भी कभी नहीं गिरता है, ना ही कभी नूरी पशुओं का बाल झड़ता है । ना पक्षियों का कभी पंख गिरता है । वहां सभी प्रेम में मग्न होकर आनंदपूर्वक रहते हैं ।

नया पुराना इन जिमी, कबू ना होए पैदास ।
इनों को हक इशक बिना, और ना रहे कबू आस ॥९१॥

उस परमधाम में कभी कोई वस्तु न नयी (नये गुणधर्म की) बनती है, ना ही पुरानी होती है । (परमधाम के गुणों के अनुरूप कोई वस्तु वहां उपलब्ध हो सकती है किंतु इस पंचभौतिक जगत के समान पैदा करना या बनाना नहीं पड़ता है, परमधाम पूर्णात्पूर्ण है, वहां किसी भी वस्तु की कमी नहीं है। बनाना वहां पड़ता है, जहां कमी हो। वहां तो संकल्प मात्र से सारी इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं) । वहां सभी के हृदय में एक प्रियतम परब्रह्म के प्रेम के अतिरिक्त अन्य कोई आशा नहीं होती है ।

जिमी चेतन सब एक रस, जोत हीरा प्रकाश ।
एक जरा तिन जिमी का, ताकी जोत न माए आकाश ।।९२।।

वहां की नूरमयी धरती चेतन व सर्वत्र एकरस है । वहां सर्वत्र नूरमयी एक ही हीरे का प्रकाश जगमगाता है । परमधाम की दिव्य भूमिका के एक कण का भी प्रकाश आसमां में समा नहीं पाता है ।

तो तिन जिमी के दरखत, कैसो होसी नूर ।
सो तो कह्यो ना जावहीं, तो क्यूं कहु खिलौने ज़हूर ।।९३।।

तो फिर वहां के वृक्षों में कैसी दिव्यता होगी ? वह भी वर्णन नहीं हो सकता, तो फिर वहां के पशु-पक्षियों (सखियों के खिलौनों) की शोभा, तेज का किस प्रकार वर्णन करें ?

मोहोल मंदिर कैसे हैं, है कैसी रोशनी तिन में ।
एह तो कह्यो न जावहीं, क्यूं कहूं सिनगार भूखन इन से ।।९४।।

और वहां के महल-मंदिर कैसे हैं ? उनमें कैसा नूरी प्रकाश है ? जब यही वर्णन नहीं हो सकता, तो फिर स्वरूपों के श्रृंगार व आभूषणों की शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

ए तो हक दिल माफक, एह तो सुपन आकार ।
क्यूं इन जुबां केहे सको, सब जानत परवरदिगार ।।९५।।

वह दिव्य परमधाम तो प्रियतम अक्षरातीत के हृदय के अनुसार शोभायमान है, और यह मायावी तन तो स्वाप्निक है । इस जिह्वा से उस अखण्ड परमधाम की शोभा का वर्णन करना कैसे सम्भव है ? उसे प्रियतम श्रीराजजी ही अच्छे से जानते हैं ।

अब तुम सुनो मोमिनो, कहूं घर तुमारा श्री धाम ।
इस वास्ते जाहेर करों, तुमारे होए पूरन मनोरथ काम ।।९६।।

अब सुंदरसाथ जी, आप ध्यानपूर्वक सुनिये, आपके निजघर श्री परमधाम की शोभा कहने जा रहा हूं। उसका ज्ञान इस संसार में इसलिये प्रकट किया जा रहा है, ताकि आपकी मनोकामना पूर्ण हो सके । (खेल की इच्छा से निवृत्त होकर श्री राजजी के प्रेम में डूबकर शीघ्र परमधाम में जागृत हो सकें) ।

महामत कहे ए मोमिनो, तुम देखो अपना बिलास ।
तुम को हक इशक बिना, और ना चाहिए आश ।।९७।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आप अपने निजघर के अखण्ड सुखों का ध्यान करो । आपके हृदय में प्रियतम श्री राज जी के प्रेम के बिना अन्य कोई आशा (चाहना) नहीं होनी चाहिए ।

प्रकरण ७८ चौपाई २९११

चांदनी चौक से पार घाट ताई

इस प्रकरण में रंगमहल के मुख्यद्वार से लेकर सात घाट तक की संपूर्ण शोभा का मनोहारी वर्णन किया गया है, ताकि ब्रह्म सृष्टि अपने निज वतन परमधाम की शोभा को अपने धाम हृदय में बसा सके ।

श्रीधाम द्वार से लेए के, देख्या पाट घाट सनमुख ।
इन जुबां क्यूं कर कहूं, इन पाट घाट के सुख ।।१।।

श्री रंगमहल के मुख्य दरवाजे से लेकर सामने (पूर्व में) पाट घाट तक की शोभा को मैंने देखा । इस झूठी जिह्वा से पाट घाट के अखण्ड सुखों को किस प्रकार कहूं ?

पेहेले श्री धाम से चले, कही नव भोम दसमी आकाशी ।
एह बका भोम चेतन का, सो कह्यो न जाए प्रकाश ।।२।।

सर्व प्रथम श्री रंगमहल से शुरू करके नौ भोम दसवीं आकाशी (छत) की शोभा का वर्णन किया है । यह अखण्ड परमधाम की दिव्य चेतन भूमिका है, जिसका दिव्य प्रकाश अवर्णनीय है ।

फेर गिरद कही श्री धाम की, अरस अज़ीम की चारों तरफ ।
ए तो जिमी काएम की, कह्यो न जाए एक हरफ ।।३।।

उसके पश्चात् रंगमहल (अर्श अज़ीम) के चारों तरफ के वनों की शोभा का वर्णन किया है । यह तो अखण्ड परमधाम की नूरमयी धरती है । उसकी शोभा का एक शब्द भी कहना सम्भव नहीं है ।

अरस आगे चांदनी चौक, कह्या बट पीपल का ठौर ।
फेर कह्या फूलबाग की, नूर बाग शोभा अति जोर ।।४।।

रंगमहल के मुख्य द्वार के सामने (पूर्व में) स्थित चांदनी चौक की शोभा का और रंगमहल के दक्षिण दिशा में स्थित बट-पीपल की चौकी की शोभा का वर्णन किया है । फिर पश्चिम दिशा में स्थित फूलबाग व नूरबाग का वर्णन किया है, जिनकी शोभा अपरम्पार है ।

अन्न वन और दूब का, और आगे मैदान ।
फेर लाल चबूतरा, चारों कोने चार चेहेबच्चे पेहेचान ।।५।।

फुलबाग के पश्चिम में अन्नवन व दूब दुलीचा है और उसके भी पश्चिम में पश्चिम की चौगान (रेती का मैदान) है । रंगमहल के उत्तर दिशा में लाल चबूतरा है और रंगमहल के चारों कोने में चार १६ हांस के चेहेबच्चे शोभायमान हैं ।

दूसरी भोम का चेहेबच्चा, जोड़े दस हांस ताड़वन ।
लाल चबूतरे मुकाबिल, बड़ा वन रोशन ।।६।।

रंगमहल की दूजी भोम में जो चेहेबच्चा (खड़ोकली का कुण्ड) विद्यमान है, उसके सामने रंगमहल की उत्तर दिशा में (ईशान कोण से लगकर) १० हांस में ताडवन शोभायमान है । इसके पश्चिम में शेष ४० हांस में लाल चबूतरे के सामने बड़ोवन शोभायमान है ।

तिन आगे मधुवन कह्या, आगे महावन विस्तार ।
लगा आए पुखराज को, सो जानत परवरदिगार ।।७।।

बड़ोवन की उत्तर दिशा में मधुवन है, उसके भी आगे बहुत ऊंचे महावन के वृक्ष शोभायमान हैं, जो पुखराज पहाड़ से लगे हुए हैं । उनकी वास्तविक शोभा तो प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

आठो पेड़ पुखराज के, तले उपर रोशन ।
मैदान हवेलिया चार हार, ए सब कही आगे मोमिन ।।८।।

पुखराज पहाड़ के आठों पेड़ (पांच आधार स्तम्भ रूप महल, दो घाटी की सीढ़ियां और एक पुखराजी ताल) नीचे से लेकर ऊपर तक नूरमयी रोशनी से जगमगा रहे हैं । पुखराज की चांदनी व हजार हांस के महलों में आयी चार

हार हवेलियां- इन सबकी शोभा आप ब्रह्मात्माओं के समक्ष कही है

कहे मोहोल आसमानी, एक सौ आठ गुरज ।
अड़तालीस और कहे, रहे मोमिन दिल गरज ।।९।।

उसके पश्चात् पुखराज के आकाशी महल की शोभा का वर्णन किया है, जिसमें १०८ गुर्ज शोभायमान हैं । साथ ही ४८ त्रिपोलियों के गुर्ज भी कहे हैं, जिनकी शोभा देखने की चाहना ब्रह्मात्माओं के दिल में रहती है ।

आगे पड़े पहाड़ी पर ताल, और कहे मोहोल चार ।
मोहोलात चारों गुरज बीच, सोले चादरें करे बिहार ।।१०।।

उसके पूर्व में पहाड़ के ऊपर तालाब (पुखराजी ताल) है । उसके पश्चात् दहलानों के चारों कोनों पर आये चार गुर्जो (महलों) का वर्णन हुआ है, जिनके आगे चार छज्जों से १६ धारायें ४८० भोम नीचे अधबीच के कुण्ड में गिरती हैं । यहां श्री राजश्यामाजी एवं सखियां लीला विहार करते हैं ।

कुंड की चारों मोहोलात, तले अड़तालीस बंगले हार ।
तेईस सौ चार जमा कही, मूल जमुना कुंड विस्तार ।।११।।

फिर अधबीच के कुण्ड की चारों दिशा में आये खास महलों का वर्णन हुआ और ४८ बंगलों की ४८ हारों का वर्णन हुआ, जिनकी कुल संख्या २३०४ है। उसके पश्चात् मूल कुण्ड व यमूना जी का विस्तृत वर्णन किया ।

इहां से जमुना पटी चली, आगे खुली चली नूर ।
मरोर खाए हिंडोले चले, पुल क्यूं कर कहूं जहूर ।।१२।।

मूल कुण्ड से प्रकट होने के बाद यमूना जी कुछ दूरी तक ढपी हुयी आगे बढ़ती हैं । मोड़ तक की आधी दूरी के बाद नूरमयी यमूना जी पर छत नहीं है (खुली यमूना जी) । ईशान कोण में आकर यमूना जी दक्षिण दिशा में मुड़ जाती हैं । मोड़ पर चारों कोनों में चार महल हैं, जिनके मध्य महराबों में हिण्डोले हैं । यहां से लेकर केल पुल तक यमूना जी के दोनों तरफ पाल पर महल व हिण्डोले शोभायमान हैं । केल पुल की शोभा किस प्रकार कहूं ?

कहा घाट केल का, और लिबोई का कहा वन ।
आगे कह्या अनार का, सो झलकत नूर रोशन ।।१३।।

उसके पश्चात् केले के घाट का वर्णन किया और नीम्बू वन की शोभा

का वर्णन किया । तत्पश्चात् अनार वन का वर्णन किया । जिनकी नूरमयी किरणें चारों तरफ झलकार कर रही हैं ।

और कह्या पाट घाट का, कहूं जाबू वन विस्तार ।
याद करो तुम मोमिनो, अपना नित बिहार ॥१४॥

इसके पश्चात् पाट घाट की शोभा का वर्णन किया, और जाम्बू वन का विस्तार बताया । हे सुंदरसाथ जी, अपने निज आनंद को, लीला विहार के सुखों को याद कीजिये ।

महामत कहे ए मोमिनो, सुनियो चित दे तुम ।
एह तुम को देखावत, हक सुभान का हुकम ॥१५॥

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आप चित्त देकर ध्यानपूर्वक सुनिये । यह आपको श्री राज जी का आदेश ही दिखा (बता) रहा है।

प्रकरण ७९ चौपाई २९२६

जाम्बू घाट

इस प्रकरण में जांबू घाट का विस्तृत वर्णन है । जांबू घाट और यमुना जी में श्री राजश्यामा जी और सखियां किस प्रकार लीला विहार करते हैं ? यमुना जी के उज्ज्वल और सुगंधित जल में झीलना की लीला के अखंड सुख श्रीराज जी अपनी ब्रह्म अँगनाओं को किस प्रकार देते हैं ? उसकी मनोहर झाँकी प्रस्तुत की गई है ।

अब कहूं जाम्बू घाट की, रहे किनारे जमुना त्रट ।
बीच नारंगी आवेगी, तिन आगे आवेगा बट ॥१॥

अब जाम्बू घाट की शोभा कहूंगा, जो यमूना जी के किनारे तट पर स्थित है । इसके पश्चात् (दक्षिण में) नारंगी घाट आयेगा, उसके भी आगे (दक्षिण में) बट घाट विद्यमान है।

किनारा जमुनाजीअ का, रतन जडित दोनों किनार ।
दोए चबूतरे दोए बाजू, बराबर है विस्तार ॥२॥

यमूना जी का दोनों किनारा (जल रौंस) रत्नजड़ित है । उसके बाहरी

तरफ (यमूना जी के दोनों ओर) कमर भर ऊंचा पाल (चबूतरा) समान रूप से आया है ।

एक चबूतरा तले जल के, कमर लों जा के जल ।
ए मोमिन दिल में आवहीं, जहां ईमान उजल ।।३।।

तथा एक चबूतरा (जल चबूतरा) यमूना जी के जल के अंदर (दोनों ओर किनार पर) आया है, जिस पर कमर भर गहरा पानी होता है । जिनका ईमान (विश्वास) पवित्र होता है, उन ब्रह्मात्माओं के दिलों में ही यह शोभा आती है ।

उतर पगथिआ रौंसे, आइए इन चबूतर ।
एह जोत जवेर नूर के, कहूं मोमिनों के खातर ।।४।।

जल रौंस से तीन सीढ़ी उतरकर इस जल चबूतरे पर आईये । यहां के नूरमयी जवाहरातों की दिव्य ज्योति का वर्णन ब्रह्मात्माओं के वास्ते करूंगी ।

चल्या आया केल पुल से, चबूतरे किनारे पर ।
तहां पांच हार दरखतों की, पांच भोम उपरा उपर ।।५।।

यमूना जी के दोनो तरफ पाल पर केल पुल से लेकर बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारें बराबर आयी हैं, जिनकी एक के ऊपर एक पांच भोमें शोभायमान हैं ।

चली आई छुटक देहुरियां, हीरे जोत प्रकाश ।
उन पांचों हारों के दरम्यान, जाकी जोत न माए आकाश ।।६।।

यमूना जी के दोनों तरफ सातों घाटों की संधि में जल रौंस पर छूटक द्योहरियां आयीं हैं । हीरे के समान जगमगाती उनकी नूरमयी ज्योति इतनी अधिक है, कि आकाश में नहीं समा पाती है ।

एह चबूतरा हीरे का, आगे पगथिया जुगत जड़ाव ।
ए दरखत नूर जवेर ज्यों, सो कह्या न जाए भाव ।।७।।

यह चबूतरा (पाल) नूरमयी हीरे का है, जिसके सामने रत्नजड़ित सीढ़ियां जल रौंस पर उतरी हैं । पाल पर आये बड़ोवन के नूरमयी वृक्ष जवाहरातों के समान जगमगा रहे हैं, उनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

नीर खीर जल उज्जल, बेहेकत अति खुसबोए ।
वन दरखत पात बेहेकत, ए शोभित किनारे जोए ।।८।।

यमूना जी का जल दूध से भी उज्जवल है, और अपार सुगंधि से महक रहा है । वनों के वृक्ष, पत्ते भी सुगंध फैला रहे हैं । इस प्रकार यमूना जी का किनारा शोभायमान है ।

एह घाट पांचमा जाम्बू का, साम सामी डारी लगी आए ।
तहां बन्या मेहेराब द्वार ज्यों, इत भोम पर भोम देखाए ।।९।।

यह जाम्बू घाट, केल घाट की तरफ से पांचवा घाट है । इनके वृक्षों की डालियां आमने-सामने से आकर सुंदर महराबी द्वार के रूप में आपस में मिली हैं, जिनकी भोम के ऊपर भोम शोभायमान हैं ।

चौक चल्या चार दरखतों, ताकी बनी दोरी बंध हार ।
द्वार चारों तरफों ए वन के, इत बने मेहेराबी द्वार ।।१०।।

बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारों के मध्य चौकों की चार हारें एक सीध में चली हैं । वृक्षों की महराबें (महराबी द्वार) चारों तरफ बनी हैं ।

तीन हार दरम्यान में, दरखत दोए किनारों पर ।
ए पांचों हार चली गई, ए सुख इत कहूं क्यूं कर ।।११।।

वृक्षों की पांच हारों में से तीन हारें मध्य में एवं दो हारें पाल की दोनो किनार पर आये हैं । इस प्रकार वृक्षों की पांचो हारों की शोभा व सुख किस प्रकार कहूं ?

हक हादी रूहें रमे इन वन में, संग रूहें लेत सुख ।
चढ़ चबूतरे ऊपर, जब बातें करें सनमुख ।।१२।।

श्री राजश्यामा जी एवं सखियां यहां वनों में अनेक प्रकार से रमण करते हैं। सखियां अनेक प्रकार से खेलती हुई आनंद लेती हैं । चबूतरे (पाल) पर चढ़कर श्री राज जी के सम्मुख (मुख के सामने) आकर अनेक प्रकार से प्रेम भरी मीठी बातें करती हैं ।

पगथियां इन चबूतरे, तरफ दोनों जान ।
एक तरफ जमुना के, एक वन की तरफ पेहेचान ।।१३।।

इस चबूतरे (पाल) से दोनों तरफ ३-३ सीढ़ियां उतरी हैं । एक यमूना

जी के तरफ और दूसरी वनों की तरफ (बाहरी तरफ) जानों ।

रूहें रमे संग राज के, इन घाटों के दरम्यान ।
करें जमुना में झीलना, आए बातें करें ले मान ।।१४।।

इन घाटों के अंदर सखियां श्रीराजजी के साथ अनेक प्रकार से हांस-विलास करती हैं । यमूना जी में झीलना करती हैं, और श्री राज जी के समक्ष आकर इश्क के मद में (हुज्जत के साथ) बातें करती हैं ।

प्रवेश करे सब जल में, हक हादी के संग ।
कोई पगथियां रे उतरत, खड़ी हादी रूहें हक की अरधांग ।।१५।।

इस समय सब सखियां श्री राज श्यामा जी के साथ जल में प्रवेश करती है, कोई सखी उनके साथ सीढ़ियां उतरती हैं । श्री राजजी के साथ उनकी अर्धांगिनी स्वरूपा ब्रह्मप्रियाएं एवं श्यामा जी खड़ी रहती हैं ।

रूहे कूदे वन से इत, जल जमुना दरम्यान ।
कोउ दोए जोड़े मिल, कूदत लग आसमान ।।१६।।

सखियां वनों की भोमों में चढ़कर यमूना जी के जल में छलांग लगाती हैं । कभी दो सखियां साथ मिलकर आसमान (बहुत-उंचाई से, बड़ोवन की छठी चांदनी) से कूदती हैं ।

कोई उपर चबूतरे, मिल के बांधत होड़ ।
दौड़ के कूदे जल में, दोउ हाथो हाथ जोड़ ।।१७।।

कोई सखी चबूतरे (पाल) पर आपस में मिलकर होड़ लगाकर दौड़ती हैं और एक दूसरे का हाथ पकड़कर दौड़ते हुए यमूना जी के जल में कूद जाती हैं ।

कोई आई संग राज के, सो खड़ी चबूतरे पर ।
किनारे हार ठाढ़ी रहे, कोई पैरत जल भीतर ।।१८।।

कोई सखी श्री राज जी के साथ आकर चबूतरे (पाल) पर वृक्षों की किनारे की हार के पास खड़ी हो जाती है । कोई सखी जल के अंदर जाकर तैरने लगती है ।

कोई दरखतों उपर, ठाढ़ी कूदने को करे सोर ।
एक दूजी को बोलावत, यूं रमत है ठौर ठौर ।।१९।।

कोई सखी वृक्षों के ऊपर (के भोमों में) चढ़कर यमूना जी में कूदने के लिये तैयार खड़ी है और कूदने के लिये शोर कर रही है, इस प्रकार सखियां एक–दूसरे को बुला रही हैं और जगह-जगह अनेक प्रकार से रमण कर रही हैं।

कोई विचार करत है, ले चली दूजी हाथ ।
चढ़े दरखत पर कूदते, जोड़ के दोनों हाथ ॥२०॥

कोई सखी विचार करने लगती है, फिर दूसरी सखी का हाथ पकड़कर खींच ले चलती है । फिर वृक्षों के ऊपर चढ़कर दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़कर एक साथ यमूना जी में कूद पड़ती हैं ।

एक लगी जल छांटने, दूजी के सनमुख ।
सामे छांटे तिन को, हक देखत दोऊ के मुख ॥२१॥

यमूना जी के अंदर एक सखी दूसरे को सामने से जल छिटकने लगती है, फिर सामने वाली सखी भी उसे जल छिटकने लगती है । श्री राज जी दोनों सखियों का मुख देख कर मुस्कुराने लगते हैं ।

हक हादी रूहों संग, जब पैरत जल दरम्यान ।
इत रमन जल छिटकत, सुख लेवे संग सुभान ॥२२॥

जब श्री राजश्यामा जी सखियों के साथ पानी के अंदर तैरते हैं, तो खेलते हुए एक दूसरे पर जल छिटकते हैं , इस प्रकार सखियां श्री राज जी के साथ अनेक प्रकार से सुख लेती हैं ।

इन समे रमन को, अघावत न कोए ।
क्यूं ए ना निकसे तिन से, अति सुख रमन का होए ॥२३॥

इस समय खेलते हुए कोई भी सखी तृप्त नहीं होती है (कोई भी थकती नहीं है) । कोई भी जल से बाहर निकलती नहीं है (निकलना नहीं चाहती है), क्योंकि यमूना जी में खेलने में अत्यधिक सुख प्राप्त होता है ।

इन समे हक सो रूहें, बातां करे सनमुख ।
कोई नूरजमाल का, देख रही है इत मुख ॥२४॥

इस समय श्री राज जी सखियों के सम्मुख आकर उनसे अनेक प्रकार से प्रेम भरी बातें करते हैं । कोई सखी इस समय श्री राज जी का सुंदर मुखारविंद देख रही होती है ।

कोई आगे ले चली, संग हादी रूहें हक ।
रमती देखें रूहों को, सब भरी जोर इशक ।।२५।।

कोई सखी श्री राज श्यामा जी व सखियां को साथ लेकर आगे चले जाती है, श्री राज जी, इश्क के रस में डूबी सभी सखियों को खेलते हुए देखते हैं।

जब हक हादी पीछे फिरें, संग रूहें फिरी धाए ।
आए खड़ी ऊपर चबूतरे, कोई चढ़ी पगथियां जाए ।।२६।।

जब श्री राज श्यामा जी जल से बाहर निकलते हैं तो उनके साथ सभी सखियां भी तेजी से तैरते हुए बाहर निकल जाती हैं, और पाल पर आकर खड़ी हो जाती हैं । कोई सखी सीढ़ियां चढ़ने लगती है।

चार चार सखी पेहेले, सिनगार किया ततखिन ।
हक हादी आए चबूतरे, आए घेर लिया सखी तिन ।।२७।।

४-४ (कुल ८) सखियां पहले जल्दी से श्रृंगार कर लेती हैं । फिर जैसे ही श्री राज जी व श्यामा जी पाल पर आते हैं, तब तुरंत ही उन्हें वे सखियां घेर कर खड़ी हो जाती हैं ।

समे इत सिनगार का, एक पेहेरावत हादी हक ।
उत उमंग है तिन में, रहे इशक हक माफक ।।२८।।

यह श्रृंगार का समय है, ४ सखियां श्री राज जी को तथा ४ सखियां श्री श्यामा जी को श्रृंगार कराती हैं । सखियों में अत्यंत उत्साह भरा होता है । उनके अंदर इश्क भी श्री राज जी के अनुरूप ही होता है ।

इत लगी बातां करने, कोई आए खड़ी हक सनमुख ।
कोई सिनगार करत हैं, कोई निरखे नूर जमाल का मुख ।।२९।।

यहां कोई सखी श्री राजजी से बातें करने लगती है, तो कोई सखी श्री राजजी के समक्ष आकर खड़ी हो जाती है । कोई सखी श्रृंगार कर रही है, तो कोई सखी दिव्य प्रेममयी स्वरूप वाले प्रियतम अक्षरातीत का मुखारविंद निहार रही होती है ।

एक दूजी को मिल के, करावत सिनगार ।
कोई जल से ना निकसे, कोई बोलावत कर पुकार ।।३०।।

कुछ सखियां मिलकर एक दूसरे को श्रृंगार करा रही हैं । कुछ सखियां तो अभी भी जल से बाहर नहीं निकल रही हैं । कोई सखी उन्हें पुकार कर बाहर बुला रही है ।

यूं रमन इन समे का, देखो जमुना जोए किनार ।
हक हादी संग रूहें, कई रमते करें बिहार ।।३१।।

इस प्रकार इस समय यमूना जी के किनार पर होने वाली लीला को देखिये । श्री राज श्यामा जी के साथ प्रियायें अनेक प्रकार से खेलते हुए रमण करती हैं ।

कई सुख इन झीलन में, कई सुख रमते इन वन ।
कई सुख बस्तर पेहेनन में, सब झलकत नूर रोशन ।।३२।।

यहां कई प्रकार के सुख झीलना के हैं, और कई सुख वनों में खेलने के हैं । कई सुख नूरमयी वस्त्राभूषण पहनने के हैं, जिनकी नूरमयी किरणें चारों ओर जगमगा रही होती हैं ।

सब सिनगार कर ठाढी रहें, आया समे सिनगार का जब ।
इत वन सब शोभा लेत हैं, हुआ बखत देखन का तब ।।३३।।

सभी सखियां श्रृंगार के समय सजकर जब खड़ी हो जाती हैं, तब इस वन की शोभा अदभूत व देखने योग्य हो जाती है ।

सुक्षम सरूप अंग उनमद, नख सिख लों सरूप नूर ।
अंग अंग छब छाजत, क्यूं कहू समे जोत जहूर ।।३४।।

सखियों का स्वरूप सूक्ष्म (त्रिगुणातीत) व मस्ती से भरा है । चरणों के नख से लेकर सिर तक नूर ही नूर से परिपूर्ण स्वरूप है । अंगों की छबि अत्यंत मनमोहक है । इस समय के दिव्य प्रकाश का किस प्रकार वर्णन करें ?

भोम किरना शोभित, फल फूल पात दरखत ।
झलकत जोत जवेर ज्यूं, सो भी ए कह्यो न जाए बखत ।।३५।।

यहां वनों की धरती की नूरमयी किरणें जगमगा रही हैं । वृक्षों के फल-फूल व पत्तों की ज्योति जवाहरात के समान झलकार कर रही है। इस समय की शोभा का वर्णन सम्भव नहीं है ।

जोत झलकत इन बस्तर की, और भूखन सिनगार ।
किरना लरे आसमान में, सो जाने सुख परवरदिगार ।।३६।।

सखियों के वस्त्राभूषणों की दिव्य ज्योति चारों तरफ जगमगा रही होती है । उनकी नूरमयी रंगबिरंगी किरणें आकाश में जाकर आपस में जंग करती प्रतीत होती हैं । इन अलौकिक सुखों को मात्र प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

ए वन घाट जाम्बू का, नारंगी अमृत दरम्यान ।
पांच सौ मंदिर मुकाबिल, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।३७।।

यह वन जाम्बू घाट का है, जो नारंगी घाट व पाट (अमृत) घाट के मध्य में विद्यमान है । यह रंगमहल के ५०० मंदिरों की सीध में है, जिसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती है ।

ए दरखत भोम पांच लों, दोए भोम धाम आगे दरखत ।
दोए सौ पचास गिनती, कोने पे कह्या चेहबच्चा इत ।।३८।।

यहां पाल पर विद्यमान बड़ोवन के वृक्ष ५ भोम ऊंचे हैं, जबकि रंगमहल के पूर्व में विद्यमान जाम्बू वन के वृक्ष दो भोम ऊंचे हैं । जिनके (चौड़ाई में) एक पंक्ति में २५० वृक्ष हैं। यहां रंगमहल के अग्नि कोण में (तथा जाम्बू वन के नैऋत्य कोण में) १६ हांस का चेहेबच्चा आया है ।

इत सुख बिलास कई भांत के, इन जागा कई रमने के विवेक ।
क्यूं कहूं सुपन आकार से, ए तो लेखे बाहिर अनेक ।।३९।।

यहां अनेक प्रकार के सुख-विलास के साधन हैं । अनेक प्रकार के रमण करने के स्थान हैं । उसे इस स्वाप्निक देह से किस प्रकार कहूं ? वह तो वर्णन से परे है ।

महामत कहे ए मोमिनों, कह्या जाम्बू का घाट ।
अब कहूं नारंगी घाट की, जो नूर रोशन है ठाट ।।४०।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी । यह जाम्बू घाट का वर्णन किया है । अब नारंगी घाट की शोभा कहूंगा, जो नूरमयी रोशनी लिये विद्यमान है ।

प्रकरण ८० चौपाई २९६६

नारंगी घाट

इस प्रकरण में नारंगी घाट का वर्णन है। यह उस अद्वैत भूमि का वर्णन है जहाँ एक पत्ता भी कभी गिरता नहीं है और ना ही कभी पक्षी का पंख ही गिरता है । जहाँ के एक कण के तेज के आगे करोड़ों सूर्य छिप जाते हैं । ऐसे नूरमयी, चेतन प्रकाशमान औऱ सुगंधी से भरपूर अलौकिक घाट का वर्णन हो रहा है । इस घाट में ब्रह्मप्रियाएं, श्रीराज-श्यामा जी के साथ झीलने का अलौकिक सुख लेती है । इन अखंड सुखों की मनोहार झाँकी प्रस्तुत हुई है ।

अब घाट नारंगी देखियो, कहूं आगे मोमिन ।
बका भोम चेतन की, जागा सबों रोशन ।।१।।

अब नारंगी घाट की शोभा देखिये । ब्रह्मात्माओं के लिये उसका वर्णन कर रही हूं । यह अखण्ड परमधाम की चेतन भूमिका है । यहां सभी स्थान जगमगाते हुए नूरमयी रोशनी से युक्त हैं ।

एक पात ना गिरे वन का, ना गिरे पंखी का पर ।
ना नया पुराना होवै, अपार सचराचर ।।२।।

यहां के वृक्षों का एक पत्ता भी कभी गिरता नहीं है । ना ही कभी किसी पक्षी का पंख गिरता है । यहां ना कोई वस्तु नयी (नये गुणधर्म की) बनती है, ना ही पुरानी होती है । यहां चर-अचर (स्थिर-चलायमान) समस्त वस्तुएं अनंत हैं।

छेह ना जिमी वाहेदत का, ना पशु पंखी का पार ।
इन अखंड भोम चेतन का, किन ना खोल्या द्वार ।।३।।

परमधाम की स्वलीला अद्वैत भूमिका का कोई अंत (सीमा) नहीं है, ना ही यहां के पशु-पक्षियों का कोई पारावार (संख्या) है । इस अखण्ड सच्चिदानंद परमधाम के अखण्ड सुखों का द्वार आज दिन तक किसी ने भी नहीं खोला है ।

केहेना वेद वचन से, जाको नाम निगम ।
तिन अपने मुख यूं कह्या, हम पोहोंचत ना लग आतम ।।४।।

जिनका नाम निगम कहा गया है, उन वेदों के वचनों से परमधाम का वर्णन कैसे सम्भव है ? ऋचाओं ने अपने मुख से कह दिया कि हम आत्मा (सबलिक ब्रह्म) तक भी नहीं पहुंच सकते हैं ।

ताके परे परआतमा, जासो कहिए अद्वैत ।
तहां सब क्यूं पोहोंचही, केहेना जिमीय बीच द्वैत ।।५।।

आत्मा से परे परात्मा है, जिसे अद्वैत स्वरूप कहा गया है । वहां दुनिया के जीव किस प्रकार पहुंच सकते हैं ? उसका वर्णन इस द्वैत जगत के अंदर करना है ।

अक्षर लों सबद ना पोहोंचत, ए तो अक्षरातीत की ठौर ।
सो इन जिमी केहेने को, कोई नहीं समरथ और ।।६।।

अक्षर ब्रह्म तक भी उनके शब्द नहीं पहुंच पा रहे हैं, तो यह तो अक्षरातीत का दिव्य ब्रह्मपुर धाम है । उसका वर्णन करने में इस संसार में कोई भी सक्षम नहीं है ।

इत ब्रह्म सृष्ट पोहोंचे, जो है ब्रह्म समान ।
तिन के अद्वैत ठौर की, केहेना है आसान ।।७।।

यहां मात्र ब्रह्मसृष्टियां ही पहुंच पाते हैं, जिनका स्वरूप ब्रह्म के समान होता है । उनके लिये अपने अद्वैत परमधाम का वर्णन करना सरल है ।

जिनके वास्ते पैदा करी ए जो सकल जहान ।
खेल खावंद जो त्रैगुन, एह नाहीं तिन को पेहेचान ।।८।।

उन्हीं ब्रह्ममुनियों के लिये इस सम्पूर्ण जगत की रचना की गई है । इस संसार रूपी खेल के स्वामी त्रिदेवा को भी परमधाम की पहचान नहीं है ।

तो और नाम किन के लेऊं इन ऊपर लिए न जाए ।
अखंड को पावे नहीं, ए तो जिमी पैदाश ।।९।।

त्रिदेवों के पश्चात् और किनका नाम लूं ? उनसे श्रेष्ठ जब कोई है ही नहीं। इसलिये अन्य किसी का नाम लेने की आवशयकता नहीं है । वे अखण्ड परमधाम को नहीं प्राप्त कर सकते क्योंकि वे इस स्वाप्निक जगत की सृष्टि हैं ।

इत पोहोंचे एक मोमिन, जिन का अरस अजीम है ठौर ।
सोई बातें करें बका की, सो समझ ना सके कोई और ।।१०।।

जिन ब्रह्मात्माओं का वह निज घर है, वे ही उस दिव्य परमधाम में पहुंच सकते हैं । वे ही वहां की बातें करते हैं, और उनके सिवाय अन्य कोई उसे समझ भी नहीं सकता है ।

ए तो अरस अजीम के, खोले बका के द्वार ।
सिफाएत महंमद की, पाया दीदार परवरदिगार ।।११।।

यह तो सर्वोपरि परमधाम के अखण्ड सुखों का दरवाजा (तारतम ज्ञान के द्वारा) खोला है । मुहम्मद (हकी सूरत) की सिफायत (अनुशंसा से तारतम ज्ञान पाकर) मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) ने हक तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) का दीदार पाया ।

म्याराज हुआ मोमिनों पर, देख्या तिनों घर धाम ।
महंमद अलेह सलाम ने, दिया बका बिसराम ।।१२।।

मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) पर मेअराज (ध्यान द्वारा परमधाम जाना) हुआ और उन्होंने दिव्य परमधाम का साक्षात्कार किया । मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने हकी सूरत के रूप में उन्हें अखण्ड परमधाम का आनंद दिया ।

जो कहूं हौज कौसर की, किनारा जुगत जड़ाव ।
चोतरा किनारे जोए के, सो कह्यो न जाए मुख भाव ।।१३।।

यदि हौजकौसर ताल के विषय में कहूं, कि इसका किनारा युक्तिपूर्वक रत्नों से जड़ा हुआ है। यदि यमूना जी के किनारे पाल (चबूतरे) की शोभा का वर्णन करूं, तो उसका भी वर्णन इस मुख से नहीं हो सकता है ।

नेक कहूं वास्ते मोमिन के, घाट नूर नारंग ।
पांच हार दरखत की, कई जोत जवेरों उठे तरंग ।।१४।।

फिर भी ब्रह्मात्माओं के लिये नूरमयी नारंगी घाट की शोभा का थोड़ा वर्णन करूंगा। पाल पर बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारें विद्यमान हैं, जिनसे जवाहरातों के समान तेजोमयी किरणें तरंगित हो रही हैं ।

भोम पांच इन की कही, छठी चांदनी नूर ।
जाए मिली बट घाट को, किया दूजा तरफ जांबू जहूर ।।१५।।

इन वृक्षों की नूरमयी पांच भोम व छठी चांदनी कही गयी है । ये दक्षिण में जाकर बट घाट से मिल गयी हैं । दूसरी तरफ (उत्तर) में जाम्बू के वृक्ष जगमगा रहे हैं।

तीसरी कुंज वन को पोहोंची, बट पीपल चौथे मुकाबिल ।
ए चारों तरफ तुम को कही, तुम देखो दिल निरमल ।।१६।।

नारंगी वन ५०० मंदिर की चौड़ाई में यमूना जी के पाल से लेकर पश्चिम में बट-पीपल की चौकी तक गया है । नारंगी वन के दक्षिण में कुंज-निकुंज वनों की शोभा है । इस प्रकार नारंगी वन के चारों तरफ की शोभा का वर्णन किया है, उसे पवित्र हृदय से देखिये ।

बट पीपल के पांच दरखत, नारंगी के दोए सौ पचास ।
ऐसी तरह तरफ जमुना के, रहे मोमिन दिल विश्वास ।।१७।।

बट-पीपल के पांच वृक्षों (पांच बगीचों) के सामने नारंगी वन के २५० वृक्ष शोभायमान हैं । इसी प्रकार यमूना जी की तरफ भी पाल पर बड़ोवन के वृक्षों के मध्य नारंगी वन के दो भोम ऊंचे वृक्ष आये हैं । इसके प्रति ब्रह्मात्माओं के दिलों में विश्वास रहता है ।

ए नारंगी के दोए भोम, तीन भोम और दरखत ।
यूं पांच भोम उपरा उपर, छठ्ठी चांदनी कही जित ।।१८।।

इस नारंगी वन के वृक्षों की दो भोम तीसरी चांदनी आयी है, और यमूना जी के पाल पर आये बड़ोवन के वृक्षों की एक के ऊपर एक पांच भोम व छठी चांदनी आयी है ।

इत चार हार फल की कही, तले सात सात की कांगरी ।
ए पीलक लिए रंग लाल है, ए देखत सुखकारी ।।१९।।

यमूना जी के ऊपर इनकी डालियों में फलों की चार पंक्तियां बनी हुयी हैं, जिसके नीचे ७-७ फलों की कांगरी बनी है । फल लालिमा से युक्त पीलापन लिये हुए हैं, जिसे देखकर अत्यंत आनंद प्राप्त होता है ।

किनारा दोरी बंध, तरफ जमुना शोभाए ।
छात चंद्रवा ज्यूं शोभित, तले पुल शोभा लटकाए ।।२०।।

यमूना जी के किनारे डालियों की शोभा पंक्तिबद्ध है । डालियों, फूलों, फलों व पत्तों की छत चंदवा के समान सुशोभित है, जो पुल के समान लटकते हुए शोभित हो रहे हैं ।

इन दरखतों बेली चढ़ी, मानों जड़ाव जुगत ।
अन्दर रस्ते चेहेबच्चे, चौकड़ी पड़ी आए जित ।।२१।।

इन वृक्षों में बेल-लताएं चढ़ी हुयी हैं । ऐसा लगता है कि मानों युक्ति

पूर्वक रत्न जड़े हुए हों । उनके अंदर अनेकों गलियां व उनकी चौकड़ी में चेहेबच्चे बने हुए हैं ।

इत हक हादी रूहें, रमन को आवें जब ।
इन समें सुखपाल सबों, इन घाट उतरत तब ॥२२॥

जब श्री राजश्यामा जी और सखियाँ यहाँ रमण करने के लिए आते हैं, तो इस समय सभी सुखपाल इस घाट में उतरते हैं ।

असवारी मरजाद में, होत खड़ी इन ठौर ।
जुदी जुदी मिसल ठाढ़ी रहे, बिन मोमिन ना देखे और ॥२३॥

उस समय अनेकों प्रजाति के पशु–पक्षी यहाँ अलग–अलग समूहों में अपनी-अपनी मर्यादा में खड़े होते हैं। यहाँ की अद्‌भुत शोभा ब्रह्म सृष्टियों के अतिरिक्त कोई और नहीं देख सकता है ।

हक हादी रूहें रमें, इन वन दरम्यान ।
फल नारंगी लटकत, जो झलकत नूर पेहेचान ॥२४॥

इन वनों के बीच श्री राजश्यामा जी और सखियाँ रमण करते हैं । नारंगी वन के फल लटकते हुए दिखाई देते हैं, जिनकी झलकार से परमधाम के नूर तत्त्व की पहचान हो जाती है।

किरना वन जिमीय की, करत जोत प्रकाश ।
जब लड़त है आप में, मावत जोत ना आकाश ॥२५॥

वन की धरती की नूरमयी किरणें प्रकाशमान हो रही हैं । जब रंगबिरंगी किरणें आपस में टकराती हैं, तो उसकी ज्योति आकाश में नहीं समा पाती है ।

सरूप फिरते वन में, रूहें संग हादी हक
बस्तर भूखन झलकत, सब भरे अंग इश्क ॥२६॥

इन वनों के मध्य श्री राज श्यामा जी व सखियों के स्वरूप भ्रमण करते हुए दिख रहे हैं । उनके वस्त्राभूषण नूरमयी झलकार कर रहे हैं । सबके अंग अंग इश्क से परिपूर्ण हैं ।

कोई हक सों बातां करे, आगे आए सनमुख ।
हक जवाब दे तिन को, क्यूं कहू जुबाए सुख ॥२७॥

जब कोई सखी श्री राज जी के आगे, सम्मुख आकर उनसे प्रेम भरी

बातें करती है, तब श्री राज जी भी प्रेमपूर्वक जवाब देते हैं, उस सुख के विषय में क्या कहें ?

कई रमे संग राज के, कोई रमे रूहों सों वन ।
किरना जोत जवेर की, सब झलकत नूर रोशन ॥२८॥

कई सखियां श्री राज जी के साथ विचरण कर रही हैं । कोई सखी अन्य सखियों के साथ वनों में खेल रही है । वृक्षों की नूरमयी ज्योति जवाहरात के समान झलकार कर रही है । उनकी किरणों से चारों तरफ रंगबिरंगा प्रकाश ही प्रकाश दिखायी देता है ।

वन में रमती रूहन को, जब देखत हक सुभान ।
अंग अंग न मावत उमंग, रहे मोमिन दिल पेहेचान ॥२९॥

वन में सखियों को खेलते हुए जब श्री राज जी देखते हैं, तब ब्रह्मप्रियाओं के अंग अंग उमंग से भर जाते हैं । इसकी पहचान मात्र इन प्रियाओं के दिलों में होती है ।

कोई कूद चढ़े वन पर, कोई डारो डार फिरत ।
कोई रबदी रमें राज सों, कोई हादी संग रहेत ॥३०॥

कोई सखी कूद कर वृक्षों के ऊपर चढ़ जाती है, तो कोई ऊपर चढ़कर एक डाली से दूसरी डाली, दूसरी से तीसरी डाली पर घूमती रहती है । कोई सखी हुज्जत पूर्वक श्री राजजी के साथ रमण कर रही है । कोई सखी श्री श्यामा जी के साथ आनंद में रहती है ।

कोई अपने खेल की, आए बातां करत बनाए ।
कोई जीत बतावत अपनी, हक हादी ताए सराए ॥३१॥

कोई सखी श्री राजजी के पास आकर अपने खेल की बातें बताती है, कि किस प्रकार वह खेल में जीत गयी । तब श्री राज श्यामा जी उसकी सराहना करते हैं ।

कोई खिलौने खेलावत, वन में जुदे जुदे ठौर ।
आए बातां करे बनाए के, कोई बीच बात डारत आए और ॥३२॥

कोई सखी वन में विभिन्न स्थानों में पशु-पक्षियों को खेल खेलाती है, कोई सखी श्री राजजी से नयी नयी बातें करती है, तो कोई सखी बीच में आकर

दूसरी ही बात करने लगती है ।

कोई हंसत है हक सों, रसना रहे सवाद ।
कोई श्रवन देत हैं, मोमिन जाने बुनियाद ।।३३।।

कोई सखी श्री राज जी के साथ हंसते हुए प्रेम पूर्वक बातें कर रही है । उसे धाम धणी के साथ प्रेम भरी बातें करने में ही आनंद आता है । कोई सखी सामने खड़े होकर उनकी बातें सुनती है । ब्रह्मात्माएं ही इन बातों को जानती हैं ।

इत कई रामत करे वन में, जाकी गिनती नाहीं सुमार ।
ए तो अखण्ड ठौर को, कह्यो जाए ना सुख बिहार ।।३४।।

यहां वनों में सखियां अनेक प्रकार से खेल-रामतें करती हैं, जिनकी कोई गिनती नहीं है । यह तो अखण्ड परमधाम के सुख विहार हैं, जिनके विषय में अधिक कहना सम्भव नहीं है ।

इत छः घड़ी लों रमे, इन नूर भोम ठौर वन ।
ऊपर चढ़े चबूतरे, झलकत नूर रोशन ।।३५।।

इस प्रकार नूरमयी नारंगी घाट की वृक्षों व पाल पर छः घड़ी (सायं ५-१५ बजे) तक रमण करते हैं । तत्पश्चात् (झीलना हेतु) चबूतरे (पाल) पर चढ़ते हैं, तब नूरमयी रोशनी झलकार करती है ।

अंग उमंगी आवत, चलत लटकनी चाल ।
झीलन की अंग अंग में, मन में रहे खुसाल ।।३६।।

सखियां अंग में उमंग भरकर लटकनी मटकनी चाल चलते हुए आती हैं । उनके अंग-अंग में झीलना करने के लिये अत्यंत उत्साह और मन में प्रसन्नता भरी होती है ।

आए ठाढ़ी किनार पर, इन वन दरम्यान ।
कोई उतरत पगथियां रे चबूतरे, तहां ठाढ़ी रहे सुजान ।।३७।।

सखियां यमूना जी के किनार पर वृक्षों की अंतिम पंक्ति के मध्य खड़ी हो जाती हैं । कोई सखी पाल से सीढ़ियां उतरने लगती है। कोई चतुर सखी वहां खड़े रहती है ।

जब हक हादी उतरत, इन पगथियां रे तब ।
सैंया सब रमन को, उतरत जल में तब ।।३८।।

जब श्री राज श्यामा जी सीढ़ियों से नीचे उतरते हैं, तब सभी सखियां जल विहार करने के लिये यमूना जी में उतरती हैं ।

कोई कूदत ऊपर से, जल में पड़त धाए ।
एक दूजी को बोलावत, दे रमने जुगत बनाए ।।३९।।

कोई ऊपर वृक्षों की भोमों से छलांग लगाती है और दौड़ते हुए जल में गिर जाती है । कुछ सखियां एक दूसरे को युक्ति पूर्वक खेलने के लिये बुलाती हैं।

कोई हाथ जोड़ के, मिल जल में कूदत जो आए ।
हक हादी रूहें देखत, ठाढ़े सराहत सोए ।।४०।।

कुछ सखियां एक दूसरे से हाथ मिलाकर दौड़ते हुए एक साथ यमूना जी के जल में कूदती हैं । उसे देखकर पास खड़े श्री राज श्यामा जी व अन्य सखियां सराहना करते हैं ।

देखो इन का कूदना, इन में जूदी ना हुई कोए ।
एकै ठौर दोउ पड़ी, सराहत इन का सोए ।।४१।।

उनका कूदना देखिये, कूदने के पश्चात भी वे अलग नहीं हुई । और गिरी भी दोनों एक ही जगह। इस प्रकार सब इनकी प्रशंसा करते हैं ।

कोई पैरत जल में, चली जात है दूर ।
कोई पीछे इन के चले, कोई रहे ठाढी करी मजकूर ।।४२।।

कोई सखी जल में तैरते हुए बहुत दूर चली जाती है । कोई सखी उसके पीछे चलने लगती है । कोई सखी खड़े होकर बातें कर रही है ।

कोई हक को बोलावत, रमती रूहें सब ।
हक हंसत है तिन पर, इत कोई सुख पावे तब ।।४३।।

कोई सखी श्री राज जी को रामत करने के लिये बुलाती हैं कि सभी सखियां किस प्रकार रामतें कर रही हैं । उन्हें देखकर धामधणी हंसने लगते हैं । उन्हें देखकर कोई सखी पुनः आनंदित हो जाती है ।

इत काहूं को स्वाद रमन की, कोई देखत ताए नैंन ।
कोई ठाढ़ी हक हादी संग, कोई सुनत मुख मीठे बैन ।।४४।।

यहां किसी सखी को खेलने में आनंद आता है, तो कोई सखी उन्हें नैनों से देखकर सुख पाती है । कोई सखी श्री राज श्यामा जी के साथ में खड़ी है, तो कोई उनके मुखारविंद से प्रेम भरी मीठी बातें सुनती है ।

कई जल छांटत रस में, फेर साम सामी जुदे जुदे होए ।
होत हांसी अति बड़ी, हक हादी शामिल भए सोए ।।४५।।

कुछ सखियां अत्यंत आनंदित होकर अलग अलग समूहों में आमने-सामने से एक दूसरे पर जल छिड़कने लगती हैं । इस प्रकार बहुत हंसी होती है । फिर श्री राज श्यामा जी भी सखियों के इस जलयुद्ध में शामिल हो जाते हैं ।

तहां रामत रस में चढ़ी, जल छोड़त उछलत आसमान ।
कई सैंया तरफ राज के, और ठकुरानी जी तरफ सो जान ।।४६।।

इस प्रकार यहां खेल में आनंद-उत्साह बढ़ जाता है । सभी एक दूसरे पर जल छिड़कते हैं, तो ऐसा लगता है मानो जल आकाश तक उछल रहा हैं । कुछ सखियां श्रीराजजी की तरफ हो जाती हैं और कुछ सखियां श्री श्यामा जी की तरफ हो जाती हैं ।

लिए कई सुख बिलास कई भांत के, लिए जल क्रीड़ा संग हक ।
राजी किए राज को, रूहें अंग भरी इशक ।।४७।।

इस प्रकार यहां श्रीराजजी के साथ सखियां अनेक प्रकार से जल क्रीड़ा के द्वारा हांस-विलास का सुख लेती हैं और श्री राज जी को प्रसन्न कर देती हैं । सखियों के अंग अंग में इश्क भरा हुआ है ।

निकसी जल थे सखियां, तुरंत किया सिनगार ।
हक हादी जब निकसे, तब हुई सब तैयार ।।४८।।

तत्पश्चात् जल से निकलकर कुछ सखियां तुरंत श्रृंगार करती हैं । जब श्री राज श्यामा जी जल से बाहर निकलते हैं, उसके पहले ही सब तैयार हो जाती हैं ।

कोई सिनगार करावत, ठाढ़ी हक सनमुख ।
कोई ठकुराणी जी को, क्यूं कहूं जुबा ए सुख ।।४९।।

कोई सखी श्री राज जी के सम्मुख खड़े होकर उन्हें श्रृंगार कराती है । कोई सखी श्री श्यामा जी को श्रृंगार कराती है । उस सुख का वर्णन इस जिह्वा से

किस प्रकार करें ?

सिनगार कर ठाढ़े रहें, हादी रूहें सब साथ ।
कोई हक के जोड़े, कोई चले पकड़ के हाथ ।।५०।।

इस प्रकार श्रृंगार सजकर सखियां श्री राज श्यामा जी के साथ खड़ी हो जाती हैं । कोई सखी श्री राज जी के साथ उनका हाथ पकड़कर चलने लगती है ।

आए सुखपल रूजू भए, हक हादी बैठे एक सुखपाल ।
रूहें जोड़े एक में बैठत, मन में अति खुसाल ।।५१।।

इस समय संध्या के ६ बज जाते हैं, तब सभी सुखपाल हाजिर हो जाते हैं । एक सुखपाल में श्री राज श्यामा जी बैठते हैं, तथा अन्य सुखपालों में दो-दो सखियां साथ में बैठती हैं । सभी के मन में प्रसन्नता भरी हुई है ।

महामत कहे ए मोमिनो, ए बीतक तुमारी ठौर ।
भी कहूं आगे बट घाट की, सुख भांत भांत के और ।।५२।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह आपके निजघर की बीती बातें हैं । अब आगे बट घाट की शोभा कहूंगा, जहां अनेक प्रकार के और भी बहुत सारे सुख विद्यमान हैं ।

प्रकरण ८१ चौपाई ३०१८

बट घाट

इस प्रकरण में बट घाट की शोभा का मनोहारी वर्णन है ।

जहां भोम अद्वेत है, चेतन आतम रूप ।
सुन्दरता इन ठौर की, शोभा अमान अनूप ।।१।।

परमधाम की स्वलीला अद्वैत भूमिका में प्रत्येक वस्तु चेतन तथा आत्मस्वरूप है । यहां की सुंदरता, शोभा अनंत व उपमा से रहित है ।

द्वेत जुबां अद्वेत की, केहेनी आवे ना जुबांन ।
शब्दातीत को शबद में, कोई सके ना कर पेहेचान ।।२।।

इस द्वैत जगत की झूठी जिह्वा अद्वैत परमधाम की शोभा का वर्णन

करने में असमर्थ है । उस शब्दातीत परमधाम की शोभा को शब्दों में वर्णन करना व पहचानना सम्भव नहीं होता है ।

जुबां थकी बीच द्वेत के, केहेनी अद्वैत ठौर के पार ।
अक्षर अक्षरातीत को, कहेनो नित विहार ।।३।।

यहां की जिह्वा द्वैत का वर्णन करने में ही थक गई है, और यहाँ तो अद्वैत बेहद मण्डल से भी परे स्वलीला अद्वैत परमधाम का वर्णन करना है । अक्षर ब्रह्म व अक्षरातीत परब्रह्म की लीला नित्य विहार का वर्णन करना है ।

ले मन जुबां बुध इंद्रियां, केहेनी वाहेदत ठौर ।
सो तो एहल इलाही बिना, केहे ना सके कोई और ।।४।।

इस माया के मन, जुबां, बुद्धि व इंद्रियों की सहायता से स्वलीला अद्वैत (वहदत) परमधाम की शोभा का वर्णन करना है । वह तो परमात्मा की अंगरूपा ब्रह्मसृष्टियों के सिवा अन्य कोई कह ही नहीं सकता है ।

जिन की असल अरस में, रहे हक हजूर आकार ।
वह गिरो मोमिन की, इनका साकी परवरदिगार ।।५।।

जिनके मूल तन परमधाम मूल मिलावे में प्रियतम अक्षरातीत के चरणों में विराजमान हैं, वे ही मोमिन गिरोह (ब्रह्मात्माएं) हैं, जिन्हें प्यार करने वाले (साकी) स्वयं प्रियतम अक्षरातीत हैं ।

तो अरस कह्या दिल मोमिन, जिन में हक न्यामत ।
सो बीतक कही अपनी, आया उठने का बखत ।।६।।

इसी कारण तो ब्रह्मात्माओं के दिल को खुदा का अर्श कहा गया है, जिसमें श्री राजजी की सारी न्यामतें होती हैं । इस कारण वे स्वयं ही अपने परमधाम की लीला को जाहिर कर रहे हैं, क्योंकि अब परमधाम में जागृत होने का समय आ गया है ।

करी साएत को काएम, जब मिले गिरो मोमिन ।
अरस इलाही खजाना, खरच होत उपर इनों के तन ।।७।।

परमधाम की इस महान घड़ी को अखण्ड कर दिया है, जिसमें ब्रह्मात्माए जागृत होकर आपस में मिल रही हैं । परमधाम का तारतम ज्ञान रूपी इलाही (ईश्वरीय-खुदायी) खजाना उन मोमिनों पर खर्च हो रहा है (उन्हें प्रदान किया जा रहा है)।

तो बारीकियां अरस की, आवत इत नजर ।
तीसरे तकरार की, हुई इत फजर ।।८।।

इसी कारण परमधाम की छोटी सी छोटी शोभा व लीला का यहां दर्शन (वर्णन) हो रहा है । इस प्रकार महिमामयी रात्रि के तीसरे भाग में (इस जागनी ब्रह्माण्ड में) ब्रह्मज्ञान रूपी सवेरा हो गया है ।

करी हिदायत इनों की, नजीक अपने हक सुभान ।
फिराए अरस गलियों मिने, हुई सब पेहेचान ।।९।।

प्रियतम अक्षरातीत ने अपने नजदीक विराजमान उन ब्रह्मप्रियाओं को हिदायत (सिखापन) दी है, उन्हें तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम की नूरमयी गलियों में विचरण करा रहे हैं। उन्हें परमधाम के जर्रे–जर्रे की पहचान हो गयी है।

ईसा मेहेदी महंमद, ए तीनों मिले जब ।
सिफाएत मोमिनों की, हुई इन जिमी में तब ।।१०।।

ईसा रूहअल्लाह, इमाम महदी व मुहम्मद - ये तीनों स्वरूप जब हकी सूरत (महामति जी) के रूप में मिल गये, तब इस संसार में मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की सिफायत हुयी, अर्थात् उन्हें तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ ।

तो कही हौज कौसर को, ए सातों घाट नूर ।
तामें बट के घाट की, क्यूं कहूं शोभा जहूर ।।११।।

इसी कारण हौज कौसर ताल तथा नूरमयी सातों घाटों की शोभा का वर्णन हुआ है । उसमें से बट के घाट की शोभा व सुंदरता का किस प्रकार वर्णन करें ?

घाट बट का अति सोहना, ऊंचा लगा आसमान ।
आया पुल चांदनी बराबर, वन चांदनी बराबर पेहेचान ।।१२।।

बट का घाट अति सुहावना है, जो आसमां तक ऊंचा दिखायी दे रहा है । इसकी ऊंचाई बट पुल की चांदनी (५ भोम छठी चांदनी) के बराबर है, तथा बड़ोवन की छठी चांदनी के भी बराबर है ।

चढ़ता चढ़ देहुरी ज्यों, चार हार बड़वाई गृदवाए ।
पेड़ पांचमां दरम्यान में, ए शोभा सुखदाए ।।१३।।

यह घाट द्योहरी के समान ऊंचा चढ़ा है। इसके चारों तरफ बड़वाइयों की चार हारें (स्तम्भों के रूप में) शोभायमान हैं । इनके मध्य में बट के वृक्ष का तना पांचवे स्तम्भ के रूप में शोभायमान है, जो अत्यंत आनंददायी है।

एह चबूतरे के किनारे, मिने हिंडोले भोम दोए ।
याकी डारी जल पर लटकी, बिन मोमिन न पावे कोए ॥१४॥

इस बट के वृक्ष किनार पर दो भोमों में हिण्डोले आये हैं । उसकी डालियां यमूना जी के जल के ऊपर (जल चबूतरे तक) लटक रही हैं, जिसकी शोभा ब्रह्मात्माओं के सिवा अन्य कोई नहीं पा सकता है । (बट का चबूतरा पाल एवं वन की रौंस पर ५०० मंदिर लम्बे-चौड़े चबूतरे पर बना है । पाल तो २५० मंदिर का चौड़ा है और २५० मंदिर की जगह वन की रौंस की है । जिस कारण बट के वृक्ष का तना दोनों के मध्य में अर्थात् पाल की किनार पर आया है) ।

बट चबूतरे किनारे, और चार हार ऊपर ।
भए पांचो हार मुकाबिल, देखे जमा होत खातर ॥१५॥

बट का वृक्ष पाल के पश्चिमी किनार पर आया है, जिसकी बड़वाईयों की चार हारें पाल पर आयी हैं । ये पांचों हारें, बड़ोवन की पांचों हारों की सीध में शोभायमान हैं ।

एक डारी तरफ जमुना, दूजी तरफ नारंग ।
तीसरी तरफ कुंज वन के, चौथी तरफ पुल लगी उठे तरंग ॥१६॥

बट के वृक्ष की डालियां एक यमूना जी की तरफ आयी हैं, दूसरी (उत्तर में) नारंगी वन की तरफ आयी हैं । तीसरी कुंज वन की तरफ (पश्चिम में) आयी हैं और चौथी (दक्षिण में) बट पुल के छज्जे से लग कर आयी हैं । इन डालियों की रंगबिरंगी किरणें तरंगों के समान निकल रही हैं ।

छज्जे बड़े बड़े और पुल के, आए डारी झलूबी इत ।
भोम पांचो बराबर, ए कही न जाए जुगत ॥१७॥

बट पुल के छज्जे बड़े-बड़े (५० मंदिर के) हैं, जिससे लगकर बट के वृक्ष की डालियां झूल रही हैं । इस प्रकार बट के पुल व बट के वृक्ष के पांचों भोम बराबर ऊंचे व आपस में मिले हुए हैं । इस युक्ति का वर्णन नहीं किया जा सकता है ।

ए पत्र फूल फल नूर के, डारी नूर विस्तार ।
मिने हिंडोले नूर के, हक हादी करें बिहार ॥१८॥

वृक्षों के पत्ते, फल, फूल व फल नूर के ही हैं, डालियां भी नूर का ही विस्तार हैं । इनमें लटकने वाले हिण्डोले भी नूर के ही हैं, यहां श्रीराज श्यामा जी व सखियां लीला विहार करते हैं ।

ए बट ऊंचा देहुर ज्यों, चौड़ा है दरम्यान ।
बड़वाई तरफ थंभ नूर ज्यों, इत शोभा अति अमान ॥१९॥

एक ही बट का वृक्ष द्योहरी के समान काफी ऊंचा और चौड़ा है । उसकी बड़वाई, नूरमयी स्तम्भों के समान जगमगा रही है, जिनकी शोभा अनंत है।

जब आवत असवारी, उतरत हैं इन घाट ।
खिलौने खड़े रहत हैं, दोरी बंध एक ठाट ॥२०॥

जब श्री राज श्यामा जी और सखियों की सवारी आती है, तो सुखपाल इस घाट में उतरते हैं । उस समय सभी पशु-पक्षी पंक्तिबद्ध रूप से एक तरफ (मर्यादा में) खड़े रहते हैं ।

सब सुखपालें उतरती, घेर के एक ठौर ।
जहां उतरी सुखपाल हक की, गृद फिरवली और ॥२१॥

जहां श्री राज श्यामा जी का सुखपाल उतरता है, वहीं उनके सुखपाल को घेरकर सभी सुखपाल एक जगह उतरते हैं ।

जब उतरीं इन सुखपाल से, इत चलत लटकनी चाल ।
रूहें शोभा देख के, होत हैं अति खुसाल ॥२२॥

जब सखियां सुखपालों से उतरती हैं, तो श्रीराजजी की लटकनी-मटकनी चाल और शोभा को देखकर अत्यंत प्रसन्न होती हैं ।

वय किशोर अति सुन्दर, झलकत भूखन संग ।
बस्तर अंग को लग रहे, कई लेहेरा उठत तरंग ॥२३॥

श्री राज जी का स्वरूप किशोर अवस्था का अत्यंत सुंदर है । उनके अंगों में विराजमान आभूषण जगमगा रहे हैं । वस्त्र उनके अंगों से लगे हुए (फिट) हैं, जिनसे रंगबिरंगी किरणों के कई लहरें तरंगित हो रही है ।

एह शोभा एह सिनगार, हक के दिल माफक ।
सो केहेनी सुपन आकार से, क्यूं कर भागे शक ॥२४॥

यह शोभा-सुंदरता और यह श्रृंगार श्री राज जी के दिल के अनुसार है । उसका वर्णन स्वाप्निक देह से करने पर किस प्रकार संशय दूर हो सकता है ?

बिन मोमिन इन ठौर को, देख ना सके कोए ।
हक हादी रमन को, इनों को अनुभव होए ॥२५॥

ब्रह्मात्माओं के सिवा दिव्य परमधाम को अन्य कोई नहीं देख सकता है । श्रीराज श्यामा जी के साथ रमण करने का मात्र उन्हें ही अनुभव होता है ।

कोई चढ़ी वन डारियों, कोई खेले तले बट ।
कोई बट डारी चढ़े, कोई खेलें जमुना तट ॥२६॥

इस समय कोई सखी वनों की डालियों में चढ़कर खेलने लगती है । कोई सखी बट के वृक्ष के नीचे चबूतरे पर खेलती है । कोई बट की डालियां पकड़ कर ऊपर चढ़ जाती है, तो कोई यमूना जी के किनारे तट (जल रौंस) पर खेलती है ।

कोई हिंडोले हींचत, बट डारी चढ़ी जाए ।
कोई ऊंचे चढ़त हैं, टेरत औरों बुलाए ॥२७॥

कोई सखी हिण्डोलों में चढ़कर झूल रही है, तो कोई सखी जाकर बट की डालियों में चढ़ जाती है । कोई सखी सबसे ऊपर (चांदनी में) चढ़ जाती है और उंगली से इशारा करते हुए अन्य सखियों को बुलाती है ।

सखी हींचत फिरती बट पर, भोम भोम गृदवाए ।
हक हादी सामिल है, ए सुख क्यूं कर आवें जुबांए ॥२८॥

सखियां बट के वृक्षों की विभिन्न भोमों में भ्रमण करते हुए जगह-जगह हिण्डोलों में झूल रही हैं । उनके साथ श्री राज श्यामा जी भी शामिल हैं । इस सुख का माया की जिह्वा से वर्णन सम्भव नहीं है ।

कई बिलास इन ठौर में, किए हक सनमुख ।
कोई नूर जमाल का, निरखत नैनों सुख ॥२९॥

इस बट घाट में श्रीराज श्यामा जी के साथ हम आत्माओं ने अनेक प्रकार के हांस-विलास किये हैं । इस समय कोई सखी प्रियतम अक्षरातीत के

दिव्य तेजोमयी स्वरूप को देखकर आनंद प्राप्त कर रही है ।

इत खेल छे घड़ी लों, उठे हक सुभान ।
हादी रूहें संग भई, करें बातें चतुर सुजान ।।३०।।

इस प्रकार यहां छः घड़ी तक (२-१५ घण्टे-सायं ५-१५ बजे तक) खेलते हैं, फिर श्रीराजजी झीलना के लिये उठते हैं । श्री श्यामा जी व सखियां भी उनके साथ हो जाती हैं और चतुराई व समझदारी से बातें करती हैं ।

भया समे झीलन का, दई आग्या तब हक ।
अंग उमंगी दौडियां, भरियां अंग इशक ।।३१।।

यमूना जी में झीलना करने का समय हो जाता है । जब श्री राज जी सखियों को झीलने की आज्ञा दे देते हैं, तब अंग में उमंग लेकर सखियां दौड़ने लगती हैं । उनके अंग अंग में इश्क भरा होता है ।

कोई बट डारी से कूदत, पड़त जल दरम्यान ।
दूजी तिन के पीछे, मन में कर के ध्यान ।।३२।।

कोई सखी बट की डालियों (भोमों) से कूद कर यमूना जी के जल में गिरती है । उसके पीछे दूसरी सखी मन में कई प्रकार से खेलने का चिंतन करके कूदने लगती है ।

हक हादी उतरे जब, इन पगथियों पर ।
रहे केतिक रूहें संग, खड़ी हुई ऊपर चबूतर ।।३३।।

श्री राज श्यामा जी जब जल रौंस से जल चबूतरे पर सीढ़ियों से उतरते हैं, तब कई सखियां उनके साथ में रहती हैं, और जल चबूतरे पर खड़ी हो जाती हैं ।

तहां जल कमर लों, देखत तमासा जोर ।
रूहें रमती जल मध्य, शोभित हैं ठौर ठौर ।।३४।।

जल चबूतरे पर कमर तक पानी रहता है । यहां खड़े होकर सखियों का खेल देखने लगती हैं । सखियां पानी के मध्य अनेक प्रकार से जगह-जगह रमण करती हुअी शोभायमान हैं ।

कोई ऊंची चढ़े बट पर, कूदत जल दरम्यान ।
कोई तिन के पीछे पडे, इने लगत आसान ।।३५।।

कोई बट के ऊपर के भोमों में चढ़कर पानी के अंदर छलांग लगाती है, तो कोई उसके पीछे पीछे भागती हुई कूद जाती है । इनके लिये इस प्रकार कूदना आसान होता है ।

कोई पैरत जल में, कोई धाए के जावे दूर ।
कोई हक हजूर में, करने लगे मजकूर ॥३६॥

कोई सखी जल में तैर रही है, तो कोई सखी तेजी से तैरते हुए दूर चली जाती है । तो कोई सखी श्री राज जी के साथ खड़ी है और प्रेम पूर्वक बातें कर रही है ।

कोई बतावत और को, देखो पैरत क्यूं कर ।
कोई धाए के पोहोचत, कोई खैंचत बांह पकड़ ॥३७॥

कोई सखी दूसरी सखी को बताती है कि, देखो ! वह कैसे तैर रही है । कोई सखी दौड़ती हुयी (तेजी से) आकर अन्य सखी की बाहें पकड़कर उसे खींच ले जाती है ।

कोई जल उछालत, कोई चबूतरे जाए ।
जल सुगन्ध शीतल, अतंत है सुखदाए ॥३८॥

कोई सखी जल उछाल रही है, तो कोई सखी चबूतरे (पाल) पर जाती है । यमूना जी का जल अत्यंत सुगंधित, शीतल व अत्यंत सुखदायी है ।

इत जल क्रीड़ा करते, अघावत ना कोए ।
कोई जल में जुध करत हैं, इत हार न मानत दोए ॥३९॥

इस प्रकार यहां जल क्रीडा करते हुए कोई भी तृप्त नहीं होता है । कुछ सखियां जल में युद्ध कर रही हैं, एक-दूसरे पर पानी छिड़क रहे हैं । दोनों में से कोई भी हार नहीं मानता है ।

जब हक हादी पैरत, इन रूहों दरम्यान ।
रमते देखिए जल में, ए दोनों चतुर सुजान ॥४०॥

जब सखियों के मध्य श्री राजश्यामा जी भी तैरते हैं, तब युगल स्वरूप बहुत ही चतुरता व समझदारी पूर्वक जल में तैरते हुए दिखायी देते हैं ।

क्या कहूं सुख झीलन को, जो लिए हक के संग ।
दोऊ साम सामे छिटकत, श्री धाम धनी अरधांग ॥४१॥

झीलना के इन सुखों का किस प्रकार वर्णन करूं, जो श्री राजजी के साथ हम प्राप्त करते हैं ? धाम धणी की अर्धांगिनी दोनों सखियां आमने-सामने से एक दूसरे पर जल छिड़कती हैं ।

झीलन एक घड़ीय लों, लिए वन में कई बिलास ।
इन रूहों के दिल में, रहे हक रिझावन की आश ।।४२।।

एक घड़ी (साढ़े २२ मिनट) तक हम झीलना का आनंद लेते हैं । इस प्रकार हम वनों में अनेक प्रकार से हांस-विलास करते हैं । धाम लीला में खेल ने वाली इन सखियों के दिल में श्री राजजी को रिझाने की ही एकमात्र चाहना रहती है।

केतिक निकसी बाहिर, सिताब किया सिनगार ।
हक हादी की खिजमत को, हम करावें सिनगार भरतार ।।४३।।

कुछ सखियां यमूना जी से जल्दी बाहर निकल जाती हैं और शीघ्रता से श्रृंगार कर लेती हैं । इनके दिल में भाव रहता है कि प्राण प्रियतम श्री राज श्यामा जी जैसे ही जल से बाहर निकलें तो उनको हम श्रृंगार करायें ।

जब हक हादी निकसे, चढ़ पगथी आए ऊपर ।
तब ए आए ठाढ़ी रहे, सिनगार की खातर ।।४४।।

जब श्री राजश्यामा जी जल से बाहर निकलते हैं, और सीढ़ियां चढ़कर ऊपर जल रौंस पर आ जाते हैं, तब वे सखियां पहले से उनका श्रृंगार करने के लिये तैयार खड़ी रहती हैं ।

जब सिनगार करावत, तब पावत अति सुख ।
बातां करे बनाए के, रहे खड़ी सनमुख ।।४५।।

जब सखियां युगल स्वरूप को श्रृंगार कराती हैं, तब उन्हें अति आनंद प्राप्त होता है । सखियां उनके सम्मुख ही खड़ी रहती हैं । श्री राजजी उनसे प्रेमपूर्वक कई प्रकार की बातें करते हैं ।

एक दूजी को करावत, इन समें सिनगार ।
इन समें को जो सुख, सो जानत परवरदिगार ।।४६।।

इस समय अन्य सखियां एक-दूसरे को श्रृंगार कराती हैं । इस समय जो सुख प्राप्त होता है, उसे मात्र प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

सब सिनगार कर ठाढ़ी रहे, जब लागत कदमों हक ।
शोभा इन समें वन की, सो देखो समें माफक ।।४७।।

सभी सखियां श्रृंगार करके आकर श्री राज जी के चरणों में प्रणाम करती हैं, तत्पश्चात् उनके सम्मुख खड़ी हो जाती हैं । इस समय वन की शोभा अद्‌भूत दिखायी देती है ।

शोभा वन जिमी की, हुआ समें संझा को जब ।
साड़ी रंग जुदी जुदी, शोभा देखी चाहिए तब ।।४८।।

जब संध्या का समय होता है, तब वन की धरती की शोभा देखने योग्य होती है । सभी सखियां अलग-अलग रंगों की साड़ियां पहनी हुई हैं । उनकी जगमगाती हुई शोभा को देखिये ।

किरना अंग सरूप की, शोभा अंग अंग भूखन ।
साम सामी जंग होत है, झलकत नूर रोशन ।।४९।।

सखियों के अंग अंग से निकल रही तेजोमयी किरणों की शोभा, उनके अंगों में विराजमान आभूषणों की शोभा अद्‌भुत दिखायी देती है । उनसे निकलने वाली रंगबिरंगी किरणें आपस में टकराती हुई जंग करती प्रतीत होती हैं । चारों तरफ नूरमयी रोशनी जगमगाती हुई दिखायी देती है ।

आए सुखपाल ठाढी रहे, सब रूजू होए अपने ठौर ।
बैठे हक हादी एक में, सखी दो दो एक में बैठे और ।।५०।।

जब संध्या के छः बज जाते हैं, तब सभी सुखपाल सामने आकर खड़े हो जाते हैं । एक सुखपाल में श्री राज श्यामा जी विराजमान हो जाते हैं, तथा अन्य सुखपालों में दो-दो सखियां साथ में विराजमान होती हैं ।

एता से असवारी का, होएगा बरनन ।
सो तो आगे कहूंगी, सुख असवारी रोशन ।।५१।।

यहां से सुखपालों में सवार होकर जाने का बरनन आगे किया जायेगा, कि किस प्रकार हम सवारी का आनंद लेते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनो, एह कहा बट घाट ।
अब कहूं पुल की, जो जमुना उपर ठाट ।।५२।।

महामति जी कहते हैं, कि, हे सुंदरसाथ जी, यहां बट घाट की शोभा का

वर्णन किया है । अब बट पुल की शोभा कहेंगे, जो यमुना जी के ऊपर शोभायमान है ।

प्रकरण ८२ चौपाई ३०७०

पुल की हकीकत

इस प्रकरण में यमुना जी पर आए बट के पुल की शोभा का वर्णन किया गया है ताकि ब्रह्मात्माएं इस तारतम ज्ञान के माध्यम से अपनी सुरता परमधाम में ले जा सकें और चितवन के द्वारा बट पुल पर श्रीराजश्यामाजी व सखियों के साथ विहार कर निज वतन के अखंड सुखों का स्वाद लें सकें ।

अब कहूं हकीकत पुल की, साम सामी दोए ठौर ।
दरम्यान सातों घाट हैं, किनारे छुटक देहुरीयां और ।।१।।

अब बट पुल की वास्तविकता (शोभा) का वर्णन करेंगे । आमने-सामने दोनों पुल (केल पुल व बट पुल) आये हैं । इनके मध्य यमूना जी के दोनों तरफ पाल पर सातों घाट शोभायमान हैं । सातों घाटों की संधि में यमूना जी की दोनों तरफ जल रौंस पर ६-६ छूटक देहुरियां आयी हैं ।

अब सुनो तुम मोमिनों, पुल जवेर हीरे की जान ।
ताकी पांच भोम छठी चांदनी, ताकी कर देऊं पेहेचान ।।२।।

अब सुंदरसाथ जी सुनिये, पुल महल को हीरे के अंदर अनेक जवाहरातों की शोभा से युक्त समझिये । जिसकी पांच भोम छठी चांदनी विद्यमान है । उसकी पहचान कराती हूं।

है चारों तरफ बराबर, आई ऊपर जमुना भर ।
जेता पाट है जोए का, एह शोभित तिन पर ।।३।।

चारों दिशाओं में पुल की लम्बाई व चौड़ाई बराबर है । पुल सम्पूर्ण यमूनाजी के ऊपर आया है । यमुना जी की जितनी चौडाई है यह भी उतना ही लम्बा-चौड़ा है ।

तले इन के फिलपाइए, उठे जिमी से जल दरम्यान ।
अग्यारे अग्यारे की हार कही, बराबर चारों तरफ पेहेचान ।।४।।

पुल के नीचे जल की जमीन से (जल के मध्य) ११ स्तम्भों की ११ हारें शोभायमान हैं । चारों तरफ से इनकी संख्या बराबर है।

ताकी कही गिनती, एक सौ और ईकईस ।
दस घड़नाले ता बीच में, एह ठौर पाईए हक बकसीस ।।५।।

स्तम्भों की कुल संख्या १२१ होती है । स्तम्भों की ११ पंक्तियों के बीच में दस घड़नाले शोभायमान हैं । इनकी शोभा श्री राजजी की कृपा से ही समझ में आती है ।

कहूं तिन अन्दर की, दोए सौ बीस द्वार ।
दस दस दीवालों लगते, जो देखन के अलंकार ।।६।।

उन स्तम्भों के मध्य (आड़ी व खड़ी सब मिलाकर) कुल २२० द्वार (महरावें) शोभायमान हैं । इनमें से १०-१० महरावें दोनों तरफ (पूर्व-पश्चिम) की दीवालों से लगकर आयी हैं, जो अक्शी (अलंकृत) हैं ।

बाकी रहे दोए सौ, सो ए रहे दरम्यान ।
फिलपाइयों पर छात कही, फेर कर देऊं पेहेचान ।।७।।

इन २० महरावों के अतिरिक्त बाकी २०० महरावें उनके मध्य में हैं । इन स्तम्भों पर छत (पुल) है, अब पुनः उसकी पहचान कराती हूं।

दोए किनारे जमुना के, कहे जो बाजू दोए ।
चार घड़नाले ता पर, दोऊ तरफो देखियो सोए ।।८।।

स्तम्भों की ११ पंक्तियों के मध्य १० घड़नाले हैं, उनमें से यमूना जी के दोनों ओर किनार पर आये १२५-१२५ मंदिर के चौड़े जल चबूतरे पर २-२ कुल ४ घड़नाले (महरावें) आये हैं । दोनों तरफ की शोभा देखिये ।

छे घड़नाले बाकी रहे, वे उठे जल दरम्यान ।
तीन तीन फिलपाइए चबूतरे, फेर ताकी कहूं पेहेचान ।।९।।

उनके मध्य में ६ घड़नाले बचते हैं, वे (उनके स्तम्भ) जल की जमीन पर हैं । इनके अतिरिक्त स्तम्भों की ३-३ पंक्तियां दोनों तरफ जल चबूतरे पर हैं । उसकी पुनः पहचान कहती हूं ।

दो उपर चबूतरे, एक तले लगता चबूतरा ।
बाकी हर हार पांच पानी मिने, फेर कहूं मोमिन की खातर ।।१०।।

दो-दो महराबें यमूना जी की दोनों तरफ जल चबूतरे के ऊपर आयी हैं । तथा तीसरी महराब दोनों तरफ जल चबूतरे की किनार पर (एक स्तम्भ जल चबूतरे पर एवं एक स्तम्भ जमीन पर हैं) आये हैं । बाकि पांच महराबें जल चबूतरो के मध्य जल की जमीन पर आयी हैं । अब सुंदरसाथ के वास्ते पुनः पुल का वर्णन करूंगी ।

ए जो छात पेहेले कही, तिनकी तरफे चार ।
चारों तरफों द्वार पड़े, दस दस गिनती देखो सुमार ।।११।।

यह जो छत (पुल) पहले कही गयी है, उसकी चार दिशाएं हैं । चारों तरफ स्तम्भों के मध्य १०-१० महराबी द्वार (महराबें) बने हैं ।

दोए बाजू जल पर पड़ी, पडे तिन के छज्जे पर मेहेराब ।
छज्जे किनारे थम्भ कठेड़ा, लंबा चौड़ा बराबर हिसाब ।।१२।।

पुल की दो दिशाएं (उत्तर-दक्षिण) यमूना जी की तरफ हैं, जहां (५० मंदिर चौड़े) छज्जों के स्तम्भों के ऊपर महराबों की शोभा है । छज्जों की किनार पर स्तम्भों के मध्य कठेडों की शोभा है। पुल की लम्बाई व चौड़ाई बिल्कूल बराबर हैं ।

और दोए बाजू तरफ जिमीय की, तहां चबूतरे दोए ।
तापर थम्भ कठेड़ा, छात मेहेराब चली सोए ।।१३।।

तथा पुल की दो दिशाएं (पूर्व-पश्चिम) जमीन की तरफ हैं । वहां सामने दो चबूतरे (पाल) शोभायमान हैं । इन दोनों दिशाओं में भी पुल की किनार पर स्तम्भ व कठेड़े शोभायमान हैं। इसी प्रकार छत पर छत व महराबें आती गयी हैं।

इन छज्जे छज्जे फिरवलिये, पुल मोहोल गृदवाए ।
नूर जवेरों झलकत, अतंत हैं सुखदाए ।।१४।।

इस प्रकार पुल महल की किनार पर आये छज्जों में होते हुए चारों दिशाओं में घूमिये । जवाहरातों की नूरमयी किरणें चारों तरफ झलकार कर रही हैं, जिनकी शोभा अत्यंत आनंददायी है ।

यूं ही पांचो भोम लों, चढ़ते चले थम्भ द्वार ।
ऐसे ही मेहेराब कठेड़ा, करे जुगल सरूप बिहार ।।१५।।

इसी प्रकार पांचों भोम तक स्तम्भ व महराबी द्वार एक के ऊपर एक

आते गये हैं । वैसे ही महराबें व कठेड़े शोभायमान हैं, जहां युगल स्वरूप लीला विहार करते हैं ।

दोए तरफ छज्जे पानी पर, दोए तरफ पड़े वन ।
नूर जवेरों झलकत, ए जंग करे सब रोशन ॥१६॥

पुल की पांचों भोमों के छज्जे दो तरफ पानी के ऊपर आये हैं, तथा दो तरफ वनों से मिले हैं । इनके नूरमयी जवाहरात जगमगा रहे हैं । इनकी रंगबिरंगी किरणें आपस में जंग करती प्रतीत होती हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, एह बट का पुल ।
लीजो ए तुम दिल दे, देखो रूह आखें निरमल ॥१७॥

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह बट के पुल की शोभा है । इसे आप दिल में धारण कीजिये और आत्मा की पवित्र दृष्टि से देखिये ।

प्रकरण ८३ चौपाई ३०८७

पुल मोहोल अंदर

इस प्रकरण में यमूना जी पर आए बट पुल की हकीकत का वर्णन किया गया है। पुल में आए स्तम्भों, उनकी महराबो में आए नूरी हिंडोलों का एवम पुल में श्री राज श्यामा जी व सखियों की अलौकिक लीला के वर्णन के साथ-साथ श्री राज श्यामा जी की सवारी के सुखों का विस्तृत वर्णन है ।

कहूं मोहोल अन्दर के, फिलपाइए एक सौ एकईस ।
तिनके पड़े मेहेराब, ताकी जमा दोए सौ बीस ॥१॥

अब पुल महल के अंदर की शोभा का वर्णन करेंगे । पुल पर कुल १२१ स्तम्भ शोभायमान हैं, जिनके ऊपर (आड़ी-खड़ी) कुल २२० महराबें विद्यमान हैं ।

ताके हर एक भोम में, पड़े चौक सौ एक ।
ऐसे पांच भोम के पांच सौ, यूं गृदवाए देखियो नेक ॥२॥

उसकी प्रत्येक भोम में (स्तम्भों के मध्य) १००-१०० चौक आये हैं । इसी प्रकार पांचों भोम में कुल ५०० चौक होते हैं । इसी प्रकार पुल के किनारे

भी स्तम्भों व महराबों की शोभा आयी है ।

हर एक भोम नूर के, मेहेराब जवेर देखो तुम ।
दोए सौ बीस गिनती, एह दिखावत हक हुकम ।।३।।

प्रत्येक भोम नूर से भरपूर हैं । महराबों में आये जवाहरातों की जगमगाहट को देखिये । एक भोम में कुल २२० महराबें आयी हैं । यह आपको श्री राज जी का आदेश ही दिखा रहा है ।

ऐसे ही पांचो भोम के, हिंडोले अग्यारे सौ सुमार ।
जित हक हादी रूहें, नित्याने करत बिहार ।।४।।

इसी प्रकार पांचो भोमों की महराबों में कुल ११०० हिण्डाले शोभायमान हैं । जहां श्री राज श्यामा जी व सखियां नित्य प्रति प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलायें करते हैं ।

इन के पड़े जो द्वारने, अग्यारे सौ कहे सुमार ।
अग्यारे सौ पड़े हिंडोले, हक हादी रूहें झूलनहार ।।५।।

पांचों भोमों के इन स्तम्भों के मध्य ११०० महराबी द्वार बने हुए हैं, जिनमें ११०० हिण्डोले शोभायमान है, जहां श्री राज श्यामा जी व सखियां झूलने का आनंद लेते हैं ।

जो बट पीपल के हिंडोले, झूलत चौक होए एक ठौर ।
त्यूं ही हिंडोले इन के, त्यों ही पांचो भोम में और ।।६।।

जिस प्रकार बट पीपल की चौकी के हिण्डोले झूलते समय मध्य चौक में (चेहेबच्चे के ऊपर) एक साथ आ जाते हैं, उसी प्रकार पुल महल के भी पांचों भोमों के हिण्डोलों की शोभा है । (चार हिण्डोलों की ताली पड़ती है)

अब देखो एह चांदनी, बराबर चारों तरफों चावक ।
चारों तरफों कठेड़ा, जित बैठक करत हैं हक ।।७।।

अब पुल महल की चांदनी की शोभा देखिये । चांदनी चारों तरफों से बराबर समचौरस है । छत की किनार पर चारों तरफ कठेड़े की शोभा है, जहां श्री राज श्यामाजी व सखियां विराजमान होते हैं ।

इन कठेड़े के बाहर, छज्जा लटके गृदवाए ।
मोहोल अन्दर सीढ़ियां, तहां से चढ़िये धाए ।।८।।

इस कठेड़े की बाहर चारों तरफ एक छज्जा लटक रहा है । महल के अंदर (स्तम्भों में) सीढ़ियां बनी हुयी हैं, जहां से दौड़ते हुए सखियां ऊपर चढ जाती हैं ।

तिन चांदनी पर दुलीचा, ता पर सिंघासन ।
गृद कुरसियां बैठके, दिल चाहे पोहोंचे रोशन ॥९॥

पुल महल की इस छठी चांदनी में पशमी गिलम बिछी है, जिस पर नूरी सिंहासन है । सिंहासन को घेरकर बैठने के लिये कुर्सियां हैं । दिल की इच्छा के अनुसार सभी हाजिर हो जाती हैं ।

इत जुगल सरूप, आवत असवारी जब ।
रूहें हक संग आए के, झूलत हिंडोले तब ॥१०॥

बट पुल की चांदनी में जब युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी सुखपालों पर सवार होकर आते हैं, तब उनके साथ सखियां आकर हिण्डोलों में झूलने का आनंद लेती हैं ।

जब असवारी आवत, भराय रह्या आसमान ।
और न आवे नजरों, सब ठौर खिलौने जान ॥११॥

जब सुखपालों पर सवार होकर श्रीराजश्यामाजी एवं हम सखियां आते हैं, तो सारा आकाश सुखपालों व पक्षियों (खिलौनों) से भरा दिखायी देता है । उनके सिवा अन्य कुछ भी नजर नहीं आता है । सभी जगह पशु-पक्षी दिखायी देते हैं ।

सब खड़े अपनी मरजाद में, मिसल दोरी बंध किनार ।
हक हादी रूहें रिझावने, रहे एही दिल में बिचार ॥१२॥

सभी पशु-पक्षी अपनी मर्यादा में कतारबद्ध रूप से किनारे खड़े रहते हैं। उनके दिल में एकमात्र श्री राज श्यामाजी व सखियों को रिझाने का ही विचार रहता है ।

जहां उतरी सुखपालें राज की, रूहो सुखपाल उतरी घेर ।
जब पांउ मुबारक जिमी पर, लगी बात करने फेर ॥१३॥

जहां श्रीराजश्यामा जी का सुखपाल उतरता है, वहीं घेरकर सखियों के भी सुखपाल उतर जाते हैं । जब श्री राज जी अपने मंगलमयी चरण धरती पर

रखते हैं, तब सखियां उनसे पुनः प्रेम भरी बातें करने लगती हैं ।

एह पुल निकट बट घाट के, उतरे जुगल सरूप दोए ।
जुथ चालीस संग रहे, आए बातें करें संग सोए ॥१४॥

यह बट का पुल, बट के घाट के निकट है । यहां युगल स्वरूप सुखपालों से उतरते हैं, उनके साथ में ४० जुत्थ (१२,०००) सखियां रहती हैं । वे आकर धणी से प्रेमपर्वक बातें करने लगती हैं ।

चारों तरफों वन में, फैल गयो सब साथ ।
हक हादी जोड़े रहे, कोई संग पकड़ चले हाथ ॥१५॥

तुरंत ही चारों तरफ वन में सभी सखियां खेलने के लिये फैल जाती हैं । कोई सखी श्री राजश्यामा जी के साथ रहती है, और उनका हाथ पकड़कर साथ में चलती है ।

कोई चली पुल ऊपर, कोई भोम चढ़ ऊंची जाए ।
कोई चाल लटकनी चलत, हक के आगे धाए ॥१६॥

कोई सखी सीढ़ियां चढ़ते हुए पुल के ऊपर के भोमों में जाती है । कोई सखी लटकनी-मटकनी चाल चलती है । कोई सखी श्री राजजी के आगे दौड़ने लगती है ।

कोई हक को हसावत, चलत राह दरम्यान ।
काहूं ऊपर हसत, सब रहे चतुर सुजान ॥१७॥

कोई सखी मार्ग पर चलते हुए श्री राज जी को हंसा रही है, तो कोई सखी किसी अन्य पर हंस रही है । सभी सखियां चतुर व समझदार हैं ।

पांऊ भूखन बाजत, पेहेने बस्तर सिनगार ।
शोभा इनकी देख के, रिझत परवरदिगार ॥१८॥

सखियों ने जो वस्त्राभूषण धारण किये हैं, खेलते समय या चलते समय उनकी मधुर ध्वनि निकलती है । सखियों की शोभा देखकर प्रियतम श्री राज जी भी प्रसन्न हो जाते हैं ।

जब चढ़े पुल ऊपर, मन में अंग उमंग ।
बस्तर और भूखन की, कई लेहेरा उठे तरंग ॥१९॥

जब सखियां पुल के ऊपर चढ़ती हैं तो उनके मन व सभी अंगों में उमंग भरा होता है । उनके दिव्य वस्त्राभूषणों से कई नूरमयी किरणों की लहरें तरंगित होते दिखती हैं ।

शोभा इन के अंग की, कई कोट सूर छिप जाए ।
शोभा इन सुभान की, जुबां में आवत नाहिं ॥२०॥

उनके अंगों की नूरी शोभा के सामने कई करोड़ों सूर्य भी दिखायी नहीं देंगे । सखियों की मीठी जुबां (रसना) की शोभा, माया की झूठी जुबां से नहीं कही जा सकती है।

पुल हिंडोले हींचत, हक हादी बैठे एक ठौर ।
सैंया दोए दोए एकठी, झूलत हिंडोलों और ॥२१॥

जब पुल महल के हिण्डोलों में झूलते हैं, तब श्री राज श्यामा जी एक झूले में बैठते हैं तथा २-२ सखियां अन्य हिण्डोलों में साथ बैठकर झूलती हैं ।

क्या कहूं सुख रूहन के, जो झूलत हक के साथ ।
कोई झूलत हिंडोलों, मिलावत हाथों हाथ ॥२२॥

इन ब्रह्मप्रियाओं के सुख किस प्रकार कहूं, जो प्रियतम अक्षरातीत के साथ झूला झूलती हैं ? कोई सखी झूलते समय, सामने दूसरे हिण्डोले पर आती हुई सखी से हाथ मिलाती है (ताली बजाती हैं)।

झूलत भांत लेहेरा लेत है, सुख की होत झकोर ।
क्यू कहूं सुख हिंडोलन के, जो रूहें लेत ठौर ठौर ॥२३॥

हिण्डोले लहरों के समान लहराते हुए झूल रहे हैं । चारों तरफ आनंदमयी वातावरण हो जाता है । इस प्रकार हिण्डोलों के सुख किस प्रकार कहूं, जो सखियां जगह-जगह लेती हैं ?

इहां छे घड़ी लों खेलत, बाकी रह्या दिन घड़ी दोए ।
हुआ समें झीलन का, आइयां उमंग भरी सब कोए ॥२४॥

यहां छः घडी तक (३ से ५.१५ बजे तक) खेलते हैं, दिन पुरा होने में (६ बजने में) दो घड़ी (४५ मिनट) बाकि रह गया । अब झीलने का समय हो जाता है । उमंग से भरी सभी सखियां झीलने के लिये आगे आती हैं ।

मांगत रजा ए राज सों, करें झीलन का काम ।
घड़नाले पैरन की, रहे रमन की ठाम ।।२५।।

सखियां श्री राज जी से झीलना करने के लिये अनुमति मांगती हैं । सखियों के मन में पुल के नीचे घड़नालों में तैरते हुए रमण करने की इच्छा रहती है ।

कोई कूदत पुल से, आए रही बीच जल ।
लगे साथ सुगन्ध का, है जल जमुना निरमल ।।२६।।

कोई सखी पुल पर से यमुना जी पर छलांग लगाती है, और जल के अंदर पहुंच जाती है । कुछ सखियां यमूना जी के जल की सुगंधि ले रहीं हैं । यमूना जी का जल अत्यंत निर्मल है ।

उपरा उपर गिरत हैं, इन नेहेरों दरम्यान ।
चली जात पुल के तले, रूहें रहे चतुर सुजान ।।२७।।

सखियां एक के बाद एक पुल महल की भोमों से यमूना जी की नहरों में छलांग लगाती हैं, फिर तैरते हुए पुल के नीचे चली जाती हैं । इस प्रकार सभी सखियां चतुर व समझदार हैं ।

कोई हाथों हाथ मिलाए के, कुरसी में चली जाए ।
कोई पुर पीछे लिए, मिलत सामने ताए ।।२८।।

कुछ सखियां एक दूसरे के हाथों से हाथ मिलाकर पुल के नीचे चली जाती हैं, तो कुछ सखियां बहाव की विपरीत दिशा में तैरते हुए सामने से आकर मिलती हैं ।

हक हादी मरजाद में, जल में पैरत जब ।
रूहें केतिक संग रहे, करें बातें इन समें तब ।।२९।।

श्री राजश्यामा जी मर्यादा में यमूना जी में जब तैरते हैं, तब कितनी ही सखियां उनके साथ में रहती हैं और उनसे प्रेमभरी वातें करते रहती हैं ।

तले पुल के आवत, जुदी जुदी नेहेरों में दोए ।
एक पकड़े हाथ दूजी का, रहे राह बीच रेहेत सोए ।।३०।।

पुल के नीचे अलग अलग नहरों में दो सखियां आती हैं, तब उनमें से एक सखी दूसरी का हाथ पकड़ लेती है और बीच में ही रूक कर आनदं पूर्वक .

खेलने लगती हैं । (यमूना जी का जल चार धाराओं के रूप में आता है और केलपुल के नीचे आये १० घड़नालों से होकर निकलता है तो १० नहरों के रूप में विभक्त हो जाता है) ।

चक्रावें ज्यूं फिरत है, जल पुल दरम्यान ।
तहां रामत रूहें करें, सब इनो को लगे असान ।।३१।।

फिर वे सखियां पुल के नीचे ही चक्राव के समान गोल-गोल घूमने लगती हैं, और अनेक प्रकार से खेल-रामतें करने लगती हैं । यह सब इनके लिये सरल है । (परमधाम में पांच तत्व नहीं हैं, एक मात्र नूर तत्व है, इस कारण पानी के नीचे भी ऑक्सीजन की आवश्यकता नहीं होती है) ।

कोई पैरत पुल में, जाए निकले पुल पार ।
कोई आगे पीछे तिन के, कई जल में करे बिहार ।।३२।।

कोई सखी पुल के नीचे एक तरफ से तैरते हुए जाती है और अंदर ही अंदर पुल पार करके दूसरे तरफ से निकल जाती है । कोई सखी उसके आगे है तो कोई सखी उसके पीछे पीछे तैर रही है । इस प्रकार सखियां कई तरह से जल में विहार करती हैं ।

कोई छांटत जल को, मिल के जुथ दोए ।
जल बूंदी छोरे उछरत, हारे ना दोऊ में कोए ।।३३।।

दो समूह में बंटकर कुछ सखियां एक दूसरे पर जल छिड़कने लगती हैं । जल की बारीक बूंदें उछलती हैं । दोनों में से कोई भी हार नहीं मानती है ।

इन जल क्रीड़ा करने से, कबूं ना कोई अघाए ।
कोई निकलने ना करे, कोई पैरत गोते खाए ।।३४।।

इस प्रकार जल में खेलने से कोई भी थकता नहीं है (मन नहीं भरता है)। कोई जल से बाहर निकलना ही नहीं चाहती है । सभी पुनःपुनः गोते खाते हुए तैरने लगते हैं ।

इहां एक घड़ी लों झीलत, जब मुरके हादी हक ।
तब केतिक आगे निकसी, अंग उमंग रहे इशक ।।३५।।

इस प्रकार यहां एक घड़ी (२२.५ मिनट) तक झीलना करते हैं । जब श्री राजश्यामा जी जल से बाहर निकलने लगते हैं, तब कुछ सखियां पहले ही आगे निकल जाती हैं । उनके अंग अंग में इश्क का उमंग रहता है कि श्री राज

श्यामा जी को श्रृंगार कराऊं ।

सिताब किया सिनगार, जब हुइयां तैयार ।
दिल में रहे उमंग, रिझावन परवरदिगार ।।३६।।

वे सखियां शीघ्र ही अपना श्रृंगार करके तैयार हो जाती हैं । उनके दिल में प्रियतम अक्षरातीत को रिझाने का उमंग रहता है ।

जब हक हादी निकसे, चढ़ पगथियारों पर ।
तब रूहों हाजर भई, खिजमत की खातर ।।३७।।

जब श्री राजश्यामा जी जल से निकलकर पाल की सीढ़ियां चढ़ते हैं, तब वे सखियां तुरंत ही श्रृंगार कराने की सेवा में उपस्थित हो जाती हैं।

लगी सिनगार करावने, रहे दोनों के सनमुख ।
अध बीच बाते करें, क्यूं कहे जुबांए सुख ।।३८।।

और श्री राज श्यामा जी के सामने आकर उनको श्रृंगार से सजाने लगती हैं । श्री राज जी उन सखियों से बीच बीच में प्रेम भरी बातें करते हैं । उसका सुख इस जुबां से किस प्रकार कहूं ?

बातें जो झीलन की, करने लगी जब ।
हके दिल दे सुनत हैं, बातें इनों की तब ।।३९।।

इस समय कुछ सखियां बातें करने लगती हैं, कि उन्होंने किस प्रकार झीलने का आनंद लिया । तब उनकी बातों को श्री राज जी ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

क्यूं कहूं सुख इनों के, पेहेने दिल चाहे बस्तर ।
भूखन जो इन अंग के, सो शोभा सब ऊपर ।।४०।।

इन सखियों के सुख किस प्रकार कहूं ? वे सखियां दिल की इच्छानुसार वस्त्र धारण करती हैं । उनके अंगों में, जो आभूषण विराजमान हैं, उनकी शोभा सर्वोपरि है ।

इन समे एक दूजी को, लगी करावने सिनगार ।
शोभा इन की देख के, रीझत परवरदिगार ।।४१।।

इस समय सखियां एक दूसरे को श्रृंगार कराने लगती हैं । उन ब्रह्मप्रियाओं की शोभा-सुंदरता देखकर प्रियतम श्री राज जी प्रसन्न हो जाते हैं ।

शोभा संझा समें की, अति छब देत है वन ।
और रंग जवेरन के, कई किरना उठे रोशन ।।४२।।

संध्या के समय वनों की शोभा अत्यंत सुंदर छबि से युक्त होती है और पुल महल के जवाहरातों की रंगबिरंगी किरणें चारों तरफ जगमगाते रहती हैं ।

इन जिमी जरे की रोशनी, कई कोट सूर ढ़पाए ।
तो क्यूं कहूं शोभा इन वन की, सुख आवत नाही जुबांए ।।४३।।

यहां की धरती के एक कण की रोशनी के समक्ष कई करोड़ों सूर्य भी छिप जाते हैं । तो इन वनों की शोभा किस प्रकार कहूं ? उनकी सुंदरता के सुखों का वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता है ।

तो क्यूं कहूं बस्तर भूखन की, सब किरना झलकत नूर ।
करें लड़ाई आप में, यूं कह्या न जाए जहूर ।।४४।।

जो वनों की शोभा का वर्णन नहीं हो सकता है तो फिर वस्त्राभूषणों की शोभा का किस प्रकार वर्णन करें ? उनकी नूरमयी रंगबिरंगी किरणें चारों तरफ झलकार करती हुई, आपस में टकराती हुई युद्ध करती प्रतीत होती हैं । उसके दिव्य प्रकाश का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

आए सुखपाल रूजु भए, जो जिन की तिन पास ।
हक हादी बैठे एक में, खेलौने हाजर भए पास ।।४५।।

इस समय (सायं ६ बजे) सभी सुखपाल उपस्थित हो जाते हैं, जो जिसका सुखपाल होता है, वह उसके पास ही आकर खड़ा हो जाता है । एक सुखपाल में श्री राज श्यामा जी विराजमान हो जाते हैं । अन्य सुखपालों में दो-दो सखियां विराजमान हो जाती हैं । इस समय विशेष रूप से सवारी का आनंद लेने पशु-पक्षी हाजिर हो जाते हैं ।

कोई राज के दाहेने, कोई चले बाई तरफ ।
कोई सनमुख बातें करें, सुख कह्या न जाए एक हरफ ।।४६।।

कोई सखी अपने सुखपाल को श्री राज जी के सुखपाल के दाहिने तरफ, तो कोई सखी बायीं तरफ चलाती है । कोई सम्मुख आकर धणी से प्रेम भरी बातें करती है । उन सुखों के विषय में एक शब्द भी कहना सम्भव नहीं है ।

कोई आगे कोई पीछे, कोई दाएं कोई बाएं कोई जोड़ ।
कोई आगे होए हक के, चली जात मरोड़ ।।४७।।

कोई सुखपाल आगे तो कोई पीछे चलते हैं । कोई सुखपाल दायें और कोई बायीं तरफ चलते हैं । कोई सुखपाल श्रीराजजी के आगे से तिरछा मुड़ते हुए चलता है ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए कह्यो पुल बरनन ।
याद करावत हैं हक, इन जिमी मोमिन ।।४८।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह बट पुल का वर्णन किया है । श्री राज जी इस संसार में ब्रह्मात्माओं को परमधाम की याद करा रहे हैं ।

प्रकरण ८४ चौपाई ३१३५

एक मोहोल एक चबूतरा

इस प्रकरण में यमुना जी के दोनो पुलों के मध्य, सात घाटों की शोभा और बटपुल से अग्नि कोण के मोड़ तक यमूना जी के दोनों ओर पाल पर स्थित एक महल एक चबूतरे की शोभा का वर्णन है । सुंदरसाथ के लिए आह्वान भी है कि इस स्वप्नमयी संसार, जिसका मूल ही नींद–निराकार है, उसे छोड़ कर अपनी आत्मिक नज़र परमधाम की ओर ले चलो । परमधाम की गलियों में रमण करो । यमुना जी के मोड़ पर आये हिण्डोलों पर यमूना जी की नूरी शीतल जल पर हिण्डोले हींचो ।

इन दोनों पुलों दरम्यान में, कहे सातों घाट ।
बीच हीरे की देहुरी, अति सुन्दर बनो है ठाट ।।१।।

इन दोनों (केल व बट) पुलों के मध्य यमूना जी की दोनों तरफ पाल पर सातों घाट विद्यमान हैं । सातों घाटों के मध्य में पाट घाट है, जिसमें हीरे की सुंदर देहुरी शोभायमान है ।

जमुना किनारे दोए, दोए बराबर जान ।
मानो जुगत जड़ाव ज्यो, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।२।।

यमूना जी के दोनों किनारे (जल रौंस) एक समान शोभायमान हैं ।

ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वे रत्नों से जड़े हुए हों । इनकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती है ।

इन दोनों पुलों को छोड़ के, आए आगे चलिए जब ।
तब एक चबूतरा एक मोहोल, एह ठौर आवे तब ।।३।।

इन दोनों पुलों को पार करते हुए आगे (दक्षिण दिशा में) जब बढ़ते हैं, तो यमूना जी की दोनों तरफ पाल पर क्रमशः एक महल और एक चबूतरा (कुल ५ महल ४ चबूतरा) आते गये हैं। यहां जब आते हैं तब...

दोनों बाजू दरखत, इहां से चले जब नूर ।
सो ख्वाब जिमी जुबां झूठी, क्यूं कर कहूं ज़हूर ।।४।।

यमूना जी के दोनों तरफ (पाल की बाहरी ओर) पुखराजी रौंस पर नूरमयी वृक्षों की दो हारें आयी हैं । उसकी शोभा का वर्णन इस स्वाप्निक जगत की झूठी जिह्वा से किस प्रकार करें ?

एह पांचों तत्व चेतन, अखण्ड भोम प्रकाश ।
जिन की जरा रेत की, जोत न माए आकाश ।।५।।

अखण्ड परमधाम के पांचों तत्व (पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश) चेतन हैं । वहां की सभी वस्तुएं प्रकाशमान हैं । वहां की धरती के एक कण का प्रकाश भी आसमां में नहीं समां पाता ।

तिन जिमी का ब्रख वन, कैसो होसी नूर ।
कैसा पगथिये होएंगे, इत कह्यो न जाए जहूर ।।६।।

वहां के वनों के वृक्षों में कैसा नूर (दिव्य प्रकाश) होगा ? वहां की सीढ़ियां कैसी नूरमयी होंगी ? यहां उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता।

ऋतु छऊ उत रहत हैं, सदा रहे सुखदाए ।
सब आग्या से हाजर रहें, तुम देखो मोमिन ताए ।।७।।

वहां सभी छः ऋतुएँ सदा सुखदायी रहती हैं और धणी की आज्ञा के अनुसार उपस्थित हो जाती हैं । सुंदरसाथ जी, उनकी शोभा देखिये ।

तुम को ऐसा चाहिए, देखो अपना वतन ।
तो खुसाली इन जिमी, तुमारा होए तन रोशन ।।८।।

हे सुंदरसाथजी! आपको ऐसा करना चाहिए, कि अपने निज वतन की शोभा देखो, तब इस दुःखरूप संसार में भी आपको धणी का सुख मिलेगा और आप प्रसन्न (दुख मुक्त) रहोगे। साथ ही आपके तन की महिमा भी बढ़ेगी।

इन को याद जो करते, होए तुमारा काम ।
एह सुपना उतरे दिल से, तुम पाओ बका आराम ।।९।।

परमधाम के सुखों को याद करने से आपका जागनी (आत्म–जागृति, ब्रह्मसाक्षात्कार) का लक्ष्य पूरा होगा और आपके दिल से यह स्वप्न दूर हो जायेगा । आप परमधाम के शाश्वत सुख व शांति प्राप्त कर सकोगे ।

जब लों न लगे इन को, तो लों रहो बीच दुःख ।
जब याद करो वतन को, तब हीं पाओ सुख ।।१०।।

जब तक परमधाम के अखण्ड सुख ग्रहण नहीं करोगे, तब तक दुःखरूप माया जगत में रहना पड़ेगा । जब निजघर परमधाम को याद करोगे, तबही आत्मा को सुख व शांति मिल जायेगी ।

फेर फेर दुःख को दौडत, जो घर का नाहीं सवाद ।
एह तो फना जिमी की, झूठी है बुनियाद ।।११।।

आप पुनः पुनः झूठे मायावी सुखों को पाने के लिये दौड़ते (प्रयास करते) हो, क्योंकि आपको निजघर परमधाम के सुखों का स्वाद याद नहीं है । यह तो नश्वर संसार का स्वरूप ही छलरूप (अंदर से दुःखरूप, किंतु बाहर से सुखरूप दिखता है)।

तुम तो नीके जानत, मूल माया त्रैगुन ।
साख दिखाई शास्त्रों में, अजू त्रपत न होवे मन ।।१२।।

आप अच्छी तरह से जानते हैं, कि इस त्रिगुणात्मक जगत् का मूल माया है । आपको शास्त्रो की भी साक्षी दिलवायी है , फिर भी आपका (क्या) मन मायावी दुःखों से तृप्त नहीं हुआ ।

जहां तुम आसा बांधत, सो तो कछुए नाहीं ।
ना उपजी ना है फना, सो तो तुम को दिया बताए ।।१३।।

जिस झूठे संसार से तुम सुख की आशा रखते हो, वह तो कुछ है ही नहीं (अस्तित्वहीन है) । ना यह उत्पन्न हुआ है, ना ही इसका नाश होता है

(स्वप्नवत् है) । यह तो आपको पहले ही बता दिया है ।

जैसे मृगजल देखिए, दौड़ के जाइए धाए ।
उहां कछू ना पाइए, हासल श्रम दिखाए ॥१४॥

जैसे रेगिस्तान में मृगजल (रेती में दिखने वाला प्रतिबिम्बित जल) दिखायी तो देता है, किंतु तेजी से दौड़कर जाने पर वहां कुछ भी नहीं मिलता । मात्र परिश्रम (थकावट) ही हासिल होती है (उसी प्रकार यह संसार है) ।

तिस वास्ते कहूं तुम को, जिन नजर करो इत ।
बखत नजीक पोहोंचया, वाएदा रोज क्यामत ॥१५॥

इस कारण आपसे कह रहा हूं, कि इस संसार का ध्यान (चिंता-चाहना) ना करो । परमधाम में जागने का समय नजदीक आ गया है, जो कियामत (आत्म जागृति) के दिन का वायदा (कुर्आन आदि धर्मग्रंथों में) किया गया था ।

जो कदी चाहो बैठन, मृत लोक जिमी पर ।
मूल मोहतत्व उड़ाइयां, सो तुमारी खातर ॥१६॥

अब इस मृत्युलोक की दुःखमयी धरती पर रहने की इच्छा ना करो । मूल मोह (नींद-अज्ञान) आपके वास्ते ही खत्म कर दिया है ।

जिन का मूल जड़ खोदया, सो कहां लों रहे सुपन ।
तुम नेहेचे कर पकरया, क्यूं ए न फिरत मन ॥१७॥

जिस मोह रूपी वृक्ष के जड़ (अज्ञान) को खोद डाला है (खत्म कर दिया है), वह स्वप्न कब तक रहेगा ? आपने निश्चय करके इसे पकड़ा हुआ है, इसी कारण आपका मन संसार से किसी भी तरह से नही हट पा रहा है ।

बने मोहोलय घरो, उडीनी अब ताए ।
ताए मोहोकम चाही लकडे, गेच करी सूपत बनाए ॥१८॥

आप चाह रहे हो, कि मेरे भव्य मोहोल घरबार बनें और इसी वक्त सभी इच्छायें पूरी हो जायें । आप इन्हें पक्की (मजबूत) लकड़ियों से और अच्छा चूना(प्लास्टर) लगा के बड़ा प्रतिष्ठित सुंदर बनाना चाह रहे हो ।

कमी जो होवे तिन में, आवन में कछु बेर ।
तो करे लड़ाइयां मोसों, हम बोले ना तुम सो फेर ॥१९॥

और संसारिक सुखों में कुछ कमी हो जाये, या कोई वस्तु प्राप्त ना हो,

तो मुझसे लड़ते हो और कहते हो कि हम आपसे कभी भी नहीं बोलेंगे ।

बाग बगीचा इन जिमी, हम को होए कुसाद ।
बोहोत पेड़ होए तिन में, रहे एही सवाद ॥२०॥

इस संसार में बहुत सारे बाग-बगीचे आदि हों, बहुत सारे पेड़ हों, आप यही इच्छा रखते हो ।

याद ना करे घर को, ना देखे अपना ठौर ।
चरचा ना सुने कान सों, जाए लगे मेहेनत जोर ॥२१॥

आप कभी भी अपने निजघर को याद नहीं करते हो और ना ही २५ पक्ष का ध्यान करते हो । वाणी चर्चा भी श्रवण नहीं करते और माया के कार्यो में जाकर अत्यधिक परिश्रम करते हो ।

बोवन को जिमी से, कबू ना फारक होए ।
चरचा को ना सुनेगा, जाने ऐसी ना गुजरान कोए ॥२२॥

इस संसार में कर्म करने से तुम कभी भी निवृत्त नहीं हो पाओगे । वाणी चर्चा भी श्रवण नहीं करते हो । ऐसी रहनी तो कभी भी नहीं होनी चाहिये।

फिराए फिरे नहीं, माने ना नसीयत ।
काल सिर पर झुलूबिआ, अचानक आई क्यामत ॥२३॥

माया संसार से अपना ध्यान हटाकर परमधाम में नहीं लगाते हो और कोई भी उपदेश नहीं मानते हो । किंतु याद रखो कि मृत्यु कभी भी सिर पर आ पड़ेगी । कियामत अचानक ही आने वाली है ।

कोई दुःख न पाइयों, अपने तन को करी नसीयत ।
मैं अपनी बीतक कह्यो, मैं नजरों में आई साएत ॥२४॥

कोई भी दुःखी ना हों, इसलिये अपने तन जानकर आपको प्रियतम अक्षरातीत ने वाणी दी है । मैंने तो आपबीती कही है, अब मेरी नजरों के सामने परमधाम की वह घड़ी आ गयी है ।

मोमिन तो सावचेत हैं, कबू ना भूले इत ।
इन को हक सुभान ने, आगूं हीं खबर दई क्यामत ॥२५॥

मोमिन (ब्रह्मात्माएं) तो सावधान रहते हैं, वे कभी भी इस अनमोल समय को नहीं भूलेंगे । उनको प्रियतम परब्रह्म ने पहले से ही कियामत की खबर

दे दी है ।

सो तो चतुर सुजान हैं, केतेक पोहोंचे सूरत हक ।
बाकी जो कोई रहे, सो तो सूरत आए इशक ।।२६।।

वे मोमिन चतुर ज्ञानवान हैं, उनमें से कई श्री राजजी के स्वरूप का साक्षात्कार कर चुके हैं और जो कोई बाकी रह गये हैं, वे भी इश्क के ही स्वरूप हैं।

जो कोई सूरत आशक, तिन को कौन करे नसीहत ।
वे वजूद से जुदे रहे, उन के दिल में हक सूरत ।।२७।।

जो कोई भी श्री राज जी की आशिक रूहें हैं, उन्हें भला कौन उपदेश दे सकता है ? वे इस शरीर की चाहनाओं व चिंताओं से अलग रहती हैं । उनके दिल में प्रियतम की मोहिनी सूरत बसी होती है ।

जिनकी सिफत संसार में, करत हक सुभान ।
ते तो चतुर सिरोमन, रहे तिनको सब पेहेचान ।।२८।।

जिनकी प्रशंसा संसार में (क़ुर्आन आदि धर्मग्रंथो में) स्वयं परब्रह्म अक्षरातीत करते हैं, वे ब्रह्मात्माएं चतुर व शिरोमणि हैं, जिन्हें सारी पहचान होती है ।

औलिया लिल्ला दोस्त, कहे खुदाए के ए ।
बैठे नूर तखत पर, शोभा लिखी बाब इन के ।।२९।।

इन्हें ही कुर्आन पाक में औलिया, लिल्लाह औऱ खुदा के दोस्त कहा गया है। वे ही न्याय के दिन नूर (महिमा) के सिंहासन पर बैठेंगे, इन्हीं के लिये वह शोभा लिखी है ।

महामत कहे ए मोमिनो, एह तुमारी बीतक ।
पेहेले मैं अपनी कही, ए जानत दिल की हक ।।३०।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह आपकी अपनी (परमधाम की) बीती हुयी बातें हैं । पहले मैंने अपनी बीतक कही थी । उसे श्री राजजी का हृदय अच्छी तरह से जानता है ।

प्रकरण ८५ चौपाई ३१६५

जमुना जी की मरोर

इस प्रकरण में यमुना जी की शोभा का वर्णन है । बट घाट और बट पुल को पार कर जब दक्षिण दिशा की ओर जाते हैं, तो एक महल और एक चबूतरे की शोभा अग्नि कोण के मरोड़ तक आयी है । यहां होने वाले श्री राजश्यामा जी और सखियों के अखंड लीला विहार का विस्तृत वर्णन है ।

चली जमुना दक्खिन दिश, बट घाट पुल पार ।
जित हक हादी रूहें, आवत करने बिहार ।।१।।

यमूना जी दक्षिण दिशा में बहती हुयी बट घाट व बट पुल को पार करके आगे बढ़ती है । जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां आनंद विहार करने आते हैं ।

दोए बाजू चल्या चबूतरा, ता ऊपर मोहोल बने ।
एक चबूतरा एक मोहोल, रमने रूहें आपन ।।२।।

यमूना जी के दोनों तरफ कमर भर ऊंचा चबूतरा (पाल) आया है, जिसके ऊपर (बट पुल के आगे दक्षिण में मरोड़ तक) एक महल और एक चबूतरा क्रमशः आये हैं, (उनके बाहरी तरफ पुखराजी रौंस पर वनों की शोभा है) ।

इहां से चले हिंडोले, चौक बने चार चार ।
दोए वन पर दोए जल पर, हक हादी करे बिहार ।।३।।

यहां से (बटपुल के आगे से) यमूना जी के दोनों तरफ पाल पर आये महलों के मध्य (पाल व जल दोनों तरफ) हिण्डोले आते गये हैं । प्रत्येक चार-चार महलों के मध्य चौक बने हैं, जिनकी चारों दिशा में चार हिण्डोले शोभायमान हैं । दो हिण्डाले वन की तरफ (पाल पर) हैं, तथा दो हिण्डोले यमूना जी के जल के ऊपर हैं । यहां श्री राज श्यामाजी व सखियां आनंद विहार करते हैं ।

चबूतरे किनारे रेत के, चले आए दरखत ।
दोए बाजू ऐसे जानियों, करे झीलना संझा बखत ।।४।।

पाल के किनारे (बाहरी ओर) रेत के ऊपर सुंदर वृक्ष आये हुए हैं । इसी प्रकार यमूना के दोनों तरफ की पालों की शोभा है । यहां संध्या के समय

झीलना करते हैं ।

एह मोहोल बने चबूतरे पर, दोरी बंध किनार ।
दरम्यान पड़ा चबूतरा, जित हक हादी करे बिहार ।।५।।

यमूना जी के किनारे पाल पर (बटपुल से मरोड़ तक) एक महल व एक चबूतरा क्रमशः सीध में आये हैं । प्रत्येक दो महलों के मध्य एक चबूतरा है, जहां श्री राज श्यामा जी लीला विहार करते हैं ।

आई ऊपर छाया दरखत, दोउ किनारे दोरी बंध ।
जहां लों मरोर खाइयां, एह तहां लों कही सनन्ध ।।६।।

यमूना जी के दोनों किनार पर आये महलों व जल चबूतरे पर पुखराजी रौंस पर आये बड़ोवन के वृक्षों ने एक समान रूप से छाया की है । ऐसी शोभा अग्नि कोण के मरोड़ तक है।

जहां जमुना मरोर खाइयां, तहां चारों कोने चार ।
मोहोल बन्या चबूतरों पर, चार हिंडोलो सुखकार ।।७।।

जहां अग्नि कोण से यमूना जी मुड़ती हैं, वहां चारों कोनों में (यमूना जी के दोनों तरफ आयी पाल पर) ४ महल शोभायमान हैं, जिनके मध्य चारों दिशा में चार हिण्डोले विद्यमान हैं ।

दोए तरफ वन के, दोए है जल ऊपर ।
चौक पड़ा जल ऊपर, हक को खुस आवन खातर ।।८।।

उनमें से दो हिण्डाले वनों की तरफ हैं तथा दो हिण्डाले जल के ऊपर हैं । इस प्रकार चार हिण्डोलों के मध्य जल पर चौक बन गया है, ताकि इस शोभा से प्रियतम श्री राज जी प्रसन्न हो जायें ।

राज पधारत अरस से, वास्ते रमने के ।
उतरत आए सुखपाल, घेर फिरवली सैयां आए ।।९।।

श्री राजश्यामाजी एवं सखियां रंगमहल से यहां अनेक प्रकार से रमण करने के लिये पधारते हैं । उनके सुखपाल यहां पाल पर उतरते हैं । सभी सखियों के सुखपाल, श्री राजजी के सुखपाल को घेरकर चारों तरफ उतर जाते हैं ।

सुन्दर सरूप धनीअ का, चले लटकनी चाल ।
रूहें इत गत देख के, होत हैं अति खुसाल ।।१०।।

धाम धणी का स्वरूप अत्यंत सुंदर है, वे लटकनी-मटकनी चाल से चल रहे हैं । सखियां उनकी इस अदा को देखकर अत्यंत प्रसन्न हो जाती हैं ।

क्यूं कहूं सुख इन समें के, संग लेत हैं हक सुभान ।
करें बातें हजूर हक सों, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।११।।

इस समय के सुख के विषय में किस प्रकार कहूं, जो सखियां प्रियतम धणी के साथ में लेती हैं ? श्री राज जी के नजदीक जाकर सखियां उनसे प्रेम भरी बातें करती हैं, जिसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिल में रहती है ।

कोई खेंचत वन में, कोई खड़ी खिलौने पास ।
ए रिझावत इनों को, रहे सेवन की आश ।।१२।।

कोई सखी अन्य सखी को खींचते हुए वन की तरफ जाती है, तो कोई सखी लाडले पशु-पक्षियों (सखियों के खिलौने) के पास खड़ी है । पशु-पक्षी अनेक प्रकार से खेल-तमाशे करके सखियों को रिझाते हैं । उनके मन में यही सेवा करने की आशा रहती है ।

कोई सखी संग राज के, बातां करें सनमुख ।
क्या कहूं सुख इन के, जो लेत हक संग सुख ।।१३।।

कोई सखी श्री राज जी के सम्मुख आकर उनके साथ प्रेममयी बातें करती है । उन सुखों के विषय में किस प्रकार कहूं, जो प्रियतम अक्षरातीत के साथ लेती हैं ?

तले इन चबूतरे, रेती इत शोभाए ।
सखियां चलती देखिए, कोई चढ़ी पगथियां रे सुखदाए ।।१४।।

पाल के नीचे (बाहरी तरफ) रेती रमण शोभायमान है । जहां सखियों को चलते-खेलते देखिये । कोई सखी मनोहरी सीढ़ियां चढ़ते हुए पाल पर आ रही है ।

चढ़ते हक हादीय को, संग रहे एकै जोड़ ।
ऊपर पगथिआरो चढ़े, कोई आगे चढ़त मरोर ।।१५।।

पाल की सीढ़ियों पर चढ़ते समय श्री राजश्यामा जी एक साथ रहते हैं

। कोई सखी सीढ़ियों से चढती है, तो कोई सखी आगे से मुड़कर चढ़ जाती है।

कठेड़ा इन चबूतरे, शोभित है तरफ दोए ।
दरवाजे दरम्यान में, देखत ऊंचे चढ़ते सोए ।।१६।।

इस पाल (चबूतरे) के दोनों तरफ किनार पर कठेड़े की शोभा है । उसके कठेड़ा द्वार के सामने ऊंचे जाते हुए महल दिखायी देते हैं ।

इन चबूतरे पर, पेहेले कहे मोहोल नूर ।
जहां बारे हजार की बैठक, सो कह्यो न जाए जहूर ।।१७।।

इस पाल के चबूतरे पर सर्वप्रथम नूरमयी महल आये हुए हैं, जिनके अंदर १२,००० सखियों की बैठक है । उसकी शोभा अवर्णनीय है ।

एक हिस्से मोहोल बन्या, दो हिस्से खुले जान ।
इत मोहोल बन्या दरम्यान में, ताकी करो पेहेचान ।।१८।।

पाल की चौड़ाई (२५० मंदिर) के तीन हिस्से हुए, मध्य के एक हिस्से में (८३ मंदिर का लम्बा-चौड़ा) महल है और इसके दायें बायें दो हिस्से खुले हैं । उसकी पहचान कीजिये ।

एक पगथियां रे ऊंची जिमी, मोहोर अन्दर शोभाए ।
अन्दर पैठते देखिए, एह सुख न आवे जुबांए ।।१९।।

महल का चबूतरा पाल की जमीन से एक सीढ़ी ऊंचा है, जिसके मध्य में महल शोभायमान है । महल के अंदर प्रवेश करते हुए महलों की शोभा देखिये । उस सुख का वर्णन माया की इस झूठी जिह्वा से सम्भव नहीं है ।

ए हार बट पीपल की, चली जाए किनार ।
रूहें रमती देखिए, हक सो करे बिहार ।।२०।।

यहां से बड़ोवन के वृक्षों की पंक्तियां पश्चिम दिशा में (कुंज-निकुंज वनों के मध्य से होते हुए) बट-पीपल की चौकी के दक्षिण किनार से गयी हैं । यहां सखियों को अनेक प्रकार से खेल-रामतें करते हुए देखिये । वे श्री राज श्यामा जी के साथ अनेक प्रकार से हांस-विलास करती हैं ।

जुदे जुदे ठौर खेलत, रूहें हक हादी संग ।
बस्तर भूखन झलकत, कई लेहेरा उठे तरंग ।।२१।।

सखियां श्री राज श्यामा जी के साथ अलग-अलग कई रमणीक स्थानों

में खेलती हैं । उनके वस्त्रों तथा आभूषणों की नूरमयी रंग-बिरंगी किरणें चारों तरफ लहरों के रूप में तरंगित हो रही हैं ।

चोतरे के तीसरे हिस्से, मोहोल बन्यो दरम्यान ।
तिन के चार द्वार हैं, ताकी कहूं पेहेचान ।।२२।।

चबूतरे (पाल) के (चौड़ाई में मध्य के) तीसरे हिस्से में महल विद्यमान हैं, जिसकी चारों दिशाओं के मध्य में चार मुख्य द्वार हैं, उसकी पहचान बताती हूं ।

दोए द्वार ऊपर चबूतरे, एक भया तरफ वन ।
एक तरफ जमुना के, झलकत नूर रोशन ।।२३।।

दो दरवाजे पाल की तरफ (उत्तर व दक्षिण दिशा में) हैं । एक दरवाजा वन की तरफ (पश्चिम दिशा में) और एक दरवाजा यमूना जी की तरफ (पूर्व दिशा में), इस प्रकार चारों दिशाओं में नूरमयी रोशनी झलक रही है ।

मोहोल द्वार सामें द्वार, कठेड़ा को शोभाए ।
तिन आगे पगथिएं, उतर चबूतरे जाए ।।२४।।

महल के द्वार के सामने पाल की किनार पर कठेडा द्वार शोभायमान है । उसके सामने तीन सीढ़ियां विद्यमान हैं, जिनसे उतरकर जल रौंस व जल चबूतरे पर जाते हैं ।

और वन की तरफ, ए जो बन्या है द्वार ।
तिन द्वार सामें द्वार कठेड़ा, उतर पगथिये सुखकार ।।२५।।

इसी प्रकार वन की तरफ भी जो मुख्य द्वार है, उसके सामने पाल की किनार पर कठेड़ा द्वार है । यहां ऊपर से सुखदायी सीढ़ियां उतरती हैं ।

तहां से रेती आइए, इत वन विस्तार ।
सामें रस्ता इत दोरी बंध, हक हादी करत बिहार ।।२६।।

यहां (पाल) से पश्चिम दिशा में सीढ़ियां उतरकर नूरमयी रेती में आइये, जहां वनों का विस्तार है । सामने (वनों के मध्य) रास्ते बिल्कूल सीध में आये हैं, जहां श्री राजश्यामा जी लीला विहार करते हैं ।

जहां चार रस्ते शामिल भए, तहां चेहेबच्चा जान ।
तहां फुहारें उछलत, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।२७।।

वनों में जहां चार रास्ते मिलते हैं, वहां चेहेबच्चे (कुण्ड) की शोभा है । यहां फव्वारे उछल रहे हैं, जिसकी पहचान मोमिनों के दिलों में रहती है ।

इन रस्तों नेहेरो चलें, कहूं गूपत कहूं प्रगट होए ।
रूहें रमें इन वन में, सुख पावत सब कोए ॥२८॥

इन रास्तों (रौंसों) के मध्य में नहरें चलती हैं, कहीं गुप्त रूप से तो कहीं प्रकट रूप से । ब्रह्मप्रियाएं इन वनों में रमण (हांस-विनोद) करते हुए अत्यंत सुख पाती हैं ।

हर मोहोल आगे रस्ते, बने दोरी बंध ।
रस्ते आगे पगथिए, जाए पोहोंचे वन सनंध ॥२९॥

प्रत्येक महलों के आगे इसी प्रकार एक सीध में रास्ते बने हैं । रास्ते के सामने पाल पर सीढ़ियां चढ़ी हैं । यहां से वनों के अंदर पहुंच जाते हैं ।

ए चारों तरफ रस्ते चले, इन बगीचन दरम्यान ।
हद तलाव अन्न वन, ढंपी जमुना लों जान ॥३०॥

वनों में बगीचों के चारों तरफ रास्ते (नहरें) आये हैं । ये बड़ोवन हौज कौसर तालाब को घेरकर तथा अन्न वन के दक्षिण तक आये हैं । उत्तर में ढपी यमूना जी तक आये हैं ।

एक तरफ धाम को होए, और देखो गृद सब ठौर ।
आगे कहूं जमुना किनार की, जुगत चबूतरे और ॥३१॥

यह वन रंगमहल की उत्तर दिशा में भी है । इस प्रकार चारों तरफ यह वन फैला है । अब यमूना जी के किनारे की और चबूतरे (पाल) की शोभा कहूंगा।

महामत कहे ए मोमिनों, एक मोहोल एक चबूतरा ।
भी आगे कहूं तुम को, दोउ बाजू मोहोल ऊर ॥३२॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी, यह एक महल एक चबूतरे का वर्णन किया है । आगे यमूना जी के दोनों तरफ आये महलों की शोभा का पुनः वर्णन करूंगा।

प्रकरण ८६ चौपाई ३१९७

यमुना जी के मरोर से हौजकौसर तालाब तक

इस प्रकरण में यमुना जी के मरोड़ से हौजकौसर तालाब में समाने तक की संपूर्ण शोभा का वर्णन है ।

जहां जमुना मरोड़ खाइयां, चली पश्चिम तरफ ।
जाए के मिली ताल को, रहे मोमिन दिल सरफ ।।१।।

जहां (अग्नि कोण) से मुड़कर यमुना जी पश्चिम दिशा में चली है, और हौजकौसर ताल से मिली है, उसे समझने की शक्ति मात्र मोमिनों के दिलों में ही होती है ।

बाजू दोऊ किनार पर, चले चबूतरे दोए ।
ताए दरम्यान मोहोल बन्या, क्यूं कहूं शोभा इत सोए ।।२।।

यमूना जी के दोनों किनारों पर दो चबूतरे (पाल) आये हैं, जिनके ऊ पर (मरोड़ से लेकर हौज कौसर ताल तक) महल (दहलानें) बने हैं, उनकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करें ?

दोए हार थम्भन की, चली इन दरम्यान ।
किनारे पर कठेड़ा, दोऊ बाजू याके जान ।।३।।

यमूना जी के दोनों तरफ के पालों पर (दोनों किनारे) २-२ स्तम्भों की हारें (पंक्तियां) आयी हैं । पाल के दोनों किनारे स्तम्भों के मध्य कठेड़े की शोभा है ।

तरफ जमुना सीढ़िए, कठेड़े दरम्यान द्वार ।
ऐसे ही तरफ वन के, उतरने को सुखकार ।।४।।

पाल से यमूना जी के तरफ जल रौंस पर कठेड़े द्वार के सामने सीढ़ियां उतरी हैं । इसी प्रकार वन की (बाहरी) तरफ भी सुखदायी सीढ़ियां आयी हैं ।

इन थम्भन पर छात बनी, मेहेराब तरफ दोए ।
छात ऊपर चांदनी, तापर बनी गुमटियां सोए ।।५।।

पाल की दोनों किनार पर आये इन स्तम्भों पर महराबें व छत बने हैं। छत के ऊपर चांदनी में गुम्मटियां शोभायमान हैं ।

ताकी दोए किनारे कांगरी, यूं लगती गई लग ताल ।

बीच खुली जमुना चले, देख मोमिन होत खुसाल ।।६।।

छत के दोनों किनारों पर कांगरी की शोभा है। इस प्रकार (यमूना जी के दोनों तरफ) दहलानें हौजकौसर ताल तक गयी हैं । इनके मध्य में यमूना जी खूली है (इसके ऊपर छत नहीं है) । इसे देखकर ब्रह्मात्माएं प्रसन्न हो जाती हैं ।

एह आए लगी पाल को, जहां सोले देहुरी हार ।
इत हक हादी रूहें, आवत करने बिहार ।।७।।

ये दहलानें पश्चिम दिशा में जाकर हौजकौसर ताल की चौरस पाल से लग गयी हैं, जहां पर (हौज कौसर के पूर्व में) सोलह देहुरी का घाट है । यहां श्री राज श्यामा जी व सखियां हांस-विलास करने आते हैं ।

बेवरा इन घाट का, आगे कहूंगा सोए ।
आओ तरफ कुंज वन के, मोमिन देखो सब कोए ।।८।।

इस सोलह देहुरी के घाट का विवरण बाद में कहूंगा। अभी आप सुंदरसाथ, कुंजवन की तरफ आइये और उसकी शोभा देखिये ।

बिहार हक हादीय का, देखो मोमिनों तुम ।
एह इत जाहिर करत हैं, हक सुभान का हुकम ।।९।।

श्री राजश्यामाजी की आनंदपूर्ण लीलाओं को देखिये, सुंदरसाथ जी । प्रियतम अक्षरातीत का आदेश ही उस ज्ञान को संसार में जाहिर कर रहा है ।

महामत कहे ए मोमिनों, इनको अति विस्तार ।
इनकी हकीकत ऐसी है, सो जानत परवरदिगार ।।१०।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी । इनका विस्तार बहुत है । इनका ज्ञान ऐसा है, जो मात्र प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

प्रकरण ८७ चौपाई ३२०७

कुंजवन

इस प्रकरण में रंगमहल, यमुनाजी और हौजकौसर तालाब के मध्य में सुशोभित कुंज निकुंज वन का अति सुन्दर वर्णन हुआ है । कुंज वन के अलौकिक सौंदर्य को, आत्मा इस ब्रह्मवाणी के माध्यम से महसूस करती है । वहां की हर वस्तु नूरमयी फूलों से सुशोभित है । परमधाम की सुगंधी, चेतनता,

कोमलता और सुंदरता शब्दातीत है । प्रियतम धामधणी ने परमधाम की अलौकिक लीला को शब्दों में लाया है, ताकि ब्रह्मात्माएं चितवन से परमधाम में पहुँच सके और कुंज वन में धाम धणी के साथ विहार के अखंड सुख लें सकें ।

अब कहूं कुंज वन की, जो धाम जमुना ताल दरम्यान ।
कहूं हकीकत तिन की, ताकी करो पेहेचान ।।१।।

अब कुंजवन की शोभा कहूंगा, जो रंगमहल, यमूना जी व हौजकौसर ताल के मध्य में आया है। उसकी पहचान कीजिये ।

ए जो कह्यो दोए चबूतरा, तीन आगे रेती में दरखत ।
हक हादी आवत रमन को, देख्या चाहिए एह बखत ।।२।।

यह जो यमूना जी के दोनों तरफ दो चबूतरों (पाल) का वर्णन किया है, उसके बाहरी तरफ रेती में वृक्ष (बड़ोवन) आये हैं । श्री राज श्यामा जी यहां रमण करने आते हैं, उस समय की शोभा देखने योग्य होती है ।

लगत किनारे चबूतरे, वट पीपल दरखत हार ।
बट की पुल से ले चल्या, आए लगा होज कौसर की हार विचार ।।३।।

यमूना जी के पाल के किनारे पुखराजी रौंस पर बट-पीपल (बड़ोवन) के वृक्षों की पंक्तियां हैं, जो बट के पुल से चलते हुए हौजकौसर के चारों तरफ आयी हैं।

एही चबूतरा फिरवल्या, तलाव की गृदवाए ।
एही दरखत हार होए चली, लगा चबूतरे पर शोभाए ।।४।।

यही चबूतरा (पाल) हौजकौसर ताल की चारों तरफ घेरकर (ढलकती पाल से लगकर) आया है, तथा पुखराजी रौंस पर आयी वृक्षों की हारें भी चबूतरे (पाल) से लगकर चारों तरफ आयी हैं ।

फेर एही वन पुल कही जे, तिनके पार आया ए ।
शोभा छाइयां अति भली, इत कई सुख हिंडोले के ।।५।।

फिर यही वन हौजकौसर तालाब के चारों तरफ घूमकर पूर्व में जाते हुए बटपुल के उस पार पुखराजी रौंस पर आ गया है । इन वृक्षों के मध्य शीतल छाया शोभायमान है तथा यहां हिण्डोलों के कई प्रकार के सुख हैं ।

तैसे ही एह चबूतरा, जाए लगा पुखराज ।
जित सुखपाल बैठ के, आवत सैयां संग राज ।।६।।

उसी प्रकार यह चबूतरा (पाल) पुखराज पहाड़ (मूल कुण्ड) से जाकर लगा है, जहां सुखपालों में विराजमान होकर सखियां श्री राज जी के साथ आती हैं ।

अब कहूं कुंजवन की, जो धाम जमुना ताल दरम्यान ।
कहूं चांदनी चौक है, चारों तरफ मैदान ।।७।।

अब कुंजवन की शोभा का वर्णन करूंगी, जो रंगमहल, यमूना जी एवं हौजकौसर ताल के मध्य विद्यमान है । कुंज–निकुंज वनों के चारों तरफ रेती का मैदान है, जो खुले आकाश वाला (चांदनी चौक) है ।

तहां हीरे का चबूतरा, तहां सिंघासन रोशन ।
सुन्दर बिछौने दुलीचे, एह देखत रूह मोमिन ।।८।।

कुंजवन के मध्य में नूरमयी हीरे का चबूतरा है, जिस पर सिंहासन जगमगा रहा है । चबूतरे पर सुंदर दुलीचा व बिछौना शोभायमान है । इसकी शोभा को ब्रह्मात्माएं ही देखती हैं ।

चबूतरे दरम्यान चेहेबच्चा, कठेड़ा गृदवाए ।
द्वार बन्या ता बीच में, पगथी आगे शोभाए ।।९।।

इस चबूतरे के मध्य में चेहेबच्चा (कुण्ड) विद्यमान है । चबूतरे की किनार पर चारों तरफ कठेड़े की शोभा है । कठेडों के मध्य में द्वार (कठेड़ा द्वार) बना है, जिसके आगे सीढ़ियां शोभायमान हैं ।

चेहेबच्चे गृद कठेड़े, जुगत जड़ाव है नूर ।
जड़ाव द्वार चारों तरफों, क्यूं करों ताको मजकूर ।।१०।।

कुण्ड की चारों तरफ भी नूरमयी रत्नजड़ित कठेड़े शोभायमान हैं । चारों दिशा में कठेड़ा द्वार भी रत्नजड़ित हैं, इनकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

चारों तरफों झलकें, उतरत सीढ़ियों जान ।
दोए बाजू बगलों सीढ़ियां, कोई कूदरत जल दरम्यान ।।११।।

चारों तरफ रत्नजड़ित कठेड़े जगमगा रहे हैं । कठेड़ा द्वार के सामने जल

चबूतरे पर चांदे से दायें-बायें युक्तिपूर्वक सीढ़ियां उतरी हैं। जल के मध्य में बहुत ही अद्‌भूत शोभा है।

ऐसे कई चौक खुले चौखूटे, कई चौक ऐसे गृद ।
ऊपर खुली चांदनी, जे खुस लागत हवा सरद ॥१२॥

ऐसे कई चौक (चबूतरे) खुले चौरस(कुंज) हैं, तथा कई चौक गोल (निकुंज) हैं, जिनके ऊ पर खुली चांदनी है, जहां से शीतल, सुगंधित व आनंददायी हवा के झोंके आते हैं ।

इहां चबूतरा फिरता, चेहेबच्चा गृद जान ।
वन भी गृद फिरवल्या, रहे मोमिन दिल पेहेचान ॥१३॥

निकुंज वन में मध्य के गोल चेहेबच्चे (कुण्ड) के चारों तरफ घेरकर गोल चबूतरा आया है । उसकी चारों तरफ वन भी घेरकर आये हैं । उनकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिल में रहती है ।

रस्ते चले दोरी बंध, चौखुनों में चावक ।
सब चौको में ऐसे बने, गोल में गोल माफक ॥१४॥

इस प्रकार सभी रास्ते एक सीध में आये हैं । चौरस चबूतरे (कुंज वन) में चौकोर रास्ते (गलियां) हैं, तो गोल चबूतरे (निकुंज वन) में गोल रास्ते (गलियां) हैं । सभी चौक इसी प्रकार आये हैं ।

एह कुंज वन जो कह्या, एक लग छहीं नूर ।
मानों जड़ाव चन्द्रवा, क्यूं एह जुबा कहे जहूर ॥१५॥

यह कुंज वन का वर्णन किया है । यहां वृक्षों की एक समान नूरमयी छाया है । वृक्षों की डालियों, फूलों व पत्तों से बनी छत चंदवा के समान रत्नजड़ित दिखायी दे रही है । उसकी शोभा का वर्णन इस जुबां से किस प्रकार हो सकता है ?

कहू गलियां आडियां, कहूं सीधी चली जाए ।
कहूं टेढ़ी टेढ़ी मिने, कहुं यों गलियों गली शोभाए ॥१६॥

वनों के मध्य, कहीं आड़ी गलियां हैं, तो कहीं सीधी गलियां जा रही हैं। कहीं टेढ़ी (तिरछी) गलियां भी वनों में हैं । इस प्रकार गलियां ही गलियां शोभायमान हो रही हैं ।

कहूं कुंज वन मंदिर बने, ताकी दिवाल दोरी बंध हार ।
तामें चढ़ते फूल बने, इत हक हादी करत बिहार ।।१७।।

कुंज वन के मंदिर किस प्रकार बने हैं, उसकी शोभा कहता हूं। उसकी दीवाल (मंदिर) एक सीध में पंक्तिबद्ध रूप से आयी है । जिसमें चढ़ते हुए फूलों की शोभा है । यहां श्री राज श्यामा जी प्रेम व आनंदपूर्वक लीला विहार करते हैं।

एक फल में कई रंग, कहूं दस रंग कहूं बीस ।
फल ऊपर फूल कई रंग के, ए सुख पाइए हक बकसीस ।।१८।।

एक एक फल में कई रंग होते हैं । किसी फल में दस तो किसी में २० रंग होते हैं । फलों के वृक्षों पर भी कई रंगों के फूल शोभायमान हैं । इसका सुख श्री राज जी की कृपा से ही प्राप्त होता है ।

ए मंदिर फूलन के, चारों तरफ दिवाल ।
इत हक हुकमें, रंग होत विसाल ।।१९।।

यह मंदिर और चारों तरफ की दीवार फूलों की ही है । यहां श्रीराजजी के हुक्म से अनेक प्रकार से प्रेम के रंग में डूबकर हांस-विलास होता है ।

सोभा सारी फूलन की, चौखट कमाड़ी फूल द्वार ।
अन्दर सेज्या फूलन की, जित हक करत बिहार ।।२०।।

यहां सारी शोभा फूलों की है । चौखट, किवाड़, दरवाजे आदि भी फूलों के ही हैं । मंदिर के अंदर शैय्या भी फूलों की है, जहां श्री राजजी लीला विहार करते हैं ।

सब साज इन मंदिरन में, फूलन को बिस्तार ।
सुगन्ध इन मंदिरन की, सो जानत परवरदिगार ।।२१।।

इन मंदिरों की सारी सज्जा फूलों से ही सुशोभित है । इन मंदिरों में विद्यमान दिव्य सुगंधि को प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

इन फूलन की सुगन्ध, बेहेकत है सब ठौर ।
लेहेरा सुगन्ध सागर ज्यो, इत सुख भोगी नासिका जोर ।।२२।।

इन फूलों की खुशबू चारों तरफ महक रही है । सुगन्धि की लहरें सागर के समान हैं । उसका अखण्ड आनंद ब्रह्मप्रियाओं की नासिका ही ले पाती है ।

वाए झकोरा देत है, ल्यावत सुगन्ध सार ।
ए हारों दोर मंदिर बने, करे हर मंदिरों हक बिहार ।।२३।।

यहां वायु दिव्य सुगंध के झौंके ला रही है। इस प्रकार से मंदिरों की एक पंक्ति आयी है। इन सभी मंदिरों में श्री राज जी लीला विहार करते हैं ।

गृद चारों तरफों मंदिर, इत चौक पड़ा दरम्यान ।
तहां चबूतरा शोभित, तहां बीच चेहेबच्चा जान ।।२४।।

यहां चारों तरफ घेरकर मंदिर आये हैं, जिनके मध्य में एक चौक आया है । उस चौक के मध्य में चबूतरा शोभायमान है, जिसके मध्य में चेहेबच्चा (कुण्ड) बना है ।

तहां फूहारें उछरत, चारों कोनों पर ।
मोती बूंद ज्यों उछरत, कह्या मोमिनों की खातर ।।२५।।

चेहेबच्चे के चारों कोनों में ४ फव्वारे उछल रहे हैं, जिसकी बूंदे मोती के समान उछलती दिख रही है । इस शोभा का वर्णन सुंदरसाथ के वास्ते ही किया जा रहा है ।

इन चबूतरे कठेड़ा, ताके द्वार बने दरम्यान ।
तिन आगे पगथियां, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।२६।।

इन चबूतरों की किनार पर कठेड़ा शोभायमान है, जिसके मध्य चारों दिशाओं में कठेड़ा द्वार बने हैं। जिसके सामने सीढ़ियां उतरी हैं, इसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में रहती है ।

हर मंदिरो दरम्यान, रस्ते बने शोभाए ।
जडित फूल जड़ाव ज्यों, एह शोभा कही न जाए ।।२७।।

प्रत्येक मंदिरों के बीच में रास्ते शोभायमान हैं, जो रत्नजड़ित फूलों के समान दिख रहे हैं । यह शोभा अवर्णनीय है ।

इत कई हिंडोले दरखत में, छूटे अति सुखदाए ।
हक हादी रूहें हींचत, इत शीतल बाव शोभाए ।।२८।।

यहां वृक्षों में अनेकों हिण्डोले लटक रहे हैं, जो अत्यंत आनंददायी रूप से झूलते हैं । श्री राजश्यामा जी एवं सखियां यहां शीतल सुगंधित वायु के मध्य झूलने का आनंद लेते हैं ।

कई ठौर रमन की, इन कुंज वन में नूर ।
सब जिमी दरखत नूर के, रूहमय चेतन जहूर ॥२९॥

यहां कुंज वन में अनेकों नूरमयी स्थान रमण करने, खेलने के लिये हैं । यहां की सारी धरती व वृक्ष रूहमयी (आत्मस्वरूप), चेतन तथा नूरमयी हैं ।

फिरते इन कुंज वन में, हक हादी देखिए जब ।
सुन्दर सरूप धनीअ का, रूह अत सुख पावत ॥३०॥

इस कुंजवन में भ्रमण करते हुए श्री राजश्यामा जी को जब देखते हैं, तो धणी के सुंदर स्वरूप को देखकर आत्मा अत्यंत सुख प्राप्त करती है ।

कोई सखी संग राज के, बातां करत बनाए ।
इत कोई श्रवणा देत है, रहे औरन के सुखदाए ॥३१॥

कोई सखी श्री राजजी के साथ कई प्रकार से प्रेमभरी बातें करती है, तो कोई सखी यहां कान लगाकर सुनती है । इस प्रकार उनकी बातें सब सखियों के लिये भी सुखदायी हो जाती हैं ।

इत चाल लटकनी चलत, फिरें रूहें आगे हक ।
राज रीझत तिन ऊपर, करे बकसीस आप माफक ॥३२॥

इस समय सखियां श्री राजजी के सामने लटकनी-मटकनी चाल से चलती हैं, जिसे देखकर श्री राजजी प्रसन्न हो जाते हैं और अपने हृदय के अनुसार सुख देते हैं ।

रूहें रमें कुंज वन में, शोभित सब सिनगार ।
बस्तर भूखन अंग पर, सब जानत परवरदिगार ॥३३॥

सखियां कुंजवन में सब श्रृंगार से सुसज्जित होकर रमण करती हैं । उनके अंगों में नूरमयी वस्त्राभूषण शोभायमान हैं, जिसकी शोभा प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

ए अंग अरस के, जाकी जिमी रेती रंचक ।
कोट सूर न आवे नजरों, जिमी चाहे तिन माफक ॥३४॥

ये नूरमयी अंग परमधाम के हैं, जहां की धरती में उपस्थित छोटे से रेत के कण के प्रकाश के सामने, माया के करोड़ों सूर्य नहीं दिखायी देते हैं । उसी के अनुरूप नूरमयी धरती की भी शोभा है ।

रेती जिमी दरखत नूर के, सब रस्ते दोरी बंध ।
चले नूर नेहेरे दरम्यान में, सो कही न जाए सनंध ।।३५।।

यहां की रेती, धरती, वृक्ष सब नूर के ही हैं । सारे रास्ते पंक्ति बद्ध हैं। उन रास्तों (रौंसों) के मध्य नूरमयी नहरें प्रवाहित होती हैं, जिसकी शोभा कहना सम्भव नहीं है ।

कई मेवे कई दरखतों, याकी जात ना गिनी जाए ।
सब चेतनता अंग में, काएम सदा सुखदाए ।।३६।।

अनेकों वृक्षों में कई प्रकार के मेवे (फल) लगे हैं, उनकी जातियां (किस्में) गिनना सम्भव नहीं है । ये सभी वृक्ष सदा चेतन स्वरूप हैं और सदा ही आनंद प्रदान करते हैं ।

कई मीठे मीठे मीठरडे, कई फरसे फरसे मुख पर ।
कई खटे खटे खटूबरे, सब स्वाद भरे यूं कर ।।३७।।

कई मेवे मीठे-मीठे से भी ज्यादा मीठे हैं, तो कई मेवे मूंह में बहुत ही नमकीन-नमकीन लगते हैं । कई मेवे खट्टे-खट्टे से भी ज्यादा खट्टे हैं । इस प्रकार सभी प्रकार के स्वाद मेवों में समाहित हैं ।

कई तीखे तीखे तीखरडे, रंग तरह जुदे स्वाद ।
कई मेवे जड़ मूल में, ए तो बका भोम बुनियाद ।।३८।।

कई फल तीखे-तीखे से भी ज्यादा तीखे हैं । उनके रंग भी स्वाद के अनुसार अलग-अलग हैं । कई मेवे वृक्षों की जड़ (मूल) में हैं । यह तो अखण्ड परमधाम की शोभा है ।

कई मेवे खलडी में, कई मेवे वृक्ष डार ।
कई मेवे पातन में, सो जानत परवरदिगार ।।३९।।

कई मेवे छिलकों के रूप में हैं । कई मेवे वृक्षों की डालियों में हैं । कई मेवे पत्तों के रूप में हैं । इनकी महिमा श्री राजजी ही जानते हैं ।

कई मेवे फूलन में, कई मेवे फल होए ।
कई मेवे बेलन में, गिनती कही न जाए सोए ।।४०।।

कई मेवे फूलों के रूप में हैं, कई मेवे फल के रूप में हैं । कई मेवे बेलों के रूप में हैं । उनकी गिनती करना सम्भव ही नहीं है ।

एक पात ना गिरे वृक्ष का, नाहीं फूल फल डार ।
ए बका ठौर काएम की, सो जानत परवरदिगार ।।४१।।

वहां के नूरमयी वृक्षों से कभी एक पत्ता भी नहीं गिरता है, ना ही फल, फूल या डालियां कम होती हैं । यह तो अखण्ड परमधाम के वृक्ष हैं, जिनकी शोभा तो परब्रह्म अक्षरातीत ही जानते हैं ।

नया पुराना ना होवही, या की जोत न माए आकाश ।
सो सब्दातीत की, सो क्यूं कर कहूं प्रकाश ।।४२।।

दिव्य परमधाम में कोई नयी वस्तु (नये गुणधर्म की) पैदा नहीं होती है और कोई वस्तु पुरानी भी नहीं होती है। (किसी वस्तु की कोई कमी ही नहीं है, तो नया बनाने की क्या आवश्यकता?) उनकी तेजोमयी ज्योति आकाश में नहीं समा पाती है । उस शब्दातीत परमधाम के दिव्य प्रकाश का किस प्रकार वर्णन करें ?

सुगन्ध सब में जुदा जुदा, अति बेहेकत चेतन नूर ।
दरखत जुगत जडाव ज्यों, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।४३।।

सभी वस्तुओं में अलग-अलग प्रकार की सुगंध (खुशबु) है । चेतन व नूरमयी वस्तुएं अत्यंत महकती रहती हैं । यहां के वृक्षों की शोभा रत्नों के समान है । उसकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

इन रस्तों चौकों मिने, रूहें संग रमत हैं राज ।
अंग सो अंग मिलाएवते, होत पूरन मनोरथ काज ।।४४।।

इन वनों के मध्य रास्तों व चौकों में सखियां श्री राज जी के साथ अंग से अंग मिलाकर रमण करती हैं तथा अपने हृदय की समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करती हैं ।

जुथ चालीस खेलत, गिनती बारे हजार ।
जुदे जुदे टोले खेलत, करे जुगल सरूप बिहार ।।४५।।

१२,००० सखियों के चालीस समूह यहां अनेक प्रकार से खेल-रामतें करते हैं । अलग-अलग समूहों में युगल स्वरूप के साथ खेलते हुए लीला विहार करते हैं।

कई सुख इन हिंडोलन में, कई सुख सेज फूलन ।
कई सुख लवाजमें मंदिरों, कई सुख फूल सिंघासन ।।४६।।

इन हिण्डोलों में कई प्रकार के सुख हैं । कई सुख फूलों की शैय्या के हैं । कई सुख मंदिरों में स्थित सुख साधनों में हैं, तो कई सुख फूलों के सिंहासन में हैं ।

चौकी माचियां फूलन के, बस्तर भूखन सिनगार ।
साज़ सबे फूलन का, इत पेहेनत परवरदिगार ।।४७।।

मंदिरों में चौकी, माचियां भी फूलों की हैं, श्री राज जी वस्त्र, आभूषण आदि श्रृंगार सज्जा भी फूलों के ही धारण करते हैं ।

रूहें रमें कुंज वन में, हक के जब सनमुख ।
कोई बातां करे बनाए के, क्यू कहें जुबांए सुख ।।४८।।

सखियां कुंजवन में श्री राज जी के सम्मुख जब रमण करती हैं, तो कोई सखी धणी से नयी नयी बातें बनाकर बातचीत करती है। उस सुख का वर्णन यह झूठी जिह्वा किस प्रकार कर सकती है?

कई खिलौने कुंज वन में, इत पशु पंखी नाहीं सुमार ।
मुज़रे को आवें सबे, करत सबे इत बिहार ।।४९।।

यहां कुंजवन में सखियों के लाडले अनेक प्रकार के खिलौने (पशु-पक्षी) हैं । यहां पशु-पक्षियों का कोई पारावार नहीं है । सभी धणी के अभिवादन व दर्शन के लिये आते हैं और यहां अनेक प्रकार से विचरण करते हैं ।

ए रिझावत राज को, याहीं पावत सुख ।
हक हजूर ठढ़े रहे, देखे नूर जमल का मुख ।।५०।।

ये नूरी पशु-पक्षी श्री राजजी को रिझाते हैं, इसी में उन्हें सुख मिलता है। श्री राज जी के समीप खड़े रहते हैं और प्रियतम के तेजोमयी सुंदर स्वरूप का दर्शन करते हैं ।

क्यूं कहूं सुख रूहन के, जो रहे हक के संग ।
बस्तर भूखन हक के, कई लेहेरा उठे तरंग ।।५१।।

ब्रह्मप्रियाओं के सुख किस प्रकार कहूं, जो हमेशा श्री राज जी के साथ रहती हैं ? श्री राज जी के वस्त्राभूषणों से अनेक रंगों की तरंगे लहराती रहती

हैं।

हस हस बातें करें, ठाढी रहे सनमुख ।
कोई नूरजमाल को, रिझावत पावत सुख ॥५२॥

सखियां श्री राजजी के सम्मुख खड़ी होकर हंस-हंस कर उनसे प्रेम भरी बातें करती हैं । कोई सखी प्रियतम अक्षरातीत को प्रसन्न करके (रिझाकर) ही सुख पाती है ।

कोई हक हादी के संग चले, कोई आए रोकत राह दरम्यान ।
एह रामत रमें इन गली, खैंच चलत चतुर सुजान ॥५३॥

कोई सखी श्री राजश्यामा जी के साथ चलती है । कोई राह में आकर श्री राजश्यामा जी को रोक देती है और कहती है कि उस गली में यह रामत खेलेंगे । इस प्रकार वह चतुर सखी श्री राज जी का हाथ पकड़कर खींच ले जाती है।

कोई रमत वन में, रस रामत चढ़ी इत जब ।
हक हादी को तबहीं, खैंच के चली तब ॥५४॥

वनों में रमण करते समय जब रामत का रस (आनंद–उत्साह) बढ़ जाता है, तो वह सखी श्रीराजश्यामाजी के साथ खेलने के लिये उन्हें उसी समय खींच ले जाती है।

यूं हूज्जत हक सों करें, क्युं कहूं ताके सुख ।
कोई नूरजमाल का, देख रही इत मुख ॥५५॥

इस प्रकार सखियां श्री राज जी से अपनेपन के अधिकार (हुज्जत) से बातें करती हैं । उसके सुख किस प्रकार कहूं? कोई सखी इस समय प्रियतम अक्षरातीत का सुंदर मुखारविंद देख रही होती है ।

क्यूं कहूं सुख रूहन के, जो वन में करे बिलास ।
इनों को हक सुभान बिना, और ना रहे आश ॥५६॥

उन ब्रह्मप्रियाओं के सुख किस प्रकार कहूं, जो परमधाम के दिव्य वनों में हांस-विलास करते हैं ? उनके हृदय में प्रियतम श्री राज जी को रिझाने के अतिरिक्त अन्य कोई इच्छा नहीं होती है ।

यूं कई बिलास इन वन में, संग लेवे हक सुभान ।
तिनकी सिफत इन जिमी, क्यूं कर होए पेहेचान ।।५७।।

इस प्रकार इन वनों में सखियां प्रियतम अक्षरातीत के साथ कई प्रकार के विलास करती हुई आनंद लेती हैं । उनकी महिमा इस नश्वर जगत में किस प्रकार पहचानी जा सकती है ?

छे घड़ी लों खेलत, कई वन में करे बिलास ।
समे भया झीलन का, रहे जल क्रीड़ा की आश ।।५८।।

इस प्रकार सखियां छः घड़ी (दोप. ३ से ५-१५ बजे तक) वन में अनेक प्रकार से खेलते हुए हांस-विलास करती हैं । अब झीलना का समय हो जाता है । सखियों के हृदय में जल क्रीडा की इच्छा (उमंग) रहती है ।

एक आए अरज करी, समें इत झीलन ।
हके दिया हुकम, तब प्रफुल्लत भए मन ।।५९।।

एक सखी आकर इस समय श्री राज जी से झीलने की बात कहती है । तब श्री राज जी आदेश करते हैं, जिसे सुनकर सबके हृदय प्रफुल्लित हो जाते हैं।

आए चौक जहां खुली चांदनी, बड़ा चेहेबच्चा दरम्यान ।
तहां किए झीलना, याकी क्यूं कहूं सुख पेहेचान ।।६०।।

सभी निकुंज वन के मध्य स्थित चबूतरे पर आते हैं, जहां खुली चांदनी (आकाश) है । इस चबूतरे पर बड़ा चेहेबच्चा शोभायमान है । यहां आकर झीलना करते हैं, उन सुखों की किस प्रकार पहचान कराऊं?

एह कुंज वन को देखियो, ज्यों तुमको आवे याद ।
जो चरचों मिल बैठ के, तुमें आवे बका स्वाद ।।६१।।

इस कुंजवन की शोभा देखिये, जिससे आपको अपने निजघर की याद आये । जो आपस में मिलकर परमधाम की चर्चा करोगे तो आपको अखण्ड परमधाम की लज्जत (सुख) प्राप्त होगी।

तुमारी ठौर एह देख के, ताकी क्यूं ना करो पेहेचान ।
तुमको हक सुभान ने, दिए सब निशान ।।६२।।

अपने निजघर परमधाम की शोभा देखकर उसकी पहचान क्यू नहीं करते हो ? आपको प्रियतम अक्षरातीत ने सारा ज्ञान प्रदान कर दिया है ।

एह कुंज वन की हद, एक तलाव औऱ धाम ।
एक तरफ जमुना के, जित आवत झीलन के काम ।।६३।।

कुंजवन की सीमा इस प्रकार है । एक तरफ (दक्षिण में) हौजकौसर तालाब तक है और दूसरी तरफ (उत्तर में) रंगमहल (बटपीपल की चौकी) तक है। एक तरफ (पूर्व में) यमूना जी (पुखराजी रौंस) तक है, जहां झीलने के उद्देश्य से आते हैं।

एक तरफ अन्न वन के, तरफें कही ए चार ।
हक हादी के संग, तुमहीं करत बिहार ।।६४।।

तथा चौथी तरफ अन्न वन तक है । इस प्रकार चारों तरफ का वर्णन किया । श्री राज श्यामा जी के साथ यहां आप (ब्रह्मात्माएं) ही तो लीला विहार करते हो ।

याद करो तुम इत, ए जो तुमारे सुख ।
तुम ही हक सुभान के, क्यू बातें करते सनमुख ।।६५।।

आप याद कीजिये, यहां परमधाम में जो आपके दिव्य अखण्ड सुख हैं। आप ही प्रियतम अक्षरातीत के साथ उनके सम्मुख आकर किस प्रकार प्रेम भरी बातें करते थे ?

क्या था तुमारा चलन, इन जिमी वाहेदत ।
उहां तो बेर कछु नहीं, अब है वाही साएत ।।६६।।

इस स्वलीला अद्वैत परमधाम में आपका कैसा रहन-सहन था ? वहां तो कुछ भी समय नहीं बीता है । अभी भी वही पल वही घड़ी (साढ़े चार बजे) है ।

तुम को लैलत कदर के, देखाए तीन तकरार ।
छे दिन तामें भए, संग रहे परवरदिगार ।।६७।।

आपको महिमामयी अज्ञानता से युक्त संसार रूपी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीन ब्रह्माण्ड (ब्रज, रास व जागनी) उसी पल में दिखा दिये हैं । जिसके अंतर्गत छः दिन हुये हैं, उनमें हम प्रियतम अक्षरातीत के साथ रहे हैं ।

पेहेले तकरार एक दिन, भए दूजे में दूजा दिन ।
अब चार भए तीसरे मिने, क्यूं न देखो दिल रोशन ।।६८।।

पहले ब्रह्माण्ड (ब्रजमण्डल) में पहला दिन, दूसरे ब्रह्माण्ड (रास) में

दूसरा दिन हुआ तथा बाकी चार दिन तीसरे ब्रह्माण्ड में होते हैं । अपने हृदय में ज्ञान का उजाला करके क्यों नहीं देखते (विचार करते) ?

जब काफरों गुलबा किया, पेहेले इन तकरार ।
तब बचाए कोहोतूर तले, तुमारे परवरदिगार ।।६९।।

जब पहले ब्रह्माण्ड में काफि रों (अविश्वासियों) ने तूफान (इंद्रकोप) खड़ा किया, तब प्रियतम परब्रह्म ने कोहतूर (गोवर्धन पहाड़) के नीचे हमारी रक्षा की ।

फेर नूह तोफान से, चढाए किस्ती पर ।
रही तुमारी उमेद, रचा तीसरा तुम खातर ।।७०।।

फिर नूह तूफान के समय (योगमाया रूपी) किश्ती पर चढ़ाया । तब भी आपकी (दुःख देखने की) इच्छा बाकी रह गयी, इस कारण पुनः (पहले के समान ही) नये तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना की ।

रसूल भेजा तुम वास्ते, इन जिमी बरारब ।
तिन आगे से खबर दई, दुनी ईमान ल्याई तब ।।७१।।

तीसरे ब्रह्माण्ड में रसूल (संदेशवाहक) को अरब में आपके लिये भेजा । उन्होंने पहले से ही आखिरत में होने वाली लीला की सूचना दी । दुनिया वालों ने अनेक कथनों पर विश्वास किया ।

तुम वास्ते ल्याइयां, रसूल अलेहसलाम ।
मोमिन होए सो समझियो, खोले अल्ला कलाम ।।७२।।

रसूल अलैहिस्सलाम हमारे लिये ही क़ुर्आन रूपी संदेशा लाये हैं । जो मोमिन (ब्रह्मसृष्टि) हो, वह समझ ले, क़ुर्आन के सारे रहस्यों को स्पष्ट कर दिया गया है ।

इन जिमी जाहेर किया, हजरत ईसा इत ।
सरतें सब जाहेर की, आया उठने का बखत ।।७३।।

इस माया जगत में हजरत ईसा (श्री श्यामा जी) आये और क़ुर्आन आदि धर्मग्रंथों के रहस्यों को स्पष्ट किया । आखिरत का समय स्पष्ट करके बताया कि अब उठने का समय आ गया है ।

पैदर पे भेजे, तुम वास्ते पैगंबर चार ।
तुमहीं से तुम ऊपर, ताको क्यूं करो नाहीं बिचार ।।७४।।

एक के पश्चात एक (निरंतर) आपके लिये चार पैगम्बर (दाउद, मूसा, ईसा, मुहम्मद) भेजे । वह आपमें ही से आपके लिये ही भेजे है, उसका क्यों विचार नहीं करते हो ?

करी इमामें इमामत, इन जिमी नासूत ।
दिन पाचमां एह कह्या, सबों की हदें बताई सिफत ।।७५।।

इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) इस नासूत (मृत्युलोक) में आकर इमामत कर रहे हैं (सबको परमधाम पर सिज्दा करवा रहे हैं) । यह पांचवा दिन कहा है, जिसमें सारा ज्ञान स्पष्ट रूप से बता दिया है।

रसूल अलहेसलाम ने, करी सिफायत इत ।
हक सुभान के नजीक, सो काएम करी साएत ।।७६।।

इस प्रकार रसूल अलैहिस्सलाम ने हकी सूरत के रूप में मोमिनों की सिफायत (अनुशंसा) की तथा प्रियतम अक्षरातीत हक तआला के नजदीक मूल मिलावे में ब्रह्मात्माओं को पहुंचाकर (वहां बैठे होने का ज्ञान देकर) उस पल-घड़ी को अखण्ड कर दिया ।

छठा दिन जुमें का, होवे मोमिन जमा जब ।
सातमें दिन अरसे में, तुम उठ खड़े हो तब ।।७७।।

यह जुम्मे का छठा दिन है, जिसमें सभी मोमिन (ब्रह्मात्माए) जागृत होकर एकट्ठी हो रहे हैं और सातवें दिन में परमधाम में आप आत्माएं जागृत होकर खड़े हो जाओगे ।

एही उठना कयामत का, जब तुम बैठे जाग ।
नजीक हक सुभान के, पाया बड़ा सोहाग ।।७८।।

यही कियामत का उठना है । जब आप मूल मिलावे में प्रियतम अक्षरातीत के नजदीक जागृत हो जाओगे, तब आप सखियां (ब्रह्मांगनाएं) प्रियतम अक्षरातीत रूपी अखण्ड सुहाग को प्राप्त करेंगी।

अब आठों भिस्ते आम को, देवें हक सुभान ।
अकस तुमारे तिन में, सब पूजे कर पेहेचान ।।७९।।

उस समय आम खलक (समस्त जीव सृष्टि) को परब्रह्म अक्षरातीत आठों बहिश्तें (मुक्ति स्थान) प्रदान करेंगे । उनमें आपकी पहचान कर सभी जीव आपके प्रतिबिम्ब की पूजा करेंगे ।

क्यों न विचारत दिल में, तुम को कौन आया बुलावन ।
किन ने अरस अजीम के, द्वार खोल किए रोशन ॥८०॥

आप क्यूं नहीं विचारते कि आपको कौन जगाने आया है ? किसने परमधाम के द्वार खोलकर आपके हृदय में ज्ञान का प्रकाश किया है ?

तुम को ऐसा चाहिए, सुकन तो सुनो कान ।
त्यूं त्यूं दिल होवे रोशन, तिन ने हक की होए पेहेचान ॥८१॥

आपकी रहनी ऐसी होनी चाहिए, कि श्री राजजी की बातें कानों से सुनों, वैसे-वैसे आपका हृदय निर्मल होता जायेगा और आपको श्री राजजी की पहचान होती जायेगी ।

देख के वतन अपना, ल्याओ सुकन बजाए ।
जो चौदे तबकों में नहीं, सो हम को दिया बताए ॥८२॥

अपने निजघर परमधाम को देखकर (समझकर) राज जी के आदेश का पालन करो । जो ज्ञान चौदह लोकों में नहीं है, वह ज्ञान प्रियतम ने हमें बता दिया है ।

जो नहीं त्रेगुन को, खेल खावंद जो कोए ।
ना हीं निराकार निरंजन, ना नूर मकान में होए ॥८३॥

जो ज्ञान इन १४ लोकों के स्वामी त्रिदेवा आदि के पास भी नहीं है, जो ज्ञान ना ही निराकार, निरंजन में है और ना ही अक्षर धाम में है ।

सो सुध दई तुम को, देखाया बका ठौर ।
जो सुध नहीं नूर को, तो नाम लेउं क्यों और ॥८४॥

वह रंगमहल के अंदर की बातें (ज्ञान) आपको बता दी हैं और अखण्ड परमधाम दिखा दिया है। अक्षरातीत की जिस प्रेम लीला की पहचान अक्षर ब्रह्म को भी नहीं है, तो फिर अन्य किसी का नाम किस प्रकार लिया जाये ?

महामत कहे ए मोमिनों, निकुंज वन कह्या तुम ।
जाको वार ना पार गिनती, एह कहावत हक हुकम ॥८५॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथजी ! निकुंज वन की शोभा आपको बतायी है । इसकी शोभा व संख्या का कोई पारावार नहीं है । यह तो श्री राजजी का आदेश ही कहलवा रहा है ।

प्रकरण ८८ चौपाई ३२९२

अब कहूं हौज की

इस प्रकरण में ब्रह्मात्माओं को आह्वान किया गया है, कि हे सुंदरसाथ जी हौजकौसर तालाब की शोभा का वर्णन किया जा रहा है। ऐसा सुनहरा अवसर फिर नहीं मिलेगा । अपनी मैं खुदी को त्याग कर धाम धणी के चरणों में समर्पित हो जाइए । श्री राजजी का जोश स्वयम् ही आपको हद बेहद से परे परमधाम में ले जाएगा । वहां जाकर श्री यमुना जी में झीलना श्रृंगार कीजिए और धाम धणी की कृपा से उनका इश्क पाकर आप रंगमहल की चार चौरस हवेलियों को पार करके मुलमिलावे में श्री राज जी के चरणों में पहुँचिए और उनके चरणों में सिज्दा कीजिए।

अब कहूं हौज कौसर, अन्दर आए सको सो आओ ।
जो रूह होवे अरस की, ऐसा ना पाओ दाओ ।।१।।

अब हौज कौसर तालाब की शोभा का वर्णन करने जा रहे हैं । जो इसके अंदर आ सकता हो, आ जाये । जो भी परमधाम की आत्मा है, उसे ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा ।

एक हीरे की पाल है तिन में कई मोहोलात ।
गृद देहुरिया वन हैं, क्यूं कहूं फल फूल पात ।।२।।

हौज कौसर तालाब की सम्पूर्ण पाल एक ही नूरमयी हीरे की है । उसके अंतर्गत अनेकों महल हैं । तालाब के चारों तरफ (पाल पर) अनेकों देहुरियां एवं वन हैं । उनके फलों, फूलों व पत्तों की दिव्य जगमगाती हुई शोभा के विषय में किस प्रकार वर्णन करूं?

दुनियां चौदे तबक में, जब की भै पैदाश ।
तब के सब कोउ खोजत, ए रहि पावन की आश ।।३।।

इस चौदह लोकों के संसार में जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुयी है, तब से

सबने प्रियतम परब्रह्म के चरण कमल पाने की आशा में दिव्य परमधाम (दिव्य ब्रह्मपुर धाम) की खोज की है ।

खोज करी त्रैगुन ने, पाया नाहीं करतार ।
अक्षर ठौर ठेराए ना सके, क्यूं ए न आवे विचार ।।४।।

त्रिगुण प्रधान देवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ने भी खोज की, किंतु परमात्मा की प्राप्ति नहीं कर सके । अक्षर ब्रह्म का धाम भी नहीं दर्शा सके । उनके अंतःकरण में उसका चिंतन ही नहीं हो पाता है ।

तो नेत नेत कह्या निगमे, हम को पड़ी नाहीं गम ।
तब व्यापक को लग रहे, जहां लग हद आतम ।।५।।

इसी कारण वेदों ने भी "न इति न इति" (यह नहीं, यह नहीं) कह दिया । और स्वीकार किया कि हमारी पहुंच परमात्मा तक नहीं हो पायी है । इस प्रकार वे संसार के कण कण में व्यापक ब्रह्मसत्ता तक ही सीमित रहे (परमात्मा को निराकार मान लिया) यहीं तक संसार की आत्माओं (जीवसृष्टि) की सीमा है ।

तिन त्रैगुन की तन मात्रा से, उपजी सकल जहांन ।
नाम लिए न जाए तिन के, क्यूं कर सके पेहेचान ।।६।।

उन तीनों गुणों (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण) की तन्मात्रा (शब्द, रूप, रस, स्पर्श, गंध) से यह सारा संसार उत्पन्न हुआ है । तो फिर त्रिदेवा के समक्ष दुनिया वालों का क्या नाम लें ? आखिर वे किस प्रकार परब्रह्म की पहचान कर सकते हैं?

और जो वेदों नाम धरे, सो तो जानवे को काम ।
सो तीन सृष्ट इनों कही, ताके जुदे जुदे बताए ठाम ।।७।।

और वेदों ने जो परमात्मा के नाम रखे हैं, वे समझने का विषय है । वेदों (हिन्दू धर्मग्रंथों) ने तीन प्रकार की सृष्टि का वर्णन किया है तथा उन तीनों के अलग-अलग धाम बताये हैं ।

एक सृष्ट ब्रह्म की, दूजी ईश्वरी जान ।
तीसरी आम मलकूती, ए जो कुंन से पैदा जान ।।८।।

पहली सृष्टि, ब्रह्मसृष्टि है, दूसरी ईश्वरी सृष्टि जानिये । तीसरी जीव

सृष्टि (आम खलक) वैकुण्ठ (मलकूत) से है, जो कि परब्रह्म के कुंन (हो जा) कहने से (संकल्प से) उत्पन्न हुयी है ।

इत दई साहेदी रसूले, आए इन जिमीन ।
हुआ तिनों मरातब, जो कोई ल्याया आकीन ।।९।।

यहां संसार में आकर रसूल साहब ने एक परब्रह्म के स्वरूप की साक्षी दी । जिसने भी उनके वचनों पर विश्वास किया, उसे संसार में शोभा मिली ।

ए जो भोम अद्वैत, जाको कहा वाहेदत ।
तहां सबद पोहोंचे नाहीं, पैदा दुनी कसरत ।।१०।।

यह जो स्वलीला अद्वैत परमधाम है, जिसे क़ुर्आन में वहदत कहा गया है । वहां दुनिया के शब्द नहीं पहुंचते, चाहे दुनिया वाले कितना ही प्रयास करें ।

हुआ म्याराज महंमद पर, आया जबराईल जब ।
पांउ मले मुवारक, आस्ते जगाया तब ।।११।।

जब मुहम्मद साहब पर मेअराज हुआ था, और उन्हें ले जाने जिब्रील (धनी का जोश) आया था, तब उसने मुहम्मद साहब के मुबारक पांव मलते हुए उन्हें धीरे से जगाया ।

उठो बखत उठने का, नाहीं सोवने का काम ।
तब कह्याा रसूल ने, मुदत चाहिए इस ठाम ।।१२।।

और कहा कि "उठिये, जागने का समय हो गया है, अभी सोने का समय नहीं है ।" तब रसूल साहब ने कहा कि "मुझे अभी कुछ समय चाहिए ।"

मूसे को मुदत दई, चालीस रोज की तब ।
मोको अब केहेत हो, कैसा है कहो सबब ।।१३।।

मूसे पैगम्बर को चालीस दिन की मुद्दत (समय) दी थी और मुझसे अभी तुरंत चलने के लिये कह रहे हो । कहो, कैसा आवश्यक कार्य है ?

वह कलीम अल्ला था, खुदाए की था जुबांन ।
कह्याा खुदा का वह कहे, ए ही इन की पेहेचान ।।१४।।

तब जिब्रील ने कहा, कि "मूसा कलीमुल्लाह थे, वह खुदा की जुबां थे । वे खुदा तआला का कहा हुआ ही कहते थे, उनकी यही पहचान थी ।"

तू हबीब अल्लाह है, तेरा कहा करे खुदाए ।
तोको मुदत नाही चाहिए, सिताब पोहोंचो धाए ।।१५।।

किंतु आप तो हबीबुल्लाह हैं, आपके कहे अनुसार ही खुदा तआला भी करते हैं। आपको समय नहीं लेना चाहिए, तुरंत ही शीघ्रता से पहुंचिये ।

भए वजू करने में मसगूल, बुराक खड़ा देखे इत ।
मके से मदीने ताई, दोए कदम नहीं भरे जित ।।१६।।

मुहम्मद साहब वुजू (हाथ-पैर धोने) में व्यस्त हो गये, फिर सामने बर्राक (एक जानवर) को खड़े देखा । ये इतना बड़ा था कि मक्के से लेकर मदीने तक उसके लिये दो कदम भी चलने की आवश्यकता ना हो ।

देखे सत्तर बुराक, हर आगे सत्तर हजार ।
एह हुआ हुकम, चाह्या होए इन पर सवार ।।१७।।

ऐसे ७० बर्राक खड़े देखे, उनमें से प्रत्येक के आगे ७०-७० हजार बर्राक और थे । तब उन्हें हुक्म हुआ कि इस बर्राक पर सवार हो जायें ।

तब सरक दूर खड़ा हुआ, मैं रखता ना ताकत ।
जो मोंसो कौल करे, बखत रोज क्यामत ।।१८।।

तब बर्राक खिसक कर दूर खड़ा हो गया और कहने लगा, कि "मेरी सामर्थ्य नहीं है । यदि मुझसे मुहम्मद वायदा करें कि जब कियामत का दिन होगा-

तब सवार मुझ पर होए, तो अब हो मो पर सवार ।
ना तो मैं ना चाहत, तो तब ऐसा किया विचार ।।१९।।

तब भी मुझ पर सवार होंगे, तो अब भी आप मुझ पर सवार होईये । नहीं तो मैं भी आपको सवार करना नहीं चाहता । तब मुहम्मद साहब ने विचार किया ।

तब कौल किया तिन सों, मैं तुझ पर सवार होऊं इत ।
जब आवे दिन उठन का, पोहोंचे हक साएत ।।२०।।

तब मुहम्मद साहब ने उनसे वायदा किया, कि जब कियामत का समय नजदीक आ जायेगा, परब्रह्म हक तआला के समीप उठने (परमधाम में जागृत होने) का दिन आयेगा, तब मैं तुझ पर सवार होऊंगा ।

तब सवार हुए रसूल, उन बुराक ऊपर ।
छोड़ नासूत चढ़े आसमान, भई जमा खातर ।।२१।।

तब रसूल साहब उस बर्राक पर सवार हुए । नासूत (मृत्युलोक) छोड़कर आकाश में पहुंच गये । यह सब ब्रह्मसृष्टियों को जागृत कर इकट्ठा करने के लिये खुदा के हुक्म से हुआ ।

आई अकसा मेहेजद, समारी दाउद की तब ।
रहे द्वार आगे एक पत्थर, तिन पर पांउ धरया जब ।।२२।।

तब वे दाउद के द्वारा बनायी हुयी अक्शा (अक्शी महराब वाली) मस्जिद में पहुंचे । उसके द्वार के सामने एक पत्थर था । जब मुहम्मद साहब ने उस पर अपने मुबारक पांव (मंगलकारी चरण) रखे -

तब वह पत्थर पुकारया, किन पांउ धरया मुझ पर ।
मैं चाहता नाहीं किन को, मेरी जमा करो खातर ।।२३।।

तब उस पत्थर ने पुकार कर कहा, कि किसने अपना पांव मुझ पर रखा है ? मैं नहीं चाहता कि कोई भी मुझ पर पैर रखे । मुझे अपना नाम बताकर मेरी तसल्ली करो ।

मैं सत्तर हजार बरस का, मैं पड़ा मेहेजद के द्वार ।
काहूं पांउ ना पड़ा बुजरक का, मैं काहूं को चाहत नाहीं लगार ।।२४।।

मैं ७० हजार वर्ष से मस्जिद के द्वार पर पड़ा हूं । कभी भी किसी महान् शख्सियत का पैर मुझ पर नहीं पड़ा । मैं किसी को भी नहीं चाहता हूं कि -

के मुझ पर कोउ, अपना धरे चरन ।
तब कह्या जबराइले, के रसूल अल्ला रोशन ।।२५।।

कि कोई भी मुझ पर चरण रखे । तब जिब्रील ने कहा ये अल्लाह के रसूल मुहम्मद साहब हैं ।

तू अमर रहेगा, कबूं ना मरना होए ।
जो राह दे रसूल को, ल्यावे खबर बका की सोए ।।२६।।

अगर तू रसूल साहब को मार्ग प्रदान करे और वे अखण्ड परमधाम (अर्शे आज़म) का ज्ञान ले आयें, तो तू भी अमर हो जायेगा, कभी भी मरेगा

नहीं ।

तब पांव धरने दिया, इन पत्थर अकस के द्वार ।
छोड़ा एक आसमान को, फिरस्ते देखे बेसुमार ।।२७।।

तब अक्शा मस्जिद के द्वार पर स्थित उस पत्थर ने मुहम्मद साहब को अपने ऊपर मुबारक पांव रखने दिया । इस प्रकार पहले आसमान को पार किया । मार्ग में असंख्यों फरिश्तों (देवी देवताओं) के दर्शन किये ।

फेर छोड़ा दूसरे आसमान को, फिरस्ते के तन तरह दोए ।
आधा तन बिजलीअ का, आधा तन आग का देख्या सोए ।।२८।।

फिर दूसरे आसमान को पार किया । तब यहां (तीसरे आसमां में) फरिश्ते (देवगणों) का शरीर दो तरह का था । आधा तन बिजली का था और आधा तन अग्नि का था ।

ना आग बिजली को खाए, ना बिजली आग को खाए ।
इत सबे पढ़ते थे, चौथे आसमान पोहोंचे आए ।।२९।।

ना अग्नि बिजली को खाती थी, ना ही बिजली अग्नि को खाती थी । यहां सब पढ़ते थे । इस प्रकार तीसरे आसमान को पार करके चौथे आसमान में पहुंच गये ।

तहां देखे फिरस्तन को, खुदा जाने ताकी सुमार ।
सबों दरूद रसूल को, इत किया जहूर ।।३०।।

वहां अनेकों फरिश्तों को देखा । परमात्मा ही उनकी संख्या जानते हैं । सभी फरिश्तों ने रसूल साहब को शुभकामना प्रदान करते हुए खुदा से प्रार्थना की (खुदा आपको सलामत रखे) ।

करी इत आए के महंमदे, नजरों फिरस्ते एक सखत ।
बैठा सबज कुरसी पर, रखी आगे तखती इत ।।३१।।

यहां आकर मुहम्मद साहब ने एक फरिश्ते पर सख्त नजर की, जो एक हरे रंग की कुर्सी पर बैठा था, उसके आगे एक सूचना पट रखा था ।

एह कौन फिरस्ता, जिन मुझे ना किया सलाम ।
कह्या जबराइल ने, रहे हुकम खुदा के काम ।।३२।।

मुहम्मद साहब ने जिब्रील से पूछा कि यह कौन फरिश्ता है, जिसने मुझे

सलाम नहीं किया ? तब जिब्रील ने कहा, कि यह परमात्मा के हुक्म का पालन करने के लिये (अजराईल फरिश्ता) है ।

तब कह्या सलाम रसूल ने, बोल्या हुकम से सलाम ।
मैं रूहें कबज करता हूं, मैं रहूं हुकम के काम ॥३३॥

तब रसूल साहब ने उसे सलाम कहा, तब फरिश्ते ने कहा कि खुदा के हुक्म से आपको भी सलाम । मैं सबके प्राण निकालता हूं और खुदा के हुक्म से ये कार्य करता हूं ।

रहूं मुस्ताक तेरे दीदार का, रद बदल पूछी जब ।
उत्तर उन सब दिया, निसा हुई तब ॥३४॥

जब वार्तालाप हुआ, तब उस फरिश्ते ने कहा कि मैं तो आपके दीदार का इच्छूक रहता हूं । तब मुहम्मद साहब ने उनके सभी प्रश्नों का उत्तर दिया, जिससे उस फरिश्ते का मन संतुष्ट हुआ ।

कह्या रूहें कबज क्यों करता है, आज कछू करी कबज ।
के मेरा एक बहाना है, देखाऊ इन कबज ॥३५॥

मुहम्मद साहब ने कहा, कि आप रूहें (प्राण) क्यूं कब्ज (आधीन) करते हो (निकालते हो) ? क्या आज भी कुछ लोगों के प्राण निकाले हो ? उस फरिश्ते ने कहा कि मैं तो निमित्त मात्र हूं, जो दुनिया को प्राण निकालकर दिखाता हूं ।

आज कछू करी कबज, तब कह्या मैं बीस रूहें करी अब ।
जो हथेली खोल देखिया, तहां कछू ना देख्या तब ॥३६॥

तब मुहम्मद साहब ने पुनः पूछा कि क्या आज भी किसी के प्राण निकाले हो ? तब फरिश्ते ने कहा, कि आज मैंने अब तक २० रूह (प्राण) निकाला हूं । जब फरिश्ते ने अपनी हथेली खोलकर दिखाया तो वहां कुछ भी नहीं दिखायी दिया ।

तब कह्या अजराईल ने, सांचा तूं आया इन पर ।
ए तो कछूए है नाहीं, तुम आए किन खातर ॥३७॥

तब अजराईल फरिश्ते ने कहा, कि इन झूठे दुनिया वालों के लिये आप सच्चे (अविनाशी) पैगम्बर आये हो । ये दुनिया तो अस्तित्वहीन है, आप यहां किसके लिये आये हो ?

पैगंबर पांच में आसमान, नजर करी जब ।
फिरस्ते के पांउ तले सात में, तबके कई देखे तब ।।३८।।

जब पैगम्बर साहब ने पांचवे आसमान पर पहुंच कर नजर करी, तब एक फरिश्ता (वैराट पुरूष) दिखायी दिया, जिसकी कमर के नीचे पांव तक सात लोक (तबक) थे। ऐसे कई लोक उन्हें दिखायी दिये ।

ए हजार मोह हर एक, हर मोह हजार जुबांन ।
सब सिफत करे खुदाए की, रखते दिल पेहेचान ।।३९।।

उस फरिश्ते (वैराट पुरूष) के हजार मूंह थे, प्रत्येक मूंह में हजार जिह्वा थी । सभी जिह्वा परमात्मा की ही स्तुति करते थे, और अपने दिल में परमात्मा की पहचान रखते थे ।

महंमद जबराइल पोहोंचे, छठे आसमान ।
सिर इनों के हवा मिने, जाको थाह गेहेरे पांऊ जान ।।४०।।

इसके पश्चात् मुहम्मद की रूह व जिब्रील छठे आसमान पर पहुंचे । वहां के फरिश्ते का सिर हवा (निराकार) में था और पावं गहराई (पाताल) में था ।

कह्या एक इन से भी बुजरक, फिरस्ते पैदा कोए ।
तब कह्या जबराइलें, ऐसे फिरस्ते होए ।।४१।।

तब उसे देखकर मुहम्मद साहब ने कहा कि क्या इससे भी बड़ा कोई फरिश्ता पैदा हुआ है ? तब जिब्रील ने कहा कि ऐसे फरिश्ते भी हैं... ।

जो उन के नाक पैठ निकसे, तो इन को ना रहे खबर ।
पोहोंचे सातमें आसमान, फिरस्ते अरस धरया सिर पर ।।४२।।

जिनके नाक में से प्रवेश करके दूसरे नाक से निकल जाओ तो उनको पता भी ना चले । इसके बाद वे सातवें आसमान में पहुंचे । वहां देखा कि एक फरिश्ते ने अपने सिर पर अर्श (धाम) को धारण कर रखा था ।

इनों को दोनों हाथ, लगे हवा में जाए ।
जब से पैदा ए भए, एही उमेद दिल ल्याए ।।४३।।

इस फरिश्ते के दोनों हाथ हवा में थे । जब से ये फरिश्ते पैदा हुए हैं, उनके दिल में यही उम्मीद थी।

तेरी उम्मत की बकसीस, चाहत है दिल में ।
पैगंमर नालेन पाऊं , उतारन लगे तिन से ॥४४॥

तेरी उम्मत (ब्रह्मसृष्टि-मोमिन) की कृपा की चाहना दिल में है और इच्छा है कि पैगम्बर के जूते की धूलि पाउं । यह सुनकर मुहम्मद साहब अपने जूते उतारने लगे ।

तब हुआ हुकम, आओ नालेन समेत इत ।
मूसा को हुकम हुआ, कोहोतूर सीना पर जित ॥४५॥

तब मुहम्मद साहब को उस फरिश्ते ने कहा, कि आप जूता ना उतारिये, जूते सहित आ जाईये । मूसा पैगम्बर को कोहतूर पर्वत पर (जूता उतारने का) हुक्म हुआ था... ।

तुझ को इस वास्ते कह्या, तेरे पांऊ खाक जे ।
पोहोंचे इन अरस को, तो पाक होवे ए ॥४६॥

आपको इस कारण जूते पहनकर आने कहा जा रहा है कि आपके पांव की खाक (धूलि), यदि मिल जाये, तो मैं पवित्र होकर, इनके अर्श में पहुंच जाये ।

मूसे को इस वास्ते कह्या, खाक पोहोंचावन को ।
नाला ना पाऊ से उतारे, इन मतलब के मो ॥४७॥

मूसा पैगम्बर को इसी कारण जूता उतारने कहा था कि आपकी चरण धूलि पाना है । आप भी यदि जूते उतार देंगे तो आपके जूते की धूलि हमें कैसे मिलेगी ?

कलीम और हबीब में, बड़ा है फरक ।
तू कहे सो मैं करों, वह कहे मेरे माफक ॥४८॥

कलीमुल्लाह और हबीबुल्लाह में बहुत अंतर होता है । हबीबुल्लाह का अर्थ होता है कि आप जो कहेंगे, मैं (खुदा) वही करूंगा, जबकि कलीमुल्लाह का अर्थ होता है कि वह मेरे (खुदा के) कहे अनुसार कहता है ।

हुआ हुकम जबराईल को, ले जा अपने मुकाम ।
तहां देख्या एक दरखत, सेजदा किया उस ठाम ॥४९॥

तब जिब्रील को आदेश हुआ कि इसे अपने स्थान पर ले जा । तब

आगे चलने पर (सामने) एक वृक्ष (सिद्रतुल मुंतहा-अक्षरधाम) दिखायी दिया । वहां उसने सिज्दा बजाया ।

पूछा एह कौन मुकाम, जबराईले किया जबाब ए ।
जब का मैं तब का, एह ठौर बगस्या जे ॥५०॥

मुहम्मद साहब ने पूछा कि यह कौन सा ठिकाना है ? तब जिब्रील ने जवाब दिया, कि जब से मैं हूं, तब से यह स्थान है । जो मुझे हक तआला ने बख्शा है ।

जबराईल हुकम से, चल्या एक कदम आगे ।
राह काटी पांच सौ साल की, बैठ गया इत ऐ ॥५१॥

मुहम्मद साहब के आदेश से जिब्रील एक कदम ही आगे बढा था कि उतने में ही पांच सौ वर्ष व्यतीत हो गये, और वह वहीं बैठ गया।

कह्या चल आगे उहां, जले मेरे पर ।
आगे इन तजल्ली के, रहे ना काहूं की खातर ॥५२॥

मुहम्मद साहब ने कहा कि आगे चल । जिब्रील ने कहा, कि वहां मेरे पंख जलते हैं । नूरतजल्ला की तजल्ली (परब्रह्म के इश्क के तेज) के समक्ष कोई भी नहीं ठहर सकता है ।

आया रफ रफ का तखत, रसूल बैठे बीच इशक ।
उहां से चले अकेले, जाए पोहोंचे हजूर हक ॥५३॥

तब रफ-रफ (इश्क) का तख्त (सिंहासन) आया, जिसमें रसूल साहब बैठकर आगे अकेले जाते हैं और जाकर हक तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) के समीप (मूल मिलावे-हाहूत में) पहुंच जाते हैं ।

तहां हक सों रद बदल, करी रसूले जब ।
उत्तर दिया हक ने, सब बातों का तब ॥५४॥

वहां पहुंचकर परब्रह्म हक तआला से रसूल साहब ने जब वार्तालाप किया, तब हक तआला ने उनकी सारी बातों का उत्तर दिया ।

बेवरा तीनों उमत का, देखाया हक सुभान ।
एक आम खास खासल खास, कर दई सब पेहेचान ॥५५॥

तीनों प्रकार की उम्मत (सृष्टि) का विवरण हक सुब्हान तआला ने

बताया । एक आम खलक (जीव सृष्टि), दूसरी खास खलक (ईश्वरी सृष्टि), तथा तीसरी खासुलखास (ब्रह्म सृष्टि) - इन सबकी पहचान करा दी ।

फरज पांच बखत की, हुआ ऊपर आम ।
रेहेमत की नजर से, भेजो भिस्त में इस ठाम ।।५६।।

आमखलक (जीव सृष्टि) के ऊपर पांच समय की नमाज़ का फर्ज रखा, और कहा कि अपनी दया दृष्टि से उन्हें बहिश्तों में अखण्ड मोक्ष दूंगा ।

और मोतन पर, कुलफ कह्या इन ठौर ।
सो खासल खास उमत, उनकी बात है और ।।५७।।

और रसूल साहब ने उस स्थान (मूल मिलावे) में मोतियों (ब्रह्मप्रियाओं) के मूंह में ताला (फरामोशी) देखा । वे ही खासुलखास उम्मत हैं, जिनकी बातें निराली हैं ।

सब पैदा हुआ इन वास्ते, रसूल आया ऊपर इन ।
सो तो बारे हजार है, गिनती कही मोमिन ।।५८।।

ये सारा संसार उन्हीं ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के लिये बनाया गया है । रसूल साहब भी उन्हीं के वास्ते आये हैं । उन ब्रह्मप्रियाएं (मोतियों) की संख्या १२००० कही गयी है ।

ए तिन की कही सिफाएत, खुले अरस अजीम के द्वार ।
हके लिखी इसारत इनो पर, सो एही खोलनहार ।।५९।।

इन्हीं की सिफायत मुहम्मद (हकी सूरत) कर रहे हैं और तारतम ज्ञान के द्वारा परमधाम के द्वार (रहस्य) खोल रहे हैं । इन्हीं ब्रह्मात्माओं के लिये प्रियतम अक्षरातीत (हक तआला) ने क़ुर्आन ए पाक में सांकेतिक कथन लिखे हैं । अतः उनके गूढार्थ वे ही स्पष्ट करेंगे ।

ए ही वारस अरस के, ए ही खावंद इसलाम ।
रेहेमत उतरी उनों वास्ते, ए ही देवे खास को आराम ।।६०।।

वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही परमधाम के वारिस हैं । वे ही दीने इस्लाम हकीकी (सत्य-शांति के मार्ग-तारतम ज्ञान) के स्वामी हैं । परब्रह्म परमात्मा की कृपा (तारतम ज्ञान) उन्हीं ब्रह्मात्माओं के कारण अवतरित हुयी है । वे ही खास उम्मत (ईश्वरी सृष्टि) को परमधाम के ज्ञान के द्वारा सुख प्रदान करेंगे ।

एही कुरान के वारस, ए ही खोले कलाम ।
सब उमेदवार इन के, एही भिस्त राह बतावे आम ।।६१।।

वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही कुर्आन के असली वारिस (उत्तराधिकारी) हैं । वे ही कलाम अल्लाह के रहस्य खोलेंगे । सारी दुनिया उनके प्रति ही आशान्वित थी, कि वे मोमिन ही सारी दुनिया (आम खलक) को एक परब्रह्म की पहचान कराके बहिश्त (मोक्ष) की राह प्रशस्त करेंगे ।

रहे असराफील इन में, नूर अकल जाग्रत ।
हक सुभान इनों, उठाया चाह्या हक क्यामत ।।६२।।

उन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के अंदर अश्राफील (अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि) रहती है । प्रियतम अक्षरातीत इन्हें इस कियामत की पवित्र बेला में तारतम ज्ञान देकर जागृत करना चाहते हैं ।

काएम करी सिफायत, इन खास गिरो मोमिन ।
तो निशान क्यामत के, इनों किए देखाए रोशन ।।६३।।

इनकी सिफायत करके (ब्रह्मज्ञान देकर) इन खासुलखास मोमिनों को अखण्ड परमधाम में बैठे होने का ज्ञान करा दिया है। इसी कारण कियामत की सांकेतिक निशानियां इन्हें दिखाकर, उनके हृदय में ज्ञान का प्रकाश कर दिया ।

इनों के वास्ते आईयां, उतरे ईसा चौथे आसामान ।
तो अरस के गलियों की, ए ही कर दे पेहेचान ।।६४।।

इन्हीं मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये ईसा रूहूल्ला (श्री श्यामाजी) चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से उतरे हैं । और परमधाम के गली-गली की पहचान करा रहे हैं ।

उजू करना हौज कौसर मे, एह मोमिनों का काम ।
राह बतावें औरों को, बीच दीन इसलाम ।।६५।।

हौज कौसर ताल में ध्यान द्वारा स्नान करना ही ब्रह्मात्माओं की बंदगी है । वे मोमिन अन्य लोगों को भी शाश्वत सुख व शांति का मार्ग बताते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, देखो हौज कौसर तुम ।
इन जिमी देखावत, हक सुभान का हुकम ।।६६।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आप हौज कौसर ताल की

शोभा देखिये । इस नश्वर संसार में आपको श्री राज जी का आदेश ही यह दिखा रहा है ।

प्रकरण ८९ चौपाई ३३५८

हौज के ताल की पाल

इस प्रकरण में रंगमहल की दक्षिण दिशा में सुशोभित हौजकौसर तालाब का विस्तृत वर्णन है। ढपी–खुली यमूना जी एक महल–एक चबूतरा का वर्णन करते हुए हौज कोसर ताल तक पहुंचे हैं। ताल को घेर कर आए बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारों, देहुरियों और कटी पाल का मनोहारी वर्णन है ।

ए जो ताल की केहेत हों, देखो मोमिनों तुम ।
इन जिमी देखावत, हक सुभान का हुकम ।।१।।

यह जो हौजकौसर ताल की शोभा का वर्णन किया जा रहा है, उसे सुंदरसाथ जी ध्यानपूर्वक देखिये (समझिये) । इस मायावी जगत में आपको श्री राजजी का आदेश ही सब दिखा रहा है ।

ए जो गृद चबूतरा, रहे ठौर पुखराज ।
हांस हजार तिनकी कही, जित रमने को आवत राज ।।२।।

यह जो पुखराज पहाड़ के नीचे हजार हांस का गोल चबूतरा है, वहां श्रीराजजी, श्यामा जी व सखियों के साथ रमण करने के लिये आते हैं ।

द्वार सब चबूतरे के, पड़े जे ऊपर ।
सब ठौरों के जानिए, इत जमा रखो खातर ।।३।।

चबूतरे की चारों तरफ किनार पर (प्रत्येक हांस की संधि में) कठेड़ा द्वार आये हैं । इसी प्रकार सभी जगह समझिये ।

तिन के तले जे चली, तिन पुखराज लिया घेर ।
दोए सीढ़ियों को फिरवली, आया पहाड़ी को फेर ।।४।।

इस चबूतरे के नीचे (सामने) पुखराज पहाड़ को चारों तरफ से घेरकर पुखराजी रौंस आयी है, जो दोनों घाटी की सीढ़ियों को घेरकर पुनः पहाड़ की उत्तर में आ गयी है ।

चली कुंड को फेर के, आई तरफे दोए ।
ए जो ढांपी चली जमुना, बिना मोमिन न जाने कोए ।।५।।

यह पुखराजी रौंस मूल कुण्ड की दोनों तरफ (उत्तर व दक्षिण) घूमकर आयी है । यह जो यमुना जी (प्रकट होने के बाद कुछ दूर तक) ढपी हुई है, उसकी शोभा ब्रह्मात्माओं के सिवा अन्य कोई नहीं जानता है ।

पटी जमुना जो चली, चली जो तिन को दोनों तरफ ।
ए जोत जवेरों झलकत, रहे मोमिन दिल सरफ ।।६।।

यमूना जी जहां पटी (ढकी) हुई आगे बढ़ी है, वहां भी उसके दोनों तरफ (उत्तर–दक्षिण में) पुखराजी रौंस आयी है । यहां पाल पर आये नूरमयी स्तम्भों से जवाहरातों की ज्योति जगमगा रही है । इसे समझने की शक्ति ब्रह्मसृष्टि के दिल में ही होती है ।

चली दोए हार दरखत की, एक पेड़ लगे किनार ।
एक हुआ दरम्यान में, इत हक हादी करें बिहार ।।७।।

पुखराजी रौंस पर वृक्षों की दो पंक्तियां विद्यमान हैं । वृक्षों की एक पंक्ति बाहरी किनार पर है और एक पंक्ति बाहरी किनार की पंक्ति व पाल के बीच में है । यहां श्री राज श्यामा जी व सखियां प्रेम व आनंद से परिपूर्ण अनेक प्रकार की लीलाएं करते हैं ।

ए तीन हिस्से चबूतरा, दोए लिए दोए दरखत ।
एक हिस्सा और रह्या, सो हद मोहोलों इत ।।८।।

पाल की बाहरी तरफ पुखराजी रौंस के तीन हिस्से हैं । दो हिस्से दो वृक्षों ने लिये हैं और एक हिस्सा पाल की दहलानों तक होता है (५०० मंदिर में पुखराजी रौंस व २५० मंदिर में वन की रौंस है) ।

दोनों तरफो ए ही जुगते, ऐसे ही छाहां बन ।
ढांप लिया इनों मोहोल को, सो झलकत नूर रोशन ।।९।।

यमूना जी के दोनों तरफ इसी प्रकार पुखराजी रौंस की शोभा आयी है। इसी प्रकार दोनों तरफ से पुखराजी रौंस पर आये बड़ोवन के वृक्षों ने (ढपी यमूना की चांदनी पर) छाया प्रदान की है । दोनों तरफ से वृक्षों की डालियों ने आकर दोनों पालों पर आये महलों (दहलानों) को ढांप लिया है, जिसकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ झलक रही है ।

ऐसे ढापी जहां लों, मोहोल तले वहे इत ।
आगे इन के खुली चली, सो ए कहूं जुगत ॥१०॥

इस प्रकार जहां तक यमूना जी ढपी है, वहां तक महल (दहलानों के छत) के नीचे यमूना जी का जल प्रवाहित हो रहा है। मरोड़ तक की आधी दूरी के बाद यमूना जी के ऊपर छत नहीं है (खुली है) । अब उसकी शोभा का वर्णन किया जायेगा।

जहां से जमुना खुली, चार थम्भ हार चले दरम्यान ।
दरम्यान जे हुती, सो मरोड़ खाए लों करो पेहेचान ॥११॥

जहां से यमूना जी खुली चली है, उसके दायें-बायें दोनों ओर पालों पर (उसी प्रकार) स्तम्भों की २-२ हारें चली हैं । इनके मध्य में यमूना जी के ऊपर छत नहीं आयी है, मरोड़ तक ऐसी ही शोभा है, उसकी पहचान कीजिये ।

जहां एक मोहोल, एक कह्या चबूतरा इत ।
इहां चबूतरा लग चल्या, जमुना दोनों किनारों जित ॥१२॥

यमुना जी के ईशान कोण के मोड़ से केलपुल तक यमूना जी के दोनों तरफ पाल पर क्रमशः एक महल व एक चबूतरा (कुल ५ महल व ४ चबूतरा) आये हैं ।

सो आए लगा ताल को, घेर लिया गृदवाए ।
बेवरा इन का पेहेले कह्या, अब ताल को देखो आए ॥१३॥

यह पाल इसी प्रकार हौज कौसर ताल तक आया है और ताल की ढलकती पाल से लगकर चारों तरफ घेरकर आया है । इसका विवरण पहले कह दिया है । अब आकर ताल की शोभा देखिये ।

पांच हार दरखत की, ढांप लई ताल की पाल ।
ए नूर जवेरों झलकत, देखत होईए खुसाल ॥१४॥

बड़ोवन के वृक्षों की पांच हारों ने हौजकौसर ताल की पाल (चौरस व ढलकती) को चारों तरफ से ढांप लिया है, जिसकी छांव तले नूरी जवाहरातें जगमगा रहे हैं, जिसे देखकर अत्यंत आनंद होता है ।

एक पेड़ लगा चबूतरे, हद किनार लों जान ।
दूसरा भया दरम्यान में, तीसरा हिस्सा पाल लगा ताहे पेहेचान ॥१५॥

पहली पंक्ति का वृक्ष ढलकती पाल के किनारे (यमूना जी के पाल से लगकर) आया है । दूसरी पंक्ति का वृक्ष संक्रमणिक सीढ़ियों से लगते हुए ढलकती पाल पर आया है । तीसरी पंक्ति का वृक्ष संक्रमणिक सीढ़ियों से लगकर चौरस पाल पर आया है, उसे पहचानिये।

एह चबूतरा हिस्सा कह्या, एकासी देख बिचार ।
चौपन लों दो हार दरखते, एकासी लों पाल सुखकार ।।१६।।

इस ढलकती पाल (चबूतरे) के ८१ हिस्से (७५० मंदिर) कहे गये हैं । जिनमें से ५४ (५०० मंदिर) हिस्से में वृक्षों की दो हारें हैं । कुल मिलाकर ८१ हिस्से में सुखदायी ढलकती पाल है (ढलकती पाल वैसे तो ५०० मंदिर की है, किंतु यमूना जी की पाल मिलने से उसकी कुल चौड़ाई ७५० मंदिर हो जाती है)।

पाल एकासी ऊंची हिस्से, ऊंची चढ़ती होए ।
ऊपर एकासी बाटे चौड़ी, कहूं बेवरा दरखत सोए ।।१७।।

ढलकती पाल से भोम भर ऊंची जो चौरस पाल है, वह भी ८१ हिस्से (७५० मंदिर) चौड़ी है (यहां कटी पाल की गिनती नहीं की गयी है) । उस पर आये वृक्षों का विवरण कहता हूं।

चढ़ता पाल एक दरखत, कह्या तीसरी हार ।
सत्ताइस हिस्से इन की, कह्या चौथी हार किनार ।।१८।।

चौरस पाल पर संक्रमणिक सीढ़ियों से लगती हुई वृक्षों की एक पंक्ति आयी है, जो वृक्षों की तीसरी पंक्ति है । इसके पश्चात् २७ हिस्से (२५० मंदिर की जगह) के बाद वृक्षों की चौथी पंक्ति है ।

अब कहूं ऊ पर पाल के, जो दरखत की हार दोए ।
पाल चौड़ा हिस्से एकासी, बिना मोमिन न जाने कोए ।।१९।।

चौरस पाल पर वृक्षों की जो दो हारें (पंक्तियां) आयी हैं, अब उसके आगे की शोभा कहूंगा। चौरस पाल के ८१ हिस्से (७५० मंदिर की चौड़ाई) आये हैं । उसे ब्रह्मात्माओं के सिवा अन्य कोई नहीं जानता है ।

ए जो चौपन हिस्से कहे, तहां दोए हार दरखत ।
भया चौक चौपन दरम्यान में, सत्ताइस ताल तरफ इत ।।२०।।

ये जो चौरस पाल पर (बाहर की तरफ से) ५४ हिस्से (५००

मंदिर)आये हैं, उनमें वृक्षों की दो पंक्तियां (चौथी व पांचवी पंक्ति) आयी हैं । इस प्रकार चौरस पाल पर ५४ हिस्से (५०० मंदिर) के अंतर्गत वृक्षों की तीन पंक्तियां आयी हैं, बाकि २७ हिस्से (२५० मंदिर) वृक्षों की पांचवी पंक्ति के भीतरी (ताल) तरफ (कटी पाल तक) आये हैं ।

इन पांचों हार में, पेड़ चौक इत चार ।
तले सोले ऊपर पाल लों, ताको मोमिन करो सुमार ।।२१।।

वृक्षों की इन पांचों पंक्तियों के मध्य चौकों की चार हारें आयी हैं । इस प्रकार की शोभा (दोनों तरफ से घूमकर) सोलह देहूरी के घाट तक आयी है। उसकी संख्या का विचार कीजिये सुंदरसाथजी ।

ऐसे ही चौक सब ठौरों, ताल को फिरवले गृदवाए ।
ऐसे ही दरखत बने, ऊपर एकै छात दिखाए ।।२२।।

इसी प्रकार वृक्षों के मध्य चौक सभी जगह बने हैं, ताल को चारों तरफ से घेरकर दोनों पालों पर उसी प्रकार वृक्षों की पांच हारें आयी हैं । उन सबकी डालियों, फुल व पत्ते मिलने से ऊपर एक ही चंदवा के समान छत दिखायी देती है ।

इन ताल को घेर लिया, वन छाहया सुखकार ।
हक हादी आए के, रूहों सो करो बिहार ।।२३।।

इस प्रकार तालाब को चारों ओर से वनों ने घेर लिया है, जिनकी सुखदायी शीतल छाया पाल पर हो रही है । यहां श्री राज श्यामा जी आकर सखियों के साथ लीला विहार करते हैं ।

कह्या चार चौको का बेवरा, सुनो मोमिनों तुम ।
एह तुम को देखावत, हक सुभान का हुकम ।।२४।।

इस प्रकार वृक्षों की पांच पंक्तियों के मध्य चार चौकों का वर्णन किया है, उसका विवरण ध्यानपूर्वक सुनिये सुंदरसाथ जी । यह आपको श्री राज जी का आदेश ही दिखा रहा है ।

एक हार चौकन की, तले चबूतरे पर ।
दूजी आधी चबूतरे पर, आधी चढ़ती पाल ऊपर ।।२५।।

चौकों की प्रथम हार नीचे ढलकती पाल (कमर भर ऊंचे चबूतरे) पर है। चौंकों की दूसरी हार आधी चौरस पाल पर और आधी ढलकती पाल पर है ।

तीसरा चौक चढ़ती पाल में, चौथे चौक पाल पर हार ।
ऐसी चार हार चौकन की, जित हक करत बिहार ।।२६।।

चौकों की तीसरी पंक्ति एक भोम ऊंची चौरस पाल पर है । चौकों की चौथी पंक्ति भी चौरस पाल पर (वृक्षों की चौथी व पांचवी पंक्ति के मध्य) है । इस प्रकार चौकों की चार पंक्तियां विद्यमान हैं, जहां श्री राज जी (श्यामा जी व सखियों के साथ) लीला विहार करते हैं ।

यूं पांच हार दरखत, चार चौक हार दरम्यान ।
सब पाल को फिरवली, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।२७।।

इस प्रकार वृक्षों की पांच हारों के मध्य चौकों की चार हारें शोभायमान हैं । ये सब पाल पर चारों तरफ घेरकर आये हैं, जिसकी पहचान सुंदरसाथ के दिलों में होती है ।

अब कहूं पांचमी हार में, जो कही ताल तरफ ।
जहां गृद फिरती देहुरी, रहे मोमिन दिल सरफ ।।२८।।

अब चौकों की पांचवी हार के विषय में कहूंग, जो कि वृक्षों की पांचवी हार के अंदर ताल की तरफ है।, इस हिस्से में चारों तरफ घेरकर (१२८ बड़ी) देहुरियों की शोभा आयी है, जिसे समझने का सामर्थ्य मात्र ब्रह्मात्माओं में होता है ।

जो सत्ताइस हिस्से बाकी रहे, तहां देहुरियां चौरस ।
सत्ताइस हिस्से भर लिया, जो ए जवेर ठौर अरस ।।२९।।

चौरस पाल के जो २७ हिस्से (२५० मंदिर का बाहरी तरफ से तीसरा हिस्सा) बाकि रहे, उनमें चार स्तम्भों की चौरस छत पर देहुरियां आयी हैं । इस प्रकार चौरस पाल के तीसरे हिस्से को १२८ रत्नजड़ित देहुरियों ने भर लिया है । ये दिव्य परमधाम के नूरी जवाहरात हैं ।

ए देहुरियां गृद ताल के, फिरवली उपर किनार ।
हर देहुरी चार द्वार हैं, मोमिन करे विचार ।।३०।।

ये देहुरियां ताल के चारों तरफ चौरस पाल की किनार पर आयी हैं। इनमें चार स्तम्भों के मध्य चारो दिशा में चार महराबी द्वार हैं । उसका मोमिन विचार करें ।

तीन द्वार तरफ पाल के, चौथे पड़ा ताल तरफ ।
हर द्वार आगे चबूतरा, रहे मोमिन दिल सरफ ।।३१।।

उनमें से तीन द्वार (महराबें) चौरस पाल की तरफ हैं । एक द्वार ताल की तरफ आया है । ताल की तरफ आये द्वार के आगे चोतरा (चांदा) है, जिसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती है ।

दोए देहुरीयां दरम्यान में, हुआ एक दरखत ।
दोए दरखतों दरम्यान, देहुरी मुकाबिल इत ।।३२।।

वृक्षों की खड़ी पंक्तियां पाल पर आये इन १२८ बड़ी देहुरियों में से प्रत्येक दो देहुरी के मध्य आयी है। उसी प्रकार वृक्षों की प्रत्येक द खड़ी पंक्तियों के मध्य बड़ी देहुरियां आयी हैं ।

ए देहुरी पश्चिम के कोने, हुआ दोनों दरम्यान ।
दरखत हुआ इन विध, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।३३।।

यह देहुरी पश्चिम के हांस के दोनों कोनों में है, जिनके मध्य वृक्ष आया है । इसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती है ।

इन दरखत की डारियां, ढांक लई देहुरी आगे आए ।
परदखिना चबूतरा ढांक के, छाया जल लग पोहोंची जाए ।।३४।।

इन वृक्षों की डालियों ने अंदर ताल की तरफ बढ़ते हुए सभी देहुरियों को ढांप लिया है । प्रदक्षिणा (जल रौंस) व चबूतरे (चांदे) को ढांप के वृक्षों की छाया (डालियां) जल चबूतरे तक आयी है ।

ऐसी सब देहुरी दरखत, भर पाल छाया शोभाए ।
एकल छत्री दोरी बंध शोभा कही ना जाए जुबांए ।।३५।।

इसी प्रकार सभी देहुरियों को वृक्षों ने ढांपा है । सम्पूर्ण पाल पर नूरमयी छाया शोभायमान हो रही है । वृक्षों की डालियां छत्र के रूप में आपस में मिलकर एकरूप होकर चारों तरफ घूमी हैं । इसकी शोभा माया की इस जिह्वा से वर्णन नहीं हो सकती है ।

जेतो बिस्तार देहुरी, तेता आगे चबूतरा जान ।
ताके तीनों तरफ कठेड़ा, द्वार दोनों तरफ पेहेचान ।।३६।।

१२८ बडी देहुरियों में से प्रत्येक देहुरी जितनी लम्बी-चौड़ी जगह में

आयी है, उसके आगे (भीतरी तरफ) उतना ही लम्बा-चौड़ा चबूतरा (चांदा) आया है, जिसके तीनों तरफ (भीतर देहुरी की तरफ छोड़कर) कठेड़ा शोभायमान है । इस चबूतरे के दायें-बायें दोनों तरफ कठेड़ा द्वार हैं, जहां से कटीपाल की सीढ़ियां उतरी हैं।

चारों चौकों दो चबूतरा, सत्ताइस हिस्से होए ।
तले का जो चबूतरा, चौपन हिस्से आया सोए ॥३७॥

(वृक्षों की ५ पंक्ति पंक्तियों के मध्य स्थित) चारों चौक एवं दोनों चबूतरे (कटी पाल का एवं बड़ी देहुरी का) २७-२७ हिस्से (२५०-२५० मंदिर की चौड़ाई) के हैं । नीचे का जो चबूतरा (जल रौंस) है वह ५४ हिस्से (५०० मंदिर की चौड़ाई) में आया है ।)

दोनों बगलों चबूतरे, सीढियां उतरी जब ।
परकोटा दोनों के तिन को, आए चौक पड़ा आगे तब ॥३८॥

बड़ी देहुरियों के आगे आये चबूतरे के दायें-बायें से जो सीढ़ियां उतरी हैं, उन दोनों सीढ़ियों की किनार पर (ताल की तरफ) परकोटे (कमर भर ऊंची कांगरी युक्त दीवार) आये हैं । जहां आमने-सामने से सीढ़ियां उतरी हैं, वहां चौक आया है ।

दूसरी देहूरी के चबूतरे, सीढ़ियां उतरी जोए ।
भई साम सामे मुकाबिल, एक द्वार छोटा मेहेराबी होए ॥३९॥

सामने से दूसरी देहुरी के चबूतरे से भी सीढ़ियां उतरी हैं । इस प्रकार आमने सामने दोनों तरफ से सीढ़ियां उतरी हैं । यहां चौक पर छोटा महराबी द्वार बन गया है (जहां से पाल अंदर के महलों में जाते हैं) । (यहां भी चार स्तम्भों पर चार महराबें हैं। दो महराबें सीढ़ियों की तरफ है। एक महराब पाल अंदर के महलों में जाने के लिये है और एक महराब जल रौंस की तरफ है)

तिन पर कलश कांगरी, बनी जुगत सनंध ।
एक द्वार बड़ा तले चबूतरे, दोऊ चले जो दोरी बंध ॥४०॥

इस छोटे द्वार की छत की किनार पर कांगरी व कोनों में कलश की शोभा आयी है । इस प्रकार अद्‌भूत शोभा बन गयी है । १२८ बड़ी देहुरियों के सामने आये चबूतरों (चांदे) के नीचे बड़े द्वार आये हैं । बड़े द्वार व छोटे द्वार क्रमशः एक के बाद एक पंक्ति में आये हैं ।

एक द्वार छोटा एक बड़ा, बीच दोए बडो छोटा दरम्यान ।
दो छोटी बीच एक बड़ा, सब ताल भर याही जान ।।४१।।

क्रमशः एक छोटा द्वार, फिर एक बडा द्वार आते गये हैं । दो बडे द्वार के मध्य एक छोटा द्वार है और दो छोटे द्वारों के मध्य एक बड़ा द्वार है । इस प्रकार ताल के चारों तरफ कटी पाल पर यही शोभा है ।

ए जो कह्या बड़ा द्वार, तिन तले थम्भ है चार ।
दोए आगे दोए पीछे, लगत दिवाल सुखकार ।।४२।।

ये जो बड़े द्वार कहे गये हैं, इनके नीचे चार स्तम्भ आये हैं । दो स्तम्भ बाहरी तरफ और दो स्तम्भ भीतरी तरफ दीवार से लगकर आये हैं, जो कि अत्यंत मनोहारी व सुंदर हैं ।

एक द्वार तरफ पाल के, एक तरफ पाल के द्वार ।
एक बाएं एक दाएं, ए जो कहे दोनों अलंकार ।।४३।।

चार स्तम्भों के मध्य जो चार महराबें (महराबी द्वार) आयी हैं, उसमें से एक द्वार (महराब) पाल अंदर के महलों की तरफ है । (एक द्वार जल रौंस की तरफ है) एक द्वार (महराब) दायीं तरफ व एक द्वार (महराब) बायीं तरफ है । ये दोनों महराबें दीवार पर अलंकृत (अक्शी) हैं ।

यों ही सब ठौरों जानियो, फिरती पाल गृदवाए ।
ए शोभा है अति बड़ी, क्यूं कहूं इन जुबाए ।।४४।।

इसी प्रकार सभी जगह के बड़े दरवाजे शोभायमान हैं । कटी पाल चारों तरफ घेरकर आयी है । इसकी शोभा बहुत ज्यादा है, उसका इस जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करें ?

ए जो द्वार परकोटे का, कांगरी चली आई दोनों तरफ ।
तहां एक द्वार छोटा भया, रहे मोमिन दिल सरफ ।।४५।।

यह जो परकोटे वाला द्वार (छोटे द्वार) है, जहां आमने सामने से कटी पाल की सीढियां उतरी हैं, जिसकी किनार पर कांगरी युक्त कमर भर ऊंची दीवार शोभायमान है । वहां एक छोटा द्वार बना है, जिसे मोमिन ही समझ पाते हैं ।

पाल दरखत के सामने, एह पड़ा मुकाबिले द्वार ।
इन द्वार से पैठिए, पाल अन्दर मोहोल बिहार ।।४६।।

पाल पर विद्यमान वृक्षों (की खड़ी पंक्तियों) के सामने ये (छोटे) द्वार आये हैं । इन द्वारों से होकर पाल अंदर के महलों में विहार करने जाते हैं ।

अब अन्दर मोहोल में, रहे परदक्षिना गृदवाए ।
रहे सब जोगबाई, रमने की सुखदाए ।।४७।।

पाल अंदर के महलों में अंदर ही अंदर चारों तरफ प्रदक्षिणा दे (भ्रमण कर) सकते हैं । अंदर रमण करने के लिये आनंददायी सारी लीलारूप सामग्री हैं।

सेज संदूके साज सब, लवाजमें नहीं सुमार ।
हक हादी रूहें रमें, जित नित करें बिहार ।।४८।।

यहां महलों में शैय्या, सज्जा सामग्री की संदूकें आदि किसी भी वस्तु का शुमार (सीमा) नहीं है । यहां श्री राज श्यामा जी व सखियां रमण करते हुए नित्य प्रति अनेक प्रकार से लीला विहार करते हैं ।

इन द्वार से उतर के, आया एक चबूतर ।
उपर छाया बन की, आइयों सीढ़ी उतर ।।४९।।

इन द्वारों से उतरने पर सामने एक चबूतरा (जल रौस) आता है । यहां ३ सीढियां उतर कर आ जाईये । यहां ऊपर बड़ेवन की डालियां आने से शीतल छाया हो रही है ।

इतही चबूतरे आइए, जहां परदक्षना गृदवाए ।
चोपन बाटे चौडे, हाथ लगते जल पोहोंचाए ।।५०।।

इस चबूतरे (जल रौंस) पर आइये और चारों तरफ प्रदक्षिणा दीजिये । यह जल रौंस ५४ हिस्से (५०० मंदिर) का चौड़ा है । यहां से ताल के जल को हाथ से स्पर्श कर सकते हैं ।

तहां सीढ़ियां उतरिए, आइए चबूतरे पर ।
तहां छाती लों जल है, ए सुख कहूं क्यूं कर ।।५१।।

यहां जल रौंस से सीढ़ियां उतरकर जल चबूतरे पर आ जाईये, जहां छाती तक गहरा जल है । यहां के सुख का किस प्रकार वर्णन करें ?

ऐसे चबूतरे पगथिए, उतरते गए लग जमीन ।
सामे आए मुकाबिले, ए देखो दिल आकीन ।।५२।।

इसी प्रकार जल चबूतरे से भी चारों तरफ से घेरकर सीढ़ियां जल की जमीन तक नीचे उतरती गयी हैं । सामने टापू महल की तरफ से भी जल के जमीन तक सीढ़ियां आयी हैं ।

एह मुकाबिले टापू का, चबूतरा सीढ़ियां यों ही जान ।
जिमी चौड़ी रही तले, इन दोनों के दरम्यान ।।५३।।

टापू महल के तरफ भी सीढ़ियां, चबूतरा (जल रौंस) इसी प्रकार आये हैं । दोनों तरफ की सीढ़ियों के मध्य नीचे जल की जमीन बहुत चौड़ी है ।

एक जरा पड़ा होए, सो सब आवत नजर ।
कमल फूल कई भांत के, देखे रंग मानो हुए फजर ।।५४।।

जल की जमीन में यदि छोटी सी भी कोई वस्तु पड़ी होती है, तो वह स्पष्ट रूप से दिखायी देती है । जल के भीतर अनेक प्रकार के कमल के फूल खिले हुए हैं । उनके रंगों को देख लें तो मानों कि ब्रह्मानन्द रूपी प्रभात हो गया ।

एक सौ अट्ठाइस हांस, पाल मिने शोभाए ।
ऐसे ही एक सौ अट्ठाइस, टापू के सुखदाए ।।५५।।

हौज कौसर ताल की पाल के १२८ हांस शोभायमान हैं । इसी प्रकार टापू महल के भी मनोहारी १२८ हांस हैं ।

इत रंग जवेरन के, हांस हांस के होए ।
सामे वही रंग शोभित, बिना मोमिन ना जाने कोए ।।५६।।

यहां जवाहरातों के रंग प्रत्येक हांस में अलग-अलग आये हैं । प्रत्येक हांस में सामने (चौरस पाल, ढलकती पाल, जल रौंस, टापु महल आदि) भी वही रंग होता है । इस शोभा को ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता है।

जल के जेते जानवर, जिन रंग तले निकसत ।
सो तैसा ही रंग भासत, सुख शोभा कहूं क्यूं कर इत ।।५७।।

तालाब के जल में जितने भी जीव हैं, वे जिस रंग के हांस के नीचे से गुजरते हैं, वहां वैसे ही रंग के दिखायी देते हैं । इस प्रकार अद्‌भूत शोभा व सुख

का किस प्रकार वर्णन करूं ?

कमल फूल भी यों ही है, जिन हांस तले जो कोए ।
तैसे ही रंग ले उठे, क्यूं कहूं शोभा इत सोए ॥५८॥

जल में खिले हुए कमल के फूलों की भी स्थिति इसी प्रकार है । जिस रंग के हांस में जो फूल खिले होते हैं, वे उसी रंग के दिखायी देते हैं । उनकी शोभा इस नश्वर जगत् में किस प्रकार कहें ?

इत परदक्षना आठ हैं, पांच दरखतों दरम्यान ।
तहां गिनती चार भई, पांचमी देहुरी दरम्यान जान ॥५९॥

यहां आठ प्रदक्षिणा हैं । वृक्षों की पांच पंक्तियों के मध्य चार प्रदक्षिणा हैं । पांचवी प्रदक्षिणा १२८ बड़ी देहुरियों के मध्य (सीध में) है ।

छठी परकोटे चढ़ उतर, सातमी पाल अन्दर ।
आठमी जल लगे, आओ मोमिन ताके अन्दर ॥६०॥

छठी प्रदक्षिणा कटी पाल के सीढ़ियों की है । सातवीं प्रदक्षिणा पाल अंदर के महलों की है तथा आठवीं प्रदक्षिणा जल रौंस की है । सुंदरसाथ जी, उसके अंदर रमण करने के लिये आईये ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए कह्या नेक ताल का नूर ।
सोले देहुरी परदक्षना पुरी कही, फेर चार घाट का कहूं जहूर ॥६१॥

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी !यह नूरमयी हौजकौसर ताल की शोभा का वर्णन किया है । आठों प्रदक्षिणा का पूरा वर्णन किया । अब सोलह देहूरी के घाट सहित चारों घाटों की शोभा वर्णन किया जायेगा।

प्रकरण ९० चौपाई ३४१९

ए तो कही गृद पाल की, अब कहूं चारों घाट ।
फेर कहूं टापी की, जो हौज कौसर का ठाट ॥१॥

पिछले प्रकरण में पाल पर चारों तरफ आयी शोभा का वर्णन किया था, अब ताल के चारों तरफ आये चारों घाटों की शोभा का वर्णन किया जायेगा। उसके पश्चात् टापू महल की शोभा का वर्णन कहूंगा, जो हौज कौसर ताल का ऐश्वर्य है ।

अब कहूं झुण्ड घाट की, जो है तरफ पश्चिम ।
जिमी जवेर हीरे की, जाने मोमिन रूह आतम ।।२।।

अब झूण्ड घाट की शोभा का वर्णन कहता हूं, जो हौज कौसर ताल की पश्चिम दिशा में स्थित है । यहां की धरती नूरमयी जवाहरात हीरे की है । इसकी शोभा सुंदरसाथ की आत्मा ही जानती है ।

ए जो दोए चबूतरे, जमुना जाके दरम्यान ।
एह आए दोए पुखराज के, दोए किनारे जमुना जान ।।३।।

ये जो दो चबूतरे (पाल) यमूना जी के दोनों तरफ आये हैं, जिनके बीच में यमूना जी प्रवाहित होती है । ये दोनों पाल पुखराज पहाड़ के मूल कुण्ड से यमूना जी के दायें–बायें आये हैं ।

इन दोनों चबूतरों, लिया हौज को घेर ।
दोनों तरफों आए मिले, कहूं बेवरा इन का फेर ।।४।।

इन दोनों चबूतरों (पाल) ने हौजकौसर ताल (ढलकती पाल) को भी चारों तरफ से घेरा हुआ है । दोनों तरफ की पाल हौज कौसर के पश्चिम में आकर मिल गयी है।

झुण्ड के घाट को दोए लगे, तरफ पश्चिम जान ।
इन दोऊ के बीच में, चौक पड़ा दरम्यान ।।५।।

झूण्ड के घाट के सामने (पश्चिम में) दोनों तरफ की पाल आकर मिली है। यहां दो देहुरियों के मध्य चौक शोभायमान है (जिसे झुण्ड के घाट का मुख्य द्वार कहते हैं)।

तले सीढ़ियों चढ़ के, आइए चौक पर जब ।
तहां सौ सीढियों चढ़ के पोहोंचे चबूतरो तब ।।६।।

पुखराजी रौंस से ३ सीढ़ियां चढ़कर जब इस चौक पर आते हैं, तब यहां से पुनः १०० (संक्रमणिक) सीढ़ियां चढकर चबूतरे (चौरस पाल) पर पहुंचते हैं ।

इन चबूतरों पर बनी, देहुरीयां नूर दोए ।
भई एक छात दोनों की, दोए द्वार मेहेराबी बने सोए ।।७।।

इस चबूतरे पर दो नूरमयी देहुरियां बनी हैं । (ये देहुरियां १२८ बडी

देहुरी के अंतर्गत हैं) । दोनों की एक ही छत है, जो आपस में मिली हुयी है, जिससे दोनों चबूतरों के मध्य दो महराबी द्वार बने हुए हैं ।

इन छात गृद कठेडा, तहां बैठक अति शोभाए ।
हक हादी रूहें रमन को, कबूं कबूं इत जाए ।।८।।

इस छत के चारों ओर कठेड़ा है, जिसके मध्य बैठक की अत्यंत शोभा है । श्री राज श्यामा जी व सखियां यहां हांस-विलास करने के लिये कभी कभी आते हैं ।

एक दरखत तले चबूतरे, एक लगता देहुरी होए ।
एक पाल दरम्यान में, चौथा पाल किनारे सोए ।।९।।

वृक्षों की एक पंक्ति नीचे ढलकती पाल पर (संक्रमणिक सीढियों से लगते हुए) है । एक पंक्ति देहुरी (१२८ बड़ी दयोहरियों) से लगती हुई है, एक पंक्ति चौरस पाल की मध्य में है, तथा चौथी पंक्ति चौरस पाल के किनारे है (चौरस पाल पर संक्रमणिक सीढियों से लगती हुई) ।

पांचमा पाल के उपर, याके चार चौक दरम्यान ।
शोभा हौज कौसर की, आवत नाहीं जुबांन ।।१०।।

वृक्षों की पांचवी पंक्ति ढलकती पाल के ऊपर है । इस प्रकार इन पांचों पंक्तियों के मध्य चौकों की चार हारें शोभायमान हैं । हौज कौसर ताल की शोभा अवर्णनीय है ।

जब आइए पाल के उपर, गृद हिंडोले होए ।
हक हार्दी रूहें, हींचत हैं इत सोए ।।११।।

जब पाल के ऊपर आते हैं, तो चारों तरफ वृक्षों की डालियों में हिण्डोले ही हिण्डोले दिखायी देते हैं । श्री राज श्यामा जी एवं सखियां यहां आकर झूला झूलते हैं।

दोए चबूतरों दरम्यान में, चौक पड़ा इत एक ।
शोभा जवेर जोत की, कई लेहेरा उठे अनेक ।।१२।।

झूण्ड के घाट में दो चबूतरों के मध्य में एक चौक आया है । यहां नूरमयी जवाहरातों की ज्योति शोभायमान है, जिसकी किरणों की लहरें चारों और तरंगित हो रही हैं ।

एक चौक दरम्यान का, चौक दोए चबूतरों दोए ।
ए तीनों चौक बराबर, बिना मोमिन ना जाने कोए ।।१३।।

दोनों चबूतरों का चौक एवं मध्य का एक चौक - ये तीनों समान रूप से लम्बे-चौड़े हैं । इनकी शोभा ब्रह्मात्माओं के सिवा अन्य कोई नहीं जानता है ।

ए जो दोए चबूतरा, चौकोने तिन के आठ ।
हार आठ दरखत की, क्यूं कहूं बका ठौर ठाट ।।१४।।

ये जो दोनों चौरस चबूतरे हैं, इनके कुल आठ कोने हैं । इन सभी कोनों में ८-८ वृक्षों की पंक्तियां हैं । दिव्य परमधाम का ऐश्वर्य किस प्रकार वर्णन करें ?

आठ दिवाल दरखत की, दरम्यान द्वार है चार ।
छे छाते तिन उपर, ए शोभा अति सुखकार ।।१५।।

इस प्रकार एक चबूतरे के चारों तरफ वृक्षों की कुल आठ दिवारें हैं , जिनके मध्य (चबूतरे की चारों दिशा में) चार द्वार हैं । इन वृक्षों की एक के ऊपर एक, छे छत हैं । (पांच भोम छठी चांदनी) यह शोभा अत्यंत सुखदायी व मनोहारी है । (प्रत्येक दीवार में आठ–आठ वृक्ष हैं और चबूतरे की प्रत्येक दिशा में द्वार के दायें–बायें दो दीवारें हैं)।

ज्यों एक त्यों ही दूसरे, आठ हार दरखत ।
चारों कोने तिन के, चार द्वार शोभा इत ।।१६।।

जैसी शोभा एक चबूतरे की है, वैसी ही शोभा दूसरे चबूतरे की भी है । उसी प्रकार ८-८ वृक्षों की ८ पंक्तियां दिवारों के रूप में चबूतरे के चारों कोनों में हैं । उनके मध्य में चारों दिशा में चार महराबी द्वार शोभायमान हैं ।

ए आठ द्वार कहे इन के, तीनों चौक दरम्यान ।
दोए द्वार है मेहेराबी तिन के, ए दोनों तरफों जान ।।१७।।

इस प्रकार इन तीनों चौकों (दो चबूतरों व मध्य के चौक) में कुल मिलाकर आठ द्वार कहे गये हैं । इसके अतिरिक्त मध्य चौक के दो तरफ (पूर्व पश्चिम में) दो महराबी द्वार और हैं ।

दस द्वार बारे भासत, दरम्यान खड़े होए जब ।
रूह की आंखो देखिए, सुख हौज कौसर पाइए तब ।।१८।।

इस प्रकार तीनों चौक में कुल १० महराब हैं, किंतु दिखने में १२ महराबी द्वार दिखते हैं (क्योंकि प्रत्येक चौक के चारों तरफ चार महराबें दिखती हैं । तो दिखने में तीन चौक के १२ होती हैं) । यह आत्मदृष्टि से देखिये, तब हौज कौसर तालाब की शोभा का सुख प्राप्त हो सकता है ।

एकासी हिस्से पाल के, चोंपन लों चबूतरे ।
सत्ताइस हिस्से में देहुरी, ए मोमिन देखेंगें ॥१९॥

चौरस पाल के कुल ८१ हिस्से (७५० मंदिर) हैं, जिनमें से ५४ हिस्से (५०० मंदिर) तक चबूतरा (पड़साल) है तथा उसके आगे २७ हिस्से (२५० मंदिर) में १२८ बड़ी देहुरियां आयी हैं । इसकी शोभा ब्रह्मसृष्टि ही देखेगी ।

हर देहुरी चार द्वार ने, दोए पाल उपर ।
कहे तरफ तालाब की, एक भोमन की खातर ॥२०॥

इन प्रत्येक (बड़ी) देहुरी में चार द्वार (महराबें) हैं, जिनमें से दो द्वार (महराबें) दायें-बायें पाल पर हैं, एक द्वार (महराब) भीतर ताल की तरफ है, जहां एक भोम ऊंचा चबूतरा (चांदा) विराजमान है ।

चौथा द्वार देहुरी का, चबुतरे सनमुख ।
हक हादी रूहें खेलत, सुन मोमिन पावत सुख ॥२१॥

चौथा महराबी द्वार (बाहरी तरफ) झूण्ड के घाट के चबूतरे के सम्मुख है । यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां अनेक प्रकार से खेल-रामतें करते हैं । इस वर्णन को सुनकर ब्रह्मात्माएं सुख पाती हैं ।

दोऊ चबूतरे दरम्यान का, जो चौक तीसरा होए ।
तिन द्वार के सनमुख, सीढ़ी उतरी इत सोए ॥२२॥

झुण्ड के घाट के दोनों चबूतरों के मध्य जो तीसरा चौक है, उसके महराबी द्वारों के समक्ष घाट की सीढ़ियां उतरी हैं ।

तिन तीनों चौको के द्वार में, खड़े रहिए जब ।
टापू तलाब मध्य का, सब नजरों आवत तब ॥२३॥

इन तीनों चौकों (दो चबूतरे व मध्य के चौक) के द्वारों (महराबों) के सामने जब खड़े होते हैं, तो तालाब के मध्य में स्थित टापूमहल की सारी शोभा नजर आती है ।

ए जो दोए चबूतरे, तिन के कहे दस द्वार ।
तिन चौको मिने, हक हादी करे बिहार ।।२४।।

यह तो झुण्ड के घाट के दो चबूतरें हैं, जिनमें कुल दस महराबी द्वार कहे गये हैं । इन तीनों चौकों में श्री राज श्यामा जी एवं सखियां लीला विहार करते हैं ।

चारों तरफों इन के, दरखत की दिवाल ।
गिनती बीस जानियों, होए सुन मोमिन खुसाल ।।२५।।

इन चौकों (चबूतरों) की चारों दिशाओं में वृक्षों की दीवाल आयी है । तीनों चौकों (दो चबूतरों व मध्य चौक) में मिलाकर कुल २० दीवार आयी हैं । (एक दिशा में द्वार के दायें-बायें दो दीवार होते हैं) । यह शोभा सुनकर ब्रह्मात्माएं प्रसन्न हो जाती हैं ।

चौदे चौदे हिस्से एक एक, दिवाल बनी है नूर ।
रोशनी इन ठौर की, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।२६।।

एक दिशा में १४-१४ हिस्से (१२५ मंदिर) में दायें-बायें वन की दिवार हैं, जिसके मध्य में द्वार शोभायमान है । झुण्ड के घाट की नूरमयी रोशनी का किस प्रकार वर्णन करें ? (चबूतरे की एक दिशा की लम्बाई 250 मंदिर की है, जिसमें से मध्य में १२५ मंदिर की जगह में द्वार है तथा इसके दायें–बायें साढ़े ६२–साढ़े ६२ मंदिर की जगह में वनों की दीवार है)।

और सत्ताइस बांटे, बने दस द्वार ।
हक हादी रमन की, ए ठौर अति सुखकार ।।२७।।

इस प्रकार २७ हिस्से (२५० मंदिर की चौड़ाई) में सभी दस द्वार बने हैं । श्री राज श्यामा जी एवं सखियों के लिये यह अत्यंत आनंददायी लीला विहार का स्थान है ।

दोए दिवाल सनमुख देहुरी, सत्ताइस हिस्से भर ।
ऐसे ही दूसरे देहुरी, ए सुख सब उपर ।।२८।।

वृक्षों की दोनों दीवारों (झुण्ड के घाट) के सम्मुख दो देहुरियां हैं, जो कि २७ हिस्से (२५० मंदिर) की लम्बी-चौड़ी हैं । इसी प्रकार दूसरे देहुरियों की भी शोभा है । इनके सुख सर्वोपरि हैं ।

इन देहुरीयों के आगे, निकला चबूतरा तरफ ताल ।
दायें बायें दोए देहुरी, आगे शोभित जल विशाल ।।२९।।

इन द्योहरियों के सामने एक चबूतरा (चांदा) ताल की तरफ (कटी पाल के हिस्से में) आया है । इसके दायें-बायें जहां कटी पाल की सीढ़ियां उतरी हैं, इस प्रकार दोनों तरफ के द्योहरियों के चांदों से दो–दो सीढ़ियां दायें–बायें उतरी हैं। इसके आगे तालाब में विशाल जलराशि शोभायमान हैं ।

दोए तरफों दोए उतरी, सीढ़ियां तरफ परकोटे दोए ।
हक हादी रूह रमन की, ए सुख मोमिन जाने कोए ।।३०।।

कटी पाल पर आये इन चबूतरों (चांदों) से दोनों तरफ (दायें-बायें) दो सीढ़ियां उतरी हैं, जिसके ताल के तरफ की किनार पर कांगरी युक्त कमर भर ऊंची दीवार (परकोटे) शोभायमान है। श्री राज श्यामा जी एवं सखियां यहां रमण करते हुए जो सुख प्राप्त करते हैं, उन्हें कोई ब्रह्मात्मा ही जानती है।

आगे इन देहूरीन के, चबूतरे हिस्से एकासी ।
दोउ देहूरी ता उपर, जानें रूह एह खासी ।।३१।।

घाट की इन दो बड़ी देहुरियों के सामने कटी पाल के हिस्से में जो चबूतरा (चांदा) आया है, वह ८१ हिस्से (७५० मंदिर का लम्बा) आया है । इन्ही के सामने बाहरी तरफ दो बड़ी देहुरियां आयी है, जिसकी शोभा खासुलखास रूहें (ब्रह्मसृष्टि) ही जानती हैं ।

सत्ताइस हिस्से चौड़ाई, इन चबूतरों का होए ।
सो तो केहेत हों बेवरा, मोमिन समझे ए सोए ।।३२।।

कटी पाल पर आये इन चबूतरों (चांदों) की चौड़ाई २७ हिस्से (२५० मंदिर) की है । उसका विवरण कह तो रहा हूं , लेकिन इसे मोमिन ही समझ पायेंगे ।

और दोए देहुरीयों, सत्ताइस हिस्से दरम्यान ।
तीनों मिल एकासी, सत्ताइस चौड़ी पेहेचान ।।३३।।

और २७ हिस्से (२५० मंदिर) की लम्बी चौड़ी दो बड़ी देहुरियों के मध्य २७ हिस्से (२५० मंदिर) की जगह है । तीनों मिलकर ८१ हिस्से (७५० मंदिर) होते हैं । इन देहुरियों की चौड़ाई भी २७ हिस्से (२५० मंदिर) की है ।

तीनों तरफ कठेड़ा, तहां द्वार बने दोए ।
दोए बगलों उतरे परकोटे, कहे दाएं बाएं सोए ।।३४।।

बड़ी देहुरियों के सामने तो चबूतरा (चांदा) है, उसके तीनों तरफ (बड़ी देहुरी की दिशा छोड़कर) कठेड़े की शोभा है। इसके दायें–बायें कठेड़ा द्वार बने हैं, जिसके सामने दोनों तरफ परकोटे (कांगरी युक्त कमर भर ऊंची दीवाल) से युक्त सीढ़ियां उतरी हैं ।

एक कठेड़ा तरफ तलाव की, एकासी हिस्से भर ।
सत्ताइस हिस्से चौड़ाई, ए शोभा सब ऊपर ।।३५।।

ताल की तरफ सम्पूर्ण ८१ हिस्से (७५० मंदिर) में कठेड़ा शोभायमान है। कटी पाल की चौड़ाई २७ हिस्से (२५० मंदिर) की है । जिसकी शोभा सर्वोपरि है ।

प्रकरण ९१ चौपाई ३४५४

धाम अंदर का मंगलाचरण

चौदे तबक की दूनी में, बका तरफ ना पाई किन ।
ढूंढ थके सब त्रैगुन, नेत नेत कहे वेदों वचन ।।१।।

चौदह लोकों के संसार में अखण्ड परमधाम का ज्ञान कोई भी नहीं प्राप्त कर सका । सम्पूर्ण त्रिगुणात्मक सृष्टि खोज खोज कर हार गयी, वेदों ने भी "न इति न इति" (यह नहीं, यह नहीं) कह दिया ।

तिन के वचन ले खोजत, फेर फेर करे विचार ।
वचन गुझ शास्त्रन की, पावे ना कोई पार ।।२।।

इन वेदादि धर्मग्रंथों के वचनों को लेकर दुनिया वाले परब्रह्म की खोज करते हैं और पुनः पुनः उसका विचार करते हैं । किंतु शास्त्रों के वचन गूढ़ हैं । (तारतम ज्ञान के अभाव में) उनका मूल आशय कोई भी नहीं समझ पाता है ।

वेद बतावत भेद में, सो पाए ना सके कोए ।
निराकार ना ले सके, फेर वचन द्वैत में दोए ।।३।।

वेद परमात्मा के रहस्य बताते तो हैं, किंतु उसके गूढार्थ को कोई समझ

नहीं पाता है । निराकार (मोह तत्व-नींद) के वचन भी नहीं समझ पाते हैं, और अद्वैत के वचन भी द्वैत के अंतर्गत घटा देते हैं ।

ब्रह्माण्ड के धनी ऊपर, और नाम न लिए जाए ।
कोई वचन आगे केहेने, फेर द्वेत में गोते खाए ।।४।।

इस ब्रह्माण्ड के स्वामी त्रिदेवा ही जब नहीं जानते, तो उनके बाद अन्य किसी का नाम लेने की आवश्यकता नहीं है । कोई निराकार से पार के वचन कहना शुरू तो करता है (जैसे राधा वल्लभी) लेकिन फिर द्वैत संसार में गोते (संशय) खाने लगता है ।

द्वैत ना छूटा किन से, अद्वैत ना होवे हाथ ।
बका भोम चेतन की, सो ब्रह्मसृष्ट सो साथ ।।५।।

यह द्वैत माया जगत किसी से भी नहीं छूटता है । इससे परे अद्वैत मण्डल में कोई भी नहीं जा पाता है । अखण्ड परमधाम की दिव्य चेतन भूमिका में ब्रह्मसृष्टि, परब्रह्म के साथ रहती हैं ।

तीन सृष्ट शास्त्रों कही, जीव ईश्वरी ब्रह्म ।
ए तीनों खोज करे तामें, पोहोंचें अपनी ठौर आतम ।।६।।

शास्त्रों ने तीन प्रकार की सृष्टि का वर्णन किया है, जीवसृष्टि, ईश्वरी सृष्टि एवं ब्रह्मसृष्टि । ये तीनों ही सृष्टि परब्रह्म की खोज करती हैं और अपने अपने आत्मा के मूल उद्गम स्थान पर पहुंच जाती हैं ।

तीनों आई सुपन में, बीच मोह तत्व अहंकार ।
ताको उल्लंघ कोई ना सके, बिन ब्रह्म सृष्ट उस्तवार ।।७।।

तीनों सृष्टियां इस मोह-अहंकार (नींद-अज्ञान) से युक्त स्वाप्निक जगत् में तन धारण करके आयी हैं । किंतु ज्ञान व प्रेम में दृढ़ ब्रह्मसृष्टि के अतिरिक्त कोई भी हद-बेहद को पार नहीं कर पाता है ।

जीव सृष्ट सुपन की, याके ईश्वर है दरम्यान ।
ब्रह्म ईश्वरी के बीच में, नींद पड़ी निदान ।।८।।

जीव सृष्टि स्वप्न की सृष्टि है। ईश्वरी सृष्टि, जीव सृष्टि व ब्रह्म सृष्टि के मध्य की है। ब्रह्मसृष्टि व ईश्वरी सृष्टि के बीच में भी अज्ञानता का आवरण पड़ा है।

कबूं जीव सुपन का बल करे, पोहोंचे नींदै लों निदान ।
अक्षर नूर सरूप की, कर ना सके पेहेचान ।।९।।

कभी स्वप्न की जीव सृष्टि बहुत जोर लगा दे तो वह निराकार तक पहुंच जाती है । किंतु अक्षरब्रह्म के नूरी स्वरूप की वह पहचान नहीं कर पाती है।

ईश्वरी बल करत है, खोजत नींद के पार ।
आखर नजरों ना आवहीं, तब दिल देत लीला में बिहार ।।१०।।

ईश्वरी सृष्टि (ज्ञान-ध्यान में) जोर लगाती है और निराकार से परे खोज करती है । जब आत्मिक दृष्टि में कुछ भी नजर नहीं आता, तब इस संसार में हुई ब्रह्मलीला का चिंतन करने लगती है।

ब्रह्म लीला भई सुपन में, चित्त खेंच लिए सबन ।
सिफत सब तिन की करें, सो ब्रह्मसृष्ट कहे मन ।।११।।

इस स्वाप्निक जगत में ब्रह्मलीला (ब्रज-रास) हुई, जिसने समस्त दुनिया वालों के चित्त को आकर्षित कर लिया । उसकी स्तुति सारी दुनिया करती है । उन गोपियों के रूप में ही ब्रह्मसृष्टि की सुरता आई थी।

जिन मोमिन के वास्ते, पैदा करी सब जहान ।
रसूल आया तिन वास्ते, देखो इनकी पेहेचान ।।१२।।

जिन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये इस संसार की उत्पत्ति की गई है, उन्हीं के लिये अरब में रसूल साहब भी आये हैं । उनकी पहचान कीजिये ।

बका ठौर जो चेतन, सो मोमिन का घर धाम ।
तहां से आए खेल देखन, याको सेवत लोक तमाम ।।१३।।

अखण्ड परमधाम की जो दिव्य चेतन भूमिका है, वह मोमिन ब्रह्मात्माओं का निजघर (परमधाम) है । वे वहां से यह संसार रूपी दुख का खेल देखने आये हैं । दुनिया के तमाम जीव उनकी सेवा-स्तुति करते हैं ।

लिखे छे दिन वाके कुरान में, लिखे मोमिनों के मरातब ।
एही खोल बतावत, तब दुनियां पावे सब ।।१४।।

कुर्आन पाक में संकेतों में उन्हीं के छः दिन लिखे हैं, और मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की महिमा लिखी है । वे ही उसके रहस्य स्पष्ट करके बतायेंगी,

तब दुनिया वाले सत्य ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।

लिखा वेद कतेब में, दोऊ भाषा दरम्यान ।
सिफत सब ब्रह्मसृष्ट की, मोमिन कर देवे पेहेचान ।।१५।।

वेद व कतेब पक्ष के ग्रंथों में अलग-अलग दो भाषा में ब्रह्मसृष्टि (मोमिनों) की महिमा लिखी है । उसकी पहचान मात्र ब्रह्मसृष्टि ही करा सकती हैं।

एक दिन ब्रह्मसृष्ट, बज में आई जब ।
रहे अग्यारे बरस बावन दिन, भई जोगमाया तब ।।१६।।

पहला दिन ब्रज लीला का है, जहां ब्रह्मसृष्टियां गोपियों के रूप में आयी थीं । वहां ११ वर्ष और ५२ दिन लीला किये । उसके पश्चात् योगमाया के दिव्य वृंदावन की रचना हुयी ।

एक रात रास में रहे, कह्या किस्ती नूह तूफान ।
दूजा दिन कहा तिन को, पूछो मोमिन दिल पेहेचान ।।१७।।

इसके पश्चात् एक रात्रि रास लीला (नित्य वृंदावन) में रहे, जिसे कुर्आन में (संकेतों में) "नूह तूफान के समय किश्ती पर सवार होना" लिखा है । इसे दूसरा दिन कहा गया है । मोमिनों से पूछिये, उनके दिलों में सारा ज्ञान है ।

तीसरे दिन बरारब, आए महंमद अलेहसलाम ।
वास्ते इन मोमिन के, करी राह दीन जाहिर इसलाम ।।१८।।

तीसरे दिन में अरब की धरती पर मुहम्मद अलैहिस्सलाम आये तथा उन ब्रह्मात्माओं के लिये सत्य-शांति का मार्ग जाहिर किया ।

आए चौथे दिन रूह अल्ला, ल्याये किल्ली हकीकत धाम ।
पांचमें दिन इमाम दावत, पोहोचाई खलक तमाम ।।१९।।

चौथे दिन में ईसा रूहूल्ला (श्री श्यामा जी) आये, और परमधाम के सत्य ज्ञान को स्पष्ट करने वाली चाबी तारतम ज्ञान ल्याये । पांचवे दिन में इमाम महदी (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) ने सारी दुनिया को तारतम ज्ञान के द्वारा अखण्ड सुखों की दावत (आमंत्रण) दी ।

छठा दिन है जुमें का, इत मोमिन जमा होए ।
वारसी पांचों दिन की, सब पोहोंची इन को सोए ।।२०।।

अभी जुम्मे का छठा दिन है, जिसमें समस्त ब्रह्मात्माएं जागृत होकर इकट्ठे हो रही हैं । पांचों दिन की विरासत (उत्तराधिकार) सब उन्हें प्राप्त हो गयी है (पांचों दिन का ज्ञान उन्हें प्राप्त हो गया है) ।

इनों साएत करी जाहेर, जासो कहिए क्यामत ।
इनों साएत दरम्यान में, कछू ना रहे इत ॥२१॥

उन ब्रह्मात्माओं ने परमधाम की वह घड़ी (समय) जाहिर कर दी है, जिसे कियामत कहते हैं । उस पल के अंतर्गत यह खेल देख रहे हैं, और उसी पल में सब खत्म हो जायेगा ।

वहीं हक हादी रूहें, वही बका भोम चेतन ।
वहीं मूल मेले मिने, हुए मोमिन दिल रोशन ॥२२॥

वहीं परमधाम में श्री राज श्यामा जी (हक तआला, हादी) एवं सखियां (ब्रह्मप्रियाएं) रहती हैं । वही अखण्ड परमधाम की दिव्य चेतन भूमिका है । वहीं मूल मिलावे में ब्रह्मात्माओं के दिल ब्रह्मज्ञान से रोशन हुए हैं ।

अरस कह्या दिल मोमिन, सो तो हक बैठक ।
मोमिन सेती पाइए, बका भोम इशक ॥२३॥

उन ब्रह्मात्माओं का दिल खुदा (परमात्मा) का अर्श (धाम, सिंहासन) कहा गया है, जहां प्रियतम परब्रह्म की बैठक होती है । उन ब्रह्मात्माओं के माध्यम से ही अखण्ड परमधाम के इश्क की पहचान प्राप्त कर सकते हैं ।

मोमिन अपने घर को, करत जाहेर इस ठाम ।
महंमद की सिफाएत से, हुए पूरन मनोरथ काम ॥२४॥

वे ब्रह्मात्माएं ही अपने निजघर परमधाम की शोभा, स्वरूप व लीला को इस माया जगत में जाहिर कर रही हैं । मुहम्मद (हकी सूरत) की अनुशंसा (तारतम ज्ञान) से उनकी सारी मनोकामना पूर्ण हो गयी हैं ।

एह मेहेर मोमिनों पर, करी हक सुभान ।
तीनों ब्रह्माण्ड किये काएम, आए मेहेर के दरम्यान ॥२५॥

यह कृपा ब्रह्मात्माओं पर स्वयं प्रियतम अक्षरातीत (हक सुब्हान तआला) ने की है। उन्होंने अपनी मेहर की छांव तले तीनो ब्रह्माण्डो की छः दिन की लीला को अखण्ड कर दिया है ।

अब कहुं हकीकत धाम की, जो अद्वैत भोम वाहेदत ।
जाको अंत होए कहूं नहीं, सो केहेनी में आवे इत ।।२६।।

अब परमधाम की हकीकत (सत्य ज्ञान) कहूंगा, जो स्वलीला अद्वैत (वहदत) परमधाम है । जिसका कोई भी अंत नहीं है । उसका वर्णन शब्दों में यहां परब्रह्म की कृपा से हो रहा है ।

जब बका ठौर देखिए, जरा नाहीं चौदे तबक ।
उत बेर पल भी ना हुई, तामें रही ना सुभे शक ।।२७।।

जब अखण्ड परमधाम की तरफ देखते हैं, तो यह १४ लोकों का संसार अस्तित्व हीन हो जाता है । परमधाम में तो एक पल भी नहीं बीता है (यहां युग बीत गये)। इसमें जरा भी शक या संशय नहीं रहा है ।

इत तीन ब्रह्माण्ड होए गए, तामें कहे छे दिन ।
छओ अमल जुदे जुदे, सो सब विध कहूं रोशन ।।२८।।

उसी पल में यहां ब्रज, रास व जागनी तीनों ब्रह्माण्ड हो गये, जिसके अंतर्गत खुदा के छः दिन कहे गये हैं । उन छः दिनों की लीला अलग-अलग है । सब प्रकार से उसका स्पष्टीकरण करेंगे ।

उठावहीं एह साएत, एक पलक न कह्या जाए ।
एह इलम रूह अल्ला का, सब विध देत बताए ।।२९।।

उसी पल में परमधाम में हम जागृत हो जायेंगे । इसे एक पल भी कहना उचित नहीं है । ईसारूहूल्ला का इल्म सारा ज्ञान समझा देता है ।

महामत कहे ए मोमिनों, तुमारा ठौर बका धाम ।
तुमारे हक सुभान ने, सब पूरे मनोरथ काम ।।३०।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी, आपका निजघर अखण्ड परमधाम है । प्रियतम अक्षरातीत ने आपके समस्त मनोरथ पूर्ण कर दिये हैं ।

प्रकरण ९२ चौपाई ३४८४

आठ सागर लिखें हैं

श्री महामति जी हक सुब्हान श्रीराज जी के हुक्म से फरमां रहे हैं । कुर्आन पाक में कहा गया है कि परमधाम के आठों सागरों का रहस्य (मारिफ्त) आखिरत के समय दुनिया में जाहेर होगा । अखंड परमधाम का वर्णन शब्दों में नहीं आ सकता है । ब्रह्मसृष्टि को ब्रह्म समान कहा है, जो अर्शे अजीम (परमधाम) से आई हैं इन्हीं के लिए परमधाम की सब न्यामतें जाहिर हो गयी हैं । इनके असल स्वरूप अक्षरातीत श्रीराज जी के चरणों तले बैठे हैं । इन्हें ही श्री राज जी बार बार याद दिला रहे हैं, कि आप परमधाम से आए हो, अपने प्रियतम हक श्रीराज जी की पहचान करो ।

कहे आठ सागर अरस के, बीच अल्ला कलाम ।
वास्ते इन मोमिन के, होवे जाहेर बीच इसलाम ।।१।।

कलाम अल्लाह (कुर्आन पाक) में कहा गया है कि परमधाम के आठों सागरों का वर्णन इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के कारण दीने इस्लाम (सत्य-शांति के मार्ग-निजानंद) में आखिरत के समय जाहिर होगा ।

तिन साहेदी के दो एक, सुख कारन कहे सुकन ।
ए सुन समझ विचारहीं, सो खास गिरो मोमिन ।।२।।

उस की साक्षी के एक-दो शब्द इसलिये कह रहे हैं, कि ब्रह्मात्माओं को उसका सुख मिले । उन कथनों को सुनकर, वे खास गिरोह मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही उसका विचार करेंगे और उसे समझ पायेंगे।

ए केहेनी में ना आवत, बका भोम चेतन ।
कहेनी सुपन आकार सो, सो क्यूं आवे दिल रोशन ।।३।।

उस अखण्ड चेतन परमधाम की शोभा अवर्णनीय है । इस स्वाप्निक देह के माध्यम से उसका वर्णन किस प्रकार किया जाये और समझा जाये ?

सुपन सुध पोहोचें नाहीं, नींद पार बका ठौर ।
सब चुप करें तिस वास्ते, कहे सके ना कोई और ।।४।।

स्वप्न का ज्ञान वहां तक नहीं पहुंचता, क्योंकि वह परमधाम नींद (निराकार) से परे है । इस कारण सभी अब तक चुप रहे, अन्य कोई भी उसका वर्णन नहीं कर सका ।

ब्रह्मसृष्ट ब्रह्मसमान है, सो आई अरस से उतर ।
उतरी न्यामत तिन पर, पावें मोमिन खुस खबर ।।५।।

वह ब्रह्मसृष्टि ब्रह्म के समान मानी गयी है, जो अखण्ड परमधाम (अर्शे आजम) से इस संसार में आयी हैं । उन्हीं पर परमधाम की पांचों शक्तियां अवतरित हुयी हैं । वे मोमिन ही परमधाम की खुशखबरी पाते हैं ।

है मोमिनों रब्बानी गिरोह, इनों का हादी हक ।
तिन से राह इसलाम की, इनों पाई बुजरक ।।६।।

वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) परमात्मा के ही अंगरूप हैं । उनके सद्गुरू स्वयं परब्रह्म हक तआला हैं । उन्हीं के द्वारा इन्होंने महान शाश्वत शांति का मार्ग (तारतम ज्ञान-इल्म लदुन्नी) प्राप्त किया है ।

इनों की असल अरस में, बैठे हक हजूर ।
अलस्तो बे रब्ब कुंम का, इनों से है मजकूर ।।७।।

उन ब्रह्मात्माओं के मूल तन परमधाम मूल मिलावे में प्रियतम परब्रह्म के चरणों में विराजमान हैं । अलस्तो बिरब्बी कुंम (क्या मैं तुम्हारा स्वामी नहीं हूं) की वार्ता परब्रह्म की इन्हीं ब्रह्मात्माओं से हुयी है ।

फेर इनों को खबर करी, दुनी में हक सुभान ।
तुम आए अरस अजीम से, करो मोसो पेहेचान ।।८।।

इन ब्रह्मात्माओं को इस संसार में आने के बाद प्रियतम अक्षरातीत ने पुनः खबर की है, कि "आप अर्शे अजीम (दिव्य परमधाम) से आयी हो, मेरी (प्रियतम अक्षरातीत की) पहचान करो ।"

अलस्तो बे रब्ब कुंम, इनो को दई फरियाद ।
सेहेरग से नजीक, देखी इनों बका बुनियाद ।।९।।

"अलस्तो बिरब्बी कुंम" का कथन उन्हें पुनः याद दिला रहे हैं (कि आपने कहा था कि "कालु बला" अर्थात हम आपको नहीं भूलेंगे) । इन ब्रह्मात्माओं ने अपने मूल स्वरूप को मूल मिलावे में प्रियतम अक्षरातीत के चरणों में, प्राणनली (शहरग) से भी नजदीक देखा है ।

जाग्रत बुद्ध दई इनों को, जिनसे देखी लेहेर बका हक ।
सराब तहूरा उतरी इनों पर, पिलाया हादी हक इशक ।।१०।।

उन मोमिनों को परब्रह्म हक तआला ने जागृत बुद्धि प्रदान की है,

जिससे उन्होंने अखण्ड परमधाम में विद्यमान प्रियतम परब्रह्म के अनंत सुख सागर की लहरें देखी । उन्हीं के वास्ते परमधाम के सर्वोपरि आनंद वाला इश्क का शराब (शराब तहूरा-तारतम ज्ञान) अवतरित हुआ है । प्रियतम के इश्क रूपी शराब को हादी (श्री श्यामा जी) पिला रही हैं ।

दिया जोश इनों जबराईल, कर निगेहबानी हर मोमिन ।
साफ रखे सब अंग, पल पल करे रोशन ॥११॥

प्रियतम अक्षरातीत ने उन ब्रह्मात्माओं को अपना जोश (आवेश) प्रदान किया है, जो पल पल ब्रह्मात्माओं की हिफाजत कर रहा है । हर पल उनके हृदय को स्वच्छ रखता है, और ज्ञान का प्रकाश देता रहता है । (कुर्आन के कथानक के अनुसार जोश को जिब्रील के रूप में दर्शाया गया है । कुर्आन पाक १९/१७ में इसे फरिश्ते के साथ-साथ खुदा की रूह भी कहा गया है -"जाको रूहल अमीन नाम")।

कुंजी अरस अजीम से, पाया रूह अल्ला इस ठाम ।
सो दई हाथ मोमिन के, देखी जासो बका इसलाम ॥१२॥

परमधाम से तारतम ज्ञान रूपी कुंजी ईसा रूहूल्ला (श्री श्यामा जी) इस संसार में लाये हैं और ब्रह्मात्माओं के हाथ में वह शक्ति प्रदान कर दी, जिसके द्वारा सुंदरसाथ ने अखण्ड परमधाम के शाश्वत सुखों को प्राप्त किया ।

रूहें कुंजी इनों तन से, तुम गिरो रब्बानी उम्मत ।
गंज इलाही फिरकान, इनों सो खोली साएत कयामत ॥१३॥

उस तारतम ज्ञान के द्वारा ब्रह्मात्माओं को ज्ञान हुआ, कि उनका मूल तन परमधाम में हैं । वे ही रब्बानी उम्मत (ब्रह्म की सृष्टि) हैं । समस्त धर्मग्रंथों का सार भूत परमात्मा प्रदत्त (इलाही-ईश्वरीय) गुह्य ज्ञान उन ब्रह्मात्माओ के समक्ष स्पष्ट करके कियामत (आत्मजागृति) का समय प्रकट किया है ।

हुकम हक सुभान का, सो रहे इन के साथ ।
खेल देखाए अरस में, मिलावे हक की जात ॥१४॥

प्रियतम अक्षरातीत का हुक्म हमेशा इन मोमिनों के साथ रहता है, जो माया रूपी खेल दिखाकर परमधाम में अपने मूल तनों में जगाकर प्रियतम अक्षरातीत से मिला देगा ।

ए पांचों न्यामत इनों वास्ते आई अरस से उतर ।
सिफत इन मोमिन की, नाही कोई पटन्तर ।।१५।।

ये पांचों नैमतें (शक्तियां) इन ब्रह्मात्माओं के वास्ते परमधाम से अवतरित हुयी हैं । इन ब्रह्मात्माओं की महिमा के तुल्य अन्य कुछ भी नहीं है (इस प्रकार चौपाई १० से १५ तक सुंदरसाथ के अंदर विराजमान पांच शक्तियों का विवरण पूरा होता है, जिसके अंतर्गत जागृत बुद्धि, जोश, तारतम ज्ञान, परमधाम की आत्मा, हुक्म आते हैं) ।

द्वार आठो भिस्त के, एही मोमिन खोलनहार ।
त्रैगुन समेत दुनी को, पोहोंचावे जूलमत पार ।।१६।।

आठों बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) के द्वार वे ब्रह्मात्माएं ही (तारतम ज्ञान के द्वारा) जगत जीवों के लिये खोलेंगी । त्रिदेवा सहित समस्त दुनिया को भी वे ब्रह्मसृष्टि ही निराकार के पार पहुंचायेंगे ।

एही बेवरा अरस अजीम का, ल्याए बीच नासूत ।
जहां जबराईल पोहोंचा नहीं, ना खावंद मलकूत ।।१७।।

वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही परमधाम का ज्ञान इस मृत्युलोक (नासूत) में लाये हैं, जहां जिब्रील नहीं पहुंच सका और ना ही वैकुण्ठ (मलकूत) के स्वामी विष्णु भगवान (अजाजील) पहुंच पाये ।

महंमद की सिफाएत, इनों सो पावे सब कोए ।
जो है इनों से मुनकर, ताको गेहेरी दोजक होए ।।१८।।

मुहम्मद स.अ.व. (हकी सूरत) की सिफायत (अनुशंसा-तारतम ज्ञान) इन्हीं के द्वारा अन्य सब लोग प्राप्त कर सकेंगे । जो इनके वचनों (ज्ञान) को नहीं मानेगा, उसे गहरी दोजख (पश्चाताप) की अग्नि में जलना पड़ेगा ।

आठो सागर अरस के, तिनकी एही देवे खबर ।
जो कोई कानों सुने, सुख नाहीं पटन्तर ।।१९।।

अर्श आजम (परमधाम) के आठों सागरों का ज्ञान भी वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही दुनिया को देंगे । जो कोई भी उसका श्रवण करेगा, उसे अतुलनीय सुख प्राप्त होगा ।

वाकी नजर अरस में, पोहोंची बका भोम ठौर नूर ।
जो अक्षर को सुध नाहीं, सो पाया इनो जहूर ।।२०।।

उसकी आत्मिक दृष्टि अखण्ड परमधाम की दिव्य भूमिका में पहुंच जायेगी । रंगमहल के अंदर की जिस लीला व स्वरूप का अक्षरब्रह्म को भी ज्ञान नहीं है, वह ज्ञान दुनिया के जीव भी प्राप्त कर लेंगे ।

इन समान और कहा कहूं, सो पोहोचें ना सुख सागर ।
फना देखहीं बका में, पावे मोमिन संग मेहर नजर ।।२१।।

इसके तुल्य सुख और कहां से बताऊं ? परमधाम के सागर समान दिव्य सुखों की तुलना में कोई सुख है ही नहीं । ब्रह्मात्माओं की कृपा दृष्टि से नश्वर संसार वाले भी अखण्ड परमधाम को देखेंगे ।

एह तो वस्त अपार है, कैसे मालुम होए ।
अपार कहे चुप रहे, तो कछु हाथ न आवे सोए ।।२२।।

परमधाम के सुख तो अनंत हैं, वहां की शोभा का ज्ञान किस प्रकार हो? अपार-अनंत कहकर चुप हो जायें तो कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकेगा ।

तिस वास्ते दो एक सुकन, कहूं ए सागरो के हुकम ।
तुम नीके देखियो, तुम वास्ते कहे हम ।।२३।।

इस कारण श्री राजजी के आदेश से सागरों के विषय में एक-दो वचन कहूंगी । इसे आप ध्यानपूर्वक देखिये, यह आपके लिये ही हम कह रहे हैं ।

एह पेहेले कहे हादीय ने, बीच गिरोह मोमिन ।
सो गरभित थे सुकन, सो नेक जाहेर किए रोशन ।।२४।।

इसका वर्णन पहले ही श्री प्राणनाथ जी ने सुंदरसाथ के समक्ष किया है। वे कथन रहस्यमयी (कठिन) थे, इस कारण थोड़ा सा आपके सामने प्रकाश डाल रहे हैं ।

और केहेना केहेलावना, हक हादी बिना ना होए ।
कान भी हक देवहीं, तब सुन सके कोई सोए ।।२५ ।।

और इसका वर्णन करना व करवाना श्रीराज श्यामा जी के बिना सम्भव भी नहीं है । सुनने का सामर्थ्य भी श्री राज जी ही देते हैं, तभी कोई उसका श्रवण कर पाता है ।

आखें भी हक देवहीं, करू देख नजर ।
सोई अरस अजीम की, देखे नूर फजर ॥२६॥

उसका ध्यान करने के लिये आंखें (आत्मिक दृष्टि) भी प्रियतम श्री राजजी ही देते हैं । आत्मिक दृष्टि से देखकर परमधाम का वर्णन करूंगा, जिसे श्री राजजी आत्मिक दृष्टि देते हैं, वही परमधाम की नूरमयी शोभा को देखता है।

तब चीन्हे आप को, पावें दीदार हक ।
जब प्याले इशक में, होए जाए गरक ॥२७॥

तब श्री राजजी की कृपा से अपनी परात्म की पहचान होती है और प्रियतम अक्षरातीत के दर्शन होते हैं । जब श्री राजजी के इश्क (श्रीराजजी के स्वरूप) में डूब जाते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, आगे विचारों मन ।
हक सुभान मेहेर कर, तुम ऊपर किया हुकम ॥२८॥

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आगे अपने मन में विचारिये, कि प्रियतम श्रीराज जी ने आप पर अपार मेहर करते हुए परमधाम दिखाने का हुक्म किया है ।

प्रकरण ९३ चौपाई ३५१२

नूर सागर

इस प्रकरण में नूर सागर की शोभा का वर्णन है । परमधाम के अग्नि कोण में सुशोभित नूर सागर तारतम ज्ञान रूपी कुंजी है, जिनसे परमधाम के सभी छिपे रहस्य खोले जा सकते हैं । नूर सागर की ज़मीन नूरमयी, एकरस, चेतन, कोमल और सुगंधी से युक्त है । परमधाम की पूर्व दिशा में अक्षरधाम, सात घाट और यमुना जी की अपार शोभा है और दक्षिण दिशा में बटपीपल की चौकी, कुंज निकुंज वन, हौजकौसर तालाब और माणिक रंग में जगमगाते माणिक पहाड़ की अनुपम शोभा है । पश्चिम दिशा में फूल बाग, नूर बाग, अन्न वन और पश्चिम की चौगान शोभायमान हैं और उत्तर दिशा में स्वर्णिम आभा से जगमगाता पुखराज पहाड़ है । छोटी रांग की बाहरी ओर आठ सागर और आठ ज़मीन आये हैं । नूर सागर में आए टापू महलों और महाबिलंद हवेलियों की शोभा अपरंपार है ।

नूर कुंजी अगिन मुसाफ की, कले कुलफ खोलत हकीकत ।
सुध पाइए नूर सागर नूर पार की, हक मारफत नूर खिलवत ।।१।।

परमधाम के अग्नि कोण में स्थित नूर सागर, कुर्आन आदि धर्मग्रंथों की दिव्य चाबी है, जो युक्ति पूर्वक सत्यज्ञान के रहस्यों को स्पष्ट करता है । नूरसागर के द्वारा अक्षर धाम से भी परे अक्षरातीत परमधाम (रंगमहल) की खिल्वत (अंतःपुर में होने वाली लीला) और परब्रह्म के मारिफ्त (परमसत्य) स्वरूप की पहचान होती है ।

नूर जिमी सब एक रस, ऊंची नीची ना बराबर ।
एक रस धाम चेतन, गढा ऊंची नीची ना टेकर ।।२।।

परमधाम की नूरमयी धरती सब एकरस (एक समान शोभा से युक्त) है। कहीं भी ऊंचा-नीची नहीं है, सम्पूर्ण धरती बराबर ऊंची है । परमधाम एकरस व चेतन (सच्चिदानंद स्वरूप) है । कहीं भी गड्ढा या ऊंची जमीन या नीची जमीन या टेकरी नहीं है ।

चेतनता इन ठौर की, सिफत जात है हक ।
इंतहाए नहीं इन जिमी का, ए दिशा चारों बुजरक ।।३।।

इस दिव्य परमधाम की चेतनता, परब्रह्म के स्वरूप की ही विशेषता है । परमधाम की इस धरती का कोई अंत नहीं है । चारों दिशायें अनंत शोभा से युक्त हैं ।

है पूरब दिश अक्षर की, हैं दक्खिन दिश मानिक ।
पश्चिम दिश मैदान ज्यूं, पुखराज उत्तर दिशा ना शक ।।४।।

रंगमहल की पूर्व दिशा में अक्षरधाम विद्यमान है, तो दक्षिण दिशा में माणिक पहाड़ शोभायमान है । पश्चिम दिशा में रेती का मैदान (पश्चिम चौगान) है, तो उत्तर दिशा में पुखराज पहाड़ शोभायमान है। इनमें कोई भी संशय नहीं है।

मध्य श्री धाम विराजत, मोहोल मंदिर नाहीं सुमार ।
सबो सिफतें नूर जात की, मोमिनों दिल विचार ।।५।।

परमधाम के ठीक मध्य में श्री धाम रंगमहल विराजमान है, जिसके अंदर महल-मंदिरों का कोई पारावार नहीं है । प्रत्येक वस्तु नूरी स्वरूप वाली है, जिसका ज्ञान मात्र ब्रह्मात्माओं के हृदय में आया है ।

नूर हैं इन जिमी का, बका ठौर सब साफ ।
ठौर रमन की जुदी जुदी, हैं साहिद इत मुसाफ ।।६।।

अखण्ड परमधाम की सम्पूर्ण धरती नूरमयी तथा पवित्र है । रमण करने के लिये अलग-अलग अनेकों स्थान हैं, जिसकी साक्षी कुर्आन पाक में है ।

मोहोल मंदिर दोरी बंध, कई भांतो हर ठौर ।
कै नेहेरे चेहेबच्चे नूर के, बिना मोमिन ना जाने और ।।७।।

महल, मंदिर सब पंक्तिवद्ध रूप से शोभायमान हैं । अनेक प्रकार की संरचना के महल मंदिर सब जगह आये हैं । इनमें कई नूरमयी नहरें, चेहेबच्चे हैं, जिसे ब्रह्मात्माओं के बिना अन्य कोई नहीं जानता ।

जिमी रंग जुदे जवेरन की, जुदी मोहोलात सब नूर ।
तहां बैठक बारीकियां, महंमद सिफाएत जाने जहूर ।।८।।

वहां की धरती के रंग भी अलग-अलग जवाहरतों के हैं । सभी महल नूरमयी एवं अलग-अलग संरचना के हैं । वहां बैठने के स्थानों का बारीकी से वर्णन मुहम्मद हकी सूरत (महामति जी) की अनुशंसा (तारतम ज्ञान) से जाना जाता है ।

कई ठौर अरस गृद की, कई ठौर रमन पुखराज ।
कई ठौर मानिक पहाड़ में, हक हादी रमें रूहें राज ।।९।।

रंगमहल के चारों तरफ अनेकों हांस-विलास के स्थान हैं । रमण के कई स्थान पुखराज पहाड़ में हैं । कई स्थान माणिक पहाड़ में हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं करते हैं ।

कई पश्चिम ठौर मैदान के, रमन राज इत जाए ।
नूर जिमी दूब मैदान, तहां कई विध खेल खिलाए ।।१०।।

कई सुख पश्चिम की चौगान (रेती के बहुत बड़े मैदान) में हैं, जहां रमण (सवारी) करने श्री राज जी (श्यामा जी एवं सखियों के साथ) जाते हैं । पश्चिम में ही नूरमयी दूब का मैदान (दूब दुलीचा) है, जहां राजजी सखियों को अनेक प्रकार से खेल खिलाते हैं ।

पूरब ठौर अक्षर की, कई वन मोहोल जानवर ।
नूर इंतहाए ना पार कहूं, एक रस बराबर ।।११।।

रंगमहल की पूर्व दिशा में अक्षरधाम है, जहां अनेक प्रकार के वन हैं, जहां अनेक प्रकार के पशु-पक्षी रहते हैं । इनके नूर की कोई सीमा नहीं है, ना ही उसकी शोभा का कोई पारावार है । सम्पूर्ण धरती एकरस व बराबर शोभायमान है ।

याके रांग गृदवाए, आठों दिश लों दरखत हार ।
चार चार आगे चबूतरे, दोए बाजू दोए दरखत बिचार ॥१२॥

इन सारी शोभा को घेरकर परमधाम के चारों तरफ बड़ी रांग की हवेलियां शोभायमान हैं । आठों दिशाओं (चार दिशा व चार कोनों) में इन हवेलियों के सामने वृक्षों की पंक्तियां शोभायमान हैं । प्रत्येक हवेली के सामने चार-चार चबूतरे हैं, जिसमें से दो चबूतरे नीचे चांदनी चौक में दायें-बायें आये हैं, जिन पर लाल व हरे रंग के दो वृक्ष शोभायमान हैं ।

दोए लगते रांग दोए, मुनारे नूर छज्जे ।
चढ़ते चढ़े रांग लो, नूर बैठक कई इन के ॥१३॥

तथा बाकी दो चबूतरे रांग की हवेलियों के मुख्य द्वार से लगते हुए (दायें–बायें) आये हैं, जिनकी ऊपरी भोमों के छज्जे, दो चौरस गुर्ज (मीनारों) के रूप में रांग की चांदनी तक गये हैं । इनमें कई नूरमयी बैठकें शोभायमान हैं ।

चार हार हवेलिया, रांग के गृदवाए ।
पांच भोम ऊंच्चे लगे, छठी चांदनी आए ॥१४॥

बड़ी रांग की हवेलियों के अंदर की तरफ चारों ओर छोटी रांग की चार हार हवेलियां आयी हैं, जिनकी ऊंचाई पांच भोम छठी चांदनी है (इनकी एक-एक भोम में १२-१२ हजार भोमें हैं) ।

दरवाजे सामे रस्ते, मैदान देखत दरम्यान ।
सब ठौर नूर चेतन में, रांग ऊंच्ची लग आसमान ॥१५॥

इनके दरवाजों के सामने रास्ते (रौंस) शोभायमान हैं । रौंस व दरवाजे के मध्य में चांदनी चौक दिखायी दे रहा है । सभी स्थान नूरमयी व चेतन हैं । इस प्रकार छोटी रांग की हवेलियां आसमां तक ऊंची गयी हैं ।

गृद हांस बत्तीसों, फिरते सोले दरबार ।
तिन आगे चार चबूतरे, हर दरवाजे करो विचार ॥१६॥

बड़ी रांग के समान छोटी रांग-चार हार हवेलियों के भी ३२ हांस आये हैं । एक हवेली के चारों दिशा में मुख्य द्वार (दरबार) व चांदनी चौक शोभायमान हैं । चार हवेलियों के कुल १६ दरबार होते हैं । उनमें से प्रत्येक दरवाजे के सामने चार चबूतरे उसी प्रकार (दो ऊपर व दो नीचे) शोभायमान हैं । उनका विचार किजिये ।

रांग पार आठो सागर, ता बीच जिमी बराबर ।
दोए सागरों बीच जिमी, दोए जिमी बीच सागर ।।१७।।

छोटी रांग की हवेलियों के बाहरी तरफ और बड़ी रांग की हवेलियों के बीच (परमधाम की चारों दिशाओं एवं चारों कोनों में) आठों सागर आये हैं । इनके बीच बीच में (क्रमशः एक के बाद एक) वनों की जमीन (जंगल) भी बराबर ऊंची आयी है । दो सागरों के बीच एक जमीन (जंगल) है, तथा प्रत्येक २ जमीन के बीच एक सागर है ।

गृद फिरती चारों तरफ मोहोलात, रहे हर सागरों ऊपर ।
छज्जे मोहोल कई भांत के, नूर रोशन भरो अंमर ।।१८।।

प्रत्येक सागर के चारों तरफ भोम भर ऊंचे चबूतरे पर बड़ी रांग की हवेलियां शोभायमान हैं, जिनमें अनेक प्रकार के महल एवं छज्जे विद्यमान हैं, जिनकी नूरमयी रोशनी अम्बर (आकाश) में जगमगा रही है ।

फिरत गृद चबूतरा, तले परदक्षिणा गृदवाए ।
जल हाथ लगता लीजिए, ए सोभा कही न जाए ।।१९।।

सागर की चारों तरफ भोम भर ऊंचा चबूतरा घेर कर आया है, जिसके सामने (सागरों की किनार पर) चारों तरफ प्रदक्षिणा (जल रौंस) घेरकर आयी है, जहां से सागर का जल हाथों से स्पर्श कर सकते हैं । यह शोभा अवर्णनीय है ।

दरवाजे सामे सागर के, गिनती बारे हजार ।
और दोए बाजू मोहोल सागर के, चौबीस हजार हैं द्वार ।।२०।।

सागर की एक दिशा में हवेलियों के १२ हजार दरवाजे शोभायमान हैं, तथा सागर के दायें-बायें हवेलियों के १२-१२ हजार (कुल २४ हजार) द्वार हैं ।

ए हर सागरों देखियों, अड़तालीस हजार हैं द्वार ।
एह ठौर देखन की, मोमिन करो विचार ।।२१।।

इस प्रकार प्रत्येक सागर के उपरोक्त तीन दिशा के कुल ३६,०००

द्वार होते हैं, (चारों तरफ के मिलाकर कुल ४८ सहस्त्र द्वार होते हैं)। यह स्थान अनुपम शोभा से युक्त दर्शनीय है । सुंदरसाथ जी इसका चिंतन कीजिये ।

नूर टापू गृद सागर, ताकी कई विध की मोहोलात ।
ताकी छातें दूर रांग लों, ए नूर कह्यो न जाए हक जात ॥२२॥

सागरों के मध्य बेशुमार नूरमयी टापूमहल हैं, जिनमें अनेक प्रकार के महल शोभायमान हैं । इनकी ऊंचाई बड़ी रांग के समान ही आकाश तक है । सच्चिदानंद स्वरूप परमधाम के इन महलों की नूरी शोभा अवर्णनीय है ।

बीच जिमी दरबार के, बड़ी पौर दरबार ।
रस्ते बराबर जिमी के, कई दरखत नूर विस्तार ॥२३॥

इसी प्रकार बड़ी रांग की महाहवेलियों के मध्य जिमी की शोभा है, जिसकी चारों दिशा में बड़े दरवाजे दरबार के रूप में शोभायमान हैं । जिमी के सभी रास्ते बराबर ऊंचे एक सीध में आये हैं । जिमी में अनेकों नूरमयी वृक्षों का विस्तार (घने जंगल के समान) है ।

यों ही रांग सागर मोहोल, पीछल ऐसे सब द्वार ।
ऐसे ही जुगत सब तिन में, अनंत बडो विस्तार ॥२४॥

सागरों की बड़ी रांग की हवेलियों के समान ही जिमी में भी महल, दरवाजे सब शोभायमान हैं । ऐसी ही युक्ति, शोभा, बनावट है, जिसका अत्यंत बड़ा विस्तार है ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए नूर जिमी अपार ।
मोहोल मंदिर नूर के, आवे ना जुबां विस्तार ॥२५॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि, हे सुंदरसाथ जी ! यह नूरमयी धरती अपार शोभा से युक्त है । यहां महल मंदिर सब नूर के हैं, जिसका विस्तृत वर्णन करना माया की जिह्वा से असम्भव है ।

प्रकरण ९४ चौपाई ३५३७

इलम लुदन्नी

इस प्रकरण में तारतम ज्ञान की महिमा का वर्णन है । श्रीराज जी की अपार मेहर से मोमिनों के दिल में हुक्म, जोश, जागृत बुद्धि, तारतम ज्ञान और इश्क की नैमतें आयी हैं । ब्रह्मात्माएं ही कुंज वन की फूलों से महकती गलियों का चितवन से दीदार करते हैं । कुंजवन में होने वाली श्रीराज श्यामा और रूहों की अलौकिक लीला महसूस करते हैं । यह वही भूमि है, जहां बारीक और अत्यंत ही नरम रेती में अर्श ए मिलावा रमण करता है, तो इनके पांव घुटनों तक ज़मीन में धंस जाते हैं और बेशुमार हाँसी होती है ।

एह इलम लुदन्नी, कुंजी बका की जे ।
नूकता इलम इनों को कहूं, हक दिल सों आया ए ।।१।।

यह इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) अखण्ड परमधाम की चाबी है । राजजी के दिल से जो इल्म के सागर की एक बूंद आयी है, उसका वर्णन ब्रह्मात्माओं के लिये कहता हूं।

एह मेहेर मोमिनों पर, पांचों चीजें करी रोशन ।
हुकम जोश जबराईल, बुध जागृत दिल मोमिन ।।२।।

यह कृपा ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) पर हुयी है । प्रियतम ने पांचों शक्तियां उनके हृदय में लाकर ब्रह्मज्ञान का उजाला कर दिया । हुक्म, जोश (जिब्रील), जागृत बुद्धि आदि शक्तियां मोमिनों के दिलों में आयी हैं ।

आई रूहें अरस अजीम से, तहां तारतम प्रकाश ।
बका भोम चेतन, मोमिन और न आश ।।३।।

वे ब्रह्मात्माएं अर्श अज़ीम (परमधाम) से आयी हैं । तारतम ज्ञान के द्वारा वहां का सारा प्रकाश (ज्ञान) हो गया । वह अखण्ड व चेतन भूमिका है, जिसके अतिरिक्त मोमिनों के दिल में अन्य कोई आशा (इच्छा) नहीं होती है ।

भोम बका में फेर, कुंज वन गली मंदिर ।
सब नूर चेतन में, खुश्बोए बेहेकत अन्दर ।।४।।

अखण्ड परमधाम में स्थित कुंजवन की शोभा पुनः देखते हैं । कुंजवन की गलियां व मंदिर सब नूरमयी व चेतन हैं, जिनके अंदर चारों तरफ खुश्बू ही खुश्बू महक रही है।

कई इन वन मोहोल हैं, कई रमने कई ठौर ।
कई चौक चबूतरे चेहेबच्चे, बिन मोमिन न जाने कोई और ।।५।।

यहां कई प्रकार के वन एवं महल हैं । कई प्रकार के रमण करने के स्थान हैं । कई चौक चबूतरे व चेहेबच्चे शोभायमान हैं, जिनकी शोभा मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के बिना अन्य कोई नहीं जानता है ।

कई रस्ते कुंज वन में, कई गलिया आडी टेढ़ी होए ।
कई हिंडोले हींचन के, मंदिर कहे न जाए सोए ।।६।।

कुंज वन के मध्य कई रास्ते हैं, कई आड़ी व खड़ी गलियां हैं । झूला झूलने के लिये कई हिण्डोले विद्यमान हैं । इन मंदिरों की शोभा अवर्णनीय है ।

कई फुहारें उछरत, कई मंदिर फूल दिवाल ।
हक हादी रूहें खेलत, इत मोमिन संग खुसाल ।।७।।

यहां कई फव्वारे उछल रहे हैं । फूलों की दीवारों से युक्त कई मंदिर हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां अनेक प्रकार से खेलते हैं, जिससे ब्रह्मात्माएं प्रसन्न हो जाती हैं ।

कई भांतो ठौर रमन के, कई रस मीठे स्वाद ।
कई भांत खूश्बोए इनमें, हक जाने बका बुनियाद ।।८।।

यहां रमण करने के लिये कई प्रकार के स्थान हैं । कई प्रकार के रसीले मीठे स्वाद के फल हैं । कई प्रकार की उनमें खुशबू विद्यमान है । परमधाम की इन आधारभूत बातों को श्री राज जी ही बेहतर जानते हैं ।

इत रेत रमन की, बारीक मोती मानक नूर ।
कहूं हीरा की झलकत, सो अतंत झलकत नूर ।।९।।

यहां रमण करने के लिये मोती व माणिक के समान अत्यंत बारीक नूरमयी रेती बिछी है । कहीं हीरा अत्यंत नूरमयी प्रकाश से जगमगाता हुआ दिख रहा है ।

कहूं दोए कोनों तीन कोनी, रहे हीरा जोत अपार ।
हक दाही रूहें रमें, हैं अतंत बडो बिस्तार ।।१०।।

रेती कहीं दो-कोणी हैं, तो कहीं त्रिकोणी है, जिनमें हीरे का अनंत प्रकाश जगमगा रहा है । श्री राज श्यामा जी एवं सखियां यहां अनेक प्रकार से

लीला विहार करते हैं । कुंजवन का अत्यंत बड़ा विस्तार है ।

आगे रेत रमन की, अति बारीक शोभित ठौर ।
जित पांऊ धरत गड़ जात हैं, इत हांसी होत अति जोर ।।११।।

कुंजवन की दक्षिण दिशा में (यमूना जी के अग्नि कोण के मोड़ के पास पुखराजी रौंस से लगकर) रेती रमण की जगह है, जहां अत्यंक बारीक रेती शोभायमान है । जहां पांव रखते ही धंस जाता है, इस प्रकार बहुत ज्यादा हंसी होती है ।

इत भोम वन सब चेतन, हक जात निसबत ।
इत कई खिलौने खेलत, कई मीठी रसना बोलत ।।१२।।

यहां की धरती एवं वन सभी चेतन (रूहमयी) हैं । सभी राजजी के स्वरूप हैं । यहां सखियों के लाडले अनेकों पशु-पक्षी (सखियों के खिलौने) खेलते हैं और मुख से कई प्रकार से मीठी वाणी निकालते हुए धणी का गुणगान करते हैं ।

हक हादी रूहें रिझावहीं, अति रस केहे बैन ।
कई भांत रस रूप में, सुख उपजत देखे नैन ।।१३।।

इस प्रकार वे नूरी पशु-पक्षी अत्यंत रसीली वाणी कहते हुए श्री राज श्यामा जी एवं सखियों को रिझाते हैं । इनके स्वरूप व सुंदरता में कई प्रकार के रस भरे हैं, जिसे देखने पर नेत्रों में आनंद उत्पन्न होता है ।

ए आशक खिलौने हक के, रात दिन रटत जिकर ।
इनों के दिलों मिने, ए और ना रहे फिकर ।।१४।।

सखियों के लाडले ये खिलौने (पशु-पक्षी) श्री राज जी के आशिक हैं, जो रात-दिन प्रियतम धणी का जिक्र (गुणगान) करते रहते हैं । इनके हृदय में राजजी के अतिरिक्त अन्य कोई भी चिंतन नहीं होता है ।

इन भांत कई वन की, शोभा ना आवे मुख ।
इन ठौर बका की, एह कह्यो न जाए सुख ।।१५।।

इस प्रकार कई तरह के वन हैं, जिनकी शोभा माया की झूठी जिह्वा से वर्णन नहीं हो सकती है । इस नश्वर संसार में अखण्ड परमधाम की शोभा का वास्तविक वर्णन करना असम्भव है ।

महामत कहे ए मोमिनों, किल्ली रूह अल्ला ल्याये ।
कलाम अल्ला महंमद, हादी खोल दिया बताए ।।१६।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि ईसा रूहूल्ला (श्री श्यामा जी) तारतम ज्ञान रूपी कुंजी (चाबी) लेकर आये हैं । कलाम अल्लाह (कुर्आन पाक) के सभी रहस्य खोल कर मुहम्मद हकी सूरत ने बता दिया है ।

प्रकरण ९५ चौपाई ३५५३

सागर

हक तआला श्री प्राणनाथ जी ने क्षर अक्षर से परे वहदत (स्वलीला अद्वैत) स्वरूप परमधाम के द्वार खोल दिये हैं । परमधाम की ज़मीन चेतन, नूरमयी, कोमल, सुगंधी से युक्त हैं, जहां कभी कोई चीज़ नयी या पुरानी नहीं होती है, जहां मन के संकल्प मात्र से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं और जहां हक महबूब श्रीराज जी अपनी श्यामा महारानी और सखियों के संग अखंड लीला विहार करते हैं ।

ए कल बका जिमी की, खोली मेहेदी इमाम ।
दोए हादी सामें खडे, रूह अल्ला महंमद इसलाम ।।१।

अखण्ड परमधाम की तारतम ज्ञान रूपी चाबी से इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) ने युक्तिपूर्वक परमधाम के रहस्य खोले हैं। उनके समक्ष दोनों स्वरूप श्री देवचंद्र जी एवं मुहम्मद साहब खड़े हैं, जो शाश्वत शांति के मार्ग के प्रवर्तक हैं। (हकी सूरत में ही बशरी व मल्की स्वरूप की शक्तियां आयी हैं)

तिन से खुली हकीकत, ला हवा पार जो नूर ।
जहां से जहान पैदा भई, तहां का जाहिर किया जहूर ।।२।।

उस तारतम ज्ञान के द्वारा निराकार (क्षर जगत) से परे, जो अक्षर है, जहां से सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, उसका सारा ज्ञान पता चला ।

हकीकत मारफत के, खोले दरवाजे नूर पार ।
तिनसे बका ठौर देख्या, हुए मोमिन खबरदार ।।३।।

इमाम महदी साहिब ने अक्षर से परे अक्षरातीत परमधाम की हकीकत

(सत्यज्ञान) एवं मारिफत (परम सत्य) के सारे दरवाजे (रहस्य) खोल दिये हैं, जिनके द्वारा अखण्ड परमधाम की पहचान हुयी और ब्रह्मात्माए सावधान हुयीं ।

मोमिन जात हैं हक की, तिनकी देखी सब ठौर ।
सो सिफाएत महंमद से, एह साहेदी ना कादर और ।।४।।

ब्रह्मात्माएं परब्रह्म अक्षरातीत की ही अंगरूपा हैं । उनके निजघर के सभी स्थानों की पहचान हुयी । ऐसा मुहम्मद (हकी सूरत) की सिफायत (तारतम ज्ञान) से सम्भव हुआ है । इसकी साक्षी देने में (मुहम्मद के अतिरिक्त) अन्य कोई समर्थ नहीं है ।

भोम जिमी रस नूर की, ए सत चित्त आनन्द रूप ।
जुगल सरूप तहां शोभित, अति सुन्दर रूप अनूप ।।५।।

परमधाम की नूरमयी धरती इश्क रस से परिपूर्ण है, एवं सच्चिदानंद स्वरूप है । यहां युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी शोभायमान हैं, जिनका स्वरूप अत्यंत सुंदर उपमा से रहित है ।

वन मोहोल सब चेतन, भोम प्रकाश आसमान ।
सब किरने जंग करत हैं, साम सामी सब तान ।।६।।

परमधाम के वृक्ष, महल सब चेतन हैं । धरती व आकाश सब प्रकाशमान हैं । चारों तरफ कण कण से निकलने वाली रंगबिरंगी किरणें आमने-सामने से आकर आपस में टकराती हुई जंग करती प्रतीत होती हैं ।

इत नया पुराना ना होवहीं, सब चेतनता सुखकार ।
पर ना गिरे पशुअन का, बका ठौर ना काहूं पार ।।७।।

परमधाम में कभी भी कोई वस्तु पुरानी नहीं होती है, ना ही कोई वस्तु नयी (नये गुणधर्म की) बनती है । सभी चेतनता से परिपूर्ण व सुखदायी हैं । यहां किसी पशु का एक पंख या बाल भी नहीं गिरता है । अखण्ड परमधाम की नूरमयी धरती का कोई पारावार (सीमा) नहीं है ।

बस्ती विलास चेतन, जिमी न कहूं वेरान ।
सब सुखकारी बस्ती, सब हक के आशक जान ।।८।।

यहां की बस्ती (महल-मंदिर-वन) सुखदायी व चेतन हैं। यहां की धरती कहीं वीरान नहीं है । सभी जगह राजजी के आशिक पशु-पक्षी निवास करते हैं ।

यहां अनेक प्रकार के हांस-विलास के साधन हैं ।

एक खिलौना आए के, जाने तले दरखत ।
चाह करे तिन फल की, तबही आवे हाथ में इत ।।९।।

एक खिलौना (पशु) किसी वृक्ष के नीचे आकर उसके फल की चाहना करता है, तो वह फल तुरंत ही उसके हाथ में आ जाता है ।

इत तैसा ही बन्या, कमी कछू ना होए ।
एह स्वाद सब लेवहीं, उत कमी ना काहूं कोए ।।१०।।

फिर वृक्ष की तरफ देखने पर वह फल पहले से जैसे लटकता हुआ दिखायी देता है । वहां कभी भी किसी वस्तु की कमी नहीं होती है । वहां फलों से सभी प्रकार के स्वाद प्राप्त होते हैं, किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है ।

इन भांत सब ठौर में, बरतत इच्छा रूप ।
जुगल सरूप खेलत, अति सुन्दर रूप अनूप ।।११।।

इस प्रकार सभी जगह इच्छा अनुसार क्रिया होती है । युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी सखियों के साथ अनेक प्रकार से खेल-रामतें करते हैं । उनका स्वरूप अत्यंत सुंदर व उपमा से रहित है ।

संग सैयां सब खेलत, होत असवारी सब ठौर ।
बैठे मन इच्छा सुखपाल में, संग खिलौने अलेखे और ।।१२।।

श्री राज श्यामा जी के साथ में सभी सखियां अनेक प्रकार के खेल खेलती हैं, सभी जगह सवारी की लीला भी करती हैं । मनवेगी इच्छाचारी नूर के सुंदर सुखपालों में सब विराजमान होते हैं, और सवारी का आनंद लेते हैं । उनके साथ में असंख्यों पशु-पक्षी भी पिया के गुण गाते हुए चलते हैं ।

एक एक सुखपाल में, आगूं खिलौने नाहीं सुमार ।
हक हादी रूहो हंसावहीं, रूप बानी निरत न पार ।।१३।।

एक एक सुखपाल के साथ सखियों के लाडले असंख्य खिलौने (पशु-पक्षी) चलते हैं, जो श्री राज श्यामा जी व सखियों को अनेक प्रकार से खेल-तमाशा करके हंसाते हैं । इनके सुंदर स्वरूप, मीठी वाणी व नृत्य कला का कोई पारावार नहीं है ।

नित विलास जो नवतन, हैं अखंड आशक हक ।
कमी न काहूं बात की, रहे साफ दिल ना शक ।।१४।।

नित्य प्रति नये-नये आनंद प्राप्त होते हैं । ये पशु पक्षी श्री राज जी के अखण्ड आशिक हैं। इनमें किसी भी बात (गुण) की कमी नहीं होती है । इनके दिल पवित्र होते हैं व इन्हें धणी के विषय में किसी प्रकार का संशय नहीं होता है।

प्रीत रेहेत परस्पर, दे एक के दूजे आगे प्रान ।
एकै आतम सब में, रहे सब को पेहेचान ।।१५।।

इन पशुओं में परस्पर एक दूसरे के प्रति बहुत प्यार होता है, एक दूसरे के लिये अपने आप को समर्पित कर देते हैं । सबके अंदर एक ही आत्मा रहती है और सबको पूरी पहचान होती है ।

जड़ता भाव न काहूं में, चित्त न कबहूं भंग ।
हक हादी रूहो खिलावहीं, अपने जान के अंग ।।१६।।

परमधाम के किसी भी पशु-पक्षी में जड़ता का भाव नहीं है (सभी चेतन, सुजान, धणी के आशिक हैं) । इनका चित्त राजजी की तरफ से कभी भी नहीं हटता । श्री राज श्यामाजी एवं सखियां इन्हें अपने अंगरूप जानकर ही बहुत प्रेमपूर्वक खिलाते हैं ।

एह हकीकत हक की, जिनका नाहीं सुमार ।
कछुक संक्षेपे कही, ए जाने परवरदिगार ।।१७।।

यह प्रियतम अक्षरातीत (हक तआला) की हकीकत (सत्य ज्ञान) है, जिसकी कोई सीमा नहीं है । यहां संक्षिप्त में थोड़ा सा वर्णन किया है, इसे बेहतर तो प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, हो बीतक में तुम ।
ए तुम को दिखावत, हक सुभान का हुकम ।।१८।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! परमधाम की इन लीलाओं में आप शामिल हो । यह आपको श्रीराजजी का हुक्म ही दिखा (बता) रहा है ।

प्रकरण ९६ चौपाई ३५७१

रंग मोहोल

हक श्री राज जी अपनी अंगनाओं से आह्वान कर रहे हैं, कि हे साथ जी ! आपकी निसबत (आत्मिक संबंध) श्री राज जी से है । उठिए, कयामत का समय हो गया है । अपने सुखों को याद कीजिए कि किस प्रकार आप परमधाम के पच्चीस पक्षों में युगल स्वरूप के साथ रमण करते थे ? आठों सागर और इनकी चारों ओर आई हुयी आसमान को छूती हवेलियों को देखिए । इश्क से परिपूर्ण पशु पक्षी आपको किस प्रकार से रिझाते थे ? वह याद कीजिये। परमधाम के अखंड सुख आप ही के लिए हैं और आप ही इन सुखों के असल वारिस हैं ।

इन किल्ली लदुंनीय से, सुध पाइए सागर पार नूर ।
तिन नूर पार हकीकत, सब देख्या जाए जहूर ।।१।।

इस तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) रूपी चाबी से सर्वरस सागर से आगे अक्षर धाम का ज्ञान होता है तथा उस अक्षर से भी परे स्थित परमधाम (रंगमहल) की सारी हकीकत (वास्तविकता) एवं सारी शोभा का पता चलता है ।

सुध पाइए सागर पार नूर की, तिन पार सब ठौर ।
हुई महंमद सिफाएत ए, ताको भयो भोर ।।२।।

तारतम ज्ञान से सागर (सर्वरस) से परे अक्षर धाम की एवं उससे भी आगे, रंगमहल आदि सभी स्थानों की पहचान होती है । मुहम्मद हकी सूरत (महामति जी) की सिफायत (तारतम ज्ञान) जिसे प्राप्त हो जाता है, उसके लिये ब्रह्मज्ञान रूपी सवेरा हो जाता है ।

ए आठो सागर जो जानहीं, तरफ साहेदी अल्ला कलाम ।
बिन देखे सब देखिया, बैठे बीच दीन इसलाम ।।३।।

कलाम अल्लाह (कुर्आन पाक) की साक्षी से, जो आठों सागरों के रहस्य को जान लेता है, वह बिना देखे ही सब देख लेता है और शाश्वत सुख व शांति के मार्ग में प्रवेश कर लेता है ।

नूर रांग रमन की, ऊंन्नी लग आसमान ।
ताके द्वार गली चौक द्वार ने, कर दई मोमिनों को पेहेचान ।।४।।

बड़ी रांग की आसमां तक ऊंची नूरमयी हवेलियां अत्यंत रमणीय और मनोहारी शोभा से युक्त हैं । इनके द्वार, गली, चौक व दरवाजों की सब मोमिनों

(ब्रह्मात्माओं) को पहचान करा दी है ।

देखाए आठो सागर, सब जाहिर औऱ बातून ।
सब ठौर रमन के, सब ल्याए दिल मोमिन ।।५।।

सुंदरसाथ जी को श्री राज जी ने आठों सागरों के जाहिरी व बातिनी (गुह्य) सभी रूप दिखा दिये हैं । लीला विहार करने के सभी स्थान मोमिनों के दिल में बसा दिये हैं ।

मोहोल गृद आठो सागर के, चारों तरफों नाहीं सुमार ।
टापू मोहोल रांग लों, नूर झलकारों झलकार ।।६।।

आठों सागरों में से प्रत्येक सागर की चारों तरफ असंख्य महल आये हुए हैं, जिनका कोई हिसाब नहीं है । सागरों के मध्य आये टापू महल भी रांग की हवेलियों के समान आकाश तक ऊंचे हैं । इनकी नूरमयी किरणें झलकारों झलकार कर रही हैं ।

जब हक हादी आवत, तब मूजरा खिलौने करें ।
दिल में मोहोबत हक की, सब इशक अंग धरे ।।७।।

जब श्री राजश्यामा जी यहां आते हैं, तब यहां के पशु-पक्षी (खिलौने) धणी का दर्शन कर अभिवादन करते हैं । इनके दिलों में धणी की मुहब्बत होती है, तथा इनके सभी अंग इश्क से परिपूर्ण होते हैं ।

हक हादी रूहे हंसावही, आवत सब मूजरे ।
कई विध जिक्र करत हैं, अंग बड़ा इशक धरे ।।८।।

सभी पशु पक्षी पास आकर श्री राज श्यामा जी एवं सखियों को अनेक प्रकार से (खेल-तमाशे करके) हंसाते हैं । वे कई प्रकार से मीठी वाणी से धणी का गुणगान करते हैं । अपने अंग अंग में धणी के प्रति अपार प्रेम रखते हैं ।

देख सरूप सुख पावत, सो जुबां कह्या न जाए ।
हक नैनों अमृत सींचत, रहे सदा सुखदाए ।।९।।

वे पशु-पक्षी धणी का सुंदर स्वरूप देखकर अत्यंत सुख पाते हैं, जिसका जिह्वा से वर्णन नहीं हो सकता । श्री राज जी अपनी प्रेम भरी दृष्टि से इन्हें देखते हुए इन पर अमीरस (प्रेम) बरसाते हैं । वे पशु-पक्षी सदैव सुखदायी स्वरूप वाले हैं ।

कई पातसाहियां इन तरंग में, करत पशु पक्षी जे ।
हक जात निसवत की, कई सुख आराम पावे ए ॥१०॥

इस प्रकार, इश्क की तरंगों में डूबकर वे पशु-पक्षी परमधाम में अनेक प्रकार से राज्य करते हैं । श्री राज जी के ही स्वरूप, आत्मसंबंधी वे पशु-पक्षी अनेक प्रकार से सुख व आराम प्राप्त करते हैं ।

जो रहे अरस अजीम बका मिने, सो तो हक की जात ।
तिनके सुख की क्यों कहूं, इन जुबां ए बात ॥११॥

जो अर्शे अज़ीम-बका (अखण्ड परमधाम) में रहते हैं, वे सब पशु-पक्षी परब्रह्म के ही स्वरूप हैं । इनके सुखों का वर्णन इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार करें ।

जब हक हादी रूहें, आए बैठे छज्जे नूर ।
झलकत जोत आसमान में, सो कह्या न जाए जहूर ॥१२॥

जब श्री राज श्यामा जी एवं सखियां बड़ी रांग की हवेलियों के नूरमयी छज्जों (झरोखों) में विराजमान होते हैं, तब उनके नूर से आकाश जगमगा उठता है । उस शोभा का वर्णन नहीं हो सकता है ।

चारों तरफों मोहोलाएत, इन दरियाव के गृदवाए ।
तिन अन्दर खूब खुसालियां, आवत नाहीं जुबांए ॥१३॥

प्रत्येक सागर की चारों तरफ बड़ी रांग की महा-हवेलियां शोभायमान हैं, जिनके अंदर खूब खुशालियां निवास करते हैं, जिनका वर्णन शब्दों में सम्भव नहीं है।

कई कठेडे जवेर के, कई बैठक बारीकीयां नूर ।
कई छज्जे द्वार कमाडियां, आवे मोमिन दिल सहूर ॥१४॥

कई कठेड़े नूरमयी जवाहरातों के हैं । कई नूरमयी बैठकें बारीक नगों से युक्त हैं । कई छज्जे, दरवाजे व किवाड़ शोभायमान हैं, जिनकी शोभा का विचार मोमिनों के दिलों में ही आता है ।

बड़ी देहेलानों बीच में, कई चौक शोभित जवेरन ।
बीच फुहारें कई तरह, याकी क्यूं कर कहूं रोशन ॥१५॥

बड़े दहलानों (त्रिपोलियों) के मध्य में कई प्रकार के जवाहरातों के

चौक सुशोभित हैं । इनके बीच में कई फव्वारे उछल रहे हैं । इनकी शोभा व दिव्य प्रकाश का किस प्रकार वर्णन करें ।

एह तो नूर जमाल की, दिल माफक बैठक ।
सो तो मोमिन जानहीं, या जाने सुभान हक ।।१६।।

यह तो अद्वितीय तेजोमयी स्वरूप वाले परब्रह्म की नूरमयी बैठकें हैं, जो उनके दिल के अनुरूप हैं । उसकी शोभा या तो ब्रह्मप्रियायें जानती हैं, या तो स्वयं प्रियतम अक्षरातीत जानते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, तुमारी हक निसबत ।
ए सुख देखे आपने, उठो रोज कयामत ।।१७।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! प्रियतम अक्षरातीत से आपक मूल आत्मिक संबंध है । आपने अपने निजघर के सुखों को देख लिया, अब इस कियामत की बेला में अपने निजस्वरूप में जागृत हो जाओ ।

प्रकरण ९७ चौपाई ३५८८

सागर रांग जिमी नूर

इस प्रकरण में परमधाम की नूरमयी, चेतन, कोमल, सुगंधी से भरपूर धरती का वर्णन है, जहां युगल स्वरूप श्रीराज श्यामाजी और सखियां अखंड लीला विहार करते हैं । रंगमहल की पूर्व दिशा में स्थित अक्षरधाम की शोभा, श्रीराज जी ब्रह्मात्माओं को दिखा रहे हैं, जो अक्षरब्रह्म का स्थान है । उनके इशारे मात्र से एक ही पल में करोड़ों ब्रह्मांड बनकर लय को प्राप्त हो जाते हैं । तारतम ज्ञान से ही मोमिन अर्श की गलियों में आत्मिक दृष्टि से रमण करते हैं । मोमिन जब वापस अपने परमधाम में श्रीराज जी के चरणों में पहुंचेंगे, तब उस समय श्रीराज जी और सखियों के बीच जो बातचीत होगी, उसका वर्णन इस प्रकरण में किया गया है ।

बका जिमी सब चेतन, और चेतनता वृक्ष नूर ।
पशु पक्षी सब खेलत, रहे आशक हक हजूर ।।१।।

अखण्ड परमधाम की सम्पूर्ण धरती चेतन (आत्मस्वरूप) है और नूरमयी वृक्ष भी चेतन हैं । यहां पशु-पक्षी अनेक प्रकार से खेलते व भ्रमण करते

दिखायी देते हैं । ये आशिक हमेशा श्री राजजी के समीप (प्रेम की छांव तले) रहते हैं ।

ठौर रमने के चित्त धरो, कई विध की मोहोलात ।
खाली काहू ना पाइए, खेलत हैं हक जात ।।२।।

रमण (हांस-विलास) करने के इन स्थानों की शोभा को अपने चित्त में धारण करो । यहां कई प्रकार के महल (हवेलियां) हैं, जिनमें से कोई भी खाली नहीं है । इनमें श्री राजजी के ही स्वरूप पशु-पक्षी खेलते-विचरण करते हैं ।

जो पूरब तरफ देखिए, जित रहेत नूरजलाल ।
दायम आवे दीदार को, मूजरे को नूरजमाल ।।३।।

यदि पूर्व दिशा में देखें, जहां अक्षरधाम में अक्षर ब्रह्म (नूरजमाल) रहते हैं, वे नित्यप्रति अक्षरातीत परब्रह्म के दर्शन व अभिवादन के लिये जाते हैं ।

इन नूर के निमख से, कई कोट इन्ड पैदा होए ।
निमख में फना करे, याके खेल को न पावे कोए ।।४।।

उन अक्षर ब्रह्म के पल मात्र समय में कई करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न हो जाते हैं और एक ही क्षण में लय को प्राप्त हो जाते हैं । उनके खेल के इस रहस्य को कोई नहीं जान पाता है ।

जिमी पार न तिन का, बाग मोहोल सब नूर ।
पशु पक्षी सब नूर में, जहां रहे हमेशा जहूर ।।५।।

उन अक्षर ब्रह्म की धरती (अक्षरधाम) का भी पारावार नहीं है । वहां के बगीचे, महल सब नूरमयी हैं । नूरमयी पशु-पक्षी हमेशा ही वहां शोभायमान रहते हैं ।

जिमी एक रस नूर में, बसत जबराइल जित ।
तहां से ल्यावे नूर रोशनी, आए देत मोमिनों को इत ।।६।।

वहां (अक्षरधाम) की धरती एक रस नूरमयी है, जहां जिब्रील निवास करता है । यहां से वह नूरमयी ज्ञान की रोशनी लेकर आता है और आकर यहां मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को देता है ।

वकीली मोमिनों की, करत जबराइल जोर ।
जहां मोमिन बसत हैं, देत परदक्षिना तिन ठौर ।।७।।

जिब्रील मोमिनों की वकालत (सत्य-असत्य की पहचान) पूर्ण शक्ति से कराता है । जहां मोमिन रहते हैं वहां उनकी (अज्ञान से रक्षार्थ) परिक्रमा लगाता है ।

मोमिनों को रोशन करे, जोश जबराइल आए ।
सन्देशे हक सुभान के, मोमिनो को पोहोंचाए ।।८।।

धणी का जोश (जिब्रील) आकर मोमिनों के हृदय में ज्ञान का प्रकाश करता है । हक सुब्हान तआला (प्रियतम अक्षरातीत) के संदेशे ब्रह्मात्माओं तक पहुंचाता है ।

कामिल अकल मोमिन की, असराफिल बजावत सूर ।
गावत कलाम अल्लाह को, होत रोशन खुदाए का नूर ।।९।।

ब्रह्मात्माओं की समर्थ बुद्धि में आकर अश्राफील (जागृत बुद्धि) सुर फूंकता है, अर्थात् ज्ञान की समझ देता है । कलाम अल्लाह का गायन करता है, अर्थात् कुर्आन के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता है, जिससे खुदा का नूर मोमिनों के हृदय में प्रकाशित होता है ।

असराफिल उडावहीं, पहाड़ जरा ज्यों तूल ।
ले ले बैठे बुजरकियां, सरियत अपनी भूल ।।१०।।

अश्राफील फरिश्ता (जागृत बुद्धि) विद्वानों के अहंकार रूपी पहाड़ को चूर चूर करके रूई के समान कर देता है, जो अज्ञानतावश शरीयत (कर्मकाण्ड) का अहंकार लेकर स्वयं को सबसे महान समझ रहे हैं ।

ते पहाड़ उड़ाए फूंक से, ज्यों आंक तूल उड़े बिना वाए ।
बताया पेड़ जो तिन का, हवा बीच पोहोंचाए ।।११।।

उस झूठे ज्ञान के अहंकार रूपी पहाड़ को सुर फूंक कर (जागृत बुद्धि के द्वारा) उड़ा देंगे, जिस प्रकार आंक का तूल (रूई), बिना हवा चले भी (बहुत हल्का होने के कारण) उड़ता रहता है । उन जीवों का मूल उद्गम स्थान निराकार है, अंततः उन्हें वहीं पहुंचा देगा ।

करे साएत को कायम, जो साएत हक हजूर ।
तिन दरम्यान सब गलियों, बका ठौर एही जहूर ।।१२।।

इस प्रकार अश्राफील (जागृत बुद्धि) ब्रह्मज्ञान को दुनिया में जाहिर करके परमधाम मूल मिलावे के उस पल (में हुयी सारी लीला) को अखण्ड कर

देगा । उसी पल में (जागनी लीला में) अखण्ड परमधाम के अंदर स्थित नूरमयी गलियों, महलों, आदि में होने वाली दिव्य लीलाओं का सुख हमने प्राप्त किया। आदि शोभायमान हैं । (जागृत बुद्धि व तारतम ज्ञान दो अलग शक्तियां हैं । ज्ञान समझने हेतु जागृत बुद्धि की भी आवश्यकता होती है । अभी संसार में तारतम ज्ञान तो प्रकट हो गया है, किंतु समस्त दुनिया वालों को जागृत बुद्धि अभी प्राप्त नहीं हुई है । इसलिये वे सत्य नहीं समझ पा रहे हैं । अंत में समस्त दुनिया वालों को भी जागृत बुद्धि प्राप्त हो जायेगी । "मेरी बुध जाये विष्णु को, देसी खबर") ।

मोमिन आए तिन ठौर से, देखन खेल कुफार ।
सो खेल देख पीछे फिरें, कोई रह्या ना और विचार ।।१३।।

ब्रह्मात्माएं उस अखण्ड परमधाम से दुनिया में माया का झूठा खेल देखने आये हैं । अब खेल देखकर वापस परमधाम जायेंगी । अब उनके हृदय में अन्य कोई भी आशा नहीं रही है ।

हक हजूर जाए के, करें बातें बीतक ।
कहो केता खेल तुम देखया, तुमसे पूछत हजूर हक ।।१४।।

जब मूल मिलावे में जागृत होंगी तब श्री राजजी के समीप जाकर इस खेल की बीती हुई बातें करेंगी । वहां श्रीराजजी हमसे पूछेंगे कि "कहो, तुमने कैसा खेल देखा ।"

अपनी अपनी बीतक, कही चली सब कोए ।
हक सुभान हादी हंसत, रूहों एही खुसाली होए ।।१५।।

सभी सखियां क्रमशः अपनी-अपनी बीतक कह देंगे । श्रीराज जी एवं श्यामा जी हंसेंगे, सखियां भी बहुत प्रसन्न होंगी ।

इन खेल देखने को, हम धाए जोर ।
रहे वतन बिसर के, करे बातें हांसी ठौर ठौर ।।१६।।

सखियां कहेंगी, "उस मायावी खेल को देखने के लिये हम बहुत जोर लगाकर चले गये, किंतु वहां जाकर हम अपने निजघर को ही भूल गये ।" इस प्रकार हंसते हुए जगह-जगह सखियां बातें करेंगी ।

वही साएत वही रामत, बेर ना लगी लगार ।
ए जाने काहूं दूर गए, खेल में कर ना सके विचार ।।१७।।

सखियां कहेंगी, "परमधाम में वही पल, वही खेल-रामतें हैं । एक क्षण का भी समय नहीं बीता है, परंतु संसार में ऐसा लग रहा था कि जैसे हम कहीं बहुत दूर चले गये थे । संसार रूपी खेल में हम इसका विचार ही नहीं कर सके।"

मेरे पास बैठे हुते, मैं सुपने था तुमारे साथ ।
मैं साहेदी देवाई सबन से, पकड़े तुमारे हाथ ।।१८।।

राजजी कहेंगे, "आप मेरे समीप मूल मिलावे में ही विराजमान थे । मैं स्वप्न में (आवेश स्वरूप से) तुम्हारे साथ था, मैंने सबसे साक्षी भी दिलवायी, और तुम्हारे हाथ पकड़कर जगाया।

ए सुख शब्दातीत के, क्यूं कर आवे जुबान।
बाले थें बुढ़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान।। खिल्वत 6/36
नींदे दिये गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन।
तिनको भी हके ना छोड़िया, सिर पर रहे रात दिन।। खि. 6/40

तब तुम मुझसे पूछते, मैं तब ही देत जबाब ।
पर तुम कैसो ना मानत, तुमें क्यूं ही ना उडे ख्वाब ।।१९।।

तब तुम मुझसे जो भी पूछते थे, मैं तभी उसका जवाब देता था । पर तुम किसी भी तरह से नहीं मानते थे । तुम्हारे हृदय से स्वप्न (माया) किसी भी तरह से दूर नहीं हो पाता था ।

मैं सेहेरग से नजीक, बैठा तुमारे पास ।
मैं तुमें देखों तुम मुझ को, पर तुम क्यूं ना करो विश्वास ।।२०।।

मैंने तुम्हे वहां बताया, कि मैं तुम्हारे शहरग (प्राणनली) से भी नजदीक मूल मिलावे में तुम्हारे पास बैठा हूं । मैं तुम्हे देख रहा हूं और तुम मुझको देख रहे हो, परंतु उस समय आपने मेरी बातों पर विश्वास नहीं किया ।

इलम मेरा उनों में, जाए करो जाहेर।
मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थे बाहेर।। खिलवत 13/44
नहीं कायम चौदे तबक में, सो इत दिखाय दिया।
सेहेरग से नजीक अरस बका में लिया। खुलासा 10/45
सेहेरग से नजीक हक अर्स बीच, हक इलम देवे बैठाए।
ऐसा इलम लदुन्नी, रूहअल्ला ले आये।। मा. सा. 17/117

मैं साएत देखाई तुम को, हो तुम मेरे हजूर हक ।
तुमे मैं दूर ना किए नजर से, पर तुम भूल गए इशक ।।२१।।

मैंने परमधाम मूल मिलावे की वह घड़ी बतायी, जिसमें तुम मेरे समीप विराजमान हो । मैंने अपनी नजरों से आपको दूर नहीं किया है, परंतु तुम मेरे प्रेम को भूल गये ।

नजर से ना काढ़ी मुझे, अव्वल से आज दिन।
क्यूं कहूं मेहर महबूब की, जो करत ऊपर मोमिन।। खि. 6/38

तुम को धाम अन्दर की, सब देखाई ठौर ।
मुझ को देखो रूह सों, तुम बिना ना कछुए और ।।२२।।

आपको परमधाम के अंदर की सभी लीला स्थली दिखा दी और कहा, कि मुझे आत्मिक दृष्टि से देखो, तो तुम्हारे (परमधाम के) बिना कुछ और है ही नहीं ।

फेर तुम देखो और को, तब सिरक आवे दरम्यान ।
मैं बरजो इन सरीकी से, तुमें कछु ना होए पेहेचान ।।२३।।

फिर तुम मुझे छोड़कर दूसरी तरफ (संसारिक लक्ष्य की ओर) देखने लगते हो । तब हमारे बीच में शिर्क (राजजी के अतिरिक्त अन्य की चाहना) आ जाता है । मैं तुम्हे इस तरह के आचरण से मना करता था, किंतु तुम्हे कुछ भी पहचान नहीं हो पाती थी ।

मै क्यूं छोडो तुम को, इत न आवे विश्वास ।
तुमारी सिफत सब करे, तुम हो खासल खास ।। २४।।

मैं तुम्हे किस प्रकार छोड़ सकता हूं, वहां इस पर विश्वास नहीं होता था । आपकी महिमा सभी धर्मग्रंथ गाते हैं, आप ही खासुलखास मोमिन (ब्रह्मात्माएं) हो।

बात बड़ी है मेहर की, जित मेहर तित सब।
निमख ना छोड़े नजर से, इन ऊपर कहां कहूं अब।। सागर 15/25
जो आशिक अर्स अजीम की, तिन सिर नूरजमाल।
परीक्षा तिनकी जाहेर, शब्द लगे ज्यों भाल।। किरंन 91/8

जो देखो अपने आप को, तो तुम बैठे मेरे पास ।
तुमें इन ख्वाब की, क्यूं ए ना छूटे आश ।।२५।।

जो अपने निजस्वरूप का विचार करो, तो तुम तो मेरे ही चरणों में (मूल मिलावे में) विराजमान हो । तुमको इस स्वप्नमयी संसार की आशा क्यूं नहीं छूटती है ?

हक हादी रूहन सो, यों कर हुआ मजकूर ।
इशक रबद रूहन की, बातां करी हजूर ।।२६।।

मैंने तुम्हे वहां बताया कि परमधाम में श्री राज श्यामा जी व सखियों के मध्य इस प्रकार प्रेम वार्तालाप हुआ था और सबने अपने-अपने इश्क को बड़ा कहा था।

मैं बरजे ये तुम को, ए नाहीं देखन जोग ।
तुम फेर फेर एही मांगया, तुमें छूट जाए संजोग ।।२७।।

तब मैंने आपको मना किया था कि, ये माया जगत् देखने योग्य नहीं है। आप अपने निजस्वरूप व निजघर को भूल जाओगी, परंतु आपने पुनः पुनः वही खेल देखने की इच्छा व्यक्त की थी ।

यू हंस हंस आपस में, करे बाते खेल खुसाल ।
हांसी अंग न मावहीं, जब याद आवे फैल हाल ।।२८।।

इस प्रकार परमधाम मूल मिलावे में उठने के बाद सभी आपस में हंसते-हंसते खेल में प्राप्त सुखों की बातें करेंगे । उन्हें जब माया जगत् की उनकी रहनी व चाल-चलन की याद आयेगी तो उन्हें इतनी हंसी आयेगी, कि उनके अंग में समा नहीं पायेगी ।

जुदी जुदी बातां करें, जुदी जुदी बीतक ।
मिल बातें सब कोई करें, अपना याद इशक ।।२९।।

सब सखियां आपस में अपनी अलग-अलग बीती हुई बातों की चर्चा करेंगी और खेल में अपने इश्क की स्थिति याद करेंगी ।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम उठो कयामत ।
पोहोंचे हक हजूर, नजरों आए साइत ।।३०।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! कियामत की पवित्र घड़ी

में मूल मिलावे में आप राजजी के सम्मुख इस प्रकार उठोगे। आत्मिक दृष्टि के सामने मूल मिलावे की वह घड़ी आ गयी है ।

प्रकरण ९८ चौपाई ३६१८

रंगमहल की दक्षिण दिशा में सागर की शोभा

नूर दक्खिन सुख सागर, नूर वाहिदत मुख नीर ।
पाइए मारफत मुसाफ की, अरस अंग असल शरीर ।।१।।

परमधाम की दक्षिण दिशा में नूरमयी सुख का सागर है, जो कि वहदत (एकदिली) का सागर है । यह एकदिली रूपी पानी, सखियों के मुखारविंद में प्रेम व आनंद के रूप में झलक रहा है । नीर सागर के रहस्य जान लेने पर कुर्आन आदि धर्मग्रंथों के मारिफत (परमसत्य) की पहचान होती है कि परमधाम मूल मिलावे में जो सखियों के मूल तन विराजमान हैं, उनकी शोभा, लीला कैसी है । नीर सागर ब्रह्मप्रियाओं की शोभा का सागर है।

नूर जिमी वाहेदत की, तरफ चारों तिन के नूर ।
नाही इंतहाए इन का, कह्यो न जाए जहूर ।।२।।

परमधाम की नूरमयी स्वलीला अद्वैत (एकात्म स्वरूप) भूमिका में चारों तरफ श्री राजजी का ही नूर समाया हुआ है, जिसकी कोई सीमा (अंत) ही नहीं है । वह शोभा अवर्णनीय है ।

ए केहेनी में आवे नहीं, क्यूं कहे जुबां इन मुख ।
ए तो नूर जमाल के, कायम घर के सुख ।।३।।

उस दिव्य परमधाम के सुख वर्णन में नहीं आते हैं । इस माया की जिह्वा उसका वर्णन किस प्रकार कर सकती है ? यह तो प्रियतम अक्षरातीत (नूरजमाल) के अखण्ड परमधाम के सुख हैं ।

केहेनी उत ना पोहोंचत, ठौर बका भोम चेतन ।
ए तो हक बारीकियां, जाने खासल खास मोमिन ।।४।।

इस संसार के वचन परमधाम तक नहीं पहुंचते हैं । वह अखण्ड परमधाम की दिव्य चेतन भूमिका है । ये तो अक्षरातीत के परमधाम की अत्यंत गहन बातें हैं, जिसे मात्र खासुलखास ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं ।

पर कहे बिना आवे नहीं, क्यूं जाए तित नजर ।
ए सोई रूहें समझहीं, जाको हुई बका फजर ।।५।।

पर यदि कुछ भी वर्णन ना किया जाये तो उसकी शोभा दिल में कैसे आयेगी ? आत्मदृष्टि कैसे परमधाम पहुंचेगी ? ये बात वही ब्रह्मात्माएं समझती हैं, जिनके लिये अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सवेरा हो गया है ।

पर केहेनी ऐसी होत हैं, लिए सनमंध आकार ।
दिल जुबां हक तरफ, वाही नज़र करे विचार ।।६।।

परंतु इस संसार में नश्वर शरीर में रहते हुए वर्णन इस प्रकार होता है, कि मेरा हृदय व मेरी जिह्वा राजजी की तरफ खींचे जाते हैं । आत्मिक नजर से ही उसका चिंतन किया जा सकता है ।

ए साहेब हैं रूह का, आवे रूह नजर ।
ए समझेंगे मोमिन, जाको हुई बका फजर ।।७।।

वे अक्षरातीत परब्रह्म ब्रह्मात्माओं के साहेब (स्वामी) हैं । वे मात्र रूह की नजर (आत्मिक दृष्टि) से ही देखे जा सकते हैं । इसे मात्र ब्रह्मात्माएं ही समझ सकती हैं, जिनके हृदय में अखण्ड परमधाम के ज्ञान का उजाला हो गया है ।

गृद रांग फिरती नूर की, जाको सुख शोभा नाही पार ।
कई मोहोलातें तिनमें, ए मोमिन देखनहार ।।८।।

परमधाम की चारों ओर किनार पर नूरमयी बड़ी रांग की आकाश को छूती हवेलियां घेर कर आयी हैं । जिनके सुखों व शोभा का कोई पारावार नहीं है । इनमें कई महल विद्यमान हैं, जिन्हें देखने वाले मात्र मोमिन (ब्रह्मात्माएं) हैं ।

ए दिशा चारों मिने, पूरब पश्चिम उत्तर ।
चौथी तरफ दक्खिन की, याको मोमिन लें अन्दर ।।९।।

इसकी चारों दिशा- पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण में चार सागर विद्यमान हैं । इन्हें ब्रह्मसृष्टि ही अपने हृदय में धारण करेंगी ।

और चारों कोने इन के, अगिन नैऋत वाएब ईशान ।
मोमिन शक ना, ना दिल निशान ।।१०।।

और चारों कोणों- अग्नि, नैऋत्य, वायव्य, ईशान में भी चार सागर

विद्यमान हैं । (इस प्रकार चारों दिशा एवं चारों कोनों के मिलाकर कुल आठ सागर होते हैं) । ब्रह्मात्माओं की यही निशानी है, कि उनके दिल में इस विषय में किसी प्रकार का संशय न हो ।

कहूं दक्खिन नीर सागर की, जहां नूर उज्जवल खुसबोए ।
क्यूं कहूं मिठास इन का, सब सुख वाहेदत का होए ॥११॥

अब दक्षिण दिशा में विद्यमान नीर सागर की शोभा का वर्णन किया जायेगा, जहां का पानी नूरमयी, उज्जवल व सुगंधित है । उसकी मीठास का किस प्रकार वर्णन करें ? यहां वहदत (एकदिली) के सभी सुख प्राप्त होते हैं ।

क्यूं कहूं निरमलता इन की, जाने चेतनता सुख चैन ।
कई नूर तरंग लेहेरन के, कई मीठे स्वर काढत गरजत बैन ॥१२॥

नीर सागर की निर्मलता का किस प्रकार वर्णन करूं? इसके अंदर चेतनता व अपार सुख-शांति समायी हुई है । सागर में लहरों की नूरमयी तरंगें लहराती हुई दिखती हैं । लहरों के आने-जाने से कई मीठे स्वर निकलते हैं, मधुर गर्जना होती है ।

देख कई सुख लेत हैं, कई करे सोहोबत चेहेन ।
कई सुख मिने झीलन के, कई मिने सुख देखे नैन ॥१३॥

कई सुख यहां की शोभा को देखकर प्राप्त करते हैं । कई सुख श्रीराजश्यामा जी एवं सखियों के साथ प्रेमभरी लीलाओं के हैं । कई सुख सागरों में झीलना करने के हैं, तो कई सुख राजजी के नेत्रों को देखने पर प्राप्त होते है।

मोहोल चारों तरफों इन के, झलकत नूर प्रकाश ।
साम सामी किरना लरे, जोत ना माए आकाश ॥१४॥

सागर के चारों तरफ बड़ी रांग की हवेलियां शोभायमान हैं, जिनकी नूरमयी किरणें चारों तरफ जगमगाते हुए प्रकाशित हो रही हैं । उनकी रंगबिरंगी किरणें आमने-सामने से आकर टकराती हैं । इनकी दिव्य ज्योति आकाश में नहीं समाती है ।

सागर किनारे मोहोल हैं, सागर समान हैं सुख ।
जहां हक हादी रूहें रमें, देख नूरजमाल का मुख ॥१५॥

सागर के किनारे जो महल (महाहवेलियां) हैं, इनमें सागर के समान सुख हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां अनेक प्रकार से हांस विलास करते

हैं और सखियां श्री राजजी के नूरी मुखारविंद के दर्शन करती हैं ।

जब बैठत मोहोल छज्जन में, देखत तमासा नूर ।
बैठ आपस में बाता करें, ताको क्यूं कर कहूं जहूर ।।१६।।

जब इन हवेलियों (महलों) के छज्जों (झरोखों) में बैठते हैं, तो सामने पशु पक्षियों के नूरी खेल-तमाशे देखते हैं । श्री राज श्यामा जी व सखियां बैठकर आपस में प्रेमभरी बातें करते हैं । उस आनंद का किस प्रकार वर्णन करूं?

कई करोड़ कचेरियां, कई करोड़ कठेड़े जडाव ।
साम सामी किरना लरे, सो जुगत जुबां न आवे भाव ।।१७।।

इन हवेलियों में कई करोड़ों कचहरियां (बड़े दहलान) हैं, और कई करोड़ों रत्न जड़ित कठेड़े हैं । इनकी रंगबिरंगी किरणें आमने-सामने से आकर टकराती हैं । इनकी युक्ति व शोभा अवर्णनीय है ।

पांच रंग जिमीन के, पशु पक्षी पांचों जात ।
भोम पांचों रंग की, पांचों बोली जुदी विख्यात ।।१८।।

बड़ी रांग की हवेलियों में मुख्य रूप से पांच रंग दिखायी देते हैं । पांच रंग की ही जमीन है । पशु-पक्षियों की विभिन्न प्रजातियां भी पांच रंग के हैं । हवेलियों की भोमें भी पांच रंग की हैं । पशु-पक्षी पांच अलग-अलग तरह की बोलियां बोलते हैं ।

लाल नीली पीली, सेत रंग और श्याम ।
तैसे ही वन वृक्ष बेलियां, नूर बसे जिमी इन ठाम ।।१९।।

लाल, नीली, पीली, श्वेत एवं श्याम इन पांच रंग के वन, वृक्ष, बेलियां उन सागरों के अनुसार आयी हैं । सागरों की उस धरती में नूर ही नूर बसा हुआ है ।

तरफ दक्खिन लाल नीर सागर, जित जिमी रंग मानिक ।
जल रंग लाल भासत, जित खेले रूहें हादी हक ।।२०।।

परमधाम की दक्षिण दिशा में लाल रंग का नीर सागर है, जहां की धरती माणिक के रंग की है । वहां का जल भी लाल रंग का दिखता है, जहां श्री राज श्यामा जी एवं ब्रह्मप्रियाएं अनेक प्रकार से खेल-विनोद करते हैं ।

पशु पक्षी रंग लाल हैं, पांऊ शरीर केश लाल मुख ।
ए सुख विलास वन में, सो कह्यो न जाए एह सुख ।।२१।।

यहां के पशु पक्षी भी लाल रंग के हैं । इनके पैर, शरीर, केश व मुख सब लाल रंग की शोभा से युक्त हैं । यहां के वनों में जो अनेक प्रकार के सुख हैं, उसका वर्णन करना सम्भव नहीं है (एक लाल रंग के अंदर अनेक रंगों की चित्रकारी होती है) ।

बाग बगीचे लाल रंग, पेड़ डारी पात लाल ।
फल फूल मोर लाल रंग, जिमी लाल रंग खुसाल ।।२२।।

वहां के बाग-बगीचे लाल रंग के हैं । वृक्ष, डालियां, पत्ते भी लाल हैं । फल, फूल एवं मोर भी लाल रंग के हैं । वहां की धरती भी लाल रंग की आनंददायी है ।

पांऊ पंखी पर लाल रंग, पर तुरे लाल चोंच मुख ।
बैठे लाल रंग वन डारियों, क्यूं कहूं उनके सुख ।।२३।।

पक्षियों के पांव भी लाल रंग के हैं । उनके पंख, चोंच, मुख सब लाल रंग के होते हैं । वनों की लाल डालियों में वे जब बैठते हैं, तो उस समय के सुख अवर्णनीय होती हैं।

लाल मीन जल में रहे, लाल जल जात नाहीं पार ।
लाल रेत तहां झलकत, गृद लाल किनारे अपार ।।२४।।

सागर के लाल जल में अनेक प्रजाति की लाल मछलियां रहती हैं । वहां सागर के चारों कोनों में लाल रेती का मैदान है । सागर के किनारे चारों ओर जल रौंस भी लाल है ।

गृद लाल मोहोल जवेरन के, लाल कचेरी लाल बैठक ।
लालै चौक चांदनी, जहां हादी रूहे बैठे हक ।।२५।।

नीर सागर के चारों तरफ महल (हवेलियां) भी लाल जवाहरातों के हैं । इनकी कचहरियां व बैठकें भी लाल रंग की हैं । हवेलियों के मुख्य द्वार के सामने चांदनी चौक भी लाल रंग के हैं, जहां श्रीराजश्यामाजी एवं सखियां विराजमान होते हैं ।

जित लाल गृद हैं मंदिर, जित लाल बिछौने होए ।
लाल चाकले तकिये, हक हादी रूहे बैठत सोए ॥२६॥

यहां चारों ओर लाल मंदिर आये हैं । बिछौने भी लाल हैं । चाकले (आसन) एवं तकिये भी लाल हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां विराजमान होते हैं ।

इत शबद ना पोहोंचत, है सब साज इशक ।
सो तो तिनके माफक, आगे जाने सब हक ॥२७॥

यहां के शब्द वहां नहीं पहुंचते हैं । वहां की प्रत्येक शोभा इश्क से है । इश्क के अनुसार ही शोभा व लीला है । आगे, बेहतर तो राजजी ही जानते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, याद करो ए सुख ।
तुमारी जागा देख, देखो नूरजमाल का मुख ॥२८॥

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी । अपने निजघर के सुखों को याद करो । अपना निजघर एवं प्रियतम अक्षरातीत के मुखारविंद की शोभा देखिये ।

प्रकरण ९९ चौपाई ३६४६

नूर सागर की विशेषताएं

इस प्रकरण में परमधाम के अग्नि कोण में आये नूर सागर की विशेषताओं का वर्णन हैं । यहां की संपूर्ण शोभा उज्जवल श्वेत रंग में आई है । महल, मंदिर, वृक्ष, पशु-पक्षी और जल भी श्वेत रंग में प्रकाशमान हैं । जब श्रीराज जी की सवारी रंगमहल से नूर सागर में रमण के लिए आती है, उस समय की अलौकिक शोभा का अति सुन्दर वर्णन है ।

नूर जिमी वाहिदत पर, एक रस सब ठौर ।
जिमी सब जवेरन की, जुदे जुदे जवेर रंग और ॥१॥

परमधाम की नूरमयी स्वलीला अद्वैत (वहदत) भूमिका में सभी जगह एकरस है । सारी धरती नूरमयी जवाहरातों की है, जिनमें अलग-अलग जवाहरातों के रंग झलकते हैं ।

नूर रंग सब चेतन, पांचों तत्व प्रकाश ।
नूर साम सामें लरे, ताकी जोत माए आकाश ।।२।।

वहां के नूरमयी सभी रंग चेतन हैं । पांचों तत्व (पृथ्वी–धरती, अग्नि, वायु, जल, आकाश) प्रकाशमान हैं । इनकी नूरमयी किरणें आमने-सामने से आकर एक दूसरे से टकराती हैं, जिसकी ज्योति आकाश (रिक्त स्थान) में नहीं समा पाती है ।

इत नाहीं ठौर अन्धेर की, रात दिन बरसत नूर ।
इत हक हादी रूहें रमें, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।३।।

परमधाम में किसी भी स्थान में अंधेरा नहीं है । दिन-रात नूर ही नूर (दिव्य प्रकाश) बरसता रहता है । यहां श्री राज श्यामाजी एवं सखियां रमण करते हैं, वहां की दिव्यता का किस प्रकार वर्णन करें ?

एक रस सब इश्क मय, सब आत्मा एकै जान ।
कबू ना बिछोहा किनको, सबमें एकै पेहेचान ।।४।।

वहां सभी वस्तुएं एकरस व इश्कमयी हैं । सबके अंदर एक ही आत्मा है । धणी से या आपस में कभी भी जुदागी नहीं होती है । सबके अंदर धणी की एक समान पहचान होती है ।

एक एक ठौर जो देखिए, इंतहाए ना पातशाही वाहिदत ।
सब में इश्क एक रस, सब एक दम सुख साबित ।।५।।

जो एक-एक स्थान को देखें, तो स्वलीला अद्वैत परमधाम के ऐश्वर्य की कोई सीमा नहीं है । सभी में इश्क, एकरस रूप से विद्यमान है तथा सभी सुख भी एक समान प्राप्त करते हैं ।

काहूं ना पावे बेवरा, सब बसत नूर इश्क ।
अंग उमंग नूर सबन के, रहे देखने शोभा हक ।।६।।

किसी भी वस्तु का वास्तविक निरूपण नहीं हो सकता है । सबके अंदर नूरमयी इश्क बसा रहता है । सबके हृदय में श्री राजजी की नूरी शोभा को देखने के लिये उमंग-उत्साह भरा रहता है ।

कमी ना काहूं दिल में, सब इश्क के आकार ।
एक दूजे को देखत, पावे अतंत सुख करार ।।७।।

किसी के भी दिल में किसी प्रकार की (इश्क या पहचान में) कमी नहीं होती है । सबके तन भी इश्क के ही हैं । एक दूसरे को देखकर भी सब अत्यंत सुख व शांति प्राप्त करते हैं ।

इत इसारत देने को, ख्वाब जिमी नाहीं ठौर ।
केहनी में ना आवत, क्या कहें समझावें और ।।८।।

उस दिव्य परमधाम के विषय में संकेत (उदाहरण) देने के लिये यह स्वाप्निक जगत् उपर्युक्त स्थान नहीं है क्योंकि यहां के शब्दों से उसका वर्णन सम्भव नहीं है, तो उसे किस प्रकार समझाया जाये?

वाहेदत में ना दूसरा, सब हक जात हैं नूर ।
ए आशक नूरजमाल के, ताको कबू ना आवे जहूर ।।९।।

वहदत (स्वलीला अद्वैत परमधाम) में कोई भी दूसरा नहीं होता । सभी प्रियतम परब्रह्म के ही नूर हैं, उन्हीं के अंगरूप हैं । वे पशु-पक्षी प्रियतम अक्षरातीत के आशिक हैं । उनकी शोभा का वर्णन कभी भी सम्भव नहीं है ।

ए आशक सब हक के, सो रिझावत रेहेमान ।
ए आकार चेतन आतमा, सब रूह वाहिदत एक पेहेचान ।।१०।।

वे सब श्री राजजी के आशिक हैं । अनेक प्रकार से प्रियतम को रिझाते हैं। उनके तन भी चेतन–आत्मस्वरूप हैं। सबकी आत्मा अद्वैत रूप से एक है।

जब रूख करें रमन को, आवे सागर सुख नीर नूर ।
होत असवारी धाम से, ताको क्यूं कर कहूं जहूर ।।११।।

जब सखियां नूर सागर में रमण करने की इच्छा करती हैं, तब नूर सागर के जल में सुख लेने के लिये आते हैं । रंगमहल से सुखपालों पर सवार होकर जिस प्रकार हांस–विलास करते हुए आते हैं, उस शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं हैं।

सुखकारी सुखपाल जो, रहे सकत चेतनता जोर ।
आपै सैंयां हाजिर रहें, सब रूहन के ठौर ठौर ।।१२।।

सुखदायी सुखपाल, जिनके अंदर पूर्ण चेतनता रहती है । वे सखियों की इच्छा मात्र से स्वतः सभी सखियों के समक्ष (सखियां जहां जहां खड़ी होती हैं,

वहां वहां) उपस्थित हो जाते हैं ।

सुखपाल तरह तखतरवा, रंग हीरे जोत अपार ।
चारों डाडों मानिक रंग, छत्री पांच रंग झलकर ॥१३॥

सुखपाल की बनावट सिंहासन के समान है । उसमें हीरे के रंग की अपार ज्योति जगमगा रही है । उसके चारों कोनों में चार डाण्डे हैं, जो माणिक्य रंग के हैं । दोनों छत्रियों से पाच (हरे रंग) के नग की झलकार हो रही है।

चारों तरफों झालर मोतिन, पांच कलसें उपर नूर ।
गजगाह गाउं तकिये, क्यूं कहूं याको जहूर ॥१४॥

सुखपाल के चारों तरफ मोतियों की झालर लटक रही है । सुखपाल की छत पर ५ नूरमयी कलश शोभायमान हैं । गजगाह (हाथ से पकड़ने हेतु) एवं तकियों की शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

सुंदर सुजनी बिछौने, नकश कटाव हीरा झलकार ।
झालर गृद फिरती, याको तेज अपार ॥१५॥

सुखपाल के अंदर सुंदर मुलायम बिछौने बिछे हैं, चारों तरफ फूलों के कटाव एवं नक्काशकारी में हीरे का नग जगमगा रहा है । चारों तरफ झालर लटक रही है, जिसकी अपार तेजराशि चमक रही है ।

जुगल सरूप विराजत, साम सामें सनमुख ।
तकिये दोउं बाजू बैठक, सो कह्यो न जाए एह सुख ॥१६॥

युगल स्वरूप (श्रीराजश्यामा जी) सुखपाल में आमने-सामने एक दूसरे की तरफ मुख करके विराजमान होते हैं । उनकी (बैठक के) दोनों तरफ (दायें-बायें) तकिये रखे होते हैं । इस सुख का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

दोउ गजगाह पकड के, साम सामी अविलोकत नैंन ।
भूखन मीठी रसना बोलत, क्यूं कहूं सुख इन बैन ॥१७॥

दोनों गजगाह दोनों हाथों से पकड़कर युगल स्वरूप आमने-सामने बैठकर एक दूसरे के नैनों को देखते हैं । इनके आभूषण मीठी वाणी बोलते हैं । उस मधुर झंकार के सुख किस प्रकार वर्णन करूं।

एक एक सुखपाल में, दोए दोए रूहे बैठत ।
सखी सखी सोभित सो, केहेत मीठी बातें इत ॥१८॥

एक-एक सुखपाल में दो-दो सखियां (आमने सामने मुख करके) बैठती हैं । दोनों सखियां प्रेमपूर्वक मुस्कुराते हुए एक दूसरे से मीठी बातें करती हुई शोभायमान हो रही हैं ।

आगे एक एक सुखपाल के, कई अगिनित खिलौने खेलत ।
कई बाजें बजावत, ज्यों श्रवना सुख पावत ।।१९।।

प्रत्येक सुखपाल के सामने असंख्य खिलौने (पशु-पक्षी) खेलते हुए, कई तरह से बाजे बजाते हुए, धणी का गुणगान करते हुए चलते हैं, जिसे सुनकर अत्यंत आनंद होता है ।

असवारी आसमान में, छाए रही सब ठौर ।
कोई आगे पीछे दाएं बाएं, काहू सूझत नाहीं और ।।२०।।

आकाश में चारों तरफ श्री राज श्यामाजी व सखियों की सवारी ही दिखायी देती है । कोई सुखपाल आगे है, तो कोई दायीं तरफ हैं, तो कोई बायीं ओर है। इस प्रकार सुखपालों के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं दिखायी देता है ।

आवत सागर नूर के, दक्खिन पूरब दरम्यान ।
अगिन कोन यासो कह्यो, नूर सागर रोशन पेहेचान ।।२१।।

श्रीराज श्यामा जी एवं सखियां इस प्रकार सुखपालों में सवार होकर दक्षिण व पूर्व दिशा के मध्य अग्नि कोण में विद्यमान नूर सागर में आते हैं, जो कि नूरमयी रोशनी से जगमगा रहा है ।

जहां जिमी स्वेत नूर की, स्वेत ही नूर सागर ।
मोहोल चारों तरफो नूर के, गृद फिरत चबूतरा नूर पार ।।२२।।

नूर सागर की धरती नूरमयी श्वेत रंग की है । नूर सागर भी श्वेत रंग का है । सागर के चारों तरफ महल भी नूर (श्वेत रंग) के हैं । चारों तरफ भोम भर ऊंचा चबूतरा भी नूरमयी श्वेत रंग का ही है ।

ए रांग बाजू गृद के, बड़े बारे हजार द्वार ।
दोए बाजू बराबर, ए छत्तीस हजार सुमार ।।२३।।

सागर की एक दिशा में बड़ी रांग की हवेलियों के १२,००० मुख्य द्वार एवं १२,००० बगीचे शोभायमान हैं । बाहरी तरफ व दायें-बायें के मिलाकर कुल ३६,००० द्वार व बगीचे होते हैं ।

गृद चारों तरफों मोहोल हैं, स्वेत हीरा एक रस नूर ।
छज्जे कचेरियां बैठक, सब स्वेत नूर जहूर ।।२४।।

सागर की चारों तरफ (बगीचों की बाहरी तरफ) भोम भर ऊंचे चबूतरे पर महाहवेलियां आयी हैं, जो कि नूरमयी एकरस श्वेत हीरे की हैं । उन महलों में जो छज्जे, कचहरियां आदि बैठकें आयी हैं, वे सब भी नूरमयी श्वेत शोभा से युक्त हैं ।

चौक चेहबच्चे नूर के, नूर कठेडा गृदवाए ।
मोहोल नूर मंदिर नूर साज, नूर सामग्री सुखदाए ।।२५।।

यहां चौक, चेहेबच्चे आदि सब नूर के हैं । उनके चारों तरफ कठेड़े भी नूर के हैं । महल-मंदिर भी नूर के हैं । उनकी सज्जा व सामग्री भी सुंदर व सुखदायी नूर (श्वेत रंग) की ही हैं ।

जब नूर बिछौने बैठत, नूर बाग नूर सूपेत ।
नूर तखते चौकी नूर की, नूर हाथ लेत सुख देत ।।२६।।

जब नूरमयी श्वेत हवेलियों एवं श्वेत बगीचों में श्वेत बिछौने पर विराजमान होते हैं, तब नूर की चौकी में चरण रखकर नूरमयी श्वेत सिंहासन पर विराजमान होते हैं । नूरमयी चौकियां अपने नूरी हाथों से लेते व देते हैं ।

इत पशु पक्षी रंग नूर के, उज्जवल जोत प्रकाश ।
पांऊ पेट पीठ गर्दन, रंग जोत न माए आकाश ।।२७।।

यहां पशु-पक्षी भी नूर रंग (श्वेत) के हैं, जिनमें से उज्जवल दिव्य ज्योति प्रकाशित हो रही है । उन पशु-पक्षियों के पांव, पेट, पीठ व गर्दन सभी नूरमयी श्वेत रंग के हैं, जिनकी अनंत ज्योति आकाश में नहीं समा पाती है ।

पर पंखियों के नूर के, पांऊ पेट चोंच मुख नूर ।
सुन्दरता सुपेत तन की, एह कह्या न जाए जहूर ।।२८।।

पक्षियों के पंख भी नूर (श्वेत रंग) के हैं । पांव, पेट, चोंच, व मुख भी नूरी श्वेत रंग के हैं । उनके श्वेत तनों की सुंदरता का वर्णन करना असम्भव है ।

जिमी स्वेत नूर सागर, आवत असवारी जब हक ।
पशु चित्रांमन नूर झलकत, पेड़ डारी नूर बुजरक ।।२९।।

नूर सागर की धरती भी श्वेत रंग की है । जब श्री राज जी की सवारी

यहां आती है, तब पशुओं के श्वेत शरीर में बने नूरी चित्र जगमगाते हैं । यहां के वृक्षों की डालियां भी नूरमयी श्वेत रंग की हैं ।

फल फूल मोर स्वेत नूर के, जहां स्वेत जानवर बसत ।
स्वेत पंखी मुख नूर के, कैं जाते स्वेत नूर इत ॥३०॥

फल, फूल व मोर भी नूरमयी श्वेत रंग के हैं । यहां समस्त जीव (जानवर) भी श्वेत रंग के रहते हैं । श्वेत पक्षियों के मुख भी नूरमयी श्वेत रंग के हैं । उन श्वेत पक्षियों की अनेकों प्रजातियां यहां पर हैं ।

गृद मोहोल रांग मोहोल की, चबूतरा नूर गृदवाए ।
हक हादी झरोखे बैठत, सुख शीतल नूर सुखदाए ॥३१॥

बड़ी रांग की हवेलियों की किनार पर चारों तरफ (मुख्य द्वार के दायें–बायें स्थित) नूरमयी चबूतरे शोभायमान हैं, जिनके ऊपर नूरमयी झरोखों में जब श्री राज श्यामा जी बैठते हैं, तो नूरमयी शीतल सुखदायी हवा का आनंद लेते हैं ।

इत रूहें रमें सुख राज के, नूर सागर भरपूर ।
मध्य टापू नूर किरने उठे, सब मोमिन दिल जहूर ॥३२॥

यहां नूर सागर में सखियां श्री राज जी के साथ पूर्ण आनंद में रमण करती हैं । सागर के मध्य नूरमयी टापू महल हैं, जिनसे नूरमयी रंगबिरंगी किरणें उठती हैं । उनकी सारी शोभा मोमिनों के दिलों में होती है ।

कई टापू रांग बराबर, तिन मध्य कई मोहोलात ।
इत नूर सुख सागर में, खेलत हैं हक जात ॥३३॥

सागरों के मध्य बेशुमार टापूमहल बड़ी रांग की हवेली के बराबर ऊंचे हैं । उनके अंदर अनेक प्रकार के महल विद्यमान हैं । यहां सुखदायी नूर सागर में अनेक प्रकार के पशु पक्षी खेलते हुए दिखायी देते हैं, जो श्री राजजी के ही स्वरूप हैं ।

कई जात नूर सागर की, कई भांत रमन के सुख ।
कई भांत बोली मिठास की, देखे सुख नूरजमाल का मुख ॥३४॥

नूर सागर में पशु-पक्षियों की अनेकों प्रजातियां हैं । यहां रमण करने पर कई प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं । वे दिव्य पशु पक्षी कई प्रकार से मीठी

वाणी बोलकर सुख देते हैं । श्री राज जी का नूरी मुखारविंद देखकर उन्हें (पशु-पक्षियों को) भी कई प्रकार का सुख होता है ।

ए सुख जाने हक हादी रूहें, या जाने अरस मोमिन ।
ए केहेनी में ना आवही, बका भोम चेतन रोशन ।।३५।।

इन सुखों को श्री राज श्यामा जी व सखियां (परमधाम के मोमिन) ही जानते हैं । अखण्ड परमधाम की चेतन भूमिका की नूरमयी रोशनी अवर्णनीय है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए तुमारा वतन नूर ।
सुख सागर में झील के, इत ल्यो सुख इशक हजूर ।।३६।।

महामति जी कहते हैं, हे सुंदरसाथ जी ! यह आपका दिव्य परमधाम है । इन सुख सागर में झीलते हुए श्री राजजी के समीप इश्क का सुख लीजिए।

प्रकरण १०० चौपाई ३६८२

ए पेहेचान मारफत का

इस प्रकरण में परमसत्य (मारिफत) की पहचान है। परमधाम के पच्चीस पक्षों में श्रीराज जी का नूर ही क्रीड़ा कर रहा है। खुदा की पहचान खुदा ही करा सकते हैं । संसार रूपी खेल किसने मंगवाया ? किसने इच्छा उपजाई ? इस तरह से रूहों को यह पहचान दे रहे हैं, कि रूहें वस्तुतः उनके ही हृदय का व्यक्त स्वरूप हैं ।

ए पेहेचान मारफत की, बिना हक के दिए ना होए ।
उत दूसरा तो कोई है नहीं, एह कहे सुने सुख सोए ।।१।।

परमधाम की मारिफत (परमसत्य) का ज्ञान प्रियतम अक्षरातीत के दिये बिना प्राप्त नहीं होता है । परमधाम में एक परब्रह्म के सिवा अन्य कोई तो है नहीं । यह कहने, सुनने वाले तथा सुख लेने वाले भी स्वयं श्री राज जी हैं ।

हक सूरत साहेदी, सो तो हकै देवनहार ।
ए लेने वाले कोई नहीं, याको कौन करे विचार ।।२।।

हक तआला (अक्षरातीत परब्रह्म) के नूरी स्वरूप की साक्षी देने वाले तो स्वयं परब्रह्म ही हैं, किंतु उस ज्ञान को लेने वाला दुनिया में कोई नहीं है, कौन उसका विचार करेगा ?

किन लई हक साहेदी, दई किन को इत आए ।
कौन आए देवे साहेदी, किनको पैगाम पोहोंचाए ।।३।।

किसने परब्रह्म की साक्षी ग्रहण की ? मुहम्मद साहब ने किनके लिये आकर साक्षी दी ? यहां आकर साक्षी देने वाला कौन है ? यह संदेश किसको पहुंचाया जा रहा है ?

इत दूसरा तो कोई हैं नहीं, महंमद एक खुदाए ।
यों मुसाफ केहेत है, महंमद बरहक बताए ।।४।।

वहां दूसरा तो कोई है नहीं, एक खुदा और मुहम्मद (श्यामाजी) के सिवा। कुर्आन पाक ऐसा कहता है, कि खुदा एक है और मुहम्मद बरहक (सत्य) हैं ।

ए किन आगे केहेत हो, चाहिए सो तो इन माफक ।
दूजा कहे सिरक होत है, इत क्यूं कर बैठे सक ।।५।।

मुहम्मद साहब ये वचन किसके आगे कह रहे हैं ? उसे समझने वाले भी तो उनके समान ही होने चाहिये । खुदा के सिवा किसी अन्य का अस्तित्व मानने से शिर्क (बहुदेव पूजा) का गुनाह होता है । तो संशय किस प्रकार दूर हो ?

हक सूरत किन देखी नहीं, कोई कहे सुन कान ।
खोज किए न पाइए, ताकी ना करी पेहेचान ।।६।।

परमात्मा का स्वरूप किसी ने नहीं देखा है । कोई कानों से सुनकर (सुनी सुनायी बात) कह देता है । खोज करने पर भी किसी को प्राप्त नहीं हो पाता है । कोई भी उसकी पहचान नहीं कर पाया है ।

कौन को कुंन केहेते मुख, ए उपजी सब जहान ।
चौदे तबक हैं तिन में, सब जिमी लोक आसमान ।।७।।

किसके मुख से कुंन (हो जा) उच्चरित होने पर समस्त संसार की उत्पत्ति हुयी है, जिसके अंतर्गत १४ लोक, धरती व आसमान हैं ?

सो क्यूं देखे हक को, क्यूं कहे साहेदी वाहिदत ।
ए तो सुनते ही मिट जात हैं, कछू ना रेहेवे इत ।।८।।

ऐसे स्वाप्निक जगत् के जीव परमात्मा का किस प्रकार साक्षात्कार कर सकते हैं ? किस प्रकार वहदत (स्वलीला अद्वैत परमधाम) की साक्षी दे सकते हैं

? वे तो निराकार के पार के वचन सुनते ही (स्वप्नवत्) खत्म हो जाते हैं । संसार में कुछ भी नहीं बचता ।

ए मोहोरे खेल कबूतर, कहे तौहिद कलमा इत ।
हक सुभान छूट मोमिन, करे न सिफाएत ।।९।।

ये जादू के कबूतर के समान माया के जीव तौहिद (एकेश्वरवाद) का कलमा (ला इलाह इल्लाह-नहीं है अल्लाह के सिवा कोई) कह रहे हैं । हक सुब्हान तआला मात्र मोमिनों की ही सिफायत (अनुशंसा) करेंगे (ब्रह्मज्ञान देंगे), अन्य किसी की नहीं।

छूट मोमिन दाग से, अपनी जो मारफत ।
पेहेचान अरस अन्दर की, हुई मोमिनों की सिफाएत ।।१०।।

मोमिन ही मात्र गुनाह से बच पायेंगे । सिफायत (ब्रह्मज्ञान) के द्वारा परमधाम के अंदर की तथा अपनी मारिफ्त स्वरूप की सारी पहचान मोमिनों को हो जायेगी ।

वही जाने अरस बारीकियां, हक दिल पैठा मोमिन ।
हादी हक दरम्यान की, बातें करे रोशन ।।११।।

वे मोमिन ही परमधाम की बारीकियां जानते हैं । वे ब्रह्मात्माएं प्रियतम अक्षरातीत के दिल में प्रवेश करके श्री राजजी व श्यामा जी के मध्य हुई बातें जाहिर करेंगे ।

हक हादी के बीच में, फरक नाहीं दरम्यान ।
मोमिन तिन हादी के, आप ही करें पेहेचान ।।१२।।

श्रीराज जी व श्यामा जी के बीच में कोई भी अंतर नहीं है । ब्रह्मात्माएं उन श्यामा जी की स्वयं ही पहचान करेंगे ।

आपै हका दिल में उपजाया, और आपै किया विचार ।
आपै मगाए मनोरथ, आप ही पूरनहार ।।१३।।

श्री राजजी ने स्वयं ही हमारे दिल में खेल देखने की इच्छा उत्पन्न की । स्वयं ही उन्होंने सारी योजना बनायी । स्वयं उन्होंने ही हमसे खेल देखने की इच्छा व्यक्त करायी और स्वयं ही इच्छा पूर्ण कर रहे हैं ।

आपै बरजे आपको, आप ल्याये नूर दिल में दरम्यान ।
तिन दिदार चाह्या रूहन का, में पाऊं हक इशक रूहों पेहेचान ।।१४।।

उन्होंने स्वयं ही अपने ही स्वरूप ब्रह्मात्माओं को खेल देखने से मना किया । स्वयं ही अक्षर के दिल में भी इच्छा उत्पन्न की, जिससे उन्होंने (अक्षरब्रह्म के रूप में) ब्रह्मप्रियाओं के दीदार की चाहना की तथा श्री राज जी एवं सखियों के मध्य के प्रेम को जानने की इच्छा व्यक्त की ।

आपै एह हुकम किया, हुई कुंन फे कुंन फे कसरत ।
आपै अपना हुकम भेज्या, साथ दे मोमिनों को इत ।।१५।।

स्वयं श्री राजजी ने ही सृष्टि रचना का हुक्म दिया । तब कुंन (हो जा) कहने से (संकल्प मात्र से) सांकल्पिक जगत की रचना हो गयी । यहां स्वयं ही मोमिनों के साथ अपना हुक्म भेजा ।

आपै करी रात को, ताके किए तीन तकरार ।
आपै रूहों संग, कई विध विध किए बिहार ।।१६।।

स्वयं ही इस मोह-अज्ञान से युक्त संसार की रचना की । उसमें तीन भाग (ब्रज, रास व जागनी) किये और स्वयं ही ब्रह्मात्माओं के साथ अनेक प्रकार की लीलाएं की ।

आपै रसूल होए आइयां, धरी आपै तीनों सूरत ।
बसरी मलकी और हकी, करी कयामत की सरत ।।१७।।

परब्रह्म अक्षरातीत स्वयं ही रसूल बनकर आये, उन्होंने ही तीनों सूरतें धारण बशरी, मलकी व हकी धारण की। कियामत के दिन उन्होंने ही पुनः आने का वादा किया ।

आपै लिखे कलाम, कुलफ दिया तिन ऊपर ।
आपै किल्ली ल्याया, हुआ आपै खोलने पटन्तर ।।१८।।

आपने स्वयं ही कुर्आन पाक (आदि धर्मग्रंथों) में अपने वचन लिखे और स्वयं ही उस पर ताला लगा दिया (ताकि सांकेतिक कथनों को कोई समझ ना सके) । आप स्वयं ही (मलकी सूरत के रूप में) तारतम ज्ञान रूपी चाबी लाये और आपने स्वयं ही (हकी सूरत के रूप में) कुर्आन आदि धर्मग्रंथों के रहस्य खोला ।

आपै दई साहेदी, आपै देवनहार ।
आपै साएत जाहेर करी, करे अपने संग बिहार ।।१९।।

आपने स्वयं ही साक्षी दी और आप स्वयं ही ज्ञान देने वाले हो । आपने स्वयं ही परमधाम की उस घड़ी को प्रकट किया है, जिसमें आप ब्रह्मप्रियाओं के साथ अखण्ड लीला विहार करते हैं ।

इंतहाए ना जिमी अरस की, बैठे तहां बीच लों मान ।
खेल तो जरा हैं नहीं, देखो दिल अपने रोशन ।।२०।।

परमधाम की धरती की कोई सीमा (अंत) नहीं है । वहां मूल मिलावे में आप (परात्म) विराजमान हैं, ऐसा मान लीजिये । यह संसार रूपी खेल का जरा भी अस्तित्व नहीं है । अपने हृदय में ज्ञान का प्रकाश करके देखो ।

आप नबुअत न्यामत, करत आपै रेहेमत ।
आपे साएत अपनी, जगाए खड़े किए इत ।।२१।।

आप स्वयं ही परमधाम का ज्ञान देकर नबुवत (पैगम्बरी) करते हो । आप ही हम पर कृपाएं करते हो । आपने ही अपने समय पर हमें जागृत करके खड़ा किया है ।

प्रकरण १०१ चौपाई ३७०३

अरस अजीम वाहेदत में

इस प्रकरण में परमधाम की अद्वैत, नूरमयी, इश्क रस से परिपूर्ण भूमिका का वर्णन कर रहे हैं, जहां मुलमिलावे में श्रीराज जी के चरणों तले ब्रह्मात्माओं के असल तन (परात्म) विराजमान हैं । इन्हें ही मुहम्मद साहिब ने अपने भाई कहा है। परमधाम की संपूर्ण नैमतें इन्हीं ब्रह्मात्माओं के लिए श्रीराज जी लेकर आए हैं ।

अरस अजीम वाहेदत में, जाको वार ना पार सुमार ।
चेतनता एक रस में, है इशक सदा सुखकार ।।१।।

स्वलीला अद्वैत परमधाम (वहदत) में, जिसकी ना कोई सीमा है, ना कोई अंत है । सर्वत्र चेतनता व एकरसता है । वहां के कण कण में इश्क व आनंद समाया हुआ है ।

उत अखण्ड अरस में, ए हीरा धात चेतन ।
नव भोम दसमी आकाशी, जित रहे रूहों के एकै तन ।।२।।

वहां अखण्ड परमधाम में हीरा आदि नग व धातु सब चेतन हैं । नौ भोम दसवीं आकाशी वाले रंगमहल में निवास करने वाली ब्रह्मप्रियाएं सभी एक ही स्वरूप, एक तन हैं ।

जित फिरते गिर्द मंदिर, साम सामी दोऊ हार ।
गिनती नूर झलकत, गिनती बारे हजार ।।३।।

जहां (रंगमहल में) चारों तरफ किनार पर ६-६ हजार मंदिरों की दो पंक्तियां (कुल १२ हजार मंदिर) घेरकर आयी हैं । उनकी नूरमयी किरणें जगमगा रही हैं ।

मिने चार हार हवेलियां, हर हार दोए सौ इकतीस ।
हर हवेली अस्सी मंदिर, दोऊ हादीयो पाई बकसीस ।।४।।

इनकी भीतरी तरफ चौरस हवेलियों की चार पंक्तियां हैं, जिनमें से प्रत्येक पंक्ति में २३१ हवेलियां विद्यमान हैं । प्रत्येक हवेली में ८० मंदिर हैं । यह ज्ञान श्री राज श्यामा जी कृपा से प्राप्त हुआ है ।

नव सौ चौबीस हवेलियां, ताके थम्भ द्वार मेहेराब ।
चौक गलियां मंदिर, देखो गिनती ताके बाब ।।५।।

इस प्रकार चार पंक्तियों के कुल ९२४ हवेलियां होती हैं । उनके स्तम्भ, द्वार, महराबों, चौक, गलियों व मंदिरों की शोभा व संख्या देखिये ।

इन भांत नवों भोम लों, चौक मंदिर हवेलियां द्वार ।
सो हैं बेवरा जुदे जुदे, ए मोमिन देखनहार ।।६।।

इस प्रकार नवों भोमों में चौक, मंदिर, हवेलियां व द्वार आये हैं । उन सबका विवरण अलग-अलग है, जिसे देखने वाली मात्र ब्रह्मात्माएं हैं ।

करो सुमार प्रथम भोम का, सब नूर रोशन झलकार ।
लरे किरने साम सामी, करें हक हादी रूहों बिहार ।।७।।

सर्वप्रथम प्रथम भोम का हिसाब कीजिये । चारों तरफ नूरमयी रोशनी झलकार कर रही है । रंगबिरंगी किरणें आमने-सामने से आकर टकराती हुई आपस में युद्ध करती प्रतीत होती हैं। यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां प्रेम

व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं करते हैं ।

तहां है सूरत हक की, और हादी रूहों के तन ।
तहां सामग्री सब चेतन, तहां तन और सब मोमिन ।।८।।

उस दिव्य परमधाम में प्रियतम अक्षरातीत का दिव्य किशोर स्वरूप विराजमान है तथा श्यामा जी व सखियों के मूल तन भी वहीं पर विराजमान है । वहां स्थित सम्पूर्ण लीलारूप सामग्री चेतन है, चाहे सुंदरसाथ के मूल तन हों, या अन्य नूरी पशु-पक्षियों के तन हों, या अन्य कोई वस्तु हो ।

जो तले भोम खड़े रहिए, तो भासत लग आकाश ।
जब खड़े रहिए भोम दसमी, तले लों देखत प्रकाश ।।९।।

यदि रंगमहल की प्रथम भोम में खड़े रहते हैं, तो आकाश तक की प्रत्येक वस्तु दिखायी देता है और यदि रंगमहल की दसवीं चांदनी में खड़े होते हैं, तो प्रथम भोम तक सब कुछ स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है ।

यूं ही चारों तरफो देखिए, कछु छिपी ना रहे नजर ।
ए मोमिन रूहे जानहीं, जाको हुई बका सिफाएत फजर ।।१०।।

इसी प्रकार चारों तरफ की दूर-दूर तक की प्रत्येक वस्तु स्पष्ट रूप से दिखायी देती है, कुछ भी नजर से छिपा नहीं होता है । इस शोभा को ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं, जिनके हृदय में अखण्ड परमधाम के ज्ञान का उजाला हो गया होता है ।

तिन दई साहेदी हक सूरत, और रूहे हादी के तन ।
तिन देखी वाहिदत सरत में, जो कहे खासल खास मोमिन ।।११।।

उन ब्रह्मात्माओं ने परब्रह्म के दिव्य किशोर स्वरूप की और इस बात की साक्षी दी कि सखियां श्री श्यामा जी के ही तन हैं, जिन्हें खासुलखास मोमिन कहा गया है । उन आत्माओं ने इस आखिरत की पवित्र घड़ी में परमधाम की स्वलीला अद्वैत भूमिका को देखा ।

जिनकी असल अरस में, कहे भाई महंमद अलेहसलाम ।
आरफ आरफान तिन की, जो कह्या मोहोकम दीन इसलाम ।।१२।।

जिनके मूल तन परमधाम में हैं, उन्हें ही मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने अपने भाई कहा है। इन्हें ही दीने इस्लाम (शाश्वत शांति के मार्ग) के आरिफ (ज्ञानी), आरिफाना (साधू), मुहकम (दृढ़) कहा गया है ।

अरस इलाही खजाना, खरच होत तिन पर ।
आहार रूहों है तिन का, सो निसवत मोमिनों ऊपर ।।१३।।

परमधाम का ईश्वरीय (इलाही) खजाना (तारतम ज्ञान), निस्बत (परमात्मा से आत्मिक संबंध) के कारण मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के ऊपर खर्च हो रहा है (उन्हें दिया जा रहा है) । यही ब्रह्मात्माओं का आत्मिक आहार है ।

यूं कई सिफते मोमिन की, आवत नाही जुबांए ।
ए हक हादी रूहें जानहीं, देत जबराइल पोहोंचाए ।।१४।।

इस प्रकार मोमिन (ब्रह्मात्माओं) की अनेकों महिमा है, जिसका इस झूठी जिह्वा से वर्णन करना सम्भव नहीं है । यह श्री राज श्यामा जी व सखियां ही जानती हैं । इस संसार में यह ज्ञान जिब्रील पहुंचाता है ।

महामत कहे ए मोमिनों, एही तुमारा मजकूर ।
ए मेहेर हक सुभान की, कह्या तुमारा जहूर ।।१५।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह आपकी ही बातें हैं। हक सुब्हान श्री राज जी ने कृपा करके आपकी महिमा को दुनिया में प्रकट किया है ।

प्रकरण १०२ चौपाई ३७१८

आठों सागर

इस प्रकरण में परमधाम में आए आठों सागरों की झलक प्रस्तुत की गई है । परमधाम के अखंड सुख शब्दातीत हैं, जिनका वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता है । यह वर्णन तो पूर्ण ब्रह्म परमात्मा का हुक्म करवा रहा है, ताकि उनकी आत्माओं को परमधाम अखंड आराम मिले ।

नूर नैरित अंग उज्ज्वल, शोभा सागर सुन्दर खीर ।
हक अरकान देखावे अरफान, पीए आशक प्याले सूर धीर ।।१।।

परमधाम के नैऋत्य कोण में नूरमयी उज्जवल सुंदर क्षीर (दूध) सागर शोभायमान है, जो कि वहदत (अद्वैत) स्वरूप श्री राज श्यामा जी एवं सखियों की एकदिली का सागर है । परब्रह्म के तारतम ज्ञान के द्वारा ही उसके गुह्य रहस्यों की पहचान होती है । उस ज्ञान के द्वारा धैर्यवान और सच्चे ईमान वाली

आशिक ब्रह्मात्माएं ही प्रेमरस का पान कर पाती हैं ।

कहूं आठो सागर की, भोम दिश और रंग ।
स्वाद सुख जुदे जुदे, उठे कई किरने नूर तरंग ।।२।।

अब आठों सागरों की भूमि, दिशा व रंग का वर्णन किया जायेगा। उन सबकी अलग-अलग लज्जत है, और अलग-अलग आनंद है । इन सागरों से कई नूरमयी रंगबिरंगी किरणों की तरंगें उठती हैं ।

मोहोल बैठक जुदी जुदी, नूर भरे सुखदाए ।
हक हादी रूहें जल को, नित्याने उत जाए ।।३।।

नूरमयी महल व बैठकें अलग-अलग प्रकार की शोभा व सुखों से युक्त हैं । श्री राज श्यामा जी एवं सखियां सागरों के जल में रमण करने नित्यप्रति वहां जाते हैं।

ए केहेनी में ना आवत, शबद सुख तित चैन ।
एक हक हुकम कहावत, आवत हैं हिरदे नैन ।।४।।

वहां के सुख व आराम इस माया के शब्दों के द्वारा व्यक्त नहीं किये जा सकते हैं । यह तो श्री राजजी का आदेश कहलवा रहा है, जिसे सुनकर हृदय के नेत्र (आत्मदृष्टि) खुल जाते हैं ।

हादी के मुख से सुने, मोमिन करे रोशन ।
तिन मोमिन के सुख के, ल्याये दिल मोमिन ।।५।।

सद्गुरू (प्राणनाथ जी) के मुख से सुनकर ब्रह्मात्माएं उस ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैलाती हैं । इन ब्रह्मात्माओं के (परमधाम के) सुखों को इनके ही दिल में ला दिया है ।

दिश चारों रोशन, ताके चारों कोने दरम्यान ।
नाम चारों तिन के कहों, मोमिन करी पेहेचान ।।६।।

परमधाम की चारों दिशाएं स्वप्रकाशित हैं, उनके मध्य चारों कोने हैं । इन चारों के नाम आपके समक्ष कहेंगे, जिसकी पहचान ब्रह्मात्माएं ही करती हैं ।

अगिन कोन जाको कह्या, सो पूरब दक्खिन दरम्यान ।
नूर सागर कह्या तिन को, पावे मोमिन दिल आसान ।।७।।

पूर्व व दक्षिण दिशा के मध्य के कोने को अग्नि कोण कहते हैं, जहां

पर नूर सागर विद्यमान है । उसे ब्रह्मात्माओं के दिल आसानी से समझ सकते हैं।

तहां अति उज्वल रंग नूर है, भोम पशु पंखी नूर ।
तहां नूर देखत चेतन, सो कह्या ना जाए जहूर ।।८।।

वहां अत्यंत उज्जवल नूर का श्वेत रंग है । वहां भी धरती, पशु-पक्षी भी नूरी हैं । वहां की सारी शोभा नूरमयी व चेतन है । उस दिव्यता का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

इत साज सामग्री नूर की, मोहोल मंदिर नहीं नूर पार ।
सदा सुखकारी नूर हैं, जित हक हादी को बिहार ।।९।।

यहां सम्पूर्ण सज्जा सामग्री भी नूरी (श्वेत रंग की) है। नूरमयी महलों व मंदिरों का कोई पारावार नहीं है । जहां सदा सुखदायी नूर ही नूर है । यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां लीला विहार करते हैं ।

प्रकरण १०३ चौपाई ३७२७

नीर सागर

इस प्रकरण में रंगमहल के दक्षिण दिशा में सुशोभित एकदिली के सागर नीर सागर का वर्णन है, जहां की प्रत्येक लीलारूप सामग्री लाल रंग में झलकार कर रही है।

दक्खिन दिशा में देखिए, तहां सागर सुखदाए नीर ।
हक हादी रूहें आए के, खेलत इन के तीर ।।१।।

परमधाम की दक्षिण दिशा में देखिये सुंदरसाथजी ! जहां सुंदर सुखदायी नीर का सागर विद्यमान है । श्री राज श्यामा जी एवं सखियां आकर इस सागर के किनारे अनेक प्रकार से खेलते हैं ।

तहां लाल जिमी लाल रंग, लाल जल विस्तार ।
तहां लाल मोहोल मानिक के, लाल ही लाल सुख कार ।।२।।

वहां की धरती लाल रंग की है, जल भी लाल रंग का है । वहां के महल (हवेलियां) भी लाल माणिक्य के हैं । चारों तरफ सम्पूर्ण विस्तार आनंददायी लाल ही लाल रंग का दिखाई देता है ।

पशु पंखी लाल रंग के, लाल भोम लाल दरखत ।
लाल सामग्री लाल सुख, हक रूहों को पोहोंचावत ।।३।।

वहां पशु-पक्षी भी लाल रंग के हैं । लाल धरती पर वृक्ष भी लाल रंग के शोभायमान हैं । सभी लीलारूप सामग्री सुखदायी लाल रंग की हैं । यह सुख श्री राज जी ही ब्रह्मात्माओं तक पहुंचा रहे हैं ।

तहा रांग है लाल रंग, द्वार कमाडी लाल ।
हादी रूहें रमन को, इत होत अति खुसाल ।।४।।

यहां रांग की हवेलियां भी लाल रंग की हैं । दरवाजों की चौखट व इनके किवाड़ भी लाल रंग के हैं । जब श्री श्यामा जी व सखियां यहां रमण के लिये आते हैं, तब अत्यंत प्रसन्नचित्त हो जाते हैं ।

है लाल टापू दरम्यान में, लाल मिने हैं रंग ।
साम सामी किरने लरे, कैं लेहेरे उठे तरंग ।।५।।

यहां सागर के मध्य टापू भी लाल रंग का है, तथा उसमें स्थित महल भी लाल रंग के हैं । उनकी दिव्य तेजोमयी किरणें आमने-सामने से आकर टकराती हैं, जिनकी तरंगे लहराती हुई दिखायी दे रही हैं ।

इन लाल सागर के, क्यूं शोभा कहूं इन मुख ।
हक हादी रूहे जानहीं, ए नूरजमाल के सुख ।।६।।

इस लाल सागर की शोभा व सुखों का माया की झूठी जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करूं? श्री राज जी के इन सुखों को श्री राज श्यामा जी एवं सखियां ही बेहतर जानते हैं ।

ए वाहिदत जिमी नूर की, जहां भाव है अद्वैत ।
सो केहेनी क्यूं कर कहूं, इत शबद न पोहोंचे द्वैत ।।७।।

यह परमधाम की दिव्य स्वलीला अद्वैत (वहदत) भूमिका है । यहां सभी लीला रूप सामग्री एक स्वरूप हैं ? उसका वर्णन किस प्रकार करें । इस द्वैत माया जगत् के शब्द वहां अखंड परमधाम में नहीं पहुंचते हैं ।

याको जाने मोमिन, जो अहेल इलाही उम्मत ।
जाको हक सुभान ने, दई अपनी मारफत ।।८।।

उसे मात्र ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं, जो परमेश्वर (की नैमतों) के वारिस

(उत्तराधिकारी) हैं, जिन्हें प्रियतम अक्षरातीत ने अपना मारिफ्त (परमसत्य) रूपी ज्ञान का खजाना दिया है ।

प्रकरण १०४ चौपाई ३७३५

इस प्रकरण में परमधाम की पश्चिम दिशा में शोभा ले रहे दधि सागर का वर्णन है, जहां की प्रत्येक लीलारूप सामग्री हरे रंग में झलकार कर रही है और इश्क ही इश्क का स्वरूप है । जहां पर युगल स्वरूप विहार करते हैं ।

पश्चिम दिशा के विषे, रहत दधि सागर ।
सबज रंग है तिन का, मोहोलाएत चारों तरफों पर ।।१।।

परमधाम की पश्चिम दिशा में हरे रंग का दधि सागर विद्यमान है, जिसकी चारों तरफ शोभायमान महल भी हरे रंग के हैं ।

इत भोम है सबज रंग, याकी मोमिन पे पेहेचान ।
मोहोल मंदिर सबज रंग, ए सागर दधि के जान ।।२।।

यहां की धरती भी हरे रंग की है, जिसकी पहचान ब्रह्मात्माओं को होती है । दधि सागर के महल, मंदिर आदि सभी हरे रंग के जानिये ।

पशु पंखी सबज रंग के, सबज दरखत वन ।
नूर जवेर झलकत, नूर चारों तरफ रोशन ।।३।।

यहां पशु-पक्षी भी हरे रंग के हैं, वनों के वृक्ष भी हरे रंग के हैं । नूरमयी जवाहरात चारों तरफ जगमगाते हुए (हरे रंग की) रोशनी फैला रहे हैं ।

इत कई ठौर रमन के, और मोहोलों दरम्यान ।
चौक चेहेबच्चे चबूतरे, सो मोमिन करे पेहेचान ।।४।।

यहां महलों के मध्य तथा वनों में अनेकों चौक, चबूतरे, चहबच्चे आदि रमण करने के आनंददायी स्थल हैं, जिसकी पहचान मोमिन ही करते हैं ।

छज्जे गोख कमाडिया, रंग सबज झलकत नूर ।
हक हादी रूहे खेलहीं, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।५।।

छज्जे, गोख, किवाड़ आदि सभी नूरमयी हरे रंग में जगमगा रहे हैं । यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां अनेक प्रकार से खेलते हैं । इस शोभा का

किस प्रकार वर्णन करूं?

मोहोल सामे मोहोल हैं, कई बैठक टापू दरम्यान ।
नूर रांग लों विराजत, देखन मोमिन को आसान ।।६।।

बड़ी रांग की हवेलियों के सामने सागरों के मध्य टापू महल हैं, जिनमें अनेकों बैठकें शोभायमान हैं । इनकी ऊंचाई बड़ी रांग की नूरमयी हवेलियों के बराबर आसमां तक है । इसे देखना व समझना मोमिनों के लिये सरल होता है ।

रांग सबज रंग की, सबज रंग सब द्वार ।
सब साज इशक मय, करे जुगल सरूप बिहार ।।७।।

बड़ी रांग की हवेलियां भी हरे रंग की हैं । इनके सब दरवाजे भी हरे रंग के हैं । सारी सज्जा (लीलारूप सामग्री) इश्क से परिपूर्ण है । यहां युगल स्वरूप लीला विहार करते हैं ।

सुख इशक इन भोम को, करे प्यार हक सुभान ।
ए प्यार करे तिन सों, ए मोमिन देवे पेहेचान ।।८।।

परमधाम की धरती के इश्क व आनंद का किस प्रकार वर्णन करें । प्रियतम अक्षरातीत सखियों से बहुत प्यार करते हैं तथा सखियां भी उनसे बहुत प्रेम करती हैं । इसकी पहचान ब्रह्ममुनि ही दुनिया को कराते हैं ।

प्रकरण १०५ चौपाई ३७४३

इस प्रकरण में वायव्य कोने में आए घृत सागर का वर्णन है, जहां की संपूर्ण शोभा आसमानी रंग में जगमगा रही है । इश्क की भूमि में कृपानिधान श्री राज जी सबको इश्क से सींचते हैं ।

पश्चिम उत्तर दरम्यान में, वाएब कोना केहेलाए ।
तहां सागर हैं घृत को, रंग आसमानी हैं ताए ।।१।।

पश्चिम व उत्तर दिशा के मध्य में वायव्य कोना कहलाता है । परमधाम के वायव्य कोने में घृत का सागर है, जिसका रंग आसमानी (नीला) है ।

आसमानी रंग भोम हैं, हैं दरखत रंग आसमान ।
पशु पंखी रंग आसमानी, मोमिन कर देवे पेहेचान ।।२।।

वहां की धरती भी नीले (आसमानी) रंग की है । वृक्ष भी नीले रंग के

हैं । पशु पक्षी भी नीले रंग के हैं । उसकी पहचान ब्रह्मात्माएं ही कराती हैं ।

इन दरियाव को देखिए, चारों तरफो मोहोलात ।
कई ठौर इत रमन के, दिल माफक नूरजमाल ।।३।।

इस सागर की शोभा को देखिए । इसके चारों तरफ बड़ी रांग की हवेलियां विद्यमान हैं, जहां अनेकों रमणीय स्थल हैं, जिनकी शोभा प्रियतम अक्षरातीत के हृदय के अनुसार विद्यमान है ।

इत कई मेवे वन में, कई रस भोम स्वाद ।
सब चेतनता इन में, बका ठौर बुनियाद ।।४।।

यहां वन में अनेकों प्रकार के मेवों (फल) के वृक्ष हैं, जिनमें अनेकों प्रकार के रस व स्वाद हैं । इनमें पूर्ण रूप से चेतनता है, जो अखण्ड परमधाम की आधारभूत विशेषता है ।

रांग रंग आसमानी, जवाहिर नीलवी नूर ।
द्वार छत्तीस हजार नूर के, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।५।।

रांग (किला) भी नीले रंग का है, जिसमें नीलवी का नूरमयी जवाहरात जगमगा रहा है । सागर की तीन दिशा (सामने व दायें-बायें) के मिलाकर कुल ३६ हजार नूरमयी द्वार हैं, जिनकी जगमगाहट अवर्णनीय है?

इत हक हादी रूहें बैठत, इन छज्जों मोहोलात ।
खिलौने आवत मुजरे, सो क्यूं कर कहूं विख्यात ।।६।।

यहां महलों के छज्जों में श्री राज श्यामा जी एवं सखियां विराजमान होते हैं । तब यहां के पशु-पक्षी धणी के दर्शन एवं अभिवादन के लिये आते हैं । उसकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं।

बका भोम सब चेतन, सब होए गया इशक ।
इन पर रेहेमत रेहेमान की, रस सींचत नैनों हक ।।७।।

अखण्ड परमधाम की सम्पूर्ण धरती चेतन है । प्रियतम परब्रह्म अपनी प्रेम भरी कृपा दृष्टि से इन्हें सींचते हैं, जिससे सम्पूर्ण परमधाम इश्कमयी हो गया है ।

प्रकरण १०६ चौपाई ३७५०

उत्तर दिश देखिए

इस प्रकरण में रंगमहल की उत्तर दिशा में आए इल्म के मधु सागर का वर्णन है, जहां संपूर्ण लीलारूप सामग्री श्याम रंग की है ।

दिश उत्तर की देखिए, मध्य सागर मीठा नूर ।
श्याम रंग तहां शोभित, सो क्यू कर कहूं जहूर ।।१।।

परमधाम की उत्तर दिशा में देखिये । वहां बड़ी रांग की हवेलियों के मध्य नूरमयी मीठा मधु सागर विद्यमान है । वहां की सम्पूर्ण लीलारूप सामग्री श्याम रंग की है । उसकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करें ?

श्याम रंग जवेरन की, भोम अतंत प्रकाश ।
किरने उठे जुदी जुदी, जोत न माय आकाश ।।२।।

यहां जवाहरातों का रंग भी श्याम है । वहां की धरती भी अत्यंत प्रकाशमयी है, जिससे अलग-अलग अनेक रंगों की किरणें निकलती हैं, जिनका प्रकाश आकाश में नहीं समा पाता है ।

श्याम रंग जवेरन की, चारों तरफ दरिआए ।
साम सामे मोहोल शोभित, तले चबूतरा गृदवाए ।।३।।

सागर के चारों तरफ श्याम रंग के जवाहरात शोभायमान हैं । हवेलियां आमने-सामने शोभायमान हैं । सागर के चारों तरफ जल रौंस का चबूतरा शोभायमान है ।

तहा प्रदक्षिना दीजिए, फिर आइए दरिआवों चारों तरफ ।
दिल माफक नूरजमाल के, सो कह्या ना जाए एक हरफ ।।४।।

इस जल रौंस में आकर सागर के चारों तरफ भ्रमण करते हुए शोभा देखिये । यहां की शोभा अद्वितीय दिव्य स्वरूप वाले परब्रह्म के हृदय के अनुसार है, जिसके विषय में एक शब्द भी कहना सम्भव नहीं है ।

टापू बीच बिराजत, जवेर रंग हैं नूर श्याम ।
तहां हक हादी रूहें रमें, होत पूरन मनोरथ काम ।।५।।

सागर के मध्य टापू महल विद्यमान हैं, जिसके नूरमयी जवाहरातों का रंग भी श्याम है । वहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां रमण करते हैं, जिसके द्वारा सखियों के मन की सभी इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं ।

आवत खिलौने मुजरे, हक की करें जिकर ।
इशक अंग सबन के, याके और ना कछू फिकर ।।६।।

यहां के सभी पशु-पक्षी धणी के दर्शन व अभिवादन के लिये आते हैं और मधुर वाणी से प्रियतम श्री राजजी के गुणगान करते हैं । इन सबके अंग अंग में इश्क भरा हुआ है । धणी के अतिरिक्त इनके मन में अन्य कुछ भी चिंतन नहीं होता है ।

ए हक को रिझावहीं, हर भांतों खेल बनाए ।
ए चेतन अंग सब नूर के, ए सदा रहे सुखदाए ।।७।।

वे पशु-पक्षी अनेक प्रकार से खेल-तमाशे करके धणी को रिझाते हैं । इनके सभी अंग नूरमयी व चेतन हैं, जो सदा ही सुखदायी रहते हैं ।

सत चित्त आनन्द सरूप की, सब सुखकारी सनेह ।
असवारी समे आवहीं, कई नए सुख उपजावे ए ।।८।।

ये पशु-पक्षी सच्चिदानंद स्वरूप है, प्रेम से परिपूर्ण और सुखदायी हैं । सवारी के समय ये पशु-पक्षी आते हैं और सखियों के हृदय में कई नये-नये सुख उत्पन्न करते हैं ।

प्रकरण १०७ चौपाई ३७५८

ईशान कोने में निसबत का रस सागर

इस प्रकरण में परमधाम के उत्तर पूर्व के मध्य ईशान कोने में शोभा ले रहे निस्बत के रस सागर की शोभा का वर्णन है, जहां की संपूर्ण शोभा दस रंग में आई है । इश्क रस से परिपूर्ण अखंड परमधाम की धरती का तेज आसमान तक झलक रहा है ।

उत्तर पूरब के बीच में, कह्या कोना ईशान ।
तहां रस सागर अमृत कह्या, दस रंग तामे जान ।।१।।

उत्तर एवं पूर्व दिशा के मध्य में जो कोना है, उसे ईशान कोना कहते हैं । परमधाम के ईशान कोण में अमृतमयी रस सागर विद्यमान है, जिसमें दस रंगों की शोभा आयी है ।

दस रंग हैं भोम में, दसै रंग जात वन ।
दस रंग हैं दरखत, दस रंग रस्ते रोशन ।।२।।

यहां की धरती में दस रंग विद्यमान हैं । वन भी दस रंग व प्रजातियों के हैं। वृक्ष एवं उनके मध्य के रास्ते भी दस रंगों से जगमगा रहे हैं ।

दस रंग के फूल फल हैं, दस रंग मोर पात ।
दस रंग मेवे मिने, दस रंग पशु पंखी जात ।।३।।

फल-फूल भी दस रंग के हैं, मोर व पत्ते भी दस रंग के हैं । उन वृक्षों में मेवे भी दस रंग के हैं । यहां पशु-पक्षियों की प्रजातियां भी दस रंगों की है ।

दस रंग की रांग हैं, दस रंग मोहोलाएत नूर ।
हक हादी जहां खेलत, क्यूं कर कहूं जहूर ।।४।।

रांग की हवेलियां भी दस रंग की हैं, जिनमें दस रंग के महल जगमगा रहे हैं । जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां हांस-विनोद करते हों, वहां की शोभा किस प्रकार वर्णन की जाये ?

दस रंग गृद चबूतरे, दस रंग जवेर जुदी जात ।
नूर दसों दिश झलकत, कही जाए ना सुपने में बात ।।५।।

सागर की चारों तरफ दस रंग के चबूतरे हैं, इनमें अलग-अलग दस रंगो के जवाहरात शोभायमान हैं । इन जवाहरातों की नूरमयी किरणें दसों दिशाओं में झलक रही हैं । उस शोभा का वर्णन स्वप्न जगत् में करना सम्भव नहीं है ।

ए तो हक दिल माफक, चारों तरफों मोहोलात ।
टापू तो मोहोल नूर के, तामे दस रंग हक जात ।।६।।

ये तो श्री राजजी के दिल के अनुसार ही सारी शोभा है । सागर के चारों तरफ महल हैं । सागर के मध्य नूरमयी टापू महल हैं, उनमें भी दस रंग शोभायमान हैं, जो श्री राज जी के ही स्वरूप हैं ।

मोहोल बराबर शोभित, टापू एक रंग रस ।
जोत जवाहिर झलकत, केहेनी थे हैं अति सरस ।।७।।

बडी रांग की हवेलियां एवं टापूमहल समान रूप से सुशोभित हैं । दोनों जगह एक जैसे रंग व आनंद हैं । उनके जवाहरातों की नूरमयी ज्योति जगमगा

रही है, जो कि वर्णन से कई गुना ज्यादा आनंददायी है ।

एह ठौर सब इशक की, भोम चेतन प्रकाश ।
साम सामे किरने लरे, जोत न माए आकाश ।।८।।

यहां के सभी स्थान इश्क से परिपूर्ण हैं । यहां की धरती चेतन व प्रकाशमयी है । आमने-सामने से किरणें आकर आपस में टकराती हैं, जिसकी ज्योति आकाश में भी नहीं समा पाती है ।

प्रकरण १०८ चौपाई ३७६६

पूरब दिश सागर

इस प्रकरण में परमधाम की पूर्व दिशा में सुशोभित सर्वरस सागर का वर्णन श्रीराज जी कर रहे हैं । यह उनकी मेहर का सागर है, जिनमें सभी रंग समाए हुए हैं।

सागर पूरब का देखिए, पूरब तरफ सब नूर ।
सब रस सागर देखिए, क्यूं कर कहूं जहूर ।।१।।

परमधाम की पूर्व दिशा में स्थित सर्वरस सागर की शोभा देखिये, जहां सब प्रकार के रंगों का नूर है । उसकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करें ?

जहां सब रंग सब ठौर के, सब भातें भोम शोभाए ।
बका ठौर सब चेतन, सो आवत नहीं जुबांए ।।२।।

यहां सभी स्थानों में सभी रंग विद्यमान हैं । यहां की धरती सब प्रकार से सुशोभित है । अखण्ड परमधाम की सभी लीलारूप सामग्री चेतन हैं, जिसकी शोभा अवर्णनीय है ।

इत जवेर कई रंग के, कई जातों दरखत ।
सब रस हैं सब चेतन, नूर बरसत सब इत ।।३।।

यहां अनेक रंगों के जवाहरात हैं, कई किस्म के वृक्ष हैं, जोकि सभी प्रकार की विशेषताओं से युक्त चेतन हैं । यहां सभी प्रकार के रंगों का नूर बरस रहा है ।

एह ठौर सब रमन की, हक हादी रूहें रमन ।
आवत सुखपाल बैठ के, एह कह्यो न जाए रोशन ।।४।।

यह स्थान सभी प्रकार की हांस-विलास की लीलाएं करने का है । यहां श्री राजश्यामा जी एवं सखियां सुखपाल में बैठकर आते हैं और अनेक प्रकार से हांस-विनोद करते हैं, उस शोभा व आनंद का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

सब जात पशु पंखी नूर के, सब रंगों शोभाए ।
सब रस लेवे वन में, सो आवत नाही जुबांए ।।५।।

यहां सभी प्रजाति व सभी रंगों के नूरमयी पशु-पक्षी रहते हैं । वे वनों में सभी प्रकार का आनंद लेते हैं, उसका वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

चारों तरफों मोहोलाएत, दरिआ के गृदवाए ।
चारों तरफों मोहोल नूर के, प्रदक्षिना शोभाए ।।६।।

सागर के चारों तरफ घेरकर महल (हवेलियां) आये हैं, जो अनंत रंगों के नूर से जगमगा रहे हैं । सागर की चारों तरफ प्रदक्षिणा (जल रौंस) शोभायमान है ।

हक के दिल माफक ए रमने की ठौर ।
हक हादी रूहें जानहीं, क्यूं कहे सके कोई और ।।७।।

यह रमणीय स्थल प्रियतम अक्षरातीत के हृदय के अनुसार सुशोभित है । यहां की शोभा श्री राज श्यामा जी एवं सखियां जानती हैं । उसका वर्णन अन्य कोई किस प्रकार कर सकता है ?

एह ठौर रमन की, सब चेतनता नूर ।
सब में इशक हक का, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।८।।

यह लीला स्थली नूरमयी चेतनता से परिपूर्ण है । सभी के अंदर श्री राजजी का ही इश्क समाया हुआ है । उसकी विशेषता का किस प्रकार वर्णन करें ?

प्रकरण १०९ चौपाई ३७७४

आठो सागर सम्पूर्ण : क्षीर सागर

इस प्रकरण में नैऋत्य कोने में आए अलौकिक शोभा से युक्त क्षीर सागर का वर्णन है, जहां की संपूर्ण शोभा पीले रंग की है । साथ ही छोटी रांग का भी वर्णन है, जिसकी पांच भोम छठी चांदनी है । क्षीर सागर सुंदरता, अखंड सुख, चैन, आराम का सागर है ।

शोभा सागर सुन्दर, जहां सागर हैं खीर ।
पश्चिम दक्खिन बीच में, कोने नैरित खेले या तीर ।।१।।

पश्चिम व दक्षिण दिशा के मध्य नैऋत्य कोने में सुंदरता व शोभा से युक्त क्षीर सागर विद्यमान है, इस सागर के किनारे हम सखियां अनेक प्रकार से खेल खेलते हैं ।

शोभा है इन भोम की, पीत रंग पुखराज ।
तहां खेलन आवत, श्यामा सैंया श्री राज ।।२।।

यहां के धरती की शोभा पुखराज नग के पीले रंग की है । यहां पर श्री श्यामाजी एवं सखियां, श्रीराजजी के साथ खेलने के लिये आती हैं ।

भोम जोत जवेरन की, सब चेतन एक रस नूर ।
जाकी जोत न माए आकाश में, ताको क्यूं कर कहूं जहूर ।।३।।

यहां की धरती और जवाहरातों से निकलने वाली ज्योति सब चेतन, एकरस व नूरमयी हैं । जिनकी ज्योति आकाश में ही नहीं समा पाती है, तो उसकी शोभा व दिव्यता का किस प्रकार वर्णन किया जाये ?

रांग रंग पुखराज के, आगे चार हार हवेलियन ।
जहां पांच भोम छठी चांदनी, है नूर अति रोशन ।।४।।

बड़ी रांग की हवेलियां पुखराज के (पीले) रंग की हैं । बड़ी रांग के भीतरी तरफ छोटी रांग की चार हार हवेलियां आयी हैं, जिनकी पांच भोम छठी चांदनी है, इनका दिव्य प्रकाश चारों तरफ रोशनी फैला रहा है ।

पीत रंग हवेलियां, एक रस तरफ चार ।
बारे हजार एक एक में, सो मोमिन करें विचार ।।५।।

क्षीर सागर के सामने आयी छोटी रांग की हवेलियां भी पीत रंग की हैं । चारों तरफ एक समान शोभा है । छोटी रांग की एक-एक भोम में १२-१२

हजार भोम हैं, उसका सुंदरसाथ विचार करें ।

कई चोक चेहबच्चे नूर के, कई बैठक नूर विशाल ।
सो क्यूं कहूं शोभा तिन की, होत हक हादी रूहें खुसाल ।।६।।

यहां अनेकों नूरमयी चौक व चहबच्चे विद्यमान हैं । अनेकों नूरमयी विशाल बैठकें हैं । उनकी शोभा किस प्रकार कहूं ? यहां आकर श्री राज श्यामा जी एवं सखियां अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं ।

ठौर रमन के चित्त धरो, इन हवेलिओं के दरम्यान ।
चौक कई तरह देखिए, नूर रोशन करो पेहेचान ।।७।।

अपने निजघर के रमण करने के स्थानों की शोभा को दिल में धारण करो । इन हवेलियों के मध्य अनेक प्रकार के चौक दिखायी देते हैं, उनकी नूरमयी रोशनी की पहचान कीजिये ।

पांचों भोम बराबर, मंदिर हवेलियों दरम्यान ।
सब जोगबाई पूरण, ताकी करो पहचान ।।८।।

छोटी रांग के पांचों भोम समान शोभा से युक्त हैं । हवेलियों एवं मंदिरों के अंदर सभी आवश्यक वस्तुएं विद्यमान हैं, उसकी पहचान कीजिये ।

ए बड़ा दरवाजा रांग में, एक दरवाजा तरफ जिमीन ।
तहां रस्ते वन शोभित, ए जाने हौज कौसर की मीन ।।९।।

बड़ी रांग की हवेलियों में जो बड़े दरवाजे आये हैं । उसमें से एक दरवाजा जमीन (८ जिमी) की तरफ है । उसके सामने रास्ते व वन शोभायमान हैं, उसे हौज कौसर ताल की मछलियां (ब्रह्मप्रियाएं) ही अच्छी तरह से जानती हैं।

बारे हजार दरवाजे रांग में, तरफ दरियाव जो ए खीर ।
पीत रंग पुखराज के, जाए खड़े रहिये दरिया तीर ।।१०।।

रांग की हवेलियों के बारह हजार दरवाजे क्षीर सागर की एक दिशा में दिखायी देते हैं । ये पुखराज नग के पीले रंग में शोभायमान हैं । यहां आकर सागर के किनारे खड़े हो जाईये और यहां की सारी शोभा देखिये ।

तहां चारों मोहोलाएत, जवेर रंग पुखराज ।
हक हादी रूहें खेलत, जहां होत असवारी राज ।।११।।

सागर के चारों तरफ पुखराज जवाहरात के रंग के महल (हवेलियां)

शोभायमान हैं । यहां श्रीराजश्यामा जी एवं सखियां अनेक प्रकार से खेल-रामतें करते हैं तथा अनेक प्रकार से सवारी की लीला भी करते हैं ।

दोऊ बाजू मोहोल रांग के, तहां बारे बारे हजार द्वार ।
ए छत्तीस हजार एक एक तरफ, इत हक हादी रूहें बिहार ।।१२।।

सागर की दोनों तरफ रांग की हवेलियां विद्यमान हैं, जिनके सामने १२-१२ हजार द्वार जगमगा रहे हैं । इस प्रकार एक तरफ देखने पर दायें-बायें व सामने के कुल ३६ हजार द्वार दिखायी देते हैं । यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां अनेक प्रकार से खेल-रामतें करते हैं ।

दोए बाजू तरफ जिमीन की, दोए बाजू रांग तरफ ।
इत कई मोहोलायत बैठक, जाकी कही ना जाए हरफ ।।१३।।

सागर की दो दिशायें (दायें-बायें) जिमी (८ जिमी) की तरफ हैं और दो दिशाएं रांग की हवेलियों की तरफ (बाहरी व भीतरी) हैं । यहां अनेकों प्रकार के महल व बैठकें शोभायमान हैं, जिनकी शोभा में एक शब्द भी कहना सम्भव नहीं है।

एक तरफ देखिए, मोहल तरफ या वन ।
तो और न आवे नजरों, जाने एही शोभा रोशन ।।१४।।

यदि सागर की एक दिशा में देखते हैं, चाहे हवेलियों की तरफ देखें या वन (जिमी) की तरफ, तो उसके समक्ष अन्य कोई भी वस्तु नहीं दिखायी देती । ऐसा लगता है, कि यही शोभा सर्वोपरि है ।

कई बैठक कचेरिआ, कई मंदिर दरम्यान ।
कई तरह फुहारे उछरत, पाइए मोमिन पेहेचान ।।१५।।

यहां हवेलियों के मध्य कई बैठकें, कचहरियां, मंदिर शोभायमान हैं । कई प्रकार के फव्वारे उछल रहे हैं, जिसकी पहचान ब्रह्मसृष्टि के द्वारा ही होती है।

ज्यूं एक रांग आगे, त्यूं ही सागर पार रांग जान ।
ऐसे हैं मोहोल मंदिर तिन के, एह नूर रोशन सब परवान ।।१६।।

जिस प्रकार एक रांग (महाहवेली) सागर के सामने (भीतरी तरफ) है, उसी प्रकार एक रांग (महाहवेली) सागरों के उस पार (बाहरी तरफ) समझो ।

उसी प्रकार महल-मंदिर सब शोभायमान हैं । उसी प्रकार नूरमयी रोशनी है ।

छज्जे नूर मोहोलन के, शोभित ऊपर सागर ।
हक हादी रूहें बैठत, केहेनी न आवे पटन्तर ॥१७॥

उन हवेलियों के नूरमयी छज्जे सागर के ऊपर सुशोभित हैं (हवेलियों के छज्जे वनों के छज्जों से मिलें हैं और वनों के छज्जे सागर के जल चबूतरे तक आये हैं) । इन छज्जों में श्री राज श्यामा जी एवं सखियां विराजमान होते हैं, उस समय की शोभा की कोई तुलना ही नहीं है ।

क्यूं कहूं शोभा खिलौने की, जो हक के रहे आशक ।
कई पातसाहियां तिनकी, रहे जात सुभान हक ॥१८॥

यहां रहने वाले पशु-पक्षियों की शोभा किस प्रकार कहें, जो श्री राज जी के आशिक (प्रेमी) हैं ? राजजी के ही स्वरूप इन पशु पक्षियों का यहां अखण्ड साम्राज्य है ।

कई मेवे इन वन में, भोम रस एही सवाद ।
कई सुगन्ध फूलन की, सो आवे मोमिनों याद ॥१९॥

यहां के वनों में अनेक प्रकार के मेवे लगे हैं । इनके अंदर अनेक प्रकार के रस व स्वाद हैं । फूलों में अनेक प्रकार की दिव्य सुगंधि है, जो ब्रह्मात्माओं को याद आते हैं ।

सब रस्ते दोरी बंध, सब चेतनता सब नूर ।
ऐ केहेनी ख्वाब जिमी में, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥२०॥

सभी रास्ते एक सीध में पंक्तिबद्ध रूप से शोभायमान हैं । सभी नूरमयी चेतनता से युक्त हैं । उसका वर्णन इस स्वाप्निक जगत में करना है । किंतु उसकी शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं (क्या उदाहरण दें) ?

जहां हक हादी बिहरत, सुखपाल चलें ऊपर मन ।
सब देखे ठौर रमन की, सब झलकत नूर रोशन ॥२१॥

जहां श्री राज श्यामा जी सुखपालों पर सवार होकर विहार करते हैं । ये सुखपाल मन की इच्छानुसार मन की गति से हवा में उड़ते हैं । इनमें बैठकर सभी रमणीय स्थलों को देखते हैं । सभी जगह नूर ही नूर प्रकाशमान हो रहा है ।

एह शोभा एह सागर, एह सुन्दरता सुख चैन ।
सागर खीर रस नूर के, एह सुख मोमिन देखे नैन ।।२२।।

ये सागर, इसकी शोभा व सुंदरता, सुखदायी व अनंत शांति प्रदान करने वाले हैं । क्षीर सागर नूरी रस से परिपूर्ण है । इसे नेत्रों से देखने पर ब्रह्मात्माओं को अत्यंत सुख प्राप्त होता है ।

ए जाने हक हादी रूहें, जो इत करें मनुहार ।
बका ठौर इशक में, जहां होत नित बिहार ।।२३।।

उस सुख को श्री राज श्यामा जी एवं सखियां ही जानते हैं, जो यहां आकर एक दूसरे को प्रेम से रिझाते हैं । अखण्ड परमधाम की इश्कमयी भूमिका में, नित्य प्रति अखण्ड लीला विहार होते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनो, तुम हो हक की जात ।
महंमद अलेह सलाम ने, तुम को करी सिफाएत ।।२४।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी । आप श्री राजजी के ही स्वरूप (हक जात) हो । मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने आपकी अनुशंसा (तारतम ज्ञान प्रदान) की है ।

प्रकरण ११० चौपाई ३७९८

हक इलम देखावे अरफान

इस प्रकरण में मोमिनों की महिमा का वर्णन है । परमधाम से रूहअल्ला श्री श्यामाजी तारतम ज्ञान लेकर आयी हैं। ब्रह्मात्माएं ही इस ब्रह्म ज्ञान के असली वारिस हैं । पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की सभी नैमतें इन्हीं के लिए आई हैं । मोमिनों के दिल को धणी ने अपना अर्श कहा है, जहां पर श्री राजजी ने अपने चरण कमल रखे हैं ।

लदुंनी इलम हक का, सब तिस के दरम्यान ।
पाइए मारफत तिन से, ए पावे मोमिन अरफान ।।१।।

हक तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) के इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) के अंदर सम्पूर्ण ज्ञान समाया है । इसके द्वारा परब्रह्म के परमसत्य (मारिफ्त) का

ज्ञान होता है, उस ब्रह्मज्ञान के बातिनी रहस्यों को मात्र ब्रह्मात्माएं ही प्राप्त करती हैं।

एह लुदंनी इलम, रूह अल्ला ल्याए चौथे आसमान ।
एह मता मोमिनों का, एह इन को है आसान ।।२।।

ईसा रूहूल्लाह (श्री श्यामा जी) यह दिव्य तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से लाये हैं । यह मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) का धन है । इनके लिये इसे समझना सरल होता है ।

एह बिगर पढ़े आवत, तामे जो फिरकान ।
ज्यूं वारसी बाप की, होवे बेटे को आसान ।।३।।

यह जो कुर्आन आदि धर्मग्रंथ हैं, उनके रहस्य सुंदरसाथ को बिना पढ़े (तालीम प्राप्त किये) प्राप्त हो जाते हैं, जिस प्रकार बाप की सम्पत्ति बेटे को बिना किसी मेहनत के आसानी से प्राप्त हो जाती है ।

ज्यों गंज खजाना इलाही, खर्च होत उपर मोमिन ।
सब वारसी पोहोंचे इन को, इन के असल अरस में तन ।।४।।

खुदायी इल्म (ब्रह्मज्ञान) का अखण्ड खजाना मोमिनों पर खर्च हो रहा है । सभी धर्मग्रंथों की विरासत (रहस्य-गूढ़ार्थ) उन्हें प्राप्त हो गयी है । अर्शे अज़ीम (परमधाम) में उनके मूल तन विराजमान हैं ।

दिल मोमिन अरस कह्या, जित कदम धरे हक सुभान ।
सब वारसी तिन को, आखर पोहोंची निदान ।।५।।

मोमिन (ब्रह्मात्माओं) के दिल को खुदा का अर्श (परमात्मा का धाम) कहा है, जहां प्रियतम अक्षरातीत ने अपने नूरी चरण रखे हैं । सब प्रकार की विरासत (सब प्रकार का ज्ञान) अंततः उनके पास पहुंच गयी ।

जो करी सरत साएत की, आवने को कयामत ।
सो मोमिन को खड़े किए, हक सुभान इत ।।६।।

परमात्मा ने कुर्आन आदि धर्मग्रंथों में कियामत के आने के समय का जो वायदा किया था, उस समय में मोमिनों को इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) देकर हक सुब्हान तआला ने जागृत कर दिया है ।

कायम करी साएत को, जो है हक हजूर नूर ।
सो दिखाया कसरत मे, याकी क्यूं कर कहूं जहूर ।।७।।

मूल मिलावे की उस घड़ी को अखण्ड कर दिया, जिसमें यत्नपूर्वक यह माया का खेल दिखाया है । उसकी महिमा किस प्रकार वर्णन करें ?

इन साएत दरम्यान मे, इत देखे छओ दिन ।
मेहेदी महंमद की मेहेर से, दीन महंमद हुआ रोशन ।।८।।

मूल मिलावे की उसी घड़ी में इस संसार में छः दिन की लीला देखी। मुहम्मद महदी साहिबुज्जमां की कृपा से मुहम्मद (श्रीश्यामाजी) का सत्य धर्म जाहिर हुआ है ।

उतरी उम्मत अरश से, जो रब्बानी खासल खास ।
हक की खिलवत बिना, और न रहे आस ।।९।।

अर्शे आज़म (परमधाम) से रब्बानी खासुलखास उम्मत (ब्रह्मसृष्टियां) अवतरित हुयी हैं । इनके हृदय में हक तआला (प्रियतम अक्षरातीत) की खिल्वत (अंतःपुर-रंगमहल) के अतिरिक्त अन्य कोई भी चाहना नहीं होती है ।

एह कहे आशक हक के, इनों का आशक हक ।
इन साएत दरम्यान में, छओ दिन दिखाए बुजरक ।।१०।।

ये मोमिन खुदा के आशिक (सच्चे प्रेमी) कहे गये हैं तथा प्रियतम परब्रह्म भी इनके आशिक हैं । परमधाम मूल मिलावे की उस घड़ी (संध्या ४-३० बजे) में हक तआला ने इन्हें संसार में छः दिन दिखा दिये हैं ।

आप याद है साएत, वही उठना कयामत ।
हुए हजूर हक सुभान के, करी कायम साएत ।।११।।

आप परब्रह्म अक्षरातीत ने उन्हें स्वयं मूल मिलावे की उस घड़ी (बैठे होने) की याद दिलायी । वहां सखियों का जागृत होना ही कियामत है । जब प्रियतम अक्षरातीत के समक्ष जागृत होंगे, तब उसी क्षण ब्रह्माण्ड अखण्ड (कायम) हो जायेगा।

ए ही एक दीन करें, ए ही गिरो इसलाम ।
ए ही बीच जाहिर करें, बीच महंमद अलेहसलाम ।।१२।।

वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही सारी दुनिया को एक परब्रह्म हक तआला की

पहचान कराके एक दीन (एक धर्म) करेंगे । वे ही शाश्वत सुख व शांति से युक्त परमधाम की आत्माएं हैं । मुहम्मद अलैहिस्सलाम (हकी सूरत) इन्हीं के बीच परमधाम का ज्ञान जाहिर करेंगे ।

ए ही यार जो कहे, ए ही पांचों तीनों तन ।
फेर साएत तीन याके कहे, कहे मोमिन दिल रोशन ।।१३।।

पांच तत्व व तीन गुण के तन को धारण करने वाले वे मोमिन ही खुदा के दोस्त कहे गये हैं । इस प्रकार माया के तन धारण करके वे तीन बार दुनिया में आये हैं । इनके हृदय में ज्ञान का प्रकाश होता है ।

सब बड़ाई इन की, इनों हक को किया जाहिर ।
एही माजजा लेवे कुरान का, अब देखा सबो बाहिर ।।१४।।

सब प्रकार की शोभा इन्हीं मोमिनो को हक तआला (परब्रह्म) ने प्रदान की है । उन्होंने ही हक तआला (एक परमात्मा) की पहचान दुनिया में जाहिर की है । वे ही कुर्आन के चमत्कारिक निशानियों को समझकर ग्रहण करेंगे । अभी तो सारी दुनिया उन सांकेतिक कथनों का ऊपरी अर्थ ले रही है ।

जो मुनकर हुए इनसे, सोई काफर दज्जाल ।
ए इनों को खेल दिखाई के, हक पोहोंचावे अपने हाल ।।१५।।

इन मोमिनों के वचनों को जिन्होंने नहीं माना, वही काफिर (अविश्वासी) और दज्जाल (कलि) का स्वरूप है । उन ब्रह्मात्माओं को संसार रूपी खेल दिखाकर प्रियतम परब्रह्म उन्हें अपने निजघर मूल मिलावे में जागृत कर देंगे ।

बरकत इन लुदंनी से, किए कायम चौदे तबक ।
ए होत मेहेर मोमिनों पर, पल पल पसरी हक ।।१६।।

इस लदुन्नी इल्म (तारतम ज्ञान) की सहायता से मोमिनों ने १४ लोकों के प्राणियों को अखण्ड मोक्ष प्रदान किया । ब्रह्मात्माओं पर प्रियतम अक्षरातीत की यह कृपा पल पल हो रही है ।

ए मेहेर मोमिनों पर, सो आवत नाहीं जुबान ।
कई भांत कई जुगतो, इनों पर छाहां रेहेमान ।।१७।।

यह जो कृपा मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) पर पल पल हो रही है, उसका वर्णन करना सम्भव नहीं है । अनेक प्रकार से अनेक युक्तियों से इन पर प्रियतम

परब्रह्म मेहर की छांव बनाये रखते हैं ।

जोस जबराईल इनो को, दिया इनों के साथ ।
वकीली इनों की करें, जाके हके पकड़े हाथ ॥१८॥

धणी ने अपना जोश (जिब्रील) इनके साथ में दिया है । वह उन्हें सत्य-असत्य की पहचान कराता है, जिनके हाथ पकड़कर प्रियतम अक्षरातीत जगाना चाहते हैं ।

गृद फिरे घरों मोमिन, कहे अलेह कुंम सलाम ।
दस्त पोसी इन की करें, जबराईल इस ठाम ॥१९॥

ब्रह्मात्माओं के घर के चारों तरफ भ्रमण करता रहता है । उनसे कहता है अस्सलामों अलैकुम (तुम पर सलामती हो) । जिब्रील इस संसार में उन मोमिनों के हाथ चूमता है ।

खुदा दई नबुबत इनको, अपनी जो न्यामत ।
ए करो हिदायत हक की, देखावे महंमद की सिफाएत ॥२०॥

खुदा तआला ने इन मोमिनों को अपनी नबुवत (ब्रह्मज्ञान देने का अधिकार) प्रदान किया है, कि सारी दुनिया को एक परब्रह्म की पहचान कराके उनकी बंदगी करने की शिक्षा दो । वे ही मुहम्मद की सिफायत (तारतम ज्ञान) की पहचान दुनिया को कराते हैं ।

ऐही हादी राह तौहीद की, दिखावे बका घर इसलाम ।
नूर मकान फिरस्ते, ए ही पोहोंचावे इस ठाम ॥२१॥

वे मोमिन (ब्रह्मात्माए) ही एक परब्रह्म की भक्ति का मार्ग दिखाने वाले सद्‌गुरू हैं, जो शाश्वत सुख व शांति के अखण्ड घर परमधाम की पहचान कराते हैं । वे ही ईश्वरी सृष्टियों को ब्रह्मज्ञान देकर अक्षर धाम में पहुंचायेंगे ।

ए ही आठों भिस्त जाहिर करें, देवे सुख सब जहान ।
ए ही याद आवे नूर को, एही मोमिन कर देवे पेहेचान ॥२२॥

वे मोमिन ही आठों बहिश्तें (मोक्ष स्थान) जाहिर करके सारी दुनिया को सुख प्रदान करेंगे । वे ही अक्षर ब्रह्म को अक्षर धाम में जागृत होने के बाद याद आयेंगे । वे मोमिन ही अक्षर ब्रह्म को भी परमधाम (रंगमहल) के अंदर के लीला की पहचान करा देंगे ।

यों कई सिफत मोमिन की, करत हैं सुभान ।
दिया हुकम अपने हाथ में, दे जाग्रत बुध पेहेचान ।।२३।।

इस प्रकार प्रियतम अक्षरातीत ब्रह्मात्माओं की कई तरह से प्रशंसा करते हैं । उन्होंने अपना हुक्म हम मोमिनों के हाथ में दे दिया है, तथा जागृत बुद्धि भी पहचान के लिये दे दी है ।

रूह फूंकी तन इन के, दे बका पांचों न्यामत ।
इन को जाहिर करे, देखाया बखत कयामत ।।२४।।

उन मोमिनों के तनों में परमधाम की आत्मा रख दी है। इस प्रकार पांचों शक्तियां प्रदान कर दी हैं। उन नैमतों को प्रकट कर कियामत का समय दिखा दिया है ।

महामत कहे ए मोमिनों, तुमारा अरस वतन ।
सब रेहेमत तुम पर, गिरो खासल खास मोमिन ।।२५।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आपका निजघर परमधाम है । आप ही खासलखास मोमिन गिरोह (ब्रह्मात्माओं का समूह) हो । प्रियतम परब्रह्म की सारी कृपा आप पर है ।

प्रकरण १११ चौपाई ३८२३

पीए प्याले इशक सुरधीर

इस प्रकरण में ब्रह्मात्माओं को प्रियतम कह रहें हैं, कि परमधाम से इश्क का प्याला अर्थात ब्रह्मवाणी आपके लिए ही उतरी है। अखंड परमधाम की नैमत रूपी यह तारतम ज्ञान मोमिनों के धाम हृदय में ही समा सकता है और इन्हें ही श्रीराज जी इश्क के प्याले भर-भर कर पिलाते हैं ।

उतरा प्याला अरस से, शराब तहूरा इशक ।
ए बैठे अरस अजीम मे, नजीक घेर बैठे हक ।।१।।

दिव्य परमधाम (अर्शे आज़म) से इश्क रूपी शराब तहूरा के प्याले (ब्रह्मवाणी के रूप में) उतरे हैं, जिसके द्वारा पता चला, कि वे ब्रह्मात्माएं परमधाम मूल मिलावे में प्रियतम के अत्यंत समीप उन्हें घेर कर बैठी हैं ।

रूह बका की मोमिन, बैठे हजूर हक खिलवत ।
उन दिल मे ए दिल हैं, बेर कही न जाए साएत ।।२।।

अखण्ड परमधाम की मोमिन रूहें हक तआला (प्रियतम परब्रह्म) के समीप खिल्वत (मूल मिलावे) में विराजमान हैं । इन मोमिनों का दिल उन मूल तनों के दिलों में विराजमान है। वहां एक क्षण का भी समय व्यतीत नहीं हुआ है।

तहां से न्यामत आवत, मोमिन दिल दरम्यान ।
इश्क प्याले हक के, मोमिन पिलाए पेहेचान ।।३।।

वहां (मूल तन के दिल) से मोमिनों के दिल में नैमतें (परमधाम का ज्ञान) आती हैं । प्रियतम अक्षरातीत मोमिन (ब्रह्मात्माओं) को वे इश्करूपी प्याले पिलाकर पहचान कराते हैं । (राजजी के दिल से परात्म के दिल में प्रेरणा आती है । फिर परात्म के दिल से सुंदरसाथ के दिल में प्रेरणा आती है ।

परआतम के अंतस्करन, जेती बीतत बात ।
तेती इन आतम के, करत अंग साख्यात ।

(श्रीमुख वाणी)

शराब इन सुराई का, आवते बोए मर जाए ।
सुनत गूंगा होत हैं, चीखते अरस जगाए ।।४।।

वाणी रूपी सुराही में विद्यमान परमधाम के अखण्ड सुखों की सुगंध पाने से भी वह मनुष्य शरीर व संसार से परे हो जाता है । यह ज्ञान सुनकर वह गूंगा (मौन) हो जाता है । विरह में चिल्लाती हुई वह आत्मा परमधाम में जागृत हो जाती है ।

ए मरातबा मोमिनों, पिलावे हक सुराई शराब ।
दई अरस वारसी इन को, पिलाए हैयाती आब ।।५।।

यह मोमिनों की महिमा है, जिन्हें प्रियतम परब्रह्म ब्रह्मवाणी रूपी सुराही से इश्क रूपी शराब पिला रहे हैं । उन्हें परमधाम के ज्ञान की विरासत दी है, जिसके द्वारा प्रियतम इन्हें परमधाम के अखण्ड सुखों का अमृत पिला रहे हैं ।

रूहें रमें हक सों, अरस अजीम में वाहिदत ।
सो सुख याद देत हैं, मोमिन इश्क प्याले पीवत ।।६।।

वे ब्रह्मात्माएं प्रियतम अक्षरातीत के साथ स्वलीला अद्वैत परमधाम में

रमण करती हैं । तारतम वाणी के द्वारा प्रियतम उन्हें उन सुखों की याद दिला रहे हैं, जिससे मोमिन उस वाणी का चिंतन व चितवन कर राजजी के इश्क रूपी प्याले पी रहे हैं ।

हक प्यार करें इन सों, ए प्यार सो देखे मुख ।
नैनों नैन मिलावहीं, क्यों कहूं इशक इन सुख ॥७॥

प्रियतम अक्षरातीत उन ब्रह्मात्माओं से प्रेम करते हैं । ब्रह्मप्रियाएं भी प्रेम पूर्वक उनके मुखारविंद का दर्शन करती हैं । इस प्रकार वे आपस में नेत्रों से नेत्र मिलाते हैं । इश्क के इन सुखों का किस प्रकार वर्णन करें ?

एक थे एक रस में, नित नवतन जोबन ।
प्रेम चढता उन अंगे, क्यूं कहूं इशक रोशन ॥८॥

परमधाम में एकरस व एक स्वरूप हैं । तरूण अवस्था नित्य नौतन (नयी) ही लगती है । इनके अंगों में प्रेम हर पल चढ़ता (बढ़ता) हुआ ही प्रतीत होता है । उस इश्क की महिमा किस प्रकार वर्णन करें ?

हक के दिल में उपजा, कहे राजी करों रूहन ।
कई खेल खिलौने दिखाए के, कई बिध देत सुख रोशन ॥९॥

प्रियतम श्रीराज जी के दिल में इच्छा रहती है, कि सखियों को अनंत लाड-प्यार करके रिझाऊं । वे कई प्रकार से खेल खिलाकर व खिलौने (पशु-पक्षी) दिखाकर सखियों को अनेक प्रकार से सुख प्रदान करते हैं ।

प्यार रूहों को दिल में, चढता चढता इशक ।
नैनों नैन बातें करे, ए सैन सामी करें हक ॥१०॥

इसी प्रकार ब्रह्मप्रियाओं के दिल में भी हर पल इश्क बढ़ता हुआ ही प्रतीत होता है । वे प्रियतम अक्षरातीत से नैनों नैन मिलाकर बातें करती हैं और इन्हें प्रियतम आंखों के इशारे करते हैं ।

ए हक दिल की जानहीं, इन रूहों दिल जाने हक ।
सो पीए प्याले मोमिन, सुराई इशक हक ॥११॥

श्री राजजी के दिल के सारे रहस्य सखियाँ जानती हैं तथा उन सखियों के दिलों की बातें श्री राजजी जानते हैं । प्रियतम अक्षरातीत के नेत्र रूपी सुराही से प्रेम रूपी शराब के प्यालों का ब्रह्मात्माएं ही पान करती हैं ।

इनों वास्ते भेजा रसूल को, तिन वास्ते बनाए चौदे तबक ।
इनों वास्ते फना करें, चढाए किस्ती बुजरक ।।१२।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही रसूल (मुहम्मद साहब) को भेजा, उन्हीं के लिये चौदह लोकों के इस संसार की रचना की गई है। इन्हें ही (नूह तूफान के समय) योगमाया की किश्ती में चढ़ाकर कालमाया के ब्रह्माण्ड का लय कर दिया था।

इन को खेल खिलाए के, देखाए बिरहा बिलास ।
फेर एह तीसरा रचा, जो रहि इनों की आश ।।१३।।

वहां नित्य वृंदावन में उन्हें रास लीला के अंतर्गत विरह व विलास दोनों दिखाया । फिर दुःख का खेल देखने की उनकी इच्छा बाकी रह जाने से पुनः तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना की ।

फेर इनों वास्ते बरारब, भेजा रसूल अलहेसलाम ।
खास दसखत आपने, लिख भेजे अपने कलाम ।।१४।।

फिर इन ब्रह्मात्माओं के लिये अरब की धरती पर रसूल अलैहिस्सलाम को भेजा और उनके साथ अपने खास दसखत कलाम (स्वयं हस्ताक्षरित वचन) लिख कर भिजवाये ।

लिखाए इन वास्ते इसारतें, कई रमूजें रोशन ।
सो एही पढ़े एही खोले, खास गिरो मोमिन ।।१५।।

कुर्आन पाक के अंतर्गत उन ब्रह्मात्माओं के लिये कई सांकेतिक (गुह्य ज्ञान के वचन) लिखवाये । उन्हें वे मोमिन ही पढ़कर समझ पाते हैं, और वे खासुलखास मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही दुनिया के सामने प्रकट करेंगे ।

दिया हुकम अपना, इन मोमिनों के साथ ।
रहे जबराइल वकील, जाके हके पकड़े हाथ ।।१६।।

प्रियतम अक्षरातीत ने अपने हुक्म की शक्ति भी इन मोमिनों को दी । धणी जिनको हाथ पकड़कर जगाना चाहते हैं, उनके पास जिब्रील (धणी का जोश) भेज देते हैं, जो इन्हें सत्य-असत्य की पहचान कराता रहता है ।

दई जाग्रत बुद्ध नूर की, सो फिरस्ता असराफिल ।
सो उडावे चौदे तबक को, पलक न होवे ढील ।।१७।।

इन्हें प्रियतम अक्षरातीत ने अक्षर की जागृत बुद्धि प्रदान की है, जिसे अश्राफील फरिश्ता कहा गया है । वह चौदह लोकों को अखण्ड कर देगा, एक क्षण की भी देरी नहीं होगी (विष्णु सहित समस्त जीवों को जागृत बुद्ध मिलने से वे ब्रह्मज्ञान समझ जायेंगे और तुरंत प्रलय हो जायेगा) ।

रूह अल्ला आए इन वास्ते, उतरे चौथे आसमान ।
किल्ली बका की ल्याईयां, खोल दे फिरकान ॥१८॥

ईसा रूहूल्ला (श्री श्यामा जी) चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से इन मोमिनों के लिये ही आये हैं, जो अखण्ड परमधाम के सुखों की चाबी (तारतम ज्ञान) लेकर आये हैं, जिससे कुर्आन आदि धर्मग्रंथो के रहस्य स्पष्ट कर दिये हैं।

इनों को जगावत जुगत सों, उपर बैठ तखत ।
किया वायदा इनों सों, फरदा रोज कयामत ॥१९॥

प्रियतम अक्षरातीत मूल मिलावे में सिंहासन पर विराजमान हैं और युक्ति पूर्वक उन ब्रह्मात्माओं को जगा रहे हैं और कुर्आन आदि धर्मग्रंथों के माध्यम से कियामत (आत्म जागृत) के दिन का वायदा किया है ।

इनों साएत अपनी, ठौर बका देखाई बुजरक ।
इनों को करी सिफाएत, इनों को दिया दिदार हक ॥२०॥

दिव्य परमधाम के उस समय को दिखा दिया, जहां हम विराजमान हैं । इन्हें अपना तारतम ज्ञान देकर सिफायत कर दी । जिनके द्वारा प्रियतम ने अपना दर्शन भी प्रदान कर दिया ।

करी आठों भिस्त इन वास्ते, तो पूजे इनों को बरहक ।
फानी को बका किए, ए तो मोमिन बुजरक ॥२१॥

आठों बहिश्तें (मोक्ष स्थान) इन मोमिनों के कारण ही अखण्ड की है, जिसमें अखण्ड होनेवाले समस्त प्राणी ब्रह्मात्माओं की पूजा करेंगे । वे मोमिन महान हैं, जिन्होंने नश्वर स्वप्नवत् जगत् को भी अखण्ड कर दिया ।

दिया ऐसा इशक अपना, इनों को परवरदिगार ।
सो क्यूं ना प्याले पीवहीं, जिनो का हक हादी सिरदार ॥२२॥

प्रियतम परब्रह्म ने इन मोमिनों को इस प्रकार (तारतम ज्ञान के द्वारा) अपना इश्क दिया है, किंतु वे मोमिन (वाणी मंथन व चितवन के द्वारा) उस प्रेम रस का पान क्यों नहीं करते हैं, जिनके प्राणाधार स्वयं श्री राजश्यामा जी हैं ?

तुम ही सूर संसार में, तुम ही धीरज धरनहार ।
तुम ही पीया इशक, तुम ही हक सो करो बिहार ।।२३।।

आप ब्रह्मात्माएं ही इस संसार के धर्मयोद्धा हो, आप ही धैर्यवान हो, आपने ही (परमधाम में) प्रियतम के प्रेमरस (स्वरूप, लीला) का पान किया है । आप प्रियतम धाम धणी के साथ परमधाम के २५ पक्ष में लीला विहार करो ।

एह गिरो रब्बानी मोमिनों, रहे जिकर मिने गरक ।
ए अरस परस अरस में, पिलावे साकी इनो को हक ।।२४।।

ये मोमिनों का समूह रब्बानी गिरोह (ब्रह्मसृष्टि) है, जो प्रियतम अक्षरातीत के जिक्र (चर्चा-चिंतन-ध्यान) में ही डूबे रहते हैं । इनका परमधाम में विराजमान स्वरूप (परात्म) प्रियतम परब्रह्म से ओत-प्रोत (एक स्वरूप) है । इन्हें स्वयं प्रियतम साकी बनकर प्रेमरस का पान कराते हैं ।

ए अरस में अरस इन में, एही नबुबत न्यामत ।
इनों की सिफत ना आवे हिसाब में, सब केहेनी रेहवे इत ।।२५।।

वे मोमिन परमधाम में रहते हैं और परमधाम की शोभा इनके दिल में बसी होती है । यही तो नबुवत की नैमत (ज्ञान का अधिकार) है । इनकी महिमा वर्णन से परे है । सारे शब्द इस माया में ही रह जाते हैं (परमधाम नहीं पहुंच पाते) ।

महामत कहे ए मोमिनों, हो आशक हक के तुम ।
दिया हक सुभान ने, तुमारे हाथ हुकम ।।२६।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आप ही प्रियतम अक्षरातीत (हक तआला) के आशिक हो । परब्रह्म स्वामी ने आपके हाथ में ही दुनिया को अखण्ड करने का हुक्म दिया है ।

प्रकरण ११२ चौपाई ३८४९

नूर दधि सागर शीतल

इस प्रकरण में दधि सागर का वर्णन है, जहां की सकल जोगबाई हरे रंग में झलकार कर रही है । दधि सागर के जल तथा उनमें आए टापू महल, एवम फूलों से युक्त रास्तों का सुन्दर वर्णन है । खिलौने किस तरह से युगल स्वरूप को रिझाते हैं, उसकी हल्की सी झलक है । ब्रह्मप्रियाओं का ऐश्वर्य बताया गया है, कि एक-एक सखी के करोड़ों-करोड़ों सेवक हैं, जो हर पल सेवा में हाजिर रहते हैं । दधि सागर के अपार सुख धाम धणी मेहर करके दे रहे हैं ।

नूर दधि शीतल, नूर पश्चिम दिश पूरन ।
ए सुख अतन्त हमेशां, नूर वाहिदत पूर रोशन ।।१।।

परमधाम की नूरमयी पश्चिम दिशा में नूरमयी शीतल दधि सागर विद्यमान है, जो श्री राजश्यामा जी के स्वरूप व श्रृंगार का सागर है, जिसे देखने पर हमेशां अनंत सुख व शांति की प्राप्ति होती है । श्री राजश्यामा जी के स्वरूप-श्रृंगार में एकत्व समाया हुआ है ।

पश्चिम दिश को देखिए, शीतल दधि सागर ।
है सबज रंग तिन का, सो भी नूर सुन्दर ।।२।।

परमधाम की पश्चिम दिशा में देखिये, वहां शीतलता से युक्त दधि का सागर लहरा रहा है । वह नूरमयी सुंदर हरे रंग का है ।

सबज रंग सब भोम हैं, हैं सबज वन दरखत ।
चार हार हवेली सबज, नूर मंदिर सबज दरखत ।।३।।

वहां की सम्पूर्ण धरती हरे रंग की है, वनों के वृक्ष भी हरे रंग के ही आये हैं। दधि सागर के भीतरी तरफ, जो छोटी रांग की चार हार हवेली आयी है, वे भी हरे रंग के हैं । छोटी रांग के मंदिर व वृक्ष सब हरे रंग में शोभायमान हैं ।

सबज दरखत दोरी बंध, सब रस्ते झलकत नूर ।
चांदनी बराबर शोभित, ए मोमिन करें सहूर ।।४।।

यहां हरे रंग के वृक्ष पंक्तिबद्ध रूप से आये हैं । इन वृक्षों के बीच आये रास्ते (रौंस) नूरमयी किरणों से जगमगा रहे हैं, जिनके ऊपर वृक्षों के डालियों की एक बराबर जगमगाती हुई चांदनी शोभायमान है । सुंदरसाथ उसका चिंतन

करें ।

एक एक हवेली मिने, मंदिर बारे हजार ।
बीच चौक पानी झलकत, हक हादी रूहें करें बिहार ।।५।।

छोटी रांग की प्रत्येक हवेली में १२-१२ हजार मंदिर हैं । उनके मध्य चौकों में पानी (चेहेबच्चे-फव्वारे) शोभायमान हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां लीला-विहार करते हैं ।

चार हार हवेलियां, दोरी बंध रस्ते चार ।
दोऊ बाजू रस्ते फूलन के, ए नूर मोमिन करें विचार ।।६।।

छोटी रांग की चार हार हवेलियों के मध्य चार रास्ते (नहरों से युक्त रौंस) आये हैं, जिनके दोनों तरफ फूलवाड़ी हैं, जिनके दायें-बायें रास्ते हैं । इस शोभा का सुंदरसाथ विचार करें ।

इन रस्ते हवेलियां, फिर आइए गृदवाए ।
रांग प्रदक्षिना दीजिए, हवेली रस्ते फिर आए ।।७।।

छोटी रांग की इन हवेलियों के मध्य रौंसों में आकर चारों तरफ घूम आईये । रांग की हवेलियों की प्रदक्षिणा देते हुए वापस उसी हवेली के सामने आ जाईये ।

कहूं आठों सागरों की, रांग रंग आठों नूर ।
जुदी भोम जवेरन की, सो क्यूं कहूं याको सहूर ।।८।।

अब आठों सागरों के चारों ओर आये बड़ी रांग की नूरमयी हवेलियों के रंग की शोभा कहूंगा। सभी सागरों की धरती अलग-अलग जवाहरातों के रंगों से शोभायमान है । उसकी शोभा का वर्णन किस प्रकार करें ।

इन हवेलियो बस्ती, रहे खेल खुसाली की शरत ।
एक एक रूहन के, कई कोट करें खिजमत ।।९।।

इन हवेलियों की बस्ती (महलों) में खेल खुशालियां (पशु-पक्षी, जो अनेक प्रकार से खेल करके सखियों को प्रसन्न करते हैं) रहते हैं । एक-एक सखी की सेवा कई करोड़ों पशु-पक्षी करते हैं ।

इत कई खिलौने खेलत, पशु पंखी सुखदाए ।
सबज रंग हैं तिनके, हक हादी रूहें रिझाए ।।१०।।

यहां सखियों के अनेक प्रकार के लाडले खिलौने सुखदायी पशु-पक्षी खेलते दिखायी देते हैं । वे सब भी हरे रंग के हैं । वे श्री राज श्यामा जी एवं सखियों को रिझाते हैं ।

कई भातों भेद वन की, आए आए मुजरा करत ।
ए आशक हैं हक के, धरे इशक सूरत ॥११॥

ये पशु-पक्षी वनों में कई प्रकार से आ-आ कर धणी के दर्शन-अभिवादन करते हैं । ये पशु-पक्षी प्रियतम परब्रह्म के आशिक एवं इश्क के ही स्वरूप हैं ।

कई सुख बैठक के, कई सुख बिछौने नूर ।
कई सुख भोम बिछौने, सो केहेनी क्यों कर कहूं जहूर ॥१२॥

यहां कई प्रकार के सुख बैठकों (छज्जों व चबूतरों) के हैं, कई सुख नूरमयी बिछौनों के हैं । कई सुख वनों की धरती पर आये कोमल दूब के बिछौनों के हैं, इनकी दिव्यता का वर्णन किस प्रकार करें ?

ए बीच या बका भोम में , बैठक हक हादी रूहन ।
बैठे छज्जे गोख चांदनी, एह केहेनी ना पोहोंचे मोमिन ॥१३॥

इन वनों के मध्य या रांग की हवेलियों के मध्य श्री राज श्यामा जी एवं सखियों की बैठक शोभायमान है । यहां छज्जों, गोख व चांदनी में जब वे विराजमन होते हैं, तो उस शोभा का वर्णन नहीं हो सकता है ।

इन दधि सागर दरियावों के, रांग में एक बड़ा है द्वार ।
तिन आगे चार चबूतरे, दोए पर दोए दरखत विस्तार ॥१४॥

इस दधि सागर के बड़ी रांग की हवेलियों में मध्य में एक बड़ा द्वार है, जिसके सामने कुल चार चबूतरे हैं । दो ऊपर मुख्य द्वार से लगते हुए (दायें-बायें) तथा दो सामने चांदनी चौक पर हैं, जिनमें लाल व हरे रंग के दो वृक्ष शोभायमान हैं ।

ए दरखत दोए दोरीबंध, दोए चबूतरों छहां भर नूर ।
मानों चंद्रवा जडाव ज्यूं, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥१५॥

ये दोनों वृक्ष एक सीध में हैं । इनकी डालियां चारों तरफ इस प्रकार फैली हैं, कि उनकी छाया सम्पूर्ण चबूतरे पर हो रही है । वृक्षों की डालियां, फूल

पत्ते आपस में मिलकर रत्नजड़ित चंद्रोवा के समान छत बना दिये हैं । उसकी शोभा किस प्रकार कहें ?

इत गृद फिरता कठेडा, जडाव ज्यों झलकत ।
तीन पगथी चौथी ऊपर, पानी ए कई जवेर इत ॥१६॥

चांदनी चौक के इन चबूतरों के चारों ओर किनार पर घेरकर कठेड़ा आया है, जो रत्नों के समान जगमगा रहा है । उसमें तीन सीढ़ियां हैं, चौथी सीढ़ी चबूतरे की होती है । यहां अनेक प्रकार के जवाहरात जगमगा रहे हैं ।

इत राज का सिंघासन, कुरसी बारे हजार गृदवाए ।
कई खिलौने आवत मुजरे, सो सुख क्यूं कर कहूं जुबाए ॥१७॥

इस चबूतरे पर श्री राजश्यामाजी का सिंहासन है, साथ में सखियों के लिये १२,००० कुर्सियां सिंहासन की चारों तरफ हैं । यहां अनेक प्रकार के पशु-पक्षी धणी के दर्शन करने आते हैं । उस सुख का इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करें ?

दोए चबूतरे ढिग रांग के, शोभित बाजू दोए ।
ता पर मुनारे नूर के, है रांग बराबर सोए ॥१८॥

शेष दो चबूतरे रांग की हवेलियों के मुख्य द्वार से लगकर उसकी दायीं व बायीं तरफ आये हैं । जिसके ऊपर के भोमों में एक के ऊपर एक छज्जे (झरोखे) आते गये हैं, जो नूरमयी मीनारों (चौरस गुर्ज) के रूप में बड़ी रांग की चांदनी तक गये हैं ।

मिने चढती चढती मोहोलाएत, नूर छज्जे कठेडे गृदवाए ।
बीच बैठक कचेरियां, अति शोभा सुन्दर सुखदाए ॥१९॥

महलों (हवेलियों) के ऊपर महल (ऊपर के भोमों में) आते गये हैं । द्वार के चबूतरों के ऊपर नूरमयी छज्जे व उसके किनारे कठेड़े आते गये हैं । यहां कचहरियों के रूप में बैठक की शोभा बनी हुयी है, जो अत्यंत सुंदर व सुखदायी है ।

बडो विस्तार मुनारों मिने, जवेर पन्ना नूर ।
शोभा सुन्दरता इन की, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥२०॥

इन मीनारों (चौरस गुर्जो) का बहुत विस्तार है । इसमें नूरमयी पन्ना के जवाहरात जड़े हुए हैं । इनकी शोभा व सुंदरता के विषय में किस प्रकार

वर्णन करें ?

बड़े दरवाजे पैठिए, बाजू इत दरवाजे दोए ।
तहां बारे हजार मंदिर हैं, बिन मोमिन न जाने कोए ॥२१॥

जब रांग की हवेलियों के बड़े दरवाजे से प्रवेश करते हैं, तो दरवाजे के दोनों तरफ ये चबूतरे आये हैं । दरवाजों से अंदर प्रवेश करने पर ६-६ हजार नूरमयी मंदिरों की दो पंक्तियां दिखायी देती हैं (जिनके भीतरी तरफ १२ हजार महलों की १२ हजार पंक्तियां शोभायमान हैं), जिसकी शोभा को सुंदरसाथ के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता है ।

इन दधि सागर देखिए, चारों तरफों मोहलात ।
सबज रंग तहां झलकत, कही जाए न सुपन में बात ॥२२॥

सुंदरसाथ जी ! इस दधि सागर की शोभा देखिये, इसकी चारों तरफ बड़ी रांग की हवेलियां हरे रंग की आभा से जगमगा रही हैं । उसका वर्णन स्वाप्निक जगत् में सम्भव नहीं है ।

और बारे बारे हजार, बाएं दाएं द्वार ।
यूं चारों तरफों रांग के, हक हादी रूहें करें बिहार ॥२३॥

सागर की दायीं व बायीं तरफ (दो दिशा में) हवेलियों के १२-१२ हजार द्वार दिखायी देते हैं । इसी प्रकार सागर के चारों तरफ रांग की हवेलियों में श्री राज श्यामा जी एवं सखियां लीला विहार करते हैं ।

इन दधि सागर शीतल में, कई सुखकारी सुख चैन ।
कई मोहोल देखन के, अति सुख पावत नैन ॥२४॥

शीतलता से युक्त इस दधि सागर में अनेकों सुख व आराम भरे हैं । अनेको दर्शनीय महल हैं, जिन्हें देखकर नेत्रों को आनंद की अनुभूति होती है ।

कई स्वाद रस फल में, देत रसना सुख ।
कई सुख आशक पावे, देखे नूरजमाल का मुख ॥२५॥

यहां के फलों में कई प्रकार के रस व स्वाद हैं, जो जिह्वा को सुख प्रदान करते हैं । कई सुख यहां आशिक रूहें प्रियतम अक्षरातीत का सुंदर मुखारविंद देखकर पाती हैं ।

जो सुख इन सागर में, सो तो सागर समान ।
ए हक हादी रूहें जानहीं, जाको देवे हक सुभान ।।२६।।

इस दधि सागर में जो सुख है, वह तो सागर के समान अनंत है । इन सुखों को श्रीराजश्यामा जी एवं सखियां ही जानते हैं, जिन्हें प्रियतम श्री राज जी ये सुख प्रदान करते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए दधि सागर कह्या तुम ।
कर मेहेर तुमें सुनावत, भेज के अपना हुकम ।।२७।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह आपके समक्ष दधि सागर का वर्णन किया है । धाम धणी कृपा करके अपना हुक्म भेजकर आपको सुना रहे हैं ।

प्रकरण ११३ चौपाई ३८७६

नूर पश्चिम दिश पूरब

इस प्रकरण में परमधाम की पश्चिम व पूर्व दिशा का विस्तृत वर्णन कर रहे हैं। परमधाम की संपूर्ण धरती हक श्रीराज जी के आशिक खिलौनों (पशु-पक्षियों) से आबाद है, जिनके दिल में हर पल यही आशा रहती है, कि मैं अपने प्रियतम श्रीराज जी को प्रसन्न करूं ।

नूर जिमी अरस की, दिश पश्चिम पूरब ।
ए वाहेदत अरस अजीम की, सब ठौर नूर रोशन ।।१।।

परमधाम की धरती नूरमयी है, चाहे वह पूर्व हो या पश्चिम । यह परमधाम (अर्शे आज़म) की स्वलीला अद्वैत भूमिका है, जहां सर्वत्र खुदा का नूर (परमात्मा का दिव्य प्रकाश) ही जगमगा रहा है ।

एह भोम है चेतन, पांचों तत्व प्रकाश ।
एक जरा इन जिमी का, ताकी जोत न माए आकाश ।।२।।

परमधाम की भूमिका चेतन स्वरूप (सच्चिदानंद) है । यहां के पांचों तत्व प्रकाशमयी हैं । यहां की धरती के एक कण में भी इतना प्रकाश है कि वह आकाश (रिक्त स्थान) में नहीं समा पाता ।

अरस जिमी जो बस्ती, सो सरूप सब इशक ।
सदा याद चितवन में, रहे जिकर मे गरक ।।३।।

परमधाम की धरती में जो भी बस्तियां हैं, इनमें रहने वाले पशु-पक्षी सभी इश्क के ही स्वरूप हैं । वे सदैव प्रियतम श्रीराजजी की याद में, ध्यान में व चर्चा (गुणगान) में ही मग्न रहते हैं ।

एही उमेद इनों को रहे, हम रिझावे रेहेमान ।
कई भांतो खेल खेलावहीं, रहे पूरी पेहेचान ।।४।।

उन पशु-पक्षियों के हृदय में एक मात्र यही चाहना रहती है, कि हम प्रियतम स्वामी को रिझायें । वे इस हेतु से धणी के समक्ष अनेक प्रकार से खेल-तमाशे करते हैं । उनके हृदय में धणी की पूरी पहचान रहती है ।

जुदे जुदे रंगों जानवर, जुदे भाषा जुदे बोल ।
इन का निमूना इन जिमी, कोई नाही इन के तोल ।।५।।

ये पशु-पक्षी अलग-अलग अनंत रंगों के हैं, अलग-अलग भाषायें (बोली) बोलते हैं । इनकी तुलना में इस झूठे संसार में कोई उदाहरण नहीं है ।

रंग सबज हैं जानवर, पशु पंखी सबज हैं जात ।
कई पातसाईया गिरद, इन हवेलियों की मोहोलात ।।६।।

पश्चिम दिशा में हरे रंग के पशु-पक्षियों की अनेकों प्रजातियां विद्यमान हैं । वे इन हवेलियों के महलों के चारों तरफ (वनों में) हैं, अनेकों साम्राज्य रांग की भोमों में हैं । यह अखण्ड परमधाम की धरती है, जअनेक प्रकार से राज्य करते हैं ।

कई बस्ती लग रांग के, कई पातसाइया भोम तरफ ।
ए बका ठौर हक जात की, सो कह्यो न जाए एक हरफ ।।७।।

पशुओं की अनेकों बस्तियां रांग की हवेलियों से लगकर (वनों में) हैं, अनेकों साम्राज्य रांग की भोमों में हैं । यह अखण्ड परमधाम की धरती है, जहां राजजी के ही स्वरूप रहते हैं । इनकी शोभा में एक शब्द भी कहना सम्भव नहीं है ।

दोए सागर बीच जिमी कही, दोए जिमी बीच सागर पुर ।
कई वन इन जिमी मिने, याको नाहीं निमूना पटन्तर ।।८।।

प्रत्येक दो सागरों के मध्य एक जिमी (घना जंगल) है, और प्रत्येक दो जिमी के मध्य एक सागर शोभायमान है । इन जिमीयों में बहुत से वन हैं, जिसकी तुलना में संसार में कोई उदाहरण नहीं है ।

रस्ते सब दोरी बंध, कई फल फूल मेवे नूर ।
कई स्वाद रस तिन के, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।९।।

यहां (जिमी में) सभी रास्ते पंक्तिबद्ध रूप से एक सीध में आये हैं । यहां वनों में अनेक प्रकार के नूरमयी फल, फूल और सुखे मेवे के वृक्ष शोभायमान हैं । इन फलों में अनेक प्रकार के रस व स्वाद हैं । इनकी शोभा किस प्रकार कहें ?

कई प्रेमलता फूलन में, कई प्रेमल पात दरखत ।
फल प्रेमलता देत हैं, सो कही न जाए सिफत ।।१०।।

यहां के फूलों में कई प्रकार की सुगंधि है, कई प्रकार की सुगंधि पत्तों व वृक्षों में है । फल भी कई प्रकार से सुगंध देते हैं, उसकी शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

इन रस्ते दोरी बंध, चौक चारों तरफ शोभाए ।
कई तहां बिछौने बैठक, जित हक हादी देखन जाए ।।११।।

यहां अनेकों रास्ते पंक्तिबद्ध रूप से आये हैं, जिनके मध्य चारों तरफ अनेकों चौक (बैठकें) शोभायमान हैं । उन चौकों में, बैठकों में अनेकों बिछौने बिछे हैं, जहां श्री राज श्यामा जी व सखियां जिमी की शोभा देखने जाती हैं ।

कई रूप रंग कर रिझावहीं, कई प्रेमलता सुखदाए ।
कई परस्पर सुख देत हैं, ए वन सदा चेतनताए ।।१२।।

यहां अनेक प्रकार के पशु-पक्षी कई प्रकार से रंग-रूप धारण करके धणी को रिझाते हैं । कई प्रकार के सुख इनके तनों से निकलने वाली सुगंध में हैं । वे पशु आपस में भी एक-दूसरे को सुख प्रदान करते हैं । यह वन सदा ही चेतनता से परिपूर्ण है ।

कई सूर सोहामने पशु, पंछी वन में करें गान ।
कई सुख श्रवना होत हैं, सो आवत नाहीं जुबान ।।१३।।

पशु-पक्षी अनेक प्रकार की सुहावने मधुर स्वर निकालते हुए वन में पिया के गुणगान करते हैं । जिन्हें सुनकर बहुत आनंद होता है, जिसका वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

जब हक हादी रूहें खेलहीं, इन दोऊ सागरो दरम्यान ।
मोहोल दोऊ बाजु शोभित, ए रहे मोमिन को पेहेचान ।।१४।।

जब श्री राज श्यामा जी एवं सखियां दो सागरों के मध्य जिमी में खेलते हैं, तो इसकी दोनों तरफ (दायें-बायें) महल (बड़ी रांग की हवेलियां) शोभायमान दिखती हैं । इसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिल में रहती है ।

चारों तरफों मोहोल सागर के, तिन में कहे जो दोए ।
सो आए जिमी के तरफ, वन तले शोभित हैं सोए ।।१५।।

प्रत्येक सागर की चारों तरफ बड़ी रांग की हवेलियां शोभायमान हैं । उनमें से दो तरफ (दायें-बायें) की हवेलियां जिमी की तरफ आयी हैं । हवेलियों के भोम भर ऊंचे चबूतरे के सामने नीचे वनों (बगीचों) की शोभा है ।

एक मोहोल छज्जे दरबार पर, दूजी जिमी तरफ को आए ।
इन छज्जो बन आए लगा, ए हक बैठक सुखदाए ।।१६।।

इन हवेलियों के मुख्य द्वारों के चबूतरों के छज्जे दो तरफ आये हैं । एक तो सागरों की तरफ आये हैं, दूसरे जिमी की तरफ आये हैं । इन छज्जों से सामने आये वनों की डालियां मिली हुयी हैं । इस प्रकार इस सुखदायी बैठक की शोभा है ।

इत सागर समान वन हैं, सागर समान है सुख ।
हक हादी रूहें सनमुख, देखे नूरजमाल का मुख ।।१७।।

यहां जिमी में सागर के समान ही (उतनी ही लम्बी-चौड़ी जगह में) वन आये हैं, जिनके सुख भी सागर के समान हैं । जब श्री राज श्यामा जी एवं सखियां यहां आते हैं, तब सखियां प्रियतम धामधणी का सुंदर पुलकित (कमल के समान खिला हुआ) मुख देखकर अत्यंत प्रसन्न होती हैं ।

बैठ के जब बातां करें, काढे अति कोमल मुख बैन ।
हेत हंस हंस रिझावहीं, कई सुख लेत मुख बैन ।।१८।।

जब श्री राज श्यामा जी व सखियां यहां बैठकर बातें करते हैं, तब सखियां अपने मुख से अत्यंत कोमल व मधुर वाणी निकालती हैं । प्रेमपूर्वक हंस-हंस कर धणी को रिझाती हैं । कई प्रकार से धणी के मीठे वचनों के सुख यहां लेती हैं ।

मेहेर कर के रीझते, कई हेत देखावे नैन ।
कई परस सुख देत हैं, कई सुख उपजावे कर सैन ।।१९।।

धणी भी कृपा करके उन पर प्रसन्न हो जाते हैं, और अपने नैनों से कई

प्रकार से प्रेम प्रदर्शित करते हैं । इस प्रकार कई सुख आपस में एक दूसरे को स्पर्श करके देते हैं । कई सुख राजजी आंखों से प्रेम भरे इशारे करके प्रदान करते हैं ।

हक नैनों के सिंचेल, ए सब माफक हक ।
पर ए कहे रूह सुख पावत, और हक हुकम देत इशक ।।२०।।

वे प्रियाएं राजजी के नैनों के प्रेमरस से सिंचित हैं । वे सब राजजी के ही स्वरूप हैं। उसका वर्णन करने से आत्मा को सुख मिलता है और राजजी का हुक्म भी उन्हें इश्क प्रदान करता है ।

मीठास इशक केहेनीअ का, जानत रूह मोमिन ।
या हक हादी जान हीं, जिन मेहेर करी रोशन ।।२१।।

परमधाम की इश्कमयी मधुर लीलाओं का वर्णन सुनने से जो सुख मिलता है, उसे ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं, या श्री राज श्यामा जी जानते हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारे हृदय में ज्ञान का प्रकाश किया है ।

इतहीं रमे रूहें मोमिन, इत हीं पाऐ आराम ।
एही श्रवनों सुख उपजे, होए पूरे याही से मनोरथ काम ।।२२।।

वे मोमिन रूहें यहीं परमधाम के २५ पक्षों में (ध्यान के द्वारा) रमण करती हैं । यहीं इन्हें शाश्वत सुख-शांति मिलती है । परमधाम की वाणी सुनने से ही इन्हें सुख मिलता है । इसी से इनका (माया जगत् में आने का) उद्देश्य (आत्मिक इच्छाएं) पूर्ण होना है ।

महामत कहे ए मोमिनों, एह तुमारी बीतक ।
होत पल पल मेहेर तुम पे, करत सुभान हक ।।२३।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह आप ही की अपनी बातें हैं । आपके ऊपर प्रियतम अक्षरातीत पल पल कृपा कर रहे हैं ।

प्रकरण ११४ चौपाई ३८९९

ए सुख अतीत हमेशा

इस प्रकरण में श्रीराजजी, सब सुन्दर साथ को आहवान कर रहें हैं, कि अखंड परमधाम के सुख आपके लिए हैं और आपके लिए इस नासूत जमीन (मृत्युलोक की धरती) पर परमधाम के सुखों का वर्णन हुआ है । आप ही परमधाम के पच्चीस पक्षों के सुख ले सकते हो । अतः अपनी सुरता को

परमधाम की ओर ले चलिए और चितवनि द्वारा श्रीराजजी के संग पच्चीस पक्षों में विहार कीजिए ।

ए सुख मोमिन मरातब, जो बका हमेशा ठौर ।
ए हिसाब ना आवहीं, तो क्यूं कर जाने कोई और ।।१।।

परमधाम के ये सुख ब्रह्मात्माओं का ऐश्वर्य हैं, जो अनादि काल से अखण्ड परमधाम में प्रियतम अक्षरातीत के साथ रहती हैं । परमधाम के सुख अनंत हैं, हिसाब से परे हैं, तो ब्रह्मप्रियाओं के अतिरिक्त उन सुखों के विषय में अन्य कोई कैसे जान सकता है ?

और केहे होत है दूसरा, तब तो आवत शिरक ।
है तो नाहीं दूसरा, बिना हादी रूहें हक ।।२।।

परब्रह्म के अतिरिक्त अन्य कोई है, ऐसा कहें तो शिर्क (बहुदेववाद) का गुनाह लगता है । श्री राज श्यामा जी एवं ब्रह्मप्रियाओं के अतिरिक्त अन्य कोई भी नहीं है ।

और सूरत नूर जलाल की, सो तो हक के अंग ।
एह है एकै वाहिदत, रहत हमेशां संग ।।३।।

और जो अक्षर धाम में अक्षर ब्रह्म रहते हैं, वे भी परब्रह्म के ही सत्ता के स्वरूप हैं । वे भी परब्रह्म के अद्वैत स्वरूप (वहदत) के अंतर्गत हैं, जो कि हमेशां ही परमधाम में रहते हैं ।

बिछोहा इन जिमी मिने, ना कछु इन दरम्यान ।
हक हादी नूर रूहन की, जाने एकै सूरत निदान ।।४।।

परमधाम की स्वलीला अद्वैत भूमिका में इन स्वरूपों के बीच किसी प्रकार की जुदायी नहीं है । श्री राज जी श्यामा जी व दिव्य सखियों का एक ही स्वरूप है ।

एक ही ठौर बसत हैं, सब इनकी सूरत एक ।
ए वाहेदत अरस की, अपना दिल देखावे अनेक ।।५।।

सभी एक साथ एक ही जगह रहते हैं । सभी एक श्री राजजी के ही अद्वैत स्वरूप हैं । यह परमधाम की वहदत (एकत्व) है कि एक होते हुए भी श्री राजजी का दिल ही अनेकों रूपों में दिखायी देता है ।

आप विहार करत हैं, आप हीं भांत भी दोए ।
आप विहार रूहन सों, करत हैं इत सोए ।।६।।

आप श्री राजजी ही सर्वत्र विहार करते हैं । आप प्रियतम अक्षरातीत

स्वयं ही श्यामा जी के रूप में भी लीला करतें हैं । आप ही सखियों का रूप धर के उन के साथ यहां परमधाम में विहार करते हैं ।

आप नूर नजर से, कैं कोट इंड पैदाश ।
पल फिरत फना करें, करें ऐसे नित विलास ।।७।।

आप ही अक्षर ब्रह्म के रूप में अपनी नजरों के इशारे मात्र से कई करोड़ों ब्रह्माण्ड प्रकट कर देते हैं और पलक झपकने के साथ ही उनका प्रलय कर देते हैं । ऐसे विलास (आनंद) नित्य प्रति करते हैं । (अक्षर ब्रह्म जागृत अवस्था में हमेशां जगत् बनाते व मिटाते हैं, इसलिये उन्हें दुःख नहीं होता है, बल्कि आनंद होता है ।)

बड़े बुजरक कहावें, खेल खावंद त्रैगुन ।
ए सब सेवे खेल में, याही के गावे गुन ।।८।।

चौदह लोकों के स्वामी त्रिगुण प्रधान देव ब्रह्मा, विष्णु व महेश इस संसार में बहुत महान् कहलाते हैं । संसार के सभी प्राणी इन्हीं की सेवा व गुणगान करते हैं ।

कोई जोरा करें खेल का, सो त्रैगुन उलंघ जाए ।
सुंन निराकार निरंजन, तहां जाए समाए ।।९।।

कोई निराकार का ज्ञान प्राप्त करके उसकी गहन साधना करता है, तो वह वैकुण्ठ तो पार कर लेता है । किंतु शून्य-निराकार-निरंजन (अवयव से रहित-मोह सागर) में जाकर लीन हो जाता है ।

एक अक्षर की वासना, सो सबद काढ़े निराकार पार ।
सो अक्षर को ठेहेरावहीं, पर पार ना खुले द्वार ।।१०।।

एकमात्र अक्षर ब्रह्म की पंचवासनायें ही निराकार से परे का ज्ञान कहती हैं। वे अक्षरब्रह्म को ही परमात्मा कहती हैं, किंतु वे भी बेहद मण्डल से परे नहीं जा पाती हैं ।

ऐसे रवेस सबे कहें इन ऊपर किन के लेऊ नाम ।
सब नींद तले रहें, नींद है तिनके ठाम ।।११।।

ऐसे स्थिति सभी की है, त्रिदेवों के पश्चात् अन्य किसका नाम लें ? सारी दुनिया अज्ञानता में डूबी पड़ी है, नींद-निराकार ही उनका उद्गम स्थान है।

अब कहूं ब्रह्म सृष्ट की, जो खासल खास उम्मत ।
जिन वास्ते इशक किया, नींद दई नूर को जित ।।१२।।

अब ब्रह्मसृष्टि के विषय में कहूंगा, जिसे खासुलखास उम्मत (अतिविशेष समूदाय) कहा गया है । जिनके लिये श्रीराजजी ने प्रेम पूर्वक यह संसार बनाया और अक्षरब्रह्म को फरामोशी रूपी निद्रा दी ।

जिन वास्ते ब्रज रास किये, ब्रह बिलास देखाए सुख ।
दोए ब्रह्माण्ड प्रले करें, फिर किये नूर जमाल सनमुख ।।१३।।

उन ब्रह्मसृष्टियों के लिये ही श्रीराजजी ने ब्रज व रास की लीला की है और उन्हें विरह-विलास दिखाकर सुख प्रदान किये हैं । तत्पश्चात् काल माया व योगमाया दोनों ब्रह्माण्डों का लय करके इन्हें परमधाम मूलमिलावे में जागृत किया।

लेहेजे दोनों इण्ड कायम किये, वास्ते इन मोमिन ।
एक चित ग्रह्या ब्रज को, ग्रह्या बुध रास रोशन ।।१४।।

दोनों ब्रह्माण्ड ब्रह्मात्माओं के लिये ही अखण्ड किये हैं । इनमें से एक ब्रज लीला को अक्षर ब्रह्म ने अपने चित्त में ग्रहण किया है और दूसरी रास लीला को अपनी बुद्धि में ग्रहण किया है।

तीसरे मन पैदा किये, ए जो चौदे तबक ।
आया रसूल तिन में, लिखे कलाम अल्ला हक ।।१५।।

तत्पश्चात् पुनः १४ लोकों से युक्त यह तीसरा ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म के मन से पैदा किया । उसमें रसूल साहब अल्लाह के लिखे कलाम (कुर्आन पाक) लेकर आये ।

इन मोमिन के वास्ते, भेजा अपना हुकम ।
जोस जबराईल संग दिया, ब्रह्म सृष्ट देखे खेल खसम ।।१६।।

इन ब्रह्मात्माओं के लिये ही श्री राजजी ने अपना हुक्म भेजा है । अपना जोश (जिब्रील) भी उन्हें प्रदान किया है । इस प्रकार ब्रह्मसृष्टियां प्रियतम अक्षरातीत द्वारा रचित माया जगत् की लीला देख रही हैं ।

(यहाँ से पाँच शक्तियों का वर्णन शुरू हो जाता है । यहाँ हुक्म व जोश दो शक्ति बता दी गई है ।)

रूहअल्ला आए इन वास्ते, उतरे चौथे आसमान ।
बुध जाग्रत अक्षर की, भेजी संग सुभान ।।१७।।

ईसारूहूल्ला (श्यामाजी) चौथे आसमान लाहूत (परमधाम) से इन्हीं के कारण आयी हैं । अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि भी प्रियतम अक्षरातीत ने उनके

साथ भेज दी है । (यहाँ हुक्म व जाग्रत बुद्धि के रूप में अन्य दो शक्तियों का जिक्र हो गया है ।)

किल्ली कलाम अल्लाह की, कुंजी तारतम नूर ।
आए इमाम इन वास्ते, जाहेर किया जहूर ॥१८॥

कलाम अल्लाह कुर्आन के रहस्यों को स्पष्ट करने की चाबी नूरमयी तारतम ज्ञान भी इन्हें श्री राजजी ने प्रदान किया है । इमाम महदी साहिबुज्जमां (बुद्ध निष्कलंक स्वरूप) भी इन्हीं मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के लिये आये हैं, जिन्होंने कुर्आन आदि धर्मग्रंथो के रहस्यों को दुनिया में जाहिर किये हैं । (यहाँ पांचवी शक्ति के रूप में नूरमयी तारतम ज्ञान का वर्णन किया है । इस प्रकार पांचों शक्तियों में हुकम, जोश, श्यामाजी, जाग्रत बुद्धि व तारतम ज्ञान निश्चित होता है ।)

और भिस्तें इन वास्ते, उठाई हक सुभान ।
महंमद ने सिफाएत करी, सब दई मोमिन पेहेचान ॥१९॥

हक सुब्हान तआला (प्रियतम अक्षरातीत) ने इन मोमिनों के कारण ही आठों बहिश्तें खड़ी की हैं । मुहम्मद स.अ.व. (हकी सूरत) ने इन मोमिनों की सिफायत करके इन्हें सारा ज्ञान प्रदान किया है ।

सब के खुदा इनको किये, पूजे आठों भिस्ते कर हक ।
सब सेवा इनकी करें, इनों बड़ा घर इशक ॥२०॥

उन ब्रह्मात्माओं को बहिश्तों में अखण्ड समस्त जीवों के परमात्मा बना दिया । आठों बहिश्तो के जीव उन ब्रह्मात्माओं को परमात्मा के रूप में पूजेंगे और सेवा करेंगे । उन ब्रह्मात्माओं का मूल घर इश्कमयी परमधाम है ।

नूरे चाह्या दिल में, इन मोमिन का दीदार ।
इन के सुख केते कहूं, इशक जाने परवरदिगार ॥२१॥

अक्षर ब्रह्म ने अपने दिल में इन्हीं ब्रह्मात्माओं के दीदार की इच्छा की थी। उन मोमिनों के सुखों का कितना वर्णन करूं? प्रियतम परब्रह्म ही उनके प्रेम के सुखों को जानते हैं ।

बका कायम घर इनों को, जो चेतनता सब नूर ।
सब सच्चिदानन्द रूप हैं, सो क्यूं कर कहूं जहूर ॥२२॥

उन ब्रह्मात्माओं का अखण्ड घर परमधाम है, जो कि नूरमयी व चेतनता से परिपूर्ण है । वहाँ का कण कण सच्चिदानंद स्वरूप है । उसकी शोभा किस प्रकार कहें?

इत कै मोहोल जवेरन के, बीच गृद श्रीधाम ।
एक हीरा चेतन एक रस, रूहें सुख सेज इस ठाम ॥२३॥

यहां परमधाम के बीच में और चारों ओर कई नूरमयी जवाहरातों के महल हैं । एक हीरे के चेतन व एकरस (एक समान शोभा से युक्त) महल हैं, जहाँ ब्रह्मप्रियाओं की सुख शैय्या विद्यमान है ।

कै गृद मोहोल वन के, कै बैठक नूर चेतन ।
कै मेवे तिन में रहे, ले ए सुख रूहें रोशन ॥२४॥

रंगमहल की चारों ओर कई प्रकार के वन हैं । जिनमें कई प्रकार की नूरमयी व चेतन बैठकें शोभायमान हैं । इन वनों में कई प्रकार के मेवे भी विद्यमान हैं । इन सुखों को ब्रह्मात्माएँ ही प्राप्त करती हैं ।

कै सुख चारों वन के, कै मोहोल सुख पुखराज ।
कै टापू मोहोल रमन के, रूहें सुख लेत संग राज ॥२५॥

रंगमहल की उत्तर दिशा में स्थित चारों वनों (बड़ोवन, ताड़वन, मधुवन, महावन) के कई प्रकार के सुख हैं । कई सुख पुखराज पहाड़ के महलों में रमण करने के हैं । कई सुख सागरों के टापूमहलों में हांस-विलास करने के हैं, जो ब्रह्मप्रियाएं प्रियतम श्री राज के साथ लेती हैं ।

कै तलाब हौज जोए के, मूल जमुना बंगले सुख ।
हक हादी रूहें रमे, देखे नूर जमाल का मुख ॥२६॥

कई सुख हौज कौसर तालाब में रमण करने के हैं । कई सुख यमूना जी के मूल कुण्ड व बंगलों के हैं, जहां श्री राजश्यामा जी एवं सखियां रमण करते हैं, तब सखियां श्री राज जी का अद्वितीय रूप से सुंदर दिव्य मुखारविंद की शोभा देखकर आनंदित होती हैं ।

कै मोहोल कुण्ड ढांपे खुले, मिने कै सुख हिंडोले होए ।
कै सुख सातों घाट में, रूहें खेले सदा सुख होए ॥२७॥

कई सुख ढपी यमूना जी व खुली यमूना जी के महलों (पाल पर आये दहलानों) के हैं । आगे एक महल व एक चबूतरा आये हैं, जिनके हिण्डोलों में कई सुख लेते हैं । कई सुख सातों घाटों में भी विद्यमान हैं, जहां सखियां हमेशा ही खेल–रामतें करके आनंद प्राप्त करती हैं ।

जमुना कुंज वन रेतीय के, जित मुकाबिले बड़े मरोड़ खाए ।
आए समानी तलाब मिने, सो तो सदा सुखदाए ॥२८॥

यमूना जी के किनारे आये कुंजवन व रेती रमण भी अनंत सुखदायी हैं

। अग्नि कोण में आकर यमूना जी पश्चिम दिशा में मुड़ जाती हैं और आगे जाकर हौज कौसर तालाब में समा जाती हैं, जो कि सदा ही आनंददायी रहता है ।

कै सुख नेहरों के फुहारे मिने, कै सुख मानिक पहाड़ बीच नूर ।
कै सुख तलाब ऊपर के, कै सुख हिंडोले जहूर ।।२९।।

कई सुख जवेरों की नहरों में फव्वारों के हैं । कई सुख नूरमयी माणिक पहाड़ के अंदर हैं । कई सुख माणिक पहाड़ की चांदनी में आये ताल के हैं । कई सुख यहां के बड़े हिण्डोलों में हैं (जिनमें बारह हजार सखियां एक साथ झूलती हैं)।

कै सुख गृद तालाब के, मोहोल मंदिर तहां अपार ।
कै नेहर वन जिमी मिने, सब मोमिन लेवनहार ।।३०।।

कई सुख माणिक पहाड़ के चारों तरफ आये तालों और उसके चारों तरफ आये महलों व मंदिरों के हैं । कई सुख वन के महलों में आये नहरों के हैं । ये सब सुख लेने वाली ब्रह्मात्माएँ हैं ।

कै सुख हवेली हार के, कै सुख रांग मोहोलाइत ।
कै सुख आठों सागर, सो कही न जाए बात ।।३१।।

कई सुख चार हार हवेली (छोटी रांग) के हैं । कई सुख बड़ी रांग की गगनचुम्बी हवेलियों के हैं । कई सुख आठों सागरों के हैं, जहां का वर्णन करना सम्भव ही नहीं है ।

कै सुख टापू रांग बराबर, ए केहेत न आवे पार ।
जित हक हादी रूहें रमें, ए सब मोमिन करें विचार ।।३२।।

कई सुख टापू महलों के हैं, जिनकी ऊंचाई रांग की महाहवेलियों के बराबर है, जिसकी शोभा अकथनीय व अपरम्पार है । जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां रमण करते हैं । उसके विषय में सुंदरसाथ विचार करें ।

महामत कहे ए मोमनों, तुम हो हक की जात ।
हुकम हक सुभान का, करी तुमारी सिफात ।।३३।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आप ब्रह्मात्माएँ, परब्रह्म के ही स्वरूप हो । प्रियतम परब्रह्म के हुक्म से आपके तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ है ।

नूर वाहिदत पुर रोशन ।

इस प्रकरण में परमधाम की नूरमयी धरती का वर्णन है । परमधाम की धरती नूरमयी, चेतन, एकरस, सुगंधित, कोमल और सदैव सुखदायी है । परमधाम के नूर (दिव्य प्रकाश) का वर्णन इस जिह्वा से नहीं हो सकता है । उन ब्रह्मप्रियाओं के सुखों का वर्णन किस प्रकार हो सकता है, जिन्हें स्वयम् श्रीराजजी प्रेमपूर्वक सुख देते हैं ? उन्हीं ब्रह्मात्माओं के लिए श्रीराज जी ने इस माया जगत् में परमधाम का विस्तृत वर्णन करवाया ताकि उनकी आत्माएं उसका सुख ले सकें ।

ए जिमी सब नूर की, सदा चेतन सुखदाए ।
अद्वैत है एक रस, जो वाहेदत केहेलाए ।।१।।

परमधाम की सम्पूर्ण भूमिका नूरमयी, चेतन व सदा सुखदायी है, अद्वैत तथा एकरस है, जिसे वहदत कहा गया है ।

एह पुर रोशन अरस में, नाहीं जिमी नूर पार ।
जित हक हादी रूहें, नित करत बिहार ।।२।।

परमधाम में चारों ओर परब्रह्म का दिव्य प्रकाश ही जगमगा रहा है । यहां की धरती के नूर का कोई पारावार नहीं है । यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां नित्य ही प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं करते हैं ।

इत नूर वाहिदत की, क्यूं कर करूं सिफत ।
एह तो केहेनी सुपन की, क्यों पोहोंचे बका ठौर तित ।।३।।

यहां की नूरी वहदत (एकात्मता-एकदिली) की महिमा किस प्रकार कहें? ये तो स्वाप्निक जगत् के शब्द हैं, वे उस अखण्ड परमधाम में किस प्रकार पहुंच सकते हैं ?

जिमी नूर पुर वाहिदत, सब पुर एक रस इशक ।
सब पुरन सवाद में, सब हक के दिल माफक ।।४।।

यहां की धरती वहदत के नूर (अद्वैत स्वरूप) से ओतप्रोत है । सबके अंदर एक समान रूप से (एकरस) इश्क समाया है। सभी के अंदर पूर्ण आनंद है । यह सब कुछ श्री राजजी के हृदय के अनुसार शोभायमान है ।

एक एक चीज वाहिदत में, सब गुन राखे पूरन ।
सब सुख एक ठौर पाइए, ताको क्यूं कहूं नूर रोशन ।।५।।

स्वलीला अद्वैत परमधाम में प्रत्येक वस्तु सभी गुण रखते हुए

पूर्णातिपूर्ण है। एक ही वस्तु से सारे सुख मिल जाते हैं, उस दिव्यता का किस प्रकार वर्णन करें?

जड़ता भाव न पाइये, जिमी एक रस नूर ।
हीरा जोत सब झलकत, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।६।।

सम्पूर्ण धरती एकरस व नूरमयी है, कहीं भी किसी भी वस्तु में जड़ता (आलस्य, नासमझी) का भाव नहीं है । सभी जगह रंगबिरंगे हीरे की ज्योति जगमगा रही है । उसकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करें ?

पार ना इन जिमी का, वृक्ष बेली नाहीं पार ।
सब चेतन रस पूरन, बिन मोमिन ना खोले द्वार ।।७।।

परमधाम की धरती की कोई सीमा (अंत) नहीं है । नूरमयी वृक्षों, बेलों का भी कोई पारावार नहीं है । प्रत्येक वस्तु कोमलता, सुगंधि, स्वप्रकाशित, चेतनता आदि सभी गुणों से युक्त हैं । ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई भी परमधाम के इन रहस्यों को नहीं खोल सकता है ।

एक पात ना गिरे वन का, ना गिरे पंखी का पर ।
नया पुराना ना होवहीं, अपार सचराचर ।।८।।

यहां के वनों से एक पत्ता भी कभी नहीं गिरता है, ना ही कभी किसी पक्षी का पंख झड़ता है । यहां चर-अचर (स्थिर–चलायमान) कोई भी वस्तु न कभी पुरानी होती है, ना ही नये गुणधर्मों की कोई वस्तु बनती है । (इच्छानुसार प्रत्येक वस्तु प्राप्त हो जाती है) ।

जल चेतन सुसबोए में, अपार हैं सब ठौर ।
कै लेत मिठास तिन पर, सब तरह जुगते कै और ।।९।।

यहां का जल भी चेतन व सुगंधि से परिपूर्ण है, जो कि सभी स्थानों (यमूनाजी, ताल व नहरों) में अपरम्पार शोभा से युक्त हैं । परमधाम में मिश्री से भी मीठे व दूध से भी उज्जवल जल से सखियां कई प्रकार के सुख लेती हैं ।

कै बैठके तिन पर, सब जवेर जुगते नूर ।
सब चेतनता पूरन धरे, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।१०।।

जल की चारों ओर (किनार पर) कई प्रकार की बैठकें शोभायमान हैं । सबमें नूरमयी जवाहरात युक्तिपूर्वक शोभायमान हैं । सभी वस्तुएं पूर्ण चेतनता से युक्त हैं । इस प्रकार उनकी दिव्य विशेषताओं का किस प्रकार वर्णन करूं?

वाए बेहेकत अंग सुहाती, चेतनता लिए चेहेन ।
वे स्वर सोहामनों बोलत, जानूं आगे अरकत मुख बेन ।।११।।

यहां सुगंधित, शीतल तथा अंग को सुहावनी लगने वाली वायु बहती है, जो कि चेतनता से युक्त है तथा सखियों की इच्छानुसार चलती है । जब हवा के झौंके आते हैं, तो उनसे मधुर सुहावना स्वर निकलता है, मानो कि वह अपने मुख से कुछ कह रही हो ।

अंग में त्रस्ना अपनी, दिल दे संग सुहाए ।
तेज चेतनता इनकी, सो जुबां कही न जाए ॥१२॥

चेतन वायु के अंदर भी अनेकों इच्छाएं (प्रियतम को रिझाने की) होती हैं, इस कारण वह दिल देकर (सखियों को रिझाने हेतु) सुहावने रूप में आती है । उसकी दिव्यता और चेतनता का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

आसमान नूर हैं चेतन, सब नूर इन दरम्यान ।
शोभा देत सबों ठौर, रहे मोमिन दिल पेहेचान ॥१३॥

वहां का आकाश भी नूरमयी व चेतन है, सभी प्रकार की नूरी विशेषताएं उसके अंदर हैं। इस प्रकार नूरी आकाश सभी जगह जगमगाते हुए शोभा दे रही है। इसकी पहचान ब्रह्मात्माओं के दिलों में होती है ।

ए पांचो तत्व रहे चेतन, नूर जहूर प्रकाश ।
एक जरा इन ज़िमी का, जोत न माए आकाश ॥१४॥

ये पांचों तत्व सदा चेतन, नूरमयी प्रकाश से युक्त हैं । परमधाम की धरती के एक कण में भी इतना प्रकाश है कि उसकी ज्योति आकाश (रिक्त स्थान) में नहीं समा पाती है ।

तो इन वन की जोत की, क्यूं कर कहूं जहूर ।
इन जिमी जवेरन की, सो आवत नाहीं सहूर ॥१५॥

(धरती के कण का ही वर्णन सम्भव नहीं है) तो फिर यहां के वनों की दिव्य ज्योति की शोभा किस प्रकार कहूं ? परमधाम की भूमिका के जवाहरातों की शोभा व दिव्यता का तो चिंतन करना भी सम्भव नहीं है ।

तो इन मोहोलन की क्यूं कहूं, जहां बैठत हक सुभान ।
इन के नूर रोशन की, रहे मोमिन दिल पेहेचान ॥१६॥

(जब वनों की ही शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है) तो फिर इन महलों की शोभा किस प्रकार कहें, जहां प्रियतम अक्षरातीत स्वयं विराजमान होते हैं? उनकी नूरमयी रोशनी की पहचान मोमिनों के दिलों में होती है ।

इन हौज जोए की, जो हैं अरस के गृदवाए ।
वन मोहोल जवाहिर के, सो आवत नहीं जुबांए ॥१७॥

हौज कौसर ताल और यमूना जी की शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं? जो कि रंगमहल को घेरकर आये हैं ? यहां के वन तथा महल जवाहरातों के हैं, जिनकी शोभा अवर्णनीय है ।

एह नूर हमेशा का, बका ठौर चेतन ।
जो मेहर मोमिनों पर, असल रूहों के तन ॥१८॥

चेतन व अखण्ड परमधाम का नूर शाश्वत है । यह वर्णन ब्रह्मात्माओं पर प्रियतम की कृपा है, जिनके मूल तन परमधाम में विराजमान हैं।

तिन के सुख क्यूं कहूं, जाको हक देत सोहाग ।
अपने मुख सिफत करें, क्यूं कहूं तिन के भाग ॥१९॥

उन ब्रह्मात्माओं के सुखों के विषय में क्या कहूं? जिन्हें धणी अपना सुहाग (प्रेम) प्रदान करते हैं ? प्रियतम अक्षरातीत स्वयं अपने मुख से (कुर्आन आदि धर्मग्रंथों में) उनकी प्रशंसा करते हैं । उनके सौभाग्य के विषय में क्या कहूं?

ए सुख मोमिन जानहीं, या जाने हक सुभान ।
या हादी देवें तिन को, मेहर करें मेहरबान ॥२०॥

ये सुख मात्र ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं, या प्रियतम अक्षरातीत जानते हैं, या सद्गुरू (श्री श्यामा जी) जिन्हें कृपा करके ये ज्ञान प्रदान करती हैं, वह जानता है।

ये सुख बातें बोहोत हैं, क्यूं कर कहूं केहेनी सुख ।
ए मोमिन गरक दीदार के, नूरजमाल के मुख ॥२१॥

परमधाम के सुखों की महिमा अनंत है, उसका वर्णन इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार करूं? वे ब्रह्मात्माएं प्रियतम के मुखारविंद के दीदार में और उनके सुखों में डूबी (तल्लीन) रहती हैं ।

ए आसक रहे हक के, इन के आसक हैं हक ।
ए अरस परस एक हैं, तामे कछू ना सक ॥२२॥

वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) हक तआला (प्रियतम परब्रह्म) की आशिकी में डूबी रहती हैं, हक सुब्हान भी इनके आशिक हैं । वे परस्पर एक स्वरूप हैं, इसमें कोई भी संशय नहीं है ।

पुर पूरन नूर इन का, सब पुरनता सुखदाए ।
रहे हजूर हमेशा हक के, क्यूं कर कहूं सुख इन जुबांए ॥२३॥

इन ब्रह्मप्रियाओं का अनंत नूरी तेज (दिव्य प्रकाश) पूर्णातिपूर्ण तथा सुखदायी है । वे हमेशां ही प्रियतम के प्रेम की छांव तले रहती हैं । इनके सुखों का वर्णन इस जिह्वा से किस प्रकार करूं?

महामत कहे ए मोमिनों, नेक कही तुमारी बात ।
हुकम याद करावत, तुम हो हक की जात ।।२४।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यहां आपकी महिमा के विषय में थोड़ा सा वर्णन किया है । श्री राजजी का हुक्म आपको याद करा रहा है कि आप श्री राजजी की अंगरूपा ब्रह्मात्माएं हो ।

प्रकरण ११६ चौपाई ३९५६

घृत सागर

इस प्रकरण में वायव्य कोने में सुशोभित घृत सागर का वर्णन है । घृत सागर में श्रीराज जी का इश्क रूपी बल पूर्ण रूप से विद्यमान है । वहां की धरती, वृक्ष, वन, महल सभी आसमानी (नीले) रंग में शोभा ले रहें हैं । बड़ी रांग की भीतरी तरफ स्थित छोटी रांग का भी विस्तृत वर्णन हुआ है । जब रंगमहल से श्रीराज जी की सवारी आती है, उस समय की अलौकिक शोभा का चित्रण हुआ है । पशु पक्षियों की प्रेम भरी क्रीड़ाओं का मनोरम वर्णन है ।

नूर वायव्य बल पूरन, जहूर समन सागर ।
परख पूरन सुख सुन्दर, सब विध नूर नजर ।।१।।

परमधाम के वायव्य कोण में नूरमयी इश्क की शक्ति से परिपूर्ण घृत सागर शोभायमान है । श्री राज जी के सुंदर सुखदायी नूर स्वरूप के अंग अंग में जो इश्क समाहित है, उसे आत्मिक नूरी दृष्टि से सब प्रकार से पहचानिये ।

नूर वायव्य बल पूरन, पश्चिम उतर कोने जान ।
जिमी नूर भर पूरन, दरखत रंग आसमान ।।२।।

परमधाम के पश्चिम व उत्तर दिशा के बीच वायव्य कोण में इश्क रस से परिपूर्ण घृत सागर है, जहां की धरती नूर से परिपूर्ण है । वहां के वृक्ष आसमानी (नीले) रंग के हैं ।

जिमी भी रंग आसमानी, जित हवेलियों की हार चार ।
ए जवेर रंग आसमानी, ता को मोमिन करें विचार ।।३।।

वहां की धरती भी नीले रंग की है । इनके सामने जो छोटी रांग की

चार हार हवेलियां हैं, वे भी नीले रंग के जवाहरात (नीलवी) से शोभायमान हैं, मोमिन (ब्रह्मात्माएं) उसका चिंतन करें ।

पांच भोम हवेलियन की, चौक छठी चांदनी ।
सब बैठे एक नूर एक रस, ए ठौर अति सुखदाए अपनी ।।४।।

छोटी रांग की हवेलियों की पांच भोम छठी चांदनी शोभायमान है । (एक-एक भोम में १२-१२ हजार छोटी भोमें विद्यमान हैं) । श्री राज श्यामा जी व सखियां सभी यहां की नूरी बैठकों में एकरस व एक नूर होकर विराजमान हो जाते हैं । अपने निजघर की यह जगह बहुत ही आनंददायी है ।

चारों हारे हवेलियों, चारों रास्ते दोरी बंध ।
दरखत दोऊं बाजू के, ए नूर मोमिन जाने सनंध ।।५।।

हवेलियों की चारा हारों के मध्य रास्तें (रौंसें) पंक्तिबद्ध रूप से शोभायमान हैं । रौंस के दायें-बायें के वृक्षों की नूरी शोभा ब्रह्मात्माएं ही जानती है ।

एक एक हवेलियों, जहां चार चार बड़े द्वार ।
मंदिर बारे बारे हजार, हक हादी रूहें करें बिहार ।।६।।

छोटी रांग की प्रत्येक हवेलियों की चारों दिशा में चार बड़े द्वार आये हैं । इनके अंदर चारों तरफ घेरकर ६-६ हजार मंदिरों की दो हारें-कुल १२-१२ हजार मंदिर प्रत्येक हवेलियों में आये हैं । यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां आनंदपूर्वक लीला विहार करते हैं ।

कै द्वार मेहेराबी पौरियां, सब रंग नूर आसमान ।
कै छज्जे गोख कचेरियां, रहे मोमिन दिल पेहेचान ।।७।।

यहां कई महराबी द्वार आये हैं, सबका रंग नूरमयी आसमानी (नीला) है । यहां कई छज्जे, गोख व कचहरियां हैं, जिसकी पहचान मोमिनों के दिलों को होती है ।

जब आवे इत असवारी, अरस से रूहें हादी हक ।
छांए रहत सब आसमान, भरे पूरे नूर इश्क ।।८।।

जब घृत सागर में रंगमहल से श्री राज श्यामा जी व सखियां सुखपालों पर सवार होकर आते हैं । तब पूरा आकाश सवारी से भर जाता है । सभी इश्क के नूर से भरपूर होते हैं ।

कै नाटारंभ नाचहीं, कै रिझावत कर गान ।
कै मुजरे समे आवत, जाके देख रीझत रेहेमान ।।९।।

कई पशु-पक्षी नाटक करते हैं, कई नाचते हैं, तो कई मधुर स्वर में गायन करके धणी को रिझाते हैं । कई सवारी के समय धणी के दर्शन व अभिवादन के लिये आते हैं, जिन्हें देखकर प्रियतम श्रीराज जी प्रसन्न हो जाते हैं

एक असवारी संग चले, एक आगे आए मिलत ।
एक पल में दौड़ के पोहोंचहीं, ए सामे आए मिलत ।।१०।।

कुछ पशु-पक्षी सुखपालों की सवारी के साथ चलते हैं (जमीन के पशु-पक्षी जमीन पर तथा आसमां के पशु पक्षी आसमां पर) । कुछ पशु-पक्षी कुछ दूर आगे आ जाने के बाद मिलते हैं । वे एक ही पल में तेजी से दौड़कर पहुंच जाते हैं और सामने से आकर मिलते हैं ।

अपने अपने ताएफे, सब आसक हैं हक ।
सबकी गत जुदी जुदी, सब हक के दिल माफक ।।११।।

अपनी अपनी पंक्तियों (समूहों) में सब पशु-पक्षी आते हैं, वे सभी श्री राज जी के आशिक (प्रेमी) हैं । सबका चाल-चलन भी अलग-अलग होता है । यह सब कुछ श्री राजजी के दिल के अनुसार होता है।

कै बाजे बजावहीं, तामे स्वर रसाल ।
बांछत मन में रूहों के, उतरी सब सुखपाल ।।१२।।

वे पशु-पक्षी मधुर रसीले स्वरों से युक्त कई प्रकार के बाजे बजाते हैं। सखियों के मन में इच्छा करते ही सभी सुखपाल उतर जाते हैं ।

जहां सुखपाल उतरी राज की, सब विध फिरी गृदवाए ।
सब खिलौने घेर गृदवाए, ताकी सिफत न कही जाए ।।१३।।

जहां श्री राजश्यामा जी का सुखपाल उतरता है, उसी के चारों तरफ सभी सखियों के सुखपाल भी उतर जाते हैं । सभी पशुपक्षी उन्हें घेरकर चारों तरफ खड़े हो जाते हैं । इस शोभा का वर्णन करना असम्भव है ।

कै नैनों सुख देखे मिने, कै सुख सबद श्रवन ।
कै सुख अंग परस के, कै सुख दरसन तन ।।१४।।

कई सुख उन सुंदर पशु-पक्षियों को अपनी आंखों से देखने में मिलता है । कई सुख उनकी मधुर वाणी का श्रवण करने से मिलता है । कई सुख उनके अंगों का स्पर्श करने से मिलता है । कई सुख उनके नूरी तनों का दर्शन करने से होता है ।

जब बैठत छज्जे हवेलियों, सब मुजरे को ए जाए ।
ए बासी इन ठौर के, रहे रंग आसमानी ताए ।।१५।।

जब हवेलियों के छज्जों में बैठते हैं, तो ऐ सभी पशु-पक्षी धणी का दर्शन व अभिवादन करने आते हैं । उनमें से जो पशु-पक्षी घृत सागर के रहने वाले होते हैं, उनका रंग आसमानी (नीला) होता है ।

कै मेवे ले ले आवाही, आगे घरे आए एक ।
तिन का मुजरा करावत, बोली सोहामनी बुजरक ॥१६॥

वे पशु-पक्षी (धणी को रिझाने के लिये) प्रेमपूर्वक अनेक प्रकार के मेवे वे वेकर आते हैं, और धाम धणी के समक्ष प्रस्तुत करते हैं । अपने-अपने तरीके से वे धणी का अभिवादन करते हैं । उनकी वाणी बहुत ही सुहावनी और आनंददायक होती है ।

कै पंखी जिकर करत है, कै रटे रसना मुख बैन ।
एक सुभान तिन को, करें मेहर देखे नैन ॥१७॥

कई पक्षी मधुर वाणी से धणी का गुणगान करते हैं, अपने मुख से धणी का नाम (पिया-पिया, धणी-धणी) रटते रहते हैं । प्रियतम श्री राज जी भी कृपा करके उन्हें प्रेम भरी दृष्टि से देखते हैं ।

क्यों कहूं इन सुख की, जाने हक नैनों अन्दर ।
सिफत तिन की इन जुबां, क्यूं होवे पटन्तर ॥१८॥

पशु–पक्षियों के इन सुखों के विषय में किस प्रकार वर्णन करूं? जिनके नैनों के अंदर श्री राज जी का सुंदर स्वरूप बसा होता है । उनकी अतुलनीय शोभा का वर्णन इस माया की जिह्वा से कैसे हो सकता है ।

हक हादी रूहें आप में, मिठी बातें करत जब,
देख खेल खेलौने रीझत, ए अति सुख पावत तब ॥१९॥

श्री राज श्यामाजी एवं सखियां आपस में जब प्रेम भरी मीठी बातें करते हैं, तो उसे देखकर पशु-पक्षी (खेल खिलौने) भी प्रसन्न हो जाते हैं और अत्यंत आनंद की अनुभूति करते हैं।

बल पूरन हैं सबमें, कछु कमी नाहीं माहें नूर ।
ए तो हक की जात हैं, या को कह्यो न जाए जहूर ॥२०॥

सभी पशु-पक्षियों में पूर्ण शक्ति-सामर्थ्य है, परमधाम की नूरमयी भूमिका में किसी में कुछ भी कमी नहीं होती है । वे तो श्री राजजी के ही स्वरूप हैं । उनकी नूरमयी शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं होता है ।

ए झीलत सुख सागर में, रहे हक की जिकर में गरक ।
एही चितवन इन अंग में, इन पर पूरी मेहर हैं हक ॥२१॥

वे पशु-पक्षी आनंद के सागर में झीलना करते हैं, हर पल धणी के ध्यान-चितन-गुणगान में मग्न रहते हैं । इन पर धणी का पूर्ण प्रेम बरसता रहता है ।

जब आवत इन हवेलियों, कै रसना रस लेत ।
कै सुख जल खुसबोए के, हक रूहों को सुख देत ॥२२॥

जब श्री राज श्यामा जी व सखियां बड़ी रांग की इन हवेलियों में आते हैं, तब रसना के कई रस (स्वाद) लेते हैं । कई सुख जल की सुगंधि के होते हैं । इस प्रकार यहां अनेक प्रकार के सुख श्री राजजी सखियों को प्रदान करते हैं ।

केहेनी इत ना पोहोंचत, जो बका चेतन है ठौर ।
सब उपमा ओरे रहे, जो कायम वतन है और ॥२३॥

इस माया के शब्द परमधाम की उस अखण्ड चेतन भूमिका की शोभा का वर्णन नहीं कर सकते हैं । अखण्ड परमधाम की शोभा में वर्णित क्षर जगत् की सारी उपमाएं निरर्थक सिद्ध होती हैं ।

सो जानत नूर जमाल, के जानत नूर अक्षर ताए ।
या तो हादी जानत, जिनका अंग इशक केहेलाए ॥२४॥

उसे अक्षरातीत परब्रह्म ही जानते हैं, या अक्षर ब्रह्म जानते हैं । या तो श्यामा जी जानती हैं, जिनका अंग (स्वरूप) ही इश्क का कहलाता है।

महामत कहे ए मोमिनों, ए तुमारो नित बिहार ।
तुम को याद दिलावत, हुकम परवरदिगार ॥२५॥

श्री महामति जी कहते है कि हे सुंदरसाथ जी ! यह आपकी नित्य लीला विहार है , जो आपको प्रियतम परब्रह्म का हुक्म याद दिला रहा है।

प्रकरण ११७ चौपाई ३९८१

जहूर समान सागर

इस प्रकरण में इश्क के सागर (घृत सागर) का वर्णन है । परमधाम का सम्पूर्ण ऐश्वर्य श्री राज जी के दिल का ही व्यक्त स्वरूप है, जो इश्क से परिपूर्ण है । श्री राज जी ने तारतम ज्ञान ब्रह्मात्माओं के लिए भेजा, जिनसे उनकी आत्म जागृति हुई, इस प्रकार उनके दिल को अर्श करके उन पर संपूर्ण नैमतें बरसा दी हैं ।

पश्चिम उत्तर कोने मिने, देखत समन सागर ।
रंग आसमानी तिन की, हैं ए सुख सब उपर ।।१।।

परमधाम की पश्चिम एवं उत्तर दिशा के बीच वायव्य कोण में घृत सागर दिखायी देता है . जिसका रंग आसमानी (नीला) है . यहां के सुख सर्वोपरि हैं ।

रांग रंग है आसमानी, जिमी दो दरिया दरम्यान ।
सागर चारों तरफों, मोहोल जवेर रंग आसमान ।।२।।

यहां रांग की हवेलियों का रंग नीला (आसमानी) है । प्रत्येक दो सागरों के बीच घने वन की भूमि (जिमी) है । सागर के चारों तरफ नीले रंग के जवाहरात (नीलवी) से युक्त महल शोभायमान हैं ।

नीलवी जवेर रंग तिनमे, रहे तरफ छत्तीस हजार ।
द्वार मनी नूर झलकत, जित रूहें रमनहार ।।३।।

इन हवेलियों के जवाहरातों का रंग नीला (नीलवी) है । जिनके (सामने व दायें-बायें के मिलाकर) कुल ३६ हजार रत्नों के नूर से जगमगाते हुए दिख रहे हैं, जहां ब्रह्मप्रियाएं अपने धणी के साथ रमण करती हैं ।

दोए तरफ जिमीन के, और रांग की तरफ दोए ।
बारे हजार द्वार तरफ सागर, बारे बारे हजार तरफ सोए ।।४।।

सागर की चारों दिशा में रांग की हवेलियां हैं । दो दिशायें (दायें–बायें) जिमी की तरफ हैं और दो दिशाएं (अंदर व बाहर) रांग की तरफ हैं । सागर की इन चारों दिशाओं में १२-१२ हजार द्वार जगमगाते हुए दिखायी देते हैं ।

फिरता चारों तरफ चबूतरा, जहां हाथ लगत सागर ।
छज्जे मोहोल आए तिन पर, तहां बैठक कठेड़े उपर ।।५।।

सागर की चारों तरफ घेरकर जल रौंस आया है, जहां से सागर के जल को हाथों से आसानी से स्पर्श कर सकते हैं (जल रौंस का स्तर सागर के पानी के स्तर के बराबर है) । इनके ऊपर महलों (हवेलियों) के भोमों के छज्जों से मिलते हुए वनों के भोमों के छज्जे आये हैं । इन छज्जों की किनार पर चारों तरफ कठेड़े की शोभा है, जहां बैठक शोभायमान है (यहां बैठकर श्री राजश्यामा जी एवं सखियां, सागर व टापूमहलों का सुंदर दृश्य देखते हैं)।

कै छज्जे मोहोल जवेरन के, कै बैठक कठेड़े दरम्यान ।
साम सामे द्वार शोभित, ए मोमिन करें पेहेचान ।।६।।

यहां महलों (हवेलियों) में जवाहरातों के अनेकों छज्जे शोभायमान हैं ।

कठेड़ों के अंदर कई बैठकें (छज्जे) शोभायमान हैं । हवेलियों के दरवाजे आमने-सामने शोभायमान हैं । उसकी पहचान मोमिन (ब्रह्मात्माएं) ही करते हैं ।

कै बैठके इन में, कै चौक मंदिर गलियन ।
कै द्वार मेहेराबी शोभित, सो झलकत नूर रोशन ।।७।।

यहां अनेक प्रकार की बैठकें शोभायमान हैं, कई चौक, मंदिर व गलियां हैं, कई महराबी द्वार शोभायमान हैं । उनकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ जगमगा रही है ।

जब बैठत तरफ दरियाव के सागर लेहरी देखत नूर ।
सुख रूप नैंना लेत हैं, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।८।।

जब इन छज्जों में, सागर की तरफ मुख करके बैठते हैं, तो सागर की नूरमयी लहरों की शोभा को देखते हैं । मनोहारी दृश्यों का सुख हमारे नेत्र प्राप्त करते हैं । उस शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

बीच टापू नूर जवेर के, ता को रंग नीलवी आसमान ।
रांग बराबर शोभित, सिफत आवे न इन जुबांन ।।९।।

सागर के बीच में नूरमयी जवाहरातों के बेशुमार (१२ हजार की १२ हजार पंक्तियां) टापूमहल आये हैं । जिनका रंग नीलवी नग का आसमानी (नीला) है । इनकी ऊंचाई बड़ी रांग के बराबर है । इनकी शोभा माया की जिह्वा से कहना सम्भव नहीं है ।

छज्जे मोहोल टापू मिने, मंदिर नूर जवेर झलकत ।
कै थम्भ दिवालें द्वार ने, कै मेहेराबी द्वार इत ।।१०।।

टापू महलों में भी कई छज्जे आये हैं। यहां नूरमयी जवाहरात के अनेकों मंदिर, स्तम्भ, दीवारें, दरवाजे, महराबी द्वार आदि सब जगमगाते हुए शोभायमान हैं।

गृद फिरते कै बैठकें, ऊपरा ऊपर भोम लग आसमान ।
शोभा इन सत ठौर की, बिन मोमिन होए न पेहेचान ।।११।।

सागर के चारों तरफ एक के ऊपर एक आकाश तक स्थित हवेलियों की सभी भोमों में छज्जों पर बैठकें शोभायमान हैं । इस अखण्ड अविनाशी परमधाम की शोभा को ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं पहचान पाता है ।

जब जिमी तरफ गोख बैठिये, आए वन लगा छज्जन ।
ए सिफाएत मोमिन की, मेहर हादी करी रोशन ।।१२।।

जब जिमी (दो सागरों के बीच घने वन की जमीन) की तरफ हवेलियों के छज्जों में बैठते हैं । तो सामने वनों के छज्जे हवेली के छज्जों से मिलान करते दिखायी देते हैं । यही मोमिनों की सिफायत (तारतम ज्ञान) है, जिसे हादी (मुहम्मद हकी सूरत) ने कृपा करके दिया है ।

कै मेवे इन वन में, कै जुदी जुदी भांत स्वाद ।
कै रंग खुसबोए तिन में, क्यूं कहूं बका बुनियाद ॥१३॥

इन वनों में कई अलग-अलग स्वाद के कई प्रकार के मेवे (फल) हैं. उनके रंग व सुगंध भी कई प्रकार के हैं । परमधाम के आधारभूत गुणों (नरमायी, सुगंधि, चेतनता, स्वप्रकाशिता) का किस प्रकार वर्णन करें ?

कै स्वाद मीठे रस देत हैं, कै स्वाद रस परसे ।
कै तीखे मीठे फरसे, कै खटूबरे यामे ॥१४॥

कई फल मीठे स्वाद का रस देते हैं, तो कई फलों मे नमकीन स्वाद का रस होता है । कई फल में तीनों स्वाद तीखा, मीठा व नमकीन होते हैं। कई मेवे खट्टे होते हैं ।

कै मेवे स्वाद जिमीन के, कै मेवे स्वाद रस बन ।
नूर तेज जोत तिन की, सो क्यूं कर कहूं रोशन ॥१५॥

कई मेवे जमीन के अंदर के मेवों के जैसा स्वाद देते हैं । कई मेवे वनफल का रस स्वाद देते हैं । उन मेवों में नूरी तेजोमयी ज्योति जगमगा रही है, उनसे निकलने वाली नूरी रोशनी का किस प्रकार वर्णन करूं?

जिन तरफों जाइये, कछु छेह न आवे ताए ।
खिलौने रंग आसमानी, सो जिकर रटत जुबांए ॥१६॥

जिस दिशा में भी जाईये, परमधाम की नूरमयी धरती का कहीं भी अंत आता ही नहीं है । यहां (घृत सागर) के पशु-पक्षी भी नीले रंग के हैं जो कि हर पल प्रियतम का गुणगान, स्वरूप वर्णन-स्मरण करते रहते हैं ।

क्यूं सिफत कहूं तिन की, जो रिझावत रेहेमान ।
जिन पर मेहर करत हैं, बका मिने हक सुभान ॥१७॥

उन पशु-पक्षियों की प्रशंसा किस प्रकार करुं, जो प्रियतम अक्षरातीत को रिझाते हैं । जिन पर अखण्ड परमधाम में प्रियतम परब्रह्म पल पल अनंत लाड-प्रेम बरसाते हैं ।

ए बका ठौर वाहिदत की, नाहीं पटन्तर इन ।
केहेनी सुपन भोम में, जुबां आवत नाहीं सुकन ॥१८॥

उस स्वलीला अद्वैत परमधाम की शोभा अतुलनीय अनुपम है । इस स्वाप्निक जगत् में उसका वर्णन करना चाहती हूं किंतु उसकी शोभा का वर्णन करने के लिये माया में शब्द ही नहीं मिल रहे।

सत भोम का पटन्तर, झूठ में दियो न जाए ।
हक हादी मोमिन दिल में, ल्यावने को नेक बताए ॥१९॥

अखण्ड परमधाम का उदाहरण (उपमा) इस नश्वर जगत् की वस्तुओं से नहीं दिया जा सकता है । श्री राज श्यामा जी व परमधाम की शोभा को ब्रह्मात्माओं के दिल में बसाने के दिल उसका थोड़ा वर्णन कर रही हूं।

एह है वैभव धाम को, सो हक के दिल माफक ।
नूर रोशन चेतनता, सब सरूप हैं इशक ॥२०॥

यह दिव्य परमधाम का वैभव (ऐश्वर्य) है, जो कि अक्षरातीत परब्रह्म के हृदय के अनुसार है । यहां की प्रत्येक लीलारूप सामग्री में नूरमयी रोशनी, चेतनता है । यहां सभी इश्क के ही स्वरूप हैं।

ए मोमिन के वास्ते, हके भेजा तारतम ।
तिन तारतम नूर रोशन से, जाग खड़ी हुई आतम ॥२१॥

यह तारतम ज्ञान श्री राज जी ने ब्रह्मात्माओं के लिये ही भेजा है । इस नूरमयी तारतम ज्ञान की रोशनी से आत्मा जागृत होकर अपना स्वरूप लेकर खड़ी हो जाती है ।

राखे आकार सुपन के, दिल पूरे अरस कर ।
जित हक धरे कदम अपने, बरसाया नूर इन पर ॥२२॥

उन सुंदरसाथ के स्वाप्निक शरीर को सुरक्षित रखते हुए प्रियतम अक्षरातीत उनके हृदय धाम में पूर्ण शक्तियों के साथ विराजमान हो गये । जहां श्री राजजी ने अपने कदम रख दिये तो फिर अपनी नूरी मेहर (दिव्य कृपा) उन पर पूर्ण रूप से बरसा दिया ।

मूल दिल मिने ए दिल हैं, तिन दिल से आई न्यामत ।
तिन साएत जाहिर करी, फजर भई क्यामत ॥२३॥

इन मोमिनों का दिल उनके मूल तनों (परात्म) के दिल में विराजमान है । परात्म के दिल से इनके दिल में सारी नैमतें (ज्ञान, प्रेम आदि) आयी हैं । इस प्रकार ब्रह्मात्माओं ने परमधाम मूल मिलावे की उस पल-घड़ी को जाहिर किया है, और ब्रह्मज्ञान का उजाला करके कियामत (आत्म जागृति) का समय जाहिर कर दिया है । (श्री राजजी के दिल से परात्म के दिलमें और परात्म के दिल से

मोमिनों के दिल में ज्ञान, प्रेम आदि नैमतें आती हैं। "परात्म के अंतस्करन, जेती बीतत बात । तेती इन आतम के, करत अंग साख्यात")

दिल परदा बीच था, सो उठ गया जब ।
तब वाही ठौर बका रही, हक नजरों देखे तब ।।२४।।

परात्म के दिल में माया रूपी पर्दा पड़ा हुआ था । जब वह पर्दा उड़ गया तो फिर वही अखण्ड परमधाम ही बाकि रहा । मूल मिलावे में सामने श्री राजजी नजर आये ।

बोहोत बातें हैं इनकी, सो आवत नाहीं जुवांए ।
जब खुदी अहं उड़ी, रह्या बका बाकी ताए ।।२५।।

इस प्रकार ब्रह्मात्माओं की महिमा अनंत है, उसका इस जिह्वा से वर्णन करना सम्भव नहीं है । जब इस माया की "मैं" खुदी खत्म हो जायेगी, तब मात्र परमधाम (निजघर–निजस्वरूप) ही बाकि रहेगा ।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम वास्ते किया मजकूर ।
हुकम हक सुभान का, तुम वास्ते जाहिर किया नूर ।।२६।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह आपके लिये ही सारा वर्णन किया है । प्रियतम अक्षरातीत का हुक्म आपके लिये ही परमधाम की नूरी शोभा को प्रकट करवा रहा है ।

प्रकरण ११८ चौपाई ४००७

मोमिन परछाले

श्री महामति जी बड़ी वृत के निम्न प्रकरण में जीव सृष्टि, ईश्वरी सृष्टि और ब्रह्म सृष्टि - तीनों की परख करवा रहें हैं । जीव सृष्टि को माया और मोह के रिश्ते नातों में ही आराम मिलता है इसके अतिरिक्त उनके हृदय में और कोई चाहना नहीं होती है । ब्रह्म सृष्टि की पहचान ही यह कही गयी है कि माया में रहते हुए भी ब्रह्म सृष्टि की आत्मिक नज़र श्रीराज जी के चरणों में होती है, उनके हृदय में तारतम ज्ञान के द्वारा धणी की पूर्ण पहचान हो गयी होती है । ईश्वरी सृष्टि जिनका ठिकाना अक्षर धाम है, वे भी ब्रह्म सृष्टियों के साथ-साथ रहते हैं । इन्हें भी परब्रह्म के दर्शनों की चाहना रहती है ।

ए परछाले मोमिन, जाये हक मेहेर नूर पूरन ।
ए सुख सोई पावहीं, देखी सुन्दर सूरत रोशन ।।१।।

मोमिन आत्माओं की यही पहचान है कि उन पर प्रियतम परब्रह्म की दिव्य कृपाएं पूर्ण रूप से रहती हैं । परमधाम के सुख वे ही प्राप्त कर पाते हैं, और प्रियतम अक्षरातीत का सुंदर दिव्य स्वरूप वे ही देख पाते हैं ।

ए परछा इन भांत की, सत असत करों दोए ।
जाए पूरन इलम हक का, सुख सुन्दर लज्जत पावे सोए ।।२।।

यह परख इस प्रकार से होती है । सत्य ब्रह्मात्माएं एवं असत्यं माया के जीव दोनों की तुलना कीजिये । ब्रह्मात्माओं के पास प्रियतम का पूर्ण ज्ञान होता है और वे श्री राजजी के सुंदर स्वरूप का पूर्ण आनंद प्राप्त करते हैं ।

आई तीनों सृष्ट सुपन में, तीनों के जुदे जुदे ठौर ।
एक जीव ईश्वरी ब्रह्म की, सब अहार करत हैं अपना भोर ।।३।।

इस स्वप्न जगत् में तीन प्रकार की सृष्टियां आयी हैं । उन तीनों के निजघर अलग-अलग हैं । पहली जीवसृष्टि, दूसरी ईश्वरी सृष्टि एवं तीसरी ब्रह्मसृष्टि । सभी प्रातः उठने के पश्चात् अपना-अपना (आत्मिक) आहार (कर्म, उपासना, ज्ञान, प्रेम) ग्रहण करते हैं ।

खास आम खासल खास कहीं जो तीन उम्मत ।
याके पीछे मोमिन, जुदी सफे खड़ी होए इत ।।४।।

इन तीन प्रकार की सृष्टियों को कतेब पक्ष में आम खलक, खास उम्मत, खासुलखास उम्मत (मोमिन) लिखा है । इनमें सर्वश्रेष्ठ मोमिन है, इनकी पंक्ति न्याय के दिन अलग से (अलग रहनी में) खड़ी होगी ।

फेल हाल अपने से, सब मिसल मिलत हैं जाए ।
कोई राह हक की ना देखहीं, फेलों अपना ठौर बताए ।।५।।

अपनी अपनी रहनी व आत्मिक स्थिति के अनुसार सभी अपने अपने समूह में जाकर मिल जाते हैं । कोई भी परमात्मा के सत्य मार्ग का विचार नहीं करता है । उनकी स्थिति ही उनका मूल स्थान बताती है ।

मोमिन हक सूरत बिना, और ना रहवे याद ।
गरक याही जिकर में, देखे अपनी बुनियाद ।।६।।

ब्रह्मात्माओं को प्रियतम अक्षरातीत के स्वरूप के बिना और कुछ भी स्मरण नहीं रहता है । उसी की चर्चा, चिंतन व ध्यान में गर्क (डूबे) रहते हैं । इस प्रकार अपने निजस्वरूप का ध्यान करते रहते हैं ।

वही श्रवना रस स्वाद हैं, वही सोहबत सोए ।
वही ठौर बैठन की, सोवत सुपन उतहीं जाए ।।७।।

परमधाम की शोभा, स्वरूप व लीला के ही श्रवण में इन्हे आनंद आता है । ब्रह्मसुनियों की ही संगत अच्छी लगती है । ऐसे ही स्थानों में जाना इन्हें अच्छा लगता है । सोते हुए एवं स्वप्नावस्था में भी परमधाम का ही चिंतन बना रहता है ।

और जो आसा इन को, हक बिना ना उपजे कोए ।
एही मिलाप करे मोमिनों सो, वाको हाल बका का होए ।।८।।

उन मोमिनों (ब्रह्ममुनियों) के दिलों में हक तआला (प्रियतम अक्षरातीत) के अतिरिक्त अन्य कोई भी आशा (इच्छा) नहीं होती है । वे ही अन्य ब्रह्मात्माओं से सत्संग करते हैं । उनका चाल-चलन परमधाम के अनुसार होता है ।

पांच रोशनी बका की, उन अंग में झलकत नूर ।
सो ए छिपी क्यों रहें, जित हक बैठ के करें जहूर ।।९।।

परमधाम की पांचों नूरमयी रोशनी (५ शक्तियां) उनके अंगों में झलकती हैं । उन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) का तेज किस प्रकार छिपा रह सकता है, जिनके हृदय में प्रियतम अक्षरातीत विराजमान होकर उनसे अपना काम कराते हैं।

इन मोमिनों के नूर से, हुई हैयाती चौदे तबक ।
जिनके दिल में हक सूरत का, रेहेत सदा इशक ।।१०।।

इन ब्रह्मात्माओं के नूरमयी तारतम ज्ञान से १४ लोकों के समस्त जीवों ने अखण्ड मोक्ष प्राप्त किया है । उन ब्रह्मात्माओं के दिल में श्री राजजी का स्वरूप तथा प्रेम सदैव बसा रहता है ।

कौल फैल हाल इन का, हक बिना न काढ़े बोल ।
उतहीं आराम इन को, कोई नाहीं इन के तोल ।।११।।

इन मोमिनों की कहनी, रहनी व आत्मिक स्थिति इस प्रकार रहती है कि प्रियतम श्री राज जी के सिवा उनके मुख से अन्य कोई भी शब्द नहीं निकलता है । उन्हीं के चरणों (के ध्यान) में इन्हें अखण्ड शांति मिलती है । उन ब्रह्मात्माओं के तुल्य अन्य कोई भी नहीं है ।

सत असत पटन्तर, जैसे दिन और रात ।
ए मोमिन बका बिना न बूझहीं, जो हैं हक की जात ।।१२।।

सत्य ब्रह्मात्माओं एवं असत्य माया के जीवों के बीच उतना ही अंतर होता है, जितना की दिन एवं रात में होता है । वे ब्रह्मात्माएं, जो कि परब्रह्म के

ही स्वरूप होते हैं, वे परमधाम के बिना अन्य कुछ भी नहीं समझते (अन्य कहीं भी दिल नहीं लगता है) ।

जो रहे हक सोहबत में, तिन को और ना सोहाए ।
या तो मिले मोमिन से, ना तो हक सोहबत दिल जाए ।।१३।।

वे ब्रह्मात्माएं परमधाम में प्रियतम परब्रह्म के साथ अनादि काल से रहती हैं, उन्हें उनके बिना अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता है । या तो वे अन्य सुंदरसाथ की संगत में जाते हैं या तो प्रियतम श्री राज जी के चिंतन व ध्यान में लगे रहते हैं ।

ए देखन को नासूत में, हैं इन के साथ वाहिदत ।
इन से तफावत, सृष्ट ईश्वरीय इत ।।१४।।

वे मोमिन दिखने में मात्र मृत्युलोक में हैं । किंतु उनकी आत्मा प्रियतम परमात्मा के साथ एकरूप हो गई होती है । दूसरी ईश्वरी सृष्टि और इनमें थोड़ा अंतर होता है ।

वह भी इनकी सोहबत, कबहूं छोड़ के न जाए ।
इन दीदे इलमें नूर की, सूरत चूभी आए ।।१५।।

ईश्वरी सृष्टि भी ब्रह्मसृष्टि का संग छोड़कर अन्य कहीं नहीं जाती है । उनकी ज्ञान की नूरी दृष्टि में परब्रह्म स्वामी का स्वरूप बस जाता है ।

ऐ भी दूनी मुरदार को, नजीक न जावे कब ।
सोहोबत रोशन मुख रहे, ए चर्चा सुने जब ।।१६।।

वे भी नश्वर संसार के क्षणिक सुखों के नजदीक (तन-मन से) कभी नहीं जाते । जब ब्रह्मज्ञान की चर्चा सुनते हैं तो उस सत्संग से उनका मुख ईमान से जगमगाने लगता है ।

सिफत जो मोमिन की, तिन जोड़े मुतकै जान ।
ते पीठ न छोड़े मोमिन, इनों की ए पेहेचान ।।१७।।

ब्रह्मात्माओं की जो महिमा है, वैसी ही परहेजगार ईश्वरी सृष्टि की भी जानिये । वे ब्रह्मात्माओं का अनुसरण करना नहीं छोड़ते, उनकी यही पहचान है।

दोए सृष्टी पहेले कही, खास और खासल खास ।
इन को हक सुभान बिना, और ना उपजे आस ।।१८।।

दो सृष्टियों- खास (ईश्वरी सृष्टि) और खासुलखास (ब्रह्मसृष्टि) का वर्णन अभी तक कर दिया है । इन दोनों के हृदय में प्रियतम अक्षरातीत के अतिरिक्त अन्य कोई चाहना कभी उत्पन्न नहीं होती है ।

अब कहूं आम की, जो तीसरी उम्मत ।
ताको इन दुनी बिना, और ना रहे लज्जत ।।१९।।

अब तीसरी आम खलक (जीव सृष्टि) की पहचान कहूंगा । उनको इस संसार के अतिक्ति अन्य कहीं सुख नहीं दिखता है ।

अपने कुटम परिवार की, रहे उमेद भरन और पोषन ।
चिन्ता आगे की करें, दिल गंदे ले सफा सुकन ।।२०।।

उनकी सारी चिंता (आशा) अपने कुटुम्ब-परिवार के पालन-पोषण को लेकर रहती है । वे भविष्य की अत्यधिक चिंता करते हैं । उनके दिल में बेईमानी व मलीनता रहती है किंतु ऊपर से ईमानदारी व सज्जनता से युक्त वचन कहते हैं ।

बोए ना रहे ईमान का, जाए लेवे लड़ाई मोल ।
खुदी अहं गुमान के, बड़े जो काढ़े बोल ।।२१।।

इनके अंदर ईमान की सुगंधि भी नहीं रहती है किंतु ईमान की बड़ी बड़ी बातें करते हुए अहंकार और घमण्ड में आकर सज्जन लोगों से लड़ाई करते रहते हैं ।

लकड़े पत्थर थम्भ मसाला, बड़ी उमेद दिल दरम्यान ।
मेरे बोहोत दिन जीवना, चिन्ता परले लों करे निदान ।।२२।।

लकड़ी, पत्थर, स्तम्भ व (सीमेंट व रेती का) मसाला, इनकी उनके दिल में बहुत चाहना रहती है । मैं बहुत दिन तक जिऊंगा, ऐसी इच्छा रखते हुए प्रलय काल तक (कई पीढ़ियों) की चिंता करते हैं ।

नियत बांधे बजूद सों, करे तिन बुत की सेवन ।
जोडू लड़को पर आसक, एकै आस रहे तन ।।२३।।

शरीर से ही सारी इच्छा (चाहना–चिंता) बांधे रहते हैं । इसी बुत (शरीर) की सेवा (पोषण–इंद्रिय सुखों का सेवन) करते रहते हैं । पत्नि व बच्चों पर ही सारा मोह बना रहता है। एक मात्र शरीर (से संबंधित सुखों) की ही आशा रहती है।

और न पावे बैठने, चर्चा सो चित भंग ।
सांच झूठ कर माया में, ताए सेवे सरबे अंग ।।२४।।

चर्चा-सत्संग में बैठ ही नहीं पाते हैं, उसमें उनका मन ही नहीं लगता है झूठी माया को सच्चा समझकर उसकी सभी अंगों (तन–मन–धन) से सेवा करते हैं ।

भगत जो भगवान के, तासो राखे बेर जोर ।
ताकी निंदया नित्याने करे, बैठे नींद की सोहोबत ठौर ।।२५।।

परमात्मा के जो भक्त (प्रेमी) होते हैं, उनसे बहुत ज्यादा द्वेष भाव रखते हैं और उनकी नित्यप्रति निंदा करते रहते हैं । जहां माया (मोह–अज्ञान) की चर्चा होती है, वहीं जाकर बैठते हैं ।

जहां हलाकी होवहीं, सोई करे जाए काम ।
बुरी ता के और की, रहे तामे बिसराम ।।२६।।

जिस काम से जीवन नष्ट होता है, वही कार्य जाकर करते हैं । दूसरों का बुरा देखते रहते हैं, दूसरों के दुःख में ही इन्हें सुख मिलता है ।

बोहोत ठौर खेती करे, जिनसे होए हलाक ।
सवाद पावे तिन में, जो माया मिथ्या तुल आक ।।२७।।

माया के लिये कई जगह (कई तरह से) परिश्रम (व्यापार, नौकरी) करते हैं और अपना जीवन नष्ट कर देते हैं । माया के झूठे प्रतिष्ठा, अहंकार में इन्हें सुख प्रतीत होता है ।

मोह का जल मोह जल से, निकसत ही मर जाए ।
ताए प्रबोध कोई न लागहीं, या को वाही ठौर सुखदाए ।।२८।।

मोह जल (नींद) के जीव मोह जल से निकलने पर तुरंत ही मर जाते हैं । उन पर कोई भी उपदेश काम नहीं करता है। इनको इसी झूठे दुखमयी जगत् में आनंद प्रतीत होता है ।

महामति कहे ए मोमिनों, वे कोट इन के लक्षन ।
तीनों सृष्ट कही तुम को, परखो इनों को रोशन ।।२९।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! इनके (जीव सृष्टि के) करोड़ों लक्षण हैं । इस प्रकार तीनों सृष्टियों के विषय में आपसे कहा है । इस भेद को समझ कर अब स्वयं की रहनी से ही अपनी परख कर लो । (परखना दूसरों को नहीं बल्कि स्वयं को परखना है ।)

प्रकरण ११९ चौहाई ४०३६

सब विध इलम नजर

प्रस्तुत प्रकरण में ब्रह्मसृष्टियों की महिमा का वर्णन है । श्री राज जी अपनी हृदय स्वरूपा ब्रह्मात्माओं को परमधाम की सारी नैमतें (निधियां) प्रदान कर देते हैं । इन्हीं के पास ब्रह्मज्ञान होता है, जिससे वे सभी धर्मावलम्बियों को एक परमात्मा की पहचान कराते हैं। इन्हीं ब्रह्ममुनियों से सारी दुनिया वाले पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की पहचान प्राप्त कर आत्मिक सुख लेंगे ।

सब विध नूर नजर, ए मोमिन की होए ।
लुदंनी इलम से, सब देखत मोमिन सोए ।।१।।

ब्रह्मात्माओं की नूरमयी आत्मिक दृष्टि सब प्रकार के ज्ञान से युक्त होती है । इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) से मोमिन (ब्रह्मात्माएं) सभी बातें (रहस्य) अच्छी तरह जानते हैं ।

सब इलम मोमिन पे, हैं सब खबरदार ।
हर एक फिरके को, एही समझावनहार ।।२।।

ब्रह्मात्माओं के पास सभी प्रकार का (क्षर-अक्षर-अक्षरातीत) ज्ञान होता है । सभी मोमिन सावधानी (विवेक–संयम) पूर्वक आचरण करते हैं । सभी धर्मावम्बियों को वे ब्रह्मात्माएं ही ब्रह्मज्ञान समझायेंगी ।

ए कूवत हक सुभान की, दिया मोमिनों हुकम ।
सब ताबे होवे इन के, इनों सौंपी हक को आतम ।।३।।

यह प्रियतम अक्षरातीत की ही सामर्थ्य है, जिसका उन्होंने ब्रह्मसृष्टियों के प्रति हुक्म दिया है कि, सारी दुनिया उनके आधीन होगी, क्योंकि उन्होंने परब्रह्म स्वामी के चरणों में अपनी आत्मा समर्पित कर दी है ।

ए पूर कर फारक भए, इनों दूनी करी तरक ।
इन के हाथ पकड़ के, करी मेहेर सुभान हक ।।४।।

वे मोमिन अपना कर्तव्य पूरा कर दुनिया से निवृत्त हो गये हैं , उन्होंने संसार के नश्वर एवं क्षणिक सुखों की चाहना को अपने दिल से खत्म कर दिया है । प्रियतम अक्षरातीत ने उनके हाथ पकड़कर (शक्ति देकर) लक्ष्य तक पहुंचाने की कृपा की है ।

ए समझावे सबको, एही एहेल किताब ।
मोमिन आए तौरेत के एहेल, इन से राह पावे सबाब ।।५।।

वे मोमिन ही सारी दुनिया को सत्य की पहचान करायेंगे । वे ही समस्त धर्मग्रंथों के वारिस (उत्तराधिकारी-धर्मग्रंथों के रहस्यों के वास्तविक जानकर) हैं ।

वे ब्रह्मात्माएं ही तौरेत किताब के वारिस हैं जिनसे परब्रह्म की राह (ज्ञान) पाकर सभी (यहूदी भाई) भी आत्मिक लाभ प्राप्त करेंगे ।

अंजील के एहेल इनों सों, राह पावे इसलाम ।
एहेल जंबूर दाउद को, इनकी सोहबत पावे आराम ।।६।।

वे ब्रह्मात्माएं ही बाईबिल के वारिस (गूढ़ार्थ को जानने वाले) हैं, इनसे ईसाई भाई भी शाश्वत परमधाम (सुप्रीम हेवन) की राह पायेंगे । दाउद पैगम्बर द्वारा लाये जम्बूर ग्रंथ के रहस्य भी इन्हीं से खुलेंगे, इन्हीं के संग से सभी अखण्ड आराम (परमधाम के सुख) पायेंगे ।

ए जो फिरके तिहतर, ए महंमद अलेहसलाम ।
ते राह पावे कुरान में, मोमिन सोहबत इसलाम ।।७।।

ये जो ७३ फिरके (सम्प्रदाय) दीने इस्लाम के मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने कहे हैं, वे भी इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की सोहबत से कुर्आन के वास्तविक मायने समझकर शाश्वत सुख–शांति (अर्शे आज़म) की राह पायेंगे ।

और एहेल भागवत के, इनकी सोहोबत से,
पावे राह अरथ की, जो रहे इन सोहोबत में ।।८।।

वे ब्रह्मात्माएं ही श्री मद्भागवत ग्रंथ के वास्तविक उत्तराधिकारी हैं । इन्हीं की सानिध्यता से सभी भागवत के कथनों का मूल आशय समझकर एक परब्रह्म की राह पायेंगे ।

गीता वेद वेदान्त की, और शास्त्र अनेक ।
सो सब राह पावें तिनसों, सब दीन करें ए एक ।।९।।

गीता, वेद, वेदान्त तथा जितने भी धर्मग्रंथ व शास्त्र हैं, उन सबके वास्तविक अर्थ ब्रह्मात्माओं से समझकर सभी परमसत्य की राह प्राप्त करेंगे, जिससे सारी दुनिया एक धर्म हो जायेगी ।

और राह कबीर की, वासना पांचो भगवान ।
तिन की ठौर पहूंचन की, मोमिन कर देवे पेहेचान ।।१०।।

और कबीर सहित पंचवासनाओं (शुकदेव, सनकादिक, महाविष्णु, शिव) के कथनों का मूल आशय समझाते हुए उनके मूल स्थानों तक पहुंचने की ब्रह्मात्माएं पहचान करा देंगी ।

द्वार आठों भिस्त के, मोमिन खोल देवे सबन।
एहेल सरा तरीकत का, मोमिन करे रोशन।।11।।

आठों बहिश्तों (मोक्ष स्थानों) के द्वार (तारतम ज्ञान के द्वारा) समस्त

दुनिया वालों के लिये मोमिन (ब्रह्ममुनि) खोल देंगे। शरीयत के ज्ञान के भी वारिस वे मोमिन ही हैं, जो शरीयत का वास्तविक मायना स्पष्ट करके ज्ञान का प्रकाश कर देंगे।

जो राह लेवे तरीकत की, ताए पोहोंचावे मलकूत।
राह पावे हकीकत की, ताए पोहोंचावे जबरूत।।12।।

जो तरीकत (उपासना) की राह अपनाते हैं, उन्हें मलकूत (वैकुण्ठ) पहुंचा देंगे। और जो हकीकत (सत्य ज्ञान) की राह अपनाते हैं, उन्हें जबरूत (अक्षरधाम) पहुंचायेंगे।

जो ऐहेल मारफत के, ताए देखावें खुदा सूरत।
इसक प्याला पिलाए के, मोमिन उठे क्यामत।।13।।

मारिफ्त (परमसत्य–प्रेम) के भी वारिस वे मोमिन हैं। उन्हें खुदातआला (प्रियतम परब्रह्म) अपनी नूरी सूरत (दिव्य स्वरूप) दिखायेंगे और इश्क रूपी शराब पिलाकर उन्हें अपने मूल तनों में परमधाम में जागृत कर देंगे, यही कियामत है।

करम उपासना ज्ञान की, और प्रेम अधिकार।
सब अपने–अपने मरातबै, मोमिन पोहोंचनहार।।14।।

कर्म, उपासना, ज्ञान और प्रेम – चारों प्रकार की बंदगियों में से जो जैसी राह अपनायेगा, जिस पर जिसका जितना अधिकार होगा, उसे उस मर्तबे (लक्ष्य) तक मोमिन ही पहुंचायेंगे।

ए जो शोर करत संसार में, ए है कुली दज्जाल।
तिनको मार ब्रोध मेट के, ल्यावे इस्लाम सूरत हाल।।15।।

यह जो अज्ञानरूप कलि–दज्जाल संसार में सबके दिलों में बैठकर शोर मचा रहा है (लड़ाई–झगड़े करवा रहा है)। उस अज्ञान और विरोध को खत्म करके चारों तरफ शांत व आनंद का साम्राज्य स्थापित कर देंगे।

एह राह जुदे जुदे मजहब, एही राह दज्जाल की जान।
तिनको कतल करें मोमिन, कर दें हक पहिचान।।16।।

ये जो अलग–अलग धर्म–मत–पंथ हैं। वह सब अज्ञान रूप दज्जाल के कारण है। उस अज्ञान को तारतम ज्ञान के द्वारा एक परब्रह्म के वास्तविक स्वरूप की पहचान कराके ब्रह्मात्माएं खत्म कर देंगी।

कुरबानी का बेवरा, ए मोमिन करनहार।
झूठे वजूद को मार के, पोहोंचे परवरदिगार।।17।।

कुर्बानी (समर्पण) का वास्तविक निरूपण वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) की करेंगी। वे झूठे शरीर की ''मैं'' को खत्म (कुर्बानी) करके परब्रह्म के चरणों में पहुचेंगी।

दुनियां चौदे तबकों, दे बका लदुन्नी इलम।
सिफायत के सुकन देय के, सबको किए आलिम।।18।।

चौदह लोकों के समस्त जीवों को अखण्ड परमधाम का तारतम ज्ञान (इल्मे लदुन्नी) देकर तथा सिफायत के वचन ब्रह्मवाणी सुनाकर सबको आलिम (ब्रह्मज्ञानी) बना देंगे।

भै बकसीस सबों पर, दिया इमान इसक ।
बिना अंकुरे कायम किये, लेवे पोहोंचाए हक ।।१९।।

समस्त दुनिया वालों पर ब्रह्मात्माओं की कृपा हुई है, जो सबको परब्रह्म की पहचान कराके उन्हें ईमान (विश्वास) तथा इश्क प्रदान किया । अखण्ड स्वरूप ना होने पर भी इन्हें परब्रह्म का ज्ञान देकर अखण्ड मोक्ष प्रदान कर दिया।

हुए नये रूप सबन के, दे भिस्त पार पोहोंचाए ।
नूर पार अरस अजीम, सो ए दिया दिखाए ।।२०।।

निराकर से परे पहुंचने के बाद बहिश्तों (मुक्ति स्थानों) में सभी दुनिया वालों के नये दिव्य तन होंगे । इन्हें ब्रह्मात्माओं ने अक्षर से भी परे जो दिव्य परमधाम (रंगमहल) है, उसके दर्शन करा दिये (पहचान करा दी) ।

जो नही त्रैगुन को, हक सूरत साहेदी नूर ।
सो ख्वाबी दम को देय के किया बका जहूर ।।२१।।

परब्रह्म के नूरी स्वरूप का जो ज्ञान त्रिदेवों के पास नहीं है, उसे ब्रह्मात्माओं ने समान्य जीवों को देकर संसार में परमधाम को जाहिर कर दिया ।

हक सूरत की साहेदी, दई मोमिन ने जब ।
बका बीच दुनीअ की, नजर आवे तब ।।२२।।

परब्रह्म के स्वरूप की साक्षी जब इन ब्रह्मात्माओं ने दुनिया वालों को दी, तब दुनिया वालों की ज्ञान दृष्टि इस दुनिया में रहते हुए अखण्ड परमधाम में पहुंच गयी।

यूं कै सिफतें मोमिन की, हिसाब में आवत नाहीं ।
कहनी कहां लो कहूं, इनों सिफत जाने खुदाए ।।२३।।

इस प्रकार ब्रह्मात्माओं की बहुत महिमा है, जिसका कोई हिसाब नहीं है

। उसका वर्णन कहां तक करें ? इनकी महिमा परब्रह्म खुदा तआला ही जानते हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, ए कही तुमारी सिफत ।
कोट गुनी ज्यादा इन से, सो देखोगे तुम इत ॥२४॥

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! यह सब आप ही की महिमा कही है । इससे भी करोड़ गुना ज्यादा शोभा आप इस जगत् में आगे पाओगे !

प्रकरण १२० चौपाई ४०६०

उत्तर दिस मधु सागर

अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म परमात्मा, ब्रह्म वाणी के माध्यम से परमधाम की अलौकिक शोभा का वर्णन, ब्रह्मात्माओं को सुख देने के लिए कर रहें हैं । रंगमहल की उत्तर दिशा में मधु सागर (इल्म का सागर) विद्यमान है, जिसकी हक़ीकत (वास्तविकता) को श्रीराज जी की रसना अर्थात उनकी वाणी से ही जान सकते हैं । तारतम वाणी से ब्रह्मात्माओं को परमधाम के अखंड सुखों और युगल स्वरूप श्रीराज श्यामा जी के पूर्ण स्वरूप की पहचान मिलती है ।

नूर मीठा मधु उत्तर, सुख अतंत अंगो अंग ।
इन विध रस जाने रसना, उपजत इन के संग ॥१॥

परमधाम की उत्तर दिशा में नूरमयी मधु का मीठा सागर है, जो कि खुदायी इल्म (ब्रह्मज्ञान) का सागर है । उसके द्वारा अंग-अंग में अत्यंत सुख व शांति की प्राप्ति होती है । इससे उत्पन्न होने वाले सुखों को श्रीराजजी की रसना (तारतम वाणी) ही जानती है।

नूर मीठा मधु उत्तर, ए सागर रंग श्याम ।
हक हादी रूहें रमन को, आए करे मनोरथ काम ॥२॥

उत्तर दिशा में जो नूरमयी मीठास से युक्त मधु सागर है, उसका रंग श्याम है । यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां रमण करने आते हैं, एवं अपने मनोरथ पूर्ण करते हैं ।

इत भोम श्याम जवेर की, और श्याम रंग दरखत ।
हक हादी रूहें खेलन को, तब अति शोभावे बखत ॥३॥

यहां की धरती श्याम रंग के जवाहरात की है, यहां के वृक्ष भी श्याम रंग के हैं । जब श्री राज श्यामा जी एव सखियां यहां खेलते है, तो वह समय

अत्यंत मनोहारी होता है ।

पशु पंखी रंग श्याम है, मोहोल जवेर झलकत श्याम ।
कह्या रूहें रमें संग राज के, कै मेवे स्वाद ले ताम ।।४।।

यहां के पशु-पक्षियों का रंग भी श्याम है, महलों के जवाहरात भी श्याम रंग की झलकार दे रहे हैं । यहां सखियां श्री राजजी के साथ अनेक प्रकार से रमण करती हैं और कई स्वाद के मेवें आरोगती हैं ।

इत रांग श्याम रंग हैं, श्याम सब हैं द्वार ।
श्याम दीवाल जवेरन के, ए सुख जाने परवरदिगार ।।५।।

यहां रांग की हवेलियां भी श्याम रंग की हैं, उनके सभी द्वार भी श्याम रंग के हैं । दीवारों के जवाहरात भी श्याम रंग के हैं । इन सुखों को प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

नूर मीठा मधु श्याम रंग, स्वाद रंग सुखदाए ।
ए रसना जाने मिठास को, जो बका ठौर इप्तदाए ।।६।।

मधु सागर नूरमयी श्याम रंग का और अत्यंत मीठा है । इसका स्वाद व रंग अत्यंत सुखदायी हैं । इस मीठास को अखण्ड व अनादि परमधाम की रसना ही अच्छे से जानती है ।

आगे इन रांग के, हवेलियां हार चार ।
श्याम रंग जवेर की, जहां हक हादी रूहें रमनहार ।।७।।

मधु सागर की बड़ी रांग की हवेलियों के सामने (भीतरी तरफ) छोटी रांग की चार हार हवेलियां विद्यमान हैं । यहां भी सभी वस्तुएं श्याम रंग के जवाहरातों की हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एव सखियां अनेक प्रकार से हांस-विलास करते हैं ।

पांच भोम छठी चांदनी, रस्ते दोरी बंध नूर ।
साम सामी किरना लड़े, सो क्यों कर कहूं जहूर ।।८।।

छोटी रांग के हवेलियों की पांच भोम छठी चांदनी है । यहां के सभी नूरमयी रास्ते पंक्तिबद्ध रूप से शोभायमान हैं । इनकी तेजोमयी किरणें आमने-सामने से आकर एक-दूसरे से टकराती हैं । इसकी शोभा किस प्रकार कहें ?

अन्दर एक एक हवेलियों के, मंदिर बारे बारे हजार ।
एक एक भोम में, जित रूहें रमनहार ।।९।।

छोटी रांग के अंदर एक-एक हवेलियों में, एक-एक भोम में १२-१२ हजार मंदिर शोभायमान हैं । यहां सखियां अनेक प्रकार से हांस-विनोद करती हैं।

ए गोख छज्जे जवेरन के, कै मेहेराबी द्वार ।
जहां हक हादी रूहें, बैठ बातां करनहार ॥१०॥

यहां कई प्रकार के जवाहरातों के गोख, छज्जे (झरोखे), व महाराबी द्वार शोभायमान हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां विराजमान होकर अनेक प्रकार से हांस-विनोद करते हुए प्रेम भरी बातें करते हैं ।

ए हवेलियों मिने, एक एक मंदिर दरम्यान ।
कै सेज सुख पौढ़न के, कै हिंडोले सुख आसान ॥११॥

इन हवेलियों के अंदर, एक-एक मंदिर में कई सुख शैय्या में शयन करने के हैं, कई सुख हिण्डोलों के हैं ।

संदूके साज सुख सहित, सब जोगबाई दिल माफक ।
बिछौने दुलीचे तकिये, जहां हादी रूहें बैठत हक ॥१२॥

कई सौंदर्य सामाग्रियों से भरी संदूकें सुखदायी हैं । सारी वस्तुएं सखियों के दिल के अनुसार उपलब्ध हैं । कई बिछौने, दुलीचे एवं तकिये विद्यमान हैं, जहां श्रीराजश्यामाजी एवं सखियां विराजमान होते हैं ।

ए भोम है इश्क की, जित साज सबे चेतन ।
रूप रस सुगन्ध की, नूर कह्यो ना जाए रोशन ॥१३॥

यह धरती इश्क की है, जहां की सौंदर्य सामग्री भी चेतन है । यहां के रूप (सुंदरता), रस (स्वाद), एवं सुगन्ध की दिव्यता अवर्णनीय है ।

रांग उंची आसमान लों, जवाहिर नूर रंग श्याम ।
दोए सागरों बीच जिमी, दोए जिमी बीच सागर एक ठाम ॥१४॥

बड़ी रांग की हवेलियां आकाश तक ऊंची (१४ करोड़ ४० लाख भोम) गयी हैं । इनके नूरमयी जवाहरातों का रंग श्याम है । प्रत्येक दो सागरों के बीच घने लम्बे वन की भूमि (जिमी) है तथा प्रत्येक दो जिमी के बीच एक सागर है ।

द्वार बारे हजार एक सागर को, जाए रूहें रमने को जब ।
दोए बाजू बराबर, हजार द्वार देखीए तब ॥१५॥

जब सखियां यहां रमण के लिये जाती हैं, तो सागर की एक दिशा में बड़ी रांग की हवेलियों के १२ हजार द्वार दिखायी देते हैं । इसी प्रकार सागर के दायें-बायें भी १२-१२ हजार द्वार हैं ।

सागर के चारों तरफ, मोहोल बने रंग श्याम ।
चारों तरफ चबूतरा, फेर परदक्षिना पूरे मनोरथ काम ॥१६॥

मधु सागर के चारों तरफ (बगीचों के आगे) श्याम रंग के महल शोभायमान हैं । सागर के चारों तरफ जल रौंस का चबूतरा विद्यमान है, जिसमें होकर सागर के चारों ओर घूमने (परिक्रमा देने) पर अपार आनंद की प्राप्ति होती है ।

पीछल रांग दरियाव के, जहां छत्तीस हजार द्वार ।
यूं चारों तरफ देखिए, हक हादी रूहे रमनहार ।।१७।।

सागर के पीछे की तरफ बड़ी रांग के छत्तीस हजार द्वार (१२ हजार हवेलियों के छत्तीस हजार महराब) शोभायमान हैं । इसी प्रकार चारों तरफ महाराबों की शोभा है। जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां रमण करते हैं ।

चारों तरफों छज्जे दरियाव के, दोए बाजू दोए रंग श्याम ।
दोए बाजू छज्जे जिमी के, जहां वन श्याम इस ठाम ।।१८।।

सागर के चारों तरफ हवेलियों के छज्जे शोभायमान हैं । दो तरफ (बाहरी व भीतरी) श्याम रंग की दो महाहवेलियां हैं तथा जिमी के दो तरफ (दायें–बायें) भी छज्जे हैं। वहां श्याम रंग के वन शोभायमान हैं ।

कै मेवे इन वन में, कै रस स्वाद सुखदाए ।
कै रंग रूप सुख देत हैं, सो आवत नाहीं जुबांए ।।१९।।

इन वनों में कई प्रकार के, कई रस-स्वाद के सुखदायी मेवे विद्यमान हैं। वे कई रंग व रूप (आकृति) के हैं, जो अनंत सुख प्रदान करते हैं। उसका वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

पशु पंखी सब श्याम रंग, जिनके सरूप आसक ।
रहे चितवनी दिल में, हम रिझावें ए हक ।।२०।।

यहां पशु-पक्षी भी श्याम रंग के हैं, जो प्रियतम श्रीराजजी के आशिक हैं । इनके दिल में यही चिंतन रहता है कि हम प्रियतम श्रीराजजी को किसी भी तरह से रिझायें ।

चाल बोली भाषा जुदी, जिकर करे सुभान ।
ए आवें इत मोजरे को, करत अपनी पेहेचान ।।२१।।

इन सबका चाल-चलन, बोली, भाषा सब अलग-अलग होते हैं । वे सब एकमात्र प्रियतम श्री राज जी का ही गुणगान करते रहते हैं । वे धणी के दर्शन व अभिवादन के लिये यहां आते हैं और अपनी पहचान बताते हैं ।

इन मोहोलों चारों बीच में कै कोठड़ी जवाहिर देहलान ।
कै बैठक कचेरियां, ए मोमिन दिल पेहेचान ।।२२।।

सागर के चारों तरफ आये इन महलों (हवेलियों) में जवाहरातों की अनेकों कोठरियां, दहलानें, बैठकें, कचहरियां आयी हैं, जिनकी पहचान (ज्ञान) मोमिनों के दिलों में होती है ।

कै डेरे नूर के, कै थम्भ दिवालें द्वार ।
किरना लरे साम सामी, करे रोशन नूर झलकार ।।२३।।

यहां कई नूरमयी स्थान आये हैं, कई स्तम्भ, दीवारें व द्वार हैं, जिनकी रंगबिरंगी किरणें आमने-सामने से आकर आपस में टकराती हुई सुंदर दृश्य प्रस्तुत करती हैं, जिनकी नूरमयी रोशनी चारों तरफ जगमगा रही है ।

कै बिछौने पसमी, नरम पसम सुखकार ।
जहां रूहें हादी रमत हैं, ए सुख जाने परवरदिगार ।।२४।।

यहां पर कई जगह पश्मी बिछौने बिछे हैं, जो कि अत्यंत नर्म व सुखदायी पश्म के होते हैं । यहां श्री राजश्यामा जी व सखियां लीला विहार करते हैं । इन सुखों को प्रियतम श्री राज जी ही जानते हैं ।

कै सुख स्वाद रमन के, कै बैठक सुखदाए ।
इत बैठ जब बातां करें, तब सुख आवत नाहीं जुबांए ।।२५।।

यहां कई सुख फलों के स्वाद में हैं, तो कई सुख रमण करने के हैं, कई सुख सुंदर बैठकों के हैं, यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां बैठकर जब प्रेम भरी बातें करते हैं, तो जो सुख प्राप्त होता है, वह अवर्णनीय है ।

ए टापू इन दरियाव के, ए जो शोभित हैं दरम्यान ।
तहां मोहोल जवेरन के, सो उंचे लग आसमान ।।२६।।

यहां सागर के मध्य जो टापू शोभायमान है, उस में आकाश को छूते जवाहरातों के महल विद्यमान हैं ।

रांग बराबर सोभित, रंग शोमित हैं श्याम ।
गोख छज्जे बैठक कचेरियां, जित हक पूरे मनोरथ काम ।।२७।।

टापू महल की ऊंचाई बड़ी रांग की हवेलियों के बराबर है । ये हवेलियां श्याम रंग में शोभायमान हैं । यहां अनेकों गोख, छज्जे, बैठकें, कचहरियां हैं, जहां श्री राज जी अनेक प्रकार से हांस-विलास करते हुए सखियों के मनोरथ पूर्ण करते हैं।

कै सुख इन टापू मिने, बैठक सदा सुखदाए ।
हक हादी रूहें रमे, दरियाव फिरता गृदवाए ।।२८।।

कई सुख इन टापू महलों के हैं, जिनमें चारों तरफ सुखदायी बैठकें

(छज्जे) विद्यमान हैं । श्री राज श्यामा जी एव सखियां यहां टापू महल में जब रमण करते हैं, तो चारों तरफ घेरकर विशाल सागर दिखायी देता है ।

क्यूं कहूं इन सुख की, क्यूं कहूं इन मोहलात ।
ए तो हक दिल माफक, ताकी इन जुबां कहूं क्यूं बात ।।२९।।

इन सुखों का किस प्रकार वर्णन करूं? इन महलों की शोभा किस प्रकार कहूं? ये सब तो श्री राजजी के दिल के अनुसार हैं, उसका इस जिह्वा से किस प्रकार वर्णन करें ?

ए केहेनी ऐसी होत हैं, लिए सनमंध आकार ।
हक तरफ नजर बायें के, कहे सुने हादी मुख सार ।।३०।।

इस पंचभोतिक तन में रहते हुए परमधाम का वर्णन इस प्रकार होता है कि आत्मिक दृष्टि बायीं ओर (श्यामा जी के दायीं ओर, मेरी बयीं ओर) श्री राजजी के तरफ चली जाती है और उसका वर्णन हादी (सद्गुरु) के मुख से सुनने को मिलता है ।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम हो चतुर सुजान ।
एह दो एक सुकन कहें, ताकी तुम करो पेहेचान ।।३१।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आप चतुर व ज्ञानवान हो । आपको (संक्षिप्त में) एक-दो शब्द कहे हैं, उसकी आप पहिचान कीजिये ।

प्रकरण १२१ चौपाई ४०९१

सब सुख समूह अंग के

इस प्रकरण में अखंड परमधाम के सुखों की झलक प्रस्तुत की गई है। परमधाम के पच्चीस पक्षों के अखंड सुखों को शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है । यह तो स्वयम् श्री राज जी ही अपनी लाडली अँगनाओं के लिए उन सुखों को जाहिर कर रहे हैं, जिनसे ब्रह्मात्माएं अखंड परमधाम के सुखों को चितवन के द्वारा अनुभव कर सकें ।

ए सुख अतंत अंग के, बका भोम चेतन ।
जाके रूहमय आकार, सुख लेनहार मोमिन ।।१।।

अखण्ड परमधाम की चेतन भूमिका में विराजमान स्वरूपों के अंगों में अनंत सुख उत्पन्न होते रहते हैं । सभी के स्वरूप रूहमयी (आत्मस्वरूप-चेतन) हैं। इस संसार में उन सुखों को लेने वाले मात्र मोमिन हैं ।

ए सुख नूरजमाल के, जाहिर ना पार सुमार ।
केहेनी में ना आवत, ए मोमिन करे विचार ।।२।।

अद्वितीय तेजोमयी स्वरूप वाले परब्रह्म अक्षरातीत के सुख, जिनका कोई शुमार (सीमा) नहीं है, अब तक दुनिया में जाहिर नहीं हुए थे । उसका वर्णन करना सम्भव नहीं है, उसका ब्रह्मात्माएं चितन करें ।

मोमिन हक की जात हैं, हादी तन हैं हक ।
मोमिन हादी तन हैं, एक रस दरखत इशक ।।३।।

ब्रह्मात्माएं परब्रह्म के ही स्वरूप (हक जात) हैं । श्री श्यामा जी श्री राजजी का तन (अंग) हैं और ब्रह्मप्रियाएं श्रीश्यामाजी के तन हैं । इस प्रकार यह एक इश्क रूपी एकरस वृक्ष है ।

ए सरूप इशक के, ए नूर मारफत अंग ।
हक सुख देवे इन को, सो कबू ना होवे भंग ।।४।।

ये सभी (श्रीश्यामाजी व सखियां) इश्क के ही स्वरूप हैं और मारिफ्त (परमसत्य) स्वरूप श्री राजजी के नूरी अंग हैं । प्रियतम श्री राज जी इन्हें जो इश्क का सुख प्रदान करते हैं, वह सिलसिला कभी भी रुकने वाला नहीं है ।

ए रूहें रमे राज सो, धाम अन्दर लेवे सुख ।
कै सुख नैनो लेवहीं, देखे नूरजमाल का मुख ।।५।।

सखियां श्री राज जी के साथ अनेक प्रकार से रमण करती हैं, और रंगमहल के अंदर कई प्रकार से सुख लेती हैं । कई सुख श्री राजजी के नैनों से प्राप्त करती हैं, कई सुख श्री राजजी का सुंदर मुखारविंद देखकर प्राप्त करती हैं ।

कै सुख अंग परस के, कै सुख लेवे रसना बैन ।
कै सुख हांस विनोद मे, कै सुख लेवे चातुरी चैन ।।६।।

कई सुख श्री राज जी के अंगों के स्पर्श से मिलता है, कई सुख उनके प्रेम भरे मधुर वचनों के द्वारा मिलता है । कई सुख उनके साथ हांस-विनोद करते हुए मिलता है, और कई सुख उनके चतुराई भरे चरित्र से मिलता है ।

रमते कै सुख उपजे, कै सुख बंदो श्रवनो ।
कै सुख सुगन्ध प्रेमल, ए जानत दिल मोमिन ।।७।।

श्री राज जी के साथ रमण करते समय कई प्रकार के सुख मिलते हैं, कई सुख पशु-पक्षियों की मधुर वाणी से मिलते हैं । कई सुख प्रेम भरी सुगंधि से मिलते हैं । इन सुखों को ब्रह्मप्रियाओं का दिल ही जानता है ।

कै सुख बस्तर भूखन में, कै सुख रसना रस स्वाद ।
क्यू कर इन जुबां कहूं, जाकी बका भोम बुनियाद ।।८।।

कई सुख वस्त्राभूषणों के हैं, कई सुख अनेक प्रकार के रस-स्वाद के मेवों के हैं । अखण्ड परमधाम के कण कण में विद्यमान मूलभूत दिव्य गुणों का किस प्रकार वर्णन करें ?

कै सुख धाम मोहोलन मे, नव भोम दसमी आकाश ।
किरना लरत आप मे, जोत न माए आकाश ।।९।।

कई सुख रंगमहल की हवेलियों के हैं, जिनकी नौ भोम एवं दसवीं आकाशी है । उनकी रंगबिरंगी किरणें आपस में टकराती हुई जंग करती प्रतीत होती हैं, उनकी तेजोमयी किरणें इतनी अधिक हैं कि वे आकाश में नहीं समा पातीं ।

एकै हीरा एक रस, मिने एक धात कै रंग ।
रंग जवाहिर जुदे जुदे, कबूं बदल न होवे भंग ।।१०।।

सम्पूर्ण रंगमहल एक ही हीरे का तथा एकरस (सभी जगह एक समान शोभा से युक्त) है । एक ही धातु के अंदर अनेकों रंग जैसी स्थिति है । जवाहरातों के अगल-अलग रंग दृष्टिगोचर होते हैं । कभी भी यह शोभा कम नहीं होती है ।

चेतनता इन मोहोल की क्यूं कहूं सदा सुखदाए।
दिल माफक नूरजमाल के, किए सुख इप्तदाए।।11।।

इन महलों की चेतना के विषय में क्या कहूं? ये सदा ही सुखदायी स्वरूप वाले हैं। प्रियतम अक्षरातीत के हृदय के अनुसार अनादि काल से ऐसे ही सुखदायी स्वरूप में विद्यमान हैं।

माहें अगिनित मोहोलाएत, अगिनित हैं मंदिर।
जित हक हादी रूहें, करें रमन अन्दर।।12।।

रंगमहल के अंदर असंख्यों महल एवं मंदिर शोभायान हैं, जहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां हांस-विलास करते हुए रमण करते हैं ।

क्यूं कहूं सुख अन्दर के, लवाजमे नाही सुमार ।
क्यूं कहूं सुख सेज के, ए मोमिन करे विचार ।।१३।।

इन महलों एवं मंदिरों के अंदर के सुख किस प्रकार कहूं? जिसमें हर प्रकार की बेशुमार सामग्री रखी है ? यहां प्राप्त होने वाले शैय्या के सुखों के विषय में किस प्रकार वर्णन करूं? उसका ब्रह्मात्माएं चिंतन करें ।

कै सुख बिछौने के, क्यूं कहू सन्दूके साज ।
सबद ना पोहोंचत, ए केहेत ही आवत लाज ॥१४॥

यहां कई सुख नूरमयी कोमल बिछौनों के हैं । सन्दूकों में विद्यमान सौदर्य सामग्री के विषय में क्या कहूं? वहां तक माया के शब्द नहीं पहुंचते । उसका वर्णन करने में लज्जा (शर्मिंदगी) आती है ।

नव सौ चोवीस हवेलियां, एक एक में अस्सी मंदिर ।
अन्दर चौक कै भांत के, तहां रूहें रमे अंदर ॥१५॥

रंगमहल के एक फिरावे (चार पंक्तियों) में कुल ९२४ हवेलियां आयीं हैं । प्रत्येक हवेली में ८०-८० मंदिर हैं । हवेलियों के अन्दर कई प्रकार के चौक, चबूतरे आये हैं, जहां ब्रह्मप्रियाएं रमण (हांस-विलास-प्रेम-विनोद) करती हैं ।

जैसे एक भोम में, त्यूं ही नवो भोम जान ।
तिन में जुदी जुदी भांत हैं, सो ए मोमिन करे पेहेचान ॥१६॥

रंगमहल के एक भोम की जैसी शोभा है, वैसी ही शोभा नवों भोमों की जानिये । इनमें थोड़ा-थोड़ा अंतर (विशेषता) है, जिसकी सुंदरसाथ पहचान करें ।

कै सुख गृद वन के, कै सुख धाम गृदवाए ।
कै मेवे सुगन्ध के, ए मेहेर हक दिल मे ल्याए ॥१७॥

कई सुख रंगमहल के चारों तरफ आये वनों के हैं, कई सुख उन वनों में आये मेवों एवं उनके सुगंध के हैं । ये सारे सुख श्री राजजी अनंत लाड व प्रेम पूर्वक अपनी अंगनाओं को देते हैं ।

कै सुख हौजकौसर के, कै सुख सातो घाट ।
कै सुख पुल मोहोलात के, क्यूं कहूं बका भोम ठाट ॥१८॥

कई सुख हौजकौसर ताल में हास-विलास करने के हैं, कई सुख सातों घाटों में रमण करने के हैं । कई सुख दोनों पुल महलों (केलपुल व वटपुल) के हैं । इस प्रकार अखण्ड परमधाम का ऐश्वर्य किस प्रकार कहें ?

कै सुख जमुना त्रट के, जाकी रतन जडित किनार ।
कै देहुरियो मोहोल चबूतरों, ए मोमिन देखनहार ॥१९॥

कई सुख यमूना तट के हैं, जिसका किनारा रत्न जड़ित (जल रौंस) है । इस पर कई (छूटक) द्योहरियां, (१) महल एवं (१) चबूतरे शोभायमान हैं । उसे देखने वाली तो मात्र ब्रह्मात्माएं ही हैं ।

कै सुख जोए किनार में, कै सुख नूर कुंज वन ।
कै सुख नूर चबूतरे, दोए बाजु मरोड़ रोशन ॥२०॥

कई सुख यमूना जी के किनारे रमण करने के हैं, कई सुख नूरमयी कुंजवनों के हैं । कई सुख यमूना जी के दोनों तरफ आयी पालों के हैं, जिन पर अग्नि कोण के मोड़ के पश्चात् ९०-९० द्योहरियां आयी हैं ।

कै सुख हौज अन्दर के, चारों घाट नूर दरखत ।
कै सुख लेवे हिंडोलन के, कै सुख देहुरियों इत ॥२१ ॥

कई सुख हौज कौसर ताल के अंदर हैं, जहां चारों घाटों में नूरमयी वृक्ष शोभायमान हैं । वहां हिण्डोलों में झूलते हुए कई सुख प्राप्त करते हैं तथा कई सुख रत्न जड़ित जगमगाती हुई द्योहरियों के हैं ।

कै सुख अन्दर परदक्षिना, कै सुख टापू मोहोलात ।
हक हादी रूहे रमते, जित बैठ करत हैं बात ॥२२॥

कई सुख अंदर (ताल के चारों ओर) जल रौंस से प्रदक्षिणा (भ्रमण) करने के हैं, कई सुख ताल के मध्य स्थित टापू महल के हैं । श्रीराजश्यामा जी एवं सखियां यहां रमण करते हैं, और विराजमान होकर प्रेम भरी बातें करते हैं।

क्यू कहू सुख टापू के, मंदिर जो गृदवाए ।
वन शोभित नूर रोशन, सो आवत नाहीं जूबांए ॥२३॥

टापूमहल के सुख किस प्रकार वर्णन करें ? जिसमें चारों तरफ मंदिरों की दो पंक्तियां घेरकर आयी हैं । टापूमहल की किनार पर चारों तरफ (गुर्जो के बीच) नूरमयी रोशनी से जगमगाते वन शोभायमान हैं । उसकी शोभा अवर्णनीय है ।

कै सुख मानिक पहाड़ के, कै सुख इन दरम्यान ।
कै सुख गृद तलाव के, रहे मोमिन दिल पेहेचान ॥२४ ॥

कई सुख माणिक पहाड़ की सुंदरता के हैं, कई सुख उनके भीतर आयी हवेलियों के हैं । कई सुख माणिक पहाड़ के चारों तरफ आये तालों के हैं, जिनकी पहचान मोमिनों के दिलों में रहती है ।

कै सुख नेहेरे वन की, कै सुख चौगान खेलन ।
कै सुख नेहेरे नूर में, इत कै सुख लेवे हिडोंलन ॥२५॥

कई सुख वनों में आयी नहरों के हैं, कई सुख पश्चिम की चौगान (रंगमहल के पश्चिम में आये रेती के मैदान) में खेलने के हैं । कई सुख नूरमयी नहरों के हैं, कई सुख हिण्डोलों में झूला झूलने के हैं ।

कै सुख हार हवेलिया, कै सुख रांग दरम्यान ।
कै सुख द्वार चबूतरो, कै सुख मुनारों पेहेचान ।।२६।।

कई सुख छोटी रांग की चार हार हवेलियों के हैं । कई सुख बड़ी रांग की हवेलियों के अंदर हैं । कई सुख उनके द्वारों और चबूतरों के हैं । कई सुख मीनारों (चौरस गुर्जो) के हैं ।

कै सुख आठो सागर, जिनके मोहोल तरफ चार ।
कै सुख टापू सागर, एह क्यों कहू रूहों बिहार ।।२७।।

कई सुख आठों सागरों के हैं, जिनकी चारों तरफ बड़ी रांग की हवेलियां शोभायमान हैं । कई सुख सागर के मध्य आये टापू महलों के हैं । यहां होने वाली ब्रह्मप्रियाओं की लीला के विषय में किस प्रकार वर्णन करूं?

कै सुख जिमी वन के, सागरों दरम्यान ।
कै सुख पशु पंखीयन के, जुदे जुदे भोम जान ।।२८।।

कई सुख प्रत्येक दो सागरों के बीच आये जिमी के घने वनों के हैं । कई सुख यहां के पशु-पक्षियों के हैं, जो कि यहां वनों के अलग-अलग भोमों में रहते हैं ।

और कै सुख धाम गृद के, बट पीपल चौकी हिंडोलन ।
कै सुगन्ध फूल बाग में, कै सुख लाल चबूतरा रोशन ।।२९।।

कई सुख रंगमहल के चारों तरफ के हैं । कई सुख (रंगमहल की दक्षिण दिशा में आये) बट-पीपल की चौकी के हिण्डोलों में झूला झूलने के हैं । कई सुख रंगमहल की पश्चिम दिशा में आये फूलबाग में फूलों की सुगन्धि के हैं । कई सुख उत्तर दिशा में आये नूरमयी लाल चबूतरा के हैं ।

कै सुख चौक वन के, कै सुख मोहोल पुखराज के ।
आठो पेड़ जो भोम में, जहां नित रमे रूहे राज ।।३०।।

कई सुख वनों (बड़ोवन, ताड़वन, मधुवन, महावन) में आये चौक (बगीचों) के हैं । कई सुख पुखराज पहाड़ के महलों के हैं , जो जमीन पर आये आठों पेड़ (आधार स्तम्भ रूप ५ महल + २ घाटी की सीढ़ियां + १ पुखराजी ताल) आये हैं, जहां नित्य प्रति श्री राज श्यामा जी एवं सखियां रमण करते हैं ।

और सुख इत बंगलन के, कै सुख नेहेरे उतरी नूर ।
कै सुख जमूना मूल के, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।३१।।

और यहां स्थित बंगलों में कई सुख हैं । कई सुख नूरमयी नहरों के हैं, जो पुखराजी ताल की चांदनी से फीलपायों के द्वारा नीचे उतरती हैं । कई सुख

यमूनाजी के मूलकुण्ड के हैं । इन सबकी शोभा शब्दातीत है ।

कै सुख खूबी देखिए, कै सुख मरोड खाए ।
कै सुख दोनों पुलो मिने, जित सातो घाट इप्तदाए ॥३२॥

कई सुख ढपी और खुली यमूना जी की शोभा (पाल पर आये द्योहरियों) के हैं । कई सुख ईशान कोण में आयी यमूना जी की मरोड़ के हैं । कई सुख दोनों पुलों के हैं, जिनके मध्य यमूनाजी के दोनों तरफ अनादि काल से जगमगाते हुए सातों घाट विद्यमान हैं।

कै सुख चारो चबूतरों, जो चौक आगे धाम नूर ।
केहेनी सिफत और रहे, तो क्यूं कर कहू जहूर ॥३३॥

कई सुख रंगमहल के सामने आये चारों चबूतरों एवं नूरमयी चांदनी चौक के हैं । उनकी शोभा में कहे हुए शब्द माया में ही रह जाते हैं, तो उनकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

इन भांत कै सुख हैं, भोम बका चेतन अरस ।
जो कहूं सब इतही रहे, ए कह्यो न जाए सरस ॥३४॥

इस प्रकार परमधाम की अखण्ड व चेतन भूमिका में कई प्रकार के सुख हैं । उनकी शोभा में जो भी कहें, सब यही संसार के अंतर्गत ही रह जाते हैं। परमधाम की वास्तविक शोभा का वर्णन सम्भव नहीं हो पाता है ।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम हो हक की जात ।
महंमद अलहेसलाम ने, तुमारी करी सिफाएत ॥३५॥

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आप ही प्रियतम अक्षरातीत की अंगरूपा आत्मा हो । मुहम्मद अलैहिस्सलाम (हकी सूरत) ने आपकी सिफायत की (परमधाम का ज्ञान प्रदान किया) है ।

प्रकरण १२२ चौपाई ४१२६

एह रस जाने सुजान

इस प्रकरण में श्री परमधाम के सुखों और वहां होने वाले अखंड लीला विहार का सजीव चित्रण ब्रह्मात्माओं के वास्ते हुआ है । परमधाम के अखंड सुखों को श्रीराज श्यामा जी के साथ रमण करने वाली ब्रह्म सृष्टियां ही जान सकती हैं । वे ही इन सुखों के अधिकारी हैं ।

ए विध अरस अज़ीम की, रस स्वाद सुखदाए ।
ए जाने रूहें राज संग, रस रसना पोहोंचे ताए ।।१।।

दिव्य परमधाम में इस प्रकार की लीला है कि वहां अनेक प्रकार के रस-स्वाद (आनंद) प्राप्त होते रहते हैं । इसे श्री राजश्यामाजी एवं सखियां ही जानते हैं क्योंकि श्री राजजी की मीठी रसना का आनंद उन्हें ही प्राप्त होता है ।

रसना स्वाद में लेत हैं, सो रूहे जाननहार ।
जो संग राज के रेहे के, नित्याने करत बिहार ।।२।।

परमधाम में सखियां जो श्री राजजी की मीठी रसना का आनंद लेती हैं, उसे वे ही जानती हैं, जो सदैव प्रियतम श्री राज जी के साथ रहती हैं और नित्यप्रति आनंदपूर्वक लीला विहार करती हैं ।

कै सुख लेत मिने बन के, बिहार करत बीच वन ।
तिन के स्वाद जुदे जुदे, सो जुबां न आवे इत ।।३।।

कई सुख वनों के अंदर अनेक प्रकार से विहार करते हुए लेते हैं । उसके आनंद भी अलग-अलग कई प्रकार के हैं । जिसका वर्णन यहां की जिह्वा से नहीं हो सकता है ।

एह विध है सुपन में, सो केहे ना सके क्यूं ए कर ।
ए तो अखण्ड ठौर की, सुख चेतनता सब पर ।।४।।

यहां स्वप्न के संसार में इस प्रकार की वस्तुएं हैं, जिसका उदाहरण देकर परमधाम की शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं होता है । यह तो अखण्ड परमधाम के सुख हैं, जहां की प्रत्येक वस्तु चेतन (आत्मस्वरूप-रूहमयी) है ।

रस मीठे स्वाद सबन में, ताकी जात गिनी ना जाए ।
जुदी जुदी विध वन में कायम सुख सदाए ।।५।।

यहां के सभी फलों में मीठे (स्वादिष्ट) रस का स्वाद है । उन फलों के प्रकार (प्रजातियां) गिनना सम्भव नहीं है । वनों में अलग-अलग अनेक प्रकार के फल हैं, जो हमेशा ही सुखदायी होते हैं ।

कै विध रस फूल फल में, कै पात डार जड़े जात ।
ए रस मोमिन जानही, जाकी भै महंमद सिफायत ।।६।।

कई प्रकार के रस फलों एवं फूलों में हैं । कई स्वाद पत्ते, डालियों एवं जड़ों की प्रजातियों में हैं । इनके रस (स्वाद) ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं, जिन पर मुहम्मद (श्यामाजी) की सिफायत हुयी होती है (तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ होता है)

कै भांतो सुख लेत हैं, रमन की सब ठौर ।
कै भांतो रस उपजत हैं, भांत भांत कै और ॥७॥

यहां वनों में रमण करते हुए सखियां कई प्रकार से सुख प्राप्त करती हैं । कई प्रकार से भांति-भांति के अनेक रस (हांस-विनोद) उत्पन्न होते हैं ।

कै सुख रसना देत हैं, सो लेत मिठास मोमिन ।
जाको हक अन्दर करें, ताको होए कैसो दिल रोशन ॥८॥

कई सुख श्री राज जी अपनी मीठी रसना से प्रेम भरे मीठे वचन बोलकर प्रदान करते हैं, उस मीठास को ब्रह्मप्रियाएं ग्रहण करती हैं । जिन प्रियाओं को श्री राजजी अपने हृदय में बसाये रहते हैं, उनके हृदय का आनंद व प्रेम कैसा होगा ?

हक के सनमुख बेठ के, जो बातें करत बनाए ।
हक जाए श्रवना देत हैं, अनेक भाँत सुखदाए ॥९॥

वे सखियां श्री राज जी के सम्मुख विराजमान होकर उनसे प्रेम पूर्वक बातें करती हैं, श्री राजजी भी ध्यानपूर्वक इनकी बातें सुनते हैं । इस प्रकार अनेक प्रकार का आनंद सखियां प्राप्त करती हैं ।

मिठास इन रसना मिने, क्यूं कहूं केहेनी ए सुख ।
जो रमते लेवें राज संग, देखे नूरजमाल का मुख ॥१०॥

श्री राजजी की रसना में जो मिठास है, जो श्री राजजी के साथ खेलते-रमण करते हुए सखियां प्राप्त करती हैं, उस सुख का वर्णन इस जिह्वा से किस प्रकार करूं? रमण करते हुए सखियां श्री राज जी के सुंदर मुखारविंद को प्रेमपूर्वक निहारती हैं ।

रीझत बातां करते, रीझत सुनते बैन ।
रीझत देखत रूप में, सुख उपजत नैन मिलाए नैंन ॥११॥

श्री राज जी से बातें करते हुए, उनके प्रेम भरे मधुर वचनों को सुनकर, उनके सुंदर स्वरूप को देखकर सखियां प्रसन्न हो जाती हैं । श्री राजजी के नेत्रों से अपने नेत्र मिलाने पर अनंत सुख उत्पन्न होता है।

कै सुख असवारी मिने, खिलौने बाजंत्र बजाए ।
कै विध अंत्रीख चलते, कै सुख पावे सुखदाए ॥१२॥

कई सुख सुखपालों की सवारी के समय प्राप्त होते हैं, जब पशु-पक्षी साथ में बाजंत्र बजाते हुए चलते हैं । उस समय कई पक्षी हवा में कई प्रकार से उड़ते हुए साथ में चलते हैं । इस प्रकार सखियां सुखदायी सवारी का आनंद

पाती हैं ।

कै विध खेले खिलौने, रिझावत रेहेमान ।
रटत जिकर रात दिन, सो सुख जाने हक सुभान ॥१३॥

कई प्रकार के पशु-पक्षी खेल-करतब दिखा कर धणी को रिझाते हैं । दिन-रात धणी के ही गुणगान करते रहते हैं । उन सुखों को प्रियतम अक्षरातीत ही जानते हैं ।

कै भांतो खेलन की, रस घाट पाल और वन ।
हक हादी रूहें रमते, कही जाए ना खुसाली मन ॥१४॥

कई प्रकार से श्री राज श्यामा जी एवं सखियां सातों घाटों, पाल और बड़ोवन में खेल रामतें करते हैं । उस समय तन–मन में जो प्रसन्नता होती है, वह अवर्णनीय है ।

कै भांतों झीलन की, लेते सुख जल क्रीडन ।
जिस रस सुगन्ध शीतल, लेहेरा आवे दिल मोमिन ॥१५॥

कई प्रकार से झीलना एवं जल क्रीडा के सुख यमूना जी में लेते हैं, जिसका जल सुगंधित, शीतल व मिश्री से भी अधिक मीठा है । उस सुख सागर की लहरें यहां मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के दिलों में आ रही हैं ।

परस्पर जल सींचत, रस उपजत अतंत ।
सुख परसे जल कै विध, रस सब सुखदाई इत ॥१६॥

झीलना करते समय सखियां आपस में एक दूसरे पर जल छिड़कती हैं, जिससे बहुत आनंद आता है । इस प्रकार यमूना जी के इश्कमयी जल के स्पर्श से अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं । यहां हर प्रकार का आनंद प्राप्त होता है ।

कै सुख बस्तर पेहेरन के, होवे मन चाह्या हाजिर ।
सब अंग सुख देत हैं, पेहेनत समें इन पर ॥१७॥

कई सुख झीलना के पश्चात् वस्त्राभूषणों का श्रृंगार करने में प्राप्त होता है। मनचाहे वस्त्र एवं आभूषण इच्छानुसार उपस्थित हो जाते हैं । पहनते समय ये वस्त्राभूषण सभी अंगो को सुख प्रदान करते हैं ।

कै विध वन खेलन की, सब मिनों मिने करे प्यार ।
ले जावे हेत हंस हंस, ए आवे मोमिन दिल विचार ॥१८॥

कई प्रकार के सुख वनों में खेलने के हैं, सभी सखियां आपस में एक दूसरे को बहुत प्यार करती हैं । खेलने के लिये हंसते–हंसते प्रेमपूर्वक एक दूसरे

का हाथ पकड़कर खींच ले जाती हैं । उन सुखों का विचार मोमिनों के दिलों में ही आता है ।

कै सुख इन अरोगन में, लेवे मेवे मिठाई वन ।
अरोगते बातां करें, आप अपने सब तन ॥१९॥

कई सुख श्रृंगार के पश्चात् वनों में अरोगने के होते हैं, जब अनेक प्रकार के मेवे-मिठाई अरोगते हैं । आरोगते हुए श्री राज जी, अपनी अंगरूपा सखियों से अनेक प्रकार से प्रेम भरी बातें करते हैं ।

कै सुख इन अन्दर में, जो सुनत हक सुभान ।
रीझ के रूहों ऊपर, सुख कोई ना इन समान ॥२०॥

जब प्रियतम श्री राज जी प्रेमपूर्वक सखियों की (हमारी) बातें सुनते हैं, तब इसमें कई सुख प्राप्त होते हैं । श्री राज जी हम सखियों के ऊपर प्रसन्न हो जाते हैं, इस सुख के तुल्य अन्य कोई भी सुख नहीं है।

जब असवारी कर फिरे, आवत हैं घर धाम ।
कै स्वाद रस तिन समें,होए पूरन मनोरथ मन काम ॥२१॥

जब वनों से सुखपालों में सवार होकर वापस अपने घर-रंगमहल पहुंचते हैं, तब मार्ग में अनेक प्रकार से हांस विनोद करते हैं । जिससे सभी सखियों के मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

धाम चांदनी चौक में, करे मुजरा खिलौने जब ।
सुख लेवे उतर के, अरस अन्दर पैठत तब ॥२२॥

रंगमहल के सामने चांदनी चौक में जब सुखपाल उतरते हैं, तब उस समय समस्त पशु-पक्षी धणी का अभिवादन करते हैं । इस प्रकार सखियां सुखपालों से उतर कर पशु-पक्षियों का आनंद लेती हैं, फिर रंगमहल के अंदर प्रवेश करती हैं ।

गृद मंदिर दोए हार छोड के, जित चौक अस्सी मंदिर ।
स्वेत श्याम मंदिर बीच में, इन चौक राज अरोगे अन्दर ॥२३॥

मुख्य द्वार से अंदर प्रवेश करते हुए मंदिरों की दोनों पंक्तियों को छोड़कर प्रथम चौरस हवेली में पहुंचते हैं, जिसमें ८० मंदिर विद्यमान हैं । (रसोई की हवेली में १०-१० मंदिर के लम्बे तीन दहलानों की वजह से मंदिरों की संख्या ३० कम हो जाती है।) इस हवेली में श्याम रंग का रसोई का मंदिर है और श्वेत रंग का भण्डार का मंदिर है, इन दोनों मंदिरों के बीच सीढ़ियों का मंदिर है। इस हवेली के मध्य चबूतरे पर श्री राज श्यामा जी एवं सखियां भोजन आरोगने की

लीला करते हैं।

आरोग चढे चौथी भोम को, जहां निरत करे बाई नवरंग ।
कै सुख तहां देख के, पौढे पाँचमी भोम अंग संग ।।२४।।

आरोगने के पश्चात् सीढ़ियों वाले मंदिर से चौथी भोम जाते हैं, वहां नवरंग बाई नृत्य करती हैं। वहां नृत्य के कई प्रकार के सुख प्राप्त करके पांचवीं भोम जाते हैं, जहां श्रीराजजी अपनी अंगरूपा प्रियाओं के साथ शयनलीला करते हैं।

एह विध पौढ़न की, सो रस जानत सुख मोमिन।
कै भांतों विलास सुख, एह रसना क्यों कहे रोशन ।।२५।।

इस शयन लीला में जो सुख मिलता है, उसे ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं । ब्रह्मप्रियाएं अपने प्रियतम के साथ अनेक प्रकार से आनंद लेती हैं, उस आनंद का वर्णन माया की इस जिह्वा से सम्भव नहीं है ।

इत सब विध सुख धाम के, रूप रस सुगन्ध श्रवन ।
अंग परस सुख एकता, आवे जुबां ना हिसाब तिन ।।२६।।

यहां परमधाम में सभी प्रकार के सुख हैं, रूप, रस, सुगन्ध, श्रवण तथा अंगों के स्पर्श के द्वारा एकरूप होने का। उन सुखों का जिह्वा से वर्णन सम्भव ही नहीं है ।

इत तीनों मोहोल बिलास के, सुख जानत हक सुभान ।
या हादी जानत मोमिन, जिनको हक पेहेचान ।।२७।।

यहां पांचवी भोम के शयन के मंदिरों में तीन प्रहर (रात्रि ९ बजे से प्रातः ६ बजे) तक विलास के जो सुख प्राप्त होते हैं, उसे या तो प्रियतम अक्षरातीत जानते हैं, या तो श्यामाजी और ब्रह्मात्माएं जानती हैं, जिनको श्री राजजी की पहचान हो गयी होती है ।

जब हक हादी उठे प्रात को, तब खुले सब द्वार ।
सब रूहें आए मिली चलीं, प्रात के समे बिहार ।।२८।।

जब श्री राज श्यामा जी प्रातः काल उठते हैं, तो रंगप्रवाली मंदिर के सभी द्वार खुल जाते हैं । सभी सखियां भी अपने-अपने मंदिरों से आ जाती हैं, फिर सब मिलकर प्रातः काल के विहार (तीजी भोम की पड़शाल) के लिये चल पड़ती हैं ।

आए तीसरी भोम में, देत सबों दीदार ।
सब सिनगार कर बैठे जित, करत आरोगने बिहार ।।२९।।

तीसरी भूमिका के पड़शाल में आकार श्रीराजश्यामाजी एवं सखियां सभी पशु-पक्षियों को दर्शन देते हैं । फिर सब आभूषणों का श्रृंगार करके चबूतरे पर विराजमान होते हैं और प्रेम भरी बातें करते हुए मेवा-मिठाई आरोगने की लीला करते हैं ।

फेर आए के मिल बैठे, लग कठेडे सिंहासन ।
आवे नूरजलाल मुजरे, बैठे नूरजमाल झरोखन ।।३०।।

उसके पश्चात् श्री राजश्यामा जी पुनः पड़शाल में आकर कठेड़े (झरोखे) से लगकर रखे सिंहासन पर (झरोखे को पीठ करके) विराजमान हो जाते हैं, साथ में कुछ सखियां भी रहती हैं । उस समय अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत परब्रह्म के दर्शन और अभिवादन करने आते हैं ।

नूर जलाल की निमख में, कै कोट इण्ड उपजत खपत ।
मुजरे आवे नूर जमाल के, प्रात बखत सींचत ।।३१।।

अक्षर ब्रह्म के पलक झपकने मात्र समय में कई करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न होकर लय को प्राप्त हो जाते हैं । वे अक्षरातीत परब्रह्म के दर्शन करने आते हैं, उन्हें श्री राजजी अपनी प्रेममयी नजरों से देखते (सींचते) हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, इन सुख को नाहीं सुमार ।
ए बीतक तुमारी कही, तुम ताकी करो विचार ।।३२।।

महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! परमधाम के इन सुखों का कोई पारवार नहीं है । धाम लीला की ये सारी बातें आपकी अपनी हैं, उसका आप चिंतन कीजिये ।

प्रकरण १२३, चौपाई-४१५८

सुख उपजत रूहों को

इस प्रकरण में ब्रह्मात्माओं की महिमा का वर्णन है । इन ब्रह्मांगनाओं के अंगों में स्वयम् श्रीराज जी विध-विध के यत्न कर सुख उपजाते हैं । श्री राज जी ने अपने चरणों तले विराजमान ब्रह्मात्माओं को एक ही पल में छः दिनों की लीला दिखाकर अपनी पूर्ण पहचान दे दी है । यही क्यामत है ।

ए सुख उपजत रूहों को, करें मेहेर सुभान हक ।
ए अरस परस एक हैं, नूर बका तन इशक ।।१।।

परमधाम में ब्रह्मप्रियाओं के हृदय में अनंत सुख उत्पन्न होते हैं।

प्रियतम अक्षरातीत उन पर पल पल अनेकों तरह से लाड लुटाते हैं। श्री राज श्याम जी एवं सखियां परस्पर एक ही स्वरूप हैं। उनके तन अखण्ड, नूरमयी व इश्क से परिपूर्ण हैं।

ए सुख उपजे अंग में, कई इश्क तरंग ।
रूह जात हैं हक की, सो नूर जमाल के अंग ।।२।।

उन सखियों के हृदय में अनेक प्रकार के सुख उत्पन्न होते रहते हैं, अनेक प्रकार से इश्क की तरंगे उठती रहती हैं । वे ब्रह्मांगनायें परब्रह्म श्री राज जी के ही स्वरूप हैं, उन्हीं (तेजोमयी स्वरूप वाले प्रियतम अक्षरातीत) के अंग हैं।

एक रस एह दरखत, एक रस फूल फल पात ।
एक रस डारी इनकी, एकै रस हक जात ।।३।।

यह परब्रह्म श्री राज जी रूपी वृक्ष एखरस है, इसके फल, फूल, पत्ते व डालियां (श्यामाजी, सखियां, पशु-पक्षी आदि) सब एकरस हैं। परमधाम में सभी श्री राजजी के ही स्वरूप व एकरस हैं ।

ए बका ठौर सुख कायम, रूहें नूरजमाल सुख चैन ।
मेहर कर बोलावत, मुख मीठा रसना बैन ।।४।।

ये अखण्ड परमधाम के शाश्वत सुख हैं । यहां ब्रह्मप्रियाएं अक्षरातीत परब्रह्म के साथ प्रेम व आनंदपूर्वक रमण करती हैं । प्रियतम श्री राज जी सखियों को प्रेम पूर्वक बुलाते हैं और अपने मुख से प्रेम भरे मीठे वचन कहते हैं ।

सुनत श्रवन सुख पावत, नित देखे दीदार ।
हस्त परस सुख लेत हैं, होए रूहों अंग सुख करार ।।५।।

उन प्रेम भरे वचनों को सुनकर सखियां अत्यंत सुख पाती हैं । वे प्रियाएं नित्य प्रति प्रियतम अक्षरातीत के सुंदर मुखारविंद का दर्शन करती हैं । उनके हाथों के स्पर्श का सुख लेती हैं, तब सखियों को अंग में अनंत सुख व शांति की अनुभूति होती है ।

हेते राज हंसत हैं, सामी रूहे नैनों नैन मिलाए ।
बैन रसना सो बोलत, एह कायम सुख सदाए ।।६।।

श्री राज जी सखियों को सुख प्रदान करने के लिये उनके सम्मुख आकर उनके नैनों से नैन मिलाकर प्रेम पूर्वक हंसते हुए अपनी मधुर वाणी से बातें करते हैं । यह तो प्रियतम के शाश्वत और अखण्ड सुख हैं ।

ए आसक मासूक अपने, ले स्वाद अपना सुख ।
परस्पर रूह रीझत, सामे देखे अपना मुख ।।७।।

वे (श्री राज श्यामाजी एवं सखियां) एक-दूसरे के आशिक व माशूक हैं । वे आपस में कई प्रकार से सुख लेते–देते रहते हैं । सखियां आपस में रीझते और रिझाते रहती हैं । श्री राजजी के सम्मुख आकर उनके नैनों में अपना मुख देखती हैं।

ए सुखकारी सत भोम में, उपजत हैं सुख चैन ।
रमे हंसे हंसावहीं, नैनों नैन मिलाए नैन ।।८।।

परमधाम की अविनाशी व आनंदमयी भूमिका में पल पल अनेक प्रकार के सुख व शांति प्राप्त होते रहते हैं । श्री राज श्यामा जी एवं सखियां अनेक प्रकार से नैनों से नैन मिलाकर, हंसते-हसाते हुए प्रेम व आनंद पूर्वक रमण करते हैं ।

कै सुख तिरछी चितवनी, कै सुख लेत भोम सैन ।
कै चीज हाथों देवहीं, कै भांतों अधुर मधुर बैन ।।९।।

सखियों को कई सुख श्री राजजी की प्रेम भरी तिरछी नजर से प्राप्त होते हैं, कई सुख श्री राजजी के नैनों के प्रेम भरे इशारों से होते हैं । कई सुख तब होते हैं, जब श्री राज जी अपने हाथों से कोई वस्तु सखियों के हाथों में देते हैं । कई प्रकार के सुख श्री राजजी के अधरों से निकलने वाली मधुर वाणी से मिलते हैं ।

ए बका भोम वाहिदत की, सुख को नाहीं सुमार ।
कहां लों ए गिनती गिनों, जाको वार न आवे पार ।।१०।।

इस स्वलीला अद्वैत अखण्ड परमधाम के सुखों का कोई पारावार नहीं है । इनकी कहां तक गिनती करें, जिसका कोई पारावार नहीं है ?

ए मेहर मोमिनों पर, जो हैं हक की जात ।
महंमद आया इनों वास्ते, इनो की करी सिफात ।।११।।

प्रियतम अक्षरातीत की यह कृपा ब्रह्मात्माओं पर हमेशा ही रहती है, क्योंकि वे परब्रह्म के ही स्वरूप (अंगरूप) हैं । मुहम्मद साहब इन्हीं के वास्ते कुर्आन लेकर आये, जिसमें इन्हीं की प्रशंसा की हुयी है ।

इनों को दीदार हक का, दिया जिमी नासूत ।
मलकूत लों खेल इन का, देखाया पेड जबरुत ।।१२।।

इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) को इस नासूत जिमी (मृत्युलोक) में ही हक

तआला (प्रियतम परब्रह्म) ने अपना दीदार दिया । और मलकूत (वैकुण्ठ) तक का सारा खेल इन्हें दिखाकर इसके (माया के) मूल जबरुत (अक्षर) की भी पहचान करायी ।

ए बैठे लाहूत में, हाहूत इनों मकान,
सेहेरग से नजीक, सो मोमिनों को दे पेहेचान ।।१३।।

वे मोमिन आत्माएं लाहूत (परमधाम-मूलमिलावे) में विराजमान हैं, हाहूत (रंगमहल) इनका निजघर है । इस प्रकार वे प्रियतम परब्रह्म के शहरग (प्राणनली) से भी नजदीक हैं, इस बात की ब्रह्मात्माओं को पहचान करायी है।

दिल हकीकी मोमिन, जहाँ मता बका ठौर ।
अरस दिल ए बका कह्या, कोई होवे तो जाने और ।।१४।।

मोमिन (ब्रह्मात्माएं) हकीकी (सच्चे) दिल वाले होते हैं, जिनके हृदय में अखण्ड परमधाम के ज्ञान का खजाना होता है । उनके दिल को खुदा का अर्श-परमधाम कहा है । जो मोमिन होगा, वही इस बात को समझ सकता है, अन्य कोई नहीं ।

इन बिना कछुए है नहीं, ए मोहरे खेल में सब ।
इनों तिनको भी कायम किये, दिखाया खेल बका जब ।।१५।।

उनके अतिरिक्त कुछ है ही नहीं (बाकि सब अस्तित्वहीन है) । संसार के ये जीव मात्र कठपुतली के समान हैं । इन्हें अखण्ड परमधाम का ज्ञान सुनाकर ब्रह्मात्माओं ने अखण्ड कर दिया ।

जो नाहीं मलकूत के खावंद, नहीं खबर जबरुत ।
सो ख्वाबी दम नाबूद के, दई सरफ सब नासूत ।।१६।।

जो ज्ञान वैकुण्ठ के स्वामी विष्णु भगवान के पास नहीं है, और जो ज्ञान अक्षरधाम (जबरुत) में विराजमान अक्षरब्रह्म के पास नहीं है । वह ज्ञान ब्रह्मसृष्टियों ने माया के समस्त नश्वर स्वाप्निक जीवों को प्रदान कर दिया है ।

नजर सुपने के जीवों की, जाए पडी बीच लाहूत ।
हाहूत ठौर बिलास की, जाए नजर पडी जबरुत ।।१७।।

वह ब्रह्मज्ञान पाकर स्वाप्निक जीवों की नजर (अंतर्दृष्टि) अखण्ड परमधाम (लाहूत) में पहुंच गयी तथा अक्षर ब्रह्म की दृष्टि रंगमहल (हाहूत) के अंदर के प्रेम-विलास की लीला तक पहुंच गयी ।

पोहोंचे सब हकीकत को, पाई सोहोबत मोमिन ।
ए केहेनी में ना आवत, सो ख्वाबी दम पर रोशन ।।१८।।

अब समस्त मनुष्य हकीकत (सत्य ज्ञान) की स्थिति तक पहुंच गये हैं । इन्होंने मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की सानिध्यता से ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लिया है । दुनिया के जीवों का भी हृदय जिस प्रकार ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित हो गया है, वह कृपा अवर्णनीय है ।

अरस मता दिल मोमिन, ए जो अल्ला कलाम ।
सो फिरकान खोले मोमिन, उठी आठों भिस्त इस ठाम ।।१९।।

ब्रह्ममुनियों के दिल में जो परमधाम के ज्ञान का खजाना है, उसके द्वारा वे कलाम अल्लाह (कुर्आन) के गूढ़ार्थ स्पष्ट करेंगे, जिससे सारी दुनिया को आठों बहिश्तों में मुक्ति मिल जायेगी ।

जाग्रत बुध हैं नूर, जो फिरस्ता असराफिल ।
तिन सुर फूँका संसार में, इत पलक ना हुई ढील ।।२०।।

अक्षर ब्रह्म की जो जाग्रत बुद्धि है, जिसे अश्राफील फरिश्ता कहा गया है, उसने आखिरत की इस बेला में संसार में ब्रह्मज्ञान रूपी सुर फूंक दिया है (सबके हृदय में जागृत बुद्धि का प्रवेश कर दिया है), अब एक पलक झपकने मात्र समय की देरी नहीं होगी ।

नजीक साएत हक सुभान, ताके छे दिन कहे दरम्यान ।
एही क्यामत उठना, जब हुई हक पेहेचान ।।२१।।

प्रियतम अक्षरातीत के समक्ष परमधाम मूल मिलावे में वही पल वही घड़ी है । उस पल के अंतर्गत प्रियतम धामधणी ने हमें छः दिन की लीला दिखा दी है । जब निजस्वरूप व प्रियतम परब्रह्म की पहचान हो गई, तब मूल मिलावे में जागृत होना ही कियामत है ।

काल भै सबको भांन के, सबको किये सनमुख ।
सो क्यूं कहूं सबद से, जो नूर जमाल का सुख ।।२२।।

समस्त जीवों के अंदर से काल (मृत्यु) का भय दूर करके सबको अक्षर की नूरी नजर (बेहद मण्डल) के सम्मुख अखण्ड कर दिया। ब्रह्मात्माओं को परमधाम में प्रियतम परब्रह्म का जो सुख प्राप्त होगा, उसके विषय में क्या कहें

बैठे हक हजूर में, रूहें बारे हजार ।
तिन दिल के बीच में, मोमिन नित बिहार ।।२३।।

प्रियतम के चरणों में मूल मिलावे में सभी १२ हजार ब्रह्मप्रियाएं विराजमान हैं । इनके दिलों के अंदर परमधाम में नित्य प्रति होने वाली लीलाएं बसी हुई हैं ।

ए सुख उपजे तिन को, जहां से आई न्यामत ।
रूहें उठी उन तन से, ए साएत सरत क्यामत ।।२४।।

उनका सुख इन्हीं ब्रह्मात्माओं को प्राप्त होगा, उनके मूल तनों परात्म से सारी नैमत (परमधाम का ज्ञान) इस संसार में मोमिनों के दिलों में आती है। उन मूल तनों में जागृत होना ही कियामत है, जिसका वादा कुर्आन आदि धर्मग्रंथों में किया गया है । (परआतम के अंतस्करन, जेती बीतत बात। तेती इन आतम के, करत अंग साख्यात।। खिल्वत)

ए भाँत हकीकत, जाको नाहीं सुमार ।
ए पावन वाले मोमिन, जो चालीस जुथ एक तन यार ।।२५।।

इस प्रकार ब्रह्मज्ञान के कई गुह्य रहस्य हैं, जिनका कोई पारावार नहीं है । परमधाम के इस रहस्य को समझने वाली मात्र वे ब्रह्मात्माएं (मोमिन) हैं, जिनके चालीस युथ (समुह, जिनमें से प्रत्येक में ३०० सखियां हैं) परमधाम में विराजमान हैं। इन सबके एक तन एक मन, एक स्वरूप हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, कहे दो एक सुकन तुम ।
हक सुभान तुम को, अपना दिया हुकम ।।२६।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आप ब्रह्मात्माओं की महिमा के विषय में आपसे एक-दो शब्द कहे हैं । प्रियतम अक्षरातीत ने आप ही को अपना हुक्म दिया है (कि जागो और जगाओ) ।

प्रकरण १२४, चौपाई-४१८४

अमृत सागर

इस प्रकरण में परमधाम के ईशान कोने में स्थित निसबत के रस सागर का वर्णन है। अपरंपार मिठास लिए रस सागर नूरमयी दस रंगों में जगमगा रहा है। छोटी रांग का भी विस्तृत वर्णन हुआ है, साथ ही सवारी के समय का वर्णन भी है ।

नूर अमृत ईशान सागर, सुख शीतल सुन्दर ।
नूर नजर भर देखिए, सब बाहिर अन्दर ।।१।।

परमधाम के ईशान कोण में आत्मा-परमात्मा के दिव्य नूरी संबंध से परिपूर्ण अमृत-रस का सागर विद्यमान है, जो अत्यंत सुंदर, शीतल व आनंददायी है । यहां अंदर-बाहर सभी जगहों की नूरी शोभा को नूरी (आत्मिक) दृष्टि से

जी भर के देखिये ।

नूर सागर अमृत ईशान, जो उत्तर पूरब दरम्यान ।
क्यूं कहूं मिठास इनकी, आवे न जूबाँ पेहेचान ।।२।।

उत्तर व पूर्व दिशा के बीच परमधाम के ईशान कोण में नूरमयी अमृत रस का सागर विद्यमान है । उसकी मीठास किस प्रकार कहूं? जिह्वा से उसका पूर्ण वर्णन सम्भव नहीं है ।

ए मिठास अरस की, जो बका भोम चेतन ।
सब जोगबाई रूह की, क्यूं कहूं नूर रोशन ।।३।।

अखण्ड परमधाम के चेतन स्वरूप रस सागर में जो मीठास है, उसकी दिव्यता का किस प्रकार वर्णन करें ? यह प्रत्येक वस्तु रूहमयी (आत्मस्वरूप) है।

दस रंग इन सागर, दस रंग हैं मोहोल नूर ।
दस रंग के दरखत हैं, दस रंग जिमी जहूर ।।४।।

इस सागर में सर्वत्र दस रंग दिखायी देते हैं । यहां के नूरमयी महल भी दस रंग के हैं । वृक्ष भी दस रंग के हैं । धरती भी दस रंग की शोभा से युक्त है।

दस रंग हर हवेलियों, दस रंग जात जानवर ।
दस रंग मेवे फूल के, ए शोभा नूर सब पर ।।५।।

प्रत्येक हवेलियों में दस रंग विद्यमान हैं । जानवरों की सभी प्रजातियां भी दस रंग की हैं । मेवे (फल), फूल भी दस रंग में शोभायमान हैं । यह नूरमयी शोभा सर्वोपरि है ।

ए जो चार हार हवेलियों, तिन पांचों भोम है नूर ।
छठी चांदनी विराजत, सो क्यूं कर कहूं जहूर ।।६।।

सर्वरस सागर की बड़ी रांग के भीतरी तरफ जो छोटी रांग की चार हार हवेलियां विद्यमान हैं, इनके पांचों भोम व छठी चांदनी नूरमयी (दस रंगों के) हैं । उसकी शोभा का किस प्रकार वर्णन करें ?

एक एक हवेली मिने, जित मंदिर बारे हजार ।
हक हादी रूहें आवत, जिनके चारों तरफो चार द्वार ।।७।।

यहां की एक-एक हवेलियों के अंदर १२-१२ हजार मंदिर विद्यमान हैं, तथा चारों दिशाओं में चार मुख्य दरवाजे हैं । यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियां हांस - विलास करने आते हैं ।

इन हवेलियां बैठक छज्जे, गोख झलकत नूर ।
बिछौने पसमी बैठक, सो कह्यो न जाए जहूर ॥८॥

इन हवेलियों के छज्जों में बैठकें आयी हैं । चारों तरफ नूरमयी गोख (खिड़कियां) जगमगा रहे हैं । बैठकों में नूरमयी पश्मी बिछौने बिछे हैं । उनकी शोभा अवर्णनीय है ।)

रस्ते इत दोरी बंध, ए हवेलियों दरम्यान ।
सामे सामे द्वार शोभित, सो मोमिन दिल पेहेचान ॥९॥

यहां हवेलियों की चारों हारों के बीच के सभी रास्ते (नहरों से युक्त रौंसे) पंक्तिबद्ध रूप से शोभायमान हैं । हवेलियों के द्वार आमने-सामने शोभायमान हैं । उसकी पहचान (ज्ञान) सुंदरसाथ के दिल में होती है ।

इत रस्ते दोउ बाजुए, दरखत फूल रंग दस ।
शोभा बराबर दोरी बंध, ए बका भोम नूर अरस ॥१०॥

यहा रौंसों में नहरों की दोनों तरफ जो पाल है, उनकी चोड़ाई में तीन हिस्से हुए हैं । बीच के एक हिस्से में दस रंग के फूलों के वृक्ष हैं, जिनके दायें-बायें रास्ते (रौंस) विद्यमान हैं । इस प्रकार सारी शोभा पंक्तिबद्ध रूप से शोभायमान है । यह अखण्ड परमधाम की नूरमयी भूमिका है ।

जब आवत अस्वारी, श्री राज संग रूहन ।
उतरत हार हवेलियों, ए सुख जानत दिल मोमिन ॥११॥

जब परमधाम से श्री राज श्यामा जी एवं सखियों की सवारी सुखपालों या तख्तरवा में यहाँ आती है, तो चार हार हवेलियों में उतरते हैं । इस सुख को ब्रह्मात्माओं का दिल ही जानता है ।

ए सुख लेत हवेलियों, उतरत असवारी जब ।
सब खेलौने आए के, मुजरा करत हैं तब ॥१२॥

जब सवारी उतरती है तो श्रीराजश्यामाजी व सखियां छोटी रांग की हवेलियों में कई प्रकार से सुख लेते हैं । यहां के सभी पशु-पक्षी (सशियों के लाडले खिलौने) आकर धणी का दर्शन व अभिवादन करते हैं ।

आप अपनी रवेस से, मोजरा रिझावत रेहेमान ।
अपनी भांत जूदी जूदी, कर दे सब पेहेचान ॥१३॥

सभी पशु-पक्षी अपनी-अपनी रीति से अभिवादन कर के धणी को रिझाते हैं । इस प्रकार अलग-अलग प्रजाति के पशु अपनी-अपनी पहचान करा देते हैं ।

आगे इन रांग के, बड़े द्वार हैं दोए ।
एक तरफ जिमी के, एक रांग बीच कह्या सोए ।।१४।।

बड़ी रांग की हवेलियों में (बाहरी व भीतरी तरफ) दो बड़े दरवाजे आये हैं - एक घने वन की जमीन (जिमी) की तरफ तथा दूसरा सागर की तरफ ।

और बारे हजार द्वार, तरफ मोहोल के जाए ।
दाएं बाएं तिन के, चौबीस हजार केहेलाए ।।१५।।

तथा १२ हजार हवेलियों के १२ हजार द्वार भी दोनों तरफ आये हैं । दोनों तरफ के मिलाकर कुल २४ हजार द्वार होते हैं ।

मोहोल अमृत सागर, चारों तरफो दस रंग ।
साम सामी किरना लरे, कै लेहेरे उठे तरंग ।।१६।।

अमृत-रस के सागर के चारों तरफ दस रंग की हवेलियां शोभायमान हैं । इनकी रंगबिरंगी नूरमयी किरणें आमने-सामने से आकर टकराती हैं, जिससे किरणों की कई लहरे तरंगित होते दिखायी देती हैं ।

छत्तीस हजार द्वार ने, चारों तरफ मोहोलात ।
ए वैभव नूरजमाल का, सो क्यूं कर कहूं ए बात ।।१७।।

एक दिशा में १२ हजार हवेलियों की ३६ हजार महराबें शोभायमान हैं । इस प्रकार की शोभा सागर के चारों तरफ है । यह अक्षरातीत परब्रह्म का दिव्य एश्वर्य है । उसका किस प्रकार वर्णन करें ?

गृद फिरता चबूतरा, जित परदक्षिना फिरिए जाए ।
दस रंग छज्जे मोहोलन में, ऊपर फिरते आए ।।१८।।

सागर की चारों तरफ घेरकर जल रौंस का चबूतरा आया है, यहां आकर सागर की चारों तरफ प्रदक्षिणा देते हुए घूमिये । जल रौंस के ऊपर तक महलों के छज्जों से मिलकर वनों के जो छज्जे आये हैं, वे भी दस रंग में शोभायमान हैं ।

अन्दर बेठक कचेरियां, जवेर थम्भ मंदिर ।
साम सामी मेहेराबी द्वारने, जित रूहें रमे अन्दर ।।१९।।

इन हवेलियों के अंदर असंख्यों बैठकें, कचहरियां, नूरमयी जवाहरात के स्तम्भ व मंदिर आये हैं । स्तम्भों के ऊपर महराबी द्वार (महराबें) आमने-सामने शोभायमान हैं, जहा सखियां अनेक प्रकार से खेल-रामतें करती हैं ।

दोऊं बाजू छज्जे के, तले दरखत छात लों रंग।
दस भांत नूर झलकत, कै लेहरा उठे तरंग ।।२०।।

रांग की हवेलियों के दोनों तरफ के छज्जे, सामने भोम भर नीचे बगीचों में आये वृक्षों की भोमों (डालियों) से मिले हैं । यहां भी दस रंग का नूर जगमगा रहा है, जिनकी नूरमयी किरणों की तरंगे लहरा रही हैं ।

दोऊ बाजू दोऊ रांग के, एक सागर वार सागर पार ।
मोहोल छज्जे द्वार दोए बाजू, ए मोमिन देखनहार ।।२१।।

सागर की दोनों तरफ बड़ी रांग की हवेलियां आयी हैं । एक, इस पार, भीतर की तरफ तथा दूसरा, बाहर की, तरफ सागर के उस पार । दोनों तरफ के बड़ी रांग में महल, छज्जे, द्वार एक समान शोभायमान हैं । इस शोभा को देखने वाली ब्रह्मात्माएं हैं ।

टापू बीच विराजत, कै मोहोल छज्जे गोख नूर ।
कै बैठक कचेरियां, सो कह्यो न जाए जहूर ।।२२।।

सागर के मध्य में बेशुमार टापू महल विराजमान हैं, जिनमें अनेकों नूरमयी महल, छज्जे व गोख शोभायमान हैं । अनेकों बैठकें एवं कचहरियां विद्यमान हैं, जिनकी शोभा का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

इन टापू की बैठक, जब आए बिराजत राज ।
रूहें बातें करें हक सों, होत पूरन मनोरथ काज ।।२३।।

इन टापू महलों की बैठकों में जब श्री राज श्यामा जी एवं सखियां आकर विराजमान होते हैं, तब प्रियायें धणी से अनेक प्रकार से प्रेम भरी बातें करती हैं, जिससे उनके हृदय की समस्त इच्छायें (धणी का प्यार पाने की) पूर्ण हो जाती हैं ।

टापू मोहोल जवेर के, उंचे लग आसमान ।
रांग बराबर शोभित, सो मोमिन कर देवे पेहेचान ।।२४।।

ये टापूमहल नूरमयी जवाहरातों के हैं तथा बड़ी रांग की हेवलियों के समान आसमां तक ऊंचे गये हैं । इसकी पहचान ब्रह्मात्माएं करा देती हैं ।

इत कई खुसाली उपजत, संग रूहें हादी हक ।
ए तो कायम सुख बका मिने, उठे कै लेहरा इशक तरंग ।।२५।।

श्री राज श्यामा जी के साथ यहा सखियों को कई प्रकार के सुख प्राप्त होते रहते हैं। ये परमधाम के अखण्ड शाश्वत सुख हैं, जहां सखियों के हृदय में इश्क की अनंत तरंगें उठती रहती हैं ।

कै सुख इत आरोगन के, कै सुख मीठे स्वाद ।
सुख सागर अमृत, क्यूं कहूं बका ठौर बुनियाद ।।२६।।

यहां पर आरोगने के कई प्रकार के सुख हैं, यहां कई प्रकार के मीठे रसीले सुखदायी फल होते हैं । अमृत रस के सुख सागर के विषय में कैसे कहूं? यह तो यहां की प्रत्येक वस्तु में विराजमान मूलभूत गुण हैं ।

कई सुख बिहार इशक के, कई सुख इशक अंग नूर ।
कै सुख परसे राज के, सो आवत नहीं सहूर ।।२७।।

यहां कई सुख प्रेम रस में डूब कर धणी के संग विहार करने के हैं । कई सुख अंग अंग में नूरमयी इश्क के हैं । कई सुख श्री राज जी के अंगों को स्पर्श करने के हैं, जो चिंतन में नहीं आ पाते हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, इन सुख को वार न पार ।
तुम हो इन के शामिल, करो आठे पोहोर एही विचार ।।२८।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! परमधाम के इन सुखों का कोई पारावार नहीं है । आप इन दिव्य ब्रह्मलीलाओं में शामिल हो । अब आठों प्रहर (२४ घण्टे) इसी का चिंतन करो ।

प्रकरण १२५ चौपाई ४२१२

आठे सागर असवारी

इस प्रकरण में सवारी के सुखों का वर्णन है, उसके साथ-साथ युगल स्वरूप श्रीराजश्यामाजी के अलौकिक स्वरूप श्रृंगार के दर्शन भी कराये गये हैं ।

ए सुख शीतल अरस के, रूप सुन्दरता देखे नैन ।
राज सों रूहें हंसते, मुख काढत मीठे बैन ।।१।।

दिव्य परमधाम में विराजमान परब्रह्म के शीतल आनंददायी स्वरूप की सुंदरता ब्रह्मप्रियाएं अपने नेत्रों से देखती हैं । सखियां हंसते हुए श्री राजजी से प्रेम पूर्वक मीठे वचन कहती हैं ।

जब होत असवारी धाम से, पूछे हादी रूहों कर हेत ।
कहां जायेंगें खेलने, रूहें हंस हंस उत्तर देत ।।२।।

जब रंगमहल से सुखपालों या तख्तरवा पर सवार होकर आते हैं, तो उस समय श्री श्यामा जी सखियों से प्रेमपूर्वक पूछती हैं, कि आज खेलने के लिये कहां जाना है ? तब सखियां हंसते-हंसते इस प्रकार उत्तर देती हैं -

आठों सागर रस अमृत, खेलने को सब जाए ।
शीतल मुख बानीय से, नैनों चेहेन देखाए ।।३।।

सखियां अपने मुख की शीतल वाणी से, आंखों से इशारे करती हुई कहती हैं, कि आठों सागरों में से अमृतमयी रस सागर में हम खेलने को जायेंगी।

वय किसोर मुख सुन्दर, सुन्दर नैंन विशाल ।
अति सुखकारी अनुभव, पेहेने बस्तर अंग खुसाल ।।४।।

सखियों का स्वरूप किशोर अवस्था का है , उनका मुखारविंद अत्यंत सुंदर व गोरा है । इनके नैंन अत्यंत सुंदर तथा विशाल हैं । इनको अत्यंत आनंद में रहने का अनुभव (अभ्यास) है । अंगों में सुंदर वस्त्र धारण करती हुई अत्यंत प्रसन्न होती हैं ।

सरूप राज का देखिए, वय किशोर मुख सुन्दर ।
अति गौर गेहरी लालक, उठत तीसरी भोम मंदिर ।।५।।

सुंदरसाथ जी ! श्री राज जी का स्वरूप आत्मिक नयनों से निहारिये, किशोर अवस्था का अत्यंत सुंदर व गोरा मुखारविन्द है, जो कि गहरी लालिमा लिये हुये है । इस प्रकार सुंदर स्वरूप श्री राज जी रंगमहल की तीजी भोम के नीलो-पीलो मंदिर में सुख शैय्या से उठते हैं ।

पाग सारंगी शोभित, शोभित सुन्दर ए रंग ।
मिने फूल बेल कटाव कै, उठे लेहेरे नूर तरंग ।।६।।

धाम धणी के शीश कमल पर सिंदूरिया रंग की पाग सारंगी के समान शोभायमान है, जिसका रंग अत्यंत सुंदर लग रहा है । पाग में कई प्रकार के फूल, बेल व कटाव सुशोभित हैं, जिनसे नूरमयी किरणों की लहरें तरंगित हो रही हैं ।

कलगी तुरा दुगदुगी, लटकत मोती मुख पर ।
तिलक सुन्दर अति शोभित, कानों कुण्डल नाही पटन्तर ।।७।।

पाग में कलगी, तुर्रा व दुगदुगी (लॉकेट) शोभायमान हैं । मुख मण्डल पर मोतियों की लड़ियां चंद्रिका के समान लटक रही हैं । धामधणी के मस्तक पर सुंदर सुहामणा तिलक शोभायमान है । कानों में विराजमान कुण्डल की तो कोई तुलना ही नहीं है ।

नैंन चपल अति शोभित, सोहे भौं भ्रिकुटी गाल अधुर ।
अति सुन्दरता नासिका, बेसरना अति मधुर ।।८।।

श्री राज जी के नेत्र चंचल और अत्यंत सुंदर हैं । उनकी भौंहें , भृकुटी, गाल व अधर बहुत ही आकर्षक हैं । नासिका अत्यंत सुंदर है, जिसमें बेशर का आभूषण बहुत प्यारा लग रहा है ।

कंठ छाती पेट पाँसली, खम्भे मछे कोनी कांडे नूर ।
हस्त कमल अंगूरियां, या को कह्यो न जाए जहूर ॥९॥

श्री राज जी के कण्ठ, छाती, पेट, पसली, खभे, मछे, कोहनी, कड़ा, हस्त कमल व उंगलियों आदि सभी दिव्य अंग शोभा, सुंदरता व कोमलता से युक्त हैं । जिनकी शोभा तो शब्दों से परे है ।

जामा पटुका पिछौडी, अंग इजार चूडी बारीक ।
सो केहनी सबद ना पहुँचत, जित राह है लिक ॥१०॥

श्री राज जी के बदन में जामा (श्वेत रंग का), कमर में पटुका (कमरबंध-पीले रंग का), कंधे पर पिछौरी (नीले रंग की) शोभायमान है । उनके पैरों में इज़ार (चूडीदार पैजामा-हरे रंग का) शोभायमान है, जिसमें अत्यंत बारीक चूड़ी बनी है । इस झूठी माया के शब्द वहां नहीं पहुंचते हैं । प्रेम का मार्ग अत्यंत बारीक (इश्कमयी) है ।

कण्ठ हार पांचों कंठी, बाजू बंध पोहोंची बीटी नंग ।
चारो भूखन चरन के, क्यूं कहूं शोभा इन अंग ॥११॥

प्रियतम श्री राजजी के गले में पांच हार शोभायमान हैं । दोनों बाजुओं में बाजूबंध, कलाई में पहुंची तथा उंगलियों में नगों से युक्त मुंदरियां शोभायमान हैं । उनके चरणों में चार आभूषण - झांझरी, घूंघरी, कांबी एव कड़ला विराजमान हैं । धामधणी के कोमल अंगों की शोभा किस प्रकार कहें ?

संग श्यामा जी शोभित, मुख गौर गेहरी लालक ।
साडी कंचुकी चरनियाँ, नूर अंग लगे इसक ॥१२॥

श्री राज जी के साथ में सुख शैय्या में श्री श्यामा जी भी शोभायमान हैं । उनका मुखारविंद अत्यंत गोरा है, जो कि गहरी लालिमा लिये हुये है । वे उज्जवल लाल रंग की साड़ी, श्याम रंग की कंचुकी (ब्लाउज) तथा हरे रंग की चरणिया (पेटीकोट) धारण की हुयी हैं। उनके नूरी अंग इश्क से परिपूर्ण हैं।

बेन लेहेकत ब्याल ज्यूं, राखडी पांना दामनी नूर ।
मोती श्रवन चोकडे क्यूं कहूं शोभा भ्रकुटी जहूर ॥१३॥

श्री श्यामा जी की चोटी काले सर्प की भांति लहराती है । सिर पर राखड़ी का आभूषण शोभायमान है, मांग के नीचे पांनड़ी का आभूषण लटक रहा है, इसके दायें-बायें नूरमयी पटली शोभा ले रही है । श्यामा जी के दोनों कानों में चौकोर मोती लटक रहे हैं । श्यामा जी के गौरे मुखारविंद पर श्याम भौंहों की शोभा किस प्रकार कहें ?

नैन चपल अति अनियाले, तारे तेज अपार ।
कान झाल पांनडी झलकत, शोभा सुन्दर नित बिहार ।।१४।।

श्री श्यामा जी के नैन अत्यंत नुकीले हैं, उनमें दिव्य तेज से युक्त तारे शोभायमान हैं, जो कि अत्यंत चंचल हैं । कानों में झाल व पानड़ी जगमगा रहे हैं । इस प्रकार अत्यंत सुंदर शोभा वाली श्री श्यामा जी नित्य प्रति धणी के साथ लीला विहार करती हैं ।

सुन्दर मुरली नासिका, भरे गलस्थल गौर ।
हंसत हरवटी लाल अधुर, सो आवे ना माहें सहूर ।।१५।।

श्री श्यामा जी की नासिका में मुरली का सुंदर आभूषण है । उनके गाल भरे हुए एवं अत्यंत गौरे हैं । मंद मंद मुस्कुराती हुई हरवटी एवं लाल अधरों की शोभा है । यह दिव्यता चिंतन में नहीं आ पाती है।

कण्ठ उर छाती पेट पांसे, बाहों कोनी कांडे तेज ।
नूर अंबर जोत कहूं, सो तो इनमें है सेहेज ।।१६।।

श्री श्यामा जी के कण्ठ, हृदय, छाती, पेट, पसली, बांहे, कोहनी, कड़े आदि सभी अंग दिव्य सुंदरता से युक्त हैं । उनके अंगों से नूरमयी किरणें निकलकर अम्बर (आकाश) तक जा रही हैं, एसा कहूं तो यह तो परमधाम के स्वरूपों में सामान्य बात है ।

हस्त कमल अंगूरियों, मुदरी दसों के नंग ।
कंठसरी चीन चंपकली, हार पांचो लगे हैं अंग ।।१७।।

श्यामा जी के हस्त कमल की दसों उंगलियों में दस नगों की मुंदरियां शोभायमान हैं । गले में कण्ठसरी, चीड़ का हार, चंपकली तथा इनके नीचे छाती से लगते हुए पांच हार और शोभायमान हैं ।

बाजू बंध कंकनी चूडी, पोहोंची पहोंचो झलकत नूर ।
ए जवाहिर अरस जिमी के, ए सदा अतंत जहूर ।।१८।।

श्री श्यामा जी के बाजुओं में बाजूबंध, कोहनी से कलाई की तरफ कंगन, चूड़ियां, पहुंचों में पहुंची नूरमयी झलकार कर रहे हैं । ये परमधाम के नूरमयी जवाहरात हैं, जो कि हंमेशा बहुत ज्यादा जगमगाते रहते हैं ।

चारों भूखन चरन के, बोलत सबद रसाल ।
चलते श्रवनों सुख देवें, हक हादी रूहों करे खुसाल ।।१९।।

चरणों के चारों आभूषण (झांझरी, घूंघरी, कांबी, कड़ला) चलते समय अत्यंत मधुर वाणी बोलते हैं, जिसे सुनकर अत्यंत आनंद होता है । श्री

राजश्यामा जी एवं सखियां को अत्यंत प्रसन्न कर देते हैं।

ज्यूं सरूप श्यामा अंग का, त्यूं ही भुखन शोभित चरन ।
ए केहेनी सबद ना पोहोंचत, जानत दिल मोमिन ॥२०॥

जैसा स्वरूप श्री श्यामा जी का है, बिल्कूल वैसी आकृति (पुतली) उनके चरणों के आभूषणों में सुशोभित है । यहां के शब्द परमधाम नहीं पहुंचते हैं, इसे ब्रह्मप्रियाओं का हृदय ही सही रूप में जानता है।

ज्यूं सरूप हादीअ का, यूं ही बारे हजार जान ।
वए किशोरमय सुन्दर, हेत एक दूजी को सनमान ॥२१॥

जैसा स्वरूप श्री श्यामा जी का है, वैसा ही स्वरूप सभी बारह हजार सखियों का जानिये । सभी सखियों का स्वरूप किशोर अवस्था का, अत्यंत सुंदर है। सभी एक दूसरे से बहुत प्रेम करती हैं और एक दूसरे का आदर करती हैं ।

आए सुखपाल रुजू भए, एक पर श्यामा और श्याम ।
सखीयाँ दोए दोए एक पर, बैठे पावें आराम ॥२२॥

दोपहर के तीन बजे रंगमहल की छठी भोम से आकर सभी सुखपाल तीसरी भोम के छज्जों से लग जाते हैं । एक सुखपाल में श्री राज श्यामा जी तथा अन्य (प्रत्येक) सुखपालों पर दो-दो सखियां आनंदपूर्वक बैठ जाती हैं ।

जब असवारी होत अरस से, तब रुजू होत सुखपाल ।
खिलौने आवत मोजरे, कर मुजरा होत खुसाल ॥२३॥

जब रंगमहल से श्री राज श्यामा जी एवं सखियों को सैर के लिये जाना होता है, तब सभी सुखपाल उपस्थित हो जाते हैं । इस समय सभी पशु-पक्षी धणी के दर्शन के लिये आते हैं तथा धणी का दर्शन कर अत्यंत प्रसन्न होते हैं ।

कै नाचत कूदत फाँदत, कै बाजे बजावत ।
सब लवाज में हाजर, होत इन बखत ॥२४॥

कई पशु नाचते हैं, कूदते हैं, छलांग लगाते हैं, कई बाजे बजाते हैं । सभी आवश्यक सामग्री, वाद्ययंत्र इस समय उपस्थित हो जाते हैं ।

आसमान असवारी छाईयां, करें दीदार नूरजलाल ।
अपनी सैन्या समेत, कह्यो न जाए खुसाली ख्याल ॥२५॥

इस प्रकार अक्षरातीत की सवारी आसमां में छा जाती है (सारा आसमां सुखपालों और पक्षियों से भर जाता है)। इस समय अक्षर ब्रह्म भी अपनी सेना (अक्षरधाम के पशु-पक्षियों) सहित अक्षरातीत परब्रह्म का दर्शन करते हैं । उस समय उनके हृदय की प्रसन्नता का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

आए उतरे इशान कोन, जो उत्तर पूरब दरम्यान ।
ए सागर अमृत का, सब हवेली रांग दस रंग जान ।।२६।।

इस प्रकार सुखपालों की सवारी पूर्व व उत्तर दिशा के मध्य ईशान कोण में स्थित अमृत रस के सागर में उतरती है । यहां रांग की सभी हवेलियां दस-दस रंगो में शोभायमान हैं ।

जहां सुखपाल उतरी राज की, सब घेर उतरी गृदवाए ।
खिलौने अपने मरजाद में, रस शीतल उपजाए ।।२७।।

जहां श्री राजजी का सुखपाल उतरता है, उसके चारों तरफ घेरकर सभी सखियों के सुखपाल भी उतर जाते हैं । इस समय सभी पशु-पक्षी अपनी मर्यादा में (थोड़ी दूरी में पंक्तिबद्ध रूप से) खड़े रहते हैं । प्रियतम श्री राज जी कई प्रकार से सबके हृदय में आनंद व शांति उत्पन्न करते हैं ।

जुगल सरूप संग सखियां, अमृत दिल सुख सागर ।
चारों तरफ मोहोल नूर के, हुए खेलन को तत्पर ।।२८।।

युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी, जिनके दिल में अमृतमयी इश्क का सुख सागर है, उनके साथ सखियां चारों तरफ नूरमयी महलों में खेलने के लिये तत्पर (उतावले) हो जाती हैं ।

बेहतर हक हादी रूहें, क्यूं कहूं चातुरी चैन।
ठेलत एक दूजी को, कहे मुख मीठी रसना बैन ।।२९।।

श्री राज श्यामा जी एवं सखियां चतुराई एवं व्यवहार में एक दूसरे से सर्वश्रेष्ठ हैं, उसके विषय में किस प्रकार वर्णन करूं? सागर के चारों कोनों में आये रेती के मैदान में सखियां एक दूसरे को धक्का देती हैं । तथा अपने मुख से मीठे प्रेम भरे, आनंददायी वचन कहती हैं ।

इत कै भोम सुख उपजे, सो केतेक कहूं या मुख ।
ए नूरजमाल संग, रूहें लेत हैं सुख ।।३०।।

यहां हवेलियों के भोमों में अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं, उसके विषय में इस जिह्वा से कितना कहूं? अक्षरातीत प्रियतम के साथ ब्रह्मप्रियाएं अखण्ड आनंद प्राप्त करती हैं ।

पेहेले छे घड़ी खेल करे, फेर करत झीलन ।
ए सिनगार के कै सुख, सो क्यूं कहूं नूर रोशन ।।३१।।

इस प्रकार रस सागर में आने के पश्चात् सर्वप्रथम ६ घड़ी (दोपहर के ३ बजे से शाम के ५-१५ बजे तक) अनेक प्रकार से खेल-रामतें करते हैं ।

उसके पश्चात् झीलना का आनंद लेते हैं । उसके पश्चात् श्रृंगार की लीला में जो सुख प्राप्त होता है, उनकी दिव्यता का कहां तक वर्णन करूं?

कोई समे असवारी होए के, आवत बीच अरस ।
कोई समे पोहोर रात लों, फेर खेलत अरस परस ।।३२।।

श्रृंगार के पश्चात् कभी-कभी (कृष्ण पक्ष के १५ दिनों में) सुखपालों में सवार होकर रंगमहल वापस आ जाते हैं तथा कभी कभी (शुक्ल पक्ष के १५ दिन चांदनी रात में) रात्रि के ९ बजे (एक प्रहर) तक यहीं आपस में मिलकर अनेक प्रकार से खेलते रहते हैं ।

उपरान्त इत आरोगत, कै सुख शीतल स्वाद ।
ए जुबां फना की क्या कहे, बका नूरजमाल की बुनियाद ।।३३।।

(उसके पश्चात् यहीं भोजन आरोगते हैं, जिनमें कई प्रकार के स्वाद के सुखदायी, शीतलता प्रदान करने वाले वनफल आदि ग्रहण करते हैं । अक्षरातीत के उस दिव्य अखण्ड परमधाम के मूलभूत विशेषताओं एवं महिमा का इस झूठी जिहवा से किस प्रकार वर्णन करें ?

कै सुख शीतल सुन्दर, लेत निरत के जोर ।
भोम चौथी मिने देखिये, मानों निरत होत ठौर ठौर ।।३४।।

(शुक्ल पक्ष में) आरोगने के पश्चात् यहां वनों में ही सुंदर नृत्य की लीला के द्वारा कई प्रकार के आनंद प्राप्त करते हैं । कृष्ण पक्ष के पंद्रह दिनों में रंगमहल की चौथी भोम में नृत्य की लीला होती है, तब ऐसा प्रतीत होता है कि परमधाम के सभी स्थानों में नृत्य हो रहा है ।

भोम पांचमी पौढन के, सुख केहेत ना आवे पार ।
ए मोमिन रूहें जानहीं, जाको हक संग नित बिहार ।।३५।।

तत्पश्चात् पांचवी भोम में सखियां धणी के साथ शयन लीला करती हैं, जिसका सुख अवर्णनीय है । उसे मात्र ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं, जो कि नित्य प्रति प्रियतम श्रीराजजी के साथ लीला विहार करती हैं ।

बिहार होत पोहोर तीन लों, सो तो जानत रूह के अंग ।
तीसरी भोम आए के, झांकत झरोखे प्रात को संग ।।३६।।

इस प्रकार रात्रि के तीन प्रहर (९ बजे से प्रातः ६ बजे) तक शयन लीला होती है । उसे ब्रह्मप्रियाओं का हृदय ही जानता है । प्रातः तीसरी भोम के झरोखो (पड़शाल) पर आकर पशु-पखियों को दर्शन देते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, कहे एक दोए सुकन तुम ।
सुमार ना सुख इन का, ए नेक कह्या हक हुकम ।।३७।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! परमधाम की दिव्य प्रेम व आनंदमयी लीलाओं के विषय में आपसे एक-दो शब्द संक्षिप्त में कहे हैं । उन सुखों का कोई पारावार नहीं है । यह श्री राजजी के हुक्म से आपके लिये थोड़ा वर्णन हुआ है ।

प्रकरण - १२६, चौपाई-४२४९

नूर नजर भर देखिये

इस प्रकरण में सुन्दर साथ जी को अपनी आत्मिक दृष्टि से परमधाम की शोभा देखने के लिये आह्वान किया गया है । सुन्दर साथ जी ! आपको ही श्री राज जी ने मेहर करके जागृत बुद्धि प्रदान की है । श्री श्यामा जी, तारतम ज्ञान के रूप में श्रीराजजी का संदेश आपके लिए लेकर आई हैं । उन्होंने तीनों सृष्टियों की विस्तृत पहचान करायी है । यह सब हक़ीकत दिव्य दृष्टि से ही देखी जा सकती है, जो श्रीराज जी ने अपार मेहर कर आपको बख्शी है ।

नूर नजर अरस की, देखिए रूह के नैन ।
जाग्रत अकल में आवत, कह्यो जाए ना ख्वाब मुख बैन ।।१।।

परमधाम की दिव्य दृष्टि से अर्थात् अपनी आत्मा की दृष्टि से परमधाम की शोभा देखिये । वहां की शोभा जागृत बुद्धि से ही समझी जा सकती है । उसका वर्णन इस स्वाप्निक जगत् की जिह्वा से सम्भव नहीं है ।

कुंन फे कुंन केहेते भए, ए जो चौदे तबक ।
तबकी इन दूनी की, कबू मिटी ना सुभे सक ।।२।।

यह १४ लोकों का सारा संसार जब से परमात्मा (खुदा तआला) के कुंन (हो जा) कहने से (संकल्प मात्र से) उत्पन्न हुआ है, तब से परमात्मा एवं उसके धाम के विषय में किसी (दुनिया वालों) का संशय नहीं मिट सका है।

दूनी में बड़े कहावहीं, फिरस्ते पांच नूरी ।
अजाजिल असराफिल, जाए दे निसबत सारी ।।३।।

दुनिया में बड़े कहलाने वाले पांच नूरी फरिश्ते हैं । उनमें से एक हैं - अजाजील (विष्णु भगवान) तथा दूसरे हैं - अश्राफील (जागृत बुद्धि), जो सबको एक परब्रह्म की पहचान कराते हैं (समझने की शक्ति देते हैं) ।

अजराईल मेकाईल, इन दोऊ पर खेल मुदार ।
पांचमा जबराईल, सो कह्या सबों सिरदार ॥४॥

अजराईल (शंकर भगवान), मैकाईल (ब्रह्माजी) इन दोनों फरिश्तों पर खेल का सारा कार्यभार है । इनके अतिरिक्त पांचवा जिब्रील फरिश्ता (धणी का जोश) है, जो कि सभी फरिश्तों का मुखिया (सभी शक्तियों में शिरोमणि) है ।

सो हजूर जाए न सक्या, रह्या अपने मकान ।
तब मासूक हक का पोहोंचियां, जो ल्याया संदेसा रेहेमान ॥५॥

वह भी यमूना जी को पार करके रंगमहल के अंदर नहीं जा सका । अपने मूल स्थान अक्षरधाम में ही रह गया । उस समय हक तआला (प्रियतम परब्रह्म) के माशूक मुहम्मद (श्री श्यामाजी) मूल मिलावे में हक के हजूर पहुंचे । जो परमात्मा का संदेश (कुर्आन के रूप में) लाये ।

अब इन पांचों ऊपर, सब दुनी का मुदार ।
पैदास भी इन से, एही फना करनहार ॥६॥

वर्तमान में इन पांचों फरिश्तों के ऊपर सारी दुनिया का कार्यभार है । इन्हीं (मैकाईल-ब्रह्मा) से जगत् की उत्पत्ति भी हुयी है, और ये (अजराईल-शंकर भगवान) ही जगत् का प्रलय करने वाले भी हैं ।

इनों की तन मात्रा से, उपजी सारी सृष्ट ।
ए जो खेल के खावंद, तिन की न पोहोंची दृष्ट ॥७॥

इन्हीं त्रिदेवों (तीन गुणों) की तन्मात्रा (शब्द, रूप, रस, स्पर्श, गंध) से सारी सृष्टि उत्पन्न हुयी है । ये जो संसार के स्वामी त्रिदेवा (मैकाईल, अजाजील, अजराईल) हैं, इनकी दृष्टि परमधाम तक नहीं पहुंच पाती है ।

तो इन जीवन की, क्यूं होवे नूर नजर ।
क्यूं नूर नजर भर देखिए, बका ठौर फजर ॥८॥

तो इनसे उत्पन्न जीवों के पास नूरी (दिव्य) दृष्टि किस प्रकार हो सकती है? दिव्य आत्मिक दृष्टि के बिना अखण्ड परमधाम की शोभा को किस प्रकार देख सकते हैं ?

ए देखन वाली उम्मत, जो है मोमिन खासल खास ।
ए बैठे अरस अजीम में, सिवाए हक न जाको आस ॥९॥

उसे देखने वाली मात्र ब्रह्मसृष्टियां हैं, जिन्हें खासुलखास मोमिन कहा गया है । वे (उनके मूल तन) अर्श अज़ीम (दिव्य परमधाम) में प्रियतम परब्रह्म के चरणों में विराजमान हैं । इनके दिलों में एक श्री राजजी के सिवाय अन्य

किसी की आशा (चाहना) नहीं होती है ।

जिन मोतिन मोहों पर कुलफ, बीच देख्या सब मेयराज ।
सो दिल रसूल का खोलहीं, ठौर बका देखे होए काज ।।१०।।

मुहम्मद साहब ने इन्हीं मोमिनों (ब्रह्मप्रियाओं) को शबे मेअराज में देखा था और इनके विषय में संकेतों में लिखा था कि इन मोतियों (ब्रह्मप्रियाओं) के मूंह पर ताला (फरामोशी का) लगा हुआ देखा। तब हक तआला ने उनसे फुरमाया था कि उस फरामोशी के ताले को तुम्हारा (रसूल मुहम्मद–श्यामाजी) का दिल ही खोलेगा। अखण्ड परमधाम की शोभा देखने के पश्चात् इन ब्रह्मप्रियाओं के हृदय से फरामोशी का पर्दा दूर हो जायेगा ।

तो अरस दिल कह्या मोमिन, जो बैठे तले कदम ।
हक आए बैठे दिल में, दिया इन को लुदन्नी ईलम ।।११।।

इसी कारण तो ब्रह्मात्माओं के दिलों को परमात्मा का धाम कहा है, क्योंकि वे परमधाम मूलमिलावे (हाहूत) में प्रियतम परब्रह्म के चरणों में विराजमान हैं । यहां माया जगत् में भी प्रियतम अक्षरातीत इनके दिलों में आकर विराजमान हो गये हैं, इन्हें इल्मे लदुन्नी (तारतम ज्ञान) प्रदान किया है ।

जिन इलम से उठेंगे, दुनिया चौदे तबक ।
मुरदे मजाजी दिल के, पोहोंचे नजर हक ।।१२।।

उसी तारतम ज्ञान से चौदह लोकों के समस्त जीव ८ बहिश्तों में अखण्ड होंगे और नश्वर भौतिक दिल (वाले जीवों) की भी दृष्टि परब्रह्म का दीदार करेगी ।

सब पाओ इन मोमिन से, सो उम्मत खासल खास ।
हक सूरत इनों दिल में, ए मोमिन इशक विश्वास ।।१३।।

वह सारा ज्ञान इन ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) से ही प्राप्त हो सकेगा, जिन्हें खासुलखास (अतिविशेष) उम्मत कहा गया है । परब्रह्म का स्वरूप इनके दिल में बसा होता है । इनके अंदर परब्रह्म के स्वरूप के प्रति पूर्ण विश्वास व प्रेम होता है ।

सब कोई पावे इनों से, मरातबा ईमान ।
आठों भिस्त उठन की, हैं इन पेहेचान ।।१४।।

सारी दुनिया इन्हीं मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) से ब्रह्मज्ञान व विश्वास (ईमान) का दर्जा प्राप्त करेगी । आठों बहिश्तें अखण्ड होने का सारा ज्ञान इन मोमिनों के पास है ।

बेद और कतेब में, कही तीन उम्मत ।
पैदास इन तीनों की, जुदी जुदी सो मोमिन देखावत ।।१५।।

वेद एवं कतेब ग्रंथों में तीन उम्मत (सृष्टि) का वर्णन मिलता है । उन तीनों की पैदाइश अलग-अलग स्थानों से हुयी है (मूल उद्गम स्थान अलग–अलग हैं) । उनका अलग अलग विवरण ब्रह्मात्माएं ही बताती हैं ।

एक ब्रह्म की सृष्ट कही, दूसरी ईश्वरी नाम ।
तीसरी सृष्ट जीव की, यू लिखा अल्ला कलाम ।।१६।।

पहली सृष्टि, ब्रह्मसृष्टि कही गयी है, दूसरी सृष्टि का नाम ईश्वरी सृष्टि है। तीसरी सृष्टि, जीवसृष्टि है । इनके विषय में कलाम अल्लाह (कुर्आन) में इस प्रकार लिखा है ।

एक खासल खास उम्मत, जो रूहें बारे हजार ।
सो उतरी अरस अजीम से, इन को नित बिहार ।।१७।।

एक खासुलखास उम्मत (अतिविशेष ब्रह्मसृष्टि) है, जिन आत्माओं की संख्या बारह हजार है । वे अर्श अज़ीम (परमधाम) से संसार का खेल देखने आयी हैं । दिव्य परमधाम में इनकी नित्य लीला विहार है ।

दूसरी नूर मकान से, उतरे मलायक जेह ।
रहे सो भी संग मोमिन के, ए जो खास उमत कही एह ।।१८।।

दूसरी ईश्वरी सृष्टि नूर मकान (अक्षरधाम) से आयी है, जिन्हें मलायक कहा गया है । वे भी ब्रह्मात्माओं के सानिध्य में रहती हैं । इन्हें खास उम्मत कहा गया है ।

तीसरी आम खलक जो, ए भी कहावत इसलाम ।
मूल नींद जुलमत मलकूत, रहे ए पैदाईस ठाम ।।१९।।

तीसरी सृष्टि आम खलक है । वे भी शाश्वत शांति के मार्ग के सच्चे अनुयायी कहलाते हैं । इनका मूल उद्गम स्थान वैकुण्ठ (मूलकूत) व नींद (निराकर-जुल्मत) है । ये निराकर से आगे नहीं जा पाते हैं ।

फैल तीनों के जुदे जुदे, आहार खाना जुदा बिसराम ।
नूर नजर भर देखिए, तब पावे तीनों ताम ।।२०।।

इन तीनों सृष्टियों की रहनी अलग-अलग होती है । इनके आत्मिक आहार व सुख-आराम के साधन भी अलग-अलग होते हैं । आत्मिक दिव्य दृष्टि से देखिये (पहचानिये), तब तीनों सृष्टियों के आत्मिक आहार का पता चलेगा ।

जो उतरी अरस अजीम से, रब्बानी गिरो बुजरक ।
तिनने मोह अहंकार लों, किए चौदे तबक रद ॥२१॥

वे ब्रह्मात्माएं परमधाम से अवतरित हुयी हैं, जिन्हें महान् रब्बानी गिरोह (ब्रह्मात्माओं का समूह) कहा गया है। इन्होंने मोह-अहंकार (निराकार) तक सम्पूर्ण चौदह लोकों के साम्राज्य को अपने दिल से खत्म कर दिया होता है ।

ए तो नूर मकान लों, करत ना नजर ।
उनको अरस अजीम की, इत होए गई फजर ॥२२॥

वे ब्रह्मात्माएं अक्षर धाम तक कहीं का भी ध्यान नहीं करती हैं (लक्ष्य नहीं रखती हैं)। परमधाम का ज्ञान मिल जाने से यहीं उनकी जागनी हो गई होती है ।

सो मासिवा अल्ला मोमिन करें, वे और ना करें याद ।
उनो सिफाएत महंमद की, वे रहे बका बीच बुनियाद ॥२३॥

वे मोमिन एक अल्लाह के सिवा बाकि सब चाहना दिल से खत्म कर देते हैं। अन्य किसी वस्तु का स्मरण नहीं करते । इन्हीं को मुहम्मद (हकी सूरत) की सिफायत (तारतम ज्ञान) प्राप्त होती है। उनका ध्यान अखण्ड परमधाम में मूल मिलावे (हाहूत) में रहता है।

वे तो उतही रेहेत हैं, करे रात दिन जिकर ।
जिनको अरस अज़ीम बिना, और ना रहे फिकर ॥२४॥

उनका ध्यान अहर्निश वहीं परमधाम में रहता है । दिन-रात वहीं की चर्चा-चिंतन करते रहते हैं । एक परमधाम (अर्शे आज़म) के अतिरिक्त इनके दिल में अन्य कोई भी चिंतन नहीं रहता है ।

इमान अरस अजीम का, असल उतरा रूहों के संग ।
इसक ताम जो इन का, रहे जात हक के अंग ॥२५॥

अखण्ड परमधाम का वास्तविक ईमान (विश्वास) ब्रह्मात्माओं के साथ ही संसार में उतरा है (क्योंकि ज्ञान के बिना विश्वास पूर्ण नहीं होता) । इनका आहार इश्क का ही होता है । वे हमेशा दिव्य परमधाम में प्रियतम हक माशूक के साथ रहते हैं और उन्हीं के स्वरूप (अंगरूप) हैं ।

ए आए बीच दुनीया के, पर ए रहे दूनी से दूर ।
ज्यूं जल कमल परसे नहीं, यूँ जाने मोमिन मजकूर ॥२६॥

वे मोमिन (ब्रह्मात्माएं) परमधाम से इस दुनिया में आये हैं, परंतु वे मोह-अज्ञान और माया की चाहनाओं (हिर्स-हवा) से अलग (दूर) रहते हैं । जिस

प्रकार कमल जल में ही खिलता है, किंतु जल उसे स्पर्श नहीं कर पाता है, उसी प्रकार ब्रह्मात्माओं की स्थिति रहती है ।

इन को हक सुभान बिना, और सोहोबत न सोहाए ।
फेर करे बातां मोमन सों, अरस की जो सुखदाए ।।२७।।

इन मोमिनों को हक सुब्हान तआला (प्रियतम परब्रह्म) के सिवाय और किसी की सोहबत (संगति) अच्छी नहीं लगती । बातें करेंगे भी तो सच्चे दिल वाले मोमिनों (ब्रह्ममुनियों) से, जिनके द्वारा परमधाम के अखण्ड सुख प्राप्त होते हैं ।

सिफाएत जो इत करी, महंमद अलेहसलाम ।
तिनसे दीदार खुदाए का, रहा तामे आराम ।।२८।।

मुहम्मद अलैहिस्सलाम (श्यामा जी) ने (हकी सूरत के रूप में) इन्हीं मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) की सिफायत (अनुशंसा) की है । (अर्थात् इन्हें इल्मे लदुन्नी प्रदान किया है) उस तारतम ज्ञान के द्वारा इन्हें खुदा का दीदार प्राप्त होगा (जिसका वायदा हदीसों में है कि "बेशक तुम दीदार करोगे खुदा का, कियामत के दिन")। परमधाम के सुखों को पाकर वे ब्रह्मात्माएं दुनिया में भी आराम से रहेंगी ।

पांच बखत बैठत, फजर जहूर असर ।
मगरब और ईसा में, रहे ना कछू कसर ।।२९।।

वे मोमिन दिन में पांच समय खुदा का ध्यान करने (निमाज पढ़ने) बैठते हैं । फज्र, जहूर, असर, मगरब व ईसा ये पांचों निमाज के नाम हैं । वे बंदगी (ध्यान) में कोई कमी नहीं रखते हैं ।

ए अरस गलियों मिने, फिरते रहे रात दिन ।
चर्चा ही करत रहें, एही आहार मोमिन ।।३०।।

वे ब्रह्ममुनि दिन-रात ध्यान द्वारा परमधाम की नूरी गलियों में विचरण करते रहते हैं । वहीं की चर्चा करते रहते हैं । यही इन मोमिन आत्माओं का आत्मिक आहार है ।

यूं कै निसानियां अरस की, रहे मोमिन दिल दरम्यान ।
सो गिनती केती कहूं, सो कहां लो कहूं बखान ।।३१।।

इस प्रकार इन ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) के दिल में परमधाम की कई निशानियां (लक्षण) होती हैं । उन लक्षणों की गिनती और उसकी महिमा का गुणगान किस प्रकार करूं?

और फेर फिरस्ते नूर से, जो उतरे इनों कारन ।
सो मोमिनों के संग रहे, सो रहे हैं नूर तरफ रोशन ।।३२।।

इसके पश्चात् ईश्वरी सृष्टि (फरिश्तों) के विषय में कहूंगा, जो ब्रह्मसृष्टियों के कारण अक्षर धाम से अवतरित हुयी हैं । वे हमेशा इन ब्रह्ममुनियों की संगति में रहती हैं, और इनके हृदय में सदैव अक्षर धाम के ज्ञान का प्रकाश रहता है ।

उनों कौल फैल रहे नूर का, खान पान करे नूर ।
छोडे ना मोमिन सोहबत, रहे नूर दिल जहूर ।।३३।।

इनका ज्ञान, रहनी सब अक्षर धाम तक का रहता है, (अर्थात् जितना ज्ञान अक्षरब्रह्म को है, उतना) । वे उसी का चर्चा-चिंतन कर आत्मिक आहार प्राप्त करते हैं । ब्रह्ममुनियों की संगति कभी भी नहीं छोड़ते । इनके दिल में अक्षरब्रह्म का ज्ञान बसा होता है । (अर्थात् अक्षरब्रह्म, परब्रह्म के सत्ता के स्वरूप हैं, वे परब्रह्म के प्रति प्रियतम का भाव ना लाकर प्रभु–स्वामी का ही भाव रखते हैं)

लेवे साखें सब शास्त्रन की, श्रवना एही स्वाद ।
और को नफा पोहोंचावहीं, याकी घर अक्षर बुनियाद ।।३४।।

ईश्वरी सृष्टि सभी शास्त्रों की साक्षियां ग्रहण करती है। इन्हें इसी में आनंद आता है, तथा अन्य लोगों को भी लाभ पहुंचाती हैं। इनका मूल स्थान अक्षर ब्रह्म का घर (अक्षर धाम) है ।

उनको उन चरचा बिना, और ना कछुए सोहाए ।
ए सुख सागर में झीलते, नूर तखत बेठत आए ।।३५।।

इन्हें ब्रह्मज्ञान चर्चा के अतिरिक्त और कुछ भी अच्छा नहीं लगता है । वे आनंद के सागर में झीलते हुए नूरमयी (इल्म व ईमान) के तख्त पर विराजमान होकर अक्षर धाम पहुंचेंगे ।

और कई सिफत इनकी रेहेत हाल माफक ।
सो गिनती केती कहुं, रहे आरफ इलम बेसक ।।३६।।

और ईश्वरी सृष्टि की यह विशेषता है कि इनकी आत्मिक स्थिति इनके ज्ञान के अनुसार होती है । उसका कितना वर्णन करें ? वे संशयरहित ब्रह्मज्ञानी (आरिफ) होते हैं ।

और आम खलक जो तीसरी, रहे मूल जिनों मलकूत ।
सो लगे रहे जिमीन को, पोहोंचे न नजर जबरुत ।।३७।।

और जो तीसरी आम खलक (जीवसृष्टि) है, जिसका मूल उद्गम स्थान मलकूत (वैकुण्ठ) है । वे इसी मायावी संसार के सुखों में मग्न रहते हैं । इनकी आत्मिक दृष्टि अक्षर धाम तक भी नहीं पहुंच पाती है ।

मोह अहं की पैदास, ए जो कही त्रैगुन ।
ताकी तन मात्रा से, भई आम खलक उतपंन ॥३८॥

इनकी उत्पत्ति मोह (नींद-निराकर) व अहंकार (आदिनारायण के संकल्प) से हुयी है । वे जो तीन गुण (सत्, रज्, तम्) कहे गये हैं, इन तीनों गुणों की तन्मात्रा (शब्द, रूप, रस, स्पर्श, गंध) से जीवसृष्टि (आम खलक) की उत्पत्ति हुयी है ।

सो मोह इण्ड छोड ना सके, छुटे आप ही मेट जात ।
तिन को इन जिमी बिना, और ना रेहवे बात ॥३९॥

इस कारण वे मोह (नींद) अज्ञान जनित संसारिक सुखों की इच्छा को नहीं छोड़ पाते हैं। यदि वे इस मोह–नींद को छोड़ना चाहें, तो उनका अस्तित्व ही खत्म हो जाता है, (क्योंकि स्वप्न की उत्पत्ति नींद से होती है और नींद उड़ने पर उनका अस्तित्व खत्म हो जाता है)। उनको इस माया जगत् की बातों सिवा और कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

जो आए मोमिन सोहोबत में, पर खेंचत पेड बुनियाद ।
वाही सोहबत सुख लेगें, रहे जिमी रस स्वाद ॥४०॥

यदि वे किसी तरह से ब्रह्ममुनियों की संगति में आ भी गये, तो भी इनका मूल (नींद) इन्हें माया (चाहनाओं) की तरफ ही खींचता रहता है । उन्हें मायावी (सांसारिक इच्छाओं से युक्त) लोगों की संगति में ही (सांसारिक बातों में ही) सुख मिलता है। इसी में इन्हें स्वाद आता है।

उमेद बडी करें दिल में, रहे विषय वासना मन ।
काल से डरते रहे, नजर उपर ख्वाबी तन ॥४१॥

जीव सृष्टि अपने दिल में सांसारिक सुखों की बड़ी चाहना करती है। इनके दिल में विषय सुखों के संस्कार (यादें) संगृहित रहते हैं । मृत्यु से हमेशा डरते रहते हैं, क्योंकि इनकी दृष्टि (मोह–आसक्ति) इसी स्वाप्निक शरीर पर रहती है (इस शरीर को ही अपना स्वरूप मानते हैं)

जेहेल अंहकार इन से, कबूं न छूटे एह काम ।
दूनी मता मुरदार में, रहे तिन में आराम ॥४२॥

इनके अंदर अज्ञानता (जहालत) और अहंकार बसा होता है । कभी भी

उससे परे नहीं हो पाते हैं । जीव सृष्टि की सम्पत्ति नश्वर माया की ही होती है । उसी को प्राप्त करके वे आराम से रहते हैं ।

मुझको ऐसा चाहिए, एब मिले तो पावे या दुख ।
क्रोध करे तिन उपर, कबूं बात न पावे सुख ।।४३।।

वे यही चिंता करते रहते हैं, कि मुझे यह वस्तु और चाहिए । कोई गलती निकाल दे तो दुःखी हो जाते हैं और उस पर क्रोध करते हैं । कभी भी अच्छी बातों से सुख नहीं पाते ।

विचार ना करे वस्त का, ना नेक बद खबर ।
क्या नफा क्या नुकसान, ए सुध ना होए क्यूं कर ।।४४।।

इन्हें उस वस्तु से होने वाले लाभ या हानि की खबर नहीं होती है । ना ही अच्छे-बुरे कार्य (पाप-पुण्य) की पहचान होती है ।

सोहोबत भी तिन की करें, जो रहे जबराईल दुश्मन ।
सो निन्दा में रहे रात दिन, पेहेचान ना होए इनों मन ।।४५।।

जीव सृष्टि संगति भी ऐसे लोगों की करती है, जो परब्रह्म की राह पर चलने वालों (जिब्रील-धणी के जोश) के दुश्मन होते हैं । दिन-रात सच्चे मोमिनों की निंदा करते रहते हैं । उनके मन में सत्य की पहचान नहीं हो पाती है ।

लेवे अवगुन सबन के, ना गुन की तरफ नजर ।
मोमिन बैठे बका मिने, जिऩको होए गई फजर ।।४६।।

वे सबके अवगुण ही देखते रहते हैं, किसी के सद्‌गुणों की तरफ ध्यान नहीं देते । किंतु ब्रह्मात्माएं तो तारतम ज्ञान के द्वारा स्वयं को परमधाम मूलमिलावे में विराजमान देखती हैं । उनके हृदय में ब्रह्मज्ञान रूपी सवेरा हो चुका होता है ।

तिन को जाने आपसे, बल करे लज्या अहंकार ।
मुझ समान कोई नहीं, रहे मेरे बड़ो व्यवहार ।।४७।।

ऐसे मोमिनों (ब्रह्ममुनियों) को वे जीव सृष्टि अपने समान समझ लेते हैं । अहंकार पूर्वक निर्लज्ज होकर शक्ति प्रदर्शन करते हैं, कि मेरे समान शक्तिशाली कोई नहीं है । मेरी पहचान (व्यवहार) बड़े बड़े लोगों से है ।

लाज प्रतिष्ठा आपनी, दौड़त तरफ तिन ।
धनी तरफ के उनके, जो कछु आवे मन ।।४८।।

अपने सम्मान व प्रतिष्ठा के लिये अत्यंत परिश्रम करते रहते हैं । प्रियतम परमात्मा के लिये कुछ भी करना इन्हें अच्छा नहीं लगता है ।

जो रस में दुनीया की, बडी उमेद विचार ।
मिसल कुटम परिवार की, सिर खेचन लागे बार ।।४९।।

वे संसारिक भोगों में ही सुख मानते हैं और उन्हें पाने की बहुत आशा रखते हैं और उसी की चिंता करते रहते हैं । कुटुम्ब-परिवार के झंझटों में पड़कर अपने सिर के बाल खींचने लगते हैं ।

भूली निसबत धाम की, सगाई जात हैं हक ।
तो को तो रार जन की, कछु ना राखे सक ।।५०।।

प्रियतम परब्रह्म व परमधाम से अपने संबंध को, भूल जाते हैं, और संसारिक बुरे झगड़ालु लोगों के संबंध में जरा भी संशय नहीं रहता है - उन्हें ही अपना सच्चा साथी समझते हैं ।

जो कछु बात माया की, ता पर देवे चित ।
धाम मता बका ठौर की, डार देवे सब बेत ।।५१।।

माया संसार की जो कुछ भी बातें होती हैं, उसी पर सारा चित्त लगाये रहते हैं । दिव्य परमधाम का जो अखण्ड खजाना (ब्रह्मज्ञान) है, उसे एक तरफ रख देते हैं (दिल से निकाल देते हैं)।

इन भांत केती कहुं, लक्षन खलक जो आम ।
बरकत इन मोमिन की, इनों पाई भिस्त की ठाम ।।५२।।

इस प्रकार आम खलक (जीव सृष्टि) की कितनी निशानियां कहें ? इन ब्रह्मात्माओं (मोमिनों) की कृपा से एसे मायावी जीव भी बहिश्तें (मोक्ष स्थान) प्राप्त कर लेंगे ।

महामत कहे ए मोमिनो, ए नूर नजर देखी जाए ।
हक सुभान तुम को, सब विध देई बताए ।।५३।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह सारा ज्ञान आत्मिक नूरमयी दृष्टि से ही समझा जा सकता है । प्रियतम अक्षरातीत ने आपको सारा ज्ञान प्रदान कर दिया है ।

प्रकरण १२७ चौपाई ४३०२

अब बाहिर अन्दर देखिए

इस प्रकरण में मोमिनों की रहनी का वर्णन है। जिनके दिल में परब्रह्म का स्वरूप बस गया होता है, उनके दिल के भीतर और बाहिर सभी जगह श्रीराज जी बसते हैं । अष्ट प्रहर वे धाम दूल्हा श्री राज जी की याद में गर्क रहते हैं ।

अब बाहिर अन्दर देखिए, मोमिन दिल दरम्यान ।
हक बिना न पाईये, जित उगी सूरत रेहेमान ।।१।।

इन ब्रह्मात्माओं के हृदय में अंदर-बाहर सभी जगह देखिये, जहां प्रियतम अक्षरातीत का स्वरूप उदय हो गया होता है, इनके दिल में श्री राजजी के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा ।

बाहेर इनों की बंदगी, करें जिकर सुभान ।
इनकी ताम कलाम रब्बानी, जासो होए हक पेहेचान ।।२।।

बाहरी रूप से इनकी बंदगी यही है कि वे दिन-रात प्रियतम अक्षरातीत की चर्चा करते हैं । इनका आत्मिक आहार यह ब्रह्मवाणी है, जिससे प्रियतम परब्रह्म की पहचान होती है ।

रहे जोस इनों जिकर का, यों श्रवनो रहे स्वाद ।
या केहनी से नासे, पावे सुख बका बुनियाद ।।३।।

इनके अंदर परब्रह्म की वाणी मंथन-चर्चा का ही जोश भरा रहता है, उसी का श्रवण करके आनंद प्राप्त करते हैं । इस परमधाम के ज्ञान से माया के दुःख-द्वंद्व का नाश कर देते हैं, और अपने निजघर के अखण्ड सुखों की प्राप्ति करते हैं ।

एही सुकर बजाए ल्यावहीं, देखे धनी के नित गुन ।
याद न करें अपनी बंदगी, आपै में देखे औगुन ।।४।।

वे हमेशा प्रियतम अक्षरातीत के शुक्रगुज़ार (कृतज्ञ) रहते हैं । हमेशा धणी की कृपाओं का स्मरण करते रहते हैं । अपनी बंदगी (सेवा, समर्पण, तप, ध्यान) को याद नहीं करते (कि मैंने इतनी भक्ति की है) । बल्कि अपने अंदर सदैव अवगुण (कमियां) देखते रहते हैं ।

ना तो आठों पहर हक की, रहत जिकर में गरक ।
एक साएत न छोड़े सूरत, कोई सकस ना और इन माफक ।।५।।

बल्कि वे तो आठों प्रहर (२४ घण्टे) प्रियतम परब्रह्म की ही चर्चा-चिंतन-स्मरण में मग्न रहते हैं । एक पल भी श्री राज जी के स्वरूप को (उनके

स्मरण, ध्यान को) अपने हृदय से अलग नहीं करते हैं । इन ब्रह्ममुनियों के तुल्य अन्य कोई भी नहीं हो सकता है ।

मोमिन सब एक तन हैं, बीच असल वाहिदत ।
जित हक सुभान की, भई सफ खडी क्यामत ।।६।।

वे सभी मोमिन (ब्रह्मात्माएं) स्वलीला अद्वैत परमधाम में एक ही स्वरूप (एक तन-मन) हैं । जिनके विषय में हदीसों में लिखा है कि कियामत के समय परब्रह्म अक्षरातीत की अंगरूपा वे ब्रह्मात्माएं (मोमिन) जागकर अलग पंक्ति (रहनी) में खड़ी होंगी ।

इनका बाहिर देखिए, नजर भर के नूर ।
इनों बाहिर सिफत ना पोहोंचत, तो क्यूं कर कहुं जहूर ।।७।।

अब अपनी आत्मिक नूरी दृष्टि से इन ब्रह्ममुनियों की बाह्य स्थिति देखिये । इनकी बाह्य रहनी की प्रशंसा में भी माया के शब्द नहीं पहुंच पा रहे हैं, तो उनकी पूर्ण शोभा का किस प्रकार वर्णन करूं?

पर नेक तो भी कहूं, सिफत इन मोमिन ।
ब्रह्म अस्त जग्यां करें, सो हुआ सब में रोशन ।।८।।

परंतु फिर भी इन मोमिनों की रहनी (की शोभा) का थोड़ा सा वर्णन करूंगा । ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है, ऐसा सभी जगह प्रचार करके वे ब्रह्ममुनि सबके हृदय में ब्रह्मज्ञान का प्रकाश करते हैं ।

उठे चार घड़ी रात पिछली कहे प्रात अन्दर श्री धाम ।
कोई ताको श्रवन करें, सुख पावत आठों जाम ।।९।।

प्रातः साढ़े चार बजे (जब रात ढलने में चार घड़ी बाकि रहती है, तब) बिस्तर से उठ जाते हैं । उसके पश्यात् रंगमहल में प्रातः होने वाली लीला का वर्णन करते हैं । कोई कोई सुंदरसाथ उसका श्रवण करते हैं । इस प्रकार आठों प्रहर परमधाम का आनंद लेते रहते हैं । (यहा पन्ना में ब्रह्ममुनियों की रहनी कैसी थी, उसका वर्णन कर रहे हैं)

सो अरुन उदे लों होत है, धाम परदक्षिना गृदवाए ।
और सूरत हक हादी की, नख शिख लों बरनवाए ।।१०।।

यह वर्णन सूर्योदय होने तक होता रहता है । रंगमहल की चारों तरफ की शोभा का वर्णन करते हुए रंगमहल की परिक्रमा करते हैं । इसके साथ ही श्री राज श्यामा जी के स्वरूप का (चरणों के) नख से शिख (शीश कमल) तक वर्णन भी करते हैं ।

ता उपरान्त सूरत, कहे हादी की मोमिन ।
ता ऊपर विरत आठों पोहोर की, मोमिन करें रोशन ॥११॥

श्री राज जी के स्वरूप का वर्णन करने के पश्चात् सुंदरसाथ, श्री श्यामा जी के स्वरूप का भी वर्णन करते हैं । उसके पश्चात् आठो प्रहर की वृत (२४ घण्टे की आनंद लीला) का सुंदरसाथ वर्णन करते हैं ।

या दरम्यान मे कीर्तन, बात की जो बीतक ।
फेर सरूप कहे जावहीं, जो बीच अरस के हक ॥१२॥

इसके बीच बीच में परमधाम की लीला (बीतक) से संबंधित कीर्तन (श्रीमुखवाणी) भी गाते रहते हैं । उसके पश्चात् मूल मिलावे में विराजमान प्रियतम श्री राज जी के स्वरूप का वर्णन किया जाता है ।

प्रातः सों ले संझा लों, बीतक जो श्री धाम ।
हक हादी रूहन की, जो होत पूरन मनोरथ काम ॥१३॥

परमधाम में प्रातः से लेकर संध्या समय तक श्री राज श्यामा जी एवं सखियों की जो लीला होती है, उसका वर्णन करते हैं, जिससे सारी (आत्मिक) मनोकामनायें पूर्ण होती हैं ।

और परदक्षिना धाम की चारों तरफ गृदवाए ।
चारों वन पुखराज देख के, मूल जमुना फेर आए ॥१४॥

इसके साथ ही रंगमहल के चारों ओर परिक्रमा करते हुए उनकी शोभा का वर्णन करते हैं । रंगमहल की उत्तर दिशा में स्थित चारों वन (बड़ोवन, ताड़वन, मधुवन, महावन) एवं पुखराज पहाड़ की शोभा देख के (वर्णन करके) फिर यमूना जी के मूल कुण्ड में आ जाते हैं, जहां से यमूना जी प्रकट होती हैं । (इस प्रकार वर्णन करते हुए चितवनि कराते हैं)

दोए पुल सातों घाट, जाये पोहोंचे हौज कौसर ।
फेर धाम अन्दर आए के, चढ़े आकासी पर ॥१५॥

फिर दोनों पुलों (केल व बट पुल) एवं सातों घाटों (केल, लिबोई, अनार, अमृत, जांबु, नारंगी, बट) का वर्णन करते हुए हौज कौसर ताल पहुंच जाते हैं । फिर पुनः रंगमहल के अंदर आकर दसवीं चांदनी में चढ़ जाते हैं । (दसवीं चादनी की शोभा का वर्णन करते हैं ।)

फेर मूल मिलावा बरनन, इत चढ़त है दिन घड़ी चार ।
कबूं छे घडी कबूं दोए पहर, रहत एही बिहार ॥१६॥

फिर मूल मिलावे की शोभा का वर्णन करते हैं । इस प्रकार प्रातः के

७.३० बज जाते हैं, (चार घड़ी दिन हो जाता है)। कभी इस प्रकार वर्णन-चितवन करते हुए छः घड़ी (२.१५ घण्टे) बीत जाती है तो कभी दो प्रहर (६ घण्टे) बीत जाते हैं (दोपहर के 12 बज जाते हैं)। इस प्रकार पन्ना जी में ब्रह्ममुनियों की लीला चलती रहती है ।

ए उपरान्त सब उठके, जाए देह क्रिया करन ।
फेर आए के बैठत, फेर चर्या होत रोशन ॥१७॥

इसके पश्चात् सब सुंदरसाथ यहां से उठकर देह क्रिया के लिये जाते हैं । नित्य क्रिया से निवृत्त होकर फिर से वापस आकर बैठ जाते हैं । इस प्रकार पुनः ब्रह्मज्ञान चर्चा होने लगती है ।

सो बैठत दोए पोहोर लों, जहां लों आरोगे श्री राज ।
उपरान्त आवे गावन को, जासों होत सबन को काज ॥१८॥

यह ब्रह्मज्ञान चर्चा दो प्रहर दिन (दोपहर १२ बजे तक) चलती है, जब तक श्री प्राणनाथ जी भोजन आरोगने नहीं जाते हैं । चर्चा के पश्चात् वाणी गायन करने वाले आते हैं । जिसके द्वारा सभी अत्यंत आनंद का अनुभव करते हैं ।

सो अद्वैत बानी गावत, जो रब्बानी कलाम ।
जिनसे चौदे तबक, पावे अखण्ड ठौर आराम ॥१९॥

यह तो स्वलीला अद्वैत परमधाम की वाणी का गायन हो रहा है, जो कि स्वयं परब्रह्म की वाणी है । इसके द्वारा १४ लोकों के समस्त जीव बहिश्तों (मोक्ष स्थान) में अखण्ड सुखों की प्राप्ति करेंगे ।

जो चार घडी दिन पिछला, इनों की बैठक होए ।
उपरान्त और आवत, हक की सिफत गावे सोए ॥२०॥

जब दिन पूरा होने में चार घड़ी बाकि रहती है (४.३० बजे), तब सुंदरसाथ पुनः एकत्रित होकर बैठते हैं , इस समय अन्य सुंदरसाथ भी वाणी गायन करने आ जाते हैं और प्रियतम अक्षरातीत के गुणों का गायन करते हैं ।

होत अरज इन समे, मांगत द्वा मोमिन ।
हक सुभान सुनत, कबूल फुरमावत रोशन ॥२१॥

संध्या के ४.३० बजे सभी सुंदरसाथ मिलकर धाम धणी से प्रार्थना (अर्जी) करते हैं और निजघर परमधाम वापस चलने की दुआ करते हैं । प्रियतम अक्षरातीत सारी बांते सुनते हैं और उसे स्वीकार भी करते हैं ।

होत राज आरोगन का समया आरती का जब ।
एही निमाज मगरब की, सुख पावे मोमिन तब ॥२२॥

जब संध्या के भोजन का समय होता है, तत्पश्चात् आरती का समय होता है । यही (आरती) मगरिब की निमाज है, जिसके द्वारा सुंदरसाथ अत्यंत सुख पाते हैं ।

फेर एही निमाज को, बैठत सब मोमिन ।
ले सँझा से मध लों, करत सूरत वृत रोशन ॥२३॥

तत्पश्यात् इसी निमाज़ (परमधाम के चिंतन-चितवन) के लिये सुंदरसाथ बैठते हैं । संध्या से लेकर मध्य रात्री तक इसी प्रकार परमधाम की लीला का वर्णन (वृत) करते हैं ।

धाम परदिक्षना इत होत है, और हक हादी रूहों सूरत ।
सो सँझा से लग प्रातः लों, कहा जात व्रत इत ॥२४॥

इस समय रंगमहल के चारों ओर की शोभा का वर्णन करते हुए परिक्रमा करते हैं, कि किस प्रकार यहां श्री राज श्यामा जी एवं सखियों का स्वरूप अनेक प्रकार से लीला विहार करता है । परमधाम में संध्या से लेकर अगले दिन प्रातः तक होने वाली लीला (वृत्त) का वर्णन सुंदरसाथ करते हैं ।

और बानी हादीअ की जो रब्बानी कलाम ।
इन उपरान्त फिरकान को, माएने होत इस ठाम ॥२५॥

साथ ही श्री जी के मुखारविंद से ब्रह्मवाणी की चर्चा होती है तथा कुर्आन पाक के रहस्यों का स्पष्टीकरण किया जाता है।

फेर आधी से आवत गावन को मोमिन ।
सो बानी पोहोंचावे अरस में, होवे इसक दिल रोशन ॥२६॥

आधी रात्रि के पश्चात् पुनः वाणी गायन वाले सुंदरसाथ आते हैं । यह परमधाम की दिव्य वाणी है जो, आत्मा को परमधाम पहुंचा देती है और आत्मा के धाम दिल में प्रियतम के प्रेम (इश्क) का प्रकाश कर देती है ।

सो रात पिछली घडी चार लों, जिकर होत है सुभान ।
उपरान्त प्रातः केहने को, बैठ करत बका पेहेचान ॥२७॥

इस प्रकार प्रातः के साढ़े चार बजे (जब रात पूरा होने में चार घड़ी बाकि होती है) तक प्रियतम अक्षरातीत की वाणी गूंजायमान होते रहती है। उसके पश्चात् पुनः प्रातःकाल का स्वरूप व तीजी भोम की पड़शाल पढ़कर अखण्ड परमधाम की पहचान करते हैं ।

यूं बाहिर मोमिन की, होत है गुजरान।
यूं सब जागा ठौर ठौर, दिया कर आसान ।।२८।।

इस प्रकार ब्रह्मात्माओं की बाहरी रहनी होती है । इस प्रकार सभी जगह, सभी स्थानों में ब्रह्मवाणी के द्वारा परमधाम को याद करना सुंदरसाथ के लिये आसान हो गया है ।

एही इनों पाया करार, इनों का इसक लगा रहे हक की सूरत से।
तो तन छूटे तिनसे, जो पड़ा आए इन में ।।२९।।

इन ब्रह्ममुनियों ने इसी शांति पायी है कि इनका प्रेम प्रियतम अक्षरातीत के स्वरूप से बना रहे और जब यह मिथ्या शरीर छूटे, तो उनकी आत्मा प्रियतम अक्षरातीत के चरणों में पहुंच जाये ।

एही भिस्त मेवा कही, हुई मेहर ऊपर मोमिन ।
और इनों को जो ना चाहत, क्या कहूं सिफत तिन तन ।।३०।।

इसे ही (ब्रह्मवाणी को) बहिश्त का मेवा कहा है, जो ब्रह्मसृष्टियों पर कृपा हुयी है (जो इन्हें ब्रह्मवाणी मिली) । इस ब्रह्मवाणी की जो इच्छा नही करता है, उनकी क्या प्रशंसा करें ? (धिक्कार है उन्हें।)

महामत कहे ए मोमिनों, तुम इन के जाननहार ।
अखण्ड बका भोम में, तुमही करो बिहार ।।३१।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! परमधाम के विषय में जानने वाले आप ही हैं । परमधाम की अखण्ड भूमिका में आप आत्माएं ही अनादि काल से लीला विहार करते हो ।

प्रकरण १२८ चौपाई ४३३३

नूर खूबी सुख सागर

इस प्रकरण में परमधाम के सर्व रस सागर में होने वाली अलौकिक लीला विहार के दर्शन कराए गये हैं । सर्व रस सागर की खूबी और भी बढ़ जाती है जब श्रीराज जी की सवारी यहां आती है । तब पशु पक्षियों पर भी सवारी की लीला होती है, इस नूरमयी शोभा का वर्णन ब्रह्मात्माओं के वास्ते हुआ है ।

नूर खूबी सुख सागर, उतर पूरब सुखदाए ।
ए सब रस सब विध सब सुख, नूर सब अंगों अपजाए ।।१।।

परमधाम की पूर्व दिशा में नूरमयी शोभा से युक्त सुख का सागर सर्वरस सागर विद्यमान है । यहां आने पर सखियों के अंग अंग में सर्व रसों की अर्थात् सभी प्रकार के आनंद की प्राप्ति होती है ।

नूर खूबी सुख सागर, भोम जिमी सब नूर।
देख खुसाली होत है, एह क्यूं कर कहूं मजकूर।।2।।

यह सुखदायी सर्वरस सागर शोभा–सुंदरता से युक्त है। यहां की सारी धरती भी नूरमयी है। यहां की शोभा को देखने पर अत्यंत आनंद प्राप्त होता है। उसकी अपरम्पार शोभा का वर्णन किस प्रकार करूं?

ए सब सुखकारी सब ठौर हैं, जाको रूप तेज अमान ।
मावत नाही आकश में, तो क्यों कर कहुं बयान ।।३।।

यहां की सारी शोभा, सभी स्थान सुखदायी हैं, जिनका स्वरूप सुंदर और तेज अनंत है, जो कि आकाश (रिक्त स्थान) में भी नहीं समा पाता है तो उसका वर्णन किस प्रकार करूं?

सब रंग जिमी जहूर की, सब रंग बीच दरखत ।
सब सुखकारी सीतल, अपना रूप दिखावत ।।४।।

यहां की धरती में सभी (अनंत) रंगों की शोभा है, यहां सभी रंगों के वृक्ष विद्यमान हैं । यहां की प्रत्येक लीलारूप सामग्री शीतल व सुखदायी स्वरूप दर्शाती है ।

रवेस अखंड भोम की, चेतनता सुखदाए ।
फल फूल पात दरखत, डारी डोरी बंध बनी आए ।।५।।

अखण्ड परमधाम की रीति (मूल स्वभाव) ऐसी है कि यहां की प्रत्येक वस्तु चेतन व आनंददायी है । फल, फूल, वृक्ष, पत्ते एवं वृक्षों की डालियां पंक्तिबद्ध रूप से (एक सीध में) शोभायमान हैं ।

रस्ते इन दरखतों के, डोरी बंध बने नूर ।
भोम चढ़ती आसमान लों, सो कह्यो न जाए जहूर ।।६।।

इन वृक्षों के बीच आये नूरमयी रास्ते (रौंस) कतारबद्ध रूप से शोभायमान हैं। इस प्रकार एक के ऊपर एक वृक्षों की असंख्यों भोम आसमां तक शोभायमान हैं । उसकी दिव्यता, तेजोमयी प्रकाश का वर्णन किस प्रकार करें?

ए वन पूरब तरफ का, पशु पंखी पातसाई नित ।
खिलौने हक सुभान के, आवत मोजरे को इत ।।७।

यह वन परमधाम की पूर्व दिशा में (सर्वरस सागर के अंतर्गत) आये हैं, जहां पशु-पक्षियों का शाश्वत साम्राज्य है । ये पशु-पक्षी प्रियतम अक्षरातीत के प्यारे खिलौने हैं, जो धणी के दर्शनों के लिये आते हैं ।

एक एक दरखत में, करे पातसाई सब ।
जब आवे असवारी राज की, अपनी सेवा दिखावे तब ।।८।।

एक-एक वृक्षों में सब जगह ये पशु-पक्षी सुख व ऐश्वर्य से युक्त होकर राज्य करते हैं, जब प्रियतम श्री राज जी की सवारी आती है, तब सभी अपनी-अपनी सेवा प्रदशित करते हैं ।

खूबियां इन सागर की, गिनती कही न जाए ।
पर चूप से केहेना भला, सो कुछ दिल में हुकम ल्याये ।।९।।

इस सर्वरस सागर की विशेषताओं की गिनती करना सम्भव नहीं है । परंतु चुप रहने से तो कुछ कहना ही अच्छा है । श्री राजजी के हुक्म से कुछ तो शोभा दिल में आयेगी ।

इन केहेनी से उपजत, आगे कोट गुनो प्रकास ।
मोमिन रूहों को इन बिना, और न उपजे आस ।।१०।।

इस वर्णन से हृदय में आनंद उत्पन्न होता है, और आगे चलकर वह प्रकाश (ज्ञान, प्रेम, आनंद) बढ़ते हुए कई करोड़ गुना हो जाता है । ब्रह्मात्माओं के हृदय में फिर किसी प्रकार की आशा (चाहना) नहीं रहती ।

रहे रात दिन एही चितवनी, एही करत बिहार ।
एही ठौर देखत रहें, एह गत है दिल सार ।।११।।

(ब्रह्मवाणी की वजह से) उन ब्रह्ममुनियों के दिल में दिन-रात वही ध्यान रहता है, उनकी आत्मिक नजर परमधाम में ही विहार करते रहती है । २५ पक्षों की शोभा ही देखने में मग्न रहते हैं, उनके दिलो की यही स्थिति बनी रहती है ।

तरफ पूरब अक्षर की, ता को वार ना पार सुमार ।
ए सब रंग जिमी एक रस, इत पोहोंचत नहीं विचार ।।१२।।

अक्षरधाम की पूर्व दिशा में सर्वरस सागर है, जिसका ना कोई पारावार है ना ही सीमा । यहां सभी (अनंत) रंगों की धरती है, जो कि सभी जगह एकरस है । मायावी जीवों का चिंतन वहां तक नहीं पहुंच पाता है ।

जब होत असवारी राज की, दिन रहे पिछला पोहोर ।
नीले पीले मंदिर में, सखीया आए पोहोंची ठौर ठौर ।।१३।।

जब दोपहर के तीन बजते हैं (दिन पूरा होने में एक प्रहर बाकि रहता है), तब रंगमहल से श्रीराजजी की सवारी निकलती है । इस समय सभी सखियां विभिन्न स्थानों से खेल - रामतें, हांस - विनोद करके तीजी भोम के नीले - पीले मंदिर में आती हैं ।

श्री ठकुराणी जी पूछत, रूहों को इन समें ।
कहां जाए खेलन कौन तरफ, सब मिल उत्तर देत हैं ।।१४।।

इस समय श्री श्यामा जी सखियों से पूछती हैं, कि "कहो सखियों ! आज खेलने के लिये कौन सी जगह जाना है ? तब सब सखियां मिलकर इस प्रकार उत्तर देती हैं -

आज जाए सब रस सागर, तरफ पूरब के ।
केहे भली लगी सबके मन, आए पोहोंचे सब गोख में ए ।।१५।।

सखियां कहती हैं, कि आज हम पूर्व दिशा में शोभायमान सर्वरस सागर जायेंगी । यह सुनकर सभी आनंदित हो जाते हैं और तीजी भोम की पड़शाल में किनारे (गोख) में आकर खड़े हो जाते हैं ।

आए सबके सुखपाल, रुजू होत सबके आगे ।
श्री राज ठुकराणी जी एक पर, सब खिलौने कदमों लागे ।।१६।।

तब सभी सखियों के सुखपाल उनके सामने उपस्थित हो जाते हैं । श्री राज श्यामा जी एक सुखपाल में विराजमान हो जाते हैं । इस समय सभी पशु पक्षी चांदनी चौक में आकर अभिवादन करते हुए धणी का दर्शन करते हैं ।

सखियां जोडे बैठत, एक एक सुखपाल में दोए दोए ।
आसमान छाह्या असवारी, कही जाए न सिफत सोए ।।१७।।

एक-एक सुखपाल में दो-दो सखियां साथ में विराजमान हो जाती हैं । इस प्रकार धणी की सवारी आसमां में छा (भर) जाती है । (चारों तरफ आकाश में सुखपाल ही सुखपाल दिखायी देते हैं), उस शोभा का वर्णन करना असम्भव प्रतीत होता है ।

किरना नूर जिमीय की, मावत नाही आसमान ।
वन किरना लरत है, कोई सके न काहूं भान ।।१८।।

परमधाम की नूरमयी धरती की तेजोमयी किरणें आकाश में नहीं समा पाती हैं (इतनी अधिक हैं)। इधर वनों की रंगबिरंगी किरणें भी निकलकर आ

रही हैं । सारी किरणें आपस में टकराती हुई युद्ध करती प्रतीत हो रही हैं । उसमें कोई भी किरण दूसरी किरण को नहीं दबा पाता है ।

नूर किरना जोत सुखपाल की, और बस्तर भूषण सिनगार ।
क्यूं कहूं रोशनी इनकी, अम्बर मावत नाहीं झलकार ।।१९।।

इन सभी किरणों के मध्य सुखपालों की नूरमयी तेजोमयी किरणें जगमगा रही हैं और इनके बीच श्रीराजश्यामाजी एवं सखियों के वस्त्राभूषणों के श्रृंगार जगमगा रहे हैं । इनकी नूरमयी रोशनी की शोभा किस प्रकार कहूं, जो आकाश में नही समा पा रही हैं ।

लवाजमे बाजंत्र के, असवारी सुख चैन ।
ए शोभा क्यों कहुं इन मुख, एह देखत रूह के नैन ।।२०।।

विभिन्न प्रकार के वाद्ययंत्र और सवारी का आनंद अवर्णनीय है । इसे आत्मा के नेत्र ही दर्शन कर सकते हैं ।

ए नूर खूबी सुख सागर की असवारी कर जात ।
सो असवारी कै पंखियों, ए क्यूं कहूं नूर सिफात ।।२१।।

यह नूरमयी सुख के सागर, सर्वरस सागर की नूरी विशेषता है, जहां सुखपालों पर सवार होकर श्रीराजश्यामाजी एवं सखियां जाते हैं। यहां कई पक्षियों पर भी सवारी करके जाते हैं, उसके नूरी शोभा किस प्रकार वर्णन करूं।

महामत कहे ए मोमिनों, एह बका तुमारी ठौर।
तुम लेत हो इन सुख को, तुम बिना कोई ना जाने और।।22।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुंदरसाथ जी! यह आपका अपना परधाम है । इन सुखों को अनादि काल से आप ही लेते रहे हो । इसके विषय में आपके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता है ।

प्रकरण १२९ चौपाई ४३५५

सर्व रस सागर के अपरम्पार सुख

इस प्रकरण में सर्व रस सागर के अपरम्पार सुखों के दर्शन कराये गये हैं । चार हार हवेलियों की अनुपम शोभा का विस्तार से वर्णन है । इन सुखों के अधिकारी ब्रह्मात्माएं ही हैं । उन्हीं के लिए सर्व रस सागर की शब्दातीत शोभा का वर्णन हुआ है ।

अतंत पूरब सुखदाए, पोहोंचे सागर जब ।
इत सागर समान सुख हैं, पावत असवारी में तब ।।१।।

परमधाम की पूर्व दिशा में अत्यंत सुखदायी सर्वरस सागर विद्यमान है, जहां के सुख भी सागर के समान अनंत हैं । वहां जब श्रीराजश्यामाजी व सखियां सुखपालों में सवार होकर जाते हैं, तो वहां अनंत सुख पाते हैं ।

जब पोहोंचे सागर निकट, इत हार हवेलियां नूर ।
भोम पांच तहां देखिए, छठी चांदनी अति सुखकार ।।२।।

जब सर्वरस सागर (बड़ी रांग) के निकट पहुंचते हैं, तो उससे पहले छोटी रांग की नूरमयी चार हार हवेलियां दिखायी देती हैं, जिनकी सुखदायी पांच भोम व छठी चांदनी है ।

रस्ते दोरी बंध, शोभित चारों दरम्यान ।
तहां खूबी नूर दरखत, सब अति सुखकारी जान ।।३।।

यहां हवेलियों की चारों हारों के मध्य पंक्तिबद्ध रूप से रास्ते (रौंसें) शोभायमान हैं । जिसके दोनों ओर फूलों के नूरमयी वृक्ष शोभायमान हैं, जो कि अत्यंत सुखकारी हैं ।

एक एक हवेली के, साम सामे चार द्वार ।
मंदिर ताके देखिए, हर एक में बारे हजार ।।४।।

प्रत्येक हवेली के चारों दिशा में द्वार हैं । इस प्रकार सभी हवेलियों में आमने-सामने द्वार आये हैं । प्रत्येक हवेली में बारह-बारह हजार मंदिर (६-६ हजार मंदिरों की दो पंक्तियां) आये हैं ।

ए भोम जवेर नूर की, हवेली मंदिर सब नूर ।
थम्म दिवाल द्वार ने, सो कह्यो न जाए जहूर ।।५।।

यहां की धरती, जवाहरात सब नूर के हैं, हवेली व मंदिर भी नूर के हैं । स्तम्भ, दीवारें व द्वार भी नूरमयी जगमगाती शोभा से युक्त हैं, उनकी दिव्यता का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

तिन हवेलियों दरम्यान, साज संदूके नाहीं सुमार ।
हक हादी दिल माफक, सो मोमिन करे विचार ।।६।।

उन हवेलियों के मंदिरों में सौंदर्य सामग्री से परिपूर्ण संदूकों का कोई पारावार नहीं है । यह तो श्री राज श्यामा जी के दिल के अनुसार शोभायमान हैं । इसका सुंदरसाथ जी चिंतन करें ।

इत बिछौने चांदनी, हक हादी रूहें बैठे जब ।
इन ठौर के खिलौने, सब मुजरा करत हैं तब ॥७॥

छोटी रांग की हवेलियों की चांदनी में नूरमयी बिछौने बिछे हैं । यहां जब श्री राज श्याम जी एवं सखियां विराजमान होते हैं, तब यहां रहने वाले पशु-पक्षी आकर धणी के दर्शन व अनेक प्रकार से अभिवादन करते हैं ।

कै मेवे बका ठौर के, जब ल्यावत आरोगने को ।
हक हादी रीझ बातां करें, अत सुख आराम में ॥८॥

वे पशु-पक्षी अखण्ड परमधाम के कई प्रकार के मेवे धणी को आरोगाने के लिये लाते हैं । तब श्री राज श्यामा जी उन पर प्रसन्न होकर प्रेम पूर्वक बातें करते हैं । इस प्रकार पशु पक्षियों को बहुत आनंद प्राप्त होता है ।

सराहत एक दूजी को, हक हंस काढे मुख बैन ।
नैनों नैन मिलावहीं, कह्यो जाए ना ए सुखचैन ॥९॥

सभी एक-दूसरे से मीठे मेवों की सराहना करते हैं । श्री राज जी मुस्कुराते हुए सखियों के नेत्रों से नेत्र मिलाकर प्रेम भरे वचन मुख से कहते हैं । उस प्रेम व आनंद का वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

आगे रांग जब देखिए, जहां बड़ी पौर हैं द्वार ।
आगे चार चबूतरे, दोए पर दरखत दोए मुनारों द्वार ॥१०॥

जब छोटी रांग के आगे बड़ी रांग की शोभा देखते हैं, जहां बड़े मुख्य द्वार हैं। उसके आगे चार चबूतरे हैं, जिनमें से दो चबूतरे ऊपर हवेलियों से लगकर मीनारों (गुर्जों) के रूप में हैं और दो चबूतरे नीचे चांदनी चौक में हैं, जिनमें क्रमशः लाल व हरे रंग के वृक्ष शोभायमान हैं ।

दोए आगे लगते द्वारने, जो अति सुख देवनहार ।
सब रस सब रंग तिन के, इत शोभा सुख अपार ॥११॥

दो चबूतरे हवेली के मुख्य द्वार के सामने (दायी-बायीं तरफ) स्थित हैं, जो कि अत्यंत सुखदायक हैं । इनमें सभी प्रकार के रंग हैं, एवं सभी प्रकार के सुख भी प्रदान करते हैं । इनकी शोभा एवं सुख का कोई पारावार नहीं है ।

दोए मुनारों दोनों पर, बडो ता को विस्तार ।
रांग बराबर पोहोंचे छज्जे, गोख अति सुखकार ॥१२॥

दोनों चबूतरों के ऊपर प्रत्येक भोम में झरोखे (स्तम्भ, कठेड़े, महराब) आते गये हैं, जो कि दो चौरस गुर्ज (मीनार) के रूप में शोभायमान हो रहे हैं । इस प्रकार ये गुर्ज बड़ी रांग की चांदनी तक पहुंच गये हैं , जिनके झरोखे अत्यंत

सुखदायी हैं ।

इत जोत जवेर सब, चेतन नूर प्रकाश ।
साम सामी किरना लरे, सो जोत न माए आकाश ।।१३।।

इनके जवाहरातों की ज्योति चेतन व नूरमयी प्रकाश से युक्त है । उनकी रंगबिरंगी किरणें आमने-सामने से आकर एक दूसरे से टकराती हैं, जो कि इतनी अत्यधिक होती हैं, कि आकाश में नहीं समा पातीं ।

छहां दोए चबूतरों, नूर पेड़ जरी दरखत ।
क्यूं कहुं शोभा इनकी, जित हक हादी रूहें बैठत ।।१४।।

चांदनी चौक के दोनों चबूतरों पर जरी से युक्त दो नूरमयी वृक्ष शोभायमान हैं, जिनकी छाया सम्पूर्ण चबूतरे पर होती है । इन चबूतरों की शोभा किस प्रकार वर्णन करुं, जहां स्वयं श्री राज श्यामा जी एवं सखियां विराजमान होते हैं ?

द्वार बारे हजार रांग में, जाइये सागर को जब ।
बीच बडा द्वार है तीत, अत सुख बैठत पावे तब ।।१५।।

बड़ी रांग की १२ हजार हवेलियों के १२ हजार द्वार सागर की तरफ जाते समय दिखायी देते हैं । उनके बीच में एक बड़ा द्वार है । यहां जब विराजमान होते हैं तो अत्यंत सुख पाते हैं ।

और बारे हजार द्वारने, रहे दोउं बाजू इन के ।
चारों तरफों मोहोल दस्यिाव के, मोमिन खूबी जानत ए ।।१६।।

तथा बड़ी रांग की हवेलियों के १२-१२ हजार द्वार महाहवेली के दोनों (बाहरी व भीतरी) तरफ होते हैं । इस प्रकार सागर की चारों दिशा में महल (हवेलियां) विद्यमान हैं । इस शोभा को ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं । (एक महाहवेली में बारह हजार हवेलियों की बारह हजार पंक्तियां होती हैं, जिनके एक दिशा में बारह हजार द्वार होते हैं)।

छत्तीस हजार द्वारने, इन रांग के दरम्यान ।
ऐसे ही सामी रांग के, द्वार नूर शोभा जान ।।१७।।

सागर की एक दिशा में रांग की १२ हजार हवेलियों के ३६ हजार महाराबी द्वार (मुख्य द्वार व दायें बायें चबूतरे के महाराब) जगमगा रहे हैं । इसी प्रकार इसके सामने की रांग (१२ हजार हवेलियों) के नूरमयी द्वारों की भी शोभा है।

और बारा बारा हजार द्वार ने , दोए तरफ जिमी के होए ।
एह शोभा चारों तरफ की, रूहे रमें सुख पावे सोए ॥१८॥

अइसी प्रकार सागर के दायें-बायें (जिमी की तरफ) बड़ी रांग के १२-१२ हजार मुख्य द्वार भी शोभायमान हैं । इस प्रकार सागर के चारों तरफ की शोभा देखते हुए सखियां अनेक प्रकार से खेल रामतें करती हैं और आनंदित होती हैं ।

इत चारों तरफ चबूतरा, जहां लगत है जल ।
ए सुख जाने मोमिन, जाके दिल निरमल ॥१९॥

यहां सागर के चारों तरफ जल रौंस का चबूतरा है, जिसका स्तर सागर के जल के बराबर है । यहां से सागर के जल को हाथ से स्पर्श कर सकते हैं । यहां के सुख वे ब्रह्मात्माएं ही जानती हैं, जिनके दिल निर्मल होते हैं ।

छज्जे चारों तरफ, जल ऊपर नूर शोभाए ।
कै भांते बिछौने बैठक, क्यूं कहूं सुख एह जुबांए ॥२०॥

सागर के चारों तरफ जल के ऊपर (जल चबूतरे तक) वनों के नूरमयी छज्जे शोभायमान हैं, जिनमें कई प्रकार से बिछौने बिछे हैं, एवं नूरमयी बैठकें शोभायमान हैं । उनके सुख इस नश्वर जुबां से किस प्रकार कहूं?

दोए बाजू दोए तरफों, ऊपर छज्जे जिमीन के बैठक ।
इत मुजरा लें वन का, रूहें हादी संग हक ॥२१॥

सागर के दोनों तरफ (दायें-बायें) जिमी की तरफ हवेलियों के छज्जे बैठक के रूप में शोभायमान हैं । यहां विराजमान होकर श्री राज श्यामा जी एवं सखियां वनों के सौंदर्य को निहारते हैं ।

वन आए लगा छज्जन को, सब रंग सब सुखदाए ।
प्रेम सुगन्ध इनकी सुख आवत नाहीं जुबांए ॥२२॥

वनों की डालियां हवलियों के छज्जों से आकर मिल गयी हैं, जो कि सभी (अनंत) रंगों की मनोहारी शोभा लिये हुए हैं । उनकी प्रेम भरी सुगन्धि की शोभा अवर्णनीय है ।

दोए बाजू बैठक रांग के, सो दोनों तरफों जान ।
इत सागर समान सुख हैं, सो क्यूं कहूं इन समान ॥२३॥

रांग की महाहवेली के दोनों तरफ (दायें-बायें/बाहरी-भीतरी तरफ) छज्जे बैठक के रूप में शोभायमान हैं। इस प्रकार सर्व रस सागर में सागर के समान अनंत सुख हैं । उनकी उपमा इस संसार के किस वस्तु से दूं, जब उसके

तुल्य यहां कुछ है ही नहीं।

मध टापू सो नूर का, सो उंचा लग आसमान ।
रांग बराबर आए रह्या, पाईये मोमिन पे पेहेचान ।।२४।।

सागर में मध्य बेशुमार नूरमयी टापूमहल शोभायमान हैं, जिनकी ऊंचाई भी रांग की हवेलियों के समान आकाश तक ऊंची (१४ करोड़ ४० लाख भोम) आयी है । इसकी पहचान मोमिनों से ही समझी जा सकती है ।

सब स्वाद दस रंग का ए सागर उपजावत ।
सब रंग पशु पंखीअन के, सब रंग जवेर मोहोलात ।।२५।।

यह सागर सभी प्रकार का आनंद दस रंग में प्रदान करता है । पशु पक्षी भी यहां सभी (अनंत) रंगों के हैं । महलों के जवाहरात भी अनंत रंगों के हैं ।

कहां लो कहूं सुख तिन को, गिनती न आवे पार।
मोमिन समझे सब विध, सो है देखनहार ।।२६।।

सर्वरस सागर के सुख किस प्रकार कहूं ? इनकी गिनती करना सम्भव नहीं है । इसे मोमिन ही सब प्रकार से समझ सकते हैं और वे ही ध्यान द्वारा देखते हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों, कह्यो पूरब सब सागर ।
ए सुख शब्दातीत के, नेक कहे तुम खातर ।।२७।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! यह पूर्व दिशा में आये सर्वरस सागर का वर्णन किया है । यहां के सुख तो शब्दातीत हैं, किंतु आपके कारण थोड़ा सा वर्णन किया है ।

प्रकरण - १३० चौपाई - ४३८२

ए सब रस सब विध सब सुख

इस प्रकरण में सर्व रस सागर के अखंड सुखों के दर्शन कराये गये हैं । श्री राज श्यामा जी और सखियां यहां सर्व रस सागर में किस प्रकार मनोरम लीलाएं करते हैं उनका सुंदर वर्णन है । वनों में आए वृक्षों और चेहेबच्चों की शोभा का अदभुत वर्णन ब्रह्मात्माओं के लिए किया गया है। जब श्रीराज जी की सवारी धाम से आती है, तब पशु-पक्षी किस प्रकार से उन्हे रिझाते है उसकी झांकी प्रस्तुत की गयी है ।

सब रस इन सागर में, सब विध सब सुख आराम ।
हक हादी रूहे खेलत, सब पूरे मनोरथ काम ।।१।।

सर्वरस सागर में सभी प्रकार के रस (आनंद) हैं । सभी प्रकार के सुख व आराम हैं । यहां श्री राज श्यामाजी एवं सखियां कई प्रकार से खेल-रामतें करते हैं, जिससे सखियों के हृदय में पूर्ण आनंद का अनुभव होता है । सभी इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं ।

सब रस बन में देखिए, सब रस्ते दोरी बंध ।
सब छाह्या एक छत्री जुगते, शोभे सब सनंध ।।२।।

यहां के वनों में भी सभी प्रकार के आनंद हैं । इनके बीच सभी रास्ते पंक्तिबद्ध रूप से शोभायमान हैं । रास्तों के ऊपर वृक्षों की डालियां, फूल व पत्ते मिलकर सुंदर छत्र के रूप में शोभायमान हो रहे हैं एवं शीतल छाया प्रदान कर रहे हैं ।

उंची भोम दोरी बंध, चढती चढती तरफ चार ।
बीच चौक अति सोहने, सब रस सब सुखकार ।।३।।

वृक्षों की डालियां चारों तरफ बढ़ी हैं और इसी प्रकार एक सीध में एक के ऊपर एक भोम आकाश तक आते गये हैं । इन डालियों के बीच अति सुहावने चौक प्रत्येक भोम में आये हैं, जो कि सर्वरसों से युक्त सभी प्रकार के सुख देने वाले हैं ।

वन जाए अलेखे देखिए, पेड़ डारी पात विस्तार ।
रहे एक दूजी को लाग, छाह्या सीतल झलकार ।।४।।

जिमी में सागर के समान अनंत लम्बे-चौड़े घने वन आये हैं, जाकर उनकी शोभा देखिये, कि किस प्रकार वृक्षों, डालियों व पत्तों का विस्तार है । सभी वृक्षों की डालियां, पत्ते आपस में मिले हुए हैं, जिससे नूरमयी जगमगाहट के साथ शीतल छाया प्राप्त हो रही है ।

चौक रस्ते दोरी बंध, तिन चौकों फिरता वन ।
फल बेली वन शोभित, तेज गलिया मंदिर रोशन ।५।।

यहां सभी चौक (चार वृक्षों के बीच का स्थान) व रास्ते एक सीध में पंक्तिबद्ध रूप से शोभायमान हैं । वनों के बीच ऐसे अनेकों चौक चारों तरफ शोभायमान हैं । इन चौकों के ऊपर वृक्षों की डालियां, फल, बेल-लताएं शोभायमान हैं, इनके नीचे तेजोमयी गलियां एवं वृक्षों के ही मंदिर प्रकाशमान हो रहे हैं ।

कै चेहबच्चे तिन में, कै फुहारे उछरत ।
सुख कै बिछौने तिन में, हक हादी रूहे बैठत ।।६।।

इन वनों में अनेकों चहबच्चे (कुण्ड) विद्यमान हैं, जिनमें कई फव्वारे उछल रहे हैं । यहां कई जगह बैठकों में सुखदायी नूरमयी बिछौने बिछे हुए हैं, जिनमें श्रीराजश्यामा जी एवं सखियां विराजमान होते हैं ।

कै मेवे इन वन में, रस स्वाद को नाहीं पार ।
बैठ आरोगत इन चौक में, सो कह्यो न जाए सुमार ।।७।।

इन वनों में कई प्रकार के मेवे हैं, जिनके रस-स्वाद अनंत हैं । वनों के बीच चौकों में विराजमान होकर (श्रीराजश्यामाजी व सखियां) मेवे आरोगते हैं, जिसकी शोभा अवर्णनीय है ।

सब रस एकै फल में, जो रसना स्वाद देत हक ।
तिन की सिफत इन जुबां, क्यों आवे माफक ।।८।।

यहां के एक ही फलों में सभी प्रकार का रस (स्वाद) होता है जो कि श्री राजजी की रसना को सुख देते हैं, ऐसे फलों की प्रशंसा इस झूठी जिह्वा से किस प्रकार करें?

एह तो भोम बका की, सब रस स्वाद फल वन ।
के भांतो कै जिनसों, सो दे खबर से सुख होवे तिन ।।९।।

यह तो अखण्ड परमधाम के वन एवं फल हैं, जो सभी प्रकार के रस व स्वाद से युक्त होते हैं । ये फल कई प्रजाति के कई किस्म के होते हैं । उसका ज्ञान प्राप्त होने पर अनंत सुख प्राप्त होता है ।

प्रेमलता इन वन में, सब सुखकारी होए ।
हक हादी रूहें भोगत, सिफत कही न जाए सोए ।।१०।।

इन वनों में विद्यमान प्रेममयी सुगंधि अत्यंत आनंददायी होती है । इसका सुख श्री राज श्यामा जी एव सखियां लेते हैं । उसकी शोभा अवर्णनीय है ।

पशु पंखी इन वन के, ताके केश परन ।
शोभा सिफत क्यों कर कहूं, जो शोभित चित्रामंन ।।११।।

इन वनों में निवास करने वाले पशु-पक्षियों के केश (बाल) व पंख अत्यंत तेजोमयी एवं सुंदर चित्रकारी से युक्त हैं, उनकी शोभा व सुंदरता का वर्णन किस प्रकार किया जाये ?

आगे हक सुभान के, ए आवत मुजरे नित ।
क्यों कहूं सुख इन का, जो देख दीदार पावत ॥१२॥

वे पशु पक्षी प्रियतम श्री राज जी के समक्ष आकर नित्य प्रति कई प्रकार से अभिवादन करते हैं । इन पशु-पक्षियों के सुखों का वर्णन किस प्रकार करें, जो धणी का दर्शन पाकर अत्यंत प्रसन्न हो जाते हैं ?

हक की मेहर नजर के, उछरंग जाके अंग ।
जुदे कबूं ना होए सके, जहां रहें तहां संग ॥१३॥

श्री राजजी की प्रेम भरी दृष्टि पाकर इनके अंग अंग में उमंग-उत्साह बढ़ जाता है । वे पशु-पक्षी एक दूसरे से कभी अलग नहीं होते हैं । जहां रहते हैं, साथ ही रहते हैं ।

इनों के तन आसक, करें जिकर रात दिन ।
जिनका आराम अरस में, जो रहे गरक भजन ॥१४॥

वे पशु-पक्षी धणी के आशिक हैं, जो दिन-रात प्रियतम की ही चर्चा करते रहते हैं, परमधाम में विराजमान पशु-पक्षियों का इसी में सारा सुख होता है । वे दिन-रात धणी के गुणगान में ही मग्न रहते हैं ।

हक हादी रूहें बैठत, वन चौक दरम्यान ।
तब दूर मिसल बांध के, एक भांत ठाढे समान ॥१५॥

जब श्री राज श्यामा जी एवं सखियां वन के बीच चौक में विराजमान होते हैं, तो सभी पशु-पक्षी कुछ दूरी पर पंक्तिबद्ध रूप से खड़े रहते हैं ।

कर निरत राज रिझावहीं, बाजे बजावे कै तान ।
कै तन चातुरी इनकी, सो आवत ना जुबांन ॥१६॥

वे पशु-पक्षी कई प्रकार से नृत्य करके प्रियतम श्री राज को रिझाते हैं । कई प्रकार से तान मिलाते हुए बाजे बजाते हैं । इनके तनों में कई प्रकार की चतुराई भरी विशेषता है, जिसका वर्णन करना सम्भव नहीं हो पा रहा है ।

इत सुख खेलन के, कै उपजत रस स्वाद ।
तन नवतन जोवन प्रेम के, सखियां अंग उनमद ॥१७॥

यहां कई प्रकार के सुख खेलने के हैं, जिससे हृदय में अपार आनंद होता है। सखियों के अंग प्रेम के उन्माद (मस्ती) से भरे हुए नौतन यौवन से युक्त (चढ़ती जवानी) हैं ।

टोले जुदे जुदे खेलहीं, रास रमती चढती जोर ।
तहां श्याम श्यामा को ल्यावही, तब खेल रचे चढत है जोर ।।१८।।

सखियां अलग-अलग समूहों में खेलती हैं और बहुत ही उत्साह पूर्वक रास रमण करती हैं । कोई सखी श्री राज श्यामा जी को लेकर (हाथ पकड़कर) वहां आ जाती है, तब खेल का आनंद-उत्साह और बढ़ जाता है ।

आए लेवे सुख झीलन के, मिल छोले छिटकत जल ।
एक दूजी स्वाद सों, रहे सुध चेतन निरमल ।।१९।।

इसके पश्चात् आकर झीलना के सुख लेते हैं । एक दूसरे को मिलकर जल के फुहारे छींटती हैं व एक दूसरे को आनंद प्रदान करती हैं। एक दूसरे के प्रति प्रेम व (एक अद्वैत स्वरूप की) पहचान रहती है । उनके हृदय चेतन व निरमल होते हैं ।

राज श्यामा जी सनमुख, रहे सैंया श्यामा जी साथ ।
जब राज छिरके जोर से, तब भागी तीर जोए ।।२०।।

जल में श्री राज श्यामा जी के सन्मुख सखियां, श्री श्यामा जी के साथ खड़ी रहती हैं । जैसे ही श्री राजजी जोर से जल छिड़कने लगते हैं, तो वे सखियां भागकर (कुण्ड/सागर) के किनारे चली जाती हैं ।

यूं कै सुख जल में लेवहीं, फेर आए करत सिनगार ।
तहां सुख कै विध के, कह्यो ना जाए बिहार ।।२१।।

इस प्रकार जल में अनेक प्रकार से सुख लेते हैं, फिर बाहर आकर श्रृंगार करते हैं । इस समय भी कई प्रकार से श्रृंगार करते हुए प्रेम पूर्वक बातें करते हुए, श्री राजजी का सुन्दर स्वरूप निहारते हुए आनंद लेती हैं, जिसका वर्णन करना सम्भव नहीं है ।

कबूं पोहोर रात लों खेलत, उपरान्त बैठत आरोगन ।
तहां सुख कै भांत के, सो जानत दिल मोमिन ।।२२।।

कभी (शुक्ल पक्ष में) वनों में एक प्रहर रात्रि (९ बजे तक) रमण करते हैं। उसके पश्चात् वनों में ही भोजन आरोगते हैं । इस प्रकार चंद्रमा के मद्धिम प्रकाश में रमण करते हुए कई प्रकार के सुख प्राप्त करते हैं । उसे ब्रह्मात्माओं का दिल ही जानता है ।

कबूं सिनगार करके, आए बैठत सुखपाल ।
तले भोम आरोग के, निरत चौथी भोम होत खुसाल ।।२३।।

कभी (कृष्ण पक्ष में) श्रृंगार करने के उपरांत (संध्या ६ बजे) सुखपालों

में बैठकर रंगमहल आ जाते हैं तथा प्रथम भोम में आरोगने की लीला करते हैं तत्पश्चात् चौथी भोम में नृत्य की लीला देखकर प्रसन्नचित्त हो जाते हैं ।

ए रस सब विध के, अब सुख लेत पौढ़न ।
पांचमी भोम चढके, सुख ले तीनो पोहोर मोमिन ।।२४।।

इस प्रकार सभी प्रकार के आनंद लेकर अंत में पांचवी भोम में जाकर तीन प्रहर (रात्रि ९ बजे से प्रातः ६ बजे तक) ब्रह्मप्रियाएं धणी के साथ शयन का सुख लेती हैं ।

महामत कहे ए मोमिनों कहूं केती तुमारी बीतक ।
ए मेहेर तुम ऊपर, करी सुभानुल हक ।।२५।।

श्री महामति जी कहते हैं, कि हे सुंदरसाथ जी ! आपकी लीलाओं के विषय में कितना वर्णन करूं? यह तो अक्षरातीत श्री राज जी ने आप पर अनंत कृपा करते हुए वर्णन कराया है ।

प्रकरण - १३१, चौपाई - ४४०७

नूर सबों अंगो उपजाए

इस प्रकरण में ब्रह्मसृष्टियों की महिमा पर प्रकाश डाला गया है । ब्रह्मांगनाओं के सभी अंग नूरमयी दिव्य हैं । श्री राज जी के दिल के ही व्यक्त स्वरूप हैं इसीलिए इनके अंग और व्यवहार सभी इश्क से परिपूर्ण होते हैं । इन्हीं ब्रह्मात्माओं के दिल अर्श कहे गये हैं जिनमें प्रियतम श्री राजजी की मोहिनी छबि बसी होती है ।

सब अंग रूह तिनके, नूर उपजाए हक ।
ए सिफत अरस बका की, कोई नाही इन माफक ।।१।।

जिन ब्रह्मप्रियाओं के सभी अंग रूहमयी (चेतन) हैं, इनके अंगों में प्रियतम अक्षरातीत ही नूर (प्रेम, आनंद, सौंदर्य) प्रकट करते हैं । यह अखण्ड परमधाम का ऐश्वर्य है, जिसके तुल्य अन्य कुछ भी नहीं है ।

ए नूर अंग हक जात के, ताको हक दिल माफक जहूर ।
सो ख्वाब वजूद की अकल, तो क्यों आवे माहें सहूर ।।२।।

सखियों के नूरी अंग प्रियतम श्री राज जी के ही स्वरूप हैं और उनका स्वरूप श्री राजजी के दिल के अनुरूप ही सुंदर व नूरमयी है । उसका चिंतन स्वाप्निक तन की बुद्धि से किस प्रकार सम्भव है?

ए अंग तिन इश्क के, इशकै का ब्योहार ।
बिना ईमान इस ठौर की, कर ना सके विचार ।।३।।

इनके अंग (तन) इश्क के ही हैं । इनके व्यवहार भी इश्क से परिपूर्ण होते हैं। इस संसार में बिना ईमान (विश्वास) के कोई भी परमधाम के विषय में विचार नहीं कर पाता है ।

सो ईमान हक जात है, ठौर अखण्ड बिना न होए ।
सोई अरस दिल मोमिन, कह्या कलाम अल्ला सोए ।।४।।

वह ईमान परब्रह्म का ही स्वरूप है, जो अखण्ड परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों के अतिरिक्त अन्य कहीं नहीं पाया जाता । इन्हीं मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के दिल को परमात्मा ने कलाम अल्लाह (कुर्आन) में अपना धाम (अर्श) कहा है ।

मोमिन अंग अरस के, सो अरस हक की बैठक ।
हक नैनों नैन मिलावहीं, देखे अपने तन इश्क ।।५।।

इन मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के मूल तन अर्शे आज़म (परमधाम) में विराजमान हैं । उस परमधाम (मूल मिलावे) में अक्षरातीत की बैठक है । वहां श्री राज जी सखियों के नेत्रों से नेत्र मिलाकर अपने ही स्वरूप प्रियाओं को प्रेम भरी दृष्टि से देखते हैं ।

मोमिन मजकूर हक सों, सब अंग जाके नूर ।
लै सिफायत महम्मद की, पाया हक दीदार सहूर ।।६।।

वे ब्रह्मप्रियाएं प्रियतम श्री राज जी से प्रेमभरी बातें करती हैं, इनके सभी अंग नूर से परिपूर्ण हैं । उन्हीं मोमिनों ने इस संसार में मुहम्मद (हकी सूरत) की सिफायत (इल्मे लदुन्नी) पायी हैं, जिसके द्वारा हक तआला (प्रियतम परब्रह्म) का दीदार हुआ ।

इनों नजर ऊपर है हक, ए हक के आसक ।
ए अरस परस हक सों, इनो ऊपर नजर हक ।।७।।

उन ब्रह्मात्माओं की दृष्टि एकमात्र प्रियतम अक्षरातीत की तरफ रहती है । वे परब्रह्म अक्षरातीत के आशिक (सच्चे प्रेमी) होते हैं । इस प्रकार अक्षरातीत श्री राज जी भी इनके आशिक होते हैं, तथा श्री राजजी की नजर भी इन ब्रह्मात्माओं पर रहती है ।

इनों पर हक सुभान की, रहे मेहर नजर ।
तिनसे लैलत कदर की, इनों को हुई फज़र ।।८।।

उन ब्रह्मसृष्टियों पर परब्रह्म अक्षरातीत की कृपा दृष्टि सदैव रहती है । इस कारण अज्ञानमयी संसार रूपी महिमावान रात्रि में इनके लिये ब्रह्मज्ञान रूपी सवेरा हो गया होता है ।

क्यूं ना होवे नूर अंग इन का, जिन पर लिखे अपने कलाम ।
ए इसारतों समझहीं, दई कायम ठौर इसलाम ॥९॥

उन ब्रह्मात्माओं के सभी अंग नूरी क्यों ना हों, जिनके लिये हक तआला (परब्रह्म अक्षरातीत) ने कुर्आन पाक में अपने कलाम (वचन) लिखे हैं? ये ही कुर्आन पाक के सांकेतिक कथनों का मूल अर्थ समझती हैं, इन्हें ही शाश्वत शांति का धाम परमधाम (ज्ञान) प्रदान किया है ।

इहां इसारते खोल के, करे फजर घर नूर ।
लाहूत हाहूत के ठौर के, मोमिन करे जहूर ॥१०॥

इस संसार में वे मोमिन ही कुर्आन आदि धर्मग्रंथों के सांकेतिक कथनों को स्पष्ट करके नूरमयी परमधाम के ज्ञान का सवेरा करेंगे । लाहूत (परमधाम) तथा हाहूत (रंगमहल-मूलमिलावा) आदि स्थानों का स्पष्टीकरण करेंगे ।

एह आठों भिस्त के, उठवें चौदे तबक ।
नूर नजर सनमुख कर, सब बका ठौर पोहचावे हक ॥११॥

वे मोमिन ही चौदह लोकों के जीवों को आठ बहिश्तों (मोक्ष स्थानों) में अखण्ड करेंगे । अक्षर ब्रह्म के दिल की नजर (बेहद मण्डल) के सामने सबको अखण्ड बहिश्तों में पहुंचा देंगे ।

सब आसक तन होए के, उठे भिस्त में जब ।
रही नजर उपर मोमिन, सब कायम हुए तब ॥१२॥

सभी जीव इश्कमयी स्वरूप वाले होकर (परब्रह्म के आशिक बनकर) बहिश्तों में जब खड़े हो जायेंगे, तब उनकी दृष्टि ब्रह्मात्माओं (के स्मरण) पर बनी रहेगी(उनके प्रति पूज्य भाव रहेगा), इस प्रकार सभी जीव अखण्ड हो जायेंगे ।

रूहे आसक मोमिन के, तिन सबे करे हक ।
और ना इन को रही, सब कायम ठौर इशक ॥१३॥

वे जीव, मोमिनों (ब्रह्मात्माओं) के आशिक (इश्क बंदगी वाले) हो जायेंगे,उन सबको मोमिन अखण्ड कर देंगे । उन जीवों को और कोई आशा नहीं रहेगी, उस अखण्ड मुक्ति स्थान में सर्वत्र इश्क ही इश्क होगा ।

मोमिन अरस अजीम में, जब जागे अपने तन ।
हक सुभान पूछत, करो बीतक अपनी रोशन ।।१४।।

वे ब्रह्मात्माएं जब परमधाम (मूल मिलावे) में अपने मूल तनों (परात्म) में जागृत होंगी, तब प्रियतम अक्षरातीत हमसे पूछेंगे कि खेल में आपकी आपबीती बताओ ।

कह्यो क्यूं देखा खेल में, तुम मोको किया क्यूं याद ।
आप में तुम क्यूं कहे, क्यूं याद रही बुनियाद ।।१५।।

श्री राजजी कहेंगे कि "कहो, आपने किस प्रकार खेल देखा ? वहां आपने मुझे कितना याद किया ? अपने आप में (माया के तनों में) आप किस प्रकार मग्न रहे ? अपना निजघर कितना याद रहा ?"

तुमारा इशक मुझ से, कैसा रह्या खलक में तुम ।
मेहेर मेरी कैसी देखी, मेरा था तुम साथे हुकम ।।१६।।

आपका प्रेम मेरे प्रति कैसा था और दुनिया के प्रति कैसा था ? वहां मेरी कृपाओं का किस प्रकार अनुभव किया ? मेरा हुक्म तो आपके साथ ही था।

क्यूं सुकर बजाया तुमने, मैं तुमें पांचो न्यामत ।
वेशक इलम देय के, तुमे देखाए दई साएत ।।१७।।

आप वहां मेरे प्रति कितना कृतज्ञ (शुक्रगुजार) रहे ? मैंने तुम्हें पांचो नैमतें (शक्तियाँ) प्रदान की । बेशक इल्म (संशय रहित तारातम ज्ञान) प्रदान किया, जिसके द्वारा मूल मिलावे की इस घड़ी की पहचान करा दी ।

सेहरग से नजीक, मैं बैठा तुमारे पास ।
साएत सक तुमें ना रखी, तुमे और ना रही आस ।।१८।।

मैं आपके सामने (मूल मिलावे में) शहरग से भी नजदीक विराजमान हूं, मूल मिलावे की इस घड़ी के विषय में जरा भी संशय नहीं रखा । जिससे आपके दिल में भी अन्य कोई आशा नहीं रही ।

तुम को लैलत कदर के, खोले तीनों तकरार ।
साहेदी देवाई सबन पे, तुम खोल देखो बिहार ।।१९।।

आपको इस महिमामयी रात्रि (लैलतुलकद्र) के तीनों ब्रह्माण्डों (ब्रज, रास व जागनी) के रहस्य स्पष्ट करके बता दिये । समस्त धर्मग्रंथों के द्वारा साक्षी भी दिलावायी, इनमें वर्णित परमधाम से संबंधित वचनों को खोलकर देखो ।

मिल मोमिन उत्तर देत हैं, हजूर हक सुभान ।
हमको खेल देखाईया, देखी जिमीं और आसमान ।।२०।।

तब सभी ब्रह्मप्रियाएं मिलकर प्रियतम अक्षरातीत के समक्ष उत्तर देंगी कि आपने हमें संसार रूपी खेल दिखाया । वहां हमने और ही धरती और ही आसमां देखा।

देखे खेल कबूतर, मिने मुरदों का बास ।
हम भी लगे तिन में, पकड रहे झूठी आस ॥२१॥

वहां हमने जादू के कबूतर के समान स्वाप्निक-नश्वर जीवों को देखा, जो कि जन्मते और मर जाते थे । हम भी उनके ही समान आचरण वाले हो गये और झूठे संसार की चाहनाओं व चिंताओं में बंध गये ।

हमको बीच खेल के, रही न तुमारी याद ।
भूल आपने ठौर को, जो बका घर बुनियाद ॥२२॥

(सखियां आगे कहेंगी) हमें उस मायावी जगत् में जाकर आपकी जरा भी याद नहीं रही, हम अपने परमधाम को भी भूल गये, जो हमारा मूल अखण्ड घर है।

हमको तुमारा इशक, खेल में रह्या ना रंचक ।
मेहेर तुमारी हम पै, बड़ी देखी बुजरक ॥२३॥

इस मायवी संसार में हमारे दिल में आपके प्रति जरा भी प्रेम नहीं रहा, किंतु हमने खेल में आपकी अनंत कृपाओं का अनुभव किया ।

तुम भेजा पैगंमर हम पे, हम चीन न सके तिन ।
पांचो चीज ए बका से, हम जानी सब रोशन ॥२४॥

आपने अपना संदेशवाहक (श्यामाजी) हमारे पास भेजा, किंतु हम उन्हें भी पहचान नहीं पाये अब आप की मेहर से हमने परमधाम की पांचों शक्तियों को भी अच्छी तरह से पहचान लिया है।

हम सुकर बजाए ना सके, तुम उतारी न्यामत जोर ।
हम याद कर एक को, कोट गुनी भेजो तब और ॥२५॥

हम आपकी प्रेम भरी कृपाओं के प्रति कृतज्ञ नहीं हो सके । आपने हमारे लिये सभी नैमतें उतार दीं । हम आपके एक लाड को याद करते थे तो आप कई कोट गुनी कृपा भेज देते थे ।

तुम दई बेसकी हमको, सबों पुराई साख ।
जहां देखे तहां ए ही देखे, दई साख भाख कै लाख ॥२६॥

आपने हमें तारतम ज्ञान के द्वारा संशयरहित कर दिया, सभी धर्मग्रंथों की साक्षियां प्रदान की । जिस भी धर्मग्रंथ में देखते थे तो परमधाम की ही बात

दिखायी देती थी । कई लाखों भाषाओं में आपने साक्षियां प्रदान की ।

सेहरग से नजीक हमको, तुम देखाई रही ना सक ।
पर लड़ाए तिन दज्जाल सों, जो नाबूंद ना माफक ॥२७॥

आपने हमें तारतम ज्ञान के द्वारा मूल मिलावे में आपके शहरग से भी नजदीक बैठे होने का ज्ञान करा दिया । परंतु हमें अज्ञान व अवगुण रूपी दज्जाल से भी लड़ाया, जो कि नाचीज़ (स्वप्नवत्) और अस्तित्वहीन था ।

जगाए बैठाए पास आपने, देखाए तीनों तकरार ।
कुछ तामे ना रही, याद अपना परवरदीगार ॥२८॥

आपने जागृत करके अपने चरणों में बैठा लिया (मूल मिलावे में बैठे होने का ज्ञान करा दिया) और अपनी कृपा की छांव तले तीनों तकरार (ब्रज, रास व जागनी) दिखाया । किंतु इन तीनों में ही हमें अपने प्रियतम अक्षरातीत की (आपकी) याद नहीं रही ।

तुम साहेदी देवाई सबन पे, हम जाने नीके कर ।
फेर वाही साएत ना रही, जमा ना होए खातर ॥२९॥

आपने सभी धर्मग्रंथों के द्वारा साक्षी भी दिलवायी, जिसे हमने अच्छी तरह से समझा भी किंतु फिर भी परमधाम (मूल मिलावे) के इस पल के जैसी स्थिति नहीं हो पायी, मन में पूरा विश्वास, संतुष्टी नहीं हो पायी ।)

जब देखें तुमारी तरफ को, तब सक ना रहे लगार ।
जब देखे तरफ खेल के, तब क्यूं ही न आवे द्वार ॥३०॥

जब आपकी तरफ देखते थे तो जरा भी संशय नहीं रहता था । किंतु जब संसार की तरफ देखते थे (संसारिक चिंता चाहना में लग जाते थे), तब किसी भी प्रकार से परमधाम का मार्ग नहीं नजर आता था ।

यूं कै बाते बीतक अपनी, सब करने लगे ठौर ठौर ।
हंस हंस गिर गिर पड़त हैं, भै खेल खुसाली जोर ॥३१॥

इस प्रकार सखियां कई प्रकार से अपनी बीती हुई बातों का वर्णन जगह-जगह करने लगेंगी और उसे याद कर हंस-हंस के गिर-गिर पड़ेगी । इस प्रकार खेल का बहुत आनंद होगा ।

कहां लो कहूं ए बीतक, जाको गिनती न आवे पार ।
सो हक कलाम में देखियो, ए मोमिन करें विचार ॥३२॥

इस प्रकार परमधाम में जागृत होने पर जो बातें होंगी, उसका कहां तक वर्णन करें ? उसकी गिनती करना सम्भव नहीं है । उसे ब्रह्मवाणी में देखिये।

ब्रह्मात्माएं ही उसका चिंतन करेंगीं।

कहे आठों सागर, आठों चौपाई का नेक बिहार ।
इन में गरभत औऱ हैं, जाको ना आवे पार ।।३३।।

मैंने आठों सागरों का वर्णन किया, और उन आठों सागरों में होने वाली लीला-विहार का भी वर्णन किया । इनमें कई गुह्य रहस्य और भी हैं, जिसका कोई पारावार नहीं है ।

महामत कहे ए मोमिनों, सब अंग तुमारे नूर ।
तिन की सिफत इन जुबां, क्यूं कर कहुं जहूर ।।३४।।

श्री महामति जी कहते हैं कि, हे सुंदरसाथ जी ! आपके परात्म के सभी अंग नूरमयी हैं । मूल मिलावे में विराजमान उन मूल तनों की शोभा का झूठी जिह्वा से वर्णन करना सम्भव नहीं है?

प्रकरण - १३२ चौपाई - ४४४१

श्री धाम को बरनन सकल जोगवाई श्री लालदास जी कृत वृत तमाम हुई

समस्त सुन्दर साथ के चरणों में कोटान कोट प्रणाम ।

अर्जी धाम चलन की

पीछला बाकी दिन, रह्यो घड़ी चार।
धाम वतन चलन की, मोमिन करें विचार।।१।।
अरस की निमाज का, आए पहुंचा बखत।
मोमिन अरज करत हैं, सामें होए तखत।।२।।
हमको इन खेल से, सिताब काढ़ो श्री राज।
भए मनोरथ पूरन, रह्या न कोई काज।।३।।
श्री धाम धनी सुनत हैं, ए वानी जो मकबूल।
द्वाए जो मोमिनों की होत है कबूल।।४।।

अर्जी सुन्दर साथ करें, चरणों में होके खड़े
पिया जी, धनी जी, खेल को बस करो, दिन बीते हैं बड़े....१
अर्श में प्रीतम से, क्यों रब्द हमने की,
खेल क्यों मांग लिया, यह समझ हम में न थी,
पिया जी, धनी जी खेल को बस करो, दिन बीते हैं बड़े....२
माया भी देखी है, दुःख भी देखा है
खेल भी देख लिया, इश्क भी देखा है
पिया जी, धनी जी, ले चलो, ले चलो दिन बीतें हैं बड़े.....३
आपकी जुदाई को, अंगना कैसे सहे,
हैं शर्म सार हमहीं, आप से कैसे कहें,
पिया जी, धनी जी, ले चलो ले चलो, दिन बीते हैं बड़े...४
अंगना जान के ही, आपने जगाया है,
ले के चलते क्यों नहीं, समझ न आया है।
बल हमरा न चला, साथ चरणों में पड़े, अर्जी.....